vol **7**

5885

सहीह मुस्लिम

हदीस नं. **6873**

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी

तख़रीज

मौलाना अदनान दुर्वेश

तक़रीज़

मौलाना इरशादुल हक़ असरी

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

तौफिक बुक डिपो, 2241/41 कुचा चैलान,
दरियागंज, नई दिल्ली 98732-96944

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल
जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)

कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड,
शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर
(राज.) 82091-64214

अब्दुर्रहीम मुतवल्ली, मर्कजी मस्जिद अहले हदीस,
जोधपुर (राज.) 93143-66303

अल कौसर ट्रेडर्स,
जोधपुर 94141-920119

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन,
अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन,
खजराना, इन्दौर 95846-51411

शैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी,
औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वाराणासी 094519-15874

आई.आई.सी.
नूरी होटल के पास, हाण्डा बाजार, भुज, कच्छा
(गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम, मऊनाथ, भंजन (यूपी)
0547-2222013

नसीम खलीली, नीमू डायमण्ड फुट वियर, 87 बोधा
नगर, भूतला रोड़, आगरा (यूपी) 084497-10271

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी

तख़रीज	तक़रीज़
मौलाना अदनान दुर्वेश	मौलाना इरशादुल हक़ असरी

ज़िल्द नम्बर

हदीस नं. 5885 से 6873 तक

नाम किताब	सहीह मुस्लिम जिल्द - 7	
तालीफ़	इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)	
उर्दू तर्जुमा	फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी	
हिन्दी तर्जुमा	दारुत-तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअ़त जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)	
तख़रीज	मौलाना अदनान दुर्वेश	
तक़रीज़	मौलाना इरशादुल हक़ असरी	
तस्हीह व नज़्रे सानी	मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी (97857-69878)	
लेज़र टाइपसेटिंग	मुहम्मद गुफ़रान अन्सारी	
मेनेजिंग डायरेक्टर	अली हम्ज़ा, (82338-55857)	
प्रिण्टिंग	आदर्श आफसेट, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर, जोधपुर 92144-85741	
बाइंडिंग	कमाल बाईण्डिंग हाउस, यादगार मास्टर जहुरुद्दीन साहब मो. शाहिद भाई 93516-68223 0291-2551615	
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	जमादिल आख़िर 1441 हिजरी (जनवरी 2020 इस्वी)	
तादादा कॉपी : 500	तादाद पेज: 664	क़ीमत: रु. 600/- जिल्द (रु. 4500 आठ जिल्द सेट)

प्रकाशक	मर्कज़ी अन्जुमन ख़ुद्दामुल क़ुरआन वल हदीस, जोधपुर
ज़ेरे निगरानी	शहरी व सूबाई जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

फेहरिस्ते-मजामीन

इस किताब के कुल बाब 1 और 12 हदीसें हैं।

كتاب الشعر

किताबुश्शिअ्र
अश्आर का बयान

हदीस़ नम्बर 5885 से 5896 तक

शेअ़रो-शाइरी की अहमियत और उसूल व ज़वाबित

अ़रब फ़साहत व बलाग़त के रसिया (शौक़ीन) थे। अच्छे लफ़्ज़ और अच्छे जुम्ले (कलाम) कहते और उनसे लुत्फ़ अन्दोज़ होते। उनके शेअ़र में ग़िनायत भरी हुई थी। इससे कलाम का असर कई गुना बढ़ जाता था। लेकिन बद क़िस्मती से ज़वाल और जाहिलिय्यत के दौर में उनकी शाइरी सिर्फ़ जाहिली अक़्दार की तर्जुमान बनकर रह गई। शाइरी के मौज़ूआत (टॉपिक्स) में उ़र्या (नंगापन) ग़ज़ल और तश्बीब, फ़ख़्र व तअ़ल्ली, बदतरीन हिजूगोई, झूठ पर मबनी मदह सराई, ख़म्रियात वग़ैरह के अ़लावा और कुछ न था। ख़ाल-ख़ाल हिक्मत व दानाई की बातें थीं। इन सब मौज़ूआत (टॉपिक्स) में नुमायाँ तरीन बात हद से बढ़ी हुई मुबालग़ा आराई थी यहाँ तक कि वो ख़ुद कहते, 'बेहतरीन शेअ़र वो है जो सबसे बढ़कर झूठ पर मबनी हो।' और इस तरह की शाइरी की वो बजा तौर पर शैतान का इल्हाम कहते। उनके नज़दीक ये एक मुसल्लमा बात थी कि हर शाइरी के पीछे एक शैतान होता है, जो उसे शेअ़र इल्हाम करता है, वो इस बात पर फ़ख़्र भी करते थे। किसी ने अपने मद्दे मुक़ाबिल शाइर को कम मर्तबा ज़ाहिर करने के लिये ये कहा, 'उसका शैतान मुअन्नस (फिमेल) है (इसलिये उसकी शाइरी में ज़ोर कम है) और शैतान मुज़क्कर (मेल) है।'

क़ुरआन मजीद ने ये कहकर, 'और शाइरों के पीछे गुमराह लोग लगते हैं, क्या तूने नहीं देखा कि बिला शुब्हा वो हर वादी में सर मारते-फिरते हैं।' (सूरह शुअ़रा 26 : 224-225) इस बात की वज़ाहत कर दी कि ख़राबी कहाँ है और फिर सूरह शुअ़रा की आख़िरी आयत के ज़रिये से अच्छी शाइरी और सहीह शुअ़रा को मुस्तसना (अलग) कर दिया।

जब इस्लाम का आग़ाज़ हुआ तो उस वक़्त का शेअ़री विरासत इन्ही ख़ुराफ़ात पर मुश्तमिल था, इसलिये इस सारे विरासत को मुस्तरद करना ऐन फ़ितरी बात थी। लेकिन इस्लाम चूंकि अ़द्लो-इंसाफ़ का दीन है, इसलिये इस सारे मज्मूऐ में थोड़े से थोड़ा जितना भी हिस्सा दानाई पर मुश्तमिल था या जाहिलिय्यत की ख़ुराफ़ात से महफ़ूज़ (सुरक्षित) था, उसको क़ुबूल कर लिया गया। लबीद के शेअ़र को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सराहा और भी कुछ अश्आ़र हैं जिनकी तहसीन या जिनके इस्तेमाल के हवाले से कुछ रिवायात मिलती हैं।

हदीसों में जो तर्दीद आई है वो फ़न्ने शाइरी की नहीं, जाहिलिय्यत की उन अक़्दार की है जिनकी वो शाइरी तर्जुमान थी। वो शेअ़र जो सच्चाई और दानाई का तर्जुमान था, उसे न सिर्फ़ क़ुबूल किया गया

बल्कि उसकी बाक़ाइदा हौसला अफ़ज़ाई हुई। हज़रत हस्सान (रज़ि.) के क़सीदे के लिये मस्जिद में मिम्बर रखा जाता। कअ़ब बिन ज़ुहैर (रज़ि.) को इनाम में चादर अ़ता हुई। उमय्या बिन अबी सल्त के अश्आर आपने ख़ुद फ़रमाइश करके सुने। (सहीह मुस्लिम : 5885) आप (ﷺ) ने ये फ़रमाकर शेअ़र को बहुत बड़ा सर्टिफ़िकेट अ़ता फ़रमाया, 'बिला शुब्हा कुछ शेअ़र हिक्मत वाले होते हैं।' (सहीह बुख़ारी : 6145) शेअ़र के हवाले से हक़ीक़त कुशा क़ौल हज़रत आइशा (रज़ि.) का है जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने अल्अदबुल मुफ़रद में रिवायत किया है, 'शेअ़र में से कोई अच्छा है और कोई बुरा है, अच्छा ले लो और बुरा छोड़ दो।' (अल्अदबुल मुफ़रद लिल्बुख़ारी : 866)

42. अश्आर का बयान

كتاب الشعر

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ ابْنُ أَبِي عُمَرَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ رَدِفْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا فَقَالَ " هَلْ مَعَكَ مِنْ شِعْرِ أُمَيَّةَ بْنِ أَبِي الصَّلْتِ شَيْئًا " . قُلْتُ نَعَمْ قَالَ " هِيهِ " . فَأَنْشَدْتُهُ بَيْتًا فَقَالَ " هِيهِ " . ثُمَّ أَنْشَدْتُهُ بَيْتًا فَقَالَ " هِيهِ " . حَتَّى أَنْشَدْتُهُ مِائَةَ بَيْتٍ .

(5885) अम्र बिन शरीद (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं, एक दिन मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे सवार हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें उमय्या बिन अबी सल्त के अश्आर में से कुछ याद हैं?' मैंने कहा, जी हाँ! आपने फ़रमाया, 'सुनाओ।' मैंने आपको एक शेअर सुनाया। आपने फ़रमाया, 'और सुनाओ।' फिर मैंने आपको एक शेअर सुनाया तो आपने फ़रमाया, 'और।' यहाँ तक कि मैंने आपको सौ (100) अश्आर सुनाये।

(इब्ने माजह : 3758)

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، بْنِ مَيْسَرَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، أَوْ يَعْقُوبَ بْنِ عَاصِمٍ عَنِ الشَّرِيدِ، قَالَ أَرْدَفَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَلْفَهُ . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

(5886) यही रिवायत इमाम साहब को दो और उस्तादों ने सुनाई कि शरीद (रज़ि.) बयान करते हैं मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने पीछे सवार कर लिया, आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि अच्छे अश्आर का सुनना जाइज़ है क्योंकि उमय्या बिन

अबी सल्त एक जाहिली शाइर है जो कुतुबे मुक़द्दसा की तिलावत करता था, बुत परस्ती से बेज़ार था और एक नबी की आमद की ख़बर देता था, बल्कि ख़ुद नुबूवत का उम्मीदवार था। इसलिये तौहीद और फ़िक्रे आख़िरत पर मुश्तमिल शेअ़र कहता था। इसलिये ऐसे अश्आर जो तौहीद, नाते रसूल, मदहे सहाबी, दीन और अहले दीन के दिफ़ाअ़, फ़िक्रे आख़िरत और अख़्लाक़े हसना की तालीम, नेकी की तरग़ीब और बुराई से नफ़रत दिलाने वाले हों, उनका सुनना और सुनाना जाइज़ है। लेकिन फ़हश और बेहयाई की तालीम देने वाले, दीन और अहले दीन की मज़म्मत (निन्दा) और अख़्लाक़ बाख़्ता अश्आर सुनना और सुनाना जाइज़ नहीं है। इस तरह अपने ऊपर शेअ़रो-शाइरी को सवार कर लेना कि इंसान फ़राइज़ की पाबंदी, क़ुरआनो-सुन्नत के इल्म की तहसील और यादे इलाही से ही बेगाना हो जाये और उसे आख़िरत की फ़िक्र ही न रहे तो ये जाइज़ नहीं है।

(5887) यही रिवायत इमाम साहब दो और उस्तादों की सनद से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे शेअ़र सुनने का तक़ाज़ा फ़रमाया। इसमें ये इज़ाफ़ा है आपने फ़रमाया, 'क़रीब था कि वो मुसलमान हो जाता।' इब्ने महदी की रिवायत में है आपने फ़रमाया, 'वो अपने अश्आर में इस्लाम लाने के क़रीब था।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الطَّائِفِيِّ، عَنْ عَمْرِو، بْنِ الشَّرِيدِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ اسْتَنْشَدَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏.‏ بِمِثْلِ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ وَزَادَ قَالَ ‏"‏ إِنْ كَادَ لَيُسْلِمُ ‏"‏ ‏.‏ وَفِي حَدِيثِ ابْنِ مَهْدِيٍّ قَالَ ‏"‏ فَلَقَدْ كَادَ يُسْلِمُ فِي شِعْرِهِ ‏"‏ ‏.‏

फ़ायदा : चूंकि वो ख़ुद नुबूवत का उम्मीदवार था तो जब उसकी आरज़ू उम्मीद बर न आई तो वो आपसे हसद करने लगा, इसलिये इस्लाम की ख़ूबियों और कमालात से आगाही के बावजूद मुसलमान न हुआ, लेकिन अश्आर अच्छे कहे।

(5888) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अरबों ने जो बोल बोले हैं, उनमें बेहतरीन कलाम लबीद का ये शेअ़र है, ख़बरदार! अल्लाह के सिवा हर चीज़ फ़ानी और ज़वाल पज़ीर है।'

حَدَّثَنِي أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ جَمِيعًا عَنْ شَرِيكٍ، قَالَ ابْنُ حُجْرٍ أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ

النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَشْعَرُ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَتْ بِهَا الْعَرَبُ كَلِمَةُ لَبِيدٍ أَلاَ كُلُّ شَىْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلٌ " .

फ़ायदा : लबीद बिन रबीआ आमिरी एक जाहिली शाइर और शहसवार है, जिसने इस्लाम का दौर पाया और बनू किलाब के वफ़्द में शरीक होकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गया और हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के दौर तक ज़िन्दा रहा, शेअर व शाइरी को छोड़कर तिलावते कुरआन में मशग़ूल हो गया।

(5889) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सबसे सच्चा बोल जो किसी शाइर ने बोला है लबीद का ये बोल है, 'ख़बरदार! अल्लाह के सिवा हर चीज़ फ़ानी और ज़वाल पज़ीर है' और क़रीब था कि उमय्या बिन अबी सल्त, मुसलमान हो जाता।'

(सहीह बुख़ारी : 3841, 6146, 6489, तिर्मिज़ी : 2849, इब्ने माजह : 3757)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، بْنِ عُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَصْدَقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا شَاعِرٌ كَلِمَةُ لَبِيدٍ أَلاَ كُلُّ شَىْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلٌ وَكَادَ أُمَيَّةُ بْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ " .

(5890) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सबसे सच्चा बोल शेअर जो किसी शाइर ने कहा है ये है, ख़बरदार! अल्लाह के सिवा हर चीज़ बेहक़ीक़त है और क़रीब था कि इब्ने अबी सल्त इस्लाम ले आता।'

وَحَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَصْدَقُ بَيْتٍ قَالَهُ الشَّاعِرُ أَلاَ كُلُّ شَىْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلٌ وَكَادَ ابْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ " .

फ़ायदा : अल्लाह तआला का वजूद, ज़ाती और मुस्तक़िल और अज़ली है और अबद तक रहेगा। (हमेशा से है और हमेशा रहेगा) न वो मअ़्दूम था, न मअ़्दूम होगा। कायनात में हर चीज़ का वजूद पहले न था, बाद में अल्लाह की तख़्लीक़ और ईजाद से उसको वजूद मिला। न वो अज़ली है और न

ज़ाती है, बल्कि उसका अता की हुई है और उसके इरादे और मशियत के साथ मौजूद और बरक़रार है। जब वो चाहेगा, वो ख़त्म हो जायेगा, वो मुस्तक़िल नहीं है बल्कि मोहताज है और ज़ाती हैसियत से वो बेहक़ीक़त है। इसलिये इसको बातिल का नाम दिया गया, लेकिन इससे वह्दतुल वुजूद का नज़रिया कशीद करना (निकालना), एक फ़िज़ूल और बेकार काविश है। इसका उससे कोई ताल्लुक़ नहीं है। अगर इससे वह्दतुल वुजूद का इस्बात होता (सुबूत मिलता) तो ये नज़रिया सहाबा व ताबेईन के दौर में पैदा हो चुका होता, ये तो एक फ़ल्सफ़ा या नज़रिया है, जो इल्हाद और ज़िन्दक़ा का रास्ता खोलता है अगर इस्लामी नज़रिया होता तो बेदीनी का रास्ता हमवार न करता।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ، عُمَيْرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَصْدَقُ بَيْتٍ قَالَتْهُ الشُّعَرَاءُ أَلاَ كُلُّ شَىْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلٌ " .

(5891) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सबसे सच्चा शेअर जो शुअरा ने कहा है, ख़बरदार! हर चीज़ अल्लाह के सिवा फ़ानी है।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ أَصْدَقَ كَلِمَةٍ قَالَهَا شَاعِرٌ كَلِمَةُ لَبِيدٍ أَلاَ كُلُّ شَىْءٍ مَا خَلاَ اللَّهَ بَاطِلٌ " . مَا زَادَ عَلَى ذَلِكَ .

(5892) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'सबसे सच्चा बोल जो किसी शाइर ने बोला है, लबीद का क़ौल है, ख़बरदार! दुनिया की हर चीज़ अल्लाह के सिवा फ़ना पज़ीर है।' आपने इससे ज़्यादा नहीं कहा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ،

(5893) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इंसान के पेट में ऐसी पीप भर जाये जो उसको बिगाड़ दे, इससे बेहतर है कि उसका पेट शेअरों से भरे।'

عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ الرَّجُلِ قَيْحًا يَرِيهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ إِلاَّ أَنَّ حَفْصًا لَمْ يَقُلْ " يَرِيهِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) यरीह : जो उसको बिगाड़ दे।' **(2) अल्वरा :** उस बीमारी को कहते हैं, जो पेट को ख़राब कर दे या उसके फेफड़ों को खा जाये।

फ़ायदा : इंसान पर अश्आर का इस क़द्र ग़ल्बा और तसल्लुत हो कि वो क़ुरआन व सुन्नत और उ़लूमे शरइय्या की तहसील से महरूम हो जाये और यादे इलाही और फ़राइज़ से ग़ाफ़िल रहे नापसन्दीदा है, अगरचे वो अश्आर अच्छे ही क्यों न हों। लेकिन वो अश्आर जो कुफ़्र व फ़िस्क़ की तालीम देते हैं, जिनमें किसी की पगड़ी उछाली गई हो या इश्क़ व मुहब्बत में डूबकर किसी औ़रत की मदह सराई की गई या ख़िलाफ़े शरीअ़त हों तो ऐसे अश्आर हर हालत में नापसन्दीदा और मज़्मूम (निंदनीय) हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا يَرِيهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا".

(5894) हज़रत सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से किसी के पेट का ऐसी पीप से भरना जो उसको बिगाड़ दे, इससे बेहतर है कि वो शेअ़रों से भरे।'
(सहीह बुख़ारी : 6155, इब्ने माजह : 3759, 3760)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ يُحَنِّسَ، مَوْلَى مُصْعَبِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ بَيْنَا نَحْنُ نَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْعَرْجِ إِذْ عَرَضَ شَاعِرٌ يُنْشِدُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خُذُوا الشَّيْطَانَ أَوْ

(5895) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं हम अ़र्ज मक़ाम पर चल रहे थे कि इस दौरान एक शाइ़र सामने आकर शेअ़र सुनाने लगा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'शैतान को पकड़ो या शैतान को रोको! इंसान का पेट पीप से भर जाये, इससे बेहतर है कि वो शेअ़रों से भरे।'

أَمْسِكُوا الشَّيْطَانَ لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا " .

(तिर्मिज़ी : 2852, इब्ने माजह : 3760)

باب تَحْرِيمِ اللَّعِبِ بِالنَّرْدَشِيرِ

बाब 1 : नर्द शीर (चोसर) खेलना हराम है

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ، مَرْثَدٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ لَعِبَ بِالنَّرْدَشِيرِ فَكَأَنَّمَا صَبَغَ يَدَهُ فِي لَحْمِ خِنْزِيرٍ وَدَمِهِ " .

(5896) हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा अपने बाप से बयान करते हैं नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान नर्द शीर खेलता है गोया कि वो अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और उसके ख़ून में डुबोता है।'

(अबू दाऊद : 4939, इब्ने माजह : 3763)

फ़ायदा : ऐसे तमाम खेल जिनमें ज़हनी या जिस्मानी वर्जिश नहीं है या उनमें वर्जिश तो है लेकिन उनमें जुवा और क़िमार पाया जाता है या वक़्त को बर्बाद करता है या वो फ़राइज़ से ग़ाफ़िल करते हैं और इंसान के ज़हन पर हर वक़्त खेल ही सवार रहता है और किसी चीज़ का उसे ध्यान ही नहीं रहता, ये सब खेल नाजाइज़ हैं। अगरचे सबकी हुरमत बराबर नहीं, जितना हुरमते शरीअत को पामाल किया जायेगा, उतना ही वो क़बीह और नापसन्दीदा होगा। लेकिन अगर वो खेल सेहत अफ़ज़ा है या जंगी महारत में मुमिद्द व मुआविन (फ़ायदेमंद) है और फ़राइज़ की अदायगी में हाइल नहीं है, जैसे दौड़, घुड़सवारी, नेज़ाबाज़ी, अस्लहा की टेनिंग, रस्साकशी वग़ैरह जबकि इनमें शर्त या जुवा न पाया जाये तो ये खेल जाइज़ होंगे। लेकिन बैठकर खेले जाने वाले खेल, जिनमें वक़्त को बर्बाद करने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता, वो दुरुस्त नहीं हैं।

इस किताब के कुल बाब 4 और 41 हदीसें हैं।

كتاب الرؤيا

किताबुर्रुअ्या
ख़्वाब का बयान

हदीस नम्बर 5897 से 5937 तक

ख़्वाब क्या है, हक़ीक़त, अक़्साम(क़िस्में) और आदाब

हर इंसान ख़्वाब देखता है, ये एक फ़ितरी अम्र है। ये ख़्वाब क्या हैं? कैसे नज़र आते हैं? इनसे इंसान की कौनसी ज़रूरत पूरी होती है? या दूसरे लफ़्ज़ों में ये कि इंसान ख़्वाब क्यों देखता है? ये ऐसे सवाल हैं जिन पर ग़ौर होता आया है। अलग-अलग लोगों ने इनके बारे में अलग-अलग बातें की हैं। माहिरीने नफ़्सियात भी इस राज़ से पर्दा उठाने के लिये सर गरदाँ हैं।(परेशान) उनमें से कोई ये कहता है कि ये सूए हज़्म का शाख़साना होते हैं। एक जवाब ये है कि इंसान अपनी ना आसूदा ख़्वाहिशात को ख़्वाब देखकर आसूदा करता है। ऐसे तमाम जवाबों में कोई जवाब भी ऐसा नहीं है जो तमाम क़िस्मों के ख़्वाबों की असलियत बयान कर सकता हो। ख़ुसूसन ऐसे ख़्वाबों की जो मुस्तक़बिल के बारे में होते हैं और मिन व अ़न पूरे हो जाते हैं। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इन तमाम सवालात का बहुत वाज़ेह जवाब दिया है। आप(ﷺ) ने ख़्वाबों की एक ख़ास क़िस्म को आ़म इंसानी ख़्वाबों से अलग कर दिया और उसे अर्रुअ्या कहा है। आप(ﷺ) का इरशाद है कि रुअ्या अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी होते हैं और जो रुअ्या नहीं, उनमें एक बड़ी क़िस्म उन ख़्वाबों की है जो इंसान के अज़ली दुश्मन शैतान के ख़बस(ख़बासत) की कारफ़रमाई है। बाक़ी आ़म इंसानी ख़्वाब क़ुव्वते मुतख़य्यला की कारकर्दगी से मुताल्लिक़ होते हैं।(मुस्लिम : 5905) ये ख़्वाब उ़मूमन जागने के बाद हाफ़िज़े(याद्दाश्त) से महव हो(मिट) जाते हैं। रुअ्याए सादिक़ा, यानी सच्चे ख़्वाब बिल्कुल वाज़ेह नज़र आते हैं, उनमें किसी तरह की अच्छी बशारत होती है या किसी उल्झन की हक़ीक़त वाज़ेह होती है या कोई काम करने या न करने के हवाले से रहनुमाई मिलती है या किसी होने वाले वाक़िये की ख़बर दी जाती है या किसी ख़तरे से आगाह किया जाता है या किसी तकलीफ़ वग़ैरह के हवाले से इंसान को ज़हनी तौर पर तैयार किया जाता है ताकि शदीद सदमे से दोचार न हो पाये। किताबुर्रुअ्या के आख़िरी हिस्से में रुअ्याए सादिक़ा(सच्चे ख़्वाबों) की कई मिसालें बयान की गई हैं। रुअ्याए सालेहा बुनियादी तौर पर अम्बियाए किराम के ख़्वाब हैं। उम्मत में से रुअ्याए सालेहा उ़मूमन उन लोगों को नज़र आते हैं जो ख़ुद सच्चे होते हैं, झूठ से बचते हैं। सच्चे ख़्वाबों को देखकर दिल में बुरे ख़यालात, अच्छाई से नफ़रत, इन्क़बाज़, तकद्दुर, परेशान ख़्याली और शदीद ख़ौफ़ जैसी कैफ़ियात पैदा नहीं होतीं। अहलाम, यानी ख़्वाब, ख़ुसूसन बुरे ख़्वाब शैतान की तरफ़ से होते हैं। जिस शख़्स को बुरा शैतानी ख़्वाब नज़र आये, वो ख़्वाब से बेदार होते ही अपने बायें जानिब तीन बार थूके(लुआ़बे दहन समेत फूंक मारे) और फिर वुज़ू करके शैतान के शर से अल्लाह की पनाह तलब करे, उठकर नमाज़ पढ़े(और इस तरह अल्लाह की पनाह में आ जाये) दोबारा सोने के लिये पहलू बदलकर लेटे और ऐसे ख़्वाब का तज़्किरा किसी और से न करे। इस तरह वो बदी की क़ुव्वतों के शर से मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़(सुरक्षित) हो जायेगा, इन्शाअल्लाह!

43. ख़्वाब का बयान

كتاب الرؤيا

(5897) हज़रत अबू सलमा(रज़ि.) बयान करते हैं मैं ख़्वाब देखता तो उससे मुझे बुख़ार का लरज़ा हो जाता, लेकिन मुझ पर कपड़ा नहीं डाला जाता था यहाँ तक कि मेरी मुलाक़ात हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) से हुई तो मैंने उन्हें अपनी कैफ़ियत बताई तो उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'पसन्दीदा और अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से है और परागन्दा, डरावना ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है। तो जब किसी को ऐसा ख़्वाब नज़र आये जो उसको नागवार और नापसन्दीदा हो तो वो बायें तरफ़ तीन बार थूक दे और उसके शर व नुक़सान से अल्लाह की पनाह में आये तो वो उसको नुक़सान नहीं पहुँचायेगा।'

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ كُنْتُ أَرَى الرُّؤْيَا أُعْرَى مِنْهَا غَيْرَ أَنِّي لاَ أُزَمَّلُ حَتَّى لَقِيتُ أَبَا قَتَادَةَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " الرُّؤْيَا مِنَ اللَّهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمْ حُلْمًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفُثْ عَنْ يَسَارِهِ ثَلاَثًا وَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ " .

(5898) हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान करते हैं लेकिन इस रिवायत में हज़रत अबू सलमा(रज़ि.) का ये क़ौल बयान नहीं किया गया, मैं ख़्वाब

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، مَوْلَى آلِ طَلْحَةَ وَعَبْدِ رَبِّهِ وَيَحْيَى ابْنَىْ سَعِيدٍ وَمُحَمَّدِ بْنِ

عَمْرِو بْنِ عَلْقَمَةَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . مِثْلَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِهِمْ قَوْلَ أَبِي سَلَمَةَ كُنْتُ أَرَى الرُّؤْيَا أُعْرَى مِنْهَا غَيْرَ أَنِّي لاَ أُزَمَّلُ .

देखता, उससे मुझे बुख़ार का लरज़ा चढ़ जाता, लेकिन मुझ पर कपड़ा नहीं डाला जाता था।

(सहीह बुख़ारी : 5747, 6984, 6995, 7005, 7044, अबू दाऊद : 5021, तिर्मिज़ी : 2277)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمَا أُعْرَى مِنْهَا . وَزَادَ فِي حَدِيثِ يُونُسَ " فَلْيَبْصُقْ عَلَى يَسَارِهِ حِينَ يَهُبُّ مِنْ نَوْمِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ " .

(5899) इमाम साहब यही रिवायत तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं, दो उस्तादों की हदीस़ में ये नहीं है, इससे मुझे बुख़ार का लरज़ा चढ़ जाता और यूनुस की हदीस़ में ये इज़ाफ़ा है, 'जब वो अपनी नींद से बेदार हो तो अपने बायें पहलू पर तीन बार थूके।'

फ़ायदा : अहले सुन्नत के नज़दीक ख़्वाब की हक़ीक़त ये है कि अल्लाह तआला सोने वाले के दिल में कुछ ख़्यालात व तसव्वुरात पैदा कर देता है, जैसाकि वो जागने वाले के दिलो-दिमाग़ में भी कुछ ख़्यालात व तसव्वुरात पैदा करता है, नींद हो या बेदारी हर जगह उसका तख़्लीक़े अमल काम करता है और ये अफ़्कार व तसव्वुरात कुछ हक़ाइक़ के लिये अलामत होते हैं। जैसे दूध, इल्म की अलामत है और लिबास, दीनदारी की अलामत है। लेकिन जो ख़्वाब इंसान के लिये मसर्रत व शादमानी का बाइस़ हों, उनमें शैतान का दख़ल नहीं होता। उनका सबब अल्लाह की तरफ़ से बशारत है और जो ख़्वाब इंसान के लिये नागवारी और ज़हनी इन्तिशार व परागन्दगी का बाइस़ बनते हैं वो अगरचे अल्लाह की तख़्लीक़ हैं। लेकिन ज़ाहिरी तौर पर उनमें शैतान का दख़ल होता है, इसलिये उनको शैतान की तरफ़ मन्सूब कर दिया जाता है और उनमें इम्तियाज़ के लिये आम तौर पर अच्छे ख़्वाबों को रुअ्या का और बुरे ख़्वाबों को हिल्म का नाम दिया जाता है।

जिनका हल ये है कि इंसान दिल की गहराई से अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जह हो और पहलू बदल कर बायें तरफ़ तीन बार थूक दे और अऊज़ुबिल्लाह पढ़े, उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। चूंकि हज़रत अबू सलमा(रज़ि.) को इस इलाज और हल का इल्म नहीं था इसलिये ख़ौफ़ और दहशत की वजह से उन्हें बुख़ार का लरज़ा चढ़ जाता, अगरचे तपज़दा की तरह उन पर कपड़ा नहीं

डाला जाता था। अलग-अलग हदीसों को अगर सामने रखा जाये तो ये साबित होता है कि नागवार ज़हन को परागन्दा या कबीदा ख़ातिर करने वाला ख़्वाब नज़र आने की सूरत में एक इंसान को छ: काम करना चाहिये(1) उसके शर से अल्लाह की पनाह माँगे(2) अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़े(3) बायें तरफ़ तीन बार थूके(4) ये ख़्वाब किसी को न सुनाये(5) उठकर नमाज़ पढ़े(6) और अपना पहलू बदल ले।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ بِلاَلٍ - عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " الرُّؤْيَا مِنَ اللَّهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفِثْ عَنْ يَسَارِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ وَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ ".فَقَالَ إِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا أَثْقَلَ عَلَىَّ مِنْ جَبَلٍ فَمَا هُوَ إِلاَّ أَنْ سَمِعْتُ بِهَذَا الْحَدِيثِ فَمَا أُبَالِيهَا .

(5900) हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है जो तुममें से कोई बुरा ख़्वाब देखे तो तीन बार बायें तरफ़ थूके और उसके शर से अल्लाह की पनाह तलब करे तो वो उसे नुक़सान नहीं पहुँचायेगा।' अबू सलमा(रज़ि.) कहते हैं, मैं ख़्वाब को अपने लिये पहाड़ से भी ज़्यादा भारी ख़्याल करता था तो जब मैंने ये हदीस़ सुन ली तो अब मुझे ख़्वाब की कोई परवाह नहीं है।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ يَعْنِي الثَّقَفِيَّ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ الثَّقَفِيِّ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ فَإِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ اللَّيْثِ وَابْنِ نُمَيْرٍ قَوْلُ أَبِي سَلَمَةَ إِلَى آخِرِ الْحَدِيثِ . وَزَادَ ابْنُ

(5901) इमाम साहब यही रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, स़क़फ़ी की रिवायत में अबू सलमा(रज़ि.) का क़ौल है, यक़ीनन मैं ख़्वाब देखता था, लेकिन लैस़ और इब्ने नुमैर की रिवायत में अबू सलमा(रज़ि.) का ये सारा क़ौल ही मौजूद नहीं है। इब्ने रुम्ह की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, 'वो उस पहलू को बदल ले, जिस पर लेटा हुआ था।'

رُمْحٍ فِي رِوَايَةِ هَذَا الْحَدِيثِ " وَلْيَتَحَوَّلْ عَنْ جَنْبِهِ الَّذِي كَانَ عَلَيْهِ".

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللَّهِ وَالرُّؤْيَا السَّوْءُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَمَنْ رَأَى رُؤْيَا فَكَرِهَ مِنْهَا شَيْئًا فَلْيَنْفِثْ عَنْ يَسَارِهِ وَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ لاَ تَضُرُّهُ وَلاَ يُخْبِرْ بِهَا أَحَدًا فَإِنْ رَأَى رُؤْيَا حَسَنَةً فَلْيُبْشِرْ وَلاَ يُخْبِرْ إِلاَّ مَنْ يُحِبُّ " .

(5902) हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है तो जिसने ख़्वाब देखा और उसका कुछ हिस्सा उस पर नागवार गुज़रा तो वो बायें तरफ़ थूक दे और शैतान से अल्लाह की पनाह में आये, वो उसको नुक़सान नहीं पहुँचायेगा और उससे किसी को आगाह न करे, किसी को न बताये और अगर अच्छा ख़्वाब देखे तो ख़ुश हो जाये और सिर्फ़ उसको बताये जो उससे मुहब्बत करता हो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ خَلاَّدٍ الْبَاهِلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَكَمِ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ إِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا تُمْرِضُنِي - قَالَ - فَلَقِيتُ أَبَا قَتَادَةَ فَقَالَ وَأَنَا كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا فَتُمْرِضُنِي حَتَّى سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللَّهِ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يُحِبُّ فَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا إِلاَّ مَنْ يُحِبُّ وَإِنْ رَأَى

(5903) हज़रत अबू सलमा(रज़ि.) बयान करते हैं मैं ख़्वाब देखता था जो मुझे बीमार कर देता तो मैं हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) से मिला। उन्होंने कहा, मैं भी ख़्वाब देखता, जो मुझे बीमार कर देता। यहाँ तक कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है और जब तुममें से कोई पसन्दीदा ख़्वाब देखे तो सिर्फ़ उसको बताये जो उससे मुहब्बत करता है और अगर नापसन्दीदा ख़्वाब देखे तो अपने बायें तरफ़ तीन बार थूके और शैतान के शर और ख़्वाब के शर से अल्लाह की पनाह माँगे और ख़्वाब

مَا يَكْرَهُ فَلْيَتْفِلْ عَنْ يَسَارِهِ ثَلاَثًا وَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّهَا وَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا أَحَدًا فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ " .

किसी को न बताये तो वो उसे नुक़सान नहीं पहुँचायेगा।'

फ़ायदा : ला युख़्बिरु इल्ला मंय्युहिब्बु : अगर इंसान अपने से मुहब्बत करने वाले को ख़्वाब बतायेगा तो वो पूरे हज़्म व एहतियात के साथ, मुहब्बत के तक़ाज़ों के मुताबिक़ अच्छी ताबीर बतायेगा, जो इंसान के लिये ख़ुशी और मसर्रत का बाइस़ बनेगी। लेकिन अगर किसी ऐसे शख़्स को ख़्वाब सुनायेगा जो उसको पसंद नहीं करता तो वो मलाल या हसद और बुग़्ज़ की बिना पर ग़लत ताबीर लगायेगा। जो इंसान के लिये ग़म व हुज़्न या परेशानी का बाइस़ बनेगी और अगर नागवार ख़्वाब की सूरत में बायें तरफ़ तीन बार थूकेगा और अऊज़ुबिल्लाहि मिन शर्रिश्शैतानि व शर्रिहा अल्लाह पर ऐतमाद और भरोसा करते हुए पढ़ेगा तो वो ख़्वाब उसके लिये तकलीफ़ का बाइस़ नहीं बनेगा और अगर किसी को बतायेगा और वो उसकी नागवार ताबीर लगा देगा तो ये ताबीर उसके लिये ग़म व अन्दोह का बाइस़ बनेगी। नीज़ कई बार ताबीर पहले ताबीर लगाने वाले की ताबीर के मुताबिक़ होती है। इसलिये उसको ताबीर किसी नेक और मुहब्बत करने वाले मुअब्बिर(ताबीर करने वाले) से लगवानी चाहिये।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي، الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يَكْرَهُهَا فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ ثَلاَثًا وَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ثَلاَثًا وَلْيَتَحَوَّلْ عَنْ جَنْبِهِ الَّذِي كَانَ عَلَيْهِ " .

(5904) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नागवार ख़्वाब देखे तो बायें तरफ़ तीन बार थूके और तीन बार अल्लाह से शैतान(के शर) से पनाह माँगे और जिस पहलू पर था उसको बदल ले।'

(अबू दाऊद : 5025, इब्ने माजह : 3908)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا اقْتَرَبَ الزَّمَانُ

(5905) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब ज़माना क़रीब हो जायेगा, मुसलमान का ख़्वाब झूठा नहीं होगा और सबसे अच्छा ख़्वाब तुममें से उसी का होगा जो सबसे सच्चा होगा और मुसलमान

لَمْ تَكَدْ رُؤْيَا الْمُسْلِمِ تَكْذِبُ وَأَصْدَقُكُمْ رُؤْيَا أَصْدَقُكُمْ حَدِيثًا وَرُؤْيَا الْمُسْلِمِ جُزْءٌ مِنْ خَمْسٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ وَالرُّؤْيَا ثَلاَثَةٌ فَرُؤْيَا الصَّالِحَةِ بُشْرَى مِنَ اللَّهِ وَرُؤْيَا تَحْزِينٌ مِنَ الشَّيْطَانِ وَرُؤْيَا مِمَّا يُحَدِّثُ الْمَرْءُ نَفْسَهُ فَإِنْ رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يَكْرَهُ فَلْيَقُمْ فَلْيُصَلِّ وَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا النَّاسَ " . قَالَ " وَأُحِبُّ الْقَيْدَ وَأَكْرَهُ الْغُلَّ وَالْقَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ " . فَلاَ أَدْرِي هُوَ فِي الْحَدِيثِ أَمْ قَالَهُ ابْنُ سِيرِينَ .

का ख़्वाब नुबूवत के हिस्सों में से पैंतालीसवाँ(45) जुज़ है और ख़्वाब तीन क़िस्म के हैं। अच्छा ख़्वाब तो अल्लाह की तरफ़ से बशारत है और एक ख़्वाब शैतान की तरफ़ से ग़मज़दा करने के लिये होता है और एक ख़्वाब वो है जो इंसान की ख़ुद कलामी का नतीजा है, यानी उसके ख़्यालात व तसव्वुरात का परतो(अक्स) है। सो अगर तुममें से कोई मक्रूह(नापसंदीदा) ख़्वाब देखे तो उठकर नमाज़ पढ़े और लोगों को ख़्वाब न बताये।' आपने फ़रमाया, 'मैं बेड़ी को पसंद करता हूँ और तोक़ देखना नापसंद करता हूँ। बेड़ी दीन में साबित क़दमी की अलामत है।' रावी अब्दुल वह्हाब सक़फ़ी कहते हैं, मालूम नहीं आख़िरी बात हदीस का हिस्सा है या इब्ने सीरीन का क़ौल है।

(अबू दाऊद : 5019, तिर्मिज़ी : 2270)

फ़ायदा : इज़क़्तरबज़्ज़मान : जब ज़माना क़रीब हो जायेगा की तफ़्सीर में ये अक़्वाल हैं :

(1) इससे मुराद दिन और रात का मौसमे बहार में तक़रीबन बराबर बराबर होना है, जबकि इंसान की चारों ख़लतें, ख़ून बल्ग़म, सोदा और सुफ़रा के ऐतिदाल व तवाज़ुन की वजह से तबाअ में ऐतिदाल होता है तो ख़्वाब भी सच्चे नज़र आते हैं।

(2) जब वुक़ूअे क़यामत का ज़माना क़रीब आ जायेगा, अस्हाबे इल्म व फ़ज़्ल बहुत कम रह जायेंगे। फ़ित्ना व फ़साद के बाइस दीन के आसार और इम्तियाज़ात मिट जायेंगे और मुसलमान दीनी मालूमात के मोहताज होंगे तो ऐसे हालात में सच्चे ख़्वाबों के ज़रिये उनकी राहनुमाई की जायेगी।

(3) क़ुर्बे क़यामत की बिना पर जब ज़माना बहुत तेज़ी से गुज़रेगा, साल महीने के बराबर महसूस होगा और माह, हफ़्ते के बराबर होगा और हफ़्ता एक दिन की तरह गुज़र जायेगा।

(4) महदी(अलै.) के नुज़ूल के सबब दुनिया में अद्ल व इंसाफ़ और अमन व सुकून बर्पा होगा और रिज़्क़ की फ़रावानी और ख़ुशहाली की बिना पर गुज़रने वाले दिनों को पता ही नहीं चलेगा।

(5) ईसा(अलै.) के साथ रहने वाले लोग जिनमें आपस में प्यार व मुहब्बत होगा, अदावत व नफ़रत ख़त्म हो जायेगी और वो सच बोलेंगे, उनके ख़्वाब भी सच्चे होंगे और उनका ख़्वाब झूठा नहीं होगा। क्योंकि जब काद पर नफ़ी दाख़िल हो तो इससे मुराद बिल्कुल्लिया नफ़ी होती है कि ये नहीं होगा, इसलिये लम तकद् रुअ्यल् मुस्लिम तक्ज़िब का मानी होगा, सहीह मुसलमानों का कोई ख़्वाब झूठा नहीं होगा। अस्दकुकुम रुअ्या अस्दकुकुम हदीसा तुममें से सच्चे ख़्वाब उन्हीं के होंगे, जो सच बोलते होंगे, क्योंकि सच्चा मुसलमान झूठ नहीं बोलता, इसलिये उसका दिल रोशन होता है और इल्म व शऊर और आगाही का मल्का सहीह होता है, इसलिये उस पर सहीह बातों का अक्स पड़ता है। झूठे का दिल फ़ासिद और स्याह होता है, इसलिये इस पर मानी और मतलब का सहीह अक्स नहीं पड़ता, इसलिये उसका ख़्वाब भी उमूमन परागन्दा ख़्याली पर मबनी होता है, सच्चे इंसान का ख़्वाब बहुत कम परागन्दा ख़्याली का शिकार होता है।

रुअ्यल मुस्लिम जुज़्उम् मिन ख़म्सिन व अरबईन जुज़्उन मिनन्नबुव्वह : सहीह मुसलमान का ख़्वाब नुबूवत का पैंतालीसवाँ हिस्सा है, आम रिवायात की रू से छियालीसवाँ हिस्सा है, कुछ की रू से सतरहवाँ हिस्सा है, कुछ रिवायात में इससे कमो-बेश हिस्से आये हैं और बक़ौल हाफ़िज़ इब्ने हजर(रह.) इसमें पन्द्रह अक़्वाल आये हैं। अल्लाह तआला का नबी बहुत सी सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होता है और उसकी एक सिफ़त ये भी है, उसको सच्चे ख़्वाब नज़र आते हैं जिनके ज़रिये उसको किसी चीज़ का क़तई और यक़ीनी इल्म दे दिया जाता है और अब भी कुछ सच्चे मुसलमानों को ख़्वाब के ज़रिये सहीह मालूमात से आगाह कर दिया जाता है, लेकिन इसमें क़तइय्यत और यक़ीन नहीं होता और ख़्वाब देखने वाले के ऐतबार से उसके अंदर यक़ीन व वसूक़ की निस्बत बदलती रहती है। इसलिये आपने भी अलग-अलग निस्बतें बयान की हैं, लेकिन ये बात तय है किसी के अंदर अगर नुबूवत का कोई वस्फ़ कमी व बेशी के साथ पाया जाता है तो वो नबी नहीं बन जाता। कुछ हैवानों में इंसान की कुछ सिफ़ात पाई जाती हैं तो वो इंसान नहीं बन जाते, जिस तरह कुछ इंसानों में हैवानी सिफ़ात पाई जाती हैं तो वो हैवान नहीं बन जाते और आम तौर पर उलमा ने छियालीसवाँ हिस्से को तरजीह दी है। क्योंकि आपके तईस साल दौरे नुबूवत से पहले छः माह आपको सच्चे ख़्वाब नज़र आते रहे हैं। फिर वह्य की शुरूआत हुई, इस तरह ख़्वाबों की निस्बत छियालीसवाँ हिस्सा ठहरे।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فِي الْحَدِيثِ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَيُعْجِبُنِي الْقَيْدُ وَأَكْرَهُ الْغُلَّ وَالْقَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ ‏.‏ وَقَالَ

(5906) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें है हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने कहा, मुझे ख़्वाब में बेड़ी नज़र आना पसन्दीदा है और तौक़ का आना

النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

नापसन्द है और बेड़ी दीन में साबित क़दमी है और नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मोमिन का ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'
(तिर्मिज़ी : 2291)

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، وَهِشَامٌ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ إِذَا اقْتَرَبَ الزَّمَانُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم .

(5907) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने बताया, जब ज़माना क़रीब आ जायेगा, आगे मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान की, लेकिन उसकी निस्बत नबी(ﷺ) की तरफ़ नहीं की।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَأَدْرَجَ فِي الْحَدِيثِ قَوْلَهُ وَأَكْرَهُ الْغُلَّ . إِلَى تَمَامِ الْكَلاَمِ وَلَمْ يَذْكُرِ " الرُّؤْيَا جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

(5908) यही रिवायत इमाम साहब को एक और उस्ताद ने सुनाई और उसमें हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) का ये क़ौल भी आख़िर तक दर्ज कर दिया कि मैं तौक़ को नापसन्द करता हूँ और ये बयान नहीं किया, 'ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'
(सहीह बुख़ारी : 7017)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَأَبُو دَاوُدَ ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ، اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ

(5909) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, हज़रत उबादा बिन सामित(रज़ि.) ने बताया रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मोमिन का ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'
(सहीह बुख़ारी : 6988, अबू दाऊद : 5018, तिर्मिज़ी : 2271)

عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ، بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَ ذَلِكَ .

(5910) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) नबी(ﷺ) से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ، الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

(5911) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बिला शुब्हा मोमिन का ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'
(इब्ने माजह : 3894)

وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ الْخَلِيلِ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رُؤْيَا الْمُسْلِمِ يَرَاهَا أَوْ تُرَى لَهُ " . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ مُسْهِرٍ " الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

(5912) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमान ख़्वाब ख़ुद देखे या उसके बारे में दिखाया जाये' और इब्ने मुस्हिर की रिवायत में है, 'अच्छा ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ

(5913) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'नेक आदमी का ख़्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक जुज़ है।'

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رُؤْيَا الرَّجُلِ الصَّالِحِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، - يَعْنِي ابْنَ الْمُبَارَكِ - ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا حَرْبٌ، - يَعْنِي ابْنَ شَدَّادٍ - كِلاَهُمَا عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(5914) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों से यहया बिन अबी कसीर ही की सनद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِيهِ

(5915) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से अब्दुल्लाह बिन यहया बिन अबी कसीर की तरह बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، قَالاَ جَمِيعًا حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

(5916) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा ख़्वाब नुबूवत के सत्तर हिस्सों में से हिस्सा एक है।'
(इब्ने माजह : 3897)

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(5917) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ، وَابْنُ، رُمْحٍ عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ، أَبِي فُدَيْكٍ أَخْبَرَنَا الضَّحَّاكُ، - يَعْنِي ابْنَ عُثْمَانَ - كِلاَهُمَا عَنْ نَافِعٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ اللَّيْثِ قَالَ نَافِعٌ حَسِبْتُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ " جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ " .

(5918) इमाम साहब तीन उस्तादों की दो सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं लैस़ की रिवायत है, नाफ़ेअ(रह.) ने कहा, मेरा ख़याल है हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) ने कहा,(नुबूवत के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है।)

باب قَوْلِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي "

बाब 1 : नबी(ﷺ) का फ़रमान, 'जिसने ख़्वाब में मुझे देखा वाक़ेई उसने मुझे देखा

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ، سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْعَتَكِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، وَهِشَامٌ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ بِي

(5919) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने ख़्वाब में मुझे देखा वाक़ेई उसने मुझे देखा, क्योंकि शैतान मेरा मिस़्ल नहीं बन सकता।'(मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता)

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَسَيَرَانِي فِي الْيَقَظَةِ أَوْ لَكَأَنَّمَا رَآنِي فِي الْيَقَظَةِ لاَ يَتَمَثَّلُ الشَّيْطَانُ بِي" .

(5920) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जिसने मुझे ख़्वाब में देखा वो यक़ीनन मुझे बेदारी में देखेगा या गोया उसने मुझे बेदारी में देखा, शैतान मेरी मिस़्ल नहीं बन सकता।'

(सहीह बुख़ारी : 6996, 6993, अबू दाऊद : 5023)

फ़ायदा : मन रआनी फ़िल्मनाम : आपकी रुअ्यत(आपको देखने) के बारे में दो नज़रियात हैं(1) इमाम मुहम्मद बिन सीरीन, इमाम बुख़ारी, क़ाज़ी अयाज़ और एक जमाअ़त का नज़रिया ये है कि इस हदीस़ का ताल्लुक़ उस रुअ्यत(देखने) से है जिसमें ख़्वाब देखने वाला आपको आपकी मशहूर व मअ़रूफ़ शक्ल व सूरत में देखता है।

(2) एक जमाअ़त का नज़रिया ये है आपके दीदार के लिये ये शर्त नहीं है कि ख़्वाब देखने वाला, आपको अपनी असली मअ़रूफ़ और मशहूर शक्ल व सूरत में देखे, अगर देखने वाले को आपके होने का यक़ीन हो जाता है तो आप किसी भी शक्ल व सूरत में नज़र आयें आप ही होंगे।

फ़क़द रआनी : कुछ हज़रात के नज़दीक देखने वाले ने आप ही की ज़ात को देखा और कुछ के नज़दीक आपकी मिस़ाल व सूरत को देखा और क़ाज़ी इब्नुल अ़रबी मालिकी का ख़्याल है, जिसने आपको आपकी मअ़रूफ़ सिफ़ात में देखा, उसने आपकी ज़ात को देखा। जिसने किसी और सिफ़त में देखा, उसने आपकी मिस़ाल और अ़क्स देखा और बक़ौल इमाम ग़ज़ाली, देखने वाला हर सूरत और हर हालत मं आपके अ़क्स को देखता है, वो आपकी रूह या शख़्सियत नहीं देखता।(उ़म्दतुल क़ारी जिल्द 2, पेज नं. 155)

लेकिन ख़्वाब की हालत में आप अगर किसी चीज़ की ख़बर दें या अम्र व नह्य फ़रमायें तो चूंकि उसमें ख़्वाब देखने वाले के फ़हम व फ़रासत और तख़य्युल का अस़र होता है, इसलिये वो कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ होने की सूरत में तो क़ाबिले अ़मल होगा और मुख़ालिफ़ होने की सूरत में उसका अपना तख़य्युल और तसव्वुर होगा जैसाकि एक आदमी ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे ख़्वाब में फ़रमाया है, 'शराब पियो।' तो इमाम अ़ली मुत्तक़ी मुसन्निफ़ कन्जुल उ़म्माल ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तो शराब न पियो फ़रमाया, लेकिन शैतान ने तेरे ख़्याले तसव्वुर में शराब पियो, डाल दिया क्योंकि तू शराब पीता है।(फ़ैज़ुल बारी जिल्द 1, पेज नं. 203) और ख़्वाब में आपको देखने से कोई सहाबी भी नहीं बनेगा, क्योंकि सहाबी वही है जिसने आपका दीदार आ़म दीदार की तरह आपकी ज़िन्दगी में मुसलमान होने की हालत में किया हो, हाँ जिसने आपकी ज़िन्दगी में आपको ख़्वाब में देखा उसको बेदारी की हालत में आपको देखने का मौक़ा मिल जायेगा तो वो सहाबी बन जायेगा। सयरानी फ़िल्यक़ज़ह का यही मफ़्हूम है।

लेकिन अगर आपकी ज़िन्दगी के बाद ख़्वाब में देखा फिर आपको बेदारी में भी देख लिया, जैसाकि अ़ल्लामा आलूसी का दावा है कि ख़्वाब में ज़ियारत करने वालों को आपकी ज़ियारत बेदारी में भी हुई ।(रूहुल मआ़नी जिल्द 22, तबअ़ 4, पेज नं. 36) तो फिर ये इंसान सहाबी नहीं होगा। इमाम शअ़्रानी ने लिखा है, मैंने नबी(ﷺ) से आठ रुफ़क़ा के साथ बेदारी में सहीह बुख़ारी पढ़ी है।(फ़ैज़ुल

बारी जिल्द 1, पेज नं. 214) लेकिन अजीब बात है बहुत से लोग ये दावा करते हैं कि ख़्वाब में उन्हें नबी(ﷺ) की ज़ियारत हुई और बाद में उन्हें बेदारी में ज़ियारत हुई और जिन कामों में वो परेशान थे उन्होंने उन कामों से मुताल्लिक़ नबी(ﷺ) से सवाल किया और आपने उनकी तश्वीश दूर फ़रमाई और उन कामों को अच्छी तरह वज़ाहत फ़रमाई। जबकि सूरते हाल ये है ख़ुलफ़ाए राशिदीन अहले बैत सहाबा किराम और फ़ुक़्हा व ताबेईन, अइम्म-ए-अरबआ बहुत से कामों में आपस में मुख़ालिफ़ थे। कुछ जगह मामले ने तूल भी पकड़ा, लेकिन आप बेदारी में किसी को नहीं मिले, न आपने उनके इख़्तिलाफ़ दूर फ़रमाया और न उनकी राहनुमाई की। कम से कम आप हज़रत फ़ातिमा का हज़रत अबू बकर से विरासत के मसले में इख़्तिलाफ़ हल फ़रमाते। जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन में मुसलमानों की राहनुमाई फ़रमाते। हज़रत आइशा(रज़ि.) हज़रत अली और हज़रत मुआविया को इस मुश्किल से निकलने की सूरत बताते, क़ातिलीने उसमान का क़ज़िया(मामला) हल कर देते और हज़रत हुसैन(रज़ि.) को कूफ़ियों की बेवफ़ाई से आगाह फ़रमाते। उन अज़ीज़ो-अक़ारिब और रुफ़क़ा से तो मुलाक़ात नहीं फ़रमाई लेकिन बाद वालों से बाइसे फ़हम बातचीत करके उनकी परेशानी दूर फ़रमाते रहे।

(5921) अबू सलमा(रज़ि.) कहते हैं हज़रत अबू क़तादा(रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने मुझे देखा उसने हक़(सहीह ख़्वाब) देखा।'

وَقَالَ فَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ قَالَ أَبُو قَتَادَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ " .

(5922) इमाम साहब मज़्कूरा बाला दोनों हदीसें एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنَا عَمِّي، . فَذَكَرَ الْحَدِيثَيْنِ جَمِيعًا بِإِسْنَادَيْهِمَا سَوَاءً مِثْلَ حَدِيثِ يُونُسَ .

(5923) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने नींद में मुझे देखा, वाक़ेई मुझे देखा। क्योंकि शैतान के लिये मुम्किन नहीं है कि मेरी शक्ल की नक़ल उतारे।' और आपने फ़रमाया, 'अगर किसी को परागन्दा ख़्वाब नज़र आये तो वो अपने साथ नींद में शैतान के

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي، الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ رَآنِي فِي النَّوْمِ فَقَدْ رَآنِي إِنَّهُ لاَ يَنْبَغِي لِلشَّيْطَانِ أَنْ يَتَمَثَّلَ فِي

صُورَتِي " . وَقَالَ " إِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يُخْبِرْ أَحَدًا بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِهِ فِي الْمَنَامِ " .

खलण्डरेपन का किसी से इज़हार न करे।'
(इब्ने माजह : 3902)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ رَآنِي فِي النَّوْمِ فَقَدْ رَآنِي فَإِنَّهُ لاَ يَنْبَغِي لِلشَّيْطَانِ أَنْ يَتَشَبَّهَ بِي " .

(5924) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने नींद में मुझे देखा, वाक़ेई मुझे देखा, क्योंकि शैतान के लिये मुम्किन नहीं है कि वो मेरी मुशाबिहत इख़्तियार करे।'

باب لاَ يُخْبِرُ بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِهِ فِي الْمَنَامِ

बाब 2 : नींद में शैतान की अपने साथ छेड़ख़ानी की ख़बर किसी को न दे

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي، الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ لأَعْرَابِيٍّ جَاءَهُ فَقَالَ إِنِّي حَلَمْتُ أَنَّ رَأْسِي قُطِعَ فَأَنَا أَتَّبِعُهُ فَزَجَرَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ "لاَ تُخْبِرْ بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِكَ فِي الْمَنَامِ " .

(5925) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है कि आपने एक आ़राबी को जिसने आपके पास आकर कहा, मैंने ख़्वाब देखा है, मेरा सर काट दिया गया है और मैं उसका पीछा कर रहा हूँ। नबी(ﷺ) ने उसे डांटा और फ़रमाया, 'अपने साथ नींद में शैतान की छेड़ख़ानी की ख़बर किसी को न दो।'
(इब्ने माजह : 3913)

फ़ायदा : सर कटने की ताबीर ख़्वाब देने वाले के हालात के इख़्तिलाफ़ की बिना पर मुख़्तलिफ़ हो सकती है। इमाम माज़री कहते हैं, ये परागन्दा ख़्वाब भी हो सकता है, जिसका मक़सद इंसान को रंज व ग़म में मुब्तला करना होता है और इसका मक़सद नेमत और ख़ुशहाली से महरूमी भी हो सकता है। ये भी ताबीर हो सकती है कि उसका सरदार और आक़ा फ़ौत हो जायेगा, उसका इक़्तिदार ख़त्म हो जायेगा और उसके तमाम हालात बदल जायेंगे लेकिन अगर ये ख़्वाब देखने वाला ग़ुलाम हो तो ये

ताबीर हो सकती है कि वो आज़ाद हो जायेगा। अगर बीमार देखे तो वो शिफ़ायाब हो जायेगा। अगर मक़रूज़ देखे तो उसका क़र्ज़ अदा हो जायेगा। अगर उसने हज नहीं किया तो वो हज करेगा, अगर ये परेशान हाल देखे तो उसे मसर्रत मिलेगी, अगर ख़ौफ़ ज़दा देखे तो उसे अमन हासिल होगा। इब्ने कुतैबा ने अपनी किताब 'उसूलुल इबारह' में लिखा है कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने ख़्वाब में देखा है कि मेरा सर काट दिया गया है और मैं उसे अपनी एक आँख से देख रहा हूँ। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हँस कर फ़रमाया, 'किस आँख से देख रहा था? कुछ अरसा बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) वफ़ात पा गये और लोगों ने ख़्वाब की ताबीर ये लगाई कि सर आप थे और उसकी तरफ़ देखना आपकी सुन्नत की पैरवी है।(तक्मिला, जिल्द 4, पेज नं. 455)

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ رَأْسِي ضُرِبَ فَتَدَحْرَجَ فَاشْتَدَدْتُ عَلَى أَثَرِهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِلأَعْرَابِيِّ " لاَ تُحَدِّثِ النَّاسَ بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِكَ فِي مَنَامِكَ " . وَقَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم بَعْدُ يَخْطُبُ فَقَالَ " لاَ يُحَدِّثَنَّ أَحَدُكُمْ بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِهِ فِي مَنَامِهِ " .

(5926) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, एक जंगली शख़्स नबी(ﷺ) के पास आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने ख़्वाब में देखा है कि मेरा सर कुचल दिया गया है या अलग कर दिया गया है और वो लुढ़कता हुआ जा रहा है और मैं तेज़ी से उसके पीछे भागता हूँ। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बदवी से फ़रमाया, 'शैतान ने नींद में तेरे साथ छेड़ख़ानी की है, लोगों को उसके बारे में न बताओ।' और हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, बाद में मैंने आपसे ये ख़िताब सुना, 'तुममें से कोई नींद में अपने साथ शैतान की छेड़ख़ानी का ज़िक्र न करे।'
(इब्ने माजह : 3912)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ

(5927) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने नींद में देखा है, गोया कि मेरा सर काट दिया गया है। तो नबी(ﷺ) हँस पड़े और फ़रमाया,

اللَّهِ رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ رَأْسِي قُطِعَ . قَالَ فَضَحِكَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ " إِذَا لَعِبَ الشَّيْطَانُ بِأَحَدِكُمْ فِي مَنَامِهِ فَلاَ يُحَدِّثْ بِهِ النَّاسَ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ " إِذَا لُعِبَ بِأَحَدِكُمْ". وَلَمْ يَذْكُرِ الشَّيْطَانَ .

'जब तुममें से किसी के साथ शैतान उसकी नींद में अठकेलियाँ करे तो लोगों को न बताये।' और अबू बक्र की रिवायत में शैतान का लफ़्ज़ नहीं है, सिर्फ़ इतना है, 'जब तुममें से किसी के साथ अठकेली की जाये।'

باب فِي تَأْوِيلِ الرُّؤْيَا

बाब 3 : ख़्वाब की ताबीर

حَدَّثَنَا حَاجِبُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنِ الزُّبَيْدِيِّ، أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ، أَوْ أَبَا هُرَيْرَةَ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَجُلاً، أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ح

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَرَى اللَّيْلَةَ فِي الْمَنَامِ ظُلَّةً تَنْطِفُ السَّمْنَ وَالْعَسَلَ فَأَرَى النَّاسَ يَتَكَفَّفُونَ مِنْهَا بِأَيْدِيهِمْ فَالْمُسْتَكْثِرُ وَالْمُسْتَقِلُّ وَأَرَى سَبَبًا وَاصِلاً مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ فَأَرَاكَ أَخَذْتَ بِهِ فَعَلَوْتَ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ مِنْ

(5928) हज़रत इब्ने अब्बास या हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते थे कि एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया, एक दूसरे उस्ताद रिवायत करते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते थे, एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आज रात ख़्वाब में देखता हूँ, एक सायबान से घी और शहद टपक रहा है और मैं लोगों को देख रहा हूँ कि वो अपने-अपने चुल्लू में उससे ले रहे हैं, तो कोई ज़्यादा ले रहा है और कोई कम और मैं एक रस्सी देखता हूँ, जो आसमान से ज़मीन तक पहुँच रही है, सो मैं देखता हूँ, आपने रस्सी को पकड़ लिया और ऊपर चढ़ गये। फिर आपके बाद एक और आदमी ने उसे पकड़ा और चढ़ गया। फिर एक और आदमी ने उसे पकड़ा और ऊपर चढ़ गया। फिर उसे एक और आदमी ने पकड़ा तो उसके लिये रस्सी टूट गई। फिर उसको जोड़ दी गई तो वो भी ऊपर चढ़ गया। अबू बकर(रज़ि.) ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह

بَعْدِكَ فَعَلاَ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَعَلاَ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَانْقَطَعَ بِهِ ثُمَّ وُصِلَ لَهُ فَعَلاَ . قَالَ أَبُو بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ وَاللَّهِ لَتَدَعَنِّي فَلأَعْبُرَنَّهَا . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اعْبُرْهَا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ أَمَّا الظُّلَّةُ فَظُلَّةُ الإِسْلاَمِ وَأَمَّا الَّذِي يَنْطِفُ مِنَ السَّمْنِ وَالْعَسَلِ فَالْقُرْآنُ حَلاَوَتُهُ وَلِينُهُ وَأَمَّا مَا يَتَكَفَّفُ النَّاسُ مِنْ ذَلِكَ فَالْمُسْتَكْثِرُ مِنَ الْقُرْآنِ وَالْمُسْتَقِلُّ وَأَمَّا السَّبَبُ الْوَاصِلُ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ فَالْحَقُّ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ تَأْخُذُ بِهِ فَيُعْلِيكَ اللَّهُ بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ مِنْ بَعْدِكَ فَيَعْلُو بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَعْلُو بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَنْقَطِعُ بِهِ ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ فَيَعْلُو بِهِ . فَأَخْبِرْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ أَصَبْتُ أَمْ أَخْطَأْتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَصَبْتَ بَعْضًا وَأَخْطَأْتَ بَعْضًا " . قَالَ فَوَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَتُحَدِّثَنِّي مَا الَّذِي أَخْطَأْتُ قَالَ " لاَ تُقْسِمْ " .

के रसूल! मेरा बाप आप पर क़ुर्बान, अल्लाह की क़सम! आप मझे इजाज़त देंगे कि मैं इस ख़्वाब की ताबीर बताऊँ। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसकी ताबीर बयान करो।' अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, रहा सायबान, तो वो इस्लाम का सायबान है। रहा उससे टपकने वाला घी और शहद तो क़ुरआन है और उसकी शिरीनी और नर्मी, रहा लोगों का उससे चुल्लू भरना, तो क़ुरआन ज़्यादा या कम सीखना है, रही आसमान से ज़मीन तक पहुँचने वाली रस्सी, तो वो हक़ है। जिस पर आप क़ायम हैं, आप उसको अपनाते रहेंगे, सो अल्लाह आपको उसके ज़रिये ऊपर उठायेगा। फिर आपके बाद उसको एक आदमी लेगा(दीन पर चलेगा) और उसके ज़रिये बुलंद हो जायेगा। फिर उसको एक और आदमी अपनायेगा, वो उसके ज़रिये ऊपर चढ़ जायेगा। फिर इस दीन पर एक और आदमी चलेगा तो उसके लिये ये रस्सी टूट जायेगी, फिर उसके लिये जोड़ दी जायेगी तो ऊपर चढ़ जायेगा। तो ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर मेरा बाप क़ुर्बान, आप मुझे बतायें, मैंने सहीह ताबीर बयान की या चूक गया? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'कुछ ताबीर तूने सहीह बयान की है और कुछ चूक गये हो।' अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल! आप मेरी चूक से मुझे ज़रूर आगाह फ़रमायें? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़सम न उठाओ।'

(सहीह बुख़ारी : 7046, 7000, अबू दाऊद : 3267, 3269, 4633, इब्ने माजह : 3918)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) ज़ुल्लह : सायबान, बादल का टुकड़ा।(2) तन्तिफ़ु : टपक रहा है, क़तरा-क़तरा गिर रहा है।(3) **यतकफ़्फ़फ़ून** : लेने के लिये हथेलियाँ फैलाये हुए हैं।(4) **लतदअ़न्नी फ़-ल अअ़्बुरन्ना** : आप मुझे इसकी ताबीर बयान करने के लिये छोड़ देंगे, ताबीर बयान करने की इजाज़त देंगे। जिससे मालूम होता है, बड़े की मौजूदगी में छोटा उसकी इजाज़त से अपनी मालूमात बयान कर सकता है।

फ़ायदा : इस ख़्वाब की ताबीर में अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, सहीह ताबीर बयान की और किस जगह चूक गये, उसके बयान में उ़लमा में इख़्तिलाफ़ है। लेकिन इसके बारे में सहीह मौक़िफ़ और दुरुस्त राय यही है कि इससे तअ़र्रुज न किया जाये। जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इसकी वज़ाहत करना मुनासिब ख़्याल नहीं फ़रमाया तो हमें इसकी वज़ाहत की क्या ज़रूरत है? नीज़ अगर अबू बकर सिद्दीक़ जैसी शख़्सियत चूक सकती है, तो हम सेहत व सवाब तक पहुँचने का दावा कैसे कर सकते हैं? बक़ौल मौलाना सफ़ीउर्रहमान(रह.) सबब व असल को हक़ से ताबीर करना दुरुस्त नहीं है क्योंकि हक़ पर तो क़यामत तक एक गिरोह क़ायम रहेगा और ख़ुलफ़ाए सलासा के बाद हज़रत अ़ली भी हक़ पर थे बल्कि इससे मुराद ख़िलाफ़त अ़ला मिन्हाजुन्नुबुव्वह और उम्मत का उनके ख़िलाफ़त पर इत्तिफ़ाक़ है। हज़रत उ़समान की मुख़ालिफ़त हुई उनको ख़िलाफ़त से मअ़्ज़ूल करना चाहा लेकिन वो इसमें कामयाब नहीं हो सके, ख़लीफ़ा होने की हालत में उनको शहीद किया गया। हज़रत अ़ली ख़लीफ़-ए-बरहक़ थे लेकिन उन पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ नहीं हो सका।

इसलिये आपने उम्मत की मस्लिहत के लिये हज़रत अबू बकर(रज़ि.) के क़सम देने के बावजूद ग़लती की निशानदेही नहीं की।(मिन्नतुल मुन्इम : जिल्द 4, पेज नं. 17-18, का हाशिया)

(5929) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, ग़ज़्व-ए-उहुद से वापसी के वक़्त एक आदमी नबी(ﷺ) के पास आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! आज रात मैंने एक बादल का सायेदार टुकड़ा देखा है, जिससे घी और शहद टपक रहा है, आगे ऊपर वाली हदीस़ बयान की।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم مُنْصَرَفَهُ مِنْ أُحُدٍ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي رَأَيْتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ فِي الْمَنَامِ ظُلَّةً تَنْطِفُ السَّمْنَ وَالْعَسَلَ . بِمَعْنَى حَدِيثِ يُونُسَ .

(5930) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) या हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह.) कहते हैं, मअ़मर(रह.) कई बार, इब्ने अब्बास से बयान करते और कई बार अबू हुरैरह(रज़ि.) से बयान करते कि एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया और कहा, मैं आज रात एक सायबान देखता हूँ, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ، اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَوْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ كَانَ مَعْمَرٌ أَحْيَانًا يَقُولُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَأَحْيَانًا يَقُولُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ إِنِّي أَرَى اللَّيْلَةَ ظُلَّةً . بِمَعْنَى حَدِيثِهِمْ .

(5931) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) बहुत बार अपने साथियों से फ़रमाते, 'तुममें से जिसने ख़्वाब देखा है तो वो बयान करे, मैं उसके लिये, उसकी ताबीर लगाऊँ(बताऊँ)।' तो एक आदमी आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने एक सायबान देखा है, जैसाकि ऊपर ज़िक्र किये गये रावियों ने बयान किया है।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، -وَهُوَ ابْنُ كَثِيرٍ - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ مِمَّا يَقُولُ لأَصْحَابِهِ " مَنْ رَأَى مِنْكُمْ رُؤْيَا فَلْيَقُصَّهَا أَعْبُرْهَا لَهُ " . قَالَ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ رَأَيْتُ ظُلَّةً . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

बाब 4 : नबी(ﷺ) के ख़्वाब

باب رُؤْيَا النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

(5932) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक रात मैंने ख़्वाब में देखा, गोया कि हम उक़बा बिन राफ़ेअ़ के घर में हैं तो हमारे पास इब्ने ताब की ताज़ा खजूरों में से खजूरें लाई गईं तो मैंने ताबीर लगाई, दुनिया में हमारे

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رَأَيْتُ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِيمَا يَرَى النَّائِمُ كَأَنَّا فِي دَارِ عُقْبَةَ بْنِ رَافِعٍ فَأُتِينَا بِرُطَبٍ مِنْ

लिये रिफ़्अत(बुलंदी) है और आख़िरत में अच्छा अन्जाम और हमारा दीन पुख़्ता और मुकम्मल हो गया है।'

رُطَبِ ابْنِ طَابٍ فَأَوَّلْتُ الرِّفْعَةَ لَنَا فِي الدُّنْيَا وَالْعَاقِبَةَ فِي الآخِرَةِ وَأَنَّ دِينَنَا قَدْ طَابَ " .

(अबू दाऊद : 5025)

मुफ़रदातुल हदीस़ : रुतबिब्नि ता-ब : इब्ने ताब एक मदनी आदमी है, जिसकी तरफ़ खजूरों की एक क़िस्म मन्सूब है। जिसको अलग-अलग नाम दिये जाते थे। रुतबिब्नि ताब, तम्रुब्नि ताब, इज़्क़ुब्नि ताब, उ़रजूनुब्नि ताब।

फ़ायदा : ख़्वाब की ताबीर बयान की अलग-अलग सूरतें हैं :

(1) कई बार अल्फ़ाज़ से अख़ज़ किया जाता है, जैसाकि आपने उ़क़बा बिन राफ़ेअ़ के घर में होने की बिना पर, राफ़ेअ़ से रिफ़्अ़त और बुलंदी निकाल ली, उ़क़बा से आख़िरत का अन्जाम अख़ज़ कर लिया, रुतब जो आहिस्ता-आहिस्ता तदरीजन(धीरे-धीरे) पकती हैं और दिल के लिये शीरीं और सहल होती हैं, शरीअ़त और दीन की तक्मील अख़ज़ कर ली, क्योंकि दीन सहल और आसान है और आहिस्ता-आहिस्ता पाय-ए-तक्मील को पहुँचा है।

(2) ख़्वाब की शक्ल व सूरत से मिलती-जुलती सूरत निकाल ली जाती है, ख़्वाब में किसी को पढ़ाते देखा तो मालूम हुआ, अगर साहिबे इल्म है तो क़ाज़ी बनेगा, इक़्तिदार हासिल होगा, औलाद मिलेगी, किसी महकमे(डिपार्टमेन्ट) का रईस होगा।

(3) ख़्वाब में नज़र आने वाली चीज़ का मक़सद और मुराद के मुताबिक़ ताबीर होगी, सफ़र कर रहा है तो सफ़र दरपेश होगा, मण्डी गया है तो कमाई करेगा, घर बना रहा है तो शादी होगी या ख़ादिमा मिलेगी।

(4) जिस लफ़्ज़ का मिस्दाक़ क़ुरआनो-सुन्नत, कलामे अ़रब, जाहिली अश्आ़र, हकीमाना कलाम या लोगों के कलाम में मअ़रूफ़ है, वही मुराद होगा, जैसे ख़शीबह लकड़ी की ताबीर मुनाफ़िक़ है, क्योंकि क़ुरआन ने मुनाफ़िक़ों को ख़ुशुबुम्-मुसन्नदह कहा है, फ़ारह(चूहिया) से मुराद फ़ासिक़ होगा, क्योंकि आपने इसको फ़ुवैसक़ा का नाम दिया है, ज़ुजाजह से मुराद औ़रत है, कुछ शेअ़रों में औ़रत को इससे ताबीर किया गया है और नबी(ﷺ) ने औ़रतों को क़वारीर का नाम दिया।(तक्मिला : जिल्द 4, पेज नं. 461-462)

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، أَخْبَرَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَرَانِي فِي الْمَنَامِ أَتَسَوَّكُ بِسِوَاكٍ فَجَذَبَنِي رَجُلاَنِ أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ الآخَرِ فَنَاوَلْتُ السِّوَاكَ الأَصْغَرَ مِنْهُمَا فَقِيلَ لِي كَبِّرْ . فَدَفَعْتُهُ إِلَى الأَكْبَرِ " .

(5933) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने ख़्वाब में अपने आपको मिस्वाक करते हुए देखा तो मुझे दो आदमियों ने खींचा, एक दूसरे से बड़ा था। तो मैंने मिस्वाक उनमें से छोटे को दे देनी चाही, सो मुझे कहा गया, बड़े को दो। तो मैंने उसे बड़े के हवाले कर दी।'

(सहीह बुख़ारी : बाब 246)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है किसी चीज़ के देते वक़्त लोगों के मक़ाम व मर्तबे और हैसियत का लिहाज़ रखना चाहिये, मिस्वाक बड़े की ज़रूरत है। खाने-पीने की दावत में बड़े मुक़द्दम होंगे, लेकिन अगर मज्लिस में छोटे-बड़े बैठे हों तो शुरूआत दायें तरफ़ से होगा, उधर बैठने वाला छोटा हो या बड़ा।

حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، جَدِّهِ عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرُ فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ وَرَأَيْتُ فِي رُؤْيَاىَ هَذِهِ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ فَإِذَا هُوَ مَا أُصِيبَ مِنَ

(5934) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) से रिवायत है, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं मक्का से ऐसी सरज़मीन की तरफ़ हिजरत कर रहा हूँ, जहाँ खजूरें वाफ़िर हैं तो मेरा ख़याल इस तरफ़ गया कि ये यमामा या हजर का इलाक़ा है और वो यस़रिब का शहर निकला और मैंने इस ख़्वाब में देखा कि मैंने तलवार हिलाई तो उसका अगला हिस्सा टूट गया तो इससे मुराद वो मुसीबत निकली, जिससे मुसलमान उहुद के दिन दोचार हुए। फिर मैंने उसको दोबारा हिलाया तो वो इन्तिहाई इ़म्दा हालत की तरफ़ लौट आई तो इससे मुराद अल्लाह की अ़ता की हुई फ़तह और मुसलमानों का इज्तिमाअ़

الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ ثُمَّ هَزَزْتُهُ أُخْرَى فَعَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ وَرَأَيْتُ فِيهَا أَيْضًا بَقَرًا وَاللَّهُ خَيْرٌ فَإِذَا هُمُ النَّفَرُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ وَإِذَا الْخَيْرُ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ بَعْدُ وَثَوَابُ الصِّدْقِ الَّذِي آتَانَا اللَّهُ بَعْدُ يَوْمَ بَدْرٍ " .

निकला और उसमें, मैंने एक गाय देखी और अल्लाह का फ़ैसला ही बेहतर है तो इससे मुराद मोमिनों का गिरोह है, जो उहुद के दिन शहीद हुआ और ख़ैर से मुराद वो ख़ैर है जो बाद में हासिल हुई या अल्लाह ने अ़ता की और लड़ाई में जम जाने का वो बदला, जो अल्लाह ने हमें बद्र के बाद अ़ता फ़रमाया।'
(सहीह बुख़ारी : 3622, 3987, 4081, 7035, 7041, इब्ने माजह : 3921)

फ़ायदा : हजर और यमामा, यमन की तरफ़ दो इलाक़े हैं, जहाँ खजूरें बहुत होती हैं। इस हदीस़ से साबित होता है, ख़्वाब की ताबीर में इज्तिहाद को दख़ल है, इसलिये इसमें ग़लती का इम्कान मौजूद होता है। अम्बिया का ख़्वाब वह्य होता है, लेकिन अगर वह्य में उसकी पूरी तफ़्सील न हो तो फिर उसमें इज्तिहाद की बिना पर ग़लती हो सकती है। आपको वह्य के ज़रिये ये बताया गया कि आप ऐसे इलाक़े की तरफ़ हिज्रत करेंगे, जहाँ खजूरें बहुत होती हैं। लेकिन वह्य में उस इलाक़े की तअ़यीन(निशानदेही) नहीं की गई। इसलिये आपने ये ख़्याल फ़रमाया कि इससे मुराद यमामा या हजर का इलाक़ा है। लेकिन बाद में ये हक़ीक़त खुली कि इससे मुराद, मदीना है जिसको लोग यस़रिब कहते थे और ख़्वाब में तलवार का टूटना इससे मुराद वो ग़म व हुज़्न है जो मुसलमानों को आपके चेहरे मुबारक के ज़ख़्मी होने और आपके चाचा हम्ज़ह(रज़ि.) की शहादत से पहुँचा और बक़र के अंदर ख़ुद काटने का मफ़्हूम मौजूद है और वो आपको ज़िब्ह हुए दिखाई गई। इसलिये इससे मुराद उहुद के शुहदा हुए और इस ख़्वाब में वल्लाह ख़ैर का जुम्ला आपकी और मुसलमानों की तसल्ली व तशफ़्फ़ी और जमइय्यत ख़ातिर के लिये था कि मुसलमानों की शहादत, ख़ैर व ख़ूबी का बाइस़ होगी और जंगे उहुद के फ़ौरन बाद मुसलमानों का कुफ़्फ़ार के तआक़ुब में निकलना और सिद्क़ दिल से जिहाद करना या काफ़िरों का ग़ज़्व-ए-उहुद के बाद ये कहकर जाना कि अगले साल बद्र के मैदान में लड़ाई होगी और मुसलमानों का अगले साल उस वादे के मुताबिक़ निकलना, वादे को सच कर दिखाना था। इसलिये उसके नतीजे में बाद की फ़ुतूहात हासिल हुईं और यहाँ बद्र से मुराद बदरुल मौइद है, जो बद्रे स़ानी है। जिसके लिये काफ़िर धमकी देकर गये थे, लेकिन आने की जुर्अत न कर सके।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَدِمَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم الْمَدِينَةَ فَجَعَلَ يَقُولُ إِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ الأَمْرَ مِنْ بَعْدِهِ تَبِعْتُهُ . فَقَدِمَهَا فِي بَشَرٍ كَثِيرٍ مِنْ قَوْمِهِ فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ وَفِي يَدِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قِطْعَةُ جَرِيدَةٍ حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ قَالَ " لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا وَلَنْ أَتَعَدَّى أَمْرَ اللَّهِ فِيكَ وَلَئِنْ أَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللَّهُ وَإِنِّي لأُرَاكَ الَّذِي أُرِيتُ فِيكَ مَا أُرِيتُ وَهَذَا ثَابِتٌ يُجِيبُكَ عَنِّي " . ثُمَّ انْصَرَفَ عَنْهُ .

فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَسَأَلْتُ عَنْ قَوْلِ النَّبِيِّ، صلى الله عليه وسلم " إِنَّكَ أُرَى الَّذِي أُرِيتُ فِيكَ مَا أُرِيتُ " . فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ فِي يَدَىَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ فَأَهَمَّنِي شَأْنُهُمَا فَأُوحِيَ إِلَىَّ فِي الْمَنَامِ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ مِنْ

(5935) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) के दौर में मुसैलिमा कज़्ज़ाब मदीना आया और कहने लगा, अगर मुहम्मद ख़िलाफ़त अपने बाद मुझे देगा तो मैं उनकी पैरवी करूँगा। वो मदीना में अपनी क़ौम के बहुत से अफ़राद के साथ आया था तो आप(ﷺ), साबित बिन क़ैस बिन शम्मास के साथ उसकी तरफ़ गये और नबी(ﷺ) के हाथ में खजूरों की शाख़ का एक टुकड़ा था, यहाँ तक कि आप मुसैलिमा के पास जहाँ वो अपने साथियों के साथ था, जा रुके और फ़रमाया, 'अगर तू मुझसे शाख़ का ये टुकड़ा माँगो तो मैं तुम्हें ये भी नहीं दूँगा और तेरे बारे में अल्लाह का जो हुक्म है उससे तजावुज़ नहीं करूँगा और अगर तूने(मेरी इताअत से) मुँह मोड़ा तो अल्लाह तुझे ग़ारत कर देगा और मैं तुम्हें देख रहा हूँ, जिसके बारे में मुझे ख़्वाब दिखाई गई है और ये साबित है, जो मेरी तरफ़ से तुझे जवाब देगा।' फिर आप उससे(वहाँ से) लौट आये। हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) कहते हैं, मैंने नबी(ﷺ) के इस फ़रमान, 'तो मैं देख रहा हूँ तू वही है जिसके बारे में मुझे ख़्वाब दिखाई गई है, जो भी दिखाई गई है' का मतलब व मफ़्हूम पूछा तो मुझे हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने बताया, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मैंने अपने हाथ में सोने के दो कंगन देखे तो मुझे उनके मामले ने फ़िक्र में डाला तो नींद ही में मुझे वह्य की गई, उनको फूंक मारो, सो मैंने उन्हें फूंक मारी तो वो उड़ गये तो मैंने उसकी ताबीर ये लगाई कि मेरी नुबूवत के ज़ुहूर व ग़ल्बे के बाद ये

दो झूठे ज़ाहिर होंगे, उनमें से एक सन्आ के इलाक़े का अन्सी था और दूसरा यमामा का मुसैलिमा था।'

بَعْدِي فَكَانَ أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيَّ صَاحِبَ صَنْعَاءَ وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةَ صَاحِبَ الْيَمَامَةِ " .

(सहीहबुख़ारी:3620, 4373, 7461, तिर्मिज़ी : 2292)

फ़ायदा : मुसैलिमा कज़्ज़ाब का ताल्लुक़ एक बहुत बड़े जंगजू क़बीले बनू हनीफ़ा से था और वो लोग इससे बहुत अक़ीदत रखते थे, यहाँ तक कि नऊज़ुबिल्लाह उसको रहमाने यमामा का नाम देते थे। उसने 10 हिजरी में नुबूवत का दावा किया और अपनी क़ौम के बहुत से अफ़राद के साथ मदीना आकर रमला बिन्ते हारिस़ के घर ठहरा, जहाँ वुफ़ूद आकर ठहरते थे। चूंकि वो आपसे मिलने आया था और मुस्लिम होने का दावेदार था। इसलिये आप उसके पास गये, ताकि उसकी और उसकी क़ौम की तालीफ़े क़ल्बी हो और उनको इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाया जाये, लेकिन जब उसने ख़िलाफ़त हासिल करने की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो आपने फ़रमाया, तेरे बारे में जो अल्लाह का हुक्म है, मैं उससे हर्गिज़ तजावुज़ नहीं करूँगा, ख़िलाफ़त तो बहुत दूर की बात है, तुझे ये शाख़ का टुकड़ा भी नहीं दूँगा और तू अगर मेरी इताअत नहीं करेगा, इससे रुख़ मोड़ेगा, तो तेरे बारे में अल्लाह का ये फ़ैसला है वो तुझे ग़ारत कर देगा और आपकी इस पेशीनगोई के मुताबिक़ जंगे यमामा में क़त्ल हुआ और आपको उसके बारे में ख़्वाब दिखाई गई थी। इसका मिस्दाक़ आपके सामने आ गया और हज़रत स़ाबित बिन क़ैस(रज़ि.) ख़तीबे अन्सार कहलाते थे, आने वाले वुफ़ूद के ख़ितबात का जवाब वही देते थे। इसलिये आपने फ़रमाया, 'अगर तुझे लम्बी बातचीत का शौक़ है तो इसके लिये मेरी तरफ़ से ये स़पूत हाज़िर है, चूंकि कंगन मर्दों का ज़ेवर नहीं है, इसलिये आपने इसकी तावील व ताबीर झूठे से की, क्योंकि झूठ ख़िलाफ़े हक़ीक़त होता है और वो सोने के थे, जो ज़हब कहलाता है और ज़हाब का मानी मिट जाना और ख़त्म हो जाना है, इसलिये आपको उन पर फूँक मारने का हुक्म दिया और वो उड़ गये और अस्वद अन्सी को जो सन्आ के मुसलमान गवर्नर हाज़ान की वफ़ात पर बादशाह बन बैठा था, आपकी वफ़ात से एक दिन पहले ही जहन्नम रसीद कर दिया गया और मुसैलिमा को हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त में जहन्नम रसीद किया गया।

(5936) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से हम्माम बिन मुनब्बिह जो हदीसें बयान करते हैं, उनमें से एक ये है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ाने लाये गये और मेरे दोनों हाथों में सोने के कंगन डाले गये, सो वो मुझे नागवार गुज़रे और मुझे फ़िक्र लाहिक़ हुई तो मुझे वह्य की

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ

गई उन पर फूंक मारो, मैंने उन पर फूंक मारी तो वो ख़त्म हो गये तो मैंने उनकी ताबीर ये की कि ये दो झूठे हैं जिनके दरम्यान मैं हूँ, यानी सन्आ का बाशिन्दा और यमामा का बाशिन्दा।'

(सहीह बुख़ारी : 7036, 4379)

أُتِيتُ خَزَائِنَ الأَرْضِ فَوَضَعَ فِي يَدَىَّ أَسْوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ فَكَبُرَا عَلَىَّ وَأَهَمَّانِي فَأُوحِيَ إِلَىَّ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَذَهَبَا فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا صَاحِبَ صَنْعَاءَ وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ " .

फ़ायदा : ख़ज़ाइने अर्ज़(ज़मीन के ख़ज़ाने) से मुराद क़ैसर व किसरा और दूसरे बादशाहों के ख़ज़ाने हैं, जो मुसलमानों को ग़नीमत की शक्ल में हासिल हुए और वो कुदरती धातें और वसाइले मआश हैं, जो आज तक मुसलमानों को ज़मीन से हासिल हो रहे हैं और बद क़िस्मती से मुसलमान उनको ख़ाम माल की सूरत में दूसरों को दे रहे हैं, अहले सन्आ और अहले यमामा दोनों मुसलमान हो चुके थे, इसलिये वो इस्लाम के दस्त व बाज़ू थे, लेकिन मुसैलिमा कज़्ज़ाब और अस्वद अन्सी की बातों में आकर उनमें बहुत से मुर्तद हो गये थे। इसलिये उनके ग़ल्बे को सोने के दो कंगनों की शक्ल में आपके हाथों में डाला गया और ख़्वाब में आपके फूंक मारने से ख़त्म हो गये, जिसमें इस तरफ़ इशारा था कि ये ज़्यादा देर तक धोखा नहीं दे सकेंगे और जल्द ही अपने अन्जाम को पहुँच जायेंगे और ऐसे ही हुआ।

(5937) हज़रत समुरह बिन जुन्दब(रज़ि.) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह(ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ लेते थे तो रुख़ उनकी तरफ़ कर लेते और पूछते, 'क्या तुममें से किसी ने आज रात ख़्वाब देखा?'

(सहीह बुख़ारी : 2085, 2791, 3236, 4674, 6096, 3354, 7047, तिर्मिज़ी : 2294)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيِّ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِذَا صَلَّى الصُّبْحَ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ بِوَجْهِهِ فَقَالَ " هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمُ الْبَارِحَةَ رُؤْيَا " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि इमाम को सुबह की नमाज़ के बाद मुक़्तदियों की तरफ़ मुँह करके बैठ जाना चाहिये और उनसे कोई पूछने की चीज़ हो तो पूछ लेना चाहिये और सुबह की नमाज़ के बाद ख़्वाब की ताबीर लगाना(बताना) ज़्यादा मुनासिब है। क्योंकि ख़्वाब देखने वाले के ज़हन में ख़्वाब अभी ताज़ा-ताज़ा होता है और ताबीर लगाने(बताने) वाला ज़हन और दिमाग़ में हाज़िर होता है। मआश की फ़िक्र अभी मुब्तला नहीं हुआ होता, इसलिये उन लोगों का ख़याल ग़लत है जो कहते हैं, ख़्वाब की ताबीर सूरज निकलने से पहले नहीं पूछनी चाहिये।

इस किताब के कुल अबवाब 39 और 192 हदीसें हैं।

كتاب الفضائل

किताबुल फ़ज़ाइल

अम्बियाए किराम(अलै.) के फ़ज़ाइल

हदीस नम्बर 5938 से 6129 तक

तआरुफ़ किताबुल फ़ज़ाइल

सहीह मुस्लिम में किताबुल फ़ज़ाइल ख़ास अहमियत की हामिल है। इमाम मुस्लिम(रह.) ने इसमें तर्तीब, तब्वीब और इन्तिख़ाबे मज़ामीन के ज़रिये से जो मिसाल पेश की है उम्मते मुहम्मदिया(ﷺ) के चोटी के सीरत निगारों ने इससे ख़ूब इस्तिफ़ादा(फ़ायदा) हासिल किया है। सियर व मग़ाज़ी के साथ-साथ दलाइले नुबूवत और फ़ज़ाइल व शमाइल, जो इस किताब में नुमायाँ हैं, बतदरीज सीरते तय्यिबा में न सिर्फ़ शामिल हुए बल्कि सीरत का लाज़िमी हिस्सा बन गये।

इस किताब के शुरूआती अबवाब को एक तरह के मुक़द्दमे की हैसियत हासिल है। शुरूआत आप(ﷺ) के आला हसब व नसब और मख़्लूक़ात में आपके बुलंद तरीन मक़ाम से होता है। यहाँ तक कि बिअ्सत से पहले ही जमादात की तरफ़ से आपको सलाम किया जाता था। उसके फ़ौरन बाद इस बात का तज़्किरा है कि उख़रवी ज़िन्दगी में भी सारी मख़्लूक़ात पर आप ही को फ़ज़ीलत हासिल होगी।

उसके बाद दलाइले नुबूवत का लिया गया है। आपको अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से दिये गये अ़ज़ीम मोजिज़ात जो बयक वक़्त आपकी नुबूवत के दलाइल और ईमान लाने वाले के लिये इज़ाफ़-ए-ईमान का सबब हैं, वो रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों की ऐसी ज़रूरतों की तक्मील(मुकम्मल होने) का ज़रिया बने जिनकी तक्मील की कोई और सूरत निलती नज़र न आती थी। पानी की शदीद क़िल्लत के वक़्त जिससे इंसानी ज़िन्दगी के ज़ाया हो जाने का ख़दशा पैदा हो जाये, आप(ﷺ) के जिस्मे मुबारक के ज़रिये से उसकी फ़रावानी, इसी क़िस्म का एक मोजिज़ा है। हज़रत मूसा(अलै.) की क़ौम को चट्टानों के अंदर से चश्मे निकालकर सैराब किया गया। जबकि नबी(ﷺ) के साथियों के लिये आपकी मुबारक उंगलियों से चश्मे फूटे या आपके वुज़ू के लिये इस्तेमाल किए हुए पानी को क़तरा-क़तरा बहते हुए चश्मे में डालने से ऐसी आब रसानी(पानी) का इन्तिज़ाम हुआ कि उस सारे बंजर इलाक़े को बाग़ो-बहार में बदल दिया गया। 'ऐ मुआज़! अगर तुम्हारी ज़िन्दगी लम्बी हुई, तो तुम देखोगे कि यहाँ जो जगह है वो घने बाग़ात से लहलहा उठेगी।'(सहीह मुस्लिम : 5947) ग़ज़्व-ए-तबूक के सफ़र के दौरान में आते-जाते हुए जिन मोजिज़ात का ज़ुहूर हुआ, उनका मुताल्आ ईमान अफ़रोज़ है। उसके बाद उस हिदायत और शरीअ़त की ख़ुसूसियात बयान हुई हैं जो आपको देकर भेजी गई है। इस पर सहीह तौर पर अ़मल करने वाला भी दुनिया और आख़िरत में कामयाब है और पूरी तरह अ़मल न कर सकने के बावजूद इस शरीअ़त को आगे पहुँचाने वाला अपनी नस्लों तक ले जाने वाला भी रहमते इलाही से सरफ़राज़ हुआ और जिसने न अपनाया, न आगे पहुँचाया, वो ऐसी बंजर ज़मीन की तरह है जिस पर कांटों और झाड़-झंकार के सिवा कुछ नहीं होता। आप(ﷺ) बशीर(ख़ुशख़बरी देने वाले) के साथ-साथ नज़ीर(डराने वाले) भी हैं। आपने अल्लाह के अ़ज़ाब से, जो उसकी रज़ा के इनाम, जन्नत की तरह बरहक़ है, डराया।

जहन्नम में ले जाने वाले आमाल की निशानदेही फ़रमाई। जिन लोगों ने आपकी बात मानी वो जहन्नम से बच गये। जिन्होंने इंकार किया और बुग़्ज़ व इनाद की शिद्दत की बिना पर आग में घुसने की कोशिश की, आपने उनको भी बचाने के लिये इन्तिहाई कोशिशें फ़रमाईं। आपकी लाई हुई हिदायत का अमली नमूना आप(ﷺ) का उस्व-ए-हसना है। आप मुकम्मल तरीन पैकरे जमाल हैं। इस जमाल की दिलरुबाई और दिलकशी ऐसी है कि हर सलीमुल फ़ितरत इंसान बेइख़्तियार इसकी तरफ़ खिचा-चला आता है। आप(ﷺ) के अख़्लाक़े हसना, आपकी बेकिनार जूदो-सख़ा, आपकी रहमत व अता, आपकी शफ़क़त और आपकी हया, अल्लाह की हिदायत से किनाराकशी करने वालों को भी ज़्यादा दूर नहीं जाने देती। दुनिया के सबसे बड़े ख़ुशनसीब लोग तो वो थे जिन्होंने आपकी सिफ़ाते हसना और अख़्लाक़े आलिया(बुलंद अख़्लाक) के साथ-साथ आपके शख़्सी जमाल का भी अपनी आँखों से मुशाहिदा किया(देखा) और एहसान ये किया कि जो बेहतरीन लफ़्ज़ उन्हें मिले उनके ज़रिये से उसी जमाले बेमिसाल की तस्वीरकशी की। आपके हुलिय-ए-मुबारक से लेकर आपके जिस्म मुबारक से निकलने वाले मुअत्तर पसीने की ख़ुश्बू तक को बयान करने की सआदत हासिल की। वही ख़ुश्बू जिसके बारे में उम्मे सुलैम(रज़ि.) ने कहा था, 'ये आपका पसीना इकट्ठा कर रही हूँ कि इससे अपने मुश्क व अम्बर को मुअत्तर कर लूँ।'(सहीह मुस्लिम : 6057) इमाम मुस्लिम(रह.) ने इस तज़्किरे के साथ ही वो हदीसें बयान कर दीं कि आपको सबसे ज़्यादा पसीना उस वक़्त आता था जब आप पर वह्ये इलाही नाज़िल होती थी। इस तरह उन्होंने समझा दिया कि इस ख़ुश्बू का सर चश्मा क्या था। मुश्क व अम्बर का सर चश्मा तो वो जानदार हैं जो अल्लाह की मख़्लूक़ हैं और आपके पैकरे अतहर की ख़ुश्बू का सिलसिला अल्लाह के कलाम से जुड़ा हुआ था। आपका क़ल्बे अतहर मह्बते वह्ये इलाही था जो आँखों की नींद के दौरान में भी अल्लाह से राब्ते के लिये मुसलसल बेदार रहता था। फिर आपके जिस्मे अतहर की ख़ुश्बू मुश्क व अम्बर को भी मुअत्तर करने वाली क्यों न होती!

आप(ﷺ) के जमाले बेपायाँ को बयान करने के लिये दुनिया के फ़सीह तरीन लोगों ने बेहतरीन अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब किया(चुना)। लेकिन उनके बयान का एक-एक लफ़्ज़ इस बात की गवाही दे रहा है कि अल्फ़ाज़ उस जमाले बेमिसाल को बयान करने से आजिज़ हैं। जो जमाल हक़ीक़त में मौजूद था, उसके लिये ज़बान में अल्फ़ाज़ ही मौजूद नहीं थे। हज़रत अनस(रज़ि.) के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर तो करें, 'आप(ﷺ) बहुत दराज़ क़द(लम्बे) थे न पस्ता क़ामत(ठिगने), बिल्कुल सफ़ेद रंग वाले थे न बिल्कुल गन्दुमी, बाल छोटे घुंघराले थे न बिल्कुल सीधे।'(सहीह मुस्लिम : 6089) हज़रत अनस(रज़ि.) के अलावा बयान करने वाले दूसरे सहाबा के अल्फ़ाज़ भी यही उस्लूब लिये हुए हैं। कहा जाता है कि बड़े मुसव्विरों की कुछ तस्वीरें ऐसी हैं जिनकी ख़ूबसूरती के मुशाहिदे और उन पर ग़ौर व ख़ोज करने में कुछ लोगों ने अपनी उम्रें बसर कर दीं, कुछ अक़्ल व ख़िरद से बेगाने भी हो गये। आपके शमाइल व ख़साइल

और आपकी शरीअत की कुछ ख़ुसूसियात बयान करने के बाद इमाम मुस्लिम(रह.) ने किताब फ़ज़ाइलुन्नबी(ﷺ) का इख़्तिताम(ख़त्म) जिस हदीस़ पर किया है वो एक अनोखी सिम्त(दिशा) की तरफ़ इशारा करती है। इस पैकरे जमाल के साथ बेपनाह मुहब्बत की तरफ़ जिससे बढ़कर कोई और जज़्बा अज़ीम नहीं, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! तुम लोगों में से किसी पर वो दिन ज़रूर आयेगा कि वो मुझे नहीं देख सकेगा और मेरी ज़ियारत करना उसके लिये अपने उस सारे अहल और माल से ज़्यादा महबूब होगा जो उनके पास होगा।'(सहीह मुस्लिम : 6129)

इमाम मुस्लिम(रह.) ने आख़िरी हदीस़ से पहले इस किताब के आख़िरी हिस्से में वो हदीसें बयान कीं जिनमें रसूलुल्लाह(ﷺ) के अस्माए गिरामी(नाम) बयान किये गये हैं। अस्माए मुबारका(आपके मुबारक नाम) आपकी उन सिफ़ात की निशानदेही करते हैं जो आपके मिशन की अज़्मतों और आपकी लाई हुई हिदायत की ख़ुसूसियात की आईनादार हैं। आप(ﷺ) मुहम्मद हैं, अहमद हैं, माही हैं जिनके ज़रिये से अल्लाह तआला कुफ़्र को ख़त्म करेगा, हाशिर हैं, जिनके पीछे लोग अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे, आक़िब हैं कि आपके ज़रिये से हिदायत की तक्मील के बाद किसी नबी की बिअ़्स़त की ज़रूरत नहीं, आपको अल्लाह ने रऊफ़ व रहीम क़रार दिया है, आपके अस्माए गिरामी में नबीउत्तौबा है क्योंकि आपने तौबा के दरवाज़े के किवाड़ पूरे-पूरे खोल दिये और ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक तौबा की कुबूलियत की नवीद(ख़ुशख़बरी) सुनाई और आप नबीउर्रहमत हैं कि दुनिया और आख़िरत दोनों में इंसान, अल्लाह की तरफ़ से आपको दी गई रहमत से फ़ैज़याब होंगे।

उसके बाद इमाम मुस्लिम(रह.) ने वो हदीसें ज़िक्र की हैं जिनमें आप(ﷺ) को दी गई शरीअत की कुछ इम्तियाज़ी ख़ुसूसियात का बयान है। आपको दी गई शरीअत की अहम तरीन ख़ुसूसियत ये है कि ये आसान तरीन शरीअत है। आपने इंसान होने के नाते, इंसानी कमज़ोरियों का ख़्याल रखते हुए अल्लाह की तरफ़ से अपनी उम्मत को जिन आसानियों और रुख़्सतों की ख़ुशख़बरी सुनाई, कुछ लोगों ने अपने मिज़ाज की बिना पर उनको क़ुबूल करना तक़्वा और ख़शियते इलाही के ख़िलाफ़ जाना, उनके नज़दीक अल्लाह के क़ुर्ब(क़रीब होने) के लिये शदीद मशक़्क़तें उठाना ज़रूरी था, आपने उन्हें याद दिलाया कि बनी नौए इंसान में आपसे बढ़कर अल्लाह और उसके दीन को जानने वाला और आपसे बढ़कर ख़शियते इलाही रखने वाला और कोई नहीं। आपने वाज़ेह किया कि दीन के जितने अहकाम की ज़रूरत थी वो आपके ज़रिये से अता कर दिये गये और आने वाले दिनों और आख़िरत के बारे में जिन बातों का इल्म होना ज़रूरी था, आपने वो सब बातें बता दी हैं। इसलिये इताअ़त का बेहतरीन तरीक़ा यही है कि पूरे इख़्लास के साथ उन बातों को सीखा जाये, उनको समझा जाये और ख़ुलूस नियत के साथ उन पर अमल किया जाये। ख़्वाह-मख़्वाह बाल की खाल निकालने और अहकामे शरीअत के हवाले से जो बातें पहुँचा

दी गई हैं उनको मज़ीद कुरेदने से मुकम्मल इज्तिनाब किया जाये(पूरे तौर पर बचा जाये)। ये अहकाम क़यामत तक के लिये हैं, हर दौर में इल्म व इख़्लास के साथ इन पर ग़ौर व ख़ोज से सहीह राह वाज़ेह होती रहेगी। जो शख़्स समझने के लिये नहीं, ग़ैर ज़रूरी तौर पर कुरेदने के लिये सवाल करे और उसके सवाल की बिना पर हलाल चीज़ के हवाले से हुरमत का हुक्म सामने आ जाये तो उससे बड़ा ज़ालिम कोई नहीं। हर ज़माने में ग़ौर करने वालों के लिये हिदायत मयस्सर होना इस शरीअत की अज़ीम तरीन ख़ुसूसियत है। वक़्त से पहले मफ़रूज़ों की बुनियाद पर सवाल खड़े करना और अपनी तरफ़ से उनके जवाबात घड़कर वुक़ूअ पज़ीर होने वाले असल हालात में ग़ौर करने वालों के लिये मुश्किलात खड़ी करना या ग़ौर व ख़ोज और इज्तिहाद के दरवाज़े बंद करना या किताबो-सुन्नत के बजाए दूसरों की राय को इज्तिहाद का मेहवर क़रार देना, इस उम्मत पर ज़ुल्म है जिससे बचना ज़रूरी है।

नबी(ﷺ) के फ़ज़ाइल के बाद इमाम मुस्लिम(रह.) ने कुछ दूसरे अम्बिया के फ़ज़ाइल के बारे में हदीसें बयान कीं और सबसे पहले ये हदीस लाये कि अम्बिया अलग-अलग माओं की औलाद की तरह हैं जो अहम तरीन रिश्ते के हवाले से एक होते हैं। ये सब अम्बिया अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये हैं, इनका दीन एक है। हर ज़माने और हर क़ौम की ज़रूरत के मुताबिक़ शरीअतों में थोड़ा सा इख़्तिलाफ़ है। रसूलुल्लाह(ﷺ) के ज़रिये से अल्लाह तआला ने अपने दीन की तक्मील की है और क़यामत तक के लिये ऐसी आलमगीर और दायमी शरीअत अता की है जो फ़ितरते इंसानी के ऐन मुताबिक़ है। हदीस का ये टुकड़ा उस बड़ी हदीस का हिस्सा है कि हज़रत ईसा(अलै.) के साथ मेरा ख़ुसूसी ताल्लुक़ है। दीन की वह्दत के अलावा ये ताल्लुक़ भी है कि उनके और रसूलुल्लाह(ﷺ) के दरम्यान कोई और नबी नहीं। न हज़रत ईसा(अलै.) की बिअ्सत के बाद न उनके दोबारा दुनिया में आने से पहले। हज़रत ईसा(अलै.) की वालिदा हज़रत मरयम(अलै.) और उनकी औलाद को हज़रत मरयम(अलै.) की वालिदा की दुआ की बिना पर शैतान से तहफ़्फ़ुज़(सुरक्षा) हासिल हुआ और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी उम्मत को इसी दुआ की तल्क़ीन फ़रमाई। फिर वो हदीस बयान की गई कि एक चोर ने, जिसे हज़रत ईसा(अलै.) ने अपनी आँखों से चोरी करते देखा था, जब झूठ बोलते हुए अल्लाह की क़सम खा ली तो हज़रत ईसा(अलै.) ने अल्लाह तआला की अज़्मत व जलाल के सामने ख़ुद अपनी नफ़ी करते हुए ये फ़रमाया, 'मैं अल्लाह पर ईमान लाया और जिस चीज़ के बारे में तुमने अल्लाह की क़सम खाई, उसमें अपने आपको ग़लत कहता हूँ। जिस नबी की उ़बूदियत और जलाले इलाही के सामने ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ का ये आलम हो वो ख़ुद को अल्लाह का बेटा कैसे क़रार दे सकता है। ये बहुत बड़ा बोहतान है जिससे हज़रत ईसा(अलै.) बिल्कुल पाक हैं।

फिर इख़्तिसार से हज़रत इब्राहीम(अलै.) जो आपके जद-अमजद(पुर्वज) हैं, के फ़ज़ाइल बयान

हुए हैं। इसलिये जब आपको 'ख़ैरुल बरिय्यह' (मख़्लूक़ में सबसे बेहतरीन) कहा गया तो आपने फ़रमाया, 'ये लक़ब हज़रत इब्राहीम के शायाने शान है जिनका मैं बेटा भी हूँ और उनकी मिल्लत का मुत्तबिअ(पैरोकार) भी। फिर हज़रत इब्राहीम(अलै.) की फ़ज़ीलत में वो मअरूफ़ हदीस़ बयान की गई जिसका कुछ हज़रात ने मफ़्हूम समझे बग़ैर इंकार किया है। हज़रत इब्राहीम(अलै.) ने तौहीदे बारी तआला की वज़ाहत के लिये दो और अपनी ज़ात के लिये एक बात कही। ये तीनों बातें जिस-जिस मफ़्हूम में हज़रत इब्राहीम(अलै.) ने कहीं थी बिल्कुल सच्ची थी, लेकिन सुनने वालों ने उनसे जो मफ़्हूम मुराद लिया उसके हवाले से वो ख़िलाफ़े वाक़िया थीं। एक नबी के आस-पास जब हर तरफ़ शिर्क ही शिर्क का तअफ़्फ़ुन फैला हुआ हो तो उस फ़िज़ा में साँस लेते हुए अल्लाह जल्ल व तआला की शान में इतनी बड़ी गुस्ताख़ी के वक़्त उनकी रूह और उनका जिस्म जिस तरह की तकलीफ़ महसूस करेगा, उससे बड़ी तकलीफ़ और क्या हो सकती है। इसी तरह आप(अलै.) का ये फ़रमान कि अगर ये बुत बोलते हैं तो फिर इनमें से सबसे बड़े ने बाक़ियों के टुकड़े किये हैं, हक़ीक़त के ऐतबार से सरीह सच्चाई है। न ये बोलते हैं, न बड़े बुत ने कुछ किया है। ये सब बेबस हैं और इनके शिर्क करने वाले अल्लाह पर बोहतान तराशी कर रहे हैं। हज़रत सारह(अलै.) को जब अपने साथ बहन-भाई का रिश्ता बताने को कहा तो वज़ाहत फ़रमा दी कि इबादल्लाह(अल्लाह के बन्दे) सबके सब आपस में उख़ुवत(भाईचारे) के रिश्ते में पिराये हुए हैं। फ़रमाने नबवी है, 'और अल्लाह के बन्दे भाई-भाई हो जाओ।' (सहीह मुस्लिम : 6536) और उस सर ज़मीन पर यही दो अफ़राद एक अल्लाह की बन्दगी करने वाले थे। इस हक़ीक़त की बिना पर दोनों के दरम्यान ये रिश्ता बिल्कुल सच था, लेकिन उस इलाक़े में हुक्मरानी करने वाले जाबिर बादशाह ने इसे नसबी तौर पर बहन-भाई का रिश्ता समझा। हज़रत इब्राहीम(अलै.) का तक़्वा ऐसा था कि इन तीनों बातों को जो उनके मुराद लिये गये मफ़्हूम के हवाले से ऐन सच थीं, सिर्फ़ अल्लाह के दुश्मनों के फ़हम के हवाले से किज़्ब क़रार दिया और क़यामत के दिन उनके हवाले से अल्लाह के सामने पेश होकर शफ़ाअत करने से मअज़्रत फ़रमाई। काश! अपनी बात के हवाले से लफ़्ज़े किज़्ब के इस्तेमाल में एक इतने बड़े पैग़म्बर की तरफ़ से जिस तक़्वा और तवाज़ोअ, जिस ख़शियत और उबूदियत का मुज़ाहिरा किया गया, उसकी तरफ़ नज़र की जाती। ऐसा होता तो हदीस़ के रावियों पर झूठ का बोहतान बांधने की नोबत न आती।

उनके बाद हज़रत मूसा(अलै.) के फ़ज़ाइल हैं। बनी इस्राईल ने आपकी शान कम करने के लिये आपकी तरफ़ जो जिस्मानी ऐब मन्सूब किया था, अल्लाह ने उन्हें उससे बरी स़ाबित किया। हज़रत मूसा(अलै.) इस क़द्र क़वी थे कि कपड़े लेकर भागने वाले पत्थर पर जो ज़रबें(चोट) लगाईं वो उस पर स़ब्त हो गईं।(निशान पड़ गया) जब मलकुल मौत इंसान की शक्ल में आपके पास आया और कहा कि अब आपकी अल्लाह के सामने हाज़िरी का वक़्त आ गया है तो कलीमुल्लाह ने उसे दुश्मन समझते हुए थप्पड़ मारा और उसकी आँख फोड़ दी, फिर जब पता चला कि ये वाक़ेई अल्लाह से मुलाक़ात का वक़्त

था तो मोहलत की पेशकश के बावजूद उसी वक़्त हाज़िरी को तरजीह दी। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अम्बिया की शान और उनकी फ़ज़ीलत के मुताबिक़ उनके एहतिराम की तालीम देने के लिये इस बात पर नाराज़ी का इज़हार फ़रमाया कि दूसरे अम्बिया के मानने वालों के सामने रसूलुल्लाह(ﷺ) को उनसे अफ़ज़ल क़रार दिया जाये। आप(ﷺ) ने फ़रमाया कि मैं तो ये भी गवारा नहीं करता कि कोई मुझे यूनुस बिन मत्ता(अलै.) से अफ़ज़ल क़रार दे जिनके बारे में कुरआन मजीद ने वाज़ेह किया है कि वो अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त के बग़ैर बस्ती से निकल आये थे और इस वजह से उन्हें मछली के पेट में जाना पड़ा। फिर अल्लाह की रहमत के तुफ़ैल वहाँ से निजात हासिल हुई। जब आप(ﷺ) के सामने हसबो-नसब में इज़्ज़तमन्दी के हवाले से आपके बुलंद मर्तबे का ज़िक्र हुआ तो आप(ﷺ) ने हज़रत यूसुफ़(अलै.) को बाकमाल तवाज़ोअ सबसे ज़्यादा इज़्ज़तमन्द क़रार दिया, जो नबी इब्ने नबी इब्ने नबी इब्ने नबी थे। आप(ﷺ) ने इस हवाले से भी हज़रत यूसुफ़(अलै.) की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई कि बहुत लम्बा अर्सा बेगुनाह क़ैदख़ाने में गुज़ारने के बावजूद आपने बादशाह की तरफ़ से बुलावा आते ही फ़ौरन जेल से बाहर आने की बजाए ऊपर लगने वाले इल्ज़ाम पर मबनी मुक़द्दमे का फ़ैसला माँगा।

हज़रत इब्राहीम(अलै.) आपके जद अमजद थे। आप(ﷺ) ने उनकी तरफ़ से अल्लाह के सामने मुर्दे को ज़िन्दा करने के मुताल्बे का ज़िक्र करते हुए इन्तिहाई तवाज़ोअ का इज़हार फ़रमाया। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर हज़रत इब्राहीम(अलै.) का सवाल शक क़रार दिया जाये तो हम उस शक के ज़्यादा क़रीब हैं। असल में बताना ये मक़सूद था कि हज़रत इब्राहीम का मुताल्बा शक पर मबनी न था।

आख़िर में हज़रत ख़िज़्र(अलै.) के फ़ज़ाइल हैं। हज़रत मूसा(अलै.) और ख़िज़्र(अलै.) के वाक़िये से बड़ा सबक़ ये मिलता है कि किसी जलीलुल क़द्र और उलुल अज़्म पैग़म्बर को भी ये नहीं समझना चाहिये कि उसका इल्म सबसे बढ़कर है। फ़ज़ाइले नबी में ये हदीस़ बयान हो चुकी कि आपने आ़म लोगों से ये कहा कि दुनिया के मामलात में अपने-अपने मैदान के बारे में जिन चीज़ों को उनमें तुम ज़्यादा जानते हो, अपनी मालूमात पर चलो। लेकिन मैं जब अल्लाह का हुक्म पहुँचाऊँ तो उस पर ज़रूर अ़मल करो। ग़ौर किया जाये तो तवाज़ोअ और इन्किसार के हवाले से भी, जो उ़बूदियत का लाज़िमी हिस्सा हैं, आप(ﷺ) की फ़ज़ीलत बुलंद व आ़ला है।

كتاب الفضائل

44. अम्बियाए किराम(अलै.) के फ़ज़ाइल

बाब 1 : नबी(ﷺ) के नसब की फ़ज़ीलत और नुबूवत से पहले पत्थर का आपको सलाम कहना

باب فَضْلِ نَسَبِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَتَسْلِيمِ الْحَجَرِ عَلَيْهِ قَبْلَ النُّبُوَّةِ

(5938) हज़रत वासिला बिन अस्क़अ(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते सुना, 'अल्लाह ने इस्माईल की औलाद से किनाना को चुना और किनाना से क़ुरैश को चुना और क़ुरैश से बनू हाशिम को चुना और बनू हाशिम से मुझे बरगुज़ीदा(चयन) फ़रमाया।'
(तिर्मिज़ी : 3605, 3608)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْمٍ، جَمِيعًا عَنِ الْوَلِيدِ، - قَالَ ابْنُ مِهْرَانَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، - حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ أَبِي عَمَّارٍ، شَدَّادٍ أَنَّهُ سَمِعَ وَاثِلَةَ بْنَ الأَسْقَعِ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى كِنَانَةَ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ وَاصْطَفَى قُرَيْشًا مِنْ كِنَانَةَ وَاصْطَفَى مِنْ قُرَيْشٍ بَنِي هَاشِمٍ وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ " .

फ़ायदा : क़ुरैश किनाना के बेटे नज़र की औलाद है और बक़ौल कुछ फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना की औलाद हैं और बनू हाशिम, अ़ब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसय बिन किलाब की औलाद हैं और आप अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम के बेटे अ़ब्दुल्लाह की औलाद हैं।

(5939) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं मक्का के उस पत्थर को पहचानता हूँ जो बिअ़सत से पहले मुझे सलाम कहता था, मैं अब भी उसको पहचानता हूँ।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ طَهْمَانَ، حَدَّثَنِي سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لأَعْرِفُ حَجَرًا بِمَكَّةَ كَانَ يُسَلِّمُ عَلَىَّ قَبْلَ أَنْ أُبْعَثَ إِنِّي لأَعْرِفُهُ الآنَ " .

फ़ायदा : पत्थर का आपको नुबूवत के ऐलान से पहले सलाम करना ख़र्क़े आदत(चमत्कार) है और ऐलाने नुबूवत से पहले ख़र्क़े आदत को इर्हास कहते हैं और ऐलाने नुबूवत के बाद ख़र्क़े आदत को मोजिज़ा कहते हैं।

बाब 2 : हमारे नबी(ﷺ) को तमाम मख़लूक़ात पर फ़ज़ीलत दी गई है

باب تَفْضِيلِ نَبِيِّنَا صلى الله عليه وسلم عَلَى جَمِيعِ الْخَلاَئِقِ

(5940) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं क़यामत के दिन आदम(अलै.) की सारी औलाद का सरदार हूँगा और सबसे पहले आपकी क़ब्र फटेगी और सबसे पहले आप सिफ़ारिश करेंगे और सबसे पहले आपकी सिफ़ारिश क़ुबूल होगी।'
(अबू दाऊद : 4673)

حَدَّثَنِي الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى أَبُو صَالِحٍ، حَدَّثَنَا هِقْلٌ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ - عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، حَدَّثَنِي أَبُو عَمَّارٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَوَّلُ مَنْ يَنْشَقُّ عَنْهُ الْقَبْرُ وَأَوَّلُ شَافِعٍ وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ " .

फ़ायदा : सय्यिद उसको कहते हैं, जो ख़ैर और ख़ूबी में तमाम पर फ़ाइक़(बरतर) हो या क़ौम मसाइब और मुश्किलात में जिसकी पनाह में आये और वो उनके मामलात को निपटाये, मसाइब और मुश्किलात को बर्दाश्त करके क़ौम का तहफ़्फ़ुज़(सुरक्षा) करे और आपकी इस सरदारी का ज़ुहूर क़यामत के दिन तमाम इंसानों के सामने होगा।

बाब 3 : नबी(ﷺ) के मोजिज़ात

باب فِي مُعْجِزَاتِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

(5941) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने पानी तलब फ़रमाया तो आपके पास एक खुला प्याला लाया गया तो लोग वुज़ू करने लगे, मैंने अन्दाज़ा लगाया वो साठ और उसी के दरम्यान थे और मैं पानी को देखने लगा, वो आपकी उंगलियों के दरम्यान से फूट रहा था।
(सहीह बुख़ारी : 200)

وَحَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ، سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْعَتَكِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم دَعَا بِمَاءٍ فَأُتِيَ بِقَدَحٍ رَحْرَاحٍ فَجَعَلَ الْقَوْمُ يَتَوَضَّئُونَ فَحَزَرْتُ مَا بَيْنَ السِّتِّينَ إِلَى الثَّمَانِينَ - قَالَ - فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَى الْمَاءِ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ

मुफ़रदातुल हदीस़ : रह्राह : थाल की तरह छोटे किनारों वाला खुला प्याला, जिसमें ज़्यादा पानी नहीं आता।

फ़ायदा : उंगलियों से पानी का फूटना ख़र्क़े आदत(चमत्कार) है, जो किसी इंसान के बस में नहीं है। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने नबी के मोजिज़े के तौर पर इसको उंगलियों से जारी कर दिया और जो लोग अल्लाह की क़ुदरत पर नज़र नहीं रखते कि इल्लत और मअ्लूल का सिलसिला उसका पैदा करदा है और अशिया में ख़्वास उसके रखे हुए हैं, वो उनका मोहताज नहीं है और वो इल्लत के बग़ैर मअ्लूल पैदा कर सकता है, अशिया से उनके ख़्वाब छीन सकता है। वो मोजिज़ात के मुन्किर हैं, क्योंकि उनके बक़ौल इल्लत और मअ्लूल एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते, उनका वुजूद एक-दूसरे के साथ ही पाया जा सकता है, हालांकि ये बात ग़लत है और आज आइंस्टीन ने क़ुबूल कर लिया है कि लुज़ूम और ख़्वास मुस्तक़िल वुजूद रखते हैं, मल्ज़ूम और ख़ास्सह वाली चीज़ के साथ ही नहीं होते, इसलिये ये एक दूसरे के बग़ैर पाये जा सकते हैं, अल्लाह तआला मल्ज़ूम, मअ्लूल, लुज़ूम और इल्लत के बग़ैर पैदा कर सकता है। इसी तरह लाज़िम-मल्ज़ूम के बग़ैर और इल्लत, मअ्लूल के बग़ैर पाई जा सकती है। अल्लाह तआला जो चाहे कर सकता है, वो हर चीज़ पर क़ादिर है और मोजिज़ा अल्लाह का ही अमल है, जो रसूल के हाथों ज़ाहिर फ़रमाता है।(तक्मिला : जिल्द 4, पेज नं. 475)

मुफ़रदातुल हदीस़ : हत्ता तवज़्ज़अ व मिन इन्दि आख़िरिहिम : अरबी मुहावरे की रू से इसका मानी होता है, तमाम लोगों ने वुज़ू कर लिया, यहाँ तक कि जो आख़िर में थे, उनकी बारी भी आ गई, आख़िरी फ़र्द भी महरूम न रहा।

(5942) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा, जबकि असर की नमाज़ का वक़्त क़रीब आ चुका था, लोगों ने पानी तलाश किया और वो न मिला तो रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास थोड़ा सा पानी लाया गया, सो आपने उस बर्तन में अपना हाथ रखा और लोगों को उससे वुज़ू करने का हुक्म दिया, मैंने देखा, पानी आपकी उंगलियों के नीचे से फूट रहा है, लोग वुज़ू करने लगे यहाँ तक कि आख़िरी फ़र्द तक ने वुज़ू कर लिया।

(सहीह बुख़ारी : 3573, तिर्मिज़ी : 3631, नसाई : 1/61)

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَحَانَتْ صَلاَةُ الْعَصْرِ فَالْتَمَسَ النَّاسُ الْوَضُوءَ فَلَمْ يَجِدُوهُ فَأُتِيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِوَضُوءٍ فَوَضَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي ذَلِكَ الإِنَاءِ يَدَهُ وَأَمَرَ النَّاسَ أَنْ يَتَوَضَّئُوا مِنْهُ - قَالَ - فَرَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ تَحْتِ أَصَابِعِهِ فَتَوَضَّأَ النَّاسُ حَتَّى تَوَضَّئُوا مِنْ عِنْدِ آخِرِهِمْ .

(5943) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) और आपके साथी ज़ौरा मक़ाम पर थे(और ज़ौरा मदीना के बाज़ार में मस्जिद के क़रीब एक जगह है) आपने पानी का प्याला तलब किया और उसमें आपने अपनी हथेली रख दी तो पानी आपकी उंगलियों के दरम्यान से फूटने लगा, सो आपके तमाम साथियों ने वुज़ू कर लिया, हज़रत अनस के शागिर्द कहते हैं, मैंने पूछा, ऐ अबू हम्ज़ह! उनकी तादाद कितनी थी? जवाब दिया, वो तीन सौ के क़रीब थे।

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - يَعْنِي ابْنَ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَصْحَابَهُ بِالزَّوْرَاءِ - قَالَ وَالزَّوْرَاءُ بِالْمَدِينَةِ عِنْدَ السُّوقِ وَالْمَسْجِدِ فِيمَا ثَمَّهْ - دَعَا بِقَدَحٍ فِيهِ مَاءٌ فَوَضَعَ كَفَّهُ فِيهِ فَجَعَلَ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ فَتَوَضَّأَ جَمِيعُ أَصْحَابِهِ . قَالَ قُلْتُ كَمْ كَانُوا يَا أَبَا حَمْزَةَ قَالَ كَانُوا زُهَاءَ الثَّلاَثِمِائَةِ .

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ بِالزَّوْرَاءِ فَأُتِيَ بِإِنَاءِ مَاءٍ لاَ يَغْمُرُ أَصَابِعَهُ أَوْ قَدْرَ مَا يُوَارِي أَصَابِعَهُ . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ هِشَامٍ .

(5944) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ज़ौरा जगह पर थे तो पानी का एक बर्तन लाया गया, जिसमें आपकी उंगलियाँ नहीं डूबती थीं या वो आपकी उंगलियों को छिपाने के बक़द्र था, फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की।

(सहीह बुख़ारी : 3572)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ला यग़मुरु : वो ढांपता नहीं था।(2) युवारी : वो छिपाता था।

وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ أُمَّ مَالِكٍ، كَانَتْ تُهْدِي لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي عُكَّةٍ لَهَا سَمْنًا فَيَأْتِيهَا بَنُوهَا فَيَسْأَلُونَ الأُدْمَ وَلَيْسَ عِنْدَهُمْ شَىْءٌ فَتَعْمِدُ إِلَى الَّذِي كَانَتْ تُهْدِي فِيهِ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَتَجِدُ فِيهِ سَمْنًا فَمَا زَالَ يُقِيمُ لَهَا أُدْمَ بَيْتِهَا حَتَّى عَصَرَتْهُ فَأَتَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " عَصَرْتِيهَا " . قَالَتْ نَعَمْ . قَالَ " لَوْ تَرَكْتِيهَا مَا زَالَ قَائِمًا " .

(5945) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं कि उम्मे मालिक(रज़ि.) अपने एक कुप्पे में नबी(ﷺ) को घी का तोहफ़ा देती थीं, उसके बेटे उसके पास आकर सालन माँगते और उनके पास कोई चीज़ न होती तो वो उस कुप्पे का रुख़ करती, जिसमें नबी(ﷺ) को तोहफ़ा देती थीं तो उसमें घी पाती, वो कुप्पा हमेशा उसके घर का सालन मुहय्या करता रहा, यहाँ तक कि उसने उसको निचोड़ लिया तो वो नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। आपने पूछा, 'क्या तूने इसे निचोड़ लिया है?' उसने कहा, जी हाँ! आपने फ़रमाया, 'अगर तू इसे छोड़ देती तो हमेशा सालन मिलता रहता।'

وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَجُلاً، أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَسْتَطْعِمُهُ فَأَطْعَمَهُ شَطْرَ وَسْقِ شَعِيرٍ فَمَا زَالَ الرَّجُلُ يَأْكُلُ مِنْهُ وَامْرَأَتُهُ وَضَيْفُهُمَا حَتَّى

(5946) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी नबी(ﷺ) से खाना तलब करने के लिये आया तो आपने उसे आधा वसक़ जौ दिये। तो उससे वो आदमी, उसकी बीवी और उनका मेहमान खाते रहे। यहाँ तक कि उसने उसको माप लिया(तो वो ख़त्म हो गया)। सो वो नबी(ﷺ) की ख़िदमत में

كَالَهُ فَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " لَوْ لَمْ تَكِلْهُ لأَكَلْتُمْ مِنْهُ وَلَقَامَ لَكُمْ " .

हाज़िर हुआ आपने फ़रमाया, 'अगर तुम उसको न मापते तो उससे खाते रहते और तुम्हारे लिये बाक़ी रहता।'

फ़ायदा : अगर किसी की दुआ के नतीजे में किसी के ग़ल्ले में बरकत पैदा हो जाये या किसी और चीज़ में बरकत हो जाये तो उसकी कुरेद की जुस्तजू(कोशिश) नहीं करना चाहिये, क्योंकि ये तस्लीम व रिज़ा और तवक्कल के मुनाफ़ी(खिलाफ़) है, उसके माप की बिना पर, बरकत उठ गई। अगर वो मालूम करने की कोशिश न करता तो ग़ल्ला बरक़रार रहता।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَلِيٍّ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، -وَهُوَ ابْنُ أَنَسٍ - عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ الْمَكِّيِّ، أَنَّ أَبَا الطُّفَيْلِ، عَامِرَ بْنَ وَاثِلَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ أَخْبَرَهُ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَامَ غَزْوَةِ تَبُوكَ فَكَانَ يَجْمَعُ الصَّلاَةَ فَصَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ جَمِيعًا وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ جَمِيعًا حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمًا أَخَّرَ الصَّلاَةَ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ جَمِيعًا ثُمَّ دَخَلَ ثُمَّ خَرَجَ بَعْدَ ذَلِكَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ جَمِيعًا ثُمَّ قَالَ " إِنَّكُمْ سَتَأْتُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَيْنَ تَبُوكَ وَإِنَّكُمْ لَنْ تَأْتُوهَا حَتَّى يُضْحِيَ النَّهَارُ فَمَنْ جَاءَهَا مِنْكُمْ فَلاَ يَمَسَّ مِنْ مَائِهَا شَيْئًا حَتَّى آتِيَ " . فَجِئْنَاهَا وَقَدْ سَبَقَنَا إِلَيْهَا رَجُلاَنِ وَالْعَيْنُ مِثْلُ الشِّرَاكِ تَبِضُّ بِشَىْءٍ مِنْ مَاءٍ - قَالَ - فَسَأَلَهُمَا

(5947) हज़रत मुआज़ बिन जबल(रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-तबूक के लिये निकले तो आप दो नमाज़ों को जमा करते थे, आपने ज़ुहर और असर इकट्ठी पढ़ीं और मग़रिब व इशा को जमा किया, यहाँ तक कि आपने एक दिन नमाज़ को मुअख़्ख़र किया, फिर निकले और ज़ुहर और असर को इकट्ठा पढ़ा, फिर अपने ख़ेमे में दाख़िल हो गये। फिर उसके बाद निकले और मग़रिब व इशा को जमा किया। फिर फ़रमाया, 'तुम कल इन्शाअल्लाह तबूक के चश्मे पर पहुँच जाओगे और तुम उस पर दिन चढ़े ही पहुँचोगे। तो तुममें से जो उस पर पहुँचे, मेरे पहुँचने से पहले उसके पानी को हाथ न लगाये।' हम उस पर पहुँचे तो हमसे पहले दो आदमी पहुँच गये थे और चश्मे में तस्मे की मानिन्द थोड़ा-थोड़ा पानी बह रहा था। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन दोनों से पूछा, 'क्या तुमने इसके पानी को हाथ लगाया है?' उन्होंने कहा, जी हाँ! तो नबी(ﷺ) ने उन्हें डांटा, सख़्त-सुस्त कहा और अल्लाह को जो मन्ज़ूर

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هَلْ مَسَسْتُمَا مِنْ مَائِهَا شَيْئًا " . قَالاَ نَعَمْ . فَسَبَّهُمَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ لَهُمَا مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ - قَالَ - ثُمَّ غَرَفُوا بِأَيْدِيهِمْ مِنَ الْعَيْنِ قَلِيلاً قَلِيلاً حَتَّى اجْتَمَعَ فِي شَىْءٍ - قَالَ - وَغَسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِيهِ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ ثُمَّ أَعَادَهُ فِيهَا فَجَرَتِ الْعَيْنُ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ أَوْ قَالَ غَزِيرٍ - شَكَّ أَبُو عَلِيٍّ أَيُّهُمَا قَالَ - حَتَّى اسْتَقَى النَّاسُ ثُمَّ قَالَ " يُوشِكُ يَا مُعَاذُ إِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ أَنْ تَرَى مَا هَا هُنَا قَدْ مُلِئَ جِنَانًا " .

था उन्हें कहा। फिर लोगों ने अपने हाथों से चश्मे से थोड़ा-थोड़ा पानी निकाला, यहाँ तक कि वो किसी चीज़ में जमा हो गया और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसमें अपने दोनों हाथ और चेहरा धोया, फिर पानी उस चश्मे में लौटा दिया तो चश्मे से पानी जोश या कसरत से निकलने लगा, यहाँ तक कि लोगों ने(पी लिया और) पिलाया और फिर फ़रमाया, 'ऐ मुआज़! क़रीब है, अगर तुझे लम्बी उम्र मिली तो तुम यहाँ के इलाक़े को बाग़ों से भरा हुआ देखोगे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) तबिज़्ज़ु : थोड़ा-थोड़ा बह रहा है, क़तरा-क़तरा निकल रहा है।**(2) माउम् मुन्हमिर :** मुसलसल बहने वाला।**(3) ग़ज़ीर :** बहुत ज़्यादा।**(4) जिनान :** जन्नत की जमा है, बाग़। ये आपका मोजिज़ा है कि आपकी पेशीनगोई के मुताबिक़ उस चश्मे के आस-पास सर सब्ज़ व शादाब बाग़ात लहलहाने लगे।

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ने तबूक के चश्मे पर पहुँचकर लोगों को उस पानी के इस्तेमाल करने से रोक दिया था, ताकि आपसे पहले उसको हाथ लगाने से कहीं, वो बिल्कुल ख़ुश्क न हो जाये और बरकत के ज़ुहूर के लिये पानी ही न मिल सके, अल्लाह चाहे तो पत्थर से भी पानी के 12 चश्मे निकल पड़ते हैं।

और इमाम किसी मस्लिहत के तहत मफ़ादे आम्मह(जनता के फ़ायदे) की चीज़ के इस्तेमाल से रोक सकता है, उन दो आदमियों ने नादानी, जहालत या भूल के सबब आपके हुक्म की मुख़ालिफ़त की और मुख़ालिफ़त के सबब आपने उनको सरज़निश और तौबीख़ फ़रमाई कि तुम्हें मेरे फ़रमान का लिहाज़ करना चाहिये था और बक़ौल कुछ वो दोनों मुनाफ़िक़ थे, दो नमाज़ें जमा करने का मसला, नमाज़ के मसाइल में गुज़र चुका है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ

(5948) हज़रत अबू हुमैद(रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-तबूक के लिये निकले तो हम वादी-ए-कुरा

عَبَّاسِ بْنِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ، قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَزْوَةَ تَبُوكَ فَأَتَيْنَا وَادِيَ الْقُرَى عَلَى حَدِيقَةٍ لاِمْرَأَةٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اخْرُصُوهَا " . فَخَرَصْنَاهَا وَخَرَصَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَشْرَةَ أَوْسُقٍ وَقَالَ " أَحْصِيهَا حَتَّى نَرْجِعَ إِلَيْكِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ " . وَانْطَلَقْنَا حَتَّى قَدِمْنَا تَبُوكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سَتَهُبُّ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَةَ رِيحٌ شَدِيدَةٌ فَلاَ يَقُمْ فِيهَا أَحَدٌ مِنْكُمْ فَمَنْ كَانَ لَهُ بَعِيرٌ فَلْيَشُدَّ عِقَالَهُ " . فَهَبَّتْ رِيحٌ شَدِيدَةٌ فَقَامَ رَجُلٌ فَحَمَلَتْهُ الرِّيحُ حَتَّى أَلْقَتْهُ بِجَبَلَىْ طَيِّئٍ وَجَاءَ رَسُولُ ابْنِ الْعَلْمَاءِ صَاحِبِ أَيْلَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِكِتَابٍ وَأَهْدَى لَهُ بَغْلَةً بَيْضَاءَ فَكَتَبَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَهْدَى لَهُ بُرْدًا ثُمَّ أَقْبَلْنَا حَتَّى قَدِمْنَا وَادِيَ الْقُرَى فَسَأَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَرْأَةَ عَنْ حَدِيقَتِهَا " كَمْ بَلَغَ ثَمَرُهَا " . فَقَالَتْ عَشَرَةَ أَوْسُقٍ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي مُسْرِعٌ فَمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ فَلْيُسْرِعْ مَعِيَ وَمَنْ شَاءَ فَلْيَمْكُثْ " . فَخَرَجْنَا

में एक औरत के बाग़ीचे पर पहुँचे, सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाग़ के फल का अन्दाज़ा लगाओ।' हमने उसका अन्दाज़ा लगाया और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसका अन्दाज़ा दस वसक़ लगाया और आपने फ़रमाया, 'ऐ औरत! इसके फल को याद रखना, यहाँ तक कि इन्शाअल्लाह हम तेरे पास लौट आयें।' हम चल पड़े यहाँ तक कि तबूक पहुँच गये तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'आज रात सख़्त आन्धी चलेगी, तुममें से कोई उसमें न उठे और जिसके पास ऊँट है, वो उसका बन्धन मज़बूत करके बांधे।' तो सख़्त आन्धी चली, एक आदमी खड़ा हुआ, आन्धी ने उसको उठाकर तै क़बीले के दो पहाड़ों में फेंक दिया और ऐला के हाकिम इब्ने अलमा का एलची(क़ासिद) रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास एक ख़त लाया और उसने आपको तोहफ़े में सफ़ेद ख़च्चर दी। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसकी तरफ़ ख़त लिखा और आपने उसे एक चादर तोहफ़े में दी। फिर हम वापस पलटे यहाँ तक कि हम वादी-ए-कुरा पहुँच गये तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने औरत से उसके बाग़ के बारे में पूछा, 'उसका फल कितना निकला।' उसने कहा, दस वसक़। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं तेज़ रफ़्तारी इख़्तियार करने लगा हूँ, तुममें से जो चाहे वो मेरे साथ तेज़-तेज़ चले और जो चाहे ठहर जाये।' सो हम चले यहाँ तक कि मदीना पर जा झांके तो आपने फ़रमाया, 'ये(मदीना) पाक

حَتَّى أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ فَقَالَ " هَذِهِ طَابَةُ وَهَذَا أُحُدٌ وَهُوَ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ " . ثُمَّ قَالَ " إِنَّ خَيْرَ دُورِ الأَنْصَارِ دَارُ بَنِي النَّجَّارِ ثُمَّ دَارُ بَنِي عَبْدِ الأَشْهَلِ ثُمَّ دَارُ بَنِي عَبْدِ الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ ثُمَّ دَارُ بَنِي سَاعِدَةَ وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ " . فَلَحِقَنَا سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ فَقَالَ أَبُو أُسَيْدٍ أَلَمْ تَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَيَّرَ دُورَ الأَنْصَارِ فَجَعَلَنَا آخِرًا . فَأَدْرَكَ سَعْدٌ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ خَيَّرْتَ دُورَ الأَنْصَارِ فَجَعَلْتَنَا آخِرًا . فَقَالَ " أَوَلَيْسَ بِحَسْبِكُمْ أَنْ تَكُونُوا مِنَ الْخِيَارِ " .

सरज़मीन(ताबह्) है और ये उहुद है और ये ऐसा पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता है और हम इससे मुहब्बत करते हैं, फिर आपने फ़रमाया, 'अन्सार के घरानों से बेहतरीन ख़ानदान बनू नज्जार है, फिर बनू अब्दे अश्हल का घराना है, फिर बनू अब्दुल हारिस़ बिन ख़ज़रज का ख़ानदान है, फिर बनू साइदी का ख़ानदान है और अन्सार के तमाम ख़ानदानों में ख़ैर व ख़ूबी है।' फिर हमसे हज़रत सअ़द बिन उ़बादा(रज़ि.) मिले तो हज़रत अबू उसैद(रज़ि.) ने कहा, क्या आपको मालूम है रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अन्सारी ख़ानदानों में इम्तियाज़(फ़र्क़) क़ायम किया तो हमें आख़िर में क़रार दिया तो हज़रत सअ़द(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिले और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने अन्सारी ख़ानदानों की फ़ज़ीलत व ख़ूबी का तज़्किरा फ़रमाया तो हमें आख़िर में ठहराया तो आपने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें ये काफ़ी नहीं है कि तुम बेहतरीन लोगों में से हो।'

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) वादीउल क़ुरा : ये एक पुराना शहर है जो मदीना और शाम के दरम्यान वाक़ेअ है।**(2) उख़रुसूहा :**(इस बाग़ के) फल का अन्दाज़ा लगाओ, कितना होगा।

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ने सफ़रे तबूक में जिन चीज़ों की निशानदेही फ़रमाई थी, उनका ज़ुहूर उसी तरह हुआ, चश्म-ए-तबूक का वाक़िया पिछली हदीस़ में गुज़र चुका है। इस हदीस़ में बाग़ की खजूरों की मिक़्दार का तज़्किरा है और इस बात का कि आपने साथियों की हमदर्दी और ख़ैरख़्वाही के पेशे नज़र, उन पर शफ़क़त का इज़हार करते हुए, उनको एक एहतियाती तदबीर इख़्तियार करने का हुक्म दिया कि रात को सख़्त आन्धी चलेगी, इसलिये उसमें कोई अकेला आदमी न उठे और अपने ऊँटों के ज़ानू बन्द मज़बूत तरीक़े से बांध लेना, लेकिन दो आदमी मजबूरी की बिना पर इसकी पाबंदी न कर सके, एक क़ज़ाए हाजत के लिये उठा तो उसका इसी बीच में गला घोंट दिया गया, दूसरा आदमी अपने ऊँट

की तलाश में निकला तो आन्धी ने उसको बनू तै के दो मशहूर पहाड़ों में फेंक दिया, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) को इत्तिलाअ़ दी गई तो आपने फ़रमाया, 'क्या मैंने तुम्हें अकेले निकलने से मना नहीं किया था?' फिर आपकी दुआ से गला घुटने वाले को तन्दुरुस्ती हासिल हो गई और दूसरा जब आप मदीना वापस आ गये तो आपसे मिला और आपने अन्सारी घरों की फ़ज़ीलत उनकी इस्लाम लाने में सबक़त और इअ्ला-ए-कलिमतुल्लाह(अल्लाह के कलिमे की सर बुलंदी) के लिये उनकी मेहनत व कोशिश की बुनियाद पर बयान की, जो पहले मुसलमान हुए और इस्लामी ख़िदमात में पेश-पेश रहे, उनको अव्वल नम्बर दिया, इस बुनियाद पर बाद वाले मरातिब बयान किये।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ سَلَمَةَ الْمَخْزُومِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ " وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ مِنْ قِصَّةِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ وَزَادَ فِي حَدِيثِ وُهَيْبٍ فَكَتَبَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِبَحْرِهِمْ . وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِ وُهَيْبٍ فَكَتَبَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(5949) यही रिवायत इमाम साहब के दो और उस्तादों ने बयान की, लेकिन इसमें सिर्फ़ 'अन्सार के हर ख़ानदान में ख़ैर है।' तक बयान किया है और हज़रत सअ़द बिन उ़बादा का वाक़िया बयान नहीं किया और वुहैब की हदीस़ में, उसकी तरफ़ रसूलुल्लाह(ﷺ) के ख़त लिखने का ज़िक्र नहीं है।

باب تَوَكُّلِهِ عَلَى اللَّهِ وَعِصْمَةِ اللَّهِ تَعَالَى لَهُ مِنَ النَّاسِ

बाब 4 : आपका अल्लाह तआ़ला पर भरोसा और अल्लाह का आप को लोगों से महफ़ूज़ रखना

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي، سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ، ح

وَحَدَّثَنِي أَبُو عِمْرَانَ، مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ زِيَادٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ -

(5950) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ नज्द की तरफ़ एक जंगी सफ़र किया। रसूलुल्लाह(ﷺ) हमें एक ऐसी वादी में मिले, जहाँ कांटेदार दरख़्त बहुत थे तो रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दरख़्त के नीचे

عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤَلِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَزْوَةً قِبَلَ نَجْدٍ فَأَدْرَكَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَحْتَ شَجَرَةٍ فَعَلَّقَ سَيْفَهُ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا - قَالَ - وَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْوَادِي يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ -قَالَ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ رَجُلاً أَتَانِي وَأَنَا نَائِمٌ فَأَخَذَ السَّيْفَ فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِي فَلَمْ أَشْعُرْ إِلاَّ وَالسَّيْفُ صَلْتًا فِي يَدِهِ فَقَالَ لِي مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي قَالَ قُلْتُ اللَّهُ . ثُمَّ قَالَ فِي الثَّانِيَةِ مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي قَالَ قُلْتُ اللَّهُ . قَالَ فَشَامَ السَّيْفَ فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٌ " . ثُمَّ لَمْ يَعْرِضْ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

उतरे और अपनी तलवार उसकी शाख़ों में से किसी शाख़ के साथ लटका दी और लोग साये की तलब में उस वादी में बिखर गये, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने(सबको बुलाकर) फ़रमाया, 'एक आदमी आया जबकि मैं सोया हुआ था, उसने मेरी तलवार पकड़ ली, मैं बेदार हुआ तो वो मेरे सर पर खड़ा था और मुझे उस वक़्त पता चला, जब तलवार उसने अपने हाथ में सोंती हुई थी, मुझे उसने कहा, तुझे मुझसे कौन बचायेगा? मैंने कहा, अल्लाह! उसने फिर दोबारा कहा, तुझे मुझसे कौन बचायेगा? मैंने कहा, अल्लाह! रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तलवार मियान में डाल ली(आपने फ़रमाया,) ये वही शख़्स बैठा है।' फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे कुछ नहीं कहा।
(सहीह बुख़ारी : 2910, 4134, 4135)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) सल्तन : तलवार मियान से निकाल लेना। **(2) शामस्सैफ़ :** तलवार को मियान में डाल लिया।

फ़ायदा : ग़ज़्व-ए-ज़ातिर्रिक़ाअ 7 हिजरी में ये वाक़िया पेश आया कि आप एक सायेदार कीकर के दरख़्त के नीचे सोये हुए थे और आपकी तलवार दरख़्त की शाख़ के साथ लटक रही थी कि एक ग़ौरस़ नामी मुश्रिक आया, उसने आपकी तलवार सोंत ली और कहा, तुझे मुझसे कौन बचायेगा? आपने फ़रमाया, अल्लाह! तलवार उसके हाथ से गिर गई और आपने उठा ली और फ़रमाया, अब तुम्हें मुझसे कौन बचायेगा? उसने कहा, आप! आपने तलवार मियान में डाल ली और उसे छोड़ दिया।(तफ़्सील के लिये देखिये अर्रहीक़ुल मख़्तूम पेज नं. 611-615)
इस हदीस़ से आपका अल्लाह तआला पर ऐतमाद व भरोसा और अल्लाह का आपको तहफ़्फ़ुज़(सुरक्षा) में रखना दोनों साबित होते हैं।

(5951) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी(रज़ि.) जो रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबी हैं, बयान करते हैं कि वो नबी(ﷺ) के साथ नज्द की तरफ़ एक जंगी सफ़र पर गये, जब नबी(ﷺ) वापस लौटे तो वो भी आपके साथ वापस आये, उन्हें एक दिन एक जगह क़ैलूला करना पड़ा, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ قَالاَ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي سِنَانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤَلِيُّ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ الأَنْصَارِيَّ، وَكَانَ، مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَهُمَا أَنَّهُ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم غَزْوَةً قِبَلَ نَجْدٍ فَلَمَّا قَفَلَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَفَلَ مَعَهُ فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ يَوْمًا ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ وَمَعْمَرٍ .

(5952) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ चले यहाँ तक कि जब हम ज़ातुर्रिक़ाअ पहुँच गये, आगे ऊपर वाली रिवायत है, लेकिन उसमें ये नहीं है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उससे कुछ तअर्रुज़(पूछताछ) नहीं किया।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ أَقْبَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى إِذَا كُنَّا بِذَاتِ الرِّقَاعِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ وَلَمْ يَذْكُرْ ثُمَّ لَمْ يَعْرِضْ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ.

बाब 5 : जिस हिदायत और इल्म के साथ नबी(ﷺ) को भेजा गया उसकी तम्सील(मिसाल)

باب بَيَانِ مَثَلِ مَا بُعِثَ بِهِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مِنَ الْهُدَى وَالْعِلْمِ

(5953) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो हिदायत और इल्म अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर ने मुझे देकर भेजा है, उसकी मिसाल बारिश की

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ - وَاللَّفْظُ لأَبِي عَامِرٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ

أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ مَثَلَ مَا بَعَثَنِي اللَّهُ بِهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنَ الْهُدَى وَالْعِلْمِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَصَابَ أَرْضًا فَكَانَتْ مِنْهَا طَائِفَةٌ طَيِّبَةٌ قَبِلَتِ الْمَاءَ فَأَنْبَتَتِ الْكَلأَ وَالْعُشْبَ الْكَثِيرَ وَكَانَ مِنْهَا أَجَادِبُ أَمْسَكَتِ الْمَاءَ فَنَفَعَ اللَّهُ بِهَا النَّاسَ فَشَرِبُوا مِنْهَا وَسَقَوْا وَرَعَوْا وَأَصَابَ طَائِفَةً مِنْهَا أُخْرَى إِنَّمَا هِيَ قِيعَانٌ لاَ تُمْسِكُ مَاءً وَلاَ تُنْبِتُ كَلأً فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ فَقُهَ فِي دِينِ اللَّهِ وَنَفَعَهُ بِمَا بَعَثَنِي اللَّهُ بِهِ فَعَلِمَ وَعَلَّمَ وَمَثَلُ مَنْ لَمْ يَرْفَعْ بِذَلِكَ رَأْسًا وَلَمْ يَقْبَلْ هُدَى اللَّهِ الَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ " .

है, वो एक ज़मीन पर बरसी, उसका एक टुकड़ा ज़रख़ेज़ था, उसने पानी को क़ुबूल किया, उसने घास और बहुत सा सब्ज़ा पैदा किया, उसका एक टुकड़ा बंजर था, उसने पानी को रोक लिया, अल्लाह ने लोगों को उससे फ़ायदा पहुँचाया, लोगों ने उससे पानी पिया, जानवरों को पिलाया, खेती को सैराब किया और उसके एक और टुकड़े पर बारिश बरसी, वो बस चटियल मैदान था, न वो पानी रोकता है और न घास उगाता है, ये उन लोगों की मिसाल है जिन्होंने अल्लाह के दीन को समझा और अल्लाह तआला ने जो कुछ मुझे देकर भेजा है, उसने उसको फ़ायदा पहुँचाया, उसने ख़ुद सीखा और दूसरों को सिखाया और उन लोगों की मिसाल, जिन्होंने इसकी तरफ़(इल्म व हिदायत की तरफ़ सर उठाकर नहीं देखा और जो हिदायत देकर मुझे भेजा गया है, उसे क़ुबूल नहीं किया।'

(सहीह बुख़ारी, बाब : 79)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अल्कला : ताज़ा और ख़ुश्क सब्ज़ा।**(2) अल्उश्बु :** ताज़ा सब्ज़ा।**(3) अजादिब :** जदबुन की जमा है, पत्थरीली ज़मीन जो पानी को नहीं चूसती।**(4) क़ीआन :** क़ाअ की जमा है, हमवार और चटियल मैदान, जो न पानी को जज़्ब करती है और न वहाँ पानी जमा होता है।**(5) फ़क़ुहा :** अपने अंदर फ़ुक़ाहत और सूझ-बूझ पैदा की।

फ़ायदा : इस हदीस़ में आपके लाये हुए दीन व शरीअत को बारिश से तश्बीह दी गई है, जिसका फ़ैज़ और नफ़ा सबके लिये आम है, लेकिन इससे फ़ायदा उठाने के लिये क़ाबिलियत और अहलिय्यत की ज़रूरत है, जिसके अंदर उससे फ़ायदा उठाने की इस्तिअ़दाद और सलाहियत नहीं है, वो इससे फ़ायदा नहीं उठा सकता और आपने बारिश से फ़ायदा उठाने वाली ज़मीन की तीन क़िस्में की हैं, पहली क़िस्म की ज़मीन वो जिसमें बारिश के पानी को जज़्ब करने(चूसने) और उससे फ़ायदा उठाने की सलाहियत है, यानी वो ज़रख़ेज़ ज़मीन है, जो पानी को जज़्ब करती है। इसलिये बारिश के पानी से उसमें सब्ज़ा

पैदा होता है, इस तरह ज़मीन ने बारिश से ख़ुद भी फ़ायदा उठाया और दूसरों को भी फ़ायदा पहुँचाया, इस तरह आपकी शरीअ़त और हिदायत से लोगों के एक तबक़े ने ख़ुद भी फ़ायदा उठाया, इसको सिखाया और इस पर अ़मल किया, इससे मसाइल का इस्तिम्बात किया, दूसरों को भी तालीम व तदरीस और तसनीफ़ व तब्लीग़ से फ़ायदा पहुँचाया, ज़मीन की दूसरी क़िस्म वो है, जो पत्थरीली है। पानी को जज़्ब करके ख़ुद फ़ायदा नहीं उठाती है, लेकिन पानी को रोक लेती है, जिससे लोग ख़ुद भी पीते हैं, अपने मवेशियों और खेतियों को भी पिलाते हैं। इस तरह कुछ लोग हैं जो इल्म हासिल करते हैं, इसे महफ़ूज़ रखते हैं, लोगों तक पहुँचाते हैं, लेकिन उनमें इस्तिम्बात की अहलिय्यत नहीं होती और ज़मीन का तीसरा टुकड़ा या तीसरी क़िस्म वो है जिस पर बारिश होती है, लेकिन वो चटियल है। न पानी जज़्ब करती है और न ही पानी को रोकती है, इसलिये न बारिश से फ़ायदा उठाती है और न दूसरों को फ़ायदा पहुँचाती है। इस तरह लोगों की तीसरी क़िस्म वो है जो दीन व शरीअ़त की बातें सुनते हैं, लेकिन उनको याद करने की कोशिश ही नहीं करते, इसलिये न ख़ुद उससे फ़ायदा उठा सकते हैं और न दूसरों तक पहुँचा सकते हैं, आपने पहली दो क़िस्मों को जमा कर दिया है और तीसरी क़िस्म को अलग बयान फ़रमाया है, क्योंकि दोनों क़िस्मों ने इल्म व हिदायत से किसी न किसी ऐतबार से फ़ायदा उठाया, लेकिन तीसरी क़िस्म ने कोई फ़ायदा ही नहीं उठाया, न ख़ुद कुछ हासिल किया और न दूसरों को कुछ बताया।

बाब 6 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का अपनी उम्मत पर शफ़क़त फ़रमाना और उनको नुक़सानदेह चीज़ों से मुबालग़े के साथ डराना

باب شَفَقَتِهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى أُمَّتِهِ وَمُبَالَغَتِهِ فِي تَحْذِيرِهِمْ مِمَّا يَضُرُّهُمْ

(5954) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी और अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ मुझे देकर भेजा है, उसकी मिसाल उस आदमी की है जो अपनी क़ौम के पास आया और उन्हें कहा, ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपनी आँखों से(दुश्मन का) लश्कर देखा है और मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला डराता हूँ, लिहाज़ा अपनी जान बचाओ तो उसकी क़ौम के कुछ लोगों ने उसकी बात

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ "إِنَّ مَثَلِي وَمَثَلَ مَا بَعَثَنِيَ اللَّهُ بِهِ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمَهُ فَقَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَىَّ وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ فَالنَّجَاءَ.فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ

قَوْمِهِ فَأَدْلَجُوا فَانْطَلَقُوا عَلَى مُهْلَتِهِمْ وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَأَصْبَحُوا مَكَانَهُمْ فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَأَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ أَطَاعَنِي وَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهِ وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِي وَكَذَّبَ مَا جِئْتُ بِهِ مِنَ الْحَقِّ " .

मान ली और रात के शुरू में चल पड़े और आहिस्ता-आहिस्ता चलते रहे और उनमें से कुछ लोगों ने उसको झुठलाया और सुबह तक अपनी जगह रहे, लश्कर ने उन पर सुबह-सुबह हमला किया, उनको हलाक कर दिया और उनको ख़त्म कर डाला, यही मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने मेरी इताअत की और जो कुछ मैं लाया हूँ, उसकी पैरवी की और जिन्होंने मेरी नाफ़रमानी की और जो हक़ मैं लेकर आया हूँ, उसको झुठलाया।'

(सहीह बुख़ारी : 6482, 7283)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) अन्नज़ीरुल उरयान : नंगा और बरहना होकर डराने वाला, जाहिलिय्यत के दौर में ये रिवाज और दस्तूर था, अगर कोई इंसान दूर से अपनी क़ौम को किसी ख़तरे से आगाह करना चाहता तो अपने कपड़े उतारकर उन कपड़ों से इशारा करता कि ख़तरा है, तैयार हो जाओ तो उसके सच्चा होने की दलील होती, चूंकि रसूल की बात क़तई और यक़ीनी होती है, जिसमें झूठ का एहतिमाल नहीं होता, इसलिये उसको नज़ीरुल उरयान से तश्बीह दी गई है।**(2) नजाअ :** यानी उत्लुबुन्नजा : निजात और ख़ुलासी का तरीक़ा इख़्तियार करो, अपनी राहे निजात तलाश करो।**(3) अद्लजू :** वो सरे शाम चल पड़े, रात भर आहिस्ता-आहिस्ता(अला महलिहिम या मुहलतिहिम, चलते रहे और दुश्मन की दस्तरस से निकल गये)।**(4) सब्ब-हहुमुल जैशु :** लश्कर ने सुबह-सुबह सोये-सोये हमला कर दिया, मक़सद है दुश्मन अचानक हमलावर हो गया और उनको मुक़ाबला या तैयारी का मौक़ा न दिया।**(5) वजता-हहुम :** उनको बेख़ व बन से उखेड़ दिया, यानी सबको तहस-नहस कर दिया, कोई भी न बच सका।

फ़ायदा : रसूल, क़ौम के हर अव्वल दस्ते या क़ौम के निगरान और मुहाफ़िज़ की तरह अपनी उम्मत की निजात और ख़तरात से बचाव का जज़्बा रखता है और उनको उन तमाम उमूर से आगाह फ़रमाता है, जो उनके लिये नुक़सान या हलाकत का बाइस बन सकते हैं, इसलिये उम्मत ख़तरात और नुक़सानात से तभी महफ़ूज़(सुरक्षित) रह सकती है कि वो अपने रसूल की हिदायात व तालीमात पर अमल पैरा हो, वरना वो तबाही और बर्बादी से बच नहीं सकती, आज-कल सर की आँखों से इस हक़ीक़त का हम नज़ारा कर रहे हैं, लेकिन इबरत पज़ीरी और सबक़ आमूज़ी का मल्का मस्ख़ हो चुका है, इसलिये ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होने का नाम नहीं लेते।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ،عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ أُمَّتِي كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا فَجَعَلَتِ الدَّوَابُّ وَالْفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيهِ فَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ وَأَنْتُمْ تَقَحَّمُونَ فِيهِ" .

(5955) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बस मेरी मिसाल और मेरी उम्मत की मिसाल यानी हमारी तम्सील उस आदमी की मिसाल है जिसने आग जलाई तो पतंगे और परवाने उसमें गिरने लगे, सो मैं तुम्हें कमरों से पकड़ रहा हूँ और तुम उसमें छलांगें लगा रहे हो।'
(तिर्मिज़ी : 2874)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) दवाब्ब : दाब्बह की जमा है, आग में गिरने वाले पतंगे और कीड़े, फ़राश, रोशनी और आग पर फ़रेफ़्ता परवाने, हुजज़ुन हजज़ह की जमा है, कमर, चादर बांधने की जगह।(2) **तक़ह्हमून :** तुम बिला सोचे-समझे उसमें घुस रहे हो, उसमें छलांगें लगा रहे हो।

फ़ायदा : ख़्वाहिशाते नफ़्स जो इंसान की तबाही और बर्बादी का बाइस़ हैं, इंसान परवानों की तरह उनमें गिरफ़्तार हो रहे हैं और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूरी वज़ाहत के साथ उनके नुक़सानात को बयान करके उम्मत को उनसे बचाने की कोशिश फ़रमाई है।

وَحَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(5956) इमाम साहब को यही रिवायत दो और उस्तादों ने सुनाई है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهَا

(5957) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह(रह.) को सुनाई हुई हदीस़ों में से एक ये है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मिस़ाल, उस आदमी की मिस़ाल है जिसने आग जलाई, जब आग से उसके आस-पास रोशनी हो गई तो परवाने और ये पतंगे उस आग में गिरने लगे और वो उनको रोकने लगा और वो उस पर ग़ालिब आकर उसमें घुसने लगे।' आपने फ़रमाया, 'ये

جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي فِي النَّارِ يَقَعْنَ فِيهَا وَجَعَلَ يَحْجُزُهُنَّ وَيَغْلِبْنَهُ فَيَتَقَحَّمْنَ فِيهَا قَالَ فَذَلِكُمْ مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ أَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ هَلُمَّ عَنِ النَّارِ هَلُمَّ عَنِ النَّارِ فَتَغْلِبُونِي تَقَحَّمُونَ فِيهَا " .

मेरी और तुम्हारी तम्सील है, मैं आग से बचाने के लिये तुम्हारी कमरों से पकड़े हुए हूँ, आग से इधर आओ, आग से इधर आओ, सो तुम मुझसे ग़ालिब आकर, मेरे क़ाबू से निकल कर, आग में छलांगें मार रहे हो।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سَلِيمٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ مِينَاءَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَوْقَدَ نَارًا فَجَعَلَ الْجَنَادِبُ وَالْفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيهَا وَهُوَ يَذُبُّهُنَّ عَنْهَا وَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ وَأَنْتُمْ تَفَلَّتُونَ مِنْ يَدِي " .

(5958) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी और तुम्हारी मिसाल उस आदमी की है जिसने आग रोशन की तो पतंगे और परवाने उसमें गिरने लगे और वो उनको उससे रोक रहा था और मैं तुम्हें आग से बचाने के लिये तुम्हारी कमरों से पकड़े हुए हूँ और तुम मेरे हाथों से छूट रहे हो।'

मुफ़रदातुल हदीस :(1) जनादिब : ये जुन्दुब की जमा है, पतंगे, मकड़ियों जैसे कीड़े।**(2) तफ़ल्लतून या तुफ़्लितून :** तुम छूटकर भाग रहे हो, मेरे हाथों से निकल रहे हो।

باب ذِكْرِ كَوْنِهِ صلى الله عليه وسلم خَاتَمَ النَّبِيِّينَ

बाब 7 : रसूलुल्लाह(ﷺ) के ख़ातमन्नबिय्यीन होने का तज़्किरा

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بُنْيَانًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ فَجَعَلَ النَّاسُ يُطِيفُونَ

(5959) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मिसाल और अम्बिया की मिसाल उस आदमी की मिसाल है, जिसने एक इमारत तामीर की और उसको ख़ूब हसीन व जमील बनाया, सो लोग उसके पास घूमने लगे और कह रहे थे, इससे ख़ूबसूरत मकान हमने नहीं

بِهِ يَقُولُونَ مَا رَأَيْنَا بُنْيَانًا أَحْسَنَ مِنْ هَذَا إِلاَّ هَذِهِ اللَّبِنَةَ . فَكُنْتُ أَنَا تِلْكَ اللَّبِنَةَ " .

देखा, मगर ये ईंट(जो छोड़ दी गई है) और मैं वो(आख़िरी) ईंट हूँ।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **लबिनह :** ईंट।(2) **युतीफ़ून :** चक्कर लगाते थे, घूमते थे।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ ابْتَنَى بُيُوتًا فَأَحْسَنَهَا وَأَجْمَلَهَا وَأَكْمَلَهَا إِلاَّ مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ مِنْ زَوَايَاهَا فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ وَيُعْجِبُهُمُ الْبُنْيَانُ فَيَقُولُونَ أَلاَّ وَضَعْتَ هَا هُنَا لَبِنَةً فَيَتِمَّ بُنْيَانُكَ " . فَقَالَ مُحَمَّدٌ صلى الله عليه وسلم " فَكُنْتُ أَنَا اللَّبِنَةَ " .

(5960) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह(रह.) को सुनाई हुई हदीसों में से एक ये है, अबुल क़ासिम(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मिसाल और मुझसे पहले अम्बिया की मिसाल, एक आदमी की मिसाल है, उसने घर बनाये, उनको इन्तिहाई हसीन व जमील और मुकम्मल बनाया, मगर उनके कोनों में से एक कोने की एक ईंट(छोड़ दी) सो लोग घूमने लगे और इमारत उनको पसंद आ रही थी और वो कह रहे थे तूने ये ईंट क्यों नहीं रखी कि तेरी इमारत मुकम्मल हो जाती।' तो मुहम्मद(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं वो ईंट हूँ।'

फ़ायदा : आपने पूरी अम्बिया की जमाअत को एक हसीन व जमील और मुकम्मल तरीन इमारत से तश्बीह दी है, जो आपके आने से पहले, एक ईंट के ख़ला(खाली होने) की बिना पर नामुकम्मल थी और उसका हुस्नो-जमाल मुतास्सिर हो रहा था, आपकी तशरीफ़ आवरी से उस ईंट का ख़ला पूरा हो गया और आपके आने से इमारत का हुस्नो-जमाल मुकम्मल हो गया और इमारत में किसी और ईंट की गुंजाइश न रही, अब कहीं ईंट या रोड़ा रखना उसके हुस्नो-जमाल पर धब्बा लगाना है, जो उसमें ऐब व नुक़्स का बाइस होगा, जिसको उसका बनाने वाला कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता, इसलिये आपके आने के बाद किसी क़िस्म का नबी अल्लाह तआला को गवारा नहीं, क्योंकि उसकी ज़रूरत बाक़ी नहीं है, इमारते नुबूवत पाय-ए-तक्मील को पहुँच चुकी है, इसलिये आपने फ़रमाया, 'अना ख़ातमुन्नबिय्यीन मैं नुबूवत की आख़िरी कड़ी हूँ।' मेरे आने से नुबूवत का महल मुकम्मल हो गया है।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ

(5961) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया,

قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بُنْيَانًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ إِلاَّ مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ مِنْ زَوَايَاهُ فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ هَلاَّ وُضِعَتْ هَذِهِ اللَّبِنَةُ - قَالَ - فَأَنَا اللَّبِنَةُ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ ".

'मेरी मिसाल और मुझसे पहले अम्बिया की मिसाल एक आदमी की है, उसने एक इमारत तामीर की और उसको इन्तिहाई हसीन व जमील बनाया, मगर उसके कोनों में से एक कोने की ईंट की जगह छोड़ दी, लोग उसके पास चक्कर लगाने लगे और उस पर ख़ुश होकर कहने लगे, ये ईंट क्यों नहीं रखी गई? आपने फ़रमाया, 'मैं वही ईंट हूँ और मैं नबियों का ख़ातम हूँ।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : ख़ातम : अल्लामा राग़िब ने मानी किया है लिअन्नहू ख़त-म नबुव्वत अय् तम्मा बिमजीइही क्योंकि आपने नुबूवत को ख़त्म कर दिया यानी आकर उसको पूरा और मुकम्मल कर दिया और अल्लामा इब्ने मन्ज़ूर अफ़्रीकी लिखते हैं, ख़िताामल क़ौमि व ख़ातिमुहुम व ख़ातमुहुम : आख़िरुहुम क़ौम का ख़िताम, ख़ातिम, ख़ातम उसका आख़िरी फ़र्द है।(जिल्द 2, पेज नं. 10)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلِي وَمَثَلُ النَّبِيِّينَ " . فَذَكَرَ نَحْوَهُ .

(5962) हज़रत अबू सईद(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मिसाल और नबियों की मिसाल...' आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا سَلِيمُ بْنُ حَيَّانَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ، بْنُ مِينَاءَ عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى

(5963) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मिसाल और अम्बिया की मिसाल उस आदमी की मिसाल है, उसने एक घर बनाया, उसको पूरा और मुकम्मल बनाया, सिवाय एक ईंट की जगह के, सो लोग उसमें दाख़िल होकर उससे

دَارًا فَأَتَمَّهَا وَأَكْمَلَهَا إِلاَّ مَوْضِعَ لَبِنَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ مِنْهَا وَيَقُولُونَ لَوْلاَ مَوْضِعُ اللَّبِنَةِ " . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَأَنَا مَوْضِعُ اللَّبِنَةِ جِئْتُ فَخَتَمْتُ الأَنْبِيَاءَ " .

तअज्जुब करने लगे और कह रहे थे, ये ईंट की जगह क्यों छोड़ी गई या ऐ काश! ये ईंट की जगह ख़ाली न होती।' रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं ईंट की जगह हूँ, मैंने आकर अम्बिया की(आमद को) ख़त्म कर दिया।'
(सहीह बुख़ारी : 3534, तिर्मिज़ी : 2864)

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سَلِيمٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَقَالَ بَدَلَ أَتَمَّهَا أَحْسَنَهَا .

(5964) यही रिवायत इमाम साहब को और उस्ताद ने सुनाई और अतम्महा की बजाय अह्सनहा कहा।

باب إِذَا أَرَادَ اللَّهُ تَعَالَى رَحْمَةَ أُمَّةٍ قَبَضَ نَبِيَّهَا قَبْلَهَا

बाब 8 : जब अल्लाह तआला किसी उम्मत पर रहमत करने का इरादा फ़रमाता है तो उससे पहले उसके नबी को फ़ौत कर लेता है

قَالَ مُسْلِمٌ وَحُدِّثْتُ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، وَمِمَّنْ، رَوَى ذَلِكَ، عَنْهُ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الْجَوْهَرِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنِي بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِذَا أَرَادَ رَحْمَةَ أُمَّةٍ مِنْ عِبَادِهِ قَبَضَ نَبِيَّهَا قَبْلَهَا فَجَعَلَهُ لَهَا فَرَطًا وَسَلَفًا بَيْنَ يَدَيْهَا وَإِذَا أَرَادَ هَلَكَةَ أُمَّةٍ عَذَّبَهَا وَنَبِيُّهَا حَىٌّ فَأَهْلَكَهَا وَهُوَ يَنْظُرُ فَأَقَرَّ عَيْنَهُ بِهَلَكَتِهَا حِينَ كَذَّبُوهُ وَعَصَوْا أَمْرَهُ" .

(5965) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर अपने बन्दों में से किसी उम्मत पर रहमत का इरादा फ़रमाता है तो उससे पहले उसके नबी को क़ब्ज़ कर लेता है और उसे उनके लिये पेशरू और पेशवा बना देता है और जब किसी उम्मत को हलाक करना चाहता है तो उनके नबी की ज़िन्दगी में उनको अज़ाब से दोचार कर देता है, सो वो उन्हें उसके सामने तबाह करके उनकी तबाही से उसकी आँखों को ठण्डा करता है, क्योंकि उन्होंने उसकी तकज़ीब की(झुठलाया) और उसके फ़रमान की मुख़ालिफ़त की।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **फ़रतुन :** आगे जाकर क़ाफ़िले के लिये पानी का इन्तिज़ाम करने वाला, पेशरू। (2) **सलफ़ :** आगे-आगे जाने वाला।

फ़ायदा : हमारे रसूल(ﷺ) हमसे पहले अल्लाह के हुज़ूर पहुँच चुके हैं, इसलिये वो हमारे लिये रहमत का बाइ़स हैं और हमारी सिफ़ारिश और सैराबी के लिये आगे मौजूद होंगे, अल्लाह तआ़ला हमें आपकी शफ़ाअ़त(सिफ़ारिश) नसीब फ़रमाये और आपकी सिफ़ारिश हमारे लिये दरजात व मरातिब की बुलंदी का बाइ़स हो, आमीन!

बाब 9 : हमारे नबी(ﷺ) का हौज़ और उसकी कैफ़ियत का इस़्बात(सुबूत)

باب إِثْبَاتِ حَوْضِ نَبِيِّنَا صلى الله عليه وسلم وَصِفَاتِهِ

(5966) हज़रत जुन्दब(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने नबी(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मैं हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा।'
(सहीह बुख़ारी : 6589)

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ، قَالَ سَمِعْتُ جُنْدَبًا، يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ "أَنَا فَرَطُكُمْ، عَلَى الْحَوْضِ" .

(5967) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ بِشْرٍ، جَمِيعًا عَنْ مِسْعَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ جُنْدَبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(5968) हज़रत सह्ल(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने नबी(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मैं

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ

سَمِعْتُ سَهْلاً، يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " أَنَا فَرَطُكُمْ، عَلَى الْحَوْضِ مَنْ وَرَدَ شَرِبَ وَمَنْ شَرِبَ لَمْ يَظْمَأْ أَبَدًا وَلَيَرِدَنَّ عَلَىَّ أَقْوَامٌ أَعْرِفُهُمْ وَيَعْرِفُونِي ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ " . قَالَ أَبُو حَازِمٍ فَسَمِعَ النُّعْمَانُ بْنُ أَبِي عَيَّاشٍ وَأَنَا أُحَدِّثُهُمْ هَذَا الْحَدِيثَ فَقَالَ هَكَذَا سَمِعْتَ سَهْلاً يَقُولُ قَالَ فَقُلْتُ نَعَمْ .

हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा, जो हौज़ पर पहुँच जायेगा, वो पियेगा और जो पी लेगा, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी, मेरे पास कुछ लोग पहुँचने की कोशिश करेंगे, जिन्हें मैं पहचानता हूँगा और वो मुझे पहचानेंगे, फिर मेरे और उनके दरम्यान, रुकावट खड़ी कर दी जायेगी।'

(सहीह बुख़ारी : 7050, 7051)

قَالَ وَأَنَا أَشْهَدُ، عَلَى أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ لَسَمِعْتُهُ يَزِيدُ فَيَقُولُ " إِنَّهُمْ مِنِّي . فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا عَمِلُوا بَعْدَكَ . فَأَقُولُ سُحْقًا سُحْقًا لِمَنْ بَدَّلَ بَعْدِي " .

(5969) नोमान बिन अबी अय्याश(रह.) कहते हैं, मैं अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) के बारे में गवाही देता हूँ, मैंने उनको इसमें ये इज़ाफ़ा करते सुना, आप फ़रमायेंगे, 'वो मुझसे हैं, यानी मेरे ताल्लुक़दार हैं।' तो आपको जवाब दिया जायेगा, आपको मालूम नहीं है इन्होंने आपके बाद कौनसे अमल किये? तो मैं कहूँगा, 'दूरी है, दूरी है, उनके लिये जिन्होंने मेरे बाद तब्दीली की।'

अबू हाज़िम बयान करते हैं, नोमान बिन अबी अय्याश(रह.) ने सुना कि मैं उन्हें ये हदीस़ सुना रहा हूँ तो उसने कहा, तूने सहल को इस तरह बयान करते सुना? मैंने कहा, हाँ!

(सहीह बुख़ारी : 7050, 7051)

फ़ायदा : हौज़े नबवी के बारे में बहुत से सहाबा किराम से हदीसें मन्क़ूल हैं, इसलिये तमाम अहले सुन्नत के नज़दीक मैदाने महशर में आपका हौज़ सबसे बड़ा और वसीअ होगा और उस हौज़ में जन्नत की नहर कौसर से दो परनाले गिरेंगे, इसलिये इसको भी हौज़े कौसर से ताबीर किया जाता है और इस पर सिर्फ़ वही लोग पहुँच सकेंगे जिनको पानी पीना नसीब होगा और फिर उन लोगों को मैदाने महशर में प्यास नहीं लगेगी और अगर ये माना जाये कि जन्नत में भी प्यास नहीं लगेगी तो फिर जन्नत में लोग

प्यास की बिना पर मशरूबात से शाज़ काम नहीं होंगे। सिर्फ़ लुत्फ़ अन्दोज़ी और हुसूले लज़्ज़त के लिये पियेंगे और जो लोग हज़रत अबू बकर(रज़ि.) के दौर में, आपके बाद मुर्तद हो गये थे, वो हौज़ पर जाने से रोक दिये जांयेगे, लेकिन चूंकि वो आपके ज़माने मुबारक में मुसलमान थे, इसलिये वो आपकी तरफ़ बढ़ने की कोशिश करेंगे और आप भी उनको अपना साथी ख़याल फ़रमायेंगे। इसलिये आप उनको बुला कर पानी पिलाना चाहेंगे तो आपको जवाब दिया जायेगा, आपको मालूम नहीं है इन्होंने आपके बाद क्या-क्या हरकतें की थीं। तब आप उनसे बराअत का इज़हार फ़रमायेंगे और कहेंगे, 'सुह्क़न सुह्क़न इनको दूर हटाओ, इनको दूर रखो।' और ये हौज़, मीज़ान और पुल सिरात से पहले होगा।(शरह अल्अक़ीदतुत्तहाविया, पेज नं. 229, मक्तबा इरफ़ान) इससे साबित होता है आप ग़ैब नहीं जानते और न ही इस वक़्त उम्मत के अफ़आल को देख रहे हैं अगर आप उम्मत के अफ़आल को देख रहे हों तो फिर आपको ये न कहा जाता इन्नक ला तद्री मा अह्दसू बअ्दक।

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ أَبِي عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ يَعْقُوبَ .

(5970) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) से ऊपर वाली हज़रत सह्ल(रज़ि.) वाली हदीस़ मन्क़ूल है।

وَحَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَمْرٍو الضَّبِّيُّ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ الْجُمَحِيُّ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ وَزَوَايَاهُ سَوَاءٌ وَمَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ الْوَرِقِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلاَ يَظْمَأُ بَعْدَهُ أَبَدًا " .

(5971) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे होज़ की मसाफ़त एक माह की राह है और उसके चारों कोने बराबर हैं(लम्बाई व चौड़ाई बराबर है) और उसका पानी चाँदी से ज़्यादा सफ़ेद और उसकी महक कस्तूरी से ज़्यादा उ़म्दा है और उसके कूज़े(आब ख़ोरे) आसमान के सितारों के बराबर हैं, जो उससे पियेगा उसके बाद उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।'

(सहीह बुख़ारी : 6593, 7048)

(5972) इब्ने अबी मुलैका(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बकर(रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं हौज़ पर रहूँगा, ताकि तुममें से उन लोगों को देखूँ जो मेरे पास आयेंगे और कुछ लोगों को मुझ तक पहुँचने से पहले पकड़ लिया जायेगा तो मैं कहूँगा, ऐ मेरे रब! ये मेरी राह पर चलने वाले और मेरे साथी हैं तो जवाब दिया जायेगा, क्या तुम्हें मालूम नहीं, इन्होंने तेरे बाद क्या अमल किये? अल्लाह की क़सम! ये तेरे बाद मुसलसल अपनी ऐड़ियों पर लौटते रहे।' इब्ने अबी मुलैका के शागिर्द कहते हैं, वो ये दुआ करते थे, ऐ अल्लाह! हम ऐड़ियों पर लौटने से तेरी पनाह चाहते हैं और इससे कि अपने दीन से बरगश्ता हों।

قَالَ وَقَالَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي عَلَى الْحَوْضِ حَتَّى أَنْظُرَ مَنْ يَرِدُ عَلَىَّ مِنْكُمْ وَسَيُؤْخَذُ أُنَاسٌ دُونِي فَأَقُولُ يَا رَبِّ مِنِّي وَمِنْ أُمَّتِي . فَيُقَالُ أَمَا شَعَرْتَ مَا عَمِلُوا بَعْدَكَ وَاللَّهِ مَا بَرِحُوا بَعْدَكَ يَرْجِعُونَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ " . قَالَ فَكَانَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ يَقُولُ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ أَنْ نَرْجِعَ عَلَى أَعْقَابِنَا أَوْ أَنْ نُفْتَنَ عَنْ دِينِنَا .

(सहीह बुख़ारी : 6593, 7048)

फ़ायदा : हज़रत इब्ने अबी मुलैका(रह.) की दुआ से साबित होता है, वो उन लोगों को भी उसमें दाख़िल समझते थे जिन्होंने अबू बकर(रज़ि.) के दौर के बाद दीन में नई-नई बातें दाख़िल कीं या दीन से बाहर हो गये, लेकिन वो चूंकि कलिम-ए-तौहीद पढ़ते थे और मुसलमानों की तरह दीनी अहकाम को तस्लीम करते थे, अगरचे उन पर पूरी तरह अमल पैरा नहीं थे, इसलिये वो आपको अपने उम्मती महसूस होंगे, इसलिये कुछ रिवायात में अस्हाबी आया है और कुछ में मिन उम्मती क्योंकि दोनों क़िस्म के लोग होंगे। यानी कुछ अबू बकर के दौर में मुर्तद होने वाले और कुछ बाद की उम्मत से बिद्अतों के मुर्तकिब, जैसाकि मिन उम्मती के लफ़्ज़ से साबित हो रहा है।

(5973) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये अपने साथियों में फ़रमाते हुए सुना, 'मैं हौज़ पर हूँगा, तुममें से अपने पास आने वालों का मुन्तज़िर हूँगा, सो अल्लाह की क़सम! मुझसे

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمٍ، عَنِ ابْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدِ، اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّهُ سَمِعَ عَائِشَةَ، تَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ وَهُوَ

بَيْنَ ظَهْرَانَىْ أَصْحَابِهِ " إِنِّي عَلَى الْحَوْضِ أَنْتَظِرُ مَنْ يَرِدُ عَلَىَّ مِنْكُمْ فَوَاللَّهِ لَيُقْتَطَعَنَّ دُونِي رِجَالٌ فَلأَقُولَنَّ أَىْ رَبِّ مِنِّي وَمِنْ أُمَّتِي . فَيَقُولُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا عَمِلُوا بَعْدَكَ مَا زَالُوا يَرْجِعُونَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ " .

परे(दूर ही) कुछ आदमी रोक लिये जायेंगे तो मैं कहूँगा, ऐ मेरे आक़ा! मेरे पैरोकार, मेरे उम्मती हैं। सो वो फ़रमायेगा, तुम्हें पता नहीं है इन्होंने तेरे बाद क्या अमल किये, ये हमेशा अपने उल्टे पाँव लौटते रहे।'

وَحَدَّثَنِي يُونُسُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّدَفِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، - وَهُوَ ابْنُ الْحَارِثِ - أَنَّ بُكَيْرًا، حَدَّثَهُ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ عَبَّاسٍ الْهَاشِمِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، رَافِعٍ مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهَا قَالَتْ كُنْتُ أَسْمَعُ النَّاسَ يَذْكُرُونَ الْحَوْضَ وَلَمْ أَسْمَعْ ذَلِكَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا كَانَ يَوْمًا مِنْ ذَلِكَ وَالْجَارِيَةُ تَمْشُطُنِي فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " أَيُّهَا النَّاسُ " . فَقُلْتُ لِلْجَارِيَةِ اسْتَأْخِرِي عَنِّي . قَالَتْ إِنَّمَا دَعَا الرِّجَالَ وَلَمْ يَدْعُ النِّسَاءَ . فَقُلْتُ إِنِّي مِنَ النَّاسِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لَكُمْ فَرَطٌ عَلَى الْحَوْضِ فَإِيَّاىَ لاَ يَأْتِيَنَّ أَحَدُكُمْ فَيُذَبُّ عَنِّي كَمَا يُذَبُّ الْبَعِيرُ الضَّالُّ فَأَقُولُ فِيمَ هَذَا فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ . فَأَقُولُ سُحْقًا " .

(5974) नबी(ﷺ) की बीवी उम्मे सलमा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैं लोगों से हौज़ का तज़्किरा सुनती थी और उसका ज़िक्र मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से नहीं सुना था, एक दिन जबकि एक लड़की मुझे कंघी कर रही थी तो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते सुना, 'ऐ लोगो!' मैंने लड़की से कहा, मुझसे दूर हो जाओ। उसने कहा, आप(ﷺ) ने मर्दों को बुलाया है, औरतों को नहीं बुलाया। तो मैंने कहा, मैं भी लोगों में दाख़िल हूँ। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा, तुम होशियार हो जाओ, तुममें से कोई इस हाल में न आये कि उसे मुझसे दूर हटाया जाये, जिस तरह भटका हुआ ऊँट हटाया जाता है, सो मैं कहूँगा, ये किस बिना पर हुआ? तो कहा जायेगा, तुम्हें मालूम नहीं, इन्होंने तेरे बाद क्या-क्या नई बातें निकालीं तो मैं कहूँगा, दूरी हो, इसको दूर ले जाओ।'

(5975) हज़रत उम्मे सलमा(रज़ि.) बयान करती हैं कि उसने नबी(ﷺ) को मिम्बर पर फ़रमाते सुना, 'जबकि वो कंघी करवा रही थीं, 'ऐ लोगो!' तो उसने कंघी करने वाली से कहा, मेरे सर के बालों को जमा कर दो। ऊपर वाली हदीस़ के हम मानी रिवायत बयान की।

وَحَدَّثَنِي أَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ - وَهُوَ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو - حَدَّثَنَا أَفْلَحُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَافِعٍ، قَالَ كَانَتْ أُمُّ سَلَمَةَ تُحَدِّثُ أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهِيَ تَمْتَشِطُ " أَيُّهَا النَّاسُ". فَقَالَتْ لِمَاشِطَتِهَا كُفِّي رَأْسِي . بِنَحْوِ حَدِيثِ بُكَيْرٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ عَبَّاسٍ .

(5976) हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दिन घर से निकले और शुहदाए उहुद के लिये, मय्यित की तरह दुआ की फिर मिम्बर की तरफ़ पलटे और फ़रमाया, 'मैं तुम्हारा पेशरू(रहबर) हूँ और मैं तुम्हारे बारे में गवाही दूँगा और मैं अल्लाह की क़सम! अब अपने हौज़ को देख रहा हूँ और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ दे दी गई हैं या ज़मीन की चाबियाँ दे दी गई हैं और मैं अल्लाह की क़सम! मैं अपने बाद तुम्हारे शिर्क करने का ख़तरा महसूस नहीं करता, लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में ये अन्देशा है कि तुम दुनिया में एक-दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करोगे।'
(सहीह बुख़ारी : 1344, 3596, 4042, 4085, 6426, 6590, अबू दाऊद : 3223, 3224, नसाई : 4/62)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ " إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ وَإِنِّي وَاللَّهِ لأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِيَ الآنَ وَإِنِّي قَدْ أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الأَرْضِ أَوْ مَفَاتِيحَ الأَرْضِ وَإِنِّي وَاللَّهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي وَلَكِنْ أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَتَنَافَسُوا فِيهَا " .

फ़ायदा : सलातहू अ़लल मय्यित आपने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में तमाम शुहदा के लिये

मय्यित की तरह इन्तिहाई इख़्लास और तज़र्रुअ से दुआ फ़रमाई और ये दुआ मस्जिद में की गई, इसलिये नमाज़ से फ़रागत के बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और अगली बातें इरशाद फ़रमाई और शुहदाए उहुद की क़ब्रें तो मैदाने उहुद में ही थीं, वहाँ मिम्बर कहाँ से आ गया, इसलिये अल्लामा अनवर शाह ने लिखा है कि रिवायात की जुस्तजू और तलाश से मुझ पर ये हक़ीक़त खुली है कि आपने ये दुआ अपने वफ़ात के साल मस्जिदे नबवी में की, इस तरह आपने ज़िन्दों की तरह मुर्दों को भी अल्विदाअ़ फ़रमाया।(फ़ैज़ुल बारी, जिल्द 1, पेज नं. 478) जंगे उहुद तीन हिजरी को हुई और आपकी वफ़ात रबीउ़ल अव्वल 11 हिजरी में हुई, नमाज़ इतने अरसे के बाद तो नहीं पढ़ी जाती।

इन्नी क़द उअ्तीतु मफ़ाती-ह ख़ज़ाइनिल अर्ज़ औ मफ़ातीहल अर्ज़ : मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की या ज़मीन की कुन्जियाँ दे दी गई हैं, आपकी इस पेशीनगोई के मुताबिक़ मुसलमानों ने तमाम इलाक़ों को फ़तह किया और किसरा व क़ैसर के ख़ज़ानों के मालिक बने और अब भी हर क़िस्म के क़ुदरती अस्बाब व ज़राये मईशत मुसलमान मुल्कों में मौजूद हैं, लेकिन बद क़िस्मती से मुसलमान उनसे सहीह फ़ायदा नहीं उठा रहे।

मा अख़ाफ़ु अ़लैकुम अन तुश्रिकू बअ्दी : मुझे ये अन्देशा नहीं है कि तुम मेरे बाद शिर्क में मुब्तला हो जाओगे, मक़सद ये है कि आपकी उम्मत मज्मूई ऐतबार से इस्लाम से बरगश्ता नहीं होगी या जाहिलिय्यत के दौर वाला शिर्क दोबारा पैदा नहीं होगा कि लोग शिर्क को अपना दीन क़रार दें, अगर कुछ लोग शिर्क में मुब्तला हो जायें तो वो उसको शिर्क तस्लीम ही नहीं करते और इस्लाम को ही अपना दीन तसव्वुर करते हैं और इन्फ़िरादी तौर पर अगर कुछ लोग मुर्तद हुए हैं तो अक्सरियत के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है और बक़ौल इमाम उबय इसका मुख़ातब सहाबा किराम है कि उनके बारे में ये ख़तरा न था।(तक्मिला, जिल्द 4, पेज नं. 505)

लाकिन अख़ाफ़ु अ़लैकुम अन तनाफ़सू फ़ीहा : लेकिन दुनिया के ख़ज़ानों और दुनियवी माल व दौलत में एक-दूसरे से बढ़ने की कोशिश करने का अन्देशा है और ये चीज़ आपस में हसद व बुग़्ज़ और दुश्मनी का बाइस़ बनती है, जिससे अख़लाक़ और आ़माल में फ़साद और बिगाड़ पैदा होता है और आपने जिस चीज़ के अन्देशे का इज़हार फ़रमाया था, आज वही चीज़ उम्मत की तबाही और बर्बादी का बाइस़ बन रही है, दीन व ईमान इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद हर चीज़ उसकी भेंट चढ़ रही है, जैसाकि अगली रिवायत में इसकी सराहत आ रही है।

(5977) हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने शुहदाए उहुद के लिये दुआ फ़रमाई, फिर मिम्बर पर चढ़े गोया कि आप ज़िन्दों और मुर्दों को

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا وَهْبٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَرِيرٍ - حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ أَيُّوبَ، يُحَدِّثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي

حَبِيبٍ، عَنْ مَرْثَدٍ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ فَقَالَ " إِنِّي فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ وَإِنَّ عَرْضَهُ كَمَا بَيْنَ أَيْلَةَ إِلَى الْجُحْفَةِ إِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا وَتَقْتَتِلُوا فَتَهْلِكُوا كَمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ " . قَالَ عُقْبَةُ فَكَانَتْ آخِرَ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْمِنْبَرِ .

रुख़सत फ़रमा रहे हैं और फ़रमाया, 'मैं हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा और उसकी चौड़ाई इतनी है जितना ऐला और जुहफ़ा का दरम्यानी फ़ासला है, मैं तुम्हारे बारे में ये ख़ौफ़ व ख़तरा महसूस नहीं करता कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में ये ख़दशा महसूस करता हूँ कि तुम दुनिया में दिलचस्पी लोगे, आपस में लड़ोगे और तबाह व बर्बाद होगे, जिस तरह तुमसे पहले लोग हलाक हुए।' हज़रत उक़्बा(रज़ि.) कहते हैं, ये आख़िरी बार थी जिसमें मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिम्बर पर देखा।

फ़ायदा : कल्मुवद्दिइ लिल्अहयाइ वल्अम्वात : गोया आप ज़िन्दों और मुर्दों को रुख़सत फ़रमा रहे हैं, आप मुर्दों की ज़ियारत के लिये जाते थे और उनके लिये दुआ फ़रमाते थे, अब गोया ये उनके लिये आख़िरी दुआ थी, ये भी मुम्किन है आप मैदाने उहुद में तशरीफ़ ले गये हों और शुहदाए उहुद की क़ब्रों पर नमाज़ पढ़ी हो और फिर वापस आकर मस्जिदे नबवी में ख़ुत्बा दिया हो, इस सूरत में ये दुआ की बजाये नमाज़े जनाज़ा होगी, जैसाकि अहनाफ़ का मौक़िफ़ है। अगर मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो जनाज़ा ग़ायबाना होगा। लेकिन अल्लामा अनवर शाह कशमीरी इसको दुआ समझते हैं।

इन्-न अरज़हू कमा बै-न ऐलति इला जुहफ़ा : हौज़े कौसर की लम्बाई और चौड़ाई के बारे में आपने अलग-अलग औक़ात में, अलग-अलग मक़ामात की मसाफ़त बयान फ़रमाई है, आपने हाज़िरीन की मालूमात के मुताबिक़ जगहों के नाम बयान फ़रमाये थे, मक़सूद उसकी वुस्अत और फ़राख़ी का बयान है, मसाफ़त की तअ्यीन या तहदीद मक़सूद नहीं, जुहफ़ा राबिग़ के क़रीब एक जगह है, जो अहले शाम का मीक़ात है और ऐला एक बन्दरगाह है जो बहरे कुल्ज़ुम पर वाक़ेअ है और मदीना से तक़रीबन एक माह का रास्ता है।(नबी(ﷺ) के ज़माने के सफ़र करने के हिसाब से)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ،

(5978) हज़रत अब्दुल्लाह(बिन मसऊद रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा और

عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ وَلأُنَازِعَنَّ أَقْوَامًا ثُمَّ لأُغْلَبَنَّ عَلَيْهِمْ فَأَقُولُ يَا رَبِّ أَصْحَابِي أَصْحَابِي . فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ " .

मैं कुछ लोगों के बारे में झगड़ा करूँगा(ताकि उनको हौज़ पर आने दिया जाये) फिर उनके बारे में मग़लूब हो जाऊँगा(उनको इजाज़त न दिलवा सकूँगा) मैं कहूँगा, ऐ मेरे रब! ये मेरे साथी हैं, मेरे साथी हैं। तो जवाब दिया जायेगा, तुम्हें नहीं मालूम तेरे बाद इन्होंने क्या-क्या नई बातें निकालीं।'

(सहीह बुख़ारी : 6575)

وَحَدَّثَنَاهُ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَمْ يَذْكُرْ " أَصْحَابِي أَصْحَابِي " .

(5979) यही रिवायत इमाम साहब को दो और उस्तादों ने सुनाई और इसमें 'मेरे साथी हैं, मेरे साथी हैं।' बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ جَرِيرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، جَمِيعًا عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم. بِنَحْوِ حَدِيثِ الأَعْمَشِ وَفِي حَدِيثِ شُعْبَةَ عَنْ مُغِيرَةَ، سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، .

(5980) इमाम साहब तीन और उस्तादों की दो सनदों से ये रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 6586, 7049)

وَحَدَّثَنَاهُ سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْثَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي، شَيْبَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، كِلاَهُمَا عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم نَحْوَ حَدِيثِ الأَعْمَشِ وَمُغِيرَةَ .

(5981) इमाम साहब को यही रिवायत दो और उस्तादों अपनी-अपनी सनद से हज़रत हुज़ैफ़ा(रज़ि.) से सुनाते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 6575)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَزِيعٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مَعْبَدِ، بْنِ خَالِدٍ عَنْ حَارِثَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " حَوْضُهُ مَا بَيْنَ صَنْعَاءَ وَالْمَدِينَةِ " . فَقَالَ لَهُ الْمُسْتَوْرِدُ أَلَمْ تَسْمَعْهُ قَالَ " الأَوَانِي " . قَالَ لاَ . فَقَالَ الْمُسْتَوْرِدُ " تُرَى فِيهِ الآنِيَةُ مِثْلَ الْكَوَاكِبِ " .

(5982) हज़रत हारिसा(रज़ि.) से रिवायत है कि उसने नबी(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मेरा हौज़, सनआ और मदीना के फ़ासले के बराबर है।' तो हज़रत मुस्तोरिद(रज़ि.) ने उनसे पूछा, क्या तूने आपसे बर्तनों के बारे में नहीं सुना?' उसने कहा, नहीं! तो हज़रत मुस्तोरिद(रज़ि.) ने कहा, 'उसमें बर्तन सितारों की मानिन्द दिखाई देंगे।'

(सहीह बुख़ारी : 6591)

وَحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ الْخُزَاعِيَّ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . وَذَكَرَ الْحَوْضَ بِمِثْلِهِ وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ الْمُسْتَوْرِدِ وَقَوْلَهُ .

(5983) इमाम साहब को ये रिवायत एक और उस्ताद ने सुनाई, जिसमें हौज़ का तज़्किरा है, लेकिन हज़रत मुस्तोरिद का क़ौल और आपका फ़रमान बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَمَامَكُمْ حَوْضًا مَا بَيْنَ نَاحِيَتَيْهِ كَمَا بَيْنَ جَرْبَا وَأَذْرُحَ " .

(5984) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे आगे हौज़ है, उसके दोनों किनारों का फ़ासला इतना है, जितना जरबा और अज़्रुह का फ़ासला।'

(अबू दाऊद : 4745)

फ़ायदा : अल्लामा ज़ियाउद्दीन मक़्दिसी का मौक़िफ़ ये है कि यहाँ एक लफ़्ज़ छूट गया है, हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की रिवायत है, अरज़ुहू मिस्ल मा बैनकुम व बै-न जरबा व अज़्रुह इसका अर्ज़(चौड़ाई) तुम्हारे यानी अहले मदीना के जरबा, अज़्रुह जितना फ़ासला मेरे खड़े होने की जगह

और जरबा व अज़्रुह के दरम्यान है और सुनन दारे कुतनी की रिवायत है, मा बैनल मदीनति व जरबाअ व अज़्रुह।(फ़तहुल बारी, जिल्द 11, पेज नं. 472, मक्तबा दारुल मअरिफ़ह)

(5985) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे आगे हौज़ है, जैसाकि जरबा और अज़्रुह का फ़ासला है।' इब्ने मुसन्ना की रिवायत में हौज़ की बजाए हौज़ी(मेरा हौज़) है।
(सहीह बुख़ारी : 6577)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ أَمَامَكُمْ حَوْضًا كَمَا بَيْنَ جَرْبَا وَأَذْرُحَ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ الْمُثَنَّى " حَوْضِي "

(5986) उबैदुल्लाह ने कहा, मैंने उस्ताद से पूछा, तो उसने कहा, ये शाम की दो बस्तियाँ हैं जिनके दरम्यान फ़ासला तीन रात की मसाफ़त के बक़द्र है और इब्ने बिशर की रिवायत में है, तीन दिन की मसाफ़त के बक़द्र।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ وَزَادَ قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ قَرْيَتَيْنِ بِالشَّامِ بَيْنَهُمَا مَسِيرَةُ ثَلاَثِ لَيَالٍ . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ بِشْرٍ . ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ .

(5987) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ .

(5988) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे आगे इतना बड़ा हौज़ है, जैसकि जरबा और अज़्रुह का फ़ासला है, उसमें आसमान के सितारों की मानिन्द कूज़े हैं, जो

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه

وسلم قَالَ "إِنَّ أَمَامَكُمْ حَوْضًا كَمَا بَيْنَ جَرْبَا وَأَذْرُحَ فِيهِ أَبَارِيقُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ مَنْ وَرَدَهُ فَشَرِبَ مِنْهُ لَمْ يَظْمَأْ بَعْدَهَا أَبَدًا" .

उस पर पहुँचेगा, सो उससे पियेगा और उसके बाद कभी प्यासा नहीं होगा।'
(तिर्मिज़ी : 2445)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، -وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي شَيْبَةَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ، الصَّمَدِ الْعَمِّيُّ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا آنِيَةُ الْحَوْضِ قَالَ " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لآنِيَتُهُ أَكْثَرُ مِنْ عَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ وَكَوَاكِبِهَا أَلاَ فِي اللَّيْلَةِ الْمُظْلِمَةِ الْمُصْحِيَةِ آنِيَةُ الْجَنَّةِ مَنْ شَرِبَ مِنْهَا لَمْ يَظْمَأْ آخِرَ مَا عَلَيْهِ يَشْخُبُ فِيهِ مِيزَابَانِ مِنَ الْجَنَّةِ مَنْ شَرِبَ مِنْهُ لَمْ يَظْمَأْ عَرْضُهُ مِثْلُ طُولِهِ مَا بَيْنَ عَمَّانَ إِلَى أَيْلَةَ مَاؤُهُ أَشَدُّ بَيَاضًامِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ".

(5989) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हौज़ के बर्तन कितने हैं? आपने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! उसके बर्तन स्याह रात जिसमें बादल न हों, के नुजूम व कवाकिब(सितारे व सय्यारे) की तादाद से ज़्यादा हैं, वो जन्नत के बर्तन होंगे, जो उनसे पियेगा, आख़िर तक प्यासा नहीं होगा। उसमें जन्नत से दो परनाले बहेंगे, जो उससे पियेगा, उसे प्यास नहीं लगेगी, उसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर हैं, अम्मान से ऐला के फ़ासले की मानिन्द, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं(मीठा) होगा।'

फ़ायदा : अम्मान : ये आज-कल उर्दुन का दारुल हुकूमत है, जिसे अम्मान बलक़ा कहते हैं, अगर ओमान हो तो ये ख़लीज का शहर है और मस्क़त इसका दारुल हुकूमत है, हाफ़िज़ इब्ने हजर(रह.) ने इसको तरजीह दी है।

حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ -

(5990) हज़रत सौबान(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं हौज़ की बुलंद जगह पर खड़ा होकर अहले यमन की ख़ातिर

قَالُوا حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - وَهُوَ ابْنُ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ مَعْدَانَ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ الْيَعْمَرِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنِّي لَبِعُقْرِ حَوْضِي أَذُودُ النَّاسَ لأَهْلِ الْيَمَنِ أَضْرِبُ بِعَصَايَ حَتَّى يَرْفَضَّ عَلَيْهِمْ " . فَسُئِلَ عَنْ عَرْضِهِ فَقَالَ " مِنْ مَقَامِي إِلَى عَمَّانَ " . وَسُئِلَ عَنْ شَرَابِهِ فَقَالَ " أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ يَغُتُّ فِيهِ مِيزَابَانِ يَمُدَّانِهِ مِنَ الْجَنَّةِ أَحَدُهُمَا مِنْ ذَهَبٍ وَالآخَرُ مِنْ وَرِقٍ"

लोगों को हटाऊँगा, मैं अपने असा(लाठी) से मारूँगा, ताकि पानी उन पर बहने लगे, यानी सबसे पहले वो पी सकें।' आपसे उसके अर्ज़(चौड़ाई) के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया, 'मेरी जगह से अम्मान तक।' आपसे उसके मशरूब के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया, 'वो दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा, उसमें दो परनाले मुसलसल पानी गिरायेंगे, जन्नत से उसमें इज़ाफ़ा करेंगे, एक सोने का होगा और दूसरा चाँदी का।'

मुफ़रदातुल हदीस :(1) उक्र : हौज़ के पास ऊँटों के खड़े होने की जगह या बुलंद जगह।**(2) यरफ़ज़्ज़ु :** जारी, वो बहने लगे।**(3) यगुत्तु :** मुसलसल पानी गिरता है।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, हौज़ से सबसे पहले अहले यमन पानी पियेंगे और अन्सार यमनी हैं, उन्होंने आपकी दुश्मनों और नागवार हालात में हिफ़ाज़त की, दीन का दिफ़ाअ किया, इसलिये उनको ये शर्फ़ व एहतिराम हासिल होगा, उनको पानी पिलाने की ख़ातिर दूसरों को रोका जायेगा और मैदाने हश्र के हौज़ में जन्नत की नहर से परनाले मुसलसल गिरेंगे, जो हौज़ के पानी में इज़ाफ़ा करते रहेंगे।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، بِإِسْنَادِ هِشَامٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ عُقْرِ الْحَوْضِ " .

(5991) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें ये है, आपने फ़रमाया, 'मैं क़यामत के दिन हौज़ के पास ऊँटों की जगह पर हूँगा।' यानी बुलंद जगह पर पिलाने वाले की जगह पर।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ

(5992) इमाम साहब मज़्कूरा रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें ये है कि मुहम्मद बिन बश्शार ने यहया बिन हम्माद से

أَبِي الْجَعْدِ عَنْ مَعْدَانَ، عَنْ ثَوْبَانَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم حَدِيثَ الْحَوْضِ فَقُلْتُ لِيَحْيَى بْنِ حَمَّادٍ هَذَا حَدِيثٌ سَمِعْتَهُ مِنْ أَبِي عَوَانَةَ فَقَالَ وَسَمِعْتُهُ أَيْضًا مِنْ شُعْبَةَ فَقُلْتُ انْظُرْ لِي فِيهِ فَنَظَرَ لِي فِيهِ فَحَدَّثَنِي بِهِ .

कहा, ये हदीस आपने अबू अवाना से सुनी है, उसने कहा, मैंने शोबा से भी सुनी है तो मैंने कहा, मेरी ख़ातिर इस पर नज़र डालिये तो उसने मेरी ख़ातिर उस पर नज़र डाली कि मुझे ये रिवायत सुनाई।

حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَلاَّمٍ الْجُمَحِيُّ، حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ، - يَعْنِي ابْنَ مُسْلِمٍ - عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ"لأَذُودَنَّ عَنْ حَوْضِي رِجَالاً كَمَا تُذَادُ الْغَرِيبَةُ مِنَ الإِبِلِ " .

(5993) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं अपने हौज़ से कुछ मर्दों को इस तरह हटाऊँगा, जिस तरह अजनबी ऊँटों को हटाया जाता है।'

फ़ायदा : जो लोग आपके हौज़ से पानी पीने के हक़दार नहीं होंगे, आप उनको अपनी उम्मत को पिलाने की ख़ातिर हटा देंगे, ताकि आपकी उम्मत आसानी से पानी पी सके।

وَحَدَّثَنِيهِ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(5994) इमाम साहब को ऊपर वाली रिवायत एक और उस्ताद ने भी सुनाई।
(सहीह बुख़ारी : 2367)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ،أَخْبَرَنِي يُونُسُ،عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّحَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ "قَدْرُ حَوْضِي كَمَا بَيْنَ أَيْلَةَ وَصَنْعَاءَ مِنَ الْيَمَنِ وَإِنَّ فِيهِ مِنَ الأَبَارِيقِ كَعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ".

(5995) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे हौज़ का फ़ासला ऐला और सनआए यमन के दरम्यान फ़ासला जैसा है और उसमें कूज़े आसमान के सितारों की तादाद जितने हैं।'
(सहीह बुख़ारी : 6580)

(5996) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे पास हौज़ पर कुछ ऐसे मर्द आने की कोशिश करेंगे, जो मेरे साथ रहे थे, यहाँ तक कि जब मैं उनको देख लूँगा और वो मेरे सामने किये जायेंगे, मुझसे परे(दूर) ही उन्हें उचक लिया जायेगा तो मैं कहूँगा, ऐ मेरे रब! मेरे कुछ साथी हैं, मेरे कुछ साथी हैं। तो मुझे कहा जायेगा, आपको मालूम नहीं इन्होंने आपके बाद क्या नये-नये काम निकाले थे।'

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ الصَّفَّارُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الْعَزِيزِ بْنَ صُهَيْبٍ، يُحَدِّثُ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَيَرِدَنَّ عَلَىَّ الْحَوْضَ رِجَالٌ مِمَّنْ صَاحَبَنِي حَتَّى إِذَا رَأَيْتُهُمْ وَرُفِعُوا إِلَىَّ اخْتُلِجُوا دُونِي فَلأَقُولَنَّ أَىْ رَبِّ أُصَيْحَابِي أُصَيْحَابِي . فَلَيُقَالَنَّ لِي إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ " .

(सहीह बुख़ारी : 6582)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) रुफ़िऊ इलय्य : मेरे सामने किये जायेंगे।(2) **उख़्तुलिजू दूनी :** मुझ तक पहुँचने से पहले ही उन्हें अलग कर दिया जायेगा। **उसैहाबी :** तस्ग़ीर दलील है कि उनकी तादाद कम होगी।

(5997) इमाम साहब के तीन और उस्ताद यही रिवायत बयान करते हैं, इमसें ये इज़ाफ़ा है, 'उसके बर्तन सितारों की तादाद में होंगे।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، جَمِيعًا عَنِ الْمُخْتَارِ بْنِ فُلْفُلٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْمَعْنَى وَزَادَ " آنِيَتُهُ عَدَدُ النُّجُومِ " .

(5998) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे हौज़ के दोनों किनारों का दरम्यानी फ़ासला, सनआ और मदीना के दरम्यानी फ़ासले की मानिन्द है।'

وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، وَهُرَيْمُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، - وَاللَّفْظُ لِعَاصِمٍ - حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، سَمِعْتُ أَبِي، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " مَا بَيْنَ نَاحِيَتَىْ حَوْضِي كَمَا بَيْنَ صَنْعَاءَ وَالْمَدِينَةِ " .

(5999) इमाम साहब के दो और उस्ताद यही रिवायत बयान करते हैं, मगर उन दोनों ने शक करते हुए कहा या मदीना और अ़म्मान का दरम्यानी फ़ासला और अबू अ़वाना की हदीस़ में है, 'मेरे हौज़ के दोनों अतराफ़ का फ़ासला नाहियतै की जगह लाबतै का लफ़्ज है, मानी एक ही है।
(इब्ने माजह : 4304)

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، ح وَحَدَّثَنَا حَسَنُ، بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُمَا شَكَّا فَقَالاَ أَوْ مِثْلَ مَا بَيْنَ الْمَدِينَةِ وَعَمَّانَ . وَفِي حَدِيثِ أَبِي عَوَانَةَ " مَا بَيْنَ لاَبَتَىْ حَوْضِي " .

(6000) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसमें सोने और चाँदी के कूज़े, आसमान के सितारों की तादाद में होंगे।'
(इब्ने माजह : 4305)

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا خَالِدُ، بْنُ الْحَارِثِ عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ قَالَ أَنَسٌ قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تُرَى فِيهِ أَبَارِيقُ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ كَعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ "

(6001) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें ये इज़ाफ़ा है, 'या आसमान के सितारों की तादाद से ज़्यादा होंगे।'

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ قَالَ مِثْلَهُ وَزَادَ " أَوْ أَكْثَرَ مِنْ عَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ " .

(6002) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ख़बरदार! मैं हौज़ पर तुम्हारा पेशरू हूँगा और उसके दो किनारों का फ़ासला सनआ़ और

حَدَّثَنِي الْوَلِيدُ بْنُ شُجَاعِ بْنِ الْوَلِيدِ السَّكُونِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، - رَحِمَهُ اللَّهُ - حَدَّثَنِي زِيَادُ بْنُ خَيْثَمَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ

ऐला के दरम्यानी फ़ासले जितना है और गोया उसमें कूज़े सितारे हैं।'

سَمُرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَلاَ إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ عَلَى الْحَوْضِ وَإِنَّ بُعْدَ مَا بَيْنَ طَرَفَيْهِ كَمَا بَيْنَ صَنْعَاءَ وَأَيْلَةَ كَأَنَّ الأَبَارِيقَ فِيهِ النُّجُومُ " .

(6003) आमिर बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने अपने गुलाम नाफ़ेअ़ के हाथ हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) को ख़त लिखा कि आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) से जो हदीसें सुनी हैं, उनमें से कोई मुझे बतायें तो उसने मुझे लिखा, मैंने आपको ये फ़रमाते सुना, 'हौज़ पर मैं ही तुम्हारा पेशरू(रहबर) हूँगा।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالاَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الْمُهَاجِرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ كَتَبْتُ إِلَى جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ مَعَ غُلاَمِي نَافِعٍ أَخْبِرْنِي بِشَىْءٍ، سَمِعْتَهُ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَكَتَبَ إِلَىَّ إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ " أَنَا الْفَرَطُ عَلَى الْحَوْضِ " .

बाब 10 : आपके साथ फ़रिश्तों का जंग में हिस्सा लेकर आपकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करना

باب فِي قِتَالِ جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ أُحُدٍ

(6004) हज़रत सअ़द(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने उहुद के दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) के दायें और बायें दो आदमी देखे, जो सफ़ेद लिबास पहने हुए थे, मैंने उन्हें उससे पहले या बाद में नहीं देखा, यानी जिब्रईल और मीकाईल(अलै.) थे।

(सहीह बुख़ारी : 4054, 5826)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدٍ، قَالَ رَأَيْتُ عَنْ يَمِينِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَعَنْ شِمَالِهِ يَوْمَ أُحُدٍ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا ثِيَابُ بَيَاضٍ مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ . يَعْنِي جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ .

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا سَعْدٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ لَقَدْ رَأَيْتُ يَوْمَ أُحُدٍ عَنْ يَمِينِ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَعَنْ يَسَارِهِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيضٌ يُقَاتِلاَنِ عَنْهُ كَأَشَدِّ الْقِتَالِ مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ .

(6005) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने उहुद के दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) के दायें और बायें, सफ़ेद पोश दो आदमी देखे, जो आपकी तरफ़ से इन्तिहाई सख़्त जंग लड़ रहे थे, मैंने उनको न पहले देखा और न बाद में।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि फ़रिश्तों ने सिर्फ़ जंगे बद्र में ही हिस्सा नहीं लिया, बल्कि आपके तहफ़्फ़ुज़(रक्षा) व दिफ़ाअ़(बचाव) के लिये और मुसलमानों की हौसला अफ़ज़ाई के लिये उन्होंने जंगे उहुद में भी हिस्सा लिया और एक आम इंसान की तरह जंग की, वरना अपनी असली क़ुव्वत व ताक़त के ऐतबार से तो एक ही फ़रिश्ता काफ़िरों की तबाही और बर्बादी के लिये काफ़ी था। नीज़ इससे ये भी मालूम हुआ, अल्लाह तआ़ला अम्बिया के अ़लावा भी दूसरे नेक और मुत्तक़ी इंसानों को उनकी इ़ज़्ज़त व करामत के लिये फ़रिश्तों का दीदार करवा देता है और उनके नामों की तअ़्यीन, आपके बताने पर हुई, क्योंकि आपकी इत्तिलाअ़ के बग़ैर हज़रत सअ़द(रज़ि.) के लिये उनको जिब्रईल और मीकाईल(अलै.) का नाम देना मुम्किन न था।

باب فِي شَجَاعَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَتَقَدُّمِهِ لِلْحَرْبِ

बाब 11 : नबी(ﷺ) की शुजाअ़त(बहादुरी) और जंग के लिये आपका पेश क़दमी फ़रमाना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا - حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْسَنَ النَّاسِ وَكَانَ أَجْوَدَ

(6006) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) तमाम लोगों से ज़्यादा हसीन थे, सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे और सब लोगों से ज़्यादा दिलेर थे, एक रात अहले मदीना ख़ौफ़ज़दा हो गये तो लोग आवाज़ की तरफ़ निकल खड़े हुए। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) को वापस आते हुए मिले, आप उनसे पहले आवाज़ की तरफ़ जा चुके थे और आप हज़रत अबू तलहा(रज़ि.)

النَّاسِ وَكَانَ أَشْجَعَ النَّاسِ وَلَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَانْطَلَقَ نَاسٌ قِبَلَ الصَّوْتِ فَتَلَقَّاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَاجِعًا وَقَدْ سَبَقَهُمْ إِلَى الصَّوْتِ وَهُوَ عَلَى فَرَسٍ لأَبِي طَلْحَةَ عُرْيٍ فِي عُنُقِهِ السَّيْفُ وَهُوَ يَقُولُ " لَمْ تُرَاعُوا لَمْ تُرَاعُوا " . قَالَ " وَجَدْنَاهُ بَحْرًا أَوْ إِنَّهُ لَبَحْرٌ " . قَالَ وَكَانَ فَرَسًا يُبَطَّأُ .

के घोड़े की नंगी पीठ पर सवार थे और आपके गले में(गर्दन में) तलवार थी और फ़रमा रहे थे, 'ख़ौफ़ज़दा न हो, ख़ौफ़ज़दा न हो।' आपने फ़रमाया, 'हमने इसको समुन्द्र की तरह तेज़ पाया।' या फ़रमाया, 'ये समुन्द्र है।' और वो घोड़ा सुस्त रफ़्तार समझा जाता था।

(सहीह बुख़ारी : 2820, 2908, 3040, 2866, 6033, तिर्मिज़ी : 1687, इब्ने माजह : 2772)

फ़ायदा : हज़रत अनस(रज़ि.) ने इन्तिहाई जामिइय्यत और इख़्तिसार के साथ, आपके तीन बुनियादी औसाफ़ की तअ्यीन फ़रमाई है, जो अख़्लाक़े हसना की असास हैं, इंसान में तीन कुव्वतें हैं(1) कुव्वते ग़ज़बिया : इसमें हुस्नो-कमाल शुजाअत व बसालत है।(2) कुव्वते शह्वबा : जिसका हुस्नो-कमाल जूदो-सख़ा है।(3) कुव्वते अक़्लिया : जिसका हुस्नो-जमाल हकीमाना क़ौल व फ़ेअ्ल है और ख़लक़ ख़ुलुक़ की ख़ूबसूरती और हुस्न उसका नतीजा है और हदीस़ से आपकी दिलेरी व शुजाअत, बेख़ौफ़ी व बेबाकी और घुड़सवारी की महारत का पता चलता है, आप इन्तिहाई बेख़ौफ़ी से अकेले ही हक़ीक़ते हाल मालूम करने के लिये सबसे पहले निकल गये, ताकि लोगों को आगाह किया जा सके और आपकी बरकत से सुस्त रफ़्तार घोड़ा, इन्तिहाई तेज़ रफ़्तार निकला और आपने ज़ाहिरी अस्बाब व वसाइल को इस्तेमाल करते हुए जंगी अस्लहे तलवार को भी गर्दन में हमाइल किया और हक़ीक़ते हाल मालूम कर लेने के बाद लोगों की परेशानी और घबराहट को भी दूर फ़रमाया।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ بِالْمَدِينَةِ فَزَعٌ فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَرَسًا لأَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ مَنْدُوبٌ فَرَكِبَهُ فَقَالَ " مَا رَأَيْنَا مِنْ فَزَعٍ وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا " .

(6007) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं कि मदीना में दहशत व घबराहट फैल गई तो नबी(ﷺ) ने हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) से घोड़ा मुस्तआर(काम निकालने के लिये) लिया, जिसे मन्दूब कहा जाता था, सो उस पर सवार हुए(वापसी पर) फ़रमाया, 'हमने घबराहट व परेशानी की कोई चीज़ नहीं देखी और हमने इसे इन्तिहाई तेज़ रफ़्तार पाया है।'

(सहीह बुख़ारी : 2627, 2857, 2862, 2968, 6212, अबू दाऊद : 4988, तिर्मिज़ी : 1685, 1686)

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ ابْنِ جَعْفَرٍ قَالَ فَرَسًا لَنَا . وَلَمْ يَقُلْ لأَبِي طَلْحَةَ . وَفِي حَدِيثِ خَالِدٍ عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنَسًا .

(6008) मुसन्निफ़ ने यही रिवायत तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान की है, इब्ने जअ़फ़र की हदीस़ में अबू तलहा(रज़ि.) के घोड़े की जगह हमारा घोड़ा बताया गया है और ख़ालिद की हदीस़ में क़तादा के हज़रत अनस(रज़ि.) से सिमाअ़ की तसरीह मौजूद है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, किसी से कोई चीज़ ज़रूरत के तहत मुस्तआ़र(काम निकालने के लिये) लेना जाइज़ है और जानवर का नाम रखना दुरुस्त है और इंसान अगर दिलेर और बाहिम्मत हो तो वाक़िये की तहक़ीक़ या सूरते हाल से आगाही के लिये अकेला भी जा सकता है।

باب كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَجْوَدَ النَّاسِ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ

बाब 12 : नबी(ﷺ) ख़ैर में, तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी थे

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - عَنِ الزُّهْرِيِّ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو عِمْرَانَ، مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ زِيَادٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ بِالْخَيْرِ وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ إِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ كَانَ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ سَنَةٍ فِي رَمَضَانَ حَتَّى يَنْسَلِخَ فَيَعْرِضُ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْقُرْآنَ فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَجْوَدَ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ .

(6009) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ख़ैर(किसी की भलाई व हमदर्दी) में सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे और आपकी सख़ावत सबसे ज़्यादा माहे रमज़ान में होती थी, जिब्रईल हर साल रमज़ान में, महीने के ख़त्म होने तक, आपको मिलते। रसूलुल्लाह(ﷺ) उस पर क़ुरआन पेश करते(दौर करते) तो जब आपको जिब्रईल(अ़लै.) मिलते तो रसूलुल्लाह(ﷺ) चलती हवा से भी ज़्यादा भलाई पहुँचाने में सख़ी होते।

(सहीह बुख़ारी : 1902, 3220, 3554, 4997, नसाई : 2094)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अजवदुन्नास : जूद का मानी होता है हर इंसान को उसकी ज़रूरत की चीज़ अ़ता करना। यानी जिसको इल्म व मअ़रिफ़त की ज़रूरत होती, उसको उ़लूम व मआ़रिफ़ से नवाज़ते, नंगे को लिबास पहनाते, भूखे को खाना खिलाते और सख़ी तो सिर्फ़ माल की सख़ावत करता है।**(2) अर्रीहुल मुर्सलह :** आज़ाद छोड़ी हुई हवा जो इन्तिहाई तेज़ होती है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि फ़ज़ीलत वाले दिनों में जूदो-सख़ा ज़्यादा करना चाहिये और माहे रमज़ान में तिलावते क़ुरआन का एहतिमाम भी ज़्यादा करना चाहिये, क्योंकि आप इस महीने में जिब्रईल(अ़लै.) के साथ दौर करते थे, ये क़ुरआन सुनते और सुनाते थे।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مُبَارَكٍ، عَنْ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6010) इमाम साहब दो उस्तादों की सनदों से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

باب كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْسَنَ النَّاسِ خُلُقًا

बाब 13 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का अख़लाक़ सबसे अच्छा था

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ خَدَمْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَشْرَ سِنِينَ وَاللَّهِ مَا قَالَ لِي أُفًّا . قَطُّ وَلاَ قَالَ لِي لِشَىْءٍ لِمَ فَعَلْتَ كَذَا وَهَلاَّ فَعَلْتَ كَذَا زَادَ أَبُو الرَّبِيعِ لَيْسَ مِمَّا يَصْنَعُهُ الْخَادِمُ . وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَهُ وَاللَّهِ .

(6011) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने दस साल रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत की है, अल्लाह की क़सम! आपने कभी मुझे उफ़्फ़ तक नहीं कहा और न ही मुझे किसी चीज़ के बारे में कहा, तूने इस तरह क्यों किया और तूने ये काम क्यों नहीं किया? अबू रबीअ इज़ाफ़ा करते हैं, जो काम ख़ादिम नहीं करता और कलिमा, अल्लाह की क़सम का ज़िक्र नहीं किया।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि आप इन्तिहाई हलीम और बुर्दबार थे, दस साल का एक नौख़ेज़ लड़का आपका ख़ादिम था और वो अपने लड़कपन की बिना पर यक़ीनन ऐसा काम करता

होगा, जो आपके शायाने शान नहीं होगा कभी उसमें सुस्ती और ग़फ़लत का मुज़ाहिरा भी करता होगा, जैसाकि आने वाली रिवायात से मालूम होता है, लेकिन आपने कभी उकताहट और बेज़ारी का इज़हार नहीं फ़रमाया और न ही सरज़निश व तौबीख़(डांट) से काम लिया बल्कि उसकी दिलदारी फ़रमाई।

नोट : लैस मिम्मा : लैस कलिमे में तहरीफ़ हुई है, ये दर हक़ीक़त लिशैइम् मिम्मा है यानी ख़ादिम जो कुछ करता है।(फ़तहुल बारी, जिल्द : 10, पेज नं. 4670, मक्तबा दारुल मअरिफ़ह)

وَحَدَّثَنَاهُ شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سَلاَّمُ بْنُ مِسْكِينٍ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسٍ، بِمِثْلِهِ .

(6012) यही रिवायत इमाम साहब के एक और उस्ताद बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 6038)

وَحَدَّثَنَاهُ أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنْ إِسْمَاعِيلَ، - وَاللَّفْظُ لأَحْمَدَ - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَدِينَةَ أَخَذَ أَبُو طَلْحَةَ بِيَدِي فَانْطَلَقَ بِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَنَسًا غُلاَمٌ كَيِّسٌ فَلْيَخْدُمْكَ . قَالَ فَخَدَمْتُهُ فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ وَاللَّهِ مَا قَالَ لِي لِشَىْءٍ صَنَعْتُهُ لِمَ صَنَعْتَ هَذَا هَكَذَا وَلاَ لِشَىْءٍ لَمْ أَصْنَعْهُ لِمَ لَمْ تَصْنَعْ هَذَا هَكَذَا.

(6013) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाये, अबू तलहा(रज़ि.) ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ लेकर चल पड़े और अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अनस एक समझदार लड़का है, आपकी ख़िदमत करेगा। सो मैंने आपकी सफ़र और हज़र में ख़िदमत की, अल्लाह की क़सम! जो काम मैंने किया, आपने मुझे ये नहीं कहा, ये काम तूने इस तरह क्यों किया? और जो काम मैंने न किया, आपने ये नहीं कहा, तूने ये काम इस तरह क्यों नहीं किया?
(सहीह बुख़ारी : 2768, 6911)

फ़ायदा : हज़रत अनस(रज़ि.) हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) के लख़्ते जिगर हैं और हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) ने हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) से शादी कर ली थी और हज़रत उम्मे सुलैम के मशवरे से ही हज़रत अनस को आपकी ख़िदमत के लिये ले गये थे, इसलिये कुछ जगह ले जाने की निस्बत हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) की तरफ़ की गई है। नीज़ जंगे ख़ैबर के मौक़े पर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) से किसी ऐसे ख़ादिम का मुताल्बा किया, जो सफ़र में आपकी ख़िदमत करे तो

अबू तलहा(रज़ि.) ने उसके लिये भी, हज़रत अनस ही को पेश किया। इसलिये हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, मैंने आपकी सफ़र व हज़र में ख़िदमत की।

(6014) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) की नौ साल ख़िदमत की तो मैं नहीं जानता, आपने मुझे कभी फ़रमाया हो, ये काम तूने क्यों किया? और न आपने कभी मेरे काम पर नुक्ता चीनी फ़रमाई(न किसी काम में ऐब निकाला)।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، حَدَّثَنِي سَعِيدٌ، - وَهُوَ ابْنُ أَبِي بُرْدَةَ - عَنْ أَنَسٍ، قَالَ خَدَمْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تِسْعَ سِنِينَ فَمَا أَعْلَمُهُ قَالَ لِي قَطُّ لِمَ فَعَلْتَ كَذَا وَكَذَا وَلاَ عَابَ عَلَىَّ شَيْئًا قَطُّ ‏.‏

फ़ायदा : हज़रत अनस(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में नौ साल कुछ माह गुज़ारे थे, इसलिये कभी कस्र को पूरा करते हुए दस साल कह दिया और कभी इसको नज़र अन्दाज़ करते हुए 9 साल कह लिया।

(6015) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का अख़्लाक़ सबसे अच्छा था, आपने एक दिन एक ज़रूरत के लिये मुझे भेजना चाहा तो मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जाऊँगा और मेरे जी में यही था कि अल्लाह के नबी(ﷺ) ने जिस मक़सद के लिये मुझे भेजना चाहा है, मैं उसके लिये जाऊँगा। सो मैं निकला यहाँ तक कि बच्चों के पास से गुज़रा और वो(बाज़ार में) खेल रहे थे(मैं उनके पास रुक गया) अचानक रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पीछे से आकर मेरी गुद्दी को पकड़ लिया तो मैंने आपकी तरफ़ देखा और आप हँस रहे थे, आपने फ़रमाया, 'ऐ उनैस! क्या जिधर मैंने तुम्हें भेजा था, उधर गये हो?' मैंने कहा, जी हाँ! मैं जाता हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल!

(अबू दाऊद : 4773)

حَدَّثَنِي أَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ، زَيْدُ بْنُ يَزِيدَ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، -وَهُوَ ابْنُ عَمَّارٍ - قَالَ قَالَ إِسْحَاقُ قَالَ أَنَسٌ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ خُلُقًا فَأَرْسَلَنِي يَوْمًا لِحَاجَةٍ فَقُلْتُ وَاللَّهِ لاَ أَذْهَبُ ‏.‏ وَفِي نَفْسِي أَنْ أَذْهَبَ لِمَا أَمَرَنِي بِهِ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَخَرَجْتُ حَتَّى أَمُرَّ عَلَى صِبْيَانٍ وَهُمْ يَلْعَبُونَ فِي السُّوقِ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدْ قَبَضَ بِقَفَاىَ مِنْ وَرَائِي - قَالَ - فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقَالَ ‏"‏ يَا أُنَيْسُ أَذَهَبْتَ حَيْثُ أَمَرْتُكَ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ قُلْتُ نَعَمْ أَنَا أَذْهَبُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ‏.‏

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि हज़रत अनस(रज़ि.) लड़कपन के भूलपन की बिना पर कई बार जो काम करना चाहते होते, उसके बारे में भी क़समिया अन्दाज़ में कह देते कि मैं नहीं करूँगा, लेकिन आप उसको बुरा न मानते और यही समझते ये नादानी के तौर पर कह रहा है, काम ये करेगा। फिर हज़रत अनस(रज़ि.) जाते तो आप उन पर नज़र रखते, वो बच्चों को खेल में मशग़ूल देखकर उनके पास खड़े हो जाते तो आप चुपके से प्यार व मुहब्बत से पीछे से उनकी गर्दन दबोच लेते, लेकिन ग़ुस्से का इज़हार न फ़रमाते, बल्कि फ़रमाते, ऐ प्यारे अनस! गये नहीं हो और हज़रत अनस बड़ी मअ़सूमियत से जवाब देते, इधर ही जा रहा हूँ और इस पर आप करीमाना अख़्लाक़ की बिना पर ख़ामोश हो जाते।

قَالَ أَنَسٌ وَاللَّهِ لَقَدْ خَدَمْتُهُ تِسْعَ سِنِينَ مَا عَلِمْتُهُ قَالَ لِشَىْءٍ صَنَعْتُهُ لِمَ فَعَلْتَ كَذَا وَكَذَا أَوْ لِشَىْءٍ تَرَكْتُهُ هَلاَّ فَعَلْتَ كَذَا وَكَذَا ‏.‏

(6016) अनस कहते हैं, अल्लाह की क़सम! मैंने आपकी नौ साल ख़िदमत की है, मुझे नहीं मालूम मैंने जो काम किया हो, आपने कहा हो, वो फ़लाँ-फ़लाँ काम तूने क्यों किया है? या जो काम मैंने छोडा हो, आपने कहा, वो ऐसे-ऐसे या फ़लाँ-फ़लाँ काम क्यों नहीं किया?

(अबू दाऊद : 4773)

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْسَنَ النَّاسِ خُلُقًا ‏.‏

(6017) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का अख़्लाक़ सब लोगों से अच्छा था।

باب مَا سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ لاَ وَكَثْرَةِ عَطَائِهِ

बाब 14 : आप(ﷺ) की सख़ावत

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ مَا سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ لاَ ‏.‏

(6018) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कभी किसी चीज़ के माँगने पर 'न' नहीं कहा।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا الأَشْجَعِيُّ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنِي ابْنَ مَهْدِيٍّ - كِلاَهُمَا عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ، اللَّهِ يَقُولُ مِثْلَهُ سَوَاءً .

(6019) इमाम साहब के दो उस्ताद अपनी-अपनी सनद से यही रिवायत बिल्कुल इसी तरह बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 6034)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) मजबूरी के सिवा, आम तौर पर कभी किसी साइल को महरूम नहीं रखते थे, अगर देना मुम्किन न होता तो फिर फ़रमाते, ये मुम्किन नहीं।

وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ مَا سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الإِسْلاَمِ شَيْئًا إِلاَّ أَعْطَاهُ - قَالَ - فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَأَعْطَاهُ غَنَمًا بَيْنَ جَبَلَيْنِ فَرَجَعَ إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ أَسْلِمُوا فَإِنَّ مُحَمَّدًا يُعْطِي عَطَاءً لاَ يَخْشَى الْفَاقَةَ .

(6020) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) से इस्लाम लाने के वक़्त जो कुछ माँग लिया जाता था, आप इनायत फ़रमा देते, आपके पास एक आदमी आया तो आपने उसे दो पहाड़ों के दरम्यान की बकरियाँ दे दीं तो वो अपनी क़ौम के पास जाकर कहने लगा, ऐ मेरी क़ौम! मुसलमान हो जाओ। क्योंकि मुहम्मद इस क़द्र इनायत फ़रमाता है कि उसे फ़क्रो-फ़ाक़ा का ख़दशा ही नहीं।

फ़ायदा : ग़नमन् बै-न जबलैन : दो पहाड़ों के दरम्यान के इलाक़े को भर देने वाली बकरियाँ, आपने सफ़वान बिन उमय्या को हुनैन की ग़नीमत से बहुत सी बकरियाँ अता फ़रमाईं कि आपके इस क़द्र अतिये से उसे महसूस होगा कि वाक़ेई आप अल्लाह के नबी हैं, जो बिला ख़ौफ़ व ख़तर इस क़द्र सख़ावत करते हैं, इसलिये उसने अपनी क़ौम को भी मुसलमान होने की दावत दी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَجُلاً، سَأَلَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم غَنَمًا بَيْنَ جَبَلَيْنِ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ فَأَتَى قَوْمَهُ

(6021) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी(ﷺ) से दो पहाड़ों के दरम्यान चरने वाली बकरियाँ माँगीं, आपने उसे वो दे दीं, सो वो अपनी क़ौम के पास आकर कहने लगा, ऐ मेरी क़ौम! इस्लाम

فَقَالَ أَىْ قَوْمِ أَسْلِمُوا فَوَاللَّهِ إِنَّ مُحَمَّدًا لَيُعْطِي عَطَاءً مَا يَخَافُ الْفَقْرَ . فَقَالَ أَنَسٌ إِنْ كَانَ الرَّجُلُ لَيُسْلِمُ مَا يُرِيدُ إِلاَّ الدُّنْيَا فَمَا يُسْلِمُ حَتَّى يَكُونَ الإِسْلاَمُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا

क़ुबूल कर लो, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद इस क़द्र अतिया देता है कि वो फ़क़्रो-फ़ाक़ा का अन्देशा ही नहीं रखता। हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, एक इंसान सिर्फ़ दुनिया की ख़ातिर मुसलमान होता तो इस्लाम लाने के बाद उसे इस्लाम, दुनिया और इसकी हर चीज़ से महबूब हो जाता।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ غَزَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَزْوَةَ الْفَتْحِ فَتْحِ مَكَّةَ ثُمَّ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَاقْتَتَلُوا بِحُنَيْنٍ فَنَصَرَ اللَّهُ دِينَهُ وَالْمُسْلِمِينَ وَأَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَئِذٍ صَفْوَانَ بْنَ أُمَيَّةَ مِائَةً مِنَ النَّعَمِ ثُمَّ مِائَةً ثُمَّ مِائَةً . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ صَفْوَانَ قَالَ وَاللَّهِ لَقَدْ أَعْطَانِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا أَعْطَانِي وَإِنَّهُ لأَبْغَضُ النَّاسِ إِلَىَّ فَمَا بَرِحَ يُعْطِينِي حَتَّى إِنَّهُ لأَحَبُّ النَّاسِ إِلَىَّ .

(6022) इब्ने शिहाब(रह.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का किया। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने मुसलमान साथियों के साथ निकले और हुनैन की जंग लड़ी तो अल्लाह ने अपने दीन और मुसलमानों की नुस्रत(मदद) फ़रमाई और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उस दिन सफ़वान बिन उमय्या को सौ ऊँट दिये, फिर सौ दिये, फिर सौ दिये। इब्ने शिहाब कहते हैं, मुझे सईद बिन मुसय्यब ने बताया, सफ़वान ने कहा, अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे अता फ़रमाया, जो भी अता फ़रमाया, जबकि आप मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा मबग़ूज़(नापसंद) थे, सो आप मुझे(उसके बावजूद) देते रहे कि आप मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब(पसन्दीदा) हैं।

(तिर्मिज़ी : 666)

फ़ायदा : सफ़वान बिन उमय्या जंगे हुनैन के वक़्त मुश्रिक था और फ़तहे मक्का की बिना पर आपका शदीद मुख़ालिफ़ था, लेकिन आपने तालीफ़े क़ल्बी करते हुए, इस्लाम और मुसलमानों के मफ़ाद में उसको ग़नाइमे हुनैन से इतना कुछ दिया कि वो इस्लाम लाने पर मजबूर हो गया, क्योंकि वो समझ गया कि ये काम पैग़म्बर के बग़ैर कोई दुनियवी लीडर या सरदार नहीं कर सकता।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ، بْنَ عَبْدِ اللَّهِ ح

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، وَعَنْ عَمْرٍو، عَنْ مُحَمَّدِ، بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرٍ، أَحَدُهُمَا يَزِيدُ عَلَى الآخَرِ ح

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ قَالَ سُفْيَانُ سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ، يَقُولُ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ سُفْيَانُ وَسَمِعْتُ أَيْضًا، عَمْرَو بْنَ دِينَارٍ يُحَدِّثُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، وَزَادَ، أَحَدُهُمَا عَلَى الآخَرِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا " . وَقَالَ بِيَدَيْهِ جَمِيعًا فَقُبِضَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَبْلَ أَنْ يَجِيءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ فَقَدِمَ عَلَى أَبِي بَكْرٍ بَعْدَهُ فَأَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى مَنْ كَانَتْ لَهُ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عِدَةٌ أَوْ دَيْنٌ فَلْيَأْتِ . فَقُمْتُ فَقُلْتُ إِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا " . فَحَثَى أَبُو بَكْرٍ مَرَّةً ثُمَّ قَالَ لِي عُدَّهَا . فَعَدَدْتُهَا فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ فَقَالَ خُذْ مِثْلَيْهَا .

(6023) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर हमारे पास बहरैन से माल आयेगा तो मैं तुम्हें इतना, इतना दूँगा।' और आपने दोनों हाथों से इशारा फ़रमाया। सो बहरैन का माल आने से पहले आपका इन्तिक़ाल हो गया और आपके बाद, अबू बकर(रज़ि.) के पास आया, उन्होंने ऐलान करने वाले को हुक्म दिया, उसने ऐलान किया। जिसके साथ नबी(ﷺ) ने वादा किया हो या आपके ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ हो, वो आ जाये। मैंने खड़े होकर कहा कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया था, 'अगर हमारे पास बहरैन का माल आ गया तो मैं तुम्हें इस तरह, इस तरह, इस तरह दूँगा।' तो अबू बकर(रज़ि.) ने एक बार लप भरा फिर मुझे कहा, इसे गिनो! मैंने उन्हें गिना तो वो पाँच सौ दिरहम थे तो उन्होंने फ़रमाया, इससे दुगना और ले लो, यानी पन्द्रह सौ दिरहम दे दिये।

(सहीह बुख़ारी : 2598, 2296, 2683, 3137, 4383)

(6024) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, जब नबी(ﷺ) वफ़ात पा गये, अबू बकर(रज़ि.) के पास अला बिन हज़रमी की तरफ़ से माल आया तो अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, जिसका नबी(ﷺ) के ज़िम्मे क़र्ज़ हो या आपने उससे वादा फ़रमाया हो, वो हमारे पास आ जाये, जैसकि इब्ने उयय्ना की हदीस है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ وَأَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ لَمَّا مَاتَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم جَاءَ أَبَا بَكْرٍ مَالٌ مِنْ قِبَلِ الْعَلاَءِ بْنِ الْحَضْرَمِيِّ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم دَيْنٌ أَوْ كَانَتْ لَهُ قِبَلَهُ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنَا . بِنَحْوِ حَدِيثِ ابْنِ عُيَيْنَةَ.

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, एक हुक्मरान के मुआहिदे और वादे उसकी जगह लेने वाले हुक्मरान को पूरे करने होंगे, वो ये नहीं कह सकता ये मुआहिदे और वादे हमने तो नहीं किये।

बाब 15 : नबी(ﷺ) की बच्चों और अहलो-अयाल पर शफ़क़त, अहलो-अयाल और आपकी तवाज़ोअ और उसकी फ़ज़ीलत

باب رَحْمَتِهِ صلى الله عليه وسلم الصِّبْيَانَ وَالْعِيَالَ وَتَوَاضُعِهِ وَفَضْلِ ذَلِكَ

(6025) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'आज रात मेरे यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ है तो मैंने उसका नाम अपने बाप के नाम पर इब्राहीम रखा है।' फिर आपने उसे एक लौहार की बीवी उम्मे सैफ़ के सुपुर्द फ़रमाया। लौहार को अबू सैफ़ कहते थे, आप उसके यहाँ जाने के लिये चले तो मैं भी आपके पीछे हो लिया।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، وَشَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، كِلاَهُمَا عَنْ سُلَيْمَانَ، -وَاللَّفْظُ لِشَيْبَانَ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وُلِدَ لِيَ اللَّيْلَةَ غُلاَمٌ فَسَمَّيْتُهُ بِاسْمِ أَبِي إِبْرَاهِيمَ " . ثُمَّ دَفَعَهُ

हम अबू सैफ़ के पास पहुँचे, जबकि वो भट्टी धोंक रहा था और घर धूएें से भर गया था तो मैं जल्दी-जल्दी आपके आगे चला और मैंने कहा, ऐ अबू सैफ़! रुक जा! रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ ला रहे हैं। वो रुक गया तो नबी(ﷺ) ने बच्चे को मँगवाया और उसे अपने साथ चिमटा लिया और अल्लाह को जो मन्ज़ूर था कहा। हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, मैंने उसे देखा, रसूलुल्लाह(ﷺ) के सामने उसकी जान निकल रही थी तो रसूलुल्लाह(ﷺ) की आँखों से आँसू जारी हो गये और आपने फ़रमाया, 'आँख आँसू बहा रही है, दिल ग़मज़दा है और हम ज़बान से सिर्फ़ वही बात कहेंगे जो हमारे रब को पसंद है, अल्लाह की क़सम ऐ इब्राहीम! हम तेरे फ़िराक़(जुदाई) पर ग़मगीन हैं।'

إِلَى أُمِّ سَيْفٍ امْرَأَةِ قَيْنٍ يُقَالُ لَهُ أَبُو سَيْفٍ فَانْطَلَقَ يَأْتِيهِ وَاتَّبَعْتُهُ فَانْتَهَيْنَا إِلَى أَبِي سَيْفٍ وَهُوَ يَنْفُخُ بِكِيرِهِ قَدِ امْتَلأَ الْبَيْتُ دُخَانًا فَأَسْرَعْتُ الْمَشْىَ بَيْنَ يَدَىْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ يَا أَبَا سَيْفٍ أَمْسِكْ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَأَمْسَكَ فَدَعَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم بِالصَّبِيِّ فَضَمَّهُ إِلَيْهِ وَقَالَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ . فَقَالَ أَنَسٌ لَقَدْ رَأَيْتُهُ وَهُوَ يَكِيدُ بِنَفْسِهِ بَيْنَ يَدَىْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَدَمَعَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " تَدْمَعُ الْعَيْنُ وَيَحْزَنُ الْقَلْبُ وَلاَ نَقُولُ إِلاَّ مَا يَرْضَى رَبُّنَا وَاللَّهِ يَا إِبْرَاهِيمُ إِنَّا بِكَ لَمَحْزُونُونَ " .

(सहीह बुख़ारी : 1303, अबू दाऊद : 3126)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) क़ैन : लौहार।**(2) यकीदु बिनफ़्सिही :** उसकी जान निकल रही है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है औलाद की वफ़ात पर आँसू बहाना और दिल का रन्जीदा होना एक तबई चीज़ है, जो सब्र के मुनाफ़ी(ख़िलाफ़) नहीं है। लेकिन ज़बान से कोई ऐसा कलिमा या बोल नहीं निकाला जायेगा, जो जज़अ-फ़ज़अ(चीख़ने चिल्लाने) पर दलालत करता हो या अल्लाह के फ़ैसले पर नागवारी ज़ाहिर करता हो।

(6026) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ज़्यादा किसी को अपनी औलाद पर मेहरबान नहीं पाया, इब्राहीम मदीना की बालाई बस्ती में दूध पीते थे। आप जाते और हम भी आपके साथ होते, आप उस घर में दाख़िल होते, जबकि वो धूएें से भरा होता, क्योंकि इब्राहीम का रज़ाई बाप

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ عُلَيَّةَ - عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَرْحَمَ بِالْعِيَالِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله

عليه وسلم - قَالَ - كَانَ إِبْرَاهِيمُ مُسْتَرْضِعًا لَهُ فِي عَوَالِي الْمَدِينَةِ فَكَانَ يَنْطَلِقُ وَنَحْنُ مَعَهُ فَيَدْخُلُ الْبَيْتَ وَإِنَّهُ لَيُدَّخَنُ وَكَانَ ظِئْرُهُ قَيْنًا فَيَأْخُذُهُ فَيُقَبِّلُهُ ثُمَّ يَرْجِعُ . قَالَ عَمْرٌو فَلَمَّا تُوُفِّيَ إِبْرَاهِيمُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ إِبْرَاهِيمَ ابْنِي وَإِنَّهُ مَاتَ فِي الثَّدْىِ وَإِنَّ لَهُ لَظِئْرَيْنِ تُكَمِّلاَنِ رَضَاعَهُ فِي الْجَنَّةِ " .

लौहार था, आप बच्चे को पकड़ते, उसे बोसा देते, फिर वापस आ जाते। अम्र कहते हैं, जब इब्राहीम वफ़ात पा गया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरा बेटा इब्राहीम, दूध पीते मर गया है, उसको दो दूध पिलाने वाली हैं, जन्नत में उसकी रज़ाअत(दूध पीने की मुद्दत) मुकम्मल कर रही हैं।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : ज़िअ्र : बच्चे को दूध पिलाने वाली औरत और उसके ख़ाविन्द दोनों पर ज़िअ्र का इत्लाक़ होता है गोया ये मुज़क्कर(मेल) और मुअन्नस(फिमेल) दोनों के लिये इस्तेमाल होता है।
फ़ायदा : हज़रत इब्राहीम 8 हिजरी को माहे ज़िल्हिज्जा में पैदा हुए थे और 16-17 माह की उम्र में वफ़ात पा गये थे और उनकी मुद्दते रज़ाअत(दूध पिलाने की मुद्दत) की तक्मील जन्नत में हुई।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَدِمَ نَاسٌ مِنَ الأَعْرَابِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا أَتُقَبِّلُونَ صِبْيَانَكُمْ فَقَالُوا نَعَمْ . فَقَالُوا لَكِنَّا وَاللَّهِ مَا نُقَبِّلُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَأَمْلِكُ إِنْ كَانَ اللَّهُ نَزَعَ مِنْكُمُ الرَّحْمَةَ " . وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ " مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ " .

(6027) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, कुछ आराबी लोग रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछने लगे, क्या तुम अपने बच्चों को बोसा देते हो? सहाबा किराम ने कहा, हाँ! तो वो कहने लगे, लेकिन हम अल्लाह की क़सम! बोसा नहीं देते। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'और मैं क्या करूँ अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से रहमत निकाल ली है।' इब्ने नुमैर कहते हैं, 'तेरे दिल से रहमत निकाल ली है।'
(इब्ने माजह : 3665)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, अपनी छोटी औलाद से बोसो-किनार एक तबई और फ़ितरी शफ़क़त व प्यार का नतीजा है और उनसे प्यार व मुहब्बत न करना, दिल की सख़्ती और शक़ावत की दलील है।

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، بْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ، أَبْصَرَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يُقَبِّلُ الْحَسَنَ فَقَالَ إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا قَبَّلْتُ وَاحِدًا مِنْهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّهُ مَنْ لاَ يَرْحَمْ لاَ يُرْحَمْ " .

(6028) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि अक़रअ बिन हाबिस ने नबी(ﷺ) को हज़रत हुसैन(रज़ि.) का बोसा लेते देखा तो कहने लगा, मेरे दस बेटे हैं, मैंने उनमें से किसी एक का बोसा नहीं लिया। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'वाक़िया ये है जो रहम नहीं करता, उस पर रहम नहीं किया जायेगा।'

(अबू दाऊद : 8/52, तिर्मिज़ी : 1911)

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(6029) इमाम साहब के एक और उस्ताद इसी तरह रिवायत सुनाते हैं।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ جَرِيرٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ - كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، وَأَبِي، ظَبْيَانَ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "مَنْ لاَ يَرْحَمِ النَّاسَ لاَ يَرْحَمْهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ" .

(6030) हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उस पर रहम नहीं फ़रमायेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 6013, 7376)

फ़ायदा : मक़सद ये है कि इंसान के दिल में दूसरों के लिये हमदर्दी, ख़ैरख़्वाही और मेहरबानी करने का जज़्बा होना चाहिये ताकि अल्लाह तआला उसके साथ मेहरबानी और शफ़क़त का मामला करे जैसाकि वो अल्लाह की नेमतों से रवय्या इख़्तियार करेगा उसी के मुताबिक़ अल्लाह तआला उससे सुलूक करेगा।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ الأَعْمَشِ .

(6031) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

باب كَثْرَةِ حَيَائِهِ صلى الله عليه وسلم

बाब 16 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का बहुत ज़्यादा बा-हया(शर्मीला) होना

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ، بْنَ أَبِي عُتْبَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَأَحْمَدُ بْنُ سِنَانٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي عُتْبَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا وَكَانَ إِذَا كَرِهَ شَيْئًا عَرَفْنَاهُ فِي وَجْهِهِ .

(6032) इमाम साहब अपने कई उस्तादों से हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) पर्दा नशीन, कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा शर्मीले थे और आप जब किसी चीज़ को नापसंद फ़रमाते तो हमें आपके चेहरे से उसका पता चल जाता।

(सहीह बुख़ारी : 3562, 6102, इब्ने माजह : 4180)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अज़राअ : कुँवारी दोशेज़ा।**(2) ख़िद्र :** पर्दा जो दोशेज़ा के लिये घर के किसी कोने में ताना जाता है।

फ़ायदा : कुँवारी दोशेज़ा(जवान लड़की) जब अलग-थलग बैठी हो और वहाँ कोई मर्द चला जाये तो वो बहुत ज़्यादा शर्म व हया महसूस करती है, आप हया का पैकर थे। इसलिये किसी नागवार चीज़ की नागवारी का इज़हार ज़बान से नहीं फ़रमाते थे, बल्कि आपके चेहरे की रंगत से उसका पता चल जाता था। लेकिन ये उस वक़्त होता, जब वहाँ शरई तौर पर कुछ कहने की ज़रूरत महसूस न फ़रमाते। इससे मालूम हुआ इंसान के जज़्बाते मसर्रत व कराहत का(ख़ुशी व ग़मी की भावनाओं का) इज़हार उसके चेहरे की रंगत से हो जाता है।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو حِينَ قَدِمَ مُعَاوِيَةُ إِلَى الْكُوفَةِ فَذَكَرَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَمْ يَكُنْ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا ‏.‏ وَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحَاسِنَكُمْ أَخْلاَقًا ‏"‏ ‏.‏ قَالَ عُثْمَانُ حِينَ قَدِمَ مَعَ مُعَاوِيَةَ إِلَى الْكُوفَةِ ‏.‏

(6033) इमाम मसरूक़(रह.) बयान करते हैं, जिस वक़्त हज़रत मुआविया(रज़ि.) कूफ़ा तशरीफ़ लाये हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र(रज़ि.) के पास गये, उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) का ज़िक्र छेड़ दिया और कहने लगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) न तबअ़न बदगो थे और न तकल्लुफ़न बदगोई करते थे और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से बेहतरीन वही हैं, जो अख़लाक़ में अच्छे हों।' उ़समान की रिवायत में है, जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) हज़रत मुआविया के साथ कूफ़ा आये।

(सहीह बुख़ारी : 3559, 3759, 6029, 6035, तिर्मिज़ी : 1975)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، - يَعْنِي الأَحْمَرَ - كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ ‏.‏

(6034) इमाम साहब यही रिवायत तीन और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **फ़ाहिश :** तबई तौर पर बदगो, बेहया। (2) **मुतफ़ह्हिशुन :** तकल्लुफ़ के साथ बदगोई करने वाला, यानी आप न बदगोई में शुरूआत करते और न जवाब में फ़हश गोई पर उतरते, किसी सूरत में हया का दामन न छोड़ते।

फ़ायदा : हया, उस मल्का(एनर्जी) और कुव्वते रासिख़ा का नाम है, जो इंसान को बुरे कामों से रोके और अच्छे कामों पर उभारे।

बाब 17 : नबी(ﷺ) का तबस्सुम, मुस्कुराहट और हुस्ने मुआशरत(रहन-सहन)

باب تَبَسُّمِهِ صلى الله عليه وسلم وَحُسْنِ عِشْرَتِهِ

(6035) सिमाक बिन हर्ब(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) से पूछा, क्या आप रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ बैठा करते थे? उन्होंने कहा, हाँ! बहुत बार। आप जिस जगह सुबह की नमाज़ पढ़ाते, वहाँ से सूरज निकलने तक न उठते, जब सूरज तुलूअ हो जाता तो उठते, सहाबा किराम बातें करते रहते, यहाँ तक कि जाहिलिय्यत के दौर के कामों का ज़िक्र छेड़ लेते और हँसते और रसूलुल्लाह(ﷺ) तबस्सुम फ़रमाते।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ قُلْتُ لِجَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ أَكُنْتَ تُجَالِسُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ كَثِيرًا كَانَ لاَ يَقُومُ مِنْ مُصَلاَّهُ الَّذِي يُصَلِّي فِيهِ الصُّبْحَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتْ قَامَ وَكَانُوا يَتَحَدَّثُونَ فَيَأْخُذُونَ فِي أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ فَيَضْحَكُونَ وَيَتَبَسَّمُ صلى الله عليه وسلم .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, सुबह की नमाज़ के बाद, सूरज निकलने तक अपनी जगह बैठकर ज़िक्र व अज़कार और तिलावत करना एक पसन्दीदा अमल है और इबरत पज़ीरी व सबक़ आमूज़ी के लिये दौरे जाहिलिय्यत के वाक़ियात बयान किये जा सकते हैं और हँसने के मौक़े पर हँसना जाइज़ है और बेहतर ये है कि इंसान तबस्सुम पर किफ़ायत करे, यानी मुस्कुराये और आवाज़ पैदा न हो, क्योंकि रसूलुल्लाह(ﷺ) आम तौर पर मुस्कुराते थे।

बाब 18 : नबी(ﷺ) का औरतों पर मेहरबानी फ़रमाना और उनकी सवारियों के हाँकने वालों को उनसे नर्मी बरतने का हुक्म देना

باب فِي رَحْمَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم لِلنِّسَاءِ وَأَمْرِ السُّوَّاقِ مَطَايَاهُنَّ بِالرِّفْقِ

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَحَامِدُ بْنُ عُمَرَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ جَمِيعًا عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ وَغُلاَمٌ أَسْوَدُ يُقَالُ لَهُ أَنْجَشَةُ يَحْدُو فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا أَنْجَشَةُ رُوَيْدَكَ سَوْقًا بِالْقَوَارِيرِ " .

(6036) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने किसी सफ़र पर थे और आपका अन्जशा नामी हब्शी(स्याह फ़ाम) गुलाम हदी ख़्वानी कर रहा था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अन्जशा! शीशों के लिये, सवारी आहिस्ता-आहिस्ता हाँको।'

(सहीह बुख़ारी : 6149, 6161, 6202, 6209)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) यह्दू : ऊँटों को तेज़ चलाने के लिये गा रहा था।**(2) रुवैद :** आहिस्ता, आहिस्ता, नर्मी के साथ क़वारीर, क़ारूरह की जमा है। आबगीना, शीशा, औरतों को सिन्फ़े नाज़ुक होने की बिना पर उनके ज़ोफ़ और कमज़ोरी के सबब शीशे से तशबीह दी है, क्योंकि वो शीशे की तरह जल्द टूट फूट जाती है, ज़्यादा मशक़्क़त तलब काम करना, उनके लिये मुश्किल है या वो जल्द मुतास्सिर हो जाती हैं, इसलिये तेज़ रफ़्तारी से उनके गिरने या रंज व अलम महसूस करने और डरने का ख़तरा था।

وَحَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَحَامِدُ بْنُ عُمَرَ، وَأَبُو كَامِلٍ قَالُوا حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، بِنَحْوِهِ .

(6037) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا

(6038) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अपनी अज़्वाज (बीवियों) के पास पहुँचे, अन्जशा नामी ऊँट

هाँकने वाला, उनकी सवारियाँ हाँक रहा था तो आपने फ़रमाया, 'अफ़सोस ऐ अन्जशा! शीशों की सवारियों को नर्मी से हाँको।' अबू क़िलाबा कहते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ऐसा बोला अगर तुममें से कोई बोलता तो तुम उस पर ऐतराज़ और नुक्ता चीनी करते।

إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَتَى عَلَى أَزْوَاجِهِ وَسَوَّاقٌ يَسُوقُ بِهِنَّ يُقَالُ لَهُ أَنْجَشَةُ فَقَالَ " وَيْحَكَ يَا أَنْجَشَةُ رُوَيْدًا سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ " . قَالَ قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ تَكَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِكَلِمَةٍ لَوْ تَكَلَّمَ بِهَا بَعْضُكُمْ لَعِبْتُمُوهَا عَلَيْهِ .

फ़ायदा : हज़रत अबू क़िलाबा के नज़दीक औरतों को शीशे से तशबीह देने का मक़सद उनका हुस्ने सौत से जल्द मुतास्सिर हो जाना था, हज़रत अन्जशा(रज़ि.) की आवाज़ सुरीली थी, आपने महसूस फ़रमाया कि कहीं औरतें, उसकी आवाज़ से मुतास्सिर होकर उस पर फ़रेफ़्ता न हो जायें और लोगों के सामने ऐसी बात कहना, आम तौर पर अच्छा ख़्याल नहीं किया जाता, इसलिये हज़रत अबू क़िलाबा ने कहा, अगर तुममें से कोई ये बात कहता तो तुम उसको बुरा मानते कि उसने औरतों के बारे में क्या कह दिया और कहने वाले पर ऐतराज़ करते। एक ज़रबुल मसल अल्ग़िनाउ रुक़्यतुल्-लिज़्ज़िना गाना, ज़िना का पेश ख़ेमा है या राग ज़िना का मंत्र है।

(6039) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, उम्मे सुलैम(रज़ि.) अज़वाजे मुतह्हरात के साथ थीं और एक सवारियों को हाँकने वाला, उन्हें हाँक रहा था तो अल्लाह के नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अन्जशा! शीशों को आहिस्ता-आहिस्ता चलाओ।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسِ، بْنِ مَالِكٍ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، حَدَّثَنَا التَّيْمِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ مَعَ نِسَاءِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَهُنَّ يَسُوقُ بِهِنَّ سَوَّاقٌ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَىْ أَنْجَشَةُ رُوَيْدًا سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ "

(6040) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का एक ख़ुश इल्हान, हदी ख़्वाँ था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'आहिस्ता-आहिस्ता ऐ अन्जशा!

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنِي هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَادٍ حَسَنُ الصَّوْتِ

فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رُوَيْدًا يَا أَنْجَشَةُ لاَ تَكْسِرِ الْقَوَارِيرَ " . يَعْنِي ضَعَفَةَ النِّسَاءِ .

शीशों को न तोड़ो। यानी कमज़ोर और नातवाँ औरतों को।'
(सहीह बुख़ारी : 6211)

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلَمْ يَذْكُرْ حَادٍ حَسَنُ الصَّوْتِ

(6041) इमाम साहब को एक और उस्ताद ने ये रिवायत सुनाई, लेकिन उसमें ख़ुश इल्हान, हदी ख़्वाँ का ज़िक्र नहीं है।

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) का मक़सद वो था जो हम पहली हदीस के तहत बयान कर चुके हैं लेकिन हज़रत अबू क़िलाबा वाला मानी भी इससे निकल सकता है, इसलिये उन्होंने इस पर ऊपर दर्ज किया गया तबसरा किया।

باب قُرْبِ النَّبِيِّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ مِنَ النَّاسِ وَتَبَرُّكِهِمْ بِهِ .

बाब 19 : नबी(ﷺ) का लोगों से क़ुर्ब(करीब होना) और उनका आपसे बरकत हासिल करना और आपका उनके लिये तवाज़ोअ इख़्तियार करना

حَدَّثَنَا مُجَاهِدُ بْنُ مُوسَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ بْنِ أَبِي النَّضْرِ وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ جَمِيعًا عَنْ أَبِي النَّضْرِ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، - يَعْنِي هَاشِمَ بْنَ الْقَاسِمِ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا صَلَّى الْغَدَاةَ جَاءَ خَدَمُ الْمَدِينَةِ بِآنِيَتِهِمْ فِيهَا الْمَاءُ فَمَا يُؤْتَى بِإِنَاءٍ إِلاَّ غَمَسَ يَدَهُ فِيهَا فَرُبَّمَا جَاءُوهُ فِي الْغَدَاةِ الْبَارِدَةِ فَيَغْمِسُ يَدَهُ فِيهَا .

(6042) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते, मदीना के नोकर-चाकर अपने-अपने पानी के बर्तन लाते, तो जो बर्तन भी लाया जाता, आप उसमें अपना हाथ डुबो देते, कई बार वो इन्तिहाई ठण्डी सुबह आपके पास आते तो आप बर्तन में अपना हाथ डुबो देते।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि आप लोगों के साथ महर(शफ़क़त) व मुहब्बत का ताल्लुक़ रखते और ज़ेरे दस्त लोग भी बिला तकल्लुफ़ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते और आपके दस्ते मुबारक के लमस(छूना) से बरकत हासिल करने के लिये अपने-अपने पानी के बर्तन पेश करते और आप उनकी तमन्ना व आरज़ू की तक्मील की ख़ातिर, मशक़्क़त बर्दाश्त करते हुए सख़्त सर्दी के मौसम में भी उनके बर्तनों में हाथ डाल देते।

(6043) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा जबकि सर मूण्डने वाला आपके बाल मूण्ड रहा था और आपके साथी, आपको घेरे हुए थे और वो चाहते थे, आपका बाल किसी आदमी के हाथ में गिरे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالْحَلاَّقُ يَحْلِقُهُ وَأَطَافَ بِهِ أَصْحَابُهُ فَمَا يُرِيدُونَ أَنْ تَقَعَ شَعْرَةٌ إِلاَّ فِي يَدِ رَجُلٍ.

फ़ायदा : इस हदीस़ से सहाबा किराम का रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ अक़ीदत मन्दाना ताल्लुक़ व रब्त साबित होता है कि वो आपके बाल भी ज़मीन पर गिरना गवारा नहीं करते थे, उनको भी प्यार व मुहब्बत से सम्भाल कर रखते थे और अपने लिये बाइसे बरकत ख़याल करते थे। अल्लामा अैनी ने लिखा है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद(रज़ि.) ने अपनी टोपी में आपका बाल रखा हुआ था और जिहाद में उस टोपी को पहनकर जाते थे और बाल की बरकत से अल्लाह की नुसरत व मदद के तालिब होते थे।(उम्दतुल क़ारी, जिल्द 3, पेज नं. 37 तबअ़ मुनीरिया)

(6044) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है, एक औरत की अक़्ल में कुछ फ़ितूर था, वो कहने लगी, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे आपसे काम है। तो आपने फ़रमाया, 'ऐ उम्मे फ़लाँ! देख तू किस गली में खड़ी होकर बात करना चाहती है, ताकि मैं तेरी ज़रूरत पूरी कर दूँ।' फिर आपने उसके साथ किसी रास्ते में खड़े होकर अलैहदगी(तन्हाई) में बातचीत की, यहाँ तक कि उसने अपनी ज़रूरत पूरी कर ली(अपनी बात पूरी कह ली)।

(अबू दाऊद : 4819)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ امْرَأَةً، كَانَ فِي عَقْلِهَا شَىْءٌ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي إِلَيْكَ حَاجَةً فَقَالَ " يَا أُمَّ فُلاَنٍ انْظُرِي أَىَّ السِّكَكِ شِئْتِ حَتَّى أَقْضِيَ لَكِ حَاجَتَكِ " . فَخَلاَ مَعَهَا فِي بَعْضِ الطُّرُقِ حَتَّى فَرَغَتْ مِنْ حَاجَتِهَا .

फ़ायदा : लोग कम अक़्ल की बात सुनने के लिये तैयार नहीं होते, लेकिन आपने रास्ते में अलग-थलग होकर, एक कम अक़्ल औरत की ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसकी बात सुनी और उसकी बात पूरी होने तक उसके पास खड़े रहे।

باب مُبَاعَدَتِهِ صلى الله عليه وسلم لِلآثَامِ وَاخْتِيَارِهِ مِنَ الْمُبَاحِ أَسْهَلَهُ وَانْتِقَامِهِ

बाब 20 : आपका, इन्तिक़ाम सिर्फ़ अल्लाह की ख़ातिर लेना

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ، يَحْيَى قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهَا قَالَتْ مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِنَفْسِهِ إِلاَّ أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ .

(6045) नबी(ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, जब भी रसूलुल्लाह(ﷺ) को दो कामों में से एक के चुनने का इख़्तियार दिया गया तो आपने उनमें से आसान को इख़्तियार किया, बशर्तेकि वो गुनाह का बाइस़ न होता, अगर वो गुनाह का काम होता तो आप सबसे ज़्यादा उससे दूर रहते और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कभी अपनी ज़ात की ख़ातिर बदला नहीं लिया। इल्ला(मगर) ये कि कोई अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की हराम की गई चीज़ों का मुर्तकिब होता(उसकी हुरमत को पामाल करता)।

(सहीह बुख़ारी : 3560, 6126, अबू दाऊद : 4785)

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है अगर दो काम ऐसे हों कि शरई रू से दोनों के करने की गुंजाइश और सहूलत मौजूद है तो फिर अपनी अ़ज़्मियत(इरादे) और क़ुव्वत पर ऐतमाद करते हुए मुश्किल काम को इख़्तियार नहीं करना चाहिये, बल्कि आसान और सहल काम को इख़्तियार करना चाहिये, क्योंकि इस्लाम सहूलत और आसानी पर मबनी ज़ाब्त-ए-हयात है, लेकिन अगर उनमें से एक काम गुनाह का पेश ख़ेमा बन सकता हो और इंसान सहूलत पसन्दी और सहल निगारी की बिना पर किसी फ़ित्ने में मुब्तला हो सकता हो तो फिर उस काम से बचना चाहिये और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में, दलील व बुरहान को नज़र अन्दाज़ करके सिर्फ़ सहल और आसान को अपनाना दुरुस्त नहीं है। हाँ दलीलों की यकसानियत(एक जैसे होने) की सूरत में या सिर्फ़ इज्तिहादी मसाइल में उम्मत की सहूलत और

आसानी को पेशे नज़र रखना चाहिये और आप शख़्सी और ज़ाती उमूर में चश्म पोशी से काम लेते, जैसाकि आपने पत्थर खाकर दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत दे, वो मेरे मक़ाम व मर्तबे और मेरी दावत से आगाह नहीं है। इस तरह गुस्ताख़ाना रवय्या इख़्तियार करने वालों को माफ़ फ़रमाया, कई बार अल्लाह तआला की नाराज़ी से बचने और दोबारा उस काम से रोकने की ख़ातिर तादीब व सरज़निश के तौर पर बदला लिया, जैसाकि लदूद करने वालों को, रोकने के बावजूद न रुकने पर लदूद करवाया।

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، جَمِيعًا عَنْ جَرِيرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ، بْنُ عَبْدَةَ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، كِلاَهُمَا عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، فِي رِوَايَةِ فُضَيْلٍ بْنِ شِهَابٍ وَفِي رِوَايَةِ جَرِيرٍ مُحَمَّدٍ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، .

(6046) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ مَالِكٍ .

(6047) एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 6853)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ أَمْرَيْنِ أَحَدُهُمَا أَيْسَرُ مِنَ الآخَرِ إِلاَّ اخْتَارَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ .

(6048) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, जब भी रसूलुल्लाह(ﷺ) को दो कामों में से एक के चुनने का इख़्तियार दिया गया, आपने दोनों में से आसानतर को पसंद फ़रमाया, बशर्तेकि वो गुनाह का बाइस न हो, अगर वो गुनाह का काम होता, आप सबसे ज़्यादा उससे दूर रहते।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ أَيْسَرَهُمَا . وَلَمْ يَذْكُرَا مَا بَعْدَهُ .

(6049) इमाम साहब के दो उस्ताद यही रिवायत बयान करते हैं, लेकिन आसानतर तक बयान करते हैं, बाद वाला हिस्सा बयान नहीं करते।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا ضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا قَطُّ بِيَدِهِ وَلاَ امْرَأَةً وَلاَ خَادِمًا إِلاَّ أَنْ يُجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا نِيلَ مِنْهُ شَىْءٌ قَطُّ فَيَنْتَقِمَ مِنْ صَاحِبِهِ إِلاَّ أَنْ يُنْتَهَكَ شَىْءٌ مِنْ مَحَارِمِ اللَّهِ فَيَنْتَقِمَ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ .

(6050) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अल्लाह की राह में जिहाद के सिवा किसी औरत या ग़ुलाम को कभी अपने हाथ से नहीं पीटा और कभी आपको किसी तरीक़े से अज़ियत नहीं पहुँचाई गई कि आपने ये काम करने वाले से इन्तिक़ाम लिया हो, मगर ये कि अल्लाह तआला की हराम की गई चीज़ों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की गई हो तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की ख़ातिर इन्तिक़ाम(बदला) लेते।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ يَزِيدُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ .

(6051) इमाम साहब के तीन उस्ताद दो सनदों से कमो-बेश करते हुए ये रिवायत बयान करते हैं।

(इब्ने माजह : 1984)

باب طِيبِ رَائِحَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلِينِ مَسِّهِ وَالتَّبَرُّكِ بِمَسْحِهِ .

बाब 21 : नबी(ﷺ) के बदन की पाकीज़ा ख़ुश्बू और उसके छूने पर उसकी मुलायमत और उसको छू कर बरकत हासिल करना

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَمَّادِ بْنِ طَلْحَةَ الْقَنَّادُ، حَدَّثَنَا أَسْبَاطٌ، - وَهُوَ ابْنُ نَصْرٍ الْهَمْدَانِيُّ - عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلاَةَ الأُولَى ثُمَّ خَرَجَ إِلَى أَهْلِهِ وَخَرَجْتُ مَعَهُ فَاسْتَقْبَلَهُ وِلْدَانٌ فَجَعَلَ يَمْسَحُ خَدَّىْ أَحَدِهِمْ

(6052) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, फिर आप अपने घर वालों की तरफ़ निकले और मैं भी आपके साथ निकला तो सामने से कुछ बच्चे आये और आप एक-एक करके उनके रुख़सारों पर हाथ फेरने लगे और आपने मेरे रुख़सार पर भी हाथ फेरा, मैंने आपके हाथ की ठण्डक

وَاحِدًا وَاحِدًا - قَالَ - وَأَمَّا أَنَا فَمَسَحَ خَدِّي - قَالَ - فَوَجَدْتُ لِيَدِهِ بَرْدًا أَوْ رِيحًا كَأَنَّمَا أَخْرَجَهَا مِنْ جُؤْنَةِ عَطَّارٍ .

महसूस की या महक, गोया आपने उसे अ़तर फ़रोश की डिब्बिया से निकाला है।

मुफ़रदातुल हदीस़ : जुअ्नति या जूनह : डिब्बिया, अत्तार, ख़ुश्बू बेचने वाला।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا هَاشِمٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْقَاسِمِ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ الْمُغِيرَةِ - عَنْ ثَابِتٍ، قَالَ أَنَسٌ مَا شَمِمْتُ عَنْبَرًا قَطُّ وَلاَ مِسْكًا وَلاَ شَيْئًا أَطْيَبَ مِنْ رِيحِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَلاَ مَسِسْتُ شَيْئًا قَطُّ دِيبَاجًا وَلاَ حَرِيرًا أَلْيَنَ مَسًّا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(6053) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने कभी अ़म्बर या कस्तूरी या कोई और चीज़ ऐसी नहीं सूंघी जिसकी ख़ुश्बू, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़ुश्बू से बेहतर हो और न मैंने कभी कोई चीज़, दीबाज, न रेशम छुआ जिसकी मुलायमत व नर्मी रसूलुल्लाह(ﷺ) के बदन से ज़्यादा हो।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ صَخْرٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَزْهَرَ اللَّوْنِ كَأَنَّ عَرَقَهُ اللُّؤْلُؤُ إِذَا مَشَى تَكَفَّأَ وَلاَ مَسِسْتُ دِيبَاجَةً وَلاَ حَرِيرَةً أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَلاَ شَمَمْتُ مِسْكَةً وَلاَ عَنْبَرَةً أَطْيَبَ مِنْ رَائِحَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

(6054) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का रंग सफ़ेद चमकदार था और आपका पसीना गोया मोती है(सफ़ाई और सफ़ेदी में) जब आप चलते, आगे को झुक कर चलते और मैंने कोई दीबाज या कोई रेशम रसूलुल्लाह(ﷺ) की हथेली से ज़्यादा नर्म नहीं छुआ और न मैंने कोई कस्तूरी या अ़म्बर रसूलुल्लाह(ﷺ) के बदन की ख़ुश्बू से बेहतर सूंघा।

फ़ायदा : इन हदीसों से साबित होता है, आपका रंग इन्तिहाई ख़ूबसूरत और बदन इन्तिहाई नर्म और गुदाज़ था और उससे इन्तिहाई मुअत्तर पसीना निकलता था, जिसके क़तरे मोती की तरह साफ़-शफ़्फ़ाफ़ और सफ़ेद होते थे।

باب طِيبِ عَرَقِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَالتَّبَرُّكِ بِهِ .

बाब 22 : नबी(ﷺ) के पसीने की ख़ुश्बू और उससे बरकत हासिल करना

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْقَاسِمِ - عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ دَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ عِنْدَنَا فَعَرِقَ وَجَاءَتْ أُمِّي بِقَارُورَةٍ فَجَعَلَتْ تَسْلُتُ الْعَرَقَ فِيهَا فَاسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ " يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا هَذَا الَّذِي تَصْنَعِينَ " . قَالَتْ هَذَا عَرَقُكَ نَجْعَلُهُ فِي طِيبِنَا وَهُوَ مِنْ أَطْيَبِ الطِّيبِ .

(6055) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाये और हमारे यहाँ क़ैलूला किया तो आपको पसीना आ गया, मेरी माँ एक शीशी लाई और उसमें सोंत-सोंत कर पसीना डालने लगी, नबी(ﷺ) बेदार हो गये तो आपने पूछा, 'ऐ उम्मे सुलैम! तुम ये क्या कर रही हो?' उसने अ़र्ज़ किया, ये आपका पसीना, हम इसे अपनी ख़ुश्बू में डालेंगे और ये सबसे आ़ला ख़ुश्बू है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि इंसान अपने किसी शनासा(जान-पहचान) और अ़ज़ीज़ के यहाँ जाकर क़ैलूला कर सकता है और रसूलुल्लाह(ﷺ) के जिस्मे मुबारक से हमेशा इन्तिहाई पाकीज़ा ख़ुश्बू आती थी और आपका पसीना इन्तिहाई मुअ़त्तर होता था, जो आ़म ख़ुश्बू में मज़ीद निखार पैदा कर देता था। जिससे मालूम हुआ आप हर वक़्त साफ़-सुथरे रहते थे।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا حُجَيْنُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - وَهُوَ ابْنُ أَبِي سَلَمَةَ - عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَدْخُلُ بَيْتَ أُمِّ سُلَيْمٍ فَيَنَامُ عَلَى فِرَاشِهَا وَلَيْسَتْ فِيهِ - قَالَ - فَجَاءَ ذَاتَ يَوْمٍ فَنَامَ عَلَى فِرَاشِهَا فَأُتِيَتْ فَقِيلَ لَهَا

(6056) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) उम्मे सुलैम के घर तशरीफ़ ले जाते और उसके बिस्तर पर सो जाते, जबकि वो घर में न होतीं। आप एक दिन तशरीफ़ लाये और उसके बिस्तर पर सो गये, उसके पास आकर उसे बताया गया, ये नबी(ﷺ) तेरे घर में, तेरे बिस्तर पर सो चुके हैं। वो आईं और आपको पसीना आ चुका था, बिस्तर पर एक चमड़े के टुकड़े में आपका पसीना जमा हो चुका था तो उसने अपना

هَذَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم نَامَ فِي بَيْتِكِ عَلَى فِرَاشِكِ - قَالَ - فَجَاءَتْ وَقَدْ عَرِقَ وَاسْتَنْقَعَ عَرَقُهُ عَلَى قِطْعَةِ أَدِيمٍ عَلَى الْفِرَاشِ فَفَتَحَتْ عَتِيدَتَهَا فَجَعَلَتْ تُنَشِّفُ ذَلِكَ الْعَرَقَ فَتَعْصِرُهُ فِي قَوَارِيرِهَا فَفَزِعَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ " مَا تَصْنَعِينَ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ " . فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ نَرْجُو بَرَكَتَهُ لِصِبْيَانِنَا قَالَ " أَصَبْتِ " .

सन्दूक़चा खोला और उस पसीने को चूसने लगीं और अपनी शीशी में निचोड़ लेतीं तो नबी(ﷺ) घबराकर उठे और पूछा, 'क्या कर रही हो? ऐ उम्मे सुलैम!' उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम अपने बच्चों के लिये इसकी बरकत के उम्मीदवार हैं। आपने फ़रमाया, 'तूने दुरुस्त राय क़ायम की।'

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) इस्तन्क़अ : जमा हो गया, इकट्ठा हो गया।**(2) अतीदह :** क़ीमती सामान रखने का छोटा सा सन्दूक़, सन्दूक़ची।

फ़ायदा : हज़रत उम्मे सुलैम और हज़रत उम्मे हराम दोनों बहनें रज़ाई ऐतबार से आपकी ख़ाला या ख़ाला के क़ायम मक़ाम थीं, क्योंकि आपके बाप या दादा की रज़ाई ख़ाला थीं। इसलिये आप(ﷺ) उनके यहाँ उनकी ग़ैर मौजूदगी में भी चले जाते और वहाँ क़ैलूला कर लेते थे और उम्मे सुलैम(रज़ि.) ने आपका पसीना और ख़ुश्बू तबर्रुक के लिये एक शीशी में डाल लिया था, अगर किसी बुज़ुर्ग की किसी चीज़ से बरकत हासिल करने की उम्मीद रखी जाये, बशर्तेकि उसमें शिर्क व बिद्अत का शायबा न हो तो इसकी गुंजाइश है। लेकिन चूंकि ये चीज़ आहिस्ता-आहिस्ता शिर्क का बाइस़ बन सकती है, इसलिये सहाबा किराम नबी(ﷺ) के सिवा किसी की किसी चीज़ से तबर्रुक हासिल करने से बचते थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أُمِّ سُلَيْمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَأْتِيهَا فَيَقِيلُ عِنْدَهَا فَتَبْسُطُ لَهُ نَطْعًا فَيَقِيلُ عَلَيْهِ وَكَانَ كَثِيرَ الْعَرَقِ فَكَانَتْ تَجْمَعُ عَرَقَهُ فَتَجْعَلُهُ فِي الطِّيبِ وَالْقَوَارِيرِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ " يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا هَذَا " . قَالَتْ عَرَقُكَ أَدُوفُ بِهِ طِيبِي .

(6057) हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) उसके यहाँ आते और उसके यहाँ क़ैलूला करते, वो आपके लिये चमड़े का टुकड़ा बिछा देतीं, जिस पर आप क़ैलूला करते और आपको पसीना बहुत आता था तो वो आपका पसीना जमा करके और ख़ुश्बू शीशी में डाल लेतीं तो नबी(ﷺ) ने पूछा, 'ऐ उम्मे सुलैम! ये क्या है?' उसने कहा, आपका पसीना है, मैं इसे अपनी ख़ुश्बू में मिला लेती हूँ।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) नत्अन : चमड़े का बिछौना।**(2) अदूफ़ु :** मैं मिला लेती हूँ।

बाब 23 : सर्दी में वह्य की आमद पर नबी(ﷺ) को पसीना आना

باب عَرَقِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي الْبَرْدِ وَحِينَ يَأْتِيهِ الْوَحْىُ

(6058) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, ठण्डी या सर्द सुबह रसूलुल्लाह(ﷺ) पर वह्य का नुज़ूल होता, फिर आपकी पेशानी से पसीना बह निकलता।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ إِنْ كَانَ لَيُنْزَلُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي الْغَدَاةِ الْبَارِدَةِ ثُمَّ تَفِيضُ جَبْهَتُهُ عَرَقًا .

फ़ायदा : वह्य की आमद पर चूंकि आपको सख़्त मशक़्क़त से गुज़रना पड़ता, इसलिये सर्दी के बावजूद आपकी पेशानी पसीने से शराबोर हो जाती।

(6059) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि हारिस़ बिन हिशाम ने नबी(ﷺ) से पूछा, आप पर वह्य कैसे नाज़िल होती है? आपने फ़रमाया, 'कभी-कभी वह्य घण्टी की झंकार की तरह आती है और ये सूरत मेरे लिये सख़्त तरीन है, फिर ये सिमट जाती है, ये कैफ़ियत छट जाती है और मैं उसे याद कर चुका होता हूँ और कभी-कभी फ़रिश्ता, आदमी की शक्ल में आता है तो वो जो कुछ कहता है, मैं याद कर लेता हूँ।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، بِشْرٍ جَمِيعًا عَنْ هِشَامٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ، سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ كَيْفَ يَأْتِيكَ الْوَحْىُ فَقَالَ "أَحْيَانًا يَأْتِينِي فِي مِثْلِ صَلْصَلَةِ الْجَرَسِ وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَىَّ ثُمَّ يَفْصِمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُهُ وَأَحْيَانًا مَلَكٌ فِي مِثْلِ صُورَةِ الرَّجُلِ فَأَعِي مَا يَقُولُ" .

फ़ायदा : सल्सलह : असल में लोहे की ज़ंजीर को ज़मीन पर मारने से जो आवाज़ और झंकार पैदा होती है, उसको कहते हैं और झंकार की आवाज़ चूंकि हर तरफ़ से सुनाई देती है और उसमें तसलसुल होता है, वक़्फ़ा नहीं होता, इसलिये इससे अल्फ़ाज़ को समझना मुश्किल हो जाता है और बक़ौल कुछ ये फ़रिश्ते के परों की आवाज़ होती थी ताकि आप वह्य के लेने के लिये पूरी तरह मुतवज्जह हो जायें,

किसी और तरफ़ ध्यान न रहे और इस सूरत में चूंकि आप पर रूहानियत और मल्कियत का ग़ल्बा था, यानी बशरी मिज़ाज से मल्कूती मिज़ाज की तरफ़ निकलना पड़ता था, जो ख़िलाफ़े आदत काम था, इसलिये इस सूरत में आपको बहुत मशक़्क़त बर्दाश्त करनी पड़ती और जब फ़रिश्ता इंसानी सूरत में आता तो आप बशरियत के रंग ही में होते। इसलिये ये सूरत आपके लिये सहूलत और आसानी का बाइस बनती।

(6060) हज़रत उ़बादा बिन सामित(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) पर जब वह्य तारी हो जाती तो उस पर आप कर्ब व तकलीफ़ में मुब्तला हो जाते और आपका चेहरा ख़ाकिसतरी रंग का हो जाता।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ كَانَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْوَحْىُ كُرِبَ لِذَلِكَ وَتَرَبَّدَ وَجْهُهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यफ़्सिमु : रुक जाना, बंद हो जाना या कैफ़ियत का छट जाना।**(2) कुरिब :** कर्ब व अज़ियत महसूस करना।**(3) तरब्बद :** मुतग़य्यर हो जाना, स्याही माइल हो जाना, यानी वह्य की शिद्दत की बिना पर चेहरे का रंग फ़क़ हो जाता, क्योंकि क़ौले स़क़ील(भारी बात) के नुज़ूल की बिना पर आप तकलीफ़ और मशक़्क़त से गुज़रते थे।

(6061) हज़रत उ़बादा बिन सामित(रज़ि.) बयान करते हैं कि जब नबी(ﷺ) पर वह्य नाज़िल की जाती, आप अपना सर झुका लेते और आपके साथी अपने सर झुका लेते और जब मुन्क़तअ हो जाती(कट जाती), अपना सर उठा लेते।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الرَّقَاشِيِّ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْوَحْىُ نَكَسَ رَأْسَهُ وَنَكَسَ أَصْحَابُهُ رُءُوسَهُمْ فَلَمَّا أُتْلِيَ عَنْهُ رَفَعَ رَأْسَهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : उत्लि-य अ़न्हु : वह्य उठ जाती, यानी उसकी आमद बंद हो जाती।

बाब 24 : नबी(ﷺ) का अपने बालों को खुला छोड़ना और मांग निकालना

باب فِي سَدْلِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم شَعْرَهُ وَفَرْقِهِ

(6062) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, अहले किताब अपने बाल खुले छोड़ते थे और मुश्रिक लोग अपने सरों की मांग निकालते थे और रसूलुल्लाह(ﷺ) जिन कामों के बारे में हुक्म न आता, अहले किताब की मुवाफ़िक़त को पसंद करते थे, इसलिये रसूलुल्लाह(ﷺ) ने(पहले) पेशानी पर बाल लटकाये, फिर बाद में मांग निकालने लगे।

(सहीह बुख़ारी : 3558, 4944, 5917, अबू दाऊद : 4188, नसाई : 5253, इब्ने माजह : 3632)

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ زِيَادٍ، قَالَ مَنْصُورٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ، ابْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِيَانِ ابْنَ سَعْدٍ - عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ، اللَّهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدُلُونَ أَشْعَارَهُمْ وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُءُوسَهُمْ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ بِهِ فَسَدَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَاصِيَتَهُ ثُمَّ فَرَقَ بَعْدُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यस्दुलून : पेशानी पर बाल लटकाते, खुले छोड़ते।**(2) यफ़्रुक़ून :** मांग निकालते।

फ़ायदा : शुरू में रसूलुल्लाह(ﷺ) अहले किताब को मानूस करने के लिये जिन कामों में सरीह हुक्म न आता, वहाँ उनकी मुवाफ़िक़त करते, लेकिन जब उन्होंने हटधर्मी और ज़िद व इनाद के वतीरे पर इसरार किया और अक्सर मुश्रिकीन मुसलमान हो गये तो आप अहले किताब की मुख़ालिफ़त करने लगे।

(6063) यही रिवायत इमाम साहब को एक और उस्ताद ने सुनाई।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

बाब 25 : नबी(ﷺ) की शक्ल व सूरत और आपका चेहरा-मुहरा तमाम इंसानों से ख़ूबसूरत था

باب فِي صِفَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَأَنَّهُ كَانَ أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا

(6064) हज़रत बराअ(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) दरम्याने क़द के आदमी थे, आपके दोनों शानों(कन्धों) का दरम्यानी फ़ासला काफ़ी था, आपके जुम्मा बाल घने थे और कानों की लौ तक पहुचते थे, आप पर सुर्ख़ जोड़ा था, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से कभी कोई चीज़ हसीन नहीं देखा।

(सहीह बुख़ारी : 3551, 5848, अबू दाऊद : 4072, 4184, तिर्मिज़ी : 2811, नसाई : 5247, 5329)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً مَرْبُوعًا بَعِيدَ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ عَظِيمَ الْجُمَّةِ إِلَى شَحْمَةِ أُذُنَيْهِ عَلَيْهِ حُلَّةٌ حَمْرَاءُ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ صلى الله عليه وسلم .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) रजुलुन : मर्द, आदमी।**(2) रजिलुन :** कंघी किये हुए बाल।**(3) मरबूअ :** मुतवस्सित व मोअ्तदिल, दरम्याना क़द।**(4) बुईदुम् मा बैना मन्किबैन :** चौड़े चक्ले सीने वाले।**(5) जुम्मतुन :** कानों की लौ तक पहुँचने वाले बाल, जो कंघी करने की सूरत में कंधों तक पहुँच जाते हैं और बक़ौल कुछ वफ़रह : कानों की लौ तक।**(6) जुम्मतुन :** कानों की लौ से नीचे कन्धों से गिरने वाले**(7) लिम्मतुन :** कन्धों पर पड़ने वाले।

(6065) हज़रत बराअ(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने किसी कन्धों पर गिरने वाले बालों वाली शख़्सियत को सुर्ख़ जोड़े में रसूलुल्लाह(ﷺ) से हसीन नहीं देखा, आपके बाल कन्धों पर पड़ते थे और दोनों शानों का फ़ासला ज़्यादा था, न क़द लम्बा था और न पस्ता। अबू कुरैब ने शअ़रुन की जगह लहू शअ़र कहा है।

(अबू दाऊद : 4183, तिर्मिज़ी : 1724, 3635, 2811, नसाई : 5248)

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ مَا رَأَيْتُ مِنْ ذِي لِمَّةٍ أَحْسَنَ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَعْرُهُ يَضْرِبُ مَنْكِبَيْهِ بَعِيدَ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ . قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ لَهُ شَعَرٌ .

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है सुर्ख़ जोड़ा पहनना जाइज़ है। शवाफ़ेअ, मवालिक और मुहक्क़िक़ हन्फ़िया का यही नज़रिया है और बक़ौल अल्लामा ज़फ़र अहमद थानवी, इमाम अबू हनीफ़ा का क़ौल यही है।(तक्मिला, जिल्द 4, पेज नं. 554)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ، يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا وَأَحْسَنَهُمْ خَلْقًا لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الذَّاهِبِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ .

(6066) हज़रत बराअ(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का चेहरा-मुहरा सब इंसानों से हसीन था और आपका ख़ुलुक़(अख़्लाक़) भी सबसे अच्छा था या बनावट सबसे अच्छी थी, न बहुत लम्बे थे, न छोटे।

(सहीह बुख़ारी : 3549)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ख़ुलुक़ : किरदार, अख़्लाक़।**(2) ख़ल्क़ :** बनावट।

बाब 26 : नबी(ﷺ) के बालों की हालत व कैफ़ियत

باب صِفَةِ شَعْرِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، قَالَ قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ كَيْفَ كَانَ شَعَرُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ كَانَ شَعَرًا رَجِلاً لَيْسَ بِالْجَعْدِ وَلاَ السَّبِطِ بَيْنَ أُذُنَيْهِ وَعَاتِقِهِ .

(6067) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि क़तादा(रह.) ने उनसे पूछा, रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाल कैसे थे? आपके बाल दरम्याने थे, न घुंघरियाले और न बिल्कुल खुले और कानों और आपके कन्धे के दरम्यान पड़ते।

(सहीह बुख़ारी : 5905, 5906, नसाई : 5068, इब्ने माजह : 3634)

मुफ़रदातुल हदीस : जअ्दुन : घुंघरियाले, **सबितुन :** खुले। **रजिल :** कंघी किये हुए।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، قَالاَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَضْرِبُ شَعَرُهُ مَنْكِبَيْهِ .

(6068) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाल आपके कन्धों पर पड़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 5903, 5904, नसाई : 5250)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ شَعَرُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ .

(6069) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाल आपके कानों के आधे हिस्से पर पड़ते थे।

(अबू दाऊद : 4186, नसाई : 5249)

फ़ायदा : बक़ौल मुल्ला अ़ली क़ारी, नबी(ﷺ) ने उ़म्रह और हज के मौक़े पर सर मुण्डाया है, उसके बाद बाल बढ़ने शुरू होते, सर मुण्डवाने के ज़माने के क़रीब, कानों के आधे हिस्से तक पहुँचते, फिर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ते हुए कानों की लौ तक पहुँच जाते, फिर कानों और कन्धों के दरम्यान तक पहुँच जाते, फिर कन्धों पर पड़ने लगते, फिर बक़ौल कुछ बाल तरशवा लेते तो कानों के निस्फ़ तक होते और फिर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ते रहते, इस तरह अलग-अलग औक़ात में अलग-अलग कैफ़ियत होती थी।

باب فِي صِفَةِ فَمِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَعَيْنَيْهِ وَعَقِبَيْهِ

बाब 27 : नबी(ﷺ) के मुँह, आँखों और ऐड़ियों की कैफ़ियत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ضَلِيعَ الْفَمِ أَشْكَلَ الْعَيْنِ مَنْهُوسَ الْعَقِبَيْنِ . قَالَ قُلْتُ لِسِمَاكٍ مَا ضَلِيعُ الْفَمِ قَالَ عَظِيمُ الْفَمِ . قَالَ قُلْتُ مَا أَشْكَلُ الْعَيْنِ قَالَ طَوِيلُ شَقِّ الْعَيْنِ . قَالَ قُلْتُ مَا مَنْهُوسُ الْعَقِبِ قَالَ قَلِيلُ لَحْمِ الْعَقِبِ .

(6070) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का दहन फ़राख़ और कुशादा था, आँखें सुर्ख़ व सफेद थीं, ऐड़ियों पर गोश्त कम था। शोबा कहते हैं, मैंने सिमाक से पूछा, ज़लीउ़ल फ़म का क्या मानी है? उसने कहा, बड़े दहन वाला। मैंने कहा, अश्कलुल ऐन का क्या मफ़्हूम है? उसने कहा, आँखों के बड़े शिगाफ़ वाला। मैंने पूछा, मन्हूसुल अ़क़िबि का क्या मतलब है? जवाब दिया, ऐड़ियों पर कम गोश्त वाला।

(तिर्मिज़ी : 3646, 3647)

नोट : इमाम सिमाक ने अश्कलुल ऐन की तफ़्सीर दुरुस्त नहीं की, उ़लमा के नज़दीक बिल्इत्तिफ़ाक़ शकुलह आँखों की सफ़ेदी के अंदर सुर्ख़ी को कहते हैं, जो महमूद(क़ाबिले तारीफ़) वस्फ़ है।

باب كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَبْيَضَ مَلِيحَ الْوَجْهِ

बाब 28 : रसूलुल्लाह(ﷺ) सफ़ेद और हसीन चेहरे के मालिक थे

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، قَالَ قُلْتُ لَهُ أَرَأَيْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ كَانَ أَبْيَضَ مَلِيحَ الْوَجْهِ . قَالَ مُسْلِمُ بْنُ الْحَجَّاجِ مَاتَ أَبُو الطُّفَيْلِ سَنَةَ مِائَةٍ وَكَانَ آخِرَ مَنْ مَاتَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(6071) जुरैरी(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अबू तुफ़ैल(रज़ि.) से पूछा, क्या आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा है? उन्होंने कहा, हाँ! आपका रंग सफ़ेद था। चेहरा मलीह यानी हसीन था। इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज(रह.) कहते हैं, हज़रत अबू तुफ़ैल(रज़ि.) 100 हिजरी में फ़ौत हुए और आप रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों में सबसे आख़िर में मरने वाले हैं।
(अबू दाऊद : 4864)

फ़ायदा : हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासिला(रज़ि.) सबसे आख़िर में मरने वाले सहाबी हैं, लेकिन सिन्ने वफ़ात में इख़्तिलाफ़ है। 102 हिजरी, 107 हिजरी, 110 हिजरी अलग-अलग अक़्वाल हैं। लेकिन आपका दस हिजरी में फ़रमाना कि आज से सौ साल बाद कोई इस वक़्त के मौजूद लोगों में से ज़िन्दा नहीं रहेगा का तक़ाज़ा कि आख़िरी क़ौल सहीह है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَا عَلَى وَجْهِ الأَرْضِ رَجُلٌ رَآهُ غَيْرِي . قَالَ فَقُلْتُ لَهُ فَكَيْفَ رَأَيْتَهُ قَالَ كَانَ أَبْيَضَ مَلِيحًا مُقَصَّدًا .

(6072) हज़रत अबू तुफ़ैल(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा है और अब मेरे सिवा रूए ज़मीन पर आपको देखने वाला कोई शख़्स नहीं है। जुरैरी कहते हैं, मैंने उनसे पूछा, तो आप को कैसे(किस हालत में) देखा? उन्होंने कहा, आप सफ़ेद रंग, हसीन दरम्याना क़द थे।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) मलीह : हसीन, ख़ूबसूरत, नमकीनी रंग।**(2) मुक़स्सद :** मोअ्तदिल, न दराज़ और न पस्ता, न मोटे और न नहीफ़ व नज़ार।

बाब 29 : नबी(ﷺ) का बुढ़ापा

باب شَيْبِهِ صلى الله عليه وسلم

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ إِدْرِيسَ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ الأَوْدِيُّ، - عَنْ هِشَامٍ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، قَالَ سُئِلَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ هَلْ خَضَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ إِنَّهُ لَمْ يَكُنْ رَأَى مِنَ الشَّيْبِ إِلاَّ - قَالَ ابْنُ إِدْرِيسَ كَأَنَّهُ يُقَلِّلُهُ - وَقَدْ خَضَبَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ .

(6073) इब्ने सीरीन(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अनस(रज़ि.) से पूछा गया, क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़िज़ाब लगाया था(बाल रंगे थे)? उन्होंने जवाब दिया, आपने बहुत कम सफ़ेद बाल देखे थे या आपने बहुत कम बुढ़ापा देखा था, अबू बकर और उमर(रज़ि.) ने मेहन्दी और वस्मा का ख़िज़ाब लगाया।
(सहीह बुख़ारी : 5884)

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) के बहुत कम बाल सफ़ेद हुए थे, इसलिये आपको बाल रंगने की ज़रूरत न थी। लेकिन चूंकि चंद बाल सफ़ेद हो गये थे, इसलिये कई बार आपने उनको रंगा है। हज़रत अनस(रज़ि.) ने उमूमी सूरत बयान की है और कुछ सहाबा ने मुशाहिदे के मुताबिक़, कई बार रंगे हुए बालों का तज़्किरा भी किया है। जैसाकि हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) की मुत्तफ़क़ अलैह रिवायत है कि मैंने आपको ज़र्द रंग करते देखा और हज़रत उम्मे सलमा(रज़ि.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन वहब को नबी(ﷺ) के सुर्ख़ बाल दिखाये थे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارِ بْنِ الرَّيَّانِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، قَالَ سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ هَلْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَضَبَ فَقَالَ لَمْ يَبْلُغِ الْخِضَابَ كَانَ فِي لِحْيَتِهِ شَعَرَاتٌ بِيضٌ . قَالَ قُلْتُ لَهُ أَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَخْضِبُ قَالَ فَقَالَ نَعَمْ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ .

(6074) इब्ने सीरीन(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से सवाल किया, क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़िज़ाब लगाया था? उन्होंने कहा, आपके बाल रंगने की हद को नहीं पहुँचे, आपकी दाढ़ी में चंद सफ़ेद बाल थे। मैंने उनसे पूछा, क्या अबू बकर(रज़ि.) बाल रंगते थे? उन्होंने कहा, हाँ! मेहन्दी और वस्म से।

फ़ायदा : मेहन्दी और वस्म मिलाकर लगाने से बाल स्याही माइल हो जाते हैं, बिल्कुल स्याह नहीं होते।

(6075) मुहम्मद बिन सीरीन बयान करते हैं, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़िज़ाब इस्तेमाल किया(बाल रंगे)? उन्होंने कहा, आपने बुढ़ापा बहुत कम देखा। आपके बाल बहुत कम सफ़ेद हुए।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ أَخَضَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ إِنَّهُ لَمْ يَرَ مِنَ الشَّيْبِ إِلاَّ قَلِيلاً .

(6076) साबित(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से नबी(ﷺ) के ख़िज़ाब के बारे में पूछा गया, उन्होंने जवाब दिया, अगर मैं उन सफ़ेद बालों को जो आपके सर में थे, गिनना चाहता, गिन लेता और कहा, आपने बालों को रंगा नहीं है और अबू बकर(रज़ि.) ने मेहन्दी और वस्म से बालों को रंगा और हज़रत उमर(रज़ि.) ने ख़ालिस मेहन्दी से रंगा।

(सहीह बुख़ारी : 5895, अबू दाऊद : 4209)

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، قَالَ سُئِلَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ خِضَابِ النَّبِيِّ، صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَوْ شِئْتُ أَنْ أَعُدَّ شَمَطَاتٍ كُنَّ فِي رَأْسِهِ فَعَلْتُ . وَقَالَ لَمْ يَخْتَضِبْ وَقَدِ اخْتَضَبَ أَبُو بَكْرٍ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ وَاخْتَضَبَ عُمَرُ بِالْحِنَّاءِ بَحْتًا .

मुफ़रदातुल हदीस :(1) शमतात : सर की स्याही में सफ़ेदी, मुराद सफ़ेद बाल हैं।**(2) बहतन** : ख़ालिस जिसमें किसी चीज़ की मिलावट न हो।

(6077) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, ये चीज़ नापसन्द की जाती थी कि आदमी अपने सर और अपनी दाढ़ी के सफ़ेद बाल उखाड़े और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बाल नहीं रंगे। आपके सफ़ेद बाल सिर्फ़ आपके दाढ़ी बच्चे(निचले होंट के नीचे का गढ़ा) कनपट्टियों और सर में चंद सफ़ेद बाल थे।

(नसाई : 5102)

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ يُكْرَهُ أَنْ يَنْتِفَ الرَّجُلُ، الشَّعْرَةَ الْبَيْضَاءَ مِنْ رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ - قَالَ -وَلَمْ يَخْتَضِبْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِنَّمَا كَانَ الْبَيَاضُ فِي عَنْفَقَتِهِ وَفِي الصُّدْغَيْنِ وَفِي الرَّأْسِ نَبْذٌ .

(6078) यही रिवायत इमाम साहब के एक और उस्ताद बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

मुफ़रदातुल हदीस :(1) अन्फ़क़ह : निचले होंट, ठोड़ी के दरम्यान का गढ़ा।**(2) सुदुग़ुन :** कनपट्टी।**(3) नब्ज़ुन :** चंद बिखरे हुए।**(4) नबज़ुन :** नुब्ज़तुन की जमा है, चंद एक है।

(6079) हज़रत अनस(रज़ि.) से नबी(ﷺ) के सफ़ेद बालों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, अल्लाह ने आपके बालों को सफ़ेद बालों से ऐबदार नहीं किया था, यानी चंद सफ़ेद बाल महसूस नहीं होते थे।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ وَأَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ جَمِيعًا عَنْ أَبِي دَاوُدَ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُلَيْدِ بْنِ جَعْفَرٍ، سَمِعَ أَبَا إِيَاسٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ شَيْبِ النَّبِيِّ، صلى الله عليه وسلم فَقَالَ مَا شَانَهُ اللَّهُ بِبَيْضَاءَ .

(6080) हज़रत अबू जुहैफ़ा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के इस हिस्से के बाल सफ़ेद देखे और ज़ुहैर ने अपनी कोई उंगली अपने बच्चे(दाढ़ी) पर रखी। उनसे पूछा गया, उन दिनों आप किस जैसे थे? उन्होंने कहा, मैं तीर तराशता था और उनमें पर लगाता था।

(सहीह बुख़ारी : 3545, इब्ने माजह : 3628)

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ، يَحْيَى أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم هَذِهِ مِنْهُ بَيْضَاءَ وَوَضَعَ زُهَيْرٌ بَعْضَ أَصَابِعِهِ عَلَى عَنْفَقَتِهِ قِيلَ لَهُ مِثْلُ مَنْ أَنْتَ يَوْمَئِذٍ قَالَ أَبْرِي النَّبْلَ وَأَرِيشُهَا .

(6081) हज़रत अबू जुहैफ़ा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा, आपका रंग सफ़ेद था, बुढ़ापा शुरू हो गया था, हसन बिन अली(रज़ि.) आपके मुशाबेह थे।

حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

عليه وسلم أَبْيَضَ قَدْ شَابَ كَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ يُشْبِهُهُ .

(सहीह बुख़ारी : 3543, 3544, तिर्मिज़ी : 2827)

وَحَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، وَخَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، بِهَذَا وَلَمْ يَقُولُوا أَبْيَضَ قَدْ شَابَ .

(6082) इमाम साहब अपने दो उस्तादों की सनदों से ये रिवायत बयान करते हैं, लेकिन रंग की सफ़ेदी और बुढ़ापे की शुरूआत का ज़िक्र नहीं है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ، بْنِ حَرْبٍ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، سُئِلَ عَنْ شَيْبِ النَّبِيِّ، صلى الله عليه وسلم فَقَالَ كَانَ إِذَا دَهَنَ رَأْسَهُ لَمْ يُرَ مِنْهُ شَىْءٌ وَإِذَا لَمْ يَدْهُنْ رُئِيَ مِنْهُ .

(6083) सिमाक बिन हर्ब बयान करते हैं, हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) से नबी(ﷺ) के बुढ़ापे के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, जब आप तेल लगा लेते तो कोई सफ़ेद बाल नज़र नहीं आता था और जब तेल न लगाते तो सफ़ेद बाल दिखाई देते।
(नसाई : 5129)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدْ شَمِطَ مُقَدَّمُ رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ وَكَانَ إِذَا ادَّهَنَ لَمْ يَتَبَيَّنْ وَإِذَا شَعِثَ رَأْسُهُ تَبَيَّنَ وَكَانَ كَثِيرَ شَعْرِ اللِّحْيَةِ فَقَالَ رَجُلٌ وَجْهُهُ مِثْلُ السَّيْفِ قَالَ لاَ بَلْ كَانَ مِثْلَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَكَانَ مُسْتَدِيرًا وَرَأَيْتُ الْخَاتَمَ عِنْدَ كَتِفِهِ مِثْلَ بَيْضَةِ الْحَمَامَةِ يُشْبِهُ جَسَدَهُ .

(6084) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के सर और दाढ़ी के अगले बाल सफ़ेद हो गये थे और जब आप तेल लगा लेते तो वो वाज़ेह नहीं होते थे और जब आपका सर परागन्दा होता, नज़र आते और आपकी दाढ़ी के बाल बहुत थे। एक आदमी ने पूछा, आपका चेहरा तलवार जैसा था? यानी लम्बा चमकदार था? कहा, नहीं! बल्कि आफ़ताब व महताब(चाँद-सूरज) जैसा था, गोल था और रोशन था और मैंने आपके कन्धे के पास कबूतरी के अण्डे जैसी मुहर देखी, जो आपके जिस्म के मुशाबेह थी।

फ़ायदा : तलवार लम्बी और तेज़ चमक वाली होती है, जबकि सूरज रोशन, गोल होता है और चाँद हसीन व जमील समझा जाता है।

बाब 30 : नबी(ﷺ) की मुहरे नुबूवत, उसकी सूरत और आपके जिस्म में उसका महल व मौक़ा

باب إِثْبَاتِ خَاتَمِ النُّبُوَّةِ وَصِفَتِهِ وَمَحِلِّهِ مِنْ جَسَدِهِ صلى الله عليه وسلم

(6085) हज़रत जाबिर बिन समुरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) की पुश्त पर मुहर देखी गोया कि वो कबूतरी का अण्डा है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، قَالَ رَأَيْتُ خَاتِمًا فِي ظَهْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كَأَنَّهُ بَيْضَةُ حَمَامٍ .

फ़ायदा : मुहरे नुबूवत, नबी(ﷺ) के बायें कन्धे के क़रीब गोश्त के सुर्ख़ उभरे हुए टुकड़े जैसी थी, जिसको अलग-अलग सहाबा ने तफ़्हीम की ख़ातिर अपने-अपने ख़्याल के मुताबिक़ अलग-अलग चीज़ों से तशबीह दी है, कुछ ने शक्ल व सूरत को सामने रखा, कुछ ने हजम और जसामत को और कुछ ने दोनों को।

(6086) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا حَسَنُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ سِمَاكٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6087) हज़रत साइब बिन यज़ीद(रज़ि.) बयान करते हैं, मेरी ख़ाला मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास ले गई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे भान्जे को तकलीफ़ है। तो आपने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ फ़रमाई। फिर आपने वुज़ू किया तो मैंने आपके वुज़ू का पानी पिया, फिर मैं आपकी पुश्त(पीठ) के पीछे खड़ा हो गया तो मैंने आपके कन्धों के दरम्यान,

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنِ الْجَعْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ، يَقُولُ ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ ‏.‏ فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لِي بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ تَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ ثُمَّ

قُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتِمِهِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ مِثْلَ زِرِّ الْحَجَلَةِ .

आपकी मुहर देखी, जो डोली के बटन जैसी थी या हँस के अण्डे जैसी थी।
(सहीह बुख़ारी : 3540, 5670, 6352, तिर्मिज़ी : 3643)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) हजलह : दुल्हन की डोली या हँस।**(2) ज़िर्र जमा अज़्रार** : घुण्डी, बड़े बटन या अण्डा। अगर रिज़ हो तो फिर मानी अण्डा ही होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، ح وَحَدَّثَنِي حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ - حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَرْجِسَ، قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَأَكَلْتُ مَعَهُ خُبْزًا وَلَحْمًا - أَوْ قَالَ ثَرِيدًا - قَالَ فَقُلْتُ لَهُ أَسْتَغْفَرَ لَكَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ وَلَكَ ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ } وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ{ قَالَ ثُمَّ دُرْتُ خَلْفَهُ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ عِنْدَ نَاغِضِ كَتِفِهِ الْيُسْرَى جُمْعًا عَلَيْهِ خِيلاَنٌ كَأَمْثَالِ الثَّآلِيلِ .

(6088) इमाम अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस(रज़ि.) से बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा और आपके साथ गोश्त रोटी खाई या कहा, स़रीद खाया। तो मैंने अ़ब्दुल्लाह से पूछा, क्या आपके लिये नबी(ﷺ) ने दुआए मग़्फ़िरत की थी? उन्होंने कहा, हाँ! और तेरे लिये भी। फिर ये आयत सुनाई, 'अपने लिये मग़्फ़िरत की दुआ कीजिये और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये।'(सूरह मुहम्मद : 19) उन्होंने बताया, मैं घूम कर आपके पीछे आ गया तो मैंने आपके कन्धों के दरम्यान मुहरे नुबवूत देखी, बायें कन्धे की बारीक हड्डी के पास घटी हुई उस पर तिल थे मस्सों की तरह।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) नाग़िज़ुन : बारीक या कन्धे की हरकत करने वाली हड्डी।**(2) जुम्अन :** बंद उंगलियों की तरह। ख़िअ्लान : ख़ाल की जमा है, तिल।**(3) स़ालील :** सुअ्लूल की जमा है, मस्से।

बाब 31 : नबी(ﷺ) की सिफ़त, आपकी बिअ़्सत(नबी बनना) और आपकी उम्र

باب فِي صِفَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَمَبْعَثِهِ وَسِنِّهِ

(6089) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) न बहुत दराज़ क़द थे और न पस्त क़द और न चूने जैसे सफ़ेद और न बिल्कुल गन्दुमी और न सख़्त घुंघरियाले बाल थे और न बिल्कुल खुले, सीधे। चालीस पूरे होने पर अल्लाह ने आपको मब्ऊ़स फ़रमाया, मक्का में दस साल ठहरे और मदीना में दस साल रहे। अल्लाह ने आपको साठ साल की उम्र में अपने पास बुला लिया और आपके सर और दाढ़ी में बीस(20) बाल भी सफ़ेद न थे।

(सहीह बुख़ारी : 3547, 3548, 5900, तिर्मिज़ी : 3623)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ وَلَيْسَ بِالأَبْيَضِ الأَمْهَقِ وَلاَ بِالآدَمِ وَلاَ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ وَلاَ بِالسَّبِطِ بَعَثَهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ وَتَوَفَّاهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ سِتِّينَ سَنَةً وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) बाइन : लम्बा, तड़ंग, बहुत दराज़ क़द।**(2) अल्अम्हक़ :** चूने की तरह चिट्टा।**(3) आदम :** बिल्कुल गन्दुमी, स्याही माइल। क्योंकि आपका रंग सफ़ेद सुर्ख़ी माइल था, जिसको अस्मर या अज़्हर कह देते हैं।

फ़ायदा : आप रबीउ़ल अव्वल में पैदा हुए और इस माह में सच्चे ख़्वाबों की शुरूआत हुई, अगरचे वह्य का नुज़ूल रमज़ान में शुरू हुआ। अगर बिअ़्सत की शुरूआत रमज़ान से की जाये तो उम्र साढ़े उन्तालीस 39½ या साढ़े चालीस 40½ साल बनेगी। आधे साल को नज़र अन्दाज़ करने पर चालीस होगी। मक्का में वह्य की आमद की मुद्दत दस साल है। हज़रत अनस(रज़ि.) ने उसको शुमार किया या तीन साल की कसर को नज़र अन्दाज़ कर दिया। जिस तरह कुछ ने इसको पूरा करके आपकी उम्र को 65 पेंसठ साल बना दिया। हज़रत अनस(रज़ि.) आगे ख़ुद आपकी वफ़ात त्रेसठ 63 साल की उम्र में बताते हैं, जिससे मालूम होता है इस हदीस़ में उन्होंने कसर के तीन साल नज़र अन्दाज़ कर दिये हैं या फ़तरतिल वह्य तीन साल के अ़रसे को निकाल दिया।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ ح وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ، بِلاَلٍ كِلاَهُمَا عَنْ رَبِيعَةَ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ وَزَادَ فِي حَدِيثِهِمَا كَانَ أَزْهَرَ .

(6090) इमाम साहब यही रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं और इसमें ये इज़ाफ़ा करते हैं कि आपका रंग अज़्हर सुर्ख़ी माइल सफ़ेद था।

باب كَمْ سِنُّ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ قُبِضَ

बाब 32 : वफ़ात के वक़्त नबी(ﷺ) की उम्र कितनी थी?

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الرَّازِيُّ، مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا حَكَّامُ بْنُ سَلْمٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، بْنُ زَائِدَةَ عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَأَبُو بَكْرٍ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَعُمَرُ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ .

(6091) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की रूह त्रेसठ(63) बरस की उम्र में क़ब्ज़ की गई। अबू बकर(रज़ि.) भी त्रेसठ(63) बरस की उम्र में फ़ौत हुए और उमर(रज़ि.) की वफ़ात भी त्रेसठ(63) साल की उम्र में हुई।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلُ، بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ سَنَةً . وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ بِمِثْلِ ذَلِكَ

(6092) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात त्रेसठ साल की उम्र में हुई, इब्ने शिहाब कहते हैं, सईद बिन मुसय्यब ने भी मुझे यही बताया।
(सहीह बुख़ारी : 3536, 4466)

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَبَّادُ بْنُ مُوسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا مِثْلَ حَدِيثِ عُقَيْلٍ .

(6093) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।

باب كَمْ أَقَامَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم بِمَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ

बाब 33 : नबी(ﷺ) मक्का और मदीना में कितना अ़रसा ठहरे

حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْهُذَلِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، قَالَ قُلْتُ لِعُرْوَةَ كَمْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَكَّةَ قَالَ عَشْرًا . قَالَ قُلْتُ فَإِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ ثَلاَثَ عَشْرَةَ .

(6094) अ़म्र(रह.) कहते हैं, मैंने उ़र्वा से पूछा, नबी(ﷺ) मक्का में कितना अ़रसा रहे? उसने कहा, दस साल। मैंने कहा, इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) तो तेरह(13) साल कहते हैं।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، قَالَ قُلْتُ لِعُرْوَةَ كَمْ لَبِثَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم بِمَكَّةَ قَالَ عَشْرًا . قُلْتُ فَإِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ بِضْعَ عَشْرَةَ . قَالَ فَغَفَّرَهُ وَقَالَ إِنَّمَا أَخَذَهُ مِنْ قَوْلِ الشَّاعِرِ .

(6095) अ़म्र कहते हैं, मैंने उ़र्वा से पूछा, नबी(ﷺ) ने मक्का में कितना अ़रसा क़ियाम किया? उसने कहा, दस साल। मैंने कहा, इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) तो दस साल से ज़्यादा बताते हैं। उ़र्वा ने कहा, अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाये, उन्होंने ये बात शाइर के क़ौल से अख़ज़ की है।

फ़ायदा : हज़रत उ़र्वा का इशारा अबू क़ैस सिर्मा बिन अबी अनस के इस शेअ़र की तरफ़ है,
सवा फ़ी क़ुरैशिन बिज़्अ अ़शरह हज्जतुन, युज़क्किरु लौ यल्क़ा ख़लीला मुवातिया 'वो क़ुरैश में दस साल से कुछ ज़्यादा साल रहे, इस ख़्याल से वअ़ज़ व तज़्कीर करते रहे कि कोई दोस्त मिल जाये, जो हमनवाई करे।'

लेकिन सहीह क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) का है, हज़रत उ़र्वा ने अपने ख़्याल के मुताबिक़ इसको दुरुस्त नहीं समझा, इसलिये उनके हक़ में मग़्फ़िरत की दुआ की।

(6096) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मक्का में तेरह(13) बरस रहे और वफ़ात के वक़्त आपकी उम्र त्रेसठ(63) साल थी।
(सहीह बुख़ारी : 3903, तिर्मिज़ी : 3652)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ رَوْحِ بْنِ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ .

(6097) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का मक्का में क़ियाम तेरह(13) साल रहा, आपकी तरफ़ वह्य आती रही और मदीना में दस साल रहे और आपकी वफ़ात त्रेसठ(63) साल की उम्र में हुई।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ أَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ سَنَةً .

(6098) अबू इस्हाक़(रह.) बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन उतबा के पास बैठा हुआ था कि हाज़िरीन ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की उम्र का ज़िक्र छेड़ दिया तो कुछ लोगों ने कहा, अबू बकर(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से उम्र में बड़े थे। अब्दुल्लाह(रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) वफ़ात के वक़्त त्रेसठ(63) बरस के थे और अबू बकर भी त्रेसठ(63) बरस की उम्र में फ़ौत हुए और उमर(रज़ि.) की शहादत भी त्रेसठ(63) बरस की उम्र में हुई। लोगों में से एक आदमी जिसे आमिर बिन सअद कहा जाता था, ने कहा, हमें जरीर ने बताया, हम हज़रत मुआविया(रज़ि.) के पास बैठे हुए थे तो हाज़िरीन ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की उम्र का ज़िक्र शुरू कर

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ أَبَانَ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا سَلاَّمٌ أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ فَذَكَرُوا سِنِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ كَانَ أَبُو بَكْرٍ أَكْبَرَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَمَاتَ أَبُو بَكْرٍ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَقُتِلَ عُمَرُ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ . قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ يُقَالُ لَهُ عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ قَالَ كُنَّا قُعُودًا عِنْدَ

مُعَاوِيَةَ فَذَكَرُوا سِنِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ مُعَاوِيَةُ قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ سَنَةً وَمَاتَ أَبُو بَكْرٍ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَقُتِلَ عُمَرُ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ .

दिया तो हज़रत मुआविया(रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) की रूह त्रेसठ(63) बरस की उम्र में क़ब्ज़ की गई और अबू बकर त्रेसठ(63) बरस की उम्र में फ़ौत हुए और हज़रत उमर(रज़ि.) की शहादत त्रेसठ(63) बरस की उम्र में हुई।
(तिर्मिज़ी : 3653)

وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ، جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، يُحَدِّثُ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ الْبَجَلِيِّ، عَنْ جَرِيرٍ، أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ، يَخْطُبُ فَقَالَ مَاتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَأَنَا ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ .

(6099) जरीर से रिवायत है कि उसने हज़रत मुआविया(रज़ि.) से ख़ुत्बा देते हुए ये सुना, रसूलुल्लाह(ﷺ) त्रेसठ(63) बरस की उम्र में फ़ौत हुए और अबू बकर व उमर(रज़ि.) भी और मैं भी त्रेसठ(63) बरस का हूँ(मौत का ख़्वाहाँ हूँ)।

फ़ायदा : हज़रत मुआविया(रज़ि.) की ख़्वाहिश थी कि उनकी वफ़ात भी, रसूलुल्लाह(ﷺ) और शैख़ैन की उम्र में हो, लेकिन उनकी ये आरज़ू पूरी न हो सकी, वो अठत्तर(78) साल से ज़्यादा उम्र पा कर फ़ौत हुए।

हुज़ूर(ﷺ) आमुल फ़ील को सोमवार के दिन, सुबह के वक़्त पैदा हुए और इल्मे हैयत व रियाज़ी के माहिर, फ़ल्कियात के आलिम महमूद पाशा की तहक़ीक़ के मुताबिक़ ये नौ(9) रबीउ़ल अव्वल का वाक़िया है अप्रैल की 20 या 21 तारीख़ 571 ईस्वी थी और वफ़ात तक़रीबन दिन के बारह बजे, सोमवार ही के दिन 11 हिजरी में हुई। मशहूर व मअरूफ़ क़ौल के मुताबिक़ उस वक़्त 12 रबीउ़ल अव्वल 632 ईस्वी था। लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) के क़ौल के मुताबिक़ 2 रबीउ़ल अव्वल था। अल्लामा सुयूती(रह.) और अल्लामा शिबली ने भी यकम(एक) या दो ही को तरजीह दी है और सहीह क़ौल यही है। हज़रत अबू बकर बरोज़ मंगल 17 जमादिल अव्वल 13 हिजरी को मग़्रिब और इशा के दरम्यान फ़ौत हुए। उनकी ख़िलामत की मुद्दत 2 साल, 3 माह, 8 दिन है और हज़रत उमर(रज़ि.) पर बरोज़ बुध 26 ज़िल्हिज्जा 23 हिजरी को क़ातिलाना हमला हुआ और हफ़्ते के दिन एक मुहर्रम को सुपुर्दे ख़ाक किये गये। मुद्दते ख़िलाफ़त दस साल, छः माह और चार दिन है।

(6100) बनू हाशिम के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम अ़म्मार कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) से पूछा, वफ़ात के वक़्त रसूलुल्लाह(ﷺ) की उम्र कितनी थी तो उन्होंने कहा, मेरा गुमान नहीं था कि तेरे जैसे आपकी क़ौम के फ़र्द से ये बात मख़्फ़ी रह सकती है। मैंने कहा, मैंने लोगों से पूछा, उन्होंने मुझे अलग-अलग जवाब दिये। तो मैंने इस बारे में आपका क़ौल जानना पसंद किया। उन्होंने कहा, हिसाब जानते हो? मैंने कहा, हाँ! उन्होंने कहा, याद रखो! चालीस साल की उम्र में आप मब्ऊस हुए, पन्द्रह साल अमन और ख़ौफ़ की हालत में मक्का में रहे और दस साल हिज्रत के बाद मदीना में रहे।
(तिर्मिज़ी : 3650)

وَحَدَّثَنِي ابْنُ مِنْهَالٍ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ عَمَّارٍ، مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ قَالَ سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ كَمْ أَتَى لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ مَاتَ فَقَالَ مَا كُنْتُ أَحْسِبُ مِثْلَكَ مِنْ قَوْمِهِ يَخْفَى عَلَيْهِ ذَاكَ - قَالَ - قُلْتُ إِنِّي قَدْ سَأَلْتُ النَّاسَ فَاخْتَلَفُوا عَلَىَّ فَأَحْبَبْتُ أَنْ أَعْلَمَ قَوْلَكَ فِيهِ . قَالَ أَتَحْسُبُ قَالَ قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ أَمْسِكْ أَرْبَعِينَ بُعِثَ لَهَا خَمْسَ عَشْرَةَ بِمَكَّةَ يَأْمَنُ وَيَخَافُ وَعَشْرَ مِنْ مُهَاجَرِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ .

फ़ायदा : तेरह(13) की कसर को पूरा करते हुए पन्द्रह कहा गया है और इसके मुताबिक़ वफ़ात के वक़्त आपकी उम्र 65 बरस शुमार की है।

(6101) यही रिवायत इमाम साहब के एक और उस्ताद बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يُونُسَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ يَزِيدَ بْنِ زُرَيْعٍ .

(6102) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात पेंसठ(65) बरस की उम्र में हुई।

وَحَدَّثَنِي نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُفَضَّلٍ - حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، حَدَّثَنَا عَمَّارٌ، مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ وَسِتِّينَ .

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ خَالِدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6103) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَمَّارِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ أَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمَكَّةَ خَمْسَ عَشْرَةَ سَنَةً يَسْمَعُ الصَّوْتَ وَيَرَى الضَّوْءَ سَبْعَ سِنِينَ وَلاَ يَرَى شَيْئًا وَثَمَانَ سِنِينَ يُوحَى إِلَيْهِ وَأَقَامَ بِالْمَدِينَةِ عَشْرًا .

(6104) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) मक्का में पन्द्रह साल क़ियाम पज़ीर रहे, सात साल तक आवाज़ सुनते रहे और रोशनी देखते रहे, कोई शक्ल न देखते थे, आठ साल वह्य आती रही और दस साल मदीना में रहे।

फ़ायदा : सात साल आप हातिफ़ की आवाज़ सुनते रहे, फ़रिश्तों का नूर और अल्लाह तआला की निशानियों का नूर देखते रहे, फिर फ़रिश्ता सामने आया और वह्य का नुज़ूल शुरू हुआ।(नववी)

बाब 34 : रसूलुल्लाह(ﷺ) के अस्मा(नाम)

باب فِي أَسْمَائِهِ ﷺ

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ -قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، سَمِعَ مُحَمَّدَ، بْنَ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَنَا أَحْمَدُ وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يُمْحَى بِيَ الْكُفْرُ وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى عَقِبِي وَأَنَا الْعَاقِبُ " . وَالْعَاقِبُ الَّذِي لَيْسَ بَعْدَهُ نَبِيٌّ .

(6105) हज़रत जुबैर बिन मुत्इम(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही हूँ, मेरे ज़रिये कुफ़्र मह्व किया जायेगा(मिटाया जायेगा), मैं हाशिर हूँ, लोग मेरे पीछे-पीछे जमा किये जायेंगे, मैं आक़िब हूँ, जिसके बाद कोई नबी नहीं है।'

(सहीह बुख़ारी : 3532, 4896, तिर्मिज़ी : 2840)

फ़ायदा : मुहम्मद : कामिल ख़िसाले महमूदा का मालिक, जिसकी बार-बार तारीफ़ की जाये।
अहमद : सबसे ज़्यादा तारीफ़ करने वाला, इन दोनों चीज़ों में आपका कोई सानी नहीं है। जिसकी तारीफ़ ख़ुद अल्लाह तआला फ़रमाये, उसके मुहम्मद होने में क्या शुब्हा और जिसको हम्द ख़ुद अल्लाह तआला सिखाये, उसके हम्द होने में क्या शक।
माही : मिटाने वाला, जिसके ज़रिये कुफ़्र के दलाइल व बराहीन का क़लाक़मा(नेस्तो-नाबूद) कर दिया गया, दलील व बराहीन की रू से वो मिट गया।
हाशिर : इकट्ठा करने वाला, जिसके पीछे-पीछे लोग मैदाने महशर में जमा किये जायेंगे, गोया आपकी नुबूवत व शरीअत आख़िरी है, क़यामत और आपके दरम्यान कोई और नुबूवत व शरीअत नहीं होगी।
आक़िब : पीछे आने वाला, क्योंकि आप तमाम अम्बिया के बाद आये हैं।
पहली किताबों में आपका नाम अहमद था और क़ुरआन में मुहम्मद है।

(6106) हज़रत जुबैर बिन मुत्इम(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे कुछ नाम हैं, मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही हूँ, अल्लाह तआला मेरे ज़रिये कुफ़्र को महव करेगा(मिटायेगा) और मैं हाशिर हूँ, मेरे क़दमों पर लोगों का हश्र होगा और मैं आक़िब हूँ, जिसके बाद कोई(नबी) नहीं है।' और अल्लाह ने आपका नाम रऊफ़, रहीम भी रखा है।'

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ لِي أَسْمَاءً أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَنَا أَحْمَدُ وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللَّهُ بِيَ الْكُفْرَ وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمَىَّ وَأَنَا الْعَاقِبُ الَّذِي لَيْسَ بَعْدَهُ أَحَدٌ". وَقَدْ سَمَّاهُ اللَّهُ رَءُوفًا رَحِيمًا .

(6107) इमाम साहब यही रिवायत अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, उक़ैल की हदीस में सुफ़ियान कहते हैं, मैंने ज़ुहरी से पूछा, आक़िब से क्या मुराद है? उसने कहा, जिसके बाद कोई नबी नहीं है और मअमर व उक़ैल की हदीस में कुफ़्र की जगह कफ़रह(काफ़िर की जमा) है और शुऐब की हदीस में कुफ़्र है।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

وَفِي حَدِيثِ شُعَيْبٍ وَمَعْمَرٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَفِي حَدِيثِ عُقَيْلٍ قَالَ قُلْتُ لِلزُّهْرِيِّ وَمَا الْعَاقِبُ قَالَ الَّذِي لَيْسَ بَعْدَهُ نَبِيٌّ . وَفِي حَدِيثِ مَعْمَرٍ وَعُقَيْلٍ الْكَفَرَةَ . وَفِي حَدِيثِ شُعَيْبٍ الْكُفْرَ .

(6108) हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) हमें अपने कुछ नाम बताते थे, आपने फ़रमाया, 'मैं मुहम्मद हूँ, अहमद हूँ, मुक़फ़्फ़ी हूँ, मैं हाशिर हूँ, नबीउत्तौबा हूँ, नबी-ए-रहमत हूँ।'

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَمْرِو، بْنِ مُرَّةَ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُسَمِّي لَنَا نَفْسَهُ أَسْمَاءً فَقَالَ " أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَحْمَدُ وَالْمُقَفِّي وَالْحَاشِرُ وَنَبِيُّ التَّوْبَةِ وَنَبِيُّ الرَّحْمَةِ "

फ़ायदा : मुक़फ़्फ़ी का मानी आ़क़िब है, सबके अ़क़ब में आने वाला या पहले अम्बिया की राह पर चलने वाला।

नबी-ए-तौबा : जो तौबा की तल्क़ीन करता है, जिसकी पैरवी पर तौबा क़ुबूल होती है और रहमतें बरसती हैं, जो आपस में रहमत व शफ़क़त पर ज़ोर देता है और रहमत की तल्क़ीन करता है।

कुछ लोगों ने आपके नाम 99 बयान किये हैं, कुछ ने तीन सौ(300) से ज़्यादा और इमाम इब्नुल अ़रबी मालिकी ने शरह तिर्मिज़ी में एक हज़ार होने का दावा किया है, मगर उनमें से अक्सर नाम उन लोगों ने ख़ुद ही बनाये हैं। बल्कि कुछ अस्मा-ए-इलाही को नबी(ﷺ) के नाम भी क़रार दिये हैं। जैसे अल्अव्वल अल्आख़िर अल्बातिन हालांकि ये सिफ़ात सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की हैं।

बाब 35 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का अल्लाह तआला के बारे में इल्म और ख़ौफ़ व ख़शियत की ज़्यादती

باب عِلْمِهِ صلى الله عليه وسلم بِاللَّهِ تَعَالَى وَشِدَّةِ خَشْيَتِهِ

(6109) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कोई काम किया और उसके करने की इजाज़त दी, आपके कुछ साथियों तक ये बात पहुँची तो गोया कि उन्होंने उस काम को नापसंद किया और उससे एहतिराज़(परहेज़) किया। सो आप तक ये मामला पहुँचा, आप ख़ुत्बे के लिये खड़े हुए और फ़रमाया, 'इन लोगों को क्या हो गया है, इन्हें मेरी तरफ़ से एक काम की ख़बर पहुँची, मैंने उसकी रुख़सत दी, इन्होंने उसको नापसंद किया और उससे परहेज़ किया। सो अल्लाह की क़सम! मैं सबसे अल्लाह के बारे में ज़्यादा इल्म रखता हूँ और इन सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ खाता हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 6101, 7301)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَمْرًا فَتَرَخَّصَ فِيهِ فَبَلَغَ ذَلِكَ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فَكَأَنَّهُمْ كَرِهُوهُ وَتَنَزَّهُوا عَنْهُ فَبَلَغَهُ ذَلِكَ فَقَامَ خَطِيبًا فَقَالَ " مَا بَالُ رِجَالٍ بَلَغَهُمْ عَنِّي أَمْرٌ تَرَخَّصْتُ فِيهِ فَكَرِهُوهُ وَتَنَزَّهُوا عَنْهُ فَوَاللَّهِ لأَنَا أَعْلَمُهُمْ بِاللَّهِ وَأَشَدُّهُمْ لَهُ خَشْيَةً " .

(6110) इमाम साहब तीन उस्तादों की दो सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ نَحْوَ حَدِيثِهِ .

(6111) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक काम की

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ

عَائِشَةَ، قَالَتْ رَخَّصَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي أَمْرٍ فَتَنَزَّهَ عَنْهُ نَاسٌ مِنَ النَّاسِ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَغَضِبَ حَتَّى بَانَ الْغَضَبُ فِي وَجْهِهِ ثُمَّ قَالَ "مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَرْغَبُونَ عَمَّا رُخِّصَ لِي فِيهِ فَوَاللَّهِ لأَنَا أَعْلَمُهُمْ بِاللَّهِ وَأَشَدُّهُمْ لَهُ خَشْيَةً".

रुख़सत दी तो कुछ लोगों ने उससे परहेज़ किया, नबी(ﷺ) तक ये बात पहुँची तो आप नाराज़ हुए यहाँ तक कि नाराज़ी का चेहरे से इज़हार हुआ, फिर आपने फ़रमाया, 'उन लोगों का क्या हाल है, उस काम से बेरग़बती बरतते हैं, जिसकी मुझे रुख़सत दी गई है, सो अल्लाह की क़सम! मैं उनसे अल्लाह के बारे में ज़्यादा इल्म रखता हूँ और उनसे उससे ज़्यादा डरता हूँ।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, अगर कोई इंसान या कुछ लोग ग़लत काम करें तो लोगों के सामने उनकी तअ़्यीन करना, उनका नाम लेना, बिला ज़रूरत, दुरुस्त नहीं है और आप इल्म और अ़मल दोनों में आख़िरी मर्तबे पर फ़ाइज़ थे, ये दोनों कुव्वतें आपमें कमाल दर्जे की पाई जाती थीं और इससे ये भी मालूम होता है, रुख़सतों को छोड़कर मशक़्क़त वाला काम करना पसन्दीदा नहीं है, क्योंकि उस पर दवाम व इस्तिम्रार मुश्किल है और आसान व सहल काम पर दवाम व हमेशगी मुम्किन है, नीज़ इंसान के मक़ामे अ़ब्दियत के लिये रुख़सत पर अ़मल करना ज़्यादा मुनासिब है। क्योंकि मशक़्क़त व अ़ज़्मियत वाला काम दिलेरी और जसारत पर दलालत करता है, जिसके बाइस़ अजब और ख़ुद पसन्दी के पैदा होने का ख़तरा है और ये तवाज़ोअ़ और फ़रौतनी के मुनाफ़ी(ख़िलाफ़) है।

باب وُجُوبِ اتِّبَاعِهِ صلى الله عليه وسلم

बाब 36 : रसूलुल्लाह(ﷺ) की इत्तिबाअ़(पैरवी) ज़रूरी है

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ خَاصَمَ الزُّبَيْرَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي شِرَاجِ الْحَرَّةِ الَّتِي يَسْقُونَ

(6112) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) बयान करते हैं कि एक अन्सारी आदमी का हर्रह की नालियों के बारे में जिनसे वो नख़िलस्तान को पानी पिलाते, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास हज़रत ज़ुबैर से झगड़ा हुआ। अन्सारी ने कहा, पानी को छोड़िये, वो बहता रहे। हज़रत ज़ुबैर ने इंकार किया, रसूलुल्लाह(ﷺ) के सामने झगड़ा पेश हुआ तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ ज़ुबैर! बक़द्रे

بِهَا النَّخْلَ فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ سَرِّحِ الْمَاءَ . يَمُرُّ فَأَبَى عَلَيْهِمْ فَاخْتَصَمُوا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِلزُّبَيْرِ " اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ " . فَغَضِبَ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ فَتَلَوَّنَ وَجْهُ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ قَالَ " يَا زُبَيْرُ اسْقِ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ " . فَقَالَ الزُّبَيْرُ وَاللَّهِ إِنِّي لأَحْسِبُ هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ {فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لاَ يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا}

ज़रूरत ज़मीन को सैराब कर लो और फिर पड़ौसी के लिये पानी छोड़ दो।' अन्सारी गुस्से में आ गया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! ये फ़ैसला इसलिये हुआ कि ये आपका फूफीज़ाद है! अल्लाह के नबी(ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, फिर आपने फ़रमाया, 'ऐ ज़ुबैर! ज़मीन को पानी पिलाओ, फिर पानी रोक यहाँ तक कि वो मुण्डेर(रोक) तक पहुँच जाये।' हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! मेरे ख़्याल में यह आयत इसी सिलसिले में उतरी है, 'बात वो नहीं जो ये समझते हैं, तेरे रब की क़सम! ये लोग उस वक़्त(तक) मोमिन नहीं हो सकते, जब तक अपने इख़्तिलाफ़ात में आपको हकम(जज) तस्लीम न करें, फिर आपके फ़ैसले के बारे में अपने दिलों में किसी क़िस्म की तंगी महसूस न करें।'(सूरह निसा : 75)

(सहीह बुख़ारी : 2359, 2360, अबू दाऊद : 3637, तिर्मिज़ी : 1363, 3027, नसाई : 5431, इब्ने माजह : 5275)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) शिराज : शर्ज की जमा है, नाली।**(2) सर्रिहल माअ :** पानी छोड़ दीजिये, उसे रोकिये नहीं।

फ़ायदा : हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) की ज़मीन पहले वाक़ेअ थी और उस अन्सारी सहाबी की ज़मीन उनके बाद थी, इसलिये पहले हक़ हज़रत ज़ुबैर का था, जब हज़रत ज़ुबैर ने कुछ पानी लगा लिया तो अन्सारी ने कहा, पानी मेरे तरफ़ आने दीजिये, हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) ने कहा, मेरी ज़रूरत पूरी नहीं हुई। इसलिये मैं अभी नहीं छोड़ूँगा। झगड़ा रसूलुल्लाह(ﷺ) के सामने पेश हुआ तो आपने ज़ुबैर के हक़ की बिना पर उन्हें कहा, बक़द्रे किफ़ायत पानी लगा लो, रुकावटों तक पानी न पहुँचाओ, फिर अपने पड़ौसी के लिये पानी छोड़ दो, इस तरह आपने सुलहजोई के लिये ये मशवरा दिया। ये उसूली फ़ैसला न था, लेकिन अन्सारी चाहता था, उसकी रिआयत की जाये, इसलिये गुस्से में आ गया और ऐसी बात कह दी जो

एक मुसलमान के लिये ज़ेबा नहीं है, बल्कि कुफ़्र व इर्तिदाद(मुर्तद हो जाने) का बाइस है। लेकिन चूंकि अभी शुरूआती हालात थे और उसने ग़ैर शऊरी तौर पर बिला सोचे-समझे ये बात कह दी थी, इसलिये आपने अफ़्व व दरगुज़र से काम लिया और अल्लाह तआला ने इस मौक़े पर पैग़म्बर के मक़ाम व मर्तबे की तअयीन करते हुए ये हिदायत फ़रमाई कि ईमानदार के लिये ज़रूरी है, वो आपका फ़ैसला दिल व जान से क़ुबूल करे और उसके बारे में ज़बान पर तो क्या लाना है, दिल में भी नागवारी महसूस न करे। चूंकि अन्सारी ने जज़्बात की रौ में बह कर अपनी रिआयत को हज़रत ज़ुबैर की रिआयत समझा, इसलिये आपने फिर दो टूक फ़ैसला सुना दिया और पहले ज़मीन वाले के हक़ की तअ्यीन कर दी कि वो मुण्डेर भरने तक पानी लगाने का हक़दार है।

बाब 37 : रसूलुल्लाह(ﷺ) की तौक़ीर करना और जिस चीज़ की ज़रूरत न हो, उसके बारे में ज़्यादा सवाल न करना या जिस चीज़ का इंसान मुकल्लफ़ न हो और जिसके वाक़ेअ होने का एहतिमाल न हो, उस क़िस्म के सवाल न करना

باب تَوْقِيرِهِ صلى الله عليه وسلم وَتَرْكِ إِكْثَارِ سُؤَالِهِ عَمَّا لاَ ضَرُورَةَ إِلَيْهِ أَوْ لاَ يَت

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، قَالاَ كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَا نَهَيْتُكُمْ عَنْهُ فَاجْتَنِبُوهُ وَمَا أَمَرْتُكُمْ بِهِ فَافْعَلُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَثْرَةُ مَسَائِلِهِمْ وَاخْتِلاَفُهُمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ " .

(6113) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने आपको ये फ़रमाते सुना, 'जिस चीज़ से मैंने तुम्हें रोका है उससे परहेज़ करो और जिसके करने का मैंने तुम्हें हुक्म दिया, उसको मक़दूर(ताक़त) भर करो, तुमसे पहले लोगों को सिर्फ़ ज़्यादा सवाल करने और अपने अम्बिया की मुख़ालिफ़त करने की पादाश में हलाक किया गया।'

फ़ायदा : बक़ौल अल्लामा ख़त्ताबी, बिला ज़रूरत या सिर्फ़ ज़िद व इनाद और हटधर्मी के सवाल करने से मना किया गया, क्योंकि बक़ौल इमाम नववी, बिला ज़रूरत और बाल की खाल उतारने के नतीजे में

कोई चीज़ हराम हो सकती थी, जो मुसलमानों के लिये मशक़्क़त का बाइस बनती। सवाल का जवाब भी हो सकता था, जो साइल के लिये नापसन्दीदगी और मशक़्क़त का सबब बनता और ज़्यादा सवाल आपकी तकलीफ़ व अज़ियत का बाइस भी बन सकता था, जो रुस्वाकुन अज़ाब का सबब बनता।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، - وَهُوَ مَنْصُورُ بْنُ سَلَمَةَ الْخُزَاعِيُّ - أَخْبَرَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الْهَادِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ سَوَاءً .

(6114) इमाम साहब यही रिवायत अपने एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ يَعْنِي الْحِزَامِيَّ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح

وَحَدَّثَنَاهُ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، ح

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، كُلُّهُمْ قَالَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه

(6115) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की अलग-अलग सनदों से बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे छोड़ो जब तक मैं तुम्हें कुछ न कहूँ।' यानी जो चीज़ मैं बयान न करूँ, उसके बारे में मुझसे न पूछो। हम्माम की हदीस़ में है, 'जब तक तुम्हें कुछ न कहा जाये, क्योंकि तुमसे पहले लोगों को हलाक किया....।' आगे ऊपर वाली हदीस़ है।

وسلم " ذَرُونِي مَا تَرَكْتُكُمْ " . وَفِي حَدِيثِ هَمَّامٍ " مَا تُرِكْتُمْ فَإِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ " . ثُمَّ ذَكَرُوا نَحْوَ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ وَأَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ .

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ، سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَعْظَمَ الْمُسْلِمِينَ فِي الْمُسْلِمِينَ جُرْمًا مَنْ سَأَلَ عَنْ شَىْءٍ لَمْ يُحَرَّمْ عَلَى الْمُسْلِمِينَ فَحُرِّمَ عَلَيْهِمْ مِنْ أَجْلِ مَسْأَلَتِهِ " .

(6116) आमिर बिन सअद अपने बाप से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमानों में सबसे बड़ा मुज्रिम वो मुसलमान है, जिसने किसी ऐसी चीज़ के बारे में कुरेद की, जो मुसलमानों पर हराम न थी तो उसके सवाल की बिना पर, उन पर हराम क़रार दे दी गई।'

(सहीह बुख़ारी : 7289, अबू दाऊद : 4610)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ - أَحْفَظُهُ كَمَا أَحْفَظُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - الزُّهْرِيُّ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَعْظَمُ الْمُسْلِمِينَ فِي الْمُسْلِمِينَ جُرْمًا مَنْ سَأَلَ عَنْ أَمْرٍ لَمْ يُحَرَّمْ فَحُرِّمَ عَلَى النَّاسِ مِنْ أَجْلِ مَسْأَلَتِهِ " .

(6117) इमाम सुफ़ियान कहते हैं, ये हदीस़ मुझे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की तरह याद है, हज़रत सअद(रज़ि.) ने बयान किया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमानों में सबसे बड़ा मुज्रिम वो मुसलमान है, जिसने ऐसी चीज़ के बारे में कुरेदा, जो हराम न थी, सो लोगों पर उसके सवाल के नतीजे में हराम ठहराई गई।'

وَحَدَّثَنِيهِ حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ، حُمَيْدٍ

(6118) यही रिवायत इमाम साहब को दो उस्तादों ने अपनी-अपनी सनद से सुनाई, मअ़मर की हदीस़ में ये इज़ाफ़ा है, 'वो

أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَزَادَ فِي حَدِيثِ مَعْمَرٍ " رَجُلٌ سَأَلَ عَنْ شَىْءٍ وَنَقَّرَ عَنْهُ " . وَقَالَ فِي حَدِيثِ يُونُسَ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ سَعْدًا .

आदमी जिसने किसी चीज़ के बारे में सवाल किया और उसकी कुरेद की, तफ़्तीश की।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है, किसी मसले में बाल की खाल उतारना, बिला ज़रूरत, इन्तिहा पसन्दी इख़्तियार करना, कई बार, बतौरे सज़ा हलाल चीज़ की हुरमत का बाइस़ बन जाता है और उसमें ऐसी क़ैद लग जाती हैं, जो इंसान के लिये मशक़्क़त और तंगी का बाइस़ बनती है, जैसाकि बनी इस्राईल के उन लोगों के साथ हुआ जिन्होंने गाय के बारे में बिला ज़रूरत सवाल किये, हालांकि वो कोई भी गाय ज़िब्ह कर सकते थे।

حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ قُدَامَةَ السُّلَمِيُّ، وَيَحْيَى بْنُ مُحَمَّدٍ اللُّؤْلُؤِيُّ، - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ قَالَ مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، - أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ بَلَغَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَصْحَابِهِ شَىْءٌ فَخَطَبَ فَقَالَ " عُرِضَتْ عَلَىَّ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ وَلَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا " . قَالَ فَمَا أَتَى عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمٌ أَشَدُّ مِنْهُ - قَالَ - غَطَّوْا رُءُوسَهُمْ وَلَهُمْ خَنِينٌ - قَالَ - فَقَامَ عُمَرُ فَقَالَ رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا

(6119) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) तक अपने साथियों की कोई बात पहुँची तो आपने ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया, 'मुझ पर जन्नत और जहन्नम पेश की गईं, सो मैंने आज जैसा अच्छा और बुरा मन्ज़र नहीं देखा और अगर तुम वो जान लो, जो मैं जानता हूँ तो हँसो कम(बिल्कुल न हँसो) और ज़्यादा रोओ(रोते रहो)।' हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों पर इससे ज़्यादा संगीन दिन नहीं आया, उन्होंने अपने सर ढांप लिये और वो हिचकियाँ लेकर रोने लगे, हज़रत उमर(रज़ि.) ने खड़े होकर अर्ज़ किया, हम अल्लाह के रब होने पर राज़ी हैं और इस्लाम के दस्तूरे ज़िन्दगी(दीन) और मुहम्मद के नबी होने पर मुत्मइन हैं। वहीं आदमी खड़ा होकर कहने लगा, मेरा बाप कौन है? आपने

فَرमाया, 'तेरा बाप फ़लाँ है।' इस पर ये आयत उतरी, 'ऐ ईमान वालों! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो, अगर वो तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें तो तुम्हें रंज पहुँचे।'(सूरह माएदा : 101)

(सहीह बुख़ारी : 4621, 6486, 7295)

وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا - قَالَ فَقَامَ ذَاكَ الرَّجُلُ فَقَالَ مَنْ أَبِي قَالَ " أَبُوكَ فُلاَنٌ " . فَنَزَلَتْ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ}

(6120) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरा बाप कौन है? आपने फ़रमाया, 'तेरा बाप फ़लाँ है।' और आयत उतरी, 'ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो कि अगर वो तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें तो तुम्हें नागवार हों।'(सूरह माएदा : 101)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرِ بْنِ رِبْعِيٍّ الْقَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَبِي قَالَ " أَبُوكَ فُلاَنٌ " . وَنَزَلَتْ { يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ} تَمَامَ الآيَةِ

(6121) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि जब सूरज ढल गया, रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये और उन्हें ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, जब सलाम फेरा तो मिम्बर पर खड़े हो गये और क़यामत का तज़्किरा किया और बताया, उससे पहले बड़े-बड़े वाक़ियात ज़ाहिर होंगे। फिर फ़रमाया, 'जो मुझसे किसी चीज़ के बारे में सवाल करना चाहे वो मुझसे उसके बारे में पूछे, सो अल्लाह की क़सम! तुम मुझसे जिसके बारे में भी सवाल करोगे, जब तक मैं यहाँ इस जगह हूँ, उसके बारे में, मैं तुम्हें बता दूँगा।' हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, जब लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये बात सुनी तो बहुत रोये और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बकसरत ये फ़रमाया,

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَرْمَلَةَ بْنِ عِمْرَانَ التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ، وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ حِينَ زَاغَتِ الشَّمْسُ فَصَلَّى لَهُمْ صَلاَةَ الظُّهْرِ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَذَكَرَ السَّاعَةَ وَذَكَرَ أَنَّ قَبْلَهَا أُمُورًا عِظَامًا ثُمَّ قَالَ " مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْأَلَنِي عَنْ شَىْءٍ فَلْيَسْأَلْنِي عَنْهُ فَوَاللَّهِ لاَ تَسْأَلُونَنِي عَنْ شَىْءٍ إِلاَّ أَخْبَرْتُكُمْ بِهِ مَا دُمْتُ فِي مَقَامِي هَذَا " . قَالَ أَنَسُ بْنُ

مَالِكٍ فَأَكْثَرَ النَّاسُ الْبُكَاءَ حِينَ سَمِعُوا ذَلِكَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَكْثَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ يَقُولَ " سَلُونِي " . فَقَامَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حُذَافَةَ فَقَالَ مَنْ أَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " أَبُوكَ حُذَافَةُ " . فَلَمَّا أَكْثَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ أَنْ يَقُولَ " سَلُونِي " . بَرَكَ عُمَرُ فَقَالَ رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً -قَالَ - فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ قَالَ عُمَرُ ذَلِكَ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوْلَى وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَقَدْ عُرِضَتْ عَلَىَّ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ آنِفًا فِي عُرْضِ هَذَا الْحَائِطِ فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ " . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ قَالَ قَالَتْ أُمُّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُذَافَةَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُذَافَةَ مَا سَمِعْتُ بِابْنٍ قَطُّ أَعَقَّ مِنْكَ أَأَمِنْتَ أَنْ تَكُونَ أُمُّكَ قَدْ قَارَفَتْ بَعْضَ مَا تُقَارِفُ نِسَاءُ أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ فَتَفْضَحَهَا عَلَى أَعْيُنِ النَّاسِ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حُذَافَةَ وَاللَّهِ لَوْ أَلْحَقَنِي بِعَبْدٍ أَسْوَدَ لَلَحِقْتُهُ .

'मुझसे पूछ लो।' तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा(रज़ि.) खड़े हुए और पूछा, मेरा बाप कौन है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'हुज़ाफ़ा।' तो जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बार-बार ये फ़रमाया, 'मुझसे पूछ लो।' हज़रत उ़मर(रज़ि.) घुटनों के बल खड़े हो गये और कहने लगे, हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के ज़ाब्त-ए-हयात होने पर और मुहम्मद के रसूल होने पर राज़ी व मुत्मइन हैं। तो जब हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने ये अल्फ़ाज़ कहे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ख़ामोश हो गये। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हलाकत क़रीब थी, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! अभी इस दीवार की चौड़ाई में मेरे सामने जन्नत और दोज़ख़ पेश की गई, सो मैंने आज जैसा ख़ैर व शर का मन्ज़र नहीं देखा।' इब्ने शिहाब कहते हैं, मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा(रज़ि.) ने बताया, अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा(रज़ि.) की वालिदा ने अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा से कहा, मैंने तुझ जैसा नाफ़रमान बेटा कभी नहीं सुना, क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ थे कि तेरी माँ ने किसी ऐसी हरकत का इर्तिकाब किया हो जिसका इर्तिकाब जाहिलिय्यत में औ़रतें करती थीं, इस तरह तुम उन लोगों के सामने रुस्वा कर देते। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे हब्शी का बच्चा क़रार देते तो मैं उसके साथ मन्सूब हो जाता।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) से कुछ मुनाफ़िक़ों ने दिक़्क़(परेशान) करने के लिये लायानी(बेकार) सवाल किये, जिनका मक़सद रिसालत और हिदायत व राहनुमाई से कोई ताल्लुक़ न था, आप इस पर नाराज़ हुए तो आपको वह्य के ज़रिये आगाह किया गया कि उनको सवाल करने दें, हम आपको बतलायेंगे। इसलिये आपने ग़ुस्से के आलम(हालत) में बार-बार ये फ़रमाया, मैं जब तक यहाँ खड़ा हूँ, तुम्हें जो सवाल करना है, कर लो। कुछ पुख़्ताकार मुसलमान भी बदफ़हमी की बिना पर सवालों में शरीक हो गये, लेकिन अक्सर लोग आपकी नाराज़ी की कैफ़ियत देख कर रोने लगे और हज़रत उमर(रज़ि.) ने लोगों की तर्जुमानी में ऊपर दर्ज किये गये अल्फ़ाज़ कहे, जिससे आपका ग़ुस्सा ठण्डा हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा के नसब पर कुछ लोग तअ़न करते थे, उन्होंने आपकी कैफ़ियत को न समझा। इसलिये उन्होंने अपने बाप के बारे में सवाल कर लिया। ताकि मामला साफ़ हो जाये, जाहिलिय्यत के दौर में औरतें ज़िना करती थीं और बेटा ज़ानी का ही तसव्वुर होता था। इसलिये जब हज़रत अब्दुल्लाह की वालिदा ने ग़ुस्से का इज़हार किया कि तुम्हें क्या मालूम, अगर बिल्फ़र्ज़ मैंने दौरे जाहिलिय्यत में ज़िना का इर्तिकाब किया होता तो तुम्हारे सवाल के नतीजे में, मैं तमाम लोगों के सामने ज़लील हो जाती। तो हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) वह्य की रोशनी में जो भी फ़ैसला फ़रमाते मुझे दिल व जान से क़ुबूल होता, हक़ के सामने सर झुकाने में कोई रुस्वाई आड़ न बनती, लेकिन ज़ाहिर है, इस्लाम के उसूलों के मुताबिक़ शादीशुदा औरत से ज़िना के नतीजे में पैदा होने वाला, ज़ानी की तरफ़ मन्सूब नहीं हो सकता, वो अगर ख़ाविन्द तस्लीम न करे तो अपनी माँ की तरफ़ मन्सूब होता है, वरना अल्वलदु लिल्फ़राश के मुताबिक़ बेटा उसका होगा जिसके बिस्तर पर पैदा हुआ है।

अल्लामा सईदी ने इमाम नववी से नक़ल किया है, उलमा का बयान है कि नबी(ﷺ) पर उस वक़्त वह्य नाज़िल की गई थी, वरना अल्लाह तआला के बतलाये बग़ैर नबी(ﷺ) ग़ैब की बातों को नहीं जानते थे।(शरह सहीह मुस्लिम, जिल्द 6, पेज नं. 824)

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ، عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ وَحَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ مَعَهُ غَيْرَ أَنَّ شُعَيْبًا قَالَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

(6122) इमाम साहब ने ऊपर वाली हदीस़ अपने दो उस्तादों की सनद से बयान की है, मगर शुऐब की रिवायत में ये है, उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने कहा, मुझे अहले इल्म में से एक आदमी ने बताया कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की वालिदा ने कहा, आगे ऊपर वाला वाक़िया है।

(सहीह बुख़ारी : 7284, 7294)

قَالَ حَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّ أُمَّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُذَافَةَ قَالَتْ بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ .

حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ الْمَعْنِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّاسَ، سَأَلُوا نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى أَحْفَوْهُ بِالْمَسْأَلَةِ فَخَرَجَ ذَاتَ يَوْمٍ فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ " سَلُونِي لاَ تَسْأَلُونِي عَنْ شَىْءٍ إِلاَّ بَيَّنْتُهُ لَكُمْ " . فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ الْقَوْمُ أَرَمُّوا وَرَهِبُوا أَنْ يَكُونَ بَيْنَ يَدَىْ أَمْرٍ قَدْ حَضَرَ . قَالَ أَنَسٌ فَجَعَلْتُ أَلْتَفِتُ يَمِينًا وَشِمَالاً فَإِذَا كُلُّ رَجُلٍ لاَفٌّ رَأْسَهُ فِي ثَوْبِهِ يَبْكِي فَأَنْشَأَ رَجُلٌ مِنَ الْمَسْجِدِ كَانَ يُلاَحَى فَيُدْعَى لِغَيْرِ أَبِيهِ فَقَالَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ مَنْ أَبِي قَالَ " أَبُوكَ حُذَافَةُ " . ثُمَّ أَنْشَأَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رضى الله عنه فَقَالَ رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً عَائِذًا بِاللَّهِ مِنْ سُوءِ الْفِتَنِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ قَطُّ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ إِنِّي صُوِّرَتْ لِيَ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَرَأَيْتُهُمَا دُونَ هَذَا الْحَائِطِ " .

(6123) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है कि लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सवाल किये, यहाँ तक कि आपसे सवालात पर इसरार किया(आप तंग पड़ गये) तो आप एक दिन तशरीफ़ लाये और मिम्बर पर चढ़ गये और फ़रमाया, 'मुझसे सवाल कर लो, तुम मुझसे जो भी सवाल करोगे, जिस चीज़ के बारे में पूछोगे, मैं उसकी हक़ीक़त खोल दूँगा।' जब लोगों ने ये सुना तो वो चुप हो गये और डर गये कि कहीं ये किसी अज़ाब का पेश ख़ेमा न हो। हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, मैं दायें-बायें देखने लगा तो हर आदमी अपने कपड़े में सर लपेट कर रो रहा था तो एक आदमी ने मस्जिद से आग़ाज़ किया, जिससे लोग झगड़ते तो उसकी निस्बत आपके सिवा किसी और की तरफ़ करते। तो उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मेरा बाप कौन है? आपने फ़रमाया, 'हुज़ाफ़ा।' फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) कहने लगे, हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दस्तूरे ज़िन्दगी होने और मुहम्मद के रसूल होने पर ख़ुश हैं और अल्लाह से बुरे फ़ित्नों से पनाह चाहते हैं। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने ख़ैर व शर(अच्छाई—बुराई) का आज की तरह नज़ारा कभी नहीं किया, मेरे लिये जन्नत और दोज़ख़ की तस्वीर कशी की गई है और मैंने उन्हें इस दीवार के वरे देखा है।' (सहीह बुख़ारी : 7089)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अहफ़ौहू बिल्मस्अलति : सवालात में इसरार किया।(2) **अरम्मू** : होंट मिला लिये यानी चुप हो गये।(3) **अन्शअ रजुलुन** : एक आदमी ने इब्तिदा की।(4) **युलाहा** : उससे झगड़ा किया जाता था।

(6124) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से ऊपर वाला वाक़िया बयान करते हैं। (सहीह बुख़ारी : 6362, 7089)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنْ هِشَامٍ، ح وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالاَ، جَمِيعًا حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، بِهَذِهِ الْقِصَّةِ .

(6125) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) से कुछ चीज़ों के बारे में सवाल किया गया, आपको नागवार गुज़रा, जब सवालात ज़्यादा होने लगे, आप नाराज़ हो गये। फिर आपने लोगों से फ़रमाया, 'मुझसे जो मर्ज़ी है पूछ लो।' तो एक आदमी ने कहा, मेरा बाप कौन है? आपने फ़रमाया, 'तेरा बाप हुज़ाफ़ा है।' एक और आदमी खड़ा हुआ, उसने भी पूछा, मेरा बाप कौन है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'तेरा बाप शैबा का आज़ाद करदा गुलाम सालिम है।' तो जब हज़रत उमर(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) के चेहरे पर नाराज़ी के आसार देखे, कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! हम अल्लाह से तौबा करते हैं, उसकी तरफ़ लौटते हैं। अबू कुरैब की रिवायत है, उसने कहा, मेरा बाप कौन है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'तेरा बाप

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَشْيَاءَ كَرِهَهَا فَلَمَّا أُكْثِرَ عَلَيْهِ غَضِبَ ثُمَّ قَالَ لِلنَّاسِ " سَلُونِي عَمَّ شِئْتُمْ " . فَقَالَ رَجُلٌ مَنْ أَبِي قَالَ " أَبُوكَ حُذَافَةُ " . فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ مَنْ أَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " أَبُوكَ سَالِمٌ مَوْلَى شَيْبَةَ " . فَلَمَّا رَأَى عُمَرُ مَا فِي وَجْهِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنَ الْغَضَبِ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَتُوبُ إِلَى اللَّهِ . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ قَالَ مَنْ أَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " أَبُوكَ سَالِمٌ مَوْلَى شَيْبَةَ " .

शैबा का आज़ाद करदा ग़ुलाम सालिम है।' यानी पहली रिवायत में फ़क़ाल है और इसमें क़ाल है। (सहीह बुख़ारी : 7291)

फ़ायदा : ये दूसरा सवाल करने वाला, सअ़द बिन सालिम मोला शैबा बिन रबीआ़ है।

बाब 38 : जो बात आपने बतौरे शरीअ़त(क़ानून साज़ी) फ़रमाई है, उसका इम्तिसाल या उस पर अ़मल ज़रूरी है और जो बतौरे राय दुनियवी मईशत के बारे में फ़रमाई है उस पर अ़मल करना ज़रूरी नहीं है

باب وُجُوبِ امْتِثَالِ مَا قَالَهُ شَرْعًا دُونَ مَا ذَكَرَهُ صلى الله عليه وسلم مِنْ مَعَايِشِ الدُّنْيَا

मआ़यिश, मईशत की जमा है, ज़िन्दगी गुज़ारने के अस्बाब व ज़राये और मताअ़े हयात को कहते हैं। क़ुरआन मजीद में है, व जअ़ल्ना लकुम फ़ीहा मआ़यिश 'हमने तुम्हारे लिये ज़मीन में ज़िन्दगी गुज़ारने के अस्बाब व ज़राये रखे हैं।'

(6126) मूसा बिन तलहा अपने बाप से बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ कुछ लोगों के पास से गुज़रा, जो खजूर के दरख़्तों पर थे तो आपने पूछा, 'ये लोग क्या कर रहे हैं?' लोगों ने कहा, खजूरों में पेवन्द लगा रहे हैं, नर खजूर को मादा खजूर के साथ मिलाते हैं, जिससे वो बारावर हो जाती है फल तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं नहीं समझता, इससे कुछ फ़ायदा होता हो।' लोगों को आपकी बात की ख़बर दी गई तो उन्होंने ये काम छोड़ दिया। रसूलुल्लाह(ﷺ) को लोगों के इस अ़मल की ख़बर दी गई तो आपने फ़रमाया, 'अगर ये अ़मल उन्हें फ़ायदा पहुँचाता है तो इसे अ़मल

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ الثَّقَفِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ وَهَذَا حَدِيثُ قُتَيْبَةَ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سِمَاكٍ عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ مَرَرْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِقَوْمٍ عَلَى رُءُوسِ النَّخْلِ فَقَالَ " مَا يَصْنَعُ هَؤُلاَءِ " . فَقَالُوا يُلَقِّحُونَهُ يَجْعَلُونَ الذَّكَرَ فِي الأُنْثَى فَيَلْقَحُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا أَظُنُّ يُغْنِي ذَلِكَ شَيْئًا " . قَالَ فَأُخْبِرُوا بِذَلِكَ فَتَرَكُوهُ فَأُخْبِرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِذَلِكَ فَقَالَ " إِنْ كَانَ يَنْفَعُهُمْ

ذَلِكَ فَلْيَصْنَعُوهُ فَإِنِّي إِنَّمَا ظَنَنْتُ ظَنًّا فَلاَ تُؤَاخِذُونِي بِالظَّنِّ وَلَكِنْ إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنِ اللَّهِ شَيْئًا فَخُذُوا بِهِ فَإِنِّي لَنْ أَكْذِبَ عَلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ " .

में लायें, मैंने तो बस एक ख़याल व गुमान किया था, तुम मेरे गुमान पर अमल न करो, लेकिन जब मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कुछ बताऊँ तो उसको इख़्तियार करो, क्योंकि मैं अल्लाह की तरफ़ झूठी बात मन्सूब नहीं करता।'

(इब्ने माजह : 2470)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) युलक़्क़िहून : नर खजूर का गाभा, मादा खजूर के गाभा में दाख़िल करते हैं, मुज़क्कर(मेल) खजूर का शगूफ़ा मुअन्नस़(फिमेल) खजूर में डालना।**(2) यल्क़हु :** वो फलदार हो जाता है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الرُّومِيِّ الْيَمَامِيُّ، وَعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ، جَعْفَرٍ الْمَعْقِرِيُّ قَالُوا حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، - وَهُوَ ابْنُ عَمَّارٍ - حَدَّثَنَا أَبُو النَّجَاشِيِّ، حَدَّثَنِي رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ، قَالَ قَدِمَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَدِينَةَ وَهُمْ يَأْبُرُونَ النَّخْلَ يَقُولُونَ يُلَقِّحُونَ النَّخْلَ فَقَالَ " مَا تَصْنَعُونَ " . قَالُوا كُنَّا نَصْنَعُهُ قَالَ " لَعَلَّكُمْ لَوْ لَمْ تَفْعَلُوا كَانَ خَيْرًا " . فَتَرَكُوهُ فَنَفَضَتْ أَوْ فَنَقَصَتْ - قَالَ - فَذَكَرُوا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ " إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ إِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَىْءٍ مِنْ دِينِكُمْ فَخُذُوا بِهِ وَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَىْءٍ مِنْ رَأْيٍ فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ " . قَالَ عِكْرِمَةُ أَوْ نَحْوَ هَذَا . قَالَ الْمَعْقِرِيُّ فَنَفَضَتْ . وَلَمْ يَشُكَّ .

(6127) हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज(रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह के नबी(ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाये और अहले मदीना नर खजूरों का बोर मादा खजूरों के ऊपर डालते, आपने पूछा, 'तुम क्या करते हो?' उन्होंने कहा, हम पहले से करते आ रहे हैं। आपने फ़रमाया, 'शायद अगर तुम ये अमल न करो तो बेहतर हो।' उन्होंने उसे छोड़ दिया तो वो झड़ गईं या कम हो गईं। सहाबा किराम ने इसका तज़्किरा **आपसे किया तो आपने फ़रमाया, 'मैं सिर्फ़ बशर हूँ, जब मैं तुम्हें तुम्हारे दीन के बारे में कुछ कहूँ तो उसको इख़्तियार करो, उस पर अमल पैरा हो और जब मैं तुम्हें सिर्फ़ अपनी सोच से कहूँ तो मैं बस बशर हूँ।' इक्रिमा कहते हैं, उस्ताद का यही मफ़्हूम था, मअक़िरी की रिवायत में बग़ैर शक के है, वो झड़ गईं।**

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यअ्बुरून : और युवब्बिरून नर का बोर मादा पर डालते थे।**(2) तल्क़ीह :** और ताबीर का मानी एक ही है।**(3) नफ़ज़त :** फल झड़ गया।

फ़ायदा : हज़रत तलहा(रज़ि.) से मरवी हदीस़ से मालूम होता है, अहले मदीना नबी(ﷺ) के आने के वक़्त नर खजूर के शगूफ़े के बोर को मादा खजूर के शगूफ़े में दाख़िल करते थे और राफ़ेअ़ बिन ख़दीज की रिवायत से मालूम होता है ये उनका हमेशा का अ़मल था और तजुर्बे पर मबनी था, लेकिन चूंकि आपको इसका तजुर्बा नहीं था, इसलिये आपने ख़्याल किया इसका क्या फ़ायदा होता है, ये सुनकर सहाबा किराम ने ये अ़मल छोड़ दिया तो जब आपको मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया, अगर तजुर्बे की रू से ये सूदमन्द(मुनासिब) है तो उन्हें ये काम जारी रखना चाहिये, मैंने ये कोई हुक्म नहीं दिया, मैंने तो सिर्फ़ एक ख़्याल का इज़हार किया था, मेरे गुमान की पाबंदी ज़रूरी नहीं है तो इससे मालूम हुआ आपने कोई हुक्म नहीं दिया था या फ़ैसला नहीं किया था, एक तजुर्बे से ताल्लुक़ रखने वाली चीज़ के बारे में सिर्फ़ अपनी राय या गुमान का इज़हार किया था, इसलिये इस हदीस़ से ये कशीद करना कि दुनियवी उमूर व मामलात में आपके हुक्म की पाबंदी ज़रूरी नहीं है, सिर्फ़ सीना ज़ोरी है, जिसका हक़ीक़त से कोई ताल्लुक़ नहीं है, क्योंकि आपके हर हुक्म और फ़ैसले की पाबंदी ज़रूरी है और यहाँ आपने हुक्म नहीं दिया था, बल्कि आपने फ़रमा दिया था, अगर ये काम नफ़ाबख़्श है तो जारी रखो, मैंने तो सिर्फ़ एक ख़्याल का इज़हार किया था, जिसके तुम पाबंद नहीं हो, इस तरह आपने ख़ुद ही इजाज़त दे दी।

(6128) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रे, जो खजूरों में पेवन्द लगा रहे थे तो आपने फ़रमाया, 'अगर तुम ये अ़मल न करो तो अच्छा होगा।' हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, इस(अ़मल के छोड़ने) से रद्दी खजूरें पैदा हुईं, सो आप उनके पास से गुज़रे और पूछा, 'तुम्हारी खजूरों का क्या हुआ?' उन्होंने अ़र्ज़ किया, आपने ये-ये फ़रमाया था। आपने फ़रमाया, 'तुम अपने दुनियवी मामलात से ख़ूब आगाह हो।' (इब्ने माजह : 2470)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ عَامِرٍ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، - حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، وَعَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِقَوْمٍ يُلَقِّحُونَ فَقَالَ " لَوْ لَمْ تَفْعَلُوا لَصَلُحَ ". قَالَ فَخَرَجَ شِيصًا فَمَرَّ بِهِمْ فَقَالَ " مَا لِنَخْلِكُمْ ". قَالُوا قُلْتَ كَذَا وَكَذَا قَالَ " أَنْتُمْ أَعْلَمُ بِأَمْرِ دُنْيَاكُمْ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : शीसुन : निकम्मी और रद्दी खजूर।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, वो दुनियवी मामलात जिनका ताल्लुक़ तजुर्बे से है और

शरीअ़त ने उनके बारे में कोई क़तई या यक़ीनी हुक्म नहीं दिया, उसको लोगों के तजुर्बात और मुशाहिदात पर छोड़ दिया जायेगा कि वो अपने तजुर्बे में अमल पैरा हों। इसका ये मानी नहीं है जिन दुनियवी उमूर के बारे में आप क़तई हुक्म सादिर फ़रमायें उनमें भी अपने तजुर्बे को तरजीह दी जायेगी।

बाब 39 : रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखने का शर्फ़ और उसकी आरज़ू करना

باب فَضْلِ النَّظَرِ إِلَيْهِ صلى الله عليه وسلم وَتَمَنِّيهِ

(6129) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह को सुनाई हुई हदीसों में से एक ये है रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम पर एक वक़्त ज़रूर आयेगा कि तुममें से कोई मुझे नहीं देख सकेगा, फिर उसके लिये मेरा दीदार करना, अपने अहल और उनके साथ उनका माल हो, से ज़्यादा महबूब होगा।' अबू इस्हाक़ कहते हैं, मेरे नज़दीक इसका मानी ये है कि मुझे उनके साथ देखना, उसे अपने अहल और माल से ज़्यादा महबूब होगा, मेरे नज़दीक यहाँ अल्फ़ाज़ में तक़दीम व ताख़ीर है। यानी मअहुम आख़िरी की बजाये यरानी के बाद है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ فِي يَدِهِ لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ يَوْمٌ وَلاَ يَرَانِي ثُمَّ لأَنْ يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ مَعَهُمْ " . قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ الْمَعْنَى فِيهِ عِنْدِي لأَنْ يَرَانِي مَعَهُمْ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَهُوَ عِنْدِي مُقَدَّمٌ وَمُؤَخَّرٌ .

नोट : अबू इस्हाक से मुराद इमाम मुस्लिम के शागिर्द इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सुफ़ियान नीसापूरी है।

फ़ायदा : आपका मक़सद सहाबा किराम को सफ़र व हज़र में आपकी मज्लिस में हाज़िर रहने की तल्क़ीन करना और उसकी तशवीक़ व तरग़ीब दिलाना है, ताकि वो आपसे शरीअ़त की हिदायात व तालीमात सीखें, आपका तरीक़ा अपनायें और उसको याद रख कर बाद वालों तक पहुँचायें, क्योंकि एक वक़्त आयेगा कि आपकी मज्लिस में हाज़िरी में कोताही करने पर उन्हें नदामत होगी और अपने अहल व माल की बजाए आपको देखना ज़्यादा महबूब होगा, इसलिये आपकी वफ़ात पर सहाबा किराम के सामने दुनिया तारीक हो गई थी और वो अपने आप ही से अजनबी हो गये थे।

इस किताब के कुल बाब 07 और 38 हदीसें हैं।

كِتَابُ اَحَادِيْثِ الْاَنْبِيَاءِ

किताबु अहादीसिल अम्बिया

अम्बिया के वाक़ियात

हदीस नम्बर 6130 से 6168 तक
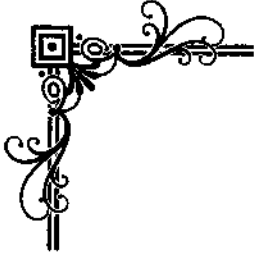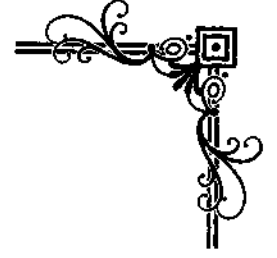
كِتَابُ اَحَادِيْثُ الْاَنْبِيَاءِ

45. अम्बिया के वाक़ियात

बाब 1 : ईसा (अलै.) के फ़ज़ाइल

باب فَضَائِلِ عِيسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ

(6130) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मैं सब लोगों से इब्ने मरयम के ज़्यादा क़रीब हूँ, तमाम अम्बिया अल्लाती भाई हैं, मेरे और उनके दरम्यान कोई नबी नहीं है।'
(अबू दाऊद : 4675)

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِابْنِ مَرْيَمَ الأَنْبِيَاءُ أَوْلاَدُ عَلاَّتٍ وَلَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ نَبِيٌّ "

फ़ायदा : आप हज़रत ईसा (अलै.) के सबसे ज़्यादा क़रीब इस बिना पर हैं कि उन्होंने आपके आने की बशारत दी और आख़िरी दौर में आपकी शरीअत को नाफ़िज़ करेंगे और आपका दौर, उनके दौर के बाद शुरू हुआ है, इक़्तिदार और पैरवी के ऐतबार से और औलाद होने के ऐतबार से आप हज़रत इब्राहीम (अलै.) के ज़्यादा क़रीब हैं और अम्बिया अल्लाती भाई हैं, यानी उनका बाप, अक़ाइद व ईमानियात एक हैं और मायें, फ़ुरूई और फ़िक़्ही अहकाम अलग-अलग हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) और ईसा (अलै.) के दरम्यान कोई नबी नहीं आया, हाँ ईसा (अलै.) के मुबल्लिग़ और फ़रिस्तादे मौजूद थे।

(6131) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं ईसा (अलै.) से सबसे ज़्यादा क़रीब हूँ।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عُمَرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ

أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى الأَنْبِيَاءُ أَبْنَاءُ عَلاَّتٍ وَلَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَ عِيسَى نَبِيٌّ " .

अम्बिया, वो एक बाप के बेटे हैं, मेरे और ईसा (अलै.) के दरम्यान कोई नबी नहीं है।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ فِي الأُولَى وَالآخِرَةِ " . قَالُوا كَيْفَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ مِنْ عَلاَّتٍ وَأُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ فَلَيْسَ بَيْنَنَا نَبِيٌّ " .

(6132) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह (रह.) को सुनाई हुई हदीसों में से एक ये है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं दुनिया और आख़िरत में, ईसा बिन मरयम के सबसे ज़्यादा क़रीब हूँ।' लोगों ने पूछा, कैसे? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'अम्बिया अ़ल्लाती भाई हैं, उनकी मायें अलग-अलग हैं और उनका दीन एक है और हमारे दरम्यान कोई नबी नहीं है।'

फ़ायदा : सब अम्बिया का दीन, इस्लाम ही था। यानी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और फ़रमांबरदारी। इसलिये बुनियादी और असासी बातें यकसाँ (बराबर) हैं, अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और इताअ़त में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلاَّ نَخَسَهُ الشَّيْطَانُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ نَخْسَةِ الشَّيْطَانِ إِلاَّ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ " . ثُمَّ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ اقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ {وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ}

(6133) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो भी बच्चा पैदा होता है, शैतान उसको कचोका लगाता है तो वो शैतान के कचोके से चिल्लाता है, मगर इब्ने मरयम और उसकी माँ (वो इससे महफ़ूज़ रहे)।' फिर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, अगर तुम चाहो तो ये पढ़ लो, 'और मैं इसे और इसकी औलाद को मर्दूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूँ।' (सूरह आले इमरान : 36) (सहीह बुख़ारी : 4548)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) नख़स : कचोका लगाना, कोई नोकदार चीज़ चुभोना। **(2) यस्तहिल्लु**

सारिख़न : बुलंद आवाज़ से रोता है।

फ़ायदा : हज़रत मरयम (अलै.) की वालिदा की दुआ के नतीजे में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा (अलै.) और उनकी वालिदा को शैतानी कचोके से महफ़ूज़ रखा है। इस हदीस से मालूम होता है, ये फ़ज़ीलत सिर्फ़ मरयम और इब्ने मरयम को हासिल है, अगरचे क़ाज़ी अयाज़, तमाम अम्बिया को इसमें शरीक करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ، بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، جَمِيعًا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالاَ " يَمَسُّهُ حِينَ يُولَدُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ مَسَّةِ الشَّيْطَانِ إِيَّاهُ " . وَفِي حَدِيثِ شُعَيْبٍ " مِنْ مَسِّ الشَّيْطَانِ "

(6134) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों की सनद से बयान करते हैं, इसमें है, 'पैदाइश के वक़्त वो छूता है तो वो शैतान के छूने के सबब बुलंद आवाज़ से रोता है।' और शुऐब की रिवायत में, मस्सतिश्शैतान की जगह मस्सिश्शैतान है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، أَنَّ أَبَا يُونُسَ، سُلَيْمًا مَوْلَى أَبِي هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " كُلُّ بَنِي آدَمَ يَمَسُّهُ الشَّيْطَانُ يَوْمَ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ إِلاَّ مَرْيَمَ وَابْنَهَا "

(6135) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम के हर बेटे को जब उसकी माँ जनती है, शैतान छूता है, मगर मरयम और उसका बेटा।'

(सहीह बुख़ारी : 3431)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " صِيَاحُ الْمَوْلُودِ حِينَ يَقَعُ نَزْغَةٌ مِنَ الشَّيْطَانِ " .

(6136) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नौ मौलूद बच्चा उस वक़्त रोता है, जब शैतान उनको कचोका लगाता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : नज़ग़तुन : और नख़ का मानी कचोका लगाना है।

(6137) हम्माम बिन मुनब्बिह की हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान की गई हदीसों में से एक ये है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक आदमी को चोरी करते देखा तो उसे हज़रत ईसा (अलै.) ने फ़रमाया, तूने चोरी की है? उसने कहा, हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! तो ईसा (अलै.) ने कहा, मैंने अल्लाह पर यक़ीन किया और अपने आपको ख़ताकार क़रार दिया।'
(सहीह बुख़ारी : 3444)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " رَأَى عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ فَقَالَ لَهُ عِيسَى سَرَقْتَ قَالَ كَلاَّ وَالَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ . فَقَالَ عِيسَى آمَنْتُ بِاللَّهِ وَكَذَّبْتُ نَفْسِي " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि हज़रत ईसा (अलै.) के नुक्ते नज़र से कोई इंसान अल्लाह के नाम की झूठी क़सम खाने की जसारत नहीं कर सकता, इसलिये उन्होंने फ़रमाया, मेरी आँख को ग़लती लगी है।

बाब 2 : हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अलै.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ إِبْرَاهِيمَ الْخَلِيلِ صلى الله عليه وسلم

(6138) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर कहने लगा, ऐ बेहतरीन मख़्लूक़! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये तो इब्राहीम (अलै.) हैं।'
(अबू दाऊद : 4672, तिर्मिज़ी : 3352)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، وَابْنُ، فُضَيْلٍ عَنِ الْمُخْتَارِ، ح وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا الْمُخْتَارُ، بْنُ فُلْفُلٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " ذَاكَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

(6139) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आगे ऊपर वाली रिवायत है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ سَمِعْتُ مُخْتَارَ بْنَ فُلْفُلٍ، مَوْلَى عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ . بِمِثْلِهِ .

(6140) इमाम साहब के एक और उस्ताद यही रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الْمُخْتَارِ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

फ़ायदा : इंसान मक़ाम व मर्तबे में किसी क़द्र ही फ़ाइक़ और बरतर क्यों न हो जाये, वो अदब व एहतिराम और तवाज़ोअ के ऐतबार से अपने बाप को अपने से बरतर ही समझता है, इसी तरह या इसी ऐतबार से आपने हज़रत इब्राहीम (अलै.) को अफ़ज़लुल मख़्लूक़ात क़रार दिया, अगरचे हक़ीक़त और वाक़िये के ऐतबार से आप सबसे बरतर और बुलंद हैं।

(6141) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने अस्सी (80) साल की उम्र में तीशा से अपने ख़त्ने किये।' (सहीह बुख़ारी : 3356, 3357, 6298)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اخْتَتَنَ إِبْرَاهِيمُ النَّبِيُّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَهُوَ ابْنُ ثَمَانِينَ سَنَةً بِالْقَدُومِ " .

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, अगर इंसान किसी सबब या नादानी की बिना पर बचपन में ख़त्ना न करवा सके तो फिर उसे जब भी मौक़ा मिले तो ख़त्ना करवा लेना चाहिये, मगर ये कि कोई शरई या तबई रुकावट हो और बेहतर ये है कि सातवें दिन बच्चे के ख़त्ना कर दिये जायें। दूसरा मानी इस हदीस का ये है कि इब्राहीम (अलै.) ने क़दूम नामी जगह पर अपने ख़त्ने किये थे। (क़ामूस)

(6142) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हम इब्राहीम (अलै.) से शक करने का ज़्यादा हक़ रखते हैं, जब उन्होंने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे दिखाइये, आप मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करते हैं? फ़रमाया, क्या तुम्हें यक़ीन नहीं? कहा, क्यों नहीं! लेकिन मैं चाहता हूँ (मुशाहिदे से) मेरा दिल मुत्मइन हो जाये और आपने फ़रमाया, 'अल्लाह लूत (अलै.) पर रहम फ़रमाये, वो मज़बूत पनाह का तहफ़्फ़ुज़ (सुरक्षा) चाहते थे और अगर मैं जेल में यूसुफ़ (अलै.) की लम्बी क़ैद काटता तो बुलाने वाले के साथ फ़ौरन चला जाता।'

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " نَحْنُ أَحَقُّ بِالشَّكِّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى . قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلَى وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي . وَيَرْحَمُ اللَّهُ لُوطًا لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ طُولَ لَبْثِ يُوسُفَ لأَجَبْتُ الدَّاعِيَ

फ़ायदा : इस हदीस की तशरीह व तौज़ीह किताबुल ईमान, बाब दलाइल की कसरत से दिली तमानियत में इज़ाफ़ा होता है, गुज़र चुकी है। रुक्न : जिससे कुव्वत हासिल की जाये। रुक्निर्रजुल : आदमी का क़बीला व क़ौम। नीज़ तफ़्सील के लिये देखिये सुन्नतु ख़ैरुल अनाम अज़ पीर करमशाह पेज नं. 232-236

(6143) यही रिवायत इमाम साहब ने एक और उस्ताद से बयान की है।

وَحَدَّثَنَاهُ إِنْ، شَاءَ اللَّهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، وَأَبَا، عُبَيْدٍ أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِمَعْنَى حَدِيثِ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ .

(6144) लेकिन किसी उस्ताद से सुनी है, इसमें शुब्हा की बिना पर कह दिया इन्शाअल्लाह यानी ज़न्ने ग़ालिब यही है कि अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन असमा से सुनी

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ

" يَغْفِرُ اللَّهُ لِلُوطٍ إِنَّهُ أَوَى إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ " .

है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह लूत (अलै.) को माफ़ फ़रमाये, वो मज़बूत रुक्न की पनाह चाहते थे।'

फ़ायदा : हज़रत लूत (अलै.) इराक़ के बाशिन्दे थे। सदूम जो शाह का इलाक़ा है, वहाँ उनका ख़ानदान और कुम्बा नहीं रहता था, इसलिये उन्होंने ख़्वाहिश की, ऐ काश! आज यहाँ मेरा ख़ानदान और क़बीला होता जो मेरी मुआविनत और मदद करता, इस बात से चूंकि बज़ाहिर ये मालूम होता था कि उन्होंने अस्बाबे ज़ाहिरा (ख़ान्दान व नसब) को अस्बाबे बातिना (अल्लाह पर ऐतमाद व तवक्कल) पर तरजीह दी और उन पर भरोसा किया, इसलिये आपने फ़रमाया, अल्लाह लूत (अलै.) पर रहम फ़रमाये, उनको माफ़ करे।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ النَّبِيُّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ قَطُّ إِلاَّ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ ثِنْتَيْنِ فِي ذَاتِ اللَّهِ قَوْلُهُ { إِنِّي سَقِيمٌ} . وَقَوْلُهُ { بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا} وَوَاحِدَةً فِي شَأْنِ سَارَةَ فَإِنَّهُ قَدِمَ أَرْضَ جَبَّارٍ وَمَعَهُ سَارَةُ وَكَانَتْ أَحْسَنَ النَّاسِ فَقَالَ لَهَا إِنَّ هَذَا الْجَبَّارَ إِنْ يَعْلَمْ أَنَّكِ امْرَأَتِي يَغْلِبْنِي عَلَيْكِ فَإِنْ سَأَلَكِ فَأَخْبِرِيهِ أَنَّكِ أُخْتِي فَإِنَّكِ أُخْتِي فِي الإِسْلاَمِ فَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ فِي الأَرْضِ مُسْلِمًا غَيْرِي وَغَيْرَكِ فَلَمَّا دَخَلَ أَرْضَهُ رَآهَا بَعْضُ أَهْلِ

(6145) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इब्राहीम (अलै.) ने तीन बार तौरिया व तअ़्रीज़ के सिवा कभी तौरिया से काम नहीं लिया, दो बार अल्लाह की ख़ातिर, आपका कहना मैं बीमार हूँ (रूहानी तौर पर) बल्कि ये काम उनके उस बड़े ने किया है और एक बार हज़रत सारह के मामले में, क्योंकि वो एक जाबिर हुक्मरान की ज़मीन में आये और हज़रत सारह उनके साथ थीं, जो बहुत ज़्यादा हसीन थीं तो आपने उससे कहा, उस जाबिर (सरकश) को अगर ये पता चल गया तू मेरी बीवी है, तेरे सिलसिले में मुझ पर ग़ालिब आ जायेगा (तुझे मुझसे छीन लेगा) तो अगर वो तुझसे पूछे तो उसको कह देना, तुम मेरी बहन हो, क्योंकि तुम इस्लामी बहन हो, मैं इस इलाक़े में तेरे और अपने सिवा किसी को मुसलमान नहीं जानता। तो जब वो उसकी सरज़मीन में दाख़िल हो गये, हज़रत सारह को

الْجَبَّارِ أَتَاهُ فَقَالَ لَهُ لَقَدْ قَدِمَ أَرْضَكَ امْرَأَةٌ لاَ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تَكُونَ إِلاَّ لَكَ . فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا فَأُتِيَ بِهَا فَقَامَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ إِلَى الصَّلاَةِ فَلَمَّا دَخَلَتْ عَلَيْهِ لَمْ يَتَمَالَكْ أَنْ بَسَطَ يَدَهُ إِلَيْهَا فَقُبِضَتْ يَدُهُ قَبْضَةً شَدِيدَةً فَقَالَ لَهَا ادْعِي اللَّهَ أَنْ يُطْلِقَ يَدِي وَلاَ أَضُرُّكِ . فَفَعَلَتْ فَعَادَ فَقُبِضَتْ أَشَدَّ مِنَ الْقَبْضَةِ الأُولَى فَقَالَ لَهَا مِثْلَ ذَلِكَ فَفَعَلَتْ فَعَادَ فَقُبِضَتْ أَشَدَّ مِنَ الْقَبْضَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ فَقَالَ ادْعِي اللَّهَ أَنْ يُطْلِقَ يَدِي فَلَكِ اللَّهَ أَنْ لاَ أَضُرَّكِ . فَفَعَلَتْ وَأُطْلِقَتْ يَدُهُ وَدَعَا الَّذِي جَاءَ بِهَا فَقَالَ لَهُ إِنَّكَ إِنَّمَا أَتَيْتَنِي بِشَيْطَانٍ وَلَمْ تَأْتِنِي بِإِنْسَانٍ فَأَخْرِجْهَا مِنْ أَرْضِي وَأَعْطِهَا هَاجَرَ . قَالَ فَأَقْبَلَتْ تَمْشِي فَلَمَّا رَآهَا إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ انْصَرَفَ فَقَالَ لَهَا مَهْيَمْ قَالَتْ خَيْرًا كَفَّ اللَّهُ يَدَ الْفَاجِرِ وَأَخْدَمَ خَادِمًا . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَتِلْكَ أُمُّكُمْ يَا بَنِي مَاءِ السَّمَاءِ .

उस सरकश के किसी कारिन्दे ने देख लिया और उसके पास आकर उसे कहा, तेरे इलाक़े में एक ऐसी औरत आई है, जो आप ही के पास होनी चाहिये, सो उसने उसे बुलवा भेजा। उसे लाया गया तो हज़रत इब्राहीम (अलै.) नमाज़ के लिये खड़े हो गये तो जब वो उसके पास पहुँचीं, वो अपने ऊपर क़ाबू न रख सका और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया तो उसका हाथ ज़ोर से जकड़ लिया गया तो उसने उनसे कहा, अल्लाह से दुआ करो, वो मेरा हाथ आज़ाद कर दे और मैं तुम्हें कुछ नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा। उन्होंने ऐसा किया, उसने दोबारा हरकत की तो उसका हाथ पहली बार से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ जकड़ लिया गया। उसने फिर पहली बात कही, उन्होंने दुआ माँगी, उसने फिर तीसरी बार हरकत की तो उसका हाथ पहली दो बार से ज़्यादा शिद्दत से जकड़ दिया गया तो उसने कहा, अल्लाह से दुआ करें, मेरा हाथ आज़ाद कर दे, अल्लाह गवाह या ज़ामिन है, मैं तुम्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचाऊँगा। उन्होंने दुआ की और उसका हाथ आज़ाद कर दिया गया और उसने उनको लाने वाले को बुलवाया और उसे कहा, तुम मेरे पास किस जिन्न को लाये, मेरे पास किसी इंसान को नहीं लाये हो, इसको मेरे इलाक़े से निकाल दो और इसे हाजरा दे दो।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, 'वो चलती हुई आईं तो जब हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने उन्हें देखा, सलाम फेर दिया और उनसे पूछा, क्या

वाक़िया पेश आया। उन्होंने कहा, अच्छा हुआ! अल्लाह ने बदकार के हाथ को रोक लिया और उसने एक ख़ादिमा दी है।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, ऐ अरबो! ऐ ख़ालिस नसब वालो! ये तुम्हारी माँ हैं।
(सहीह बुख़ारी : 3357, 5084)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) कज़बात : कज़्बह की जमा है। इमाम इब्ने अम्बारी का क़ौल है, किज़्ब की पाँच सूरतें हैं : (1) नक़ल करने वाले ने जो बात सुनी है, उसको तब्दील कर दिया और वह बात नक़ल व बयान कर दी, जिसका पता नहीं है, ये शक्ल व क़िस्म इंसान को गुनाहगार बनाती है और शराफ़त को ख़त्म कर देती है।

(2) चूक जाना, ग़लती करना, अरबों के कलाम में किज़्ब का ये मानी बहुत इस्तेमाल हुआ है।
(3) बातिल होना ख़ाक में मिल जाना, कहते हैं कज़बर्रजुलु : आदमी की उम्मीद व रिजा ख़ाक में मिल गई, नाकाम हो गई।
(4) किसी को धोखे में रखना।
(5) ऐसी बात कहना जो किज़्ब के मुशाबेह हो, लेकिन उससे मक़सद सहीह हो और कज़-ब इब्राहीमु सलास़ कज़बात वाली हदीस़ में यही मानी मुराद है कि उन्होंने झूठ के मुशाबेह बात कही, जबकि हक़ीक़तन तीनों हुक्म सादिक़ थे, ताजुल उरूस फ़स्लुल काफ़ मिम् बाबिल बाअ। गोया किज़्ब का लफ़्ज़ तौरिया व तअ्रीज़ के लिये इस्तेमाल होता है।
(2) इन्नी सक़ीम : मैं बीमार हूँ। उन्होंने जिस्मानी और माद्दी बीमारी समझी, हालांकि आपका मक़सद रूहानी बीमारी था कि मेरी रूह तुम्हारी इन शिर्किया हरकतों की वजह से तड़प रही है और मैं तुम्हारे शिर्क की बिना पर परेशान हूँ और ये भी हो सकता है कि मुझे ख़तरा है, अगर मैं तुम्हारे साथ चला गया तो तुम्हारी शिर्किया हरकतें देखकर बीमार हो जाऊँगा।

(3) बल फ़अलहू कबीरुहू हाज़ा : कि तुम उन बुतों को नफ़ा और नुक़सान का मालिक समझते हो और बड़े करनी वाले क़रार देते हो, मैं कहता हूँ, ये काम उस बड़े ने किया, उनसे पूछो तो सही, अगर ये बोलते हैं। गोया ये तहक्कुम और इस्तिहज़ा के तौर पर कहा है, जिस तरह एक बद ख़त अपने एक ख़ुश नवेस दोस्त से एक ख़ुशख़त लिखने के बारे में पूछता है, ये आपने लिखी है तो वो जवाब दे, नहीं! जनाब ये तो आप ही ने लिखी है। मक़सद ये है ये पूछने की क्या ज़रूरत है, ये मैंने ही लिखी है। यानी बज़ाहिर जिस चीज़ की नफ़ी की है, हक़ीक़त में उसका इस़्बात क्या है।

फ़ायदा : इस हदीस़ में हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) की तरफ़ तीन कज़बात की निस्बत की गई, जबकि क़ुरआन मजीद इब्राहीम (अ़लै.) को सिद्दीक़न नबिय्या का मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब देता है, इसलिये कुछ क़दीम व जदीद उ़लमा ने इस मुत्तफ़क़ अ़लैह यानी बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत का इंकार किया है, हालांकि ये कज़बात का लफ़्ज़ तो तौरिया और तअ़्रीज़ के लिये इस्तेमाल हुआ और तौरिया व तअ़्रीज़ का इस्तेमाल बिल्कुल जाइज़ है, जिसमें मुतकल्लिम अपनी बात का एक ऐसा मफ़्हूम व मानी मुराद लेता है, जो सहीह और दुरुस्त होता है और सुनने वाला उसका दूसरा मानी लेता है, जिसकी रू से मुतकल्लिम वाला मानी दुरुस्त नहीं होता, जैसाकि हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) और हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) का मशहूर वाक़िया ये है कि हज़रत उम्मे सुलैम ने महसूस किया, हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) सारे दिन की मेहनते शाक़्क़ह (कड़ी मेहनत) के बाद थके-हारे घर आयेंगे, उन्हें ऐसी सूरत में उनके महबूब लख़्ते जिगर की मौत की अल्मनाक इत्तिलाअ़ देना मुनासिब नहीं है। सुबह जब आराम से उठेंगे उनको बता दूँगी, चुनाँचे उन्होंने अपने लख़्ते जिगर को चारपाई पर लिटाकर ऊपर चादर डाल दी और घर के एक तरफ़ उसको रख दिया, जब हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) घर आये और आते ही पूछा, बच्चा कैसा है? तो हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने जवाब दिया, ह-द अन्फ़ुसुहू व अरजू अंय्यकू-न क़दिस्तराह उसे सुकून आ गया है और मुझे उम्मीद है, उसकी तकलीफ़ कट गई है। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने समझा बच्चे को वाक़ेई आराम आ गया है, उसकी बीमारी कट गई है। हालांकि हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) का मक़सद ये था, बच्चा फ़ौत हो गया है। इसलिये उसकी हर क़िस्म की तकलीफ़ और बीमारी ख़त्म हो गई है तो हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) के ऐतबार से ये मानी सहीह नहीं है। जबकि हज़रत उम्मे सुलैम के फ़हम व ज़हन की रू से ये मानी दुरुस्त है, इसको तअ़्रीज़ कहते हैं।

और इस हदीस़ से मालूम हुआ हज़रत इब्राहीम ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में तोरिया और तअ़्रीज़ से बहुत कम काम लिया है और क़यामत के दिन उसको अपनी एक कमज़ोरी के तौर पर पेश करेंगे तो इस तरह ये हदीस़ उनकी तौक़ीर व शान पर दलालत करती है या उनकी तौहीन करती है? पहले एक ग़लत मानी लिया गया और फिर उसकी आड़ में एक सहीह हदीस़ का इंकार कर दिया गया।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) ने हज़रत सारह को अपनी बहन क़रार देने का मशवरा इसलिये दिया कि बहन तो बहरहाल पराया धन है, उसको दूसरे घर सुधारना होता है, लेकिन बीवी रफ़ीक़े हयात है, उसको ख़ाविन्द के साथ रहना होता है, इसलिये अगर वो कहती हैं, इब्राहीम की बीवी हूँ तो वो रास्ता साफ़ करने के लिये, हज़रत इब्राहीम को रास्ते से हटाने के लिये क़त्ल करवा देता और हज़रत सारह के लिये उसके चंगुल से निकलने की कोई उम्मीद न रहती। इसके बरख़िलाफ़ इब्राहीम (अ़लै.) के ज़िन्दा रहने की सूरत में, वो उसकी निजात व ख़ुलासी के लिये कोई तदबीर इख़्तियार करते, जैसाकि यहाँ फ़ौरन वो नमाज़ में खड़े हो गये हैं और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने लगे हैं, इस तरह उनकी ज़िन्दगी

भी बच गई और दुआ के नतीजे में मियाँ-बीवी की इ़ज़्ज़त व नामूस भी बच गई। जबकि एक ख़ादिमा भी मिल गई, जब जाबिर हुक्मरान ने दस्त-दराज़ी की कोशिश की तो हज़रत इब्राहीम (अलै.) और हज़रत सारह (अलै.) की दुआ के नतीजे में उसका हाथ शिद्दत के साथ जकड़ लिया गया और उसने फ़ौरन दुआ की दरख़्वास्त की, लेकिन उसकी बद अहदी की बिना पर उसकी पकड़ में इज़ाफ़ा होता गया। यहाँ तक कि घुटन की बिना पर वो ऐड़ियाँ रगड़ने लगा और हज़रत सारह को उसकी हलाकत का ख़तरा पैदा हो गया और वो डर गईं कि मुझे क़ातिला क़रार दिया जायेगा, इसलिये उन्होंने उसके हक़ में दुआ फ़रमाई और आख़िर में उससे दुआ की दरख़्वास्त के बावजूद शैतान यानी बड़ा सरकश जिन्न क़रार दिया, क्योंकि ये लोग बड़े-बड़े कारनामे जिन्नों की तरफ़ मन्सूब करते थे और उनकी बहुत तअ़ज़ीम व तौक़ीर करते थे, इसलिये उसने उनको ख़ुश करने के लिये बतौर ख़ादिमा अपनी लख़्ते जिगर हाजरा पेश की ताकि हज़रत सारह का गुस्सा दूर हो जाये और उसको नुक़सान न पहुँचाये। (मज़ीद तफ़्सील के लिये देखिये ख़ैरुल अनाम, पेज नं. 237-245)

अरबों का नसब चूंकि ख़ालिस था या उनकी गुज़र औक़ात हैवानात पर थी, जो सब्ज़ा खाकर पलते थे और सब्ज़ा आसमानी बारिश से होता था, इसलिये उनको माउस्समाअ कहा गया और बक़ौल क़ाज़ी अयाज़ इससे मुराद अन्सारी लोग हैं और उनके जद अमजद को माउस्समाअ के नाम से मौसूम किया जाता था।

बाब 3 : मूसा (अलै.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ مُوسَى صلى الله عليه وسلم

(6146) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह को सुनाई हुई हदीसों में से एक ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस्राईली नंगे नहाते थे और एक-दूसरे की शर्मगाह देखते रहते और हज़रत मूसा (अलै.) अकेले अलग-थलग ग़ुस्ल करते थे तो वो कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मूसा (अलै.) को हमारे साथ नहाने से सिर्फ़ ये चीज़ रोकती है कि उनके ख़ुसिये फूले हुए हैं।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ يَغْتَسِلُونَ عُرَاةً يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى سَوْأَةِ بَعْضٍ وَكَانَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ يَغْتَسِلُ

وَحْدَهُ فَقَالُوا وَاللَّهِ مَا يَمْنَعُ مُوسَى أَنْ يَغْتَسِلَ مَعَنَا إِلاَّ أَنَّهُ آدَرُ . قَالَ فَذَهَبَ مَرَّةً يَغْتَسِلُ فَوَضَعَ ثَوْبَهُ عَلَى حَجَرٍ فَفَرَّ الْحَجَرُ بِثَوْبِهِ - قَالَ - فَجَمَحَ مُوسَى بِأَثَرِهِ يَقُولُ ثَوْبِي حَجَرُ ثَوْبِي حَجَرُ . حَتَّى نَظَرَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ إِلَى سَوْأَةِ مُوسَى فَقَالُوا وَاللَّهِ مَا بِمُوسَى مِنْ بَأْسٍ . فَقَامَ الْحَجَرُ بَعْدُ حَتَّى نُظِرَ إِلَيْهِ - قَالَ - فَأَخَذَ ثَوْبَهُ فَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ وَاللَّهِ إِنَّهُ بِالْحَجَرِ نَدَبٌ سِتَّةٌ أَوْ سَبْعَةٌ ضَرْبُ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ بِالْحَجَرِ .

एक दिन वो नहाने लगे तो अपने कपड़े एक पत्थर पर रख दिये, पत्थर उनके कपड़े लेकर भाग खड़ा हुआ। मूसा (अलै.) उसके पीछे सरपट दौड़ते, कहते जाते थे, मेरे कपड़े दे। ऐ पत्थर! मेरे कपड़े दे। ऐ पत्थर! यहाँ तक कि ईस्राइलियों ने मूसा (अलै.) की शर्मगाह को देख लिया तो वो कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मूसा (अलै.) को तो कोई बीमारी नहीं है। उसके बाद पत्थर ठहर गया। यहाँ तक कि उन्हें अच्छी तरह देख लिया गया। मूसा (अलै.) ने अपने कपड़े ले लिये और पत्थर को मारने लगे।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! हज़रत मूसा (अलै.) के पत्थर के मारने की बिना पर, पत्थर पर छः या सात निशान पड़ गये।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) आदरु : दोनों ख़ुसियों का सूज जाना। **(2) जम-ह मूसा :** मूसा (अलै.) सरपट दौड़े। **(3) नदब :** ज़ख़्म के निशान को कहते हैं, यहाँ मुराद मार का निशान है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, जिस तरह अम्बिया की सीरत व किरदार साफ़-सुथरा होता है, उसी तरह उनका जिस्म भी ऐबों और नुक़्सों से पाक होता है और अल्लाह तआला ने अपने रसूल की बरकत के इज़हार के लिये पत्थर को एक जानदार की तरह दौड़ाया और उसमें ये शऊर और तमीज़ पैदा की कि वो बनी इस्राईल को पहचान कर उनके पास रुक गया और हज़रत मूसा (अलै.) ने गुस्से में आकर उसको मारा तो पत्थर पर मार के निशान छप गये और ये मूसा (अलै.) का मोजिज़ा था। इसलिये हजर पत्थर को हिज्र (घोड़ी) क़रार देना तहरीफ़ है और मोजिज़ात के इंकार का शाख़साना है, अगर वो घोड़ी होती तो इंसानों की तरफ़ न जाती और उसमें मार का निशान पड़ना भी कोई अजूबा नहीं, जबकि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) एक अजीब वाक़िया क़रार दे रहे हैं।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ

(6147) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत मूसा (अलै.) बहुत बाहया (शर्मीला) मर्द थे और कभी नंगे दिखाई नहीं

بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ أَنْبَأَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ رَجُلاً حَيِيًّا - قَالَ - فَكَانَ لاَ يُرَى مُتَجَرِّدًا - قَالَ - فَقَالَ بَنُو إِسْرَائِيلَ إِنَّهُ آدَرُ - قَالَ - فَاغْتَسَلَ عِنْدَ مُوَيْهٍ فَوَضَعَ ثَوْبَهُ عَلَى حَجَرٍ فَانْطَلَقَ الْحَجَرُ يَسْعَى وَاتَّبَعَهُ بِعَصَاهُ يَضْرِبُهُ ثَوْبِي حَجَرُ ثَوْبِي حَجَرُ . حَتَّى وَقَفَ عَلَى مَلإٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَنَزَلَتْ { يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا}

देते। तो बनू इस्राईल कहने लगे, उनके ख़ुस्यतैन सूझे हुए हैं। उन्होंने एक थोड़े से पानी के पास ग़ुस्ल किया और अपने कपड़े एक पत्थर पर रख दिये। पत्थर भाग खड़ा हुआ। मूसा (अलै.) अपना डण्डा लेकर मारने के लिये पीछे भागे, मेरे कपड़े ऐ पत्थर! मेरे कपड़े ऐ पत्थर! यहाँ तक कि वो बनू इस्राईल की एक जमाअत के पास जाकर रुक गया। इस वाक़िये की तरफ़ इशारा करने के लिये ये आयत उतरी, 'ऐ ईमानदारो! उन लोगों की तरह न हो जाना, जिन्होंने मूसा को अज़ियत दी, सो अल्लाह ने उनको उनकी बातों से बरी कर दिया और वो अल्लाह के यहाँ बहुत इज़्ज़त वाले थे।' (सूरह अहज़ाब : 69)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **हयिय्यन :** बाहया, शर्मिले। (2) **मुवैहिन :** माउन की तसग़ीर है, पानी का छोटा सा गढ़ा।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أُرْسِلَ مَلَكُ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَلَمَّا جَاءَهُ صَكَّهُ فَفَقَأَ عَيْنَهُ فَرَجَعَ إِلَى رَبِّهِ فَقَالَ أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لاَ يُرِيدُ الْمَوْتَ - قَالَ - فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ عَيْنَهُ وَقَالَ ارْجِعْ إِلَيْهِ فَقُلْ لَهُ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى مَتْنِ ثَوْرٍ فَلَهُ بِمَا غَطَّتْ يَدُهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ سَنَةٌ قَالَ أَىْ رَبِّ ثُمَّ مَهْ قَالَ ثُمَّ الْمَوْتُ . قَالَ فَالآنَ فَسَأَلَ اللَّهَ أَنْ

(6148) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, मूसा (अलै.) के पास मौत का फ़रिश्ता भेजा गया तो जब वो उनके पास पहुँचा, उन्होंने उसे थप्पड़ रसीद किया और उसकी आँख फोड़ दी तो वो अपने रब के पास आया और अर्ज़ की, आपने मुझे ऐसे बन्दे की तरफ़ भेजा है जो मरना नहीं चाहता। अल्लाह तआला ने उसकी आँख लौटा दी और कहा, उसके पास दोबारा जाओ और उनसे कहो, अपना हाथ बैल की पुश्त (पीठ) पर रखो तो उसके हाथ के नीचे जितने बाल आयेंगे, हर बाल के ऐवज़ एक साल उम्र मिलेगी। मूसा

يُدْنِيَهُ مِنَ الأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمْيَةً بِحَجَرٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَلَوْ كُنْتُ ثَمَّ لأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ تَحْتَ الْكَثِيبِ الأَحْمَرِ

(अलै.) ने पूछा, ऐ मेरे रब! फिर क्या होगा? फ़रमाया, फिर मरना होगा। अर्ज़ किया, तो अभी मार लो और अल्लाह से दरख़्वास्त की, मुझे अर्ज़े मुक़द्दस (बैतुल मक़्दिस) के एक पत्थर फेंके जाने के फ़ासले तक क़रीब कर दे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर मैं उस जगह होता तो मैं तुम्हें उनकी क़ब्र दिखाता, रास्ते के किनारे पर सुर्ख़ टीले के नीचे।'

(सहीह बुख़ारी : 1339, 3407, नसाई : 4/119)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) लतमहू : उसे थप्पड़ मारा। (2) फ़क़अ ऐनहू : उसकी आँख फोड़ दी। (3) कसीबुन : टीला।

फ़ायदा : मौत का फ़रिश्ता, हज़रत मूसा (अलै.) के घर एक अजनबी आदमी की शक्ल में दाख़िल हुआ, मूसा (अलै.) ने उसको पहचाना नहीं, इसलिये बिला इजाज़त आने पर दुश्मन ख़याल करके अपने तहफ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ (सुरक्षा) में उसे थप्पड़ मारा, चूंकि वो इंसानी शक्ल में था, इसलिये फ़रिश्ता वापस चला गया। अगर मौत का वक़्त आ चुका होता तो फ़रिश्ता इत्तिलाअ देकर आता और मारे बग़ैर वापस न जाता। मूसा (अलै.) ने अपने दिफ़ाअ में आँख फोड़ी। इसलिये दियत का सवाल पैदा नहीं होता और फिर अल्लाह तआला ने आँख लौटा भी दी। फिर जब फ़रिश्ता दोबारा आया तो मूसा (अलै.) मरने के लिये तैयार हो गये। क्योंकि अब उनका वक़्त मुक़र्रर हो गया था, इसलिये उन्होंने मज़ीद ज़िन्दगी की ख़्वाहिश नहीं की, सिर्फ़ अर्ज़े मुक़द्दसा से क़ुर्ब (क़रीब) की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो अल्लाह ने उनकी दरख़्वास्त क़ुबूल कर ली और उनको बैतुल मक़्दिस से इस क़द्र क़रीब कर दिया कि अगर बैतुल मक़्दिस से पत्थर फेंका जाये तो वो उनकी क़ब्र के क़रीब गिरेगा और इस्रा की रात रसूलुल्लाह (ﷺ) को मूसा (अलै.) की क़ब्र दिखाई गई।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " جَاءَ

(6149) हम्माम बिन मुनब्बिह की अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान की गई हदीसों में से एक ये है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मौत का फ़रिश्ता, मूसा (अलै.) के पास आकर कहने लगा, अपने रब की बात क़ुबूल करो। तो मूसा (अलै.) ने मौत के फ़रिश्ते की

مَلَكُ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَقَالَ لَهُ أَجِبْ رَبَّكَ - قَالَ - فَلَطَمَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَيْنَ مَلَكِ الْمَوْتِ فَفَقَأَهَا - قَالَ - فَرَجَعَ الْمَلَكُ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى فَقَالَ إِنَّكَ أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لَكَ لاَ يُرِيدُ الْمَوْتَ وَقَدْ فَقَأَ عَيْنِي - قَالَ - فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ عَيْنَهُ وَقَالَ ارْجِعْ إِلَى عَبْدِي فَقُلِ الْحَيَاةَ تُرِيدُ فَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْحَيَاةَ فَضَعْ يَدَكَ عَلَى مَتْنِ ثَوْرٍ فَمَا تَوَارَتْ يَدُكَ مِنْ شَعْرَةٍ فَإِنَّكَ تَعِيشُ بِهَا سَنَةً قَالَ ثُمَّ مَهْ قَالَ ثُمَّ تَمُوتُ ‏.‏ قَالَ فَالآنَ مِنْ قَرِيبٍ رَبِّ أَمِتْنِي مِنَ الأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمْيَةً بِحَجَرٍ ‏.‏ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ‏"‏ وَاللَّهِ لَوْ أَنِّي عِنْدَهُ لأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ عِنْدَ الْكَثِيبِ الأَحْمَرِ ‏"‏ ‏.‏

आँख पर थप्पड़ मारा और उसे फोड़ दिया तो फ़रिश्ता अल्लाह तआला की तरफ़ लौट गया और कहा, तूने मुझे ऐसे बन्दे की तरफ़ भेजा, जो मरना नहीं चाहता और उसने मेरी आँख फोड़ दी है तो अल्लाह ने उसकी आँख उसको लौटा दी और फ़रमाया, 'मेरे बन्दे के पास दोबारा जाओ और कहो, ज़िन्दगी चाहते हो? तो अगर ज़िन्दगी के ख़्वाहाँ हो तो अपना हाथ बैल की पुश्त (पीठ) पर रखो तो तेरा हाथ जिस क़द्र बाल छिपायेगा तो तुम उतने साल ज़िन्दा रहोगे। मूसा (अलै.) ने पूछा, फिर क्या होगा? कहा, फिर मौत होगी। तो मूसा (अलै.) ने कहा, अभी जल्दी ही, ऐ मेरे रब! मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा के पास एक पत्थर फेंकने के फ़ासले पर मार। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! अगर मैं वहाँ होता तो मैं तुम्हें उनकी क़ब्र, रास्ते के एक जानिब सुर्ख़ टीले के पास दिखाता।'

(सहीह बुख़ारी : 3407)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अजिब रब्बक : अपने रब की दावत कुबूल करो, अपने रब के पास चलो।

قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، بِمِثْلِ هَذَا الْحَدِيثِ

(6150) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حُجَيْنُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ

(6151) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि एक यहूदी अपना सामान पेश कर रहा था, उसकी ऐसी क़ीमत लगाई

أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ الْهَاشِمِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ بَيْنَمَا يَهُودِيٌّ يَعْرِضُ سِلْعَةً لَهُ أُعْطِيَ بِهَا شَيْئًا كَرِهَهُ أَوْ لَمْ يَرْضَهُ - شَكَّ عَبْدُ الْعَزِيزِ -قَالَ لاَ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى الْبَشَرِ . قَالَ فَسَمِعَهُ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَلَطَمَ وَجْهَهُ - قَالَ - تَقُولُ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى الْبَشَرِ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ أَظْهُرِنَا قَالَ فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ إِنَّ لِي ذِمَّةً وَعَهْدًا . وَقَالَ فُلاَنٌ لَطَمَ وَجْهِي . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لِمَ لَطَمْتَ وَجْهَهُ " . قَالَ . قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى الْبَشَرِ وَأَنْتَ بَيْنَ أَظْهُرِنَا . قَالَ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى عُرِفَ الْغَضَبُ فِي وَجْهِهِ ثُمَّ قَالَ " لاَ تُفَضِّلُوا بَيْنَ أَنْبِيَاءِ اللَّهِ فَإِنَّهُ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَيَصْعَقُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللَّهُ - قَالَ - ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَى فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ بُعِثَ أَوْ فِي أَوَّلِ مَنْ بُعِثَ فَإِذَا مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ آخِذٌ بِالْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي أَحُوسِبَ

गई, जिसे उसने नापसंद किया या उस पर राज़ी न हुआ। अब्दुल अज़ीज़ रावी को शक है, कहने लगा, नहीं उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अलै.) को तमाम इंसानों से बरगुज़ीदा किया या चुन लिया। उसकी ये बात एक अन्सारी आदमी ने सुन ली और उसके मुँह पर थप्पड़ मारा और कहा, तू कहता है, उस ज़ात की क़सम! जिसने तमाम इंसानों से मूसा (अलै.) का इन्तिख़ाब किया, हालांकि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे अंदर मौजूद हैं। तो यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, ऐ अबुल क़ासिम! मुझे पैमान और अमान हासिल है और बताया, फ़लाँ ने मेरे चेहरे पर थप्पड़ मारा है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा, तूने उसके चेहरे पर थप्पड़ क्यों मारा? अन्सारी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! इसने आपके हमारे दरम्यान होते हुए ये कहा है, उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अलै.) को तमाम इंसानों पर फ़ौक़ियत दी, इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) नाराज़ हो गये। यहाँ तक कि आपके चेहरे पर नाराज़ी नुमायाँ हो गई। फिर आपने फ़रमाया, 'अम्बिया के दरम्यान मुक़ाबला न करो, क्योंकि सूर में फूंका जायेगा तो आसमान वाले और ज़मीन वाले बेहोश हो जायेंगे। फिर उसमें दोबारा फूंका जायेगा तो मैं सबसे पहले उठने वाला हूँगा या पहले उठने वालों में से हूँगा, तो मूसा (अलै.) अर्श का

पाया पकड़े होंगे। मुझे मालूम नहीं, क्या उनकी तूर वाली बेहोशी शुमार कर ली गई या मुझसे पहले उठाये गये और मैं ये नहीं कहता कि कोई एक यूनुस बिन मत्ता (अलै.) से अफ़ज़ल है।' (सहीह बुख़ारी : 3414)

بِصَعْقَتِهِ يَوْمَ الطُّورِ أَوْ بُعِثَ قَبْلِي وَلاَ أَقُولُ إِنَّ أَحَدًا أَفْضَلُ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى عَلَيْهِ السَّلاَمُ "

फ़ायदा : अम्बिया दरजात व मर्तबे के ऐतबार से एक दूसरे पर फ़ौक़ियत और बरतरी रखते हैं, जैसाकि कुरआन मजीद में सराहत है, 'हमने उनमें से कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।' लेकिन हम जब इस फ़ज़ीलत को बयान करने लगेंगे तो एक क़िस्म के मुवाज़ने और मुक़ाबले की सूरत पैदा होगी। इसलिये इसमें किसी रसूल की तहक़ीर व तन्क़ीस का पहलू पैदा हो जाने का अन्देशा है और इसी पहलू से रोकना मक़सूद है कि ऐसा उस्लूब इख़्तियार न करो, जिससे तहक़ीर व तन्क़ीस का पहलू निकलता हो और उसके मानने वालों के जज़्बात में इश्तिआल पैदा होता हो, (भावनाओं को ठेस पहुँचती हो) जैसाकि इस हदीस़ में यहूदी के क़ौल से मुसलमान के जज़्बात को ठेस पहुँची कि मूसा (अलै.) को आप (ﷺ) पर तरजीह दे रहा है, इसलिये उसने थप्पड़ रसीद कर दिया और यहाँ अगर थप्पड़ मारने वाले अबू बकर हैं तो उनको मअ़न्वी तौर पर आपकी नुसरत व हिमायत करने पर अन्सारी कह दिया गया है।

पहले नफ़ख़ा का असर ज़िन्दों और मुर्दों दोनों पर होगा, ज़िन्दे फ़ौत हो जायेंगे और मुर्दों पर बेहोशी और घबराहट तारी होगी, अम्बिया को बरज़ख़ी ज़िन्दगी हासिल है। जब क़यामत के वाक़ेअ होने के लिये सूर में फूंका जायेगा तो उससे बरज़ख़ी ज़िन्दगी भी ख़त्म हो जायेगी। इसलिये जब रसूलुल्लाह (ﷺ) दूसरे नफ़ख़ से सबसे पहले होश में आयेंगे तो मूसा (अलै.) को अर्श के पाये को पकड़े हुए देखेंगे और इस मसले में मुतरद्दिद (तरद्दुद में) होंगे। मूसा (अलै.) पहले होश में आ गये हैं या तूर की बेहोशी के सबब उनको इस सइक़ा से अलग रखा गया है, इस तरह उन्हें जुज़्ई फ़ज़ीलत हासिल है।

(6152) इमाम साहब बिल्कुल यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ سَوَاءً .

(6153) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, एक यहूदी आदमी और एक मुसलमान आदमी के दरम्यान तल्ख़ कलामी

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ،

حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ اسْتَبَّ رَجُلاَنِ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ وَرَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ الْمُسْلِمُ وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا صلى الله عليه وسلم عَلَى الْعَالَمِينَ ‏.‏ وَقَالَ الْيَهُودِيُّ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى الْعَالَمِينَ ‏.‏ قَالَ فَرَفَعَ الْمُسْلِمُ يَدَهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَلَطَمَ وَجْهَ الْيَهُودِيِّ فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمْرِ الْمُسْلِمِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ لاَ تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَانِبِ الْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي أَكَانَ فِيمَنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي أَمْ كَانَ مِمَّنِ اسْتَثْنَى اللَّهُ ‏"‏ ‏.‏

हुई तो मुसलमान ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने मुहम्मद (ﷺ) को तमाम जहानों पर फ़ौक़ियत बख़्शी, सबसे चुन लिया और यहूदी ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अलै.) को सब जहानों से चुन लिया। इस पर मुसलमान ने अपना हाथ उठाया और यहूदी के चेहरे पर थप्पड़ रसीद कर दिया। तो यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) को अपने और मुसलमान के मामले की ख़बर दी और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे मूसा (अलै.) पर तरजीह न दो, क्योंकि तमाम लोग बेहोश होंगे तो मैं सबसे पहले होश में आऊँगा और उस वक़्त मूसा (अलै.) अर्श के एक किनारे को पकड़े हुए होंगे। मुझे मालूम नहीं, क्या वो भी बेहोश होने वालों में दाख़िल थे और मुझसे पहले होश में आ गये या उनमें से हैं, जिनको अल्लाह ने इस सइक़ा से अलग क़रार दिया है।'

(सहीह बुख़ारी : 6517, 2411, 7472, अबू दाऊद : 4671)

फ़ायदा : आपने क़ुरआन मजीद की इस आयत की तरफ़ इशारा फ़रमाया है, 'और सूर में फूंका जायेगा तो जो भी आसमानों और ज़मीन में मौजूद हैं, बेहोश हो जायेंगे, मगर जिनको अल्लाह बचाना चाहेगा, फिर उसमें दोबारा फूंका जायेगा तो फ़ौरन उठकर देखने लगेंगे।' (सूरह ज़ुमर : 68)

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ قَالاَ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ

(6154) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, एक मुसलमान आदमी और एक यहूदी आदमी में तल्ख़ कलामी हुई, आगे ऊपर वाली हदीस है। (सहीह बुख़ारी : 3408)

بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ اسْتَبَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ .

(6155) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, एक यहूदी नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, जिसके चेहरे पर तमांचा मारा गया था, आगे ऊपर वाली हदीस़ के हम मानी हदीस़ है हाँ इसमें ये है, आपने फ़रमाया, 'सो मुझे मालूम नहीं, क्या वो भी बेहोश होने वालों में थे और मुझसे पहले होश में आ गये या उनके लिये तूर की बेहोशी पर इक्तिफ़ा कर ली गई।'

(सहीह बुख़ारी : 2412, 3398, 4638, 6518, 6917, 7427, अबू दाऊद : 4668)

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ، يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ جَاءَ يَهُودِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَدْ لُطِمَ وَجْهُهُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " فَلاَ أَدْرِي أَكَانَ مِمَّنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي أَوِ اكْتَفَى بِصَعْقَةِ الطُّورِ " .

(6156) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अम्बिया के दरम्यान फ़ज़ीलत क़ायम न करो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تُخَيِّرُوا بَيْنَ الأَنْبِيَاءِ " . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ عَمْرُو بْنِ يَحْيَى حَدَّثَنِي أَبِي .

(6157) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं इस्रा की रात मूसा (अलै.) के

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، وَشَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، الْبُنَانِيِّ

وَسُلَيْمَانَ التَّيْمِيُّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَتَيْتُ - وَفِي رِوَايَةِ هَدَّابٍ مَرَرْتُ - عَلَى مُوسَى لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي عِنْدَ الْكَثِيبِ الأَحْمَرِ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي قَبْرِهِ

पास आया' एक रिवायत में है, 'मेरा सुर्ख़ टीले के पास मूसा (अलै.) पर गुज़र हुआ, अपनी क़ब्र में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे।'
(नसाई : 3/216, 1632, 1633)

وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى يَعْنِي ابْنَ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ، أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، كِلاَهُمَا عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، التَّيْمِيِّ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَرَرْتُ عَلَى مُوسَى وَهُوَ يُصَلِّي فِي قَبْرِهِ " . وَزَادَ فِي حَدِيثِ عِيسَى " مَرَرْتُ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي "

(6158) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीस़ बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं मूसा (अलै.) के पास से गुज़रा, वो अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे।' ईसा की हदीस़ में ये इज़ाफ़ा है, 'जिस रात मुझे इस्रा (मैराज) करवाया गया, मेरा गुज़र हुआ।'

फ़ायदा : क़ब्रों में इंसानों को बरज़ख़ी ज़िन्दगी हासिल है, जिसके सबब उन्हें अ़ज़ाब व स़वाब हो रहा है, अम्बिया की बरज़ख़ी ज़िन्दगी का मैयार सबसे आ़ला व अशरफ़ है, लेकिन उसकी कैफ़ियत और हक़ीक़त नहीं जाना जा सकता और बरज़ख़ी ज़िन्दगी में इंसान किसी अ़मल का मुकल्लफ़ नहीं है, क्योंकि बरज़ख़ दारुल अ़मल नहीं है, लेकिन अम्बिया को नमाज़ से लज़्ज़त व सुरूर हासिल होता है, इसलिये मूसा (अ़लै.) आपको अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते नज़र आये।

बाब 4 : यूनुस (अलै.) का तज़्किरा और नबी (ﷺ) का फ़रमान, 'किसी इंसान के लिये ये ज़ेबा नहीं है कि वो ये कहे कि मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ'

باب فِي ذِكْرِ يُونُسَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ " لاَ يَنْبَغِي لِعَبْدٍ اَنْ يَقُوْلَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ يُوْنُوسِ ابْنِ مَتَّى

(6159) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़रमान है, मेरे किसी बन्दे के लिये ज़ेबा नहीं है' इब्ने मुसन्ना की रिवायत में लिअ़ब्द की जगह अ़ब्दी है 'कि वो यूँ कहे, मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 3416, 4631, 4633)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ سَمِعْتُ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ " قَالَ - يَعْنِي اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى -لاَ يَنْبَغِي لِعَبْدٍ لِي - وَقَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى لِعَبْدِي - أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى عَلَيْهِ السَّلاَمُ " . قَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ .

फ़ायदा : हज़रत यूनुस (अ़लै.) का जो वाक़िया कुरआन मजीद में बयान हुआ है, उसके सबब किसी के दिल में उनकी शान और मक़ाम कम होने का वहम गुज़र सकता है, हालांकि कोई इंसान कितना भी बुलंद मक़ाम हासिल कर ले वो किसी नबी के मक़ाम को नहीं पहुँच सकता, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, मेरे किसी बन्दे के लिये भी यूनुस (अ़लै.) पर अपने आपको तरजीह देना जाइज़ नहीं। रहा किसी रसूल या नबी को तरजीह देना तो ये इस सूरत में मना है, जब उससे तहक़ीर व तन्क़ीस लाज़िम आती हो या नफ़्से नुबूवत में तरजीह दी जाये, अम्बिया के मक़ाम व मर्तबे में फ़र्क़ व तफ़ावुत तो एक हक़ीक़त है, जिसका इंकार मुम्किन नहीं है।

(6160) हज़रत इब्ने अ़ब्बास, नबी (ﷺ) के चाचा के बेटे, नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'किसी बन्दे के लिये ज़ेबा

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ

جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الْعَالِيَةِ، يَقُولُ حَدَّثَنِي ابْنُ عَمِّ، نَبِيِّكُمْ صلى الله عليه وسلم - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ - عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ "مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى ". وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ .

नहीं है कि वो ये कहे, मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ।' आपने उनकी निस्बत, उसके बाप की तरफ़ की।

(सहीह बुख़ारी : 3395, 3413, 4631, 4633, 7539, अबू दाऊद : 4671)

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, मत्ता हज़रत यूनुस (अलै.) के बाप का नाम है, माँ का नाम नहीं है, जबकि वहब बिन मुनब्बिह, इमाम तबरी और इब्ने असीर, इसको माँ का नाम क़रार देते हैं। (तक्मिला, जिल्द 5, पेज नं. 35)

باب مِنْ فَضَائِلِ يُوسُفَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

बाब 5 : यूसुफ़ (अलै.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا يَحْيَى، بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ قَالَ " أَتْقَاهُمْ " . قَالُوا لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ . قَالَ " فَيُوسُفُ نَبِيُّ اللَّهِ ابْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ خَلِيلِ اللَّهِ " . قَالُوا لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ . قَالَ " فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونِي خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا " .

(6161) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! सबसे इज़्ज़त वाला कौन है? आपने फ़रमाया, 'जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है।' लोगों ने कहा, हम इसके बारे में आपसे सवाल नहीं कर रहे। आपने फ़रमाया, 'तो यूसुफ़, अल्लाह का नबी, अल्लाह के नबी का बेटा, अल्लाह के नबी का पोता, अल्लाह के ख़लील का पड़पोता।' लोगों ने कहा, हम आपसे इसके बारे में सवाल नहीं कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, 'तो अरबी क़बीलों के बारे में मुझसे पूछते हो? उनमें जो जाहिलिय्यत के दौर में बेहतर थे, वो इस्लाम के दौर में भी बेहतर हैं, जब कि दीन की सूझ-बूझ हासिल कर लें।'

(सहीह बुख़ारी : 3353, 3490)

फ़ायदा : जब लोगों ने आपसे अक्रमुन्नासि का सवाल किया तो आपने ख़याल किया, उन सिफ़ात व ख़साइल के बारे में सवाल कर रहे, जिनसे इंसान इज़्ज़त व शर्फ़ हासिल करता है, इसलिये आपने फ़रमाया, अल्लाह की हुदूद का सबसे ज़्यादा पाबंदी करने वाला। जब उन्होंने कहा, हमारा सवाल ये नहीं है तो आपने समझा, ये उन सिफ़ात के साथ ख़ानदानी शराफ़त की आमेज़िश चाहते हैं तो आपने यूसुफ़ (अलै.) का नाम लिया, क्योंकि वो इन सिफ़ात के साथ शर्फ़े नुबूवत और नुबूवत के ख़ानदान के फ़र्द थे, ताबीरे रुअ्या के माहिर थे, दुनियवी सियादत व क़यादत के हामिल थे और आला सीरत व किरदार के साथ रिआया (जनता) के मुहाफ़िज़ व निगरान और उनके हमदर्द और ख़ैरख़्वाह थे। जब उन्होंने कहा, हमारा सवाल ये भी नहीं है। तब आपने फ़रमाया, अरबी क़बीलों के बारे में पूछते हो? और क़बीलों को मआदिन (कानें) क़रार दिया है, क्योंकि उनमें अलग-अलग मअ्दनियात होती हैं, जिनकी क़द्रो-क़ीमत और मक़ाम अलग-अलग होता है, जैसाकि क़बीले अलग-अलग ख़स्लतों व आदतों के हामिल होते हैं। इसलिये आपने फ़रमाया, मकारिमे अख़्लाक़ और आदाते हसना से मुत्तसिफ़ लोग जो जाहिलिय्यत में शर्फ़ व मन्ज़िलत के हामिल थे, इस्लाम लाने के बाद अगर दीन की सूझ-बूझ और उसके फ़हम का मल्का (ताक़त) पैदा कर लें तो उन्हें दीने इस्लाम में भी क़द्रो-मन्ज़िलत हासिल होगी।

बाब 6 : ज़करिया (अलै.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ زَكَرِيَّاءَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

(6162) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़करिया (अलै.) बढ़ई (सुथार) थे।'
(इब्ने माजह : 2150)

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " كَانَ زَكَرِيَّاءُ نَجَّارًا " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है, दस्तकारी का पेशा और अपने हाथों से अपने लिये कमाना फ़ज़ीलत का बाइस़ है।

बाब 7 : ख़ज़िर (ख़िज़्र अलै.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ الْخَضِرِ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

(6163) हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कहा, नोफ़ बिकाली का ख़्याल है कि बनू इस्राईल के मूसा (अलै.) वो ख़ज़िर (ख़िज़्र) के साथी मूसा नहीं थे। तो उन्होंने कहा, अल्लाह का दुश्मन ग़लत कहता है। मैंने हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मूसा (अलै.) बनी इस्राईल को ख़िताब करने के लिये खड़े हुए तो उनसे सवाल किया गया, सब लोगों से ज़्यादा इल्म वाला कौन है? तो उन्होंने कहा, मैं सबसे ज़्यादा इल्म रखता हूँ।' आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला उनसे नाराज़ हो गया, क्योंकि उन्होंने उसका इल्म अल्लाह की तरफ़ नहीं लौटाया। सो अल्लाह ने उनकी तरफ़ वह्य फ़रमाई कि मेरे बन्दों में से एक बन्दा, दो समुन्द्रों के संगम पर है, जो तुझसे ज़्यादा इल्म रखता है। मूसा (अलै.) ने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मैं उस तक कैसे पहुँचूँ? तो उन्हें कहा गया, एक टोकरी में एक मछली रख लो तो जहाँ तुम मछली को गुम पाओगे, वो वहीं होंगे। तो वो चल पड़े और उनके साथ उनके ख़ादिम यूशअ़ बिन नून भी रवाना हो गये। सो मूसा (अलै.) ने एक टोकरी में मछली उठाई और चल दिये और उनके ख़ादिम भी साथ थे। दोनों चलते-चलते एक चट्टान पर

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ كُلُّهُمْ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْفًا الْبِكَالِيَّ يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ صَاحِبَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَيْسَ هُوَ مُوسَى صَاحِبَ الْخَضِرِ عَلَيْهِ السَّلاَمُ . فَقَالَ كَذَبَ عَدُوُّ اللَّهِ سَمِعْتُ أُبَىَّ بْنَ كَعْبٍ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " قَامَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ فَسُئِلَ أَىُّ النَّاسِ أَعْلَمُ فَقَالَ أَنَا أَعْلَمُ . قَالَ فَعَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ الْعِلْمَ إِلَيْهِ فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ أَنَّ عَبْدًا مِنْ عِبَادِي بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ قَالَ مُوسَى أَىْ رَبِّ كَيْفَ لِي بِهِ فَقِيلَ لَهُ احْمِلْ حُوتًا فِي مِكْتَلٍ فَحَيْثُ تَفْقِدُ الْحُوتَ فَهُوَ

पहुँच गये तो मूसा (अलै.) और उनका साथी सो गये और मछली टोकरी में फड़फड़ाई। यहाँ तक कि वो एक ताक़ की तरह हो गया और मछली के लिये सुरंग बन गया और मूसा और उनके साथी के लिये तअज्जुब अंगेज़ ठहरा और वो बाक़ी दिन और रात चलते रहे और मूसा (अलै.) का साथी, उन्हें इसकी ख़बर देना भूल गया। तो जब सुबह हुई, मूसा (अलै.) ने अपने साथी से कहा, सुबह का खाना लाओ, हमें अपने सफ़र से बहुत थकान लाहिक़ हो गई है।' आपने फ़रमाया, 'जब तक उस थकान से जिसका उन्हें हुक्म दिया गया था, गुज़र नहीं गये, उन्हें थकान लाहिक़ नहीं हुई। साथी ने कहा, आपको मालूम है, जब हम चट्टान के पास ठहरे (मछली समुन्द्र में चली गई) तो मैं आपको बताना भूल गया और इसका तज़्किरा करना मुझे शैतान ही ने भुलाया है और उसने समुन्द्र में अपना अजीब तरीक़े से रास्ता बना लिया। मूसा (अलै.) ने फ़रमाया, उस जगह के हम मुतलाशी थे। फिर वो दोनों अपने नक़्शे क़दम का पीछा करते हुए लौट आये। यहाँ तक कि उस चट्टान के पास पहुँच गये तो मूसा (अलै.) ने एक आदमी देखा, जो अपने आपको कपड़े से ढांपे हुए था। मूसा (अलै.) ने उसे सलाम कहा, तो ख़ज़िर ने उनसे पूछा, इस इलाक़े में सलाम कहने वाला कहाँ से आ गया। उन्होंने कहा, मैं मूसा हूँ। पूछा, बनी इस्राईल के मूसा? कहा, हाँ! ख़ज़िर ने कहा, अल्लाह के उलूम में से एक इल्म तुम्हें हासिल

ثُمَّ . فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقَ مَعَهُ فَتَاهُ وَهُوَ يُوشَعُ بْنُ نُونٍ فَحَمَلَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ حُوتًا فِي مِكْتَلٍ وَانْطَلَقَ هُوَ وَفَتَاهُ يَمْشِيَانِ حَتَّى أَتَيَا الصَّخْرَةَ فَرَقَدَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَفَتَاهُ فَاضْطَرَبَ الْحُوتُ فِي الْمِكْتَلِ حَتَّى خَرَجَ مِنَ الْمِكْتَلِ فَسَقَطَ فِي الْبَحْرِ - قَالَ - وَأَمْسَكَ اللَّهُ عَنْهُ جِرْيَةَ الْمَاءِ حَتَّى كَانَ مِثْلَ الطَّاقِ فَكَانَ لِلْحُوتِ سَرَبًا وَكَانَ لِمُوسَى وَفَتَاهُ عَجَبًا فَانْطَلَقَا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمَا وَلَيْلَتِهِمَا وَنَسِيَ صَاحِبُ مُوسَى أَنْ يُخْبِرَهُ فَلَمَّا أَصْبَحَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا -قَالَ - وَلَمْ يَنْصَبْ حَتَّى جَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِي أُمِرَ بِهِ . قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا . قَالَ مُوسَى ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا . قَالَ يَقُصَّانِ آثَارَهُمَا حَتَّى أَتَيَا الصَّخْرَةَ فَرَأَى رَجُلاً مُسَجًّى عَلَيْهِ بِثَوْبٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ مُوسَى . فَقَالَ لَهُ الْخَضِرُ أَنَّى بِأَرْضِكَ السَّلاَمُ قَالَ أَنَا مُوسَى . قَالَ

مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ قَالَ نَعَمْ . قَالَ إِنَّكَ عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ عَلَّمَكَهُ اللَّهُ لاَ أَعْلَمُهُ وَأَنَا عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ عَلَّمَنِيهِ لاَ تَعْلَمُهُ . قَالَ لَهُ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلاَ أَعْصِي لَكَ أَمْرًا . قَالَ لَهُ الْخَضِرُ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلاَ تَسْأَلْنِي عَنْ شَىْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا . قَالَ نَعَمْ . فَانْطَلَقَ الْخَضِرُ وَمُوسَى يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ الْبَحْرِ فَمَرَّتْ بِهِمَا سَفِينَةٌ فَكَلَّمَاهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمَا فَعَرَفُوا الْخَضِرَ فَحَمَلُوهُمَا بِغَيْرِ نَوْلٍ فَعَمَدَ الْخَضِرُ إِلَى لَوْحٍ مِنْ أَلْوَاحِ السَّفِينَةِ فَنَزَعَهُ فَقَالَ لَهُ مُوسَى قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ عَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا . قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا قَالَ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ثُمَّ خَرَجَا مِنَ السَّفِينَةِ فَبَيْنَمَا هُمَا يَمْشِيَانِ عَلَى السَّاحِلِ

है, जो अल्लाह ने तुझे ही सिखाया है, मैं उससे आगाह नहीं हूँ और अल्लाह के उलूम में से मुझे एक इल्म हासिल है, जो उसने मुझे सिखाया है, आप उसे नहीं जानते। मूसा (अलै.) ने उनसे पूछा, क्या मैं आपके साथ इस शर्त पर रह सकता हूँ कि आप मुझे वो रुश्दो-हिदायत सिखायें, जो आपको सिखाई गई है। तो ख़ज़िर (अलै.) ने कहा, आप मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकेंगे और आप ऐसी चीज़ पर सब्र कैसे कर सकेंगे, जिससे आप वाक़िफ़ नहीं होंगे। मूसा (अलै.) ने कहा, इन्शाअल्लाह! आप मुझे साबिर पायेंगे और मैं आपकी किसी मामले में मुख़ालिफ़त नहीं करूँगा। ख़ज़िर (अलै.) ने उनसे कहा, अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो आप मुझसे किसी चीज़ के बारे में सवाल नहीं करेंगे, यहाँ तक कि ख़ुद मैं तुम्हारे सामने उसका ज़िक्र छेड़ूँ। उन्होंने कहा, ठीक है। तो ख़ज़िर और मूसा (अलै.) समुन्द्र के किनारे पर चल पड़े और उनके पास से एक कश्ती गुज़री तो उन्होंने कश्ती वालों से कहा, इन दोनों को भी सवार कर लें। उन्होंने ख़ज़िर को पहचान कर, उन दोनों को बग़ैर किराये के सवार कर लिया। हज़रत ख़ज़िर (अलै.) ने कश्ती के तख़्तियों में से एक तख़्ती का रुख़ करके उसको उखाड़ दिया तो मूसा (अलै.) ने उन्हें कहा, इन लोगों ने हमें किराये के बग़ैर सवार कर लिया और तूने इनकी कश्ती का रुख़ करके इसमें सूराख़ कर डाला। नतीजा ये निकले कि कश्ती वाले डूब जायें, तूने बहुत

إِذَا غُلاَمٌ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ فَأَخَذَ الْخَضِرُ بِرَأْسِهِ فَاقْتَلَعَهُ بِيَدِهِ فَقَتَلَهُ . فَقَالَ مُوسَى أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَاكِيَةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا . قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا قَالَ وَهَذِهِ أَشَدُّ مِنَ الأُولَى . قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍ بَعْدَهَا فَلاَ تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا . فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ . يَقُولُ مَائِلٌ . قَالَ الْخَضِرُ بِيَدِهِ هَكَذَا فَأَقَامَهُ . قَالَ لَهُ مُوسَى قَوْمٌ أَتَيْنَاهُمْ فَلَمْ يُضَيِّفُونَا وَلَمْ يُطْعِمُونَا لَوْ شِئْتَ لَتَخِذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا . قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا " . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَرْحَمُ اللَّهُ مُوسَى لَوَدِدْتُ أَنَّهُ كَانَ صَبَرَ حَتَّى يُقَصَّ عَلَيْنَا مِنْ أَخْبَارِهِمَا " . قَالَ وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَانَتِ الأُولَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا " . قَالَ " وَجَاءَ عُصْفُورٌ حَتَّى وَقَعَ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ ثُمَّ نَقَرَ فِي الْبَحْرِ .

नागवार काम किया। उसने कहा, क्या मैंने कहा नहीं था, आप मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकेंगे। मूसा (अलै.) ने कहा, मेरी भूल पर मेरा मुवाख़ज़ा (पकड़) न कीजिये और मुझ पर मेरे मामले में सख़्ती न करें। फिर वो कश्ती से निकले और वो समुन्द्र के किनारे-किनारे चल रहे थे कि उन्होंने एक बच्चा दूसरे बच्चों के साथ खेलता हुआ देखा, सो ख़ज़िर (अलै.) ने उसका सर पकड़ा और अपने हाथ से अलग कर दिया और उसे क़त्ल कर डाला। तो मूसा (अलै.) ने कहा, क्या आपने एक बेगुनाह लड़के को मार डाला, जिसने किसी का ख़ून न किया था, आपने बहुत नापसन्दीदा काम किया। ख़ज़िर (अलै.) ने कहा, क्या मैंने आपसे कहा नहीं था, आप मेरे साथ रहकर सब्र नहीं कर सकेंगे?' आपने फ़रमाया, 'ये इंकार पहले से शदीद था। मूसा (अलै.) ने कहा, अगर अब मैं किसी चीज़ के बारे में आपसे सवाल करूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखें, आप मेरी तरफ़ से मअ़ज़ूर होंगे। तो वो दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि एक बस्ती वालों के पास पहुँच गये। बस्ती के बाशिन्दों से खाना तलब किया, उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी करने से इंकार कर दिया तो वहाँ उन्होंने एक दीवार पाई जो गिरना चाहती थी (करीब था कि वह गिर जाये) तो ख़ज़िर (अलै.) ने उसे इशारे से सीधा कर दिया। यानी वो एक तरफ़ झुकी हुई थी, ख़ज़िर (अलै.) ने अपने हाथ से उसे सीधा कर दिया। मूसा (अलै.) ने कहा, ये

فَقَالَ لَهُ الْخَضِرُ مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ إِلاَّ مِثْلَ مَا نَقَصَ هَذَا الْعُصْفُورُ مِنَ الْبَحْرِ ". قَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ وَكَانَ يَقْرَأُ وَكَانَ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ صَالِحَةٍ غَصْبًا . وَكَانَ يَقْرَأُ وَأَمَّا الْغُلاَمُ فَكَانَ كَافِرًا

लोग जब हम इनके पास आये तो इन्होंने हमारी मेहमान नवाज़ी न की और हमें खाना न खिलाया, अगर आप चाहते तो आप इस काम की मज़दूरी ले लेते। ख़ज़िर (अलै.) ने कहा, ये मेरे और तेरे दरम्यान जुदाई का वक़्त है। मैं अभी आपको उन चीज़ों की हक़ीक़त बताता हूँ जिन पर आप सब्र नहीं कर सके।' रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला मूसा (अलै.) पर रहम फ़रमाये, मैं चाहता हूँ मूसा ने सब्र किया होता ताकि हमें उनकी बातें सुनाई जातीं' और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'पहली बार मूसा (अलै.) भूल गये।' और आपने फ़रमाया, 'एक चिड़िया आई और कश्ती के किनारे बैठ गई, फिर समुन्द्र में ठोंग मारी तो ख़ज़िर (अलै.) ने उन्हें कहा, मेरे और तेरे इल्म ने अल्लाह की मालूमात में उतनी ही कमी की है, जितना इस चिड़िया ने समुन्द्र में कमी की है।' सईद बिन जुबैर कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास की क़िरअत इस तरह थी, 'उनके आगे एक बादशाह था, जो हर सहीह और सालिम कश्ती को छीन लेता था और पढ़ते थे, रहा ग़ुलाम तो वो काफ़िर था।'

(सहीह बुख़ारी : 2267, 2728, 4727, 6673, तिर्मिज़ी : 3130)

फ़ायदा : नौफ़ बिकाली : ये कूफ़ा का एक क़िस्सा गो शख़्स था, जो कअ़ब अहबार की बीवी का बेटा या कअ़ब का भतीजा था, जिसने कहा, जिस मूसा का ख़ज़िर के साथ वाक़िया बयान किया गया है, वो मूसा बिन लैस़ बिन इफ़्राईम बिन यूसुफ़ (अलै.) था, मअ़रूफ़ जलीलुल क़द्र नबी मूसा बिन इमरान न था। कुछ ने नाम मूसा बिन मीशा बयान किया है।

ख़ज़िर : जो एक सफ़ेद, ख़ाली ज़मीन पर बैठे तो वो सब्ज़े से लहलहाने लगी, उनके नसब व ख़ानदान

के बारे में बहुत इख़्तिलाफ़ है। यही सूरते हाल नाम की है, कोई क़ाबिले ऐतमाद बात नहीं कही जा सकती, इसमें भी इख़्तिलाफ़ है वो फ़रिश्ता हैं या इंसान, नबी हैं या वली। अगर वो फ़रिश्ता नहीं हैं तो नबी हैं। जुम्हूर का मौक़िफ़ ये है कि वो नबी हैं लेकिन वो तक्वीनी उमूर के बारे में इल्म रखते थे, जिसका ताल्लुक़ उमूमन फ़रिश्तों से है और मूसा (अलै.) की नुबूवत तशरीई थी, उनकी ज़िन्दगी के बारे में भी इख़्तिलाफ़ है। अल्लामा आलूसी ने इस पर लम्बी बहस की है और अल्लामा सईदी के बक़ौल हर्फ़े आख़िर यही है, नबी (ﷺ) की अहादीसे सहीहा और दलाइले नक़लिया से उन उलमा के नज़रिये की ताईद होती है, जो हज़रत ख़ज़िर की वफ़ात के क़ाइल हैं। (शरह सहीह मुस्लिम, जिल्द 6, पेज नं. 859) तफ़्सीली बहस के लिये देखिये, रूहुल मआनी सूरह कहफ़ और बक़ौल अल्लामा तक़ी कुरआन व सुन्नत की मन्तक़ी दलील से मौत या हयात साबित नहीं है, इसलिये इसमें बहस व तम्हीस की बजाये तवक़्क़ुफ़ और सुकूत (ख़ामूशी) बेहतर है। (तक्मिला, जिल्द 5, पेज नं. 41) मज़ीद तफ़्सील के लिये देखिये तफ़्सीर 'अल्कुरआनुल करीम' सूरह कहफ़ अज़ हाफ़िज़ अब्दुस्सलाम भटवी (रह.), फ़तहुल बारी हाफ़िज़ इब्ने हजर शरह सहीह मुस्लिम अज़ मौलाना सईदी, जिल्द 6, पेज नं. 853-859

कज़-ब अदुव्वुल्लाह : चूंकि नोफ़ ने एक बिल्कुल बेबुनियाद और ग़लत बात कही थी, इसलिये हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ग़ुस्से में आकर ज़जर व तौबीख़ (डाँटने) के लिये ये अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये।

अतबल्लाहु अलैह : मूसा (अलै.) जैसे जलीलुल क़द्र की शान के मुताबिक़, तवाज़ोअ और अदब के लिहाज़ मुनासिब ये था कि वो अना अअ्लमु की बजाए अल्लाहु अअ्लमु फ़रमाते और अल्लाह अपने बुलंद और आला मर्तबे के हामिल बन्दों की मामूली बात पर भी पकड़ करता है, इसलिये उनकी लफ़्ज़ी पकड़ हुई।

मज्मउल बहरैन : दो समुन्द्रों का संगम, इसके बारे में इख़्तिलाफ़ है, वो कौन से दो समुन्द्र थे, लेकिन इसकी तअ्यीन की कोई ज़रूरत भी नहीं है, संगम बदलते रहते हैं।

यूशअ बिन नून : ये मूसा (अलै.) के बाद नबी बने और बतौरे ख़िदमत गुज़ार उनके शरीके सफ़र थे। जब मूसा (अलै.) सो गये तो ये जाग रहे थे और मछली जब ज़िन्दा होकर हरकत करके समुन्द्र में गिरी तो ये देख रहे थे। लेकिन उन्होंने मूसा (अलै.) को बेदार करना मुनासिब न समझा और सोचा जब बेदार हो जायेंगे तो मैं उन्हें आगाह करूँगा, क्योंकि मूसा (अलै.) ने उन्हें पाबंद किया था, जब मछली गुम हो जाये तो मुझे बताना, लेकिन वो भूल गये और जब मूसा (अलै.) बेदार हुए तो जल्दी में उनके साथ चल पड़े। जब मूसा (अलै.) ने आगे चलकर खाना तलब किया, तब याद आया और मअ्ज़रत के साथ सूरते हाल बयान कर दी।

अन्ना बिअर्ज़िकस्सलाम : यहाँ पर सलाम कहने वाला कहाँ से आ गया, यहाँ तो लोग सलाम नहीं कहते।

अना अ़ला इल्मिम्-मिन इल्मिल्लाहि अ़ल्लमनीही ला तअ़्लमुहू : मूसा (अ़लै.) का इल्म तशरीई था और ख़ज़िर (अ़लै.) का तक्वीनी था। यानी दुनिया में इस कायनात के अंदर जो कुछ हो रहा है और हमारी आँखों से ओझल है, हम उसके मुकल्लफ़ या पाबंद नहीं हैं, उन उमूरे ग़ैबिया से ताल्लुक़ रखता था और मूसा (अ़लै.) को तक्वीनात से कोई वास्ता न था और हज़रत मूसा (अ़लै.) का इल्म तशरीई था। जिसके मुताबिक़ इंसान ज़िन्दगी गुज़ारने का पाबंद है और उसका मुकल्लफ़ है और ख़ज़िर, एक इंसान होने के नाते उस पर अ़मल पैरा होने का पाबंद था। इसलिये वो शरई उमूर से आगाह था, अगरचे वो इल्म मूसा (अ़लै.) के मुक़ाबले में बहुत कम था, इसलिये ख़ज़िर (अ़लै.) ने मूसा (अ़लै.) के इल्म के बारे में भी कहा, ला अअ़्लम्हू मैं उससे आगाह नहीं हूँ, यानी आपके इल्म के ऐतबार से इस तरह ख़ज़िर इल्मे तक्वीनी के साथ कुछ तशरीई इल्म से भी आगाह थे, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अ़लै.) से फ़रमाया, हु-व अअ़्लमु मिन्क : वो आपसे ज़्यादा इल्म रखता है।

ला अअ़्सी ल-क अम्रा : मूसा ये समझते थे ये अल्लाह का बन्दा है इसलिये किसी शरई हुक्म और ज़ाब्ते की मुख़ालिफ़त नहीं करेगा, इसलिये उन्होंने कह दिया, आप मुझे इन्शाअल्लाह साबिर (सब्र करने वाला) पायेंगे और मैं आपके किसी हुक्म की मुख़ालिफ़त नहीं करूँगा, लेकिन जब उन्होंने ऐसे काम देखे जो शरई रू से या हालात के लिहाज़ से दुरुस्त न थे और उन्हें पता चल गया, मेरा उनके साथ चलना मुश्किल है तो उन्होंने जुदाई और फ़िराक़ चाहा, इसलिये तीसरे वाक़िये पर भी ऐतराज़ कर डाला।

नौल : उज्रत व मज़दूरी, यहाँ किराया मुराद है।

अ़मदल ख़ज़िरु इला लौहिन : हज़रत ख़ज़िर का कश्ती का तख़्ता उखाड़ना, कश्ती वालों में से किसी को भी नज़र न आ सका, इसलिये मल्लाहों और सवारियों में से किसी ने ऐतराज़ न किया और न कश्ती डूबी।

शैअन इम्रा : बहुत नागवार काम। **ला तुर्हिक़नी :** मुझे न ढांप यानी मुकल्लफ़ और ज़िम्मेदार न ठहरा।

मा नक़-स इल्मी व इल्मु-क मिन इल्मिल्लाह : और मेरे और तेरे इल्म ने अल्लाह की मालूमात में कमी नहीं की, ये अल्फ़ाज़ इंसानी मुहावरे के ऐतबार से हैं, वरना अल्लाह का इल्म लामहदूद है, इसलिये इसमें कमी का सवाल ही पैदा नहीं होता, सिर्फ़ इतना समझाना मक़सूद था कि मख़्लूक़ात के इल्म की अल्लाह के इल्म के साथ कोई मुनासिबत नहीं है।

नोट : वरअहुम् मलिकुन : की जगह अमामुहुम मलिकुन और अम्मल ग़ुलामु के बाद वका-न काफ़िरन ये क़िरअत तफ़्सीर व तौज़ीह के लिये है, ये क़ुरआन नहीं है।

(6164) सईद बिन जुबैर (रह.) बयान करते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कहा गया, नौफ़ का ख़्याल है, वो मूसा जो इल्म की तलाश में निकला था, वो बनी इस्राईल वाला मूसा न था। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने पूछा, तूने उससे ख़ुद सुना है? ऐ सईद! मैंने कहा, हाँ! उन्होंने फ़रमाया, नौफ़ ने ग़लत कहा।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الْقَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَقَبَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ قِيلَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْفًا يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى الَّذِي ذَهَبَ يَلْتَمِسُ الْعِلْمَ لَيْسَ بِمُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ . قَالَ أَسَمِعْتَهُ يَا سَعِيدُ قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ كَذَبَ نَوْفٌ .

(6165) हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये फ़रमाते सुना, 'जबकि मूसा (अलै.) अपनी क़ौम में, उन्हें वाक़ियाते इलाहिया से तज़्कीर व नसीहत फ़रमा रहे थे और अय्यामुल्लाह से मुराद उसकी नेमतें और उसकी आज़माइशें हैं, उस वक़्त उन्होंने कहा, मैं ज़मीन में अपने से बेहतर या ज़्यादा जानने वाला आदमी नहीं जानता। आपने फ़रमाया, 'अल्लाह ने उनकी तरफ़ वह्य भेजी, मैं ख़ैर को उससे ज़्यादा जानता हूँ या ये किसके पास है, ज़मीन में एक आदमी है, जो तुझसे बड़ा आलिम है, उसने अर्ज़ की, ऐ मेरे रब! मुझे उससे आगाह फ़रमाइये!' आपने फ़रमाया, 'तो उन्हें कहा गया, एक नमकीन मछली का ज़ादे राह लो, तो जहाँ तुम मछली को गुम पाओ तो वो वहीं होगा। आपने फ़रमाया, 'वो और उनका ख़ादिम चल पड़े यहाँ तक कि वो चट्टान के पास पहुँच गये तो उन (मूसा) से रास्ता मख़्फ़ी हो गया तो वो चल पड़े और अपने ख़ादिम को छोड़ दिया तो मछली कूद कर पानी

حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّهُ بَيْنَمَا مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ فِي قَوْمِهِ يُذَكِّرُهُمْ بِأَيَّامِ اللَّهِ وَأَيَّامُ اللَّهِ نَعْمَاؤُهُ وَبَلاَؤُهُ إِذْ قَالَ مَا أَعْلَمُ فِي الأَرْضِ رَجُلاً خَيْرًا أَوْ أَعْلَمَ مِنِّي . قَالَ فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ إِنِّي أَعْلَمُ بِالْخَيْرِ مِنْهُ أَوْ عِنْدَ مَنْ هُوَ إِنَّ فِي الأَرْضِ رَجُلاً هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ . قَالَ يَا رَبِّ فَدُلَّنِي عَلَيْهِ . قَالَ فَقِيلَ لَهُ تَزَوَّدْ حُوتًا مَالِحًا فَإِنَّهُ حَيْثُ تَفْقِدُ الْحُوتَ . قَالَ فَانْطَلَقَ هُوَ وَفَتَاهُ حَتَّى انْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَعُمِّيَ عَلَيْهِ فَانْطَلَقَ وَتَرَكَ فَتَاهُ فَاضْطَرَبَ الْحُوتُ فِي الْمَاءِ فَجَعَلَ لاَ يَلْتَئِمُ عَلَيْهِ صَارَ مِثْلَ الْكُوَّةِ قَالَ فَقَالَ فَتَاهُ أَلاَ أَلْحَقُ نَبِيَّ اللَّهِ فَأُخْبِرَهُ قَالَ فَنُسِّيَ . فَلَمَّا

تَجَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ‏.‏ قَالَ وَلَمْ يُصِبْهُمْ نَصَبٌ حَتَّى تَجَاوَزَا ‏.‏ قَالَ فَتَذَكَّرَ قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ‏.‏ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي ‏.‏ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا فَأَرَاهُ مَكَانَ الْحُوتِ قَالَ هَا هُنَا وُصِفَ لِي ‏.‏ قَالَ فَذَهَبَ يَلْتَمِسُ فَإِذَا هُوَ بِالْخَضِرِ مُسَجًّى ثَوْبًا مُسْتَلْقِيًا عَلَى الْقَفَا أَوْ قَالَ عَلَى حَلاَوَةِ الْقَفَا قَالَ السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ ‏.‏ فَكَشَفَ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ قَالَ وَعَلَيْكُمُ السَّلاَمُ مَنْ أَنْتَ قَالَ أَنَا مُوسَى ‏.‏ قَالَ وَمَنْ مُوسَى قَالَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ ‏.‏ قَالَ مَجِيءٌ مَا جَاءَ بِكَ قَالَ جِئْتُ لِتُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ‏.‏ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ‏.‏ شَىْءٌ أُمِرْتُ بِهِ أَنْ أَفْعَلَهُ إِذَا رَأَيْتَهُ لَمْ تَصْبِرْ ‏.‏ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلاَ أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ‏.‏ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلاَ تَسْأَلْنِي عَنْ شَىْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ‏.‏ فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا

में चली गई और पानी उस पर मिलता नहीं था, यहाँ तक कि वो ताक़ की तरह हो गया।' आपने फ़रमाया, 'ख़ादिम ने दिल में कहा, क्या मैं अल्लाह के नबी के पास पहुँचकर, उसे ख़बर न दूँ? लेकिन उसे भुला दिया गया, तो जब दोनों (मतलूबा जगह से) गुज़र गये, अपने ख़ादिम से कहा, हमारा सुबह का खाना लाओ, हमें हमारे इस सफ़र से थकान लाहिक़ हो गई है।' आपने फ़रमाया, 'जब तक वो (मतलूब जगह से) गुज़र नहीं गये, थके नहीं। (मूसा के पूछने पर) उसे याद आ गया, उसने कहा, जान लीजिये! जब हम चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं मछली के बारे में बताना भूल गया और मुझे इसका ज़िक्र शैतान ने भुला दिया और उसने समुन्द्र में अपना रास्ता हैरानकुन बना लिया। मूसा (अलै.) ने कहा, वही तो हमारा मतलूब था, वो अपने पाँव के नक़्श की पैरवी करते हुए वापस लौटे। तो ख़ादिम ने उन्हें मछली की जगह दिखाई। मूसा (अलै.) ने कहा, ये जगह मुझे बताई गई थी। तो वो वहाँ तलाश करने लगे, अचानक उनकी नज़र ख़ज़िर पर पड़ी। जो कपड़ा ओढ़े हुए थे और चित लेटे हुए थे या कहा, गुद्दी सीधी करके लेटे हुए थे। मूसा (अलै.) ने कहा, अस्सलामु अलैकुम! तो उसने चेहरे से कपड़ा हटाकर कहा, व अलैकुम अस्सलाम! तुम कौन हो? उन्होंने कहा, मैं मूसा हूँ। पूछा, कौन मूसा? जवाब दिया, बनी इस्राईली मूसा। पूछा, किस मक़सद के लिये आये हो? जवाब दिया, मैं आया हूँ ताकि जो रुश्दो-हिदायत तुम्हें सिखाई गई है आप मुझे सिखायें। कहा, आप मेरे साथ रह कर सब्र नहीं

कर सकेंगे और जिस चीज़ से आप आगाह नहीं होंगे, उस पर आप सब्र कैसे कर सकेंगे? जिस चीज़ के करने का मुझे हुक्म मिलेगा, आप जब उसको देखेंगे, सब्र नहीं कर सकेंगे? मूसा (अलै.) ने कहा, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे यक़ीनन साबिर पायेंगे और मैं किसी काम में आपकी मुख़ालिफ़त नहीं करूँगा। ख़ज़िर (अलै.) ने कहा, तो अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो मुझसे किसी चीज़ के बारे में सवाल न करें, यहाँ तक कि मैं ख़ुद ही उसका आप से तज़्किरा छेड़ूँ। सो वो दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब दोनों एक कश्ती पर सवार हो गये तो ख़ज़िर ने उसमें शिगाफ़ कर डाला।' आपने फ़रमाया, 'ख़ज़िर ने (शिगाफ़ के लिये) उस पर सारा वज़न डाल दिया तो मूसा (अलै.) ने उनसे कहा, क्या तूने शिगाफ़ कर डाला है कि कश्ती वालों को डुबा दो।? ये तूने ख़तरनाक काम किया। ख़ज़िर ने कहा, क्या मैंने कहा न था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे? मूसा (अलै.) ने जवाब दिया, मुझसे जो भूल हो गई है, उस पर पकड़ न कीजिये और मेरे लिये मेरा काम मुश्किल न बना दीजिये। चुनाँचे वो दोनों चल दिये, यहाँ तक कि जब वो खेलते हुए बच्चों को मिले तो ख़ज़िर बिला सोचे-समझे उनमें से एक बच्चे की तरफ़ चल पड़े और उसे क़त्ल कर डाला। इस वाक़िये पर मूसा (अलै.) बहुत ज़्यादा दहशतज़दा हो गये। कहा, क्या तूने एक बेगुनाह शख़्स को, बग़ैर इसके, उसने किसी को क़त्ल किया हो, क़त्ल कर डाला है, तूने बहुत नापसन्दीदा काम किया है।' रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا . قَالَ انْتَحَى عَلَيْهَا . قَالَ لَهُ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا . قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا قَالَ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا . فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا لَقِيَا غِلْمَانًا يَلْعَبُونَ . قَالَ فَانْطَلَقَ إِلَى أَحَدِهِمْ بَادِيَ الرَّأْىِ فَقَتَلَهُ فَذُعِرَ عِنْدَهَا مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ ذَعْرَةً مُنْكَرَةً . قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَاكِيَةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عِنْدَ هَذَا الْمَكَانِ " رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى مُوسَى لَوْلاَ أَنَّهُ عَجَّلَ لَرَأَى الْعَجَبَ وَلَكِنَّهُ أَخَذَتْهُ مِنْ صَاحِبِهِ ذَمَامَةٌ . قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍ بَعْدَهَا فَلاَ تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا . وَلَوْ صَبَرَ لَرَأَى الْعَجَبَ - قَالَ وَكَانَ إِذَا ذَكَرَ أَحَدًا مِنَ الأَنْبِيَاءِ بَدَأَ بِنَفْسِهِ " رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى أَخِي كَذَا رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْنَا - " فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ لِئَامًا فَطَافَا فِي الْمَجَالِسِ فَاسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا

فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ . قَالَ لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا . قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ وَأَخَذَ بِثَوْبِهِ . قَالَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ إِلَى آخِرِ الآيَةِ . فَإِذَا جَاءَ الَّذِي يُسَخِّرُهَا وَجَدَهَا مُنْخَرِقَةً فَتَجَاوَزَهَا فَأَصْلَحُوهَا بِخَشَبَةٍ وَأَمَّا الْغُلاَمُ فَطُبِعَ يَوْمَ طُبِعَ كَافِرًا وَكَانَ أَبَوَاهُ قَدْ عَطَفَا عَلَيْهِ فَلَوْ أَنَّهُ أَدْرَكَ أَرْهَقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَأَرَدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا . وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلاَمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ " . إِلَى آخِرِ الآيَةِ .

इस जगह ये फ़रमाया, हम पर और मूसा पर अल्लाह की रहमत हो, अगर वो जल्दबाज़ी से काम न लेते तो इन्तिहाई तअज्जुब ख़ेज़ काम देखते, लेकिन उन्हें अपने साथी से हया आई (मज़म्मत से डर गये) कहने लगे, अगर इसके बाद मैं आपसे किसी चीज़ के बारे में सवाल करूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखें, आप मेरी तरफ़ से मअ़ज़ूर (उ़ज़्र को पहुँचे) होंगे (अब मेरे पास कोई उ़ज़्र न होगा) और अगर वो सब्र करते हैरानकुन चीज़ें देखते।' हज़रत उबय ने बताया, जब आप अम्बिया में से किसी का ज़िक्र करते तो शुरूआत अपने आपसे करते हुए फ़रमाते, 'हम पर और हमारे फ़लाँ भाई पर अल्लाह की रहमत हो, अल्लाह की हम पर रहमत हो। चुनाँचे वो दोनों चल खड़े हुए, यहाँ तक कि वो एक बस्ती वालों के पास आये जो कमीने लोग थे, वो दोनों मज्लिसों में घूमे, बस्ती वालों से खाना माँगा तो उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी करने से इंकार कर दिया तो उन्होंने बस्ती में एक दीवार देखी, जो गिरना चाहती थी तो ख़ज़िर ने उसे दुरुस्त कर दिया। मूसा (अलै.) ने कहा, अगर आप चाहते तो इसकी उजरत ले लेते। ख़ज़िर (अलै.) ने कहा, अब मेरा और तेरा साथ ख़त्म हुआ और कपड़ा पकड़ लिया और कहा, अब मैं तुम्हें उन बातों की हक़ीक़त बताता हूँ, जिन पर तुम सब्र न कर सके। कश्ती का मामला तो ये था कि वो चंद मिस्कीनों की मिल्कियत थी, जो दरिया में मेहनत-मज़दूरी करते थे, मैंने चाहा कि इस कश्ती को ऐबदार कर दूँ, क्योंकि उनके आगे एक ऐसा बादशाह था जो हर कश्ती को

ज़बरदस्ती छीन लेता था तो जब उसको छीनने वाला आयेगा, उसे टूटी हुई पायेगा तो उससे आगे गुज़र जायेगा और वो उसे एक तख़्ता लगाकर ठीक कर लेंगे और रहा लड़का तो उसकी तबीअत और मिज़ाज में कुफ़्र क़ुबूल करने का माद्दा पहले दिन से रख दिया गया था और उसके वालिदैन उस पर बहुत मुश्फ़िक़ व मेहरबान थे तो अगर वो जवानी को पहुँच जाता तो उन्हें भी सरकशी और कुफ़्र में मुब्तला कर देता, तो हमने चाहा कि उनका रब उसके बदले में उन्हें उससे बेहतर लड़का अता करे जो पाकीज़ा हो और क़राबत का ख़्याल रखने वाला हो और रहा दीवार का मामला तो वो शहर के दो यतीम बच्चों की थी और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था और उनका बाप एक अच्छा नेक आदमी था।' (सूरह कहफ़ : 82 के आख़िर तक)

मुफ़रदातुल हदीस़ : **(1) इन्नी अअ्लमु बिल्ख़ैरि मिन्हु :** मैं ख़ूब जानता हूँ कि उससे बेहतर कौन है। **(2) औ इन्दा मन हु-व :** या उससे ज़्यादा ख़ैर किसके पास है। **(3) दुल्लनी अलैह :** उस तक मेरी राहनुमाई करें ताकि मैं उस तक पहुँच सकूँ। **(4) उम्मि-य अलैह :** उस पर रास्ता ओझल हो गया और वो अपने साथी से अलग हो गये, लेकिन ये रावी का वहम है, क्योंकि मछली की गुमशुदगी के वक़्त मूसा (अलै.) पास ही सोये हुए थे, लेकिन उसने बेदार करना मुनासिब न समझा। **(5) हलावतिल क़फ़ाअ :** गुद्दी के दरम्यान, यानी एक तरफ़ नहीं लेटे थे, बल्कि चित लेटे थे। **(6) मुजिउन मा जाअ बि-क :** किसी अहम और ज़रूरी काम के लिये आप आये हैं या किसी मक़सद के लिये आये हैं। **(7) इन्तहा अलैहा :** (तख़्ता तोड़ने के लिये) सारा वज़न उस पर डाल दिया। **(8) बादियर्रअ्यि :** बिला सोचे-समझे। **(9) ज़ुइ-र इन्दहा मूसा ज़अ्रतन मुन्करतन :** इन्तिहाई ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा या दहशतज़दा हो गये। **(10) ज़मामतुन : हया :** मलामत और मज़म्मत का ख़ौफ़, लिआम, लईम की जमा है, कमीने और ख़सीस लोग, क्योंकि मेहमान नवाज़ी अच्छे अख़्लाक़ का हिस्सा है, कमीने लोग इससे इंकार करते हैं। **(11) तुबिअ यौ-म तुबिअ काफ़िरन :** उसके दिल में पहले दिन से ही कुफ़्र क़ुबूल करने का माद्दा था, उसके दिल में काफ़िरों की तरह बिगाड़ व

फ़साद की मुहब्बत और जहालत व क़सावत रख दी गई थी और वालिदैन उससे शफ़क़त व प्यार रखते थे, इसलिये वो उनके लिये कुफ़्र व तुग़यान का बाइस़ बनता, इसलिये अल्लाह तआला ने अपनी हिक्मते बालिग़ा के तहत वालिदैन को उनके शर से बचाने के लिये ख़ज़िर से क़त्ल करवा दिया और अगर ख़ज़िर इस हक़ीक़त से पर्दा न उठाते तो दूसरे उमूरे तक्वीनी की तरह, हम उस क़त्ल के राज़ से भी आगाह न हो सकते, अल्लाह तआला अपने बन्दों के हक़ में जो फ़ैसला करता है, वो उनके हक़ में बेहतर ही होता है, इसलिये अल्लाह तआला ने वालिदैन को उससे बेहतर औलाद दी। जो बक़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) एक लड़की थी, जिसकी पुश्त से एक नबी पैदा हुआ।

फ़ायदा : मूसा और ख़ज़िर (अलै.) के वाक़िये से स़ाबित होता है कि इंसान को तवाज़ोअ और फ़रौतनी इख़्तियार करना चाहिये और अपनी किसी ख़ूबी व कमाल को कामिल नहीं समझना चाहिये और इल्म में इज़ाफ़े का ख़्वाहाँ रहना चाहिये, ख़्वाह उसके लिये मशक़्क़त और तंगी ही बर्दाश्त करना पड़े। हज़रत मूसा (अलै.) ने हुसूले इल्म की ख़ातिर समुन्द्री सफ़र करने से भी गुरेज़ नहीं किया और किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हो जाये तो किसी बड़े आलिम की तरफ़ रुजूअ करना चाहिये और इल्मी मसाइल में बहस़ व मुबाहस़ा का मक़सद हक़ीक़त तक पहुँचना हो, सिर्फ़ अपनी इल्मियत और बड़ाई का इज़हार नहीं और अम्बिया को उन्हीं बातों का इल्म हासिल होता है, जिनका इल्म अल्लाह तआला की तरफ़ से उन्हें दे दिया जाता है, हज़रत ख़ज़िर मूसा (अलै.) के कामों की हक़ीक़त नहीं समझ सकते, इसलिये उन पर ख़ामोश नहीं रह सके और आख़िरकार उनसे अलग ही हो गये और इससे ये भी मालूम होता है कि एक आलिम, सफ़र में अपनी ख़िदमत के लिये अपने किसी शागिर्द को साथ रख सकता है और नबी को भी भूख और थकान लाहिक़ होती है और ज़ादे राह साथ रखने की ज़रूरत पेश आती है और अल्लाह तआला जानता है, क्या हुआ है, क्या होगा और क्या नहीं होगा और अगर उसको होना होता तो क्योंकर होता और दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उसकी मशियत और इरादे से हो रहा है और इंसान जो कुछ करता है, उसकी अता करदा क़ुदरत और इख़्तियार से करता है, कुफ़्र व ईमान, हिदायत व ज़लालत भी उसकी अता करदा क़ुदरत व इख़्तियार और उसके इरादे व मशिय्यत के तहत हैं, अगर वो क़ुदरत व इख़्तियार न दे तो इंसान कुछ भी न कर सके, न नेकी, न बदी, न शर, न ख़ैर और इंसान को शरीअत के हर हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म करना चाहिये, उसे हुक्म की हिक्मत व मस्लिहत समझ आये या न आये।

(6166) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली हदीस़ बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ

حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، كِلاَهُمَا عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، بِإِسْنَادِ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، نَحْوَ حَدِيثِهِ.

وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَرَأَ { لَتَخِذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا} .

(6167) हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने लत्तख़िज़्-त की बजाए लतख़िज़्-त पढ़ा, यानी इत्तख़-ज़ की जगह तख़ि-ज़ मानी एक ही है।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ تَمَارَى هُوَ وَالْحُرُّ بْنُ قَيْسِ بْنِ حِصْنٍ الْفَزَارِيُّ فِي صَاحِبِ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هُوَ الْخَضِرُ . فَمَرَّ بِهِمَا أُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ الأَنْصَارِيُّ فَدَعَاهُ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ يَا أَبَا الطُّفَيْلِ هَلُمَّ إِلَيْنَا فَإِنِّي قَدْ تَمَارَيْتُ أَنَا وَصَاحِبِي هَذَا فِي صَاحِبِ مُوسَى الَّذِي سَأَلَ السَّبِيلَ إِلَى لُقِيِّهِ فَهَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَذْكُرُ شَأْنَهُ فَقَالَ أُبَىٌّ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " بَيْنَمَا مُوسَى فِي مَلإٍ مِنْ بَنِي

(6168) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि उनका और हुर्र बिन क़ैस बिन हसन फ़ज़ारी का मूसा (अ़लै.) के साथी के बारे में झगड़ा हुआ। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, वो ख़ज़िर था तो उनके पास से हज़रत उबय बिन कअ़ब अन्सारी (रज़ि.) गुज़रे, सो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया और कहा, ऐ अबू तुफ़ैल! हमारे पास आइये, क्योंकि मेरा और मेरे इस साथी का मूसा (अ़लै.) के उस साथी के बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ है, जिस तक पहुँचने का मूसा (अ़लै.) ने रास्ता पूछा था, क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसका हाल सुना है? इस पर हज़रत उबय (रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'जबकि मूसा (अ़लै.) बनी इस्राईल की एक जमाअ़त में थे तो उनके पास एक आदमी आकर पूछने लगा, क्या आप अपने से किसी बड़े आ़लिम को जानते हैं? मूसा (अ़लै.) ने

إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ لَهُ هَلْ تَعْلَمُ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْكَ قَالَ مُوسَى لاَ . فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَى مُوسَى بَلْ عَبْدُنَا الْخَضِرُ - قَالَ - فَسَأَلَ مُوسَى السَّبِيلَ إِلَى لُقِيِّهِ فَجَعَلَ اللَّهُ لَهُ الْحُوتَ آيَةً وَقِيلَ لَهُ إِذَا افْتَقَدْتَ الْحُوتَ فَارْجِعْ فَإِنَّكَ سَتَلْقَاهُ فَسَارَ مُوسَى مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَسِيرَ ثُمَّ قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا . فَقَالَ فَتَى مُوسَى حِينَ سَأَلَهُ الْغَدَاءَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ . فَقَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي . فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا فَوَجَدَا خَضِرًا . فَكَانَ مِنْ شَأْنِهِمَا مَا قَصَّ اللَّهُ فِي كِتَابِهِ " . إِلاَّ أَنَّ يُونُسَ قَالَ فَكَانَ يَتَّبِعُ أَثَرَ الْحُوتِ فِي الْبَحْرِ .

कहा, नहीं! तो अल्लाह ने मूसा (अलै.) की तरफ़ वह्य भेजी, बल्कि हमारा बन्दा ख़ज़िर है। यानी आप नहीं! तो मूसा (अलै.) ने उनसे मिलने की सूरत या राह पूछी, चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनके लिये मछली (की गुमशुदगी) को निशानी ठहराया और उनसे कहा गया, जब मछली गुम पाओ तो लौट आओ, आप उसको मिल सकेंगे। मूसा (अलै.) जिस क़द्र अल्लाह को मन्ज़ूर था, चले। फिर अपने ख़ादिम से कहा, हमारा सुबह का खाना लाइये तो मूसा (अलै.) के ख़ादिम ने जब उन्होंने उससे सुबह का खाना माँगा, कहा, जान लीजिये! जब हम चट्टान के पास ठहरे तो मैं मछली के बारे में बताना भूल गया और इसका तज़्किरा करना मुझे शैतान ही ने भुलाया। सो मूसा (अलै.) ने अपने ख़ादिम से कहा, वही जगह तो हमारा मतलूब थी। तो वो अपने पाँव के निशान का पीछा करते हुए लौटे और उन्हें ख़ज़िर (अलै.) मिल गये, तो उनका वो वाक़िया पेश आया, जिसको अल्लाह ने अपनी किताब में बयान फ़रमाया है। मगर यूनुस की रिवायत में ये है, वो समुन्द्र में मछली के निशान का पीछा कर रहे थे।

फ़ायदा : सईद बिन जुबैर और नौफ़ बिकाली का इख़्तिलाफ़ मूसा (अलै.) की शख़्सियत के बारे में था, जिसके बारे में सईद ने हज़रत इब्ने अब्बास से पूछा और यहाँ हज़रत इब्ने अब्बास और हुर्र बिन क़ैस का इख़्तिलाफ़ मूसा (अलै.) के साथी के बारे में है कि वो कौन था और यहाँ सवाल हज़रत उबय बिन कअ़ब से हुआ है।

इस किताब के कुल बाब 60 और 331 हदीसें हैं।

كتاب فضائل الصحابة رضى الله تعالى عنهم

किताबु फ़ज़ाइलिस्सहाबा(रज़ि.)

सहाबा किराम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

हदीस़ नम्बर 6169 से 6499 तक

तआरुफ़ किताबु फ़ज़ाइले सहाबा

इन हदीसों में रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबाए किराम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल बयान हुए। उनमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन, फिर नुमायाँ मुहाजिरीन, अजिल्लए सहाबियात और अन्सार में से नुमायाँ अस्हाब के फ़ज़ाइल शामिल हैं। रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबा(रज़ि.) अम्बिया के बाद उन लोगों का मज्मूआ हैं जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, 'ये उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहीन में से और ये लोग अच्छे साथी हैं।'(सूरह निसा 4 : 69) इन हज़रात के फ़ज़ाइल में अल्लाह और रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ हक़ीक़ी ईमान और हक़ीक़ी मुहब्बत, दानाई, उम्मत की ख़िदमत, सख़ावत, शुजाअत, जाँ निसारी, ग़र्ज़ उन तमाम ख़ूबियों की दिल आवेज़ मिसालें सामने आ जाती हैं जो अहले ईमान को अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) के सामने सुर्ख़रू करने और दुनिया की नज़रों में इन्तिहाई इज़्ज़तमन्द और क़ाबिले मुहब्बत बनाने की ज़ामिन हैं। हज़रत अबू बकर(रज़ि.) सिद्दीक़े अकबर हैं और रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ उनका ताल्लुक़ अल्लाह और उसके रसूल के साथ कामिल ईमान और इन्तिहा दर्जे की मुहब्बत पर मबनी है, इसलिये रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने और उनके हवाले से ये इरशाद फ़रमाया, 'ऐसे दो जिनके दरम्यान तीसरा अल्लाह तआला है।'(सहीह मुस्लिम : 6169) आप(ﷺ) ने ये अज़ीमुश्शान सर्टिफ़िकेट भी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) को अता फ़रमाया, 'माल(के तआवुन) और(मेरा) साथ देने के मामले में मुझ पर सबसे ज़्यादा एहसान करने वाले अबू बकर हैं।'(सहीह मुस्लिम : 6170) वो सहीह मानी में रसूल(ﷺ) को बहुत क़रीब से जानते थे। अल्लाह के बाद उनकी मुहब्बत, इताअत और जाँ निसारी का मेहवर रसूलुल्लाह(ﷺ) थे। इसलिये अगर बनी नौअे इंसान में कोई रसूलुल्लाह(ﷺ) का ख़लील हो सकता तो वो अबू बकर(रज़ि.) ही होते। आप(ﷺ) ने हज़रत अम्र बिन आस(रज़ि.) के सवाल पर उनको ये बताया कि आपको इंसानों में से सबसे ज़्यादा मुहब्बत आइशा(रज़ि.) और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) से थी। रसूलुल्लाह(ﷺ) अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) ही को अपना जाँनशीन समझते थे और इस हवाले से तहरीर भी लिखवाना चाहते थे लेकिन अल्लाह का फ़ैसला यही था कि आप ये तहरीर न लिख सकें और मुसलमान अपनी शूरा के ज़रिये से यही फ़ैसला करें। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन बातों पर भी अपने अलावा अबू बकर और उमर(रज़ि.) के ईमान की शहादत दी जिन पर आम लोग फ़ोरी तौर पर यक़ीन करने के हवाले से तअम्मुल(हिचकिचाहट) का शिकार हो सकते थे।

हज़रत उमर(रज़ि.) सोहबत और रिफ़ाक़त में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) के फ़ोरन बाद आते थे। दीन, इल्म, फ़ुतूहात और उम्मत की ख़िदमात के हवाले से वो बुलंद तरीन मक़ाम पर फ़ाइज़ थे। उनका दिल और उनकी ज़बान पर हक़ जारी रहता था और कई बार अल्लाह के अहकाम, नुज़ूल से पहले हज़रत उमर(रज़ि.) के महसूसात और आपकी तरजीहात बन जाते। वो हक़ के मामले में सख़्तगीर थे,

इसलिये शैतान और उसके चेले(मुनाफ़िक़ीन वग़ैरह) उनसे कन्नी काटते थे। हज़रत उ़समान(रज़ि.) हया और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह में अपनी मिसाल आप थे। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जन्नत की बशारत के साथ उन्हें इब्तिला और आज़माइश से भी आगाह फ़रमा दिया था। हज़रत अ़ली(रज़ि.) को रसूलुल्लाह(ﷺ) से क़राबतदारी और उख़ुवत का अ़ज़ीम शर्फ़ भी हासिल था, वो अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) से मुहब्बत करते थे और अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) उनसे मुहब्बत करते थे। वो शुजाअ़त(बहादुरी) का पैकर थे। आप(ﷺ) ने आयते ततहीर के नुज़ूल के मौक़े पर उन्हें बतौर ख़ास अपने अहले बैत का हिस्सा क़रार दिया और पूरी उम्मत को अपने तमाम अहले बैत के साथ एहतिराम, मुहब्बत और इ़ज़्ज़त का सुलूक करने और हिदायत और दीन में उनसे इस्तिफ़ादे(फ़ायदा हासिल करने) की तल्क़ीन फ़रमाई।

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के ननिहाल में से थे। अस्साबिक़ूनल अव्वलून में शामिल थे। 16 साल की उ़म्र में ईमान से सरफ़राज़ हुए। उनकी वालिदा ने उनको कुफ़्र में वापस लाने के लिये भूख हड़ताल कर दी। उन्होंने ईमान को माँ की ज़िन्दगी पर तरजीह दी। उन्होंने पूरी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिफ़ाज़त को अपना नसबुल ऐन(ज़िन्दगी का मक़सद) बनाये रखा। उहुद के दिन आपके दिफ़ाअ़ में सीना सपर हुए तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनके लिये वो जुम्ला बोला जो उनके लिये सरमाय-ए-इफ़्तिख़ार(फ़ख़्र का बाइ़स) बन गया।, '(सअ़द!) तीर चलाओ! मेरे माँ-बाप तुम पर क़ुर्बान हों।'

हज़रत सअ़द(रज़ि.) के साथ उहुद के दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिफ़ाज़त में सीना सपर होने वालों में हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और हज़रत अबू उ़बैदा बिन जर्राह(रज़ि.) भी थे। ये सब आपके चोटी के जाँ निसारों में से थे। हज़रत तलहा(रज़ि.) को रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अलग-अलग मौक़ों पर अ़ज़ीम ख़िताबात से नवाज़ा, तलहा अल्ख़ैर, तलहा अल्फ़य्याज़ और तलहा अल्जूद। उहुद के दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) के दिफ़ाअ़ में उन्होंने 24 ज़ख़्म खाये। आप(ﷺ) ने उनके बारे में फ़रमाया, 'जिसे ये पसंद हो कि वो रूए ज़मीन पर चलते-फिरते शहीद को देख ले तो वो तलहा बिन उ़बैदुल्लाह(रज़ि.) को देख ले।'(जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3739) और ये भी फ़रमाया, 'तलहा उनमें से है जिन्होंने अपना वादा पूरा कर दिया।'(जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3202)

हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) आपकी फूफी हज़रत सफ़िय्या(रज़ि.) के फ़रज़न्द थे। आपको रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपना हवारी क़रार दिया। हज़रत अबू उ़बैदा(रज़ि.) ने उहुद के दिन आप(ﷺ) के सर पोश के हल्क़े अपने अगले दाँतों से निकाले तो उनके दोनों दाँत टूट गये। उन दो दाँतों के बग़ैर वो हसीन तरीन लोगों में शुमार होते थे। उन्होंने उस अमानत की सहीह तौर पर हिफ़ाज़त की थी जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी उठाई थी, इसलिये 'अमीनु हाज़िहिल उम्मत इस उम्मत के अमीन' के लक़ब से सरफ़राज़ हुए

बल्कि 'अमीनुन हक़्क़ अमीनिन' क़रार दिये गये। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इन हज़रात की ज़िन्दगी ही में इनके जन्नती होने की गवाही दे दी।

इसी सिलसिले में हज़रत हसन और हुसैन(रज़ि.) के फ़ज़ाइल हैं। ये दोनों आप(ﷺ) के महबूब नवासे थे। आपने दुआ फ़रमाई थी कि जो भी इनसे मुहब्बत करे अल्लाह उससे मुहब्बत करे। मुहब्बत में रसूलुल्लाह(ﷺ) से मुवाफ़िक़त करना ख़ुद आप(ﷺ) के साथ मुहब्बत की दलील है और आपके साथ मुहब्बत ईमान का लाज़िमी जुज़(हिस्सा) है। आप(ﷺ) ने हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के साथ उन दोनों साहबज़ादे और हज़रत अली(रज़ि.) को भी बतौर ख़ास अहले बैत में शामिल फ़रमा कर उन्हें भी आयते ततहीर का मिस्दाक़ कर दिया। उनके बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा(रज़ि.) और उनके बेटे उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) का ज़िक्र है। हज़रत ज़ैद(रज़ि.) को 'हिब्बु रसूलिल्लाह रसूलुल्लाह(ﷺ) का महबूब' कहा जाता था। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़ैद के बाद उसामा बिन ज़ैद भी मुझे महबूब है।' आप(ﷺ) अपने ख़ानदान के लोगों के साथ हद दर्जा मुहब्बत व शफ़क़त से पेश आते थे। ये बात उन सब के लिये अज़ीम फ़ज़ीलत का बाइस है।

इन हज़रात के बाद उम्महातुल मोमिनीन में से हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) और हज़रत आइशा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल बयान किये गये हैं। हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) ने जिस तरह आपके साथ ग़मख़्वारी की, अपना घर-बार, माल व दौलत आपके क़दमों में ढेर कर दी, जिस तरह सबसे पहले आप पर ईमान लाईं, मुश्किल तरीन दौर में नुबूवत के मिशन में भरपूर तौर पर आपका साथ दिया और जिस तरह से साबित क़दमी का मुज़ाहिरा किया, वो एक बीवी होने की हैसियत से पूरी इंसानियत के लिये मिसाल थीं, इन सब बातों की वजह से आप(ﷺ) ने उन्हें पूरी इंसानियत की चार कामिल तरीन ख़्वातीन में से एक क़रार दिया। उनके बाद आप(ﷺ) को बाक़ी अज़्वाज में से हज़रत आइशा(रज़ि.) से मुहब्बत थी और ये वही हैं जिन्होंने उम्महातुल मोमिनीन में से सबसे ज़्यादा दीन के अहकाम उम्मत तक पहुँचाये।

उनके बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) की लख़्ते जिगर 'ख़्वातीने जन्नत की सरदार' हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल बयान किये गये हैं। उनके फ़ज़ाइल में नुमायाँ तरीन बात ये है कि उन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) से बेपनाह मुहब्बत थी और आप(ﷺ) को उनसे और उनके बच्चों से बेपनाह मुहब्बत थी। वो मिसाली बेटी, मिसाली बीवी और मिसाली माँ थीं। इसलिये सय्यिदतु निसाइ अह्लिल जन्नत के मन्सब की सज़ावार थीं। फिर उम्महातुल मोमिनीन में से हज़रत उम्मे सलमा और ज़ैनब(रज़ि.) और दो नुमायाँ ख़्वातीन उम्मे ऐमन और उम्मे सुलैम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल बयान हुए हैं। ये ख़्वातीन रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ ताल्लुक़, जूदो-सख़ा और ख़िदमत व ईसार के हवाले से इन्तिहाई नुमायाँ थीं। उनके बाद कुछ दूसरे सहाबा के फ़ज़ाइल हैं। ये सब ईमान, अमले सालेह, इस्तिक़ामत, रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ मुहब्बत, ईसार, इल्म, शुजाअत और जाँ निसारी में नुमायाँ थे। उन सहाबा के जो फ़ज़ाइल सहीह मुस्लिम में ज़िक्र किये गये हैं उन पर नज़र डालें

तो बिलाल(रज़ि.) ईमान व इताअत की बिना पर रसूलुल्लाह(ﷺ) के घराने का हिस्सा समझे जाते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) क़ुरआन और सुन्नते रसूल(ﷺ) के बहुत बड़े आलिम थे। इसी तरह हज़रत उबय बिन कअब, मुआज़ बिन जबल और ज़ैद बिन साबित(रज़ि.) हामिलीने क़ुरआन थे। सअद बिन मुआज़(रज़ि.) अपने क़बीले के सरदार और रसूलुल्लाह(ﷺ) के ऐसे जाँ निसार थे कि उनकी मौत पर अर्शे इलाही भी झूम उठा। अबू दुजाना(रज़ि.) शुजाअत के पैकर थे। हज़रत जाबिर(रज़ि.) के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम(रज़ि.) ऐसे जरी शहीद थे कि उनका जनाज़ा उठने तक उन पर अल्लाह के मलाइका(फ़रिश्ते) अपने परों से साया फ़गन रहे। जुलैबीब(रज़ि.) अकेले 7 काफ़िरों को क़त्ल करके शहीद हुए। उनकी लाश मुहम्मद(ﷺ) ने किसी और को शरीक किये बग़ैर ख़ुद अपनी बांहों पर उठाया और सुपुर्दे ख़ाक किया। हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी(रज़ि.) का ताल्लुक़ एक रहज़न क़बीले से था मगर उस हक़ की मुहब्बत ने, जो रसूलुल्लाह(ﷺ) देकर भेजे गये थे, उन्हें ईमान का मुतलाशी ही नहीं बनाया बल्कि उनके ईमान के ज़रिये से उनके क़बीले को भी सर बुलंद कर दिया।

जरीर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) का मिज़ाज और अन्दाज़े गुफ़्तगू ऐसा था कि रसूलुल्लाह(ﷺ) उनको देखकर हमेशा तबस्सुम फ़रमाते(मुस्कुराते)। वो जब चाहते बिला रोक-टोक बारगाहे नुबूवत में हाज़िर हो जाते, आपकी दुआ ने उन्हें शहसवार, सालार और बुत शिकन(बुत तोड़ने वाला) बना दिया। रसूलुल्लाह(ﷺ) के चचाज़ाद अब्दुल्लाह बिन अब्बास(रज़ि.) की सआदतमन्दी और ख़िदमत की बिना पर उन्हें ऐसी दुआ मिली कि वो इस उम्मत के बहुत बड़े आलिम बन गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) को रसूलुल्लाह(ﷺ) के एक छोटे से फ़िक़रे ने आबिदे शब ज़िन्दादार बना दिया। हज़रत अनस(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के मासूम ख़िदमत गुज़ार, आपके सलीक़ा शआर ख़ादिम रसूलुल्लाह(ﷺ) से ऐसी दुआयें मिलीं कि दुनिया भी संवर गई और आख़िरत भी। अब्दुल्लाह बिन सलाम(रज़ि.) इस्लाम से पहले तौरात के आलिम और इस्लाम लाने के बाद क़ुरआनो-सुन्नत के आलिम बन गये। इस्तिक़ामत ऐसी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक ईमान पर क़ायम रहने की नवीद(ख़ुशख़बरी) अता फ़रमाई और लोगों ने कहा, फिर तो ये चलते-फिरते जन्नती हैं। अपनी तलवारों के ज़रिये से रसूलुल्लाह(ﷺ) का दिफ़ाअ(बचाव) करने वाले, अन्सार में से एक नुमायाँ फ़र्द, जिनकी ज़बान रसूलुल्लाह(ﷺ) के दिफ़ाअ में शमशीरे बुर्राँ थी। जिस तरह तलवार से दिफ़ाअ करने वालों को मलाइका की ताईद हासिल होती है, उसी तरह ज़बान से दिफ़ाअ करने वाले हस्सान(रज़ि.) को जिब्रईले अमीन(अलै.) की ताईद हासिल थी। हज़रत अबू हुरैरह दौसी(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) की उम्र मुबारक के आख़िरी सालों में आकर मुसलमान हुए, लेकिन फ़रामीने रसूलुल्लाह(ﷺ) के सबसे बड़े अमानतदार और मुबल्लिग़ बन गये। बद्र में शरीक होने वाले हातिब बिन अबी बल्तआ(रज़ि.) इस बात की मिसाल बने कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने सादा दिल साथियों की ग़लतियाँ किस तरह माफ़ फ़रमाते और कैसे बुलंद

मक़ामात पर पहुँचा देते थे। उन्होंने क़ुरैश के नाम ख़त लिखा था, ग़लती माफ़ हो जाने के बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन्हें शाहे रोम हिरक़्ल के नाम अपने मक्तूब गिरामी(लेटर) का नामा बरदार(क़ासिद) बना दिया। अस्हाबे बद्र की तरह अस्हाबे शजरह 'बैअ़ते रिज़वान करने वाले' भी अल्लाह के ख़ास बन्दे क़रार पाये और अल्लाह के रसूल(ﷺ) की उम्मीद के मुताबिक़ सबके सब आग से आज़ाद कर दिये गये। अबू मूसा(रज़ि.) और बिलाल(रज़ि.) वो ख़ुशक़िस्मत सहाबी हैं जिन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बिन माँगे बशारत अ़ता फ़रमाई। अबू मूसा(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के जाँ निसार और आपकी दुआओं के हक़दार बने। ये और इनका सारा क़बीला क़ुरआन की क़िरअत इस तरह करते थे कि ख़ुद रसूलुल्लाह(ﷺ) रुक कर इनकी क़िरअत सुना करते थे। हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब बिन उमय्या(रज़ि.) दुश्मनी छोड़कर अपने बने तो उनके मुताल्बे पर उनके बेटे हज़रत मुआविया(रज़ि.) को कातिबे वह्य बना दिया। हज़रत जअ़फ़र तय्यार(रज़ि.) और उनकी अहलिया अस्मा बिन्ते उ़मैस(रज़ि.) पहले हब्शा और फिर मदीना की तरफ़ हिज्रत करने वाले अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) की तरफ़ हिज्रत करने की बेहतरीन मिसाल क़रार पाये। सलमान, बिलाल और सुहैब(रज़ि.) हक़ के मुतलाशी और हक़ के जाँ निसार इस मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गये कि उनको नाराज़ करने वाला अल्लाह को नाराज़ करने के ख़तरे से दोचार हो सकता है। अन्सार ने जिस तरह नुसरत की, उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को मुकम्मल तौर पर अपना बना लिया, आप(ﷺ) ने दुनियवी ज़िन्दगी में उनकी नस्लों तक को दुआओं से नवाज़ा और आख़िरत में हौज़े कौसर पर उनका इन्तिज़ार करने की नवीद अ़ता फ़रमाई। वो सब भी इन्तिहाई फ़ज़ीलत के हक़दार क़रार पाये जिनके पूरे क़बीले इस्लाम में दाख़िल हो गये। हर वो इंसान जो इस्लाम से पहले ख़ैर व भलाई का हामिल था, इस्लाम लाने के बाद और ज़्यादा ऊँचा हो गया। क़ुरैश इस्लाम से पहले भी अख़्यार(बेहतरीन) थे, इस्लाम के बाद उनकी ख़्वातीन तक को भी ख़ैर की बुलंदियों पर फ़ाइज़ क़रार दिया गया। मुवाख़ात,(भाई चारगी) तारीख़े इंसानी का बेमिसाल वाक़िया भी अस्हाबे रसूल(ﷺ) की फ़ज़ीलत का सुबूत है। ये सहाबा उम्मत के लिये अमान हैं। ये ख़ुद और आगे इनसे फ़ैज़याब होने वाले जब तक अमानतदार और सच्चाई पर क़ायम रहे, दर्जा-बदर्जा उम्मत के लिये कामरानियों की ज़मानत बने, इसलिये रसूलुल्लाह(ﷺ) ने सहाबा को बुरा कहने से रोका और वाज़ेह फ़रमाया कि वो सारी उम्मत में सबसे अफ़ज़ल हैं। फिर उस ताबेई के फ़ज़ाइल बयान हुए जिसने रसूलुल्लाह(ﷺ) के अहकाम पर अ़मल को बाक़ी हर फ़ज़ीलत से मुक़द्दम क़रार दिया। आपने अहले यमन और अहले ओ़मान की तहसीन फ़रमाई और अहले मिस्र के साथ हुस्ने सुलूक की तल्क़ीन की। दूसरी तरफ़ क़बील-ए-सक़ीफ़ के एक कज़्ज़ाब और एक तबाहकार की ख़बर देकर वाज़ेह फ़रमाया कि इस्लाम की बरकात से वही मुस्तफ़ीद होगा(फ़ायदा उठायेगा) जो दिल से ईमान लायेगा और उसके मुताबिक़ अ़मल करेगा। आप(ﷺ) ने बताया कि आइन्दा ज़मानों में इस्लाम का नाम लेने वालों में भी ऐसे लोग बहुत कम होंगे, सौ में से एक।
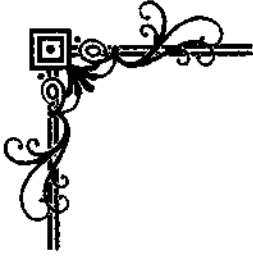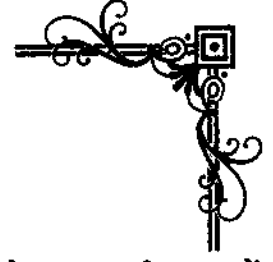
सहाबी : हर वो शख़्स शर्फ़े सहाबी का हामिल है, जिसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को इस्लाम की हालत में देखा या आपके साथ रहा और इस्लाम पर फ़ौत हुआ, लेकिन शर्फ़ व फ़ज़ीलत का मदार, मुद्दते रिफ़ाक़त और आपकी नुसरत व हिमायत पर है, जिस क़द्र कोई सहाबी आपके साथ ज़्यादा अर्सा रहा और अपनी जान व माल और वक़्त से आपकी नुसरत व हिमायत की, उसी क़द्र उसको ज़्यादा दर्जा और फ़ज़ीलत हासिल है और अम्बिया के बाद सहाबा किराम का मर्तबा है और सहाबा किराम में सबसे अफ़ज़ल और बरतर अबू बकर हैं, फिर उमर, फिर अहले सुन्नत की अक्सरियत के नज़दीक उ़समान और फिर अ़ली(रज़ि.) फिर बाक़ी अ़शर-ए-मुबश्शरा, फिर बद्र में शरीक होने वाले, फिर उहुद में हाज़िर होने वाले, फिर बैअ़ते रिज़्वान करने वाले।

كتاب فضائل الصحابة رضى الله تعالى عنهم

46. सहाबा किराम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رضى الله عنه

बाब 1 : अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ،

(6169) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) ने उसे बताया, मैंने मुश्रिकों के क़दम अपने सरों पर देखे, जबकि हम ग़ार में थे तो मैंने

حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ، حَدَّثَهُ قَالَ نَظَرْتُ إِلَى أَقْدَامِ الْمُشْرِكِينَ عَلَى رُءُوسِنَا وَنَحْنُ فِي الْغَارِ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ إِلَى قَدَمَيْهِ أَبْصَرَنَا تَحْتَ قَدَمَيْهِ فَقَالَ " يَا أَبَا بَكْرٍ مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللَّهُ ثَالِثُهُمَا " .

अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इनमें से किसी ने अपने क़दमों पर नज़र डाल ली, वो हमें अपने क़दमों तले देख लेगा। तो आपने फ़रमाया, 'ऐ अबू बकर! तेरा उन दो शख़्सों के बारे में क्या गुमान है, जिनका तीसरा अल्लाह है।'

(सहीह बुख़ारी : 3922, 4663, तिर्मिज़ी : 3096)

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) और अबू बकर(रज़ि.) मदीना की तरफ़ हिज्रत करते वक़्त जबले सौर की एक ग़ार में छिपे थे, जिसमें इंसान पेट के बल ही दाख़िल हो सकता है, इसलिये उससे बाहर क़दमों पर ही नज़र पड़ सकती है, 'लौ' जिन नहवियों के नज़दीक इस्तिक़बाल के लिये आता है, उनके नज़दीक हज़रत अबू बकर ने ये बात उस वक़्त कही, जबकि मुश्रिकीन ग़ार पर खड़े थे और सहीह बात यही है, लेकिन अक्सर नहवी चूंकि लौ को माज़ी के मानी में इस्तेमाल करते हैं, उनके नज़दीक अबू बकर(रज़ि.) ने ये बात उनके जाने के बाद शुक्रगुज़ारी के तहत कही थी, लेकिन ये बात सियाक़ व सबाक़ के ख़िलाफ़ है और अल्लाहु सालिसुहा का मानी ये है, अल्लाह तआला उनका हामी और नासिर है, वरना अपने इल्म व क़ुदरत के लिहाज़ से हर दो शख़्सों के साथ तीसरा अल्लाह होता है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ يَحْيَى بْنِ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي، النَّضْرِ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ " عَبْدٌ خَيَّرَهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ زَهْرَةَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ " . فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ وَبَكَى فَقَالَ فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا . قَالَ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم هُوَ الْمُخَيَّرَ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا

(6170) हज़रत अबू सईद(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, 'एक बन्दा है, जिसे अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया है कि वो दुनिया का साज़ो-सामान और ख़ुशहाली ले ले या अल्लाह के यहाँ जो नेमतें और आसाइशें हैं, वो ले ले। तो उसने अल्लाह के यहाँ की नेमतों को पसंद किया।' इस पर अबू बकर(रज़ि.) रोने लगे और ख़ूब रोये और कहा, हमारे माँ-बाप और हम आप पर क़ुर्बान। अबू सईद(रह.) कहते हैं, इख़्तियार रसूलुल्लाह(ﷺ) को दिया गया

بِهِ . وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَمَنَّ النَّاسِ عَلَىَّ فِي مَالِهِ وَصُحْبَتِهِ أَبُو بَكْرٍ وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ لاَ تُبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةٌ إِلاَّ خَوْخَةَ أَبِي بَكْرٍ " .

और अबू बकर(रज़ि.) इस बात को हम सबसे ज़्यादा जानने वाले निकले और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सब लोगों से ज़्यादा मुझ पर अपना माल और वक़्त ख़र्च करने वाला अबू बकर है और अगर मैं किसी को ख़लील बनाता तो अबू बकर को ख़लील बनाता, लेकिन इस्लामी उख़ुवत हासिल है, मस्जिद में कोई खिड़की अबू बकर की खिड़की के सिवा न रहने दी जाये।'

(सहीह बुख़ारी : 3904, तिर्मिज़ी : 3660)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ عُبَيْدِ، بْنِ حُنَيْنٍ وَبُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم النَّاسَ يَوْمًا . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ .

(6171) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) बयान करते, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक दिन लोगों को ख़िताब फ़रमाया, आगे ऊपर वाली हदीस है।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ज़हरतदुन्या : दुनिया की रौनक़ व बहजत, ज़ाहिरी टीपटॉप, मुराद दुनिया की नेमतें और आसाइशें हैं। अमन्नन्नास : मुझ पर सबसे ज़्यादा ख़र्च करने वाला, वक़्त और माल ख़र्च करना मुराद है क्योंकि एहसान धरना मुराद नहीं हो सकता। क्योंकि रसूल पर एहसान धरना तो आमाल के बर्बादी का सबब है और रसूल का किसी चीज़ को क़ुबूल कर लेना, उसका एहसान है। ये भी मुराद हो सकता है अगर किसी के लिये आप पर एहसान धरना मुम्किन होता तो सबसे पहले अबू बकर(रज़ि.) को ये हक़ जतलाने का हक़ हासिल होता, जैसाकि तबरानी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास(रज़ि.) की रिवायत है आपने फ़रमाया, अबू बकर(रज़ि.) से बढ़कर मुझे हर किसी का एहसान नहीं है, उसने अपने माल और जान से मेरे साथ हमदर्दी की और अपनी बेटी मेरे साथ-ब्याही और सुनन तिर्मिज़ी में हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है आपने फ़रमाया, हमने हर एक के एहसान का बदला चुका दिया सिर्फ़ अबू बकर के एहसान का बदला नहीं चुकाया उसके एहसान का बदला अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे इनायत फ़रमायेगा।(तक्मिला, जिल्द 5, पेज नं. 65)**(2) ख़ौख़तुन :** खिड़की।**(3)**

ख़लील : सबसे कटकर एक का हो जाना, किसी दूसरे की गुंजाइश न रहना।

फ़ायदा : ये मर्ज़ुल मौत का वाक़िया है और आपने हज़रत अबू बकर(रज़ि.) की ख़िलाफ़त की तरफ़ इशारा करने के लिये, मस्जिद में खुलने वाली तमाम खिड़कियों को बंद करवा दिया, सिर्फ़ अबू बकर की खिड़की रहने दी, ताकि नमाज़ के लिये उससे मस्जिद में आ सकें। कुछ सहाबा किराम के दरवाज़े और खिड़कियाँ मस्जिद में खुलती थीं आपने उनके बारे में दो बार हुक्म सादिर फ़रमाया, पहली बार सिर्फ़ दरवाज़ा बंद करने का हुक्म दिया लेकिन हज़रत अ़ली(रज़ि.) के दरवाज़े को बंद नहीं करवाया इसलिये हदीस़ को अ़ल्लामा इब्नुल जौज़ी का मौज़ूअ क़रार देना बिला वजह और ग़लत है, दूसरी बार आपने खिड़कियों के साथ हज़रत अ़ली(रज़ि.) का दरवाज़ा भी बंद करवा दिया और सिर्फ़ अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) की खिड़की खुली रहने दी ताकि वो इमामत के लिये आसानी से मस्जिद में आ जायें। तफ़्सील के लिये फ़तहुल बारी जिल्द 7 में इस हदीस़ की तशरीह देखिये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، بْنِ رَجَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي الْهُذَيْلِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ، اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً وَلَكِنَّهُ أَخِي وَصَاحِبِي وَقَدِ اتَّخَذَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيلاً " .

(6172) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर मैं किसी को ख़लील बनाता तो अबू बकर को ख़लील बनाता, लेकिन वो मेरा भाई और साथी है और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने तुम्हारे साथी को ख़लील बना लिया है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ

(6173) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर मैं अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बनाता तो अबू बकर को ख़लील बनाता।'
(तिर्मिज़ी : 3655)

أُمَّتِي أَحَدًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ ".

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنِي سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي، مُلَيْكَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ ابْنَ أَبِي قُحَافَةَ خَلِيلاً " .

(6174) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर मैं ख़लील बनाता तो अबू क़ुहाफ़ा के बेटे को ख़लील बनाता।'

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ وَاصِلِ بْنِ حَيَّانَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي، الْهُذَيْلِ عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ ابْنَ أَبِي قُحَافَةَ خَلِيلاً وَلَكِنْ صَاحِبُكُمْ خَلِيلُ اللَّهِ " .

(6175) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर मैं ज़मीन वालों से ख़लील बनाता तो अबू क़ुहाफ़ा के बेटे को ख़लील बनाता, लेकिन तुम्हारा साहिब अल्लाह का ख़लील है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ، إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا

(6176) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ख़बरदार! मैं हर ख़लील की ख़ुल्लत(दोस्ती) से बराअत

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ - وَاللَّفْظُ لَهُمَا - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَى كُلِّ خِلٍّ مِنْ خِلِّهِ وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً إِنَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيلُ اللَّهِ

का इज़हार करता हूँ और अगर मैं ख़लील बनाता तो अबू बकर को ख़लील बनाता, तुम्हारा साहिब तो अल्लाह का ख़लील है।'
(तिर्मिज़ी : 3655, इब्ने माजह बाब : 93)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعَثَهُ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلاَسِلِ فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ أَىُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ " عَائِشَةُ " . قُلْتُ مِنَ الرِّجَالِ قَالَ " أَبُوهَا " . قُلْتُ ثُمَّ مَنْ قَالَ " عُمَرُ " . فَعَدَّ رِجَالاً .

(6177) हज़रत अ़म्र बिन आ़स(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे ज़ातुस्सलासिल के लश्कर का अमीर मुक़र्रर किया तो मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा, आपको सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आपने फ़रमाया, 'आ़इशा!' मैंने पूछा, मर्दों में से? फ़रमाया, 'उसका बाप।' मैंने पूछा, फिर कौन? फ़रमाया, 'उ़मर।' इस तरह आपने कुछ नाम लिये।
(सहीह बुख़ारी : 3662, 4358, तिर्मिज़ी : 3885)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ज़ातुस्सलासिल : 7 हिजरी का वाक़िया है और इसमें मुश्रिकों ने अपने आपको एक दूसरे से बांध लिया था, ताकि मैदान न छोड़ें या वहाँ सलसल नामी चश्मा था या वहाँ रेत के टीले तह दर तह थे।

फ़ायदा : इस जंग में अबू बकर और उ़मर(रज़ि.) की मौजूदगी के बावजूद हज़रत अ़म्र बिन आ़स को अमीर मुक़र्रर किया गया, इसलिये उनके दिल में ख़याल गुज़रा कि शायद आपको सबसे ज़्यादा प्यार मुझ ही से है, इसलिये ये सवाल किया और जब कुछ नामों में उनका नाम न आया तो ख़ामोश हो गये।

وَحَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا

(6178) इब्ने अबी मुलैका(रह.) बयान करते हैं, हज़रत आ़इशा(रज़ि.) से पूछा गया,

جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، عَنْ أَبِي عُمَيْسٍ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، عَنِ ابْنِ، أَبِي مُلَيْكَةَ سَمِعْتُ عَائِشَةَ، وَسُئِلَتْ، مَنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُسْتَخْلِفًا لَوِ اسْتَخْلَفَهُ قَالَتْ أَبُو بَكْرٍ . فَقِيلَ لَهَا ثُمَّ مَنْ بَعْدَ أَبِي بَكْرٍ قَالَتْ عُمَرُ . ثُمَّ قِيلَ لَهَا مَنْ بَعْدَ عُمَرَ قَالَتْ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ . ثُمَّ انْتَهَتْ إِلَى هَذَا .

रसूलुल्लाह(ﷺ) अगर किसी को ख़लीफ़ा बनाते तो किसको बनाते? उन्होंने जवाब दिया, अबू बकर को। उनसे पूछा गया, अबू बकर के बाद किसको? जवाब दिया, उ़मर को। फिर उनसे पूछा गया, उ़मर के बाद किसको? जवाब दिया, अबू उ़बैदा बिन जर्राह को, फिर वो इससे रुक गईं।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अगरचे अबू बकर की ख़िलाफ़त की तरफ़ खुले-खुले इशारे फ़रमाये थे कि मेरे बाद अबू बकर ख़लीफ़ा होंगे, लेकिन खुलकर ख़िलाफ़त के लिये उनको नामज़द नहीं फ़रमाया था, इसलिये शुरूआत में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ और बाद में उनके फ़ज़ाइल की बिना पर उनकी ख़िलाफ़त पर सहाबा किराम मुत्तफ़िक़ हो गये, अगर हज़रत अ़ली को वसी और ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया होता तो वो या उनका कोई साथी, रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात के बाद इसका तज़्किरा करता।

حَدَّثَنِي عَبَّادُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ، بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ امْرَأَةً، سَأَلَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ فَلَمْ أَجِدْكَ قَالَ أَبِي كَأَنَّهَا تَعْنِي الْمَوْتَ . قَالَ " فَإِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ " .

(6179) मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम अपने बाप से बयान करते हैं कि एक औरत ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से कोई चीज़ माँगी तो आपने उसे फ़रमाया, 'फिर आना।' उसने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बताइये, अगर मैं आऊँ और आप न मिलें तो? जुबैर(रज़ि.) ने कहा, गोया वो आपकी मौत की तरफ़ इशारा कर रही थी। आपने फ़रमाया, 'अगर तुम मुझे न पाओ तो अबू बकर के पास आ जाना।'

(सहीहबुख़ारी: 7220,3659, 7360, तिर्मिज़ी:3676)

(6180) हज़रत जुबैर बिन मुत्इम(रज़ि.) बयान करते हैं, एक औरत रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे किसी चीज़ के बारे में बातचीत की तो आपने उसे कोई हुक्म दिया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।'

وَحَدَّثَنِيهِ حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِيهِ، أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، أَنَّ أَبَاهُ، جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَكَلَّمَتْهُ فِي شَىْءٍ فَأَمَرَهَا بِأَمْرٍ. بِمِثْلِ حَدِيثِ عَبَّادِ بْنِ مُوسَى .

फ़ायदा : इस हदीस़ में आपने अबू बकर की ख़िलाफ़त की पेशीनगोई फ़रमाई, जो पूरी हुई।

(6181) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी बीमारी में मुझे फ़रमाया, 'मेरे पास अपने बाप अबू बकर और अपने भाई को बुलाओ ताकि मैं एक तहरीर लिख दूँ, क्योंकि मुझे अन्देशा है कोई आरज़ू और ख़्वाहिशमन्द, ख़्वाहिश करेगा और कोई कहने वाला कहेगा, मैं ज़्यादा हक़दार हूँ। अल्लाह और मोमिन अबू बकर के सिवा किसी को क़ुबूल नहीं करेंगे।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَرَضِهِ " ادْعِي لِي أَبَا بَكْرٍ وَأَخَاكِ حَتَّى أَكْتُبَ كِتَابًا فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَتَمَنَّى مُتَمَنٍّ وَيَقُولَ قَائِلٌ أَنَا أَوْلَى . وَيَأْبَى اللَّهُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلاَّ أَبَا بَكْرٍ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से सराहतन साबित होता है कि आपने भी अबू बकर को ख़लीफ़ा नामज़द करने का इरादा फ़रमाया, लेकिन इस पेशीनगोई के सबब कि अल्लाह और मोमिनों को अबू बकर के सिवा किसी की ख़िलाफ़त मन्ज़ूर नहीं होगी, आपने अपना इरादा मुल्तवी कर दिया(टाल दिया)।

(6182) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'आज तुममें से कौन रोज़ेदार है?' अबू बकर(रज़ि.) ने अर्ज़ किया, मैं। आपने पूछा, 'आज तुममें

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ يَزِيدَ، - وَهُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ الأَشْجَعِيِّ، عَنْ

أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ صَائِمًا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا . قَالَ " فَمَنْ تَبِعَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ جَنَازَةً " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا . قَالَ " فَمَنْ أَطْعَمَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مِسْكِينًا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا . قَالَ " فَمَنْ عَادَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مَرِيضًا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا اجْتَمَعْنَ فِي امْرِئٍ إِلاَّ دَخَلَ الْجَنَّةَ

से कोई जनाज़े के साथ गया?' अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, मैं। आपने पूछा, 'आज तुममें से किसने मिस्कीन को खाना खिलाया?' अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, मैंने। आपने पूछा, 'आज तुममें से किसने बीमार की इयादत की?' अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, मैंने। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसमें भी ये ख़ूबियाँ जमा होंगी, वो जन्नती होगा।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, हज़रत अबू बकर(रज़ि.) हर नेक काम करने की कोशिश करते थे और उनमें तमाम नेक ख़स्लतें जमा थीं। वो किसी भी ख़ैर और नेकी के काम में पीछे नहीं रहते थे।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " بَيْنَمَا رَجُلٌ يَسُوقُ بَقَرَةً لَهُ قَدْ حَمَلَ عَلَيْهَا الْتَفَتَتْ إِلَيْهِ الْبَقَرَةُ فَقَالَتْ إِنِّي لَمْ أُخْلَقْ لِهَذَا وَلَكِنِّي إِنَّمَا خُلِقْتُ لِلْحَرْثِ " . فَقَالَ النَّاسُ سُبْحَانَ اللَّهِ . تَعَجُّبًا وَفَزَعًا . أَبَقَرَةٌ تَكَلَّمُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَإِنِّي أُومِنُ بِهِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى

(6183) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि एक आदमी अपनी गाय हांक रहा था और उसने उस पर बोझ लादा हुआ था, गाय उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगी, मुझे इसकी ख़ातिर पैदा नहीं किया गया, लेकिन मुझे तो खेतीबाड़ी के लिये पैदा किया गया है। लोगों ने तअज्जुब और घबराहट से कहा, सुब्हानअल्लाह! क्या गाय भी बोलती है? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तो मैं, अबू बकर और उमर इस पर यक़ीन रखते हैं।' अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों के पास था, उन पर भेड़िये ने हमला किया और उनमें से

الله عليه وسلم " بَيْنَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا عَلَيْهِ الذِّئْبُ فَأَخَذَ مِنْهَا شَاةً فَطَلَبَهُ الرَّاعِي حَتَّى اسْتَنْقَذَهَا مِنْهُ فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ الذِّئْبُ فَقَالَ لَهُ مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ يَوْمَ لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي " . فَقَالَ النَّاسُ سُبْحَانَ اللَّهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "فَإِنِّي أُومِنُ بِذَلِكَ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ " .

एक बकरी पकड़ ली, चरवाहे ने उसका पीछा किया, यहाँ तक कि उससे बकरी छुड़ा ली तो भेड़िया उसकी तरफ़ मुड़कर कहने लगा, दरिन्दों की हुकूमत के दिन इनको कौन छुड़वायेगा, जबकि मेरे सिवा कोई उनका चरवाहा नहीं होगा।' तो लोगों ने कहा, सुब्हानअल्लाह! इस पर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सो मैं, अबू बकर और उमर इस पर यक़ीन रखते हैं।'

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) को अबू बकर और उमर पर इन्तिहाई दर्जे का ऐतमाद था, इसलिये आपने पूरे वुसूक़ से फ़रमाया, मेरे बयान करने के सबब, वो बिला पसो-पेश इस वाक़िये को मान लेंगे और उन्हें इस पर कोई तअज्जुब नहीं होगा और यौमुस्सबुअ से मुराद, वो वक़्त है जब बकरियों पर भेड़ियों का तसल्लुत होगा और उनके साथ चरवाहा मौजूद नहीं होगा।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ، خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . قِصَّةَ الشَّاةِ وَالذِّئْبِ وَلَمْ يَذْكُرْ قِصَّةَ الْبَقَرَةِ .

(6184) इमाम साहब के एक और उस्ताद ये हदीस बयान करते हैं, इसमें बकरी और भेड़िये का वाक़िया है और गाय का वाक़िया नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 3690)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الْحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمَعْنَى حَدِيثِ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَفِي حَدِيثِهِمَا ذِكْرُ الْبَقَرَةِ وَالشَّاةِ مَعًا وَقَالاَ فِي

(6185) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से यूनुस की तरह ऊपर वाली हदीस बयान करते हैं, जिसमें गाय और बकरी दोनों का तज़्किरा है और इसमें ये इज़ाफ़ा है आपने फ़रमाया, 'सो मैं, अबू बकर और उमर इसको मानते हैं।' और वो दोनों वहाँ मौजूद नहीं थे।

(सहीह बुख़ारी : 3471)

حَدِيثِهِمَا " فَإِنِّي أُومِنُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ " . وَمَا هُمَا ثَمَّ .

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مِسْعَرٍ، كِلاَهُمَا عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم .

(6186) यही रिवायत इमाम साहब अपने और उस्तादों से बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 2324, तिर्मिज़ी : 3677)

باب مِنْ فَضَائِلِ عُمَرَ رضى الله تعالى عنه

बाब 2 : हज़रत उ़मर(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ وُضِعَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَلَى سَرِيرِهِ فَتَكَنَّفَهُ النَّاسُ يَدْعُونَ وَيُثْنُونَ وَيُصَلُّونَ عَلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يُرْفَعَ وَأَنَا فِيهِمْ - قَالَ - فَلَمْ يَرُعْنِي إِلاَّ بِرَجُلٍ قَدْ أَخَذَ بِمَنْكِبِي مِنْ وَرَائِي فَالْتَفَتُّ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ عَلِيٌّ

(6187) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) को उनकी चारपाई पर लिटा दिया गया तो लोगों ने उन्हें घेर लिया, वो दुआ कर रहे थे, उनकी तारीफ़ करते और उनके लिये बख़्शिश माँग रहे थे। अभी जनाज़ा उठाया नहीं गया था, मैं उनमें मौजूद था, अचानक एक आदमी ने मेरे पीछे से मेरे कन्धे को पकड़ लिया, मैं उसकी तरफ़ मुड़ा तो वो अ़ली(रज़ि.) थे। उन्होंने उ़मर(रज़ि.) के लिये रहमत की दुआ की और कहा, आपने अपने बाद कोई ऐसा आदमी नहीं छोड़ा, जिस जैसे अ़मल करके अल्लाह

فَتَرَحَّمَ عَلَى عُمَرَ وَقَالَ مَا خَلَّفْتَ أَحَدًا أَحَبَّ إِلَىَّ أَنْ أَلْقَى اللَّهَ بِمِثْلِ عَمَلِهِ مِنْكَ وَايْمُ اللَّهِ إِنْ كُنْتُ لأَظُنُّ أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ وَذَاكَ أَنِّي كُنْتُ أُكَثِّرُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " جِئْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَدَخَلْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَخَرَجْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ " . فَإِنْ كُنْتُ لأَرْجُو أَوْ لأَظُنُّ أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَهُمَا .

से मिलना मुझे महबूब हो, अल्लाह की क़सम! मुझे यक़ीन है अल्लाह आपको अपने दोनों साथियों के साथ जगह देगा, क्योंकि मैं आम तौर पर रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनता था, 'मैं, अबू बकर और उमर आये। मैं, अबू बकर और उमर दाख़िल हुए। मैं, अबू बकर और उमर निकले।' सो मुझे उम्मीद है, बल्कि यक़ीन है अल्लाह आपको उनके साथ रखेगा।

(तिर्मिज़ी : 3677, 3685, इब्ने माजह, बाब : 98)

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है हज़रत उमर(रज़ि.) अपनी वफ़ात के बाद हज़रत अली के लिये एक आइडियल थे, हज़रत उमर के बाद किसी को उन जैसे मर्तबा और मक़ाम का हामिल नहीं समझते थे और इस बात का यक़ीन रखते थे कि उन्हें भी हुज़ूर(ﷺ) और अबू बकर(रज़ि.) के साथ जगह मिलेगी। अब जो लोग हज़रत अली(रज़ि.) के अक़ीदतमन्द होने के दावे करते हैं वो ख़ुद सोच लें कि उनका नज़रिया और सोच हज़रत अली(रज़ि.) से मुताबिक़त रखती है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ .

(6188) यही रिवायत इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ،-وَاللَّفْظُ لَهُمْ - قَالُوا حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي أَبُو أُمَامَةَ، بْنُ سَهْلٍ

(6189) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं सोया हुआ था, इस दौरान मैंने देखा, लोगों को पेश किया जा रहा है, वो क़मीस पहने हुए हैं। कुछ पिस्तान तक पहुँचती हैं और कुछ उससे कम हैं या ज़्यादा और उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) गुज़रे और वो अपनी क़मीस को खींच रहे थे यानी ज़मीन तक पहुँचती

أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ يُعْرَضُونَ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ مِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ دُونَ ذَلِكَ وَمَرَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ".قَالُوا مَاذَا أَوَّلْتَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ"الدِّينَ".

थी।' लोगों ने पूछा, आपने इसकी क्या ताबीर लगाई है? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'दीन।'

(सहीह बुख़ारी : 3691, 7008, 7009, तिर्मिज़ी : 2285, 2286, नसाई : 8/114)

फ़ायदा : क़मीस इंसान के लिये सतर और पर्दापोशी का बाइस होने के साथ-साथ, उसके लिये ज़ेबो-ज़ीनत और दिफ़ाअ का बाइस है। इस तरह दीन नफ़्स व शैतान के हमले से बचाता है। उसके किरदार और अख़्लाक़ को संवारता है और हज़रत उमर(रज़ि.) की क़मीस का सर से पैर तक होना, इस बात की दलील है कि वो दीन में सर ता पा डूबे हुए थे और उनका अंग-अंग दीन के साँचे में ढला हुआ था, लेकिन इसका ये मतलब नहीं है अबू बकर या दूसरे सहाबा इस सिफ़त से महरूम थे।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ رَأَيْتُ قَدَحًا أُتِيتُ بِهِ فِيهِ لَبَنٌ فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتَّى إِنِّي لأَرَى الرِّيَّ يَجْرِي فِي أَظْفَارِي ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ " . قَالُوا فَمَا أَوَّلْتَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الْعِلْمَ " .

(6190) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मैंने देखा, मेरे पास एक प्याला लाया गया, जिसमें दूध है तो मैंने उससे पिया, यहाँ तक कि मैं देख रहा हूँ कि सैराबी, मेरे नाख़ुनों से चल रही है, फिर मैंने अपना झूठा उमर बिन ख़त्ताब को दे दिया।' लोगों ने पूछा, तो आपने इसकी क्या ताबीर लगाई? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'इल्म!'

(सहीह बुख़ारी : 3681, 7006, 7007, 7027, 7032, तिर्मिज़ी : 2284)

फ़ायदा : दूध इंसान की माद्दी ग़िज़ा है और इल्म रूहानी और मअन्वी ग़िज़ा है और दोनों ही इंसान की ज़रूरत की चीज़ें और बहुत फ़ायदा बख़्श और यहाँ अल्इल्म का लफ़्ज़ है, जिसका इत्लाक़ क़ुरआन की रू से सिर्फ़ इल्मे वह्य पर होता है, इसलिये इससे मुराद किताब व सुन्नत की रोशनी में, लोगों की

निगेहदाश्त और देखभाल करना है और हज़रत अबू बकर और उमर दोनों ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में सियादत व तदबीर मुकम्मल तौर पर क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में की।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ، حُمَيْدٍ كِلاَهُمَا عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ نَحْوَ حَدِيثِهِ .

(6191) यही रिवायत इमाम अपने तीन और उस्तादों की दो सनदों से करते हैं।

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ، الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلِيبٍ عَلَيْهَا دَلْوٌ فَنَزَعْتُ مِنْهَا مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ فَنَزَعَ بِهَا ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ ضَعْفٌ ثُمَّ اسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَأَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَنْزِعُ نَزْعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ " .

(6192) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मैंने अपने आपको एक कुँऐं पर देखा, जिस पर डोल पड़ा हुआ था तो मैंने जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर हुआ, उससे पानी खींचा, फिर उसे अबू बकर ने पकड़ लिया और उससे एक दो डोल खींचे और उनके खींचने में, अल्लाह उसे माफ़ करे कमज़ोरी थी, फिर वो बड़े डोल में बदल गया और उसे उमर बिन ख़त्ताब ने पकड़ लिया, सो मैंने लोगों में से कोई यगाना रोज़गार और माहिर उमर बिन ख़त्ताब की तरह डोल को खींचते नहीं देखा, यहाँ तक कि लोगों ने ऊँट सैराब करके उनकी जगह पर बिठा दिये।'

(सहीह बुख़ारी : 3664)

मुफ़रदातुल हदीस़ : **(1) क़लीब :** कच्चा कुँआँ। **(2) दल्वुन :** डोल। **(3) ज़नूब :** भरा हुआ डोल। **(4) ग़रबन :** बड़ा डोल। **(5) अब्क़री :** कर गुज़रने वाला, ग़ैर मामूँली सलाहियत का मालिक, यकता व यगाना। **(6) अतन :** पानी पिलाने के बाद ऊँट बिठाने की जगह।

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ने इक़्तिदार और दौरे हुकूमत को एक कुँऐं से तशबीह दी है और हुक्मरान को पानी पिलाने वाले से जिससे मालूम हुआ, हुक्मरान का काम लोगों के मफ़ादात और मसालेह का

तहफ़्फ़ुज़ और उनको ज़रूरियाते ज़िन्दगी फ़राहम करना है, ताकि वो अमन व सुकून के साथ ज़िन्दगी बसर कर सकें, हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त की मुद्दत सिर्फ़ दो साल और कुछ माह थी और इसमें भी काफ़ी वक़्त फ़ित्न-ए-इर्तिदाद(मुर्तदों का फ़ित्ना) की सरकूबी में लग गया। इस तरह अबू बकर ने हर क़िस्म की शोरिशों की साज़िशों का क़लाक़मा करके, हज़रत उमर(रज़ि.) के लिये अमन व सुकून से हुकूमत करने का मौक़ा पैदा कर दिया और उनके दौर में फ़ुतूहात के सैले रवाँ के लिये बुनियाद फ़राहम कर दी। इसलिये हज़रत उमर(रज़ि.) के दौर में इस्लाम की ख़ूब इशाअत हुई और इस्लामी सल्तनत बहुत वुस्अत इख़्तियार कर गई। हज़रत अबू बकर के दौर में शोरिशों और साज़िशों को ख़त्म करने पर वक़्त लग गया और इस्लामी फ़ुतूहात का दायरा वसीअ न हो सका और मुसलमानों के मामलात पर हज़रत उमर के दौर की तरह तवज्जह न दी जा सकी। इसको ज़ोफ़(कमज़ोरी) से ताबीर किया गया है, लेकिन इसमें अबू बकर की कोई कोताही का दख़ल नहीं है और वल्लाहु यग़्फ़िरु लहू का मक़सद उनकी कोताही की निशानदेही नहीं है, बल्कि ये तो मुसलमानों का तकिया कलाम था, जिसको कलामे हुस्न ख़याल किया जाता था और इसमें हज़रत उमर के दौर की वुस्अत की तरफ़ इशारा भी है कि उसमें लोगों को ख़ूब ख़ुशहाली और फ़रावानी मयस्सर आयेगी और मुसलमानों के लिये आसाइशें और सहूलतें पैदा होंगी और आपकी पेशीनगोई के मुताबिक़ आपके बाद थोड़े अरसे के लिये अबू बकर आपके ख़लीफ़ा बने, उनके बाद एक लम्बे अर्से के लिये हज़रत उमर(रज़ि.) ख़लीफ़ा बने और उन्होंने इस्लाम और मुसलमानों की भरपूर ख़िदमत की और उनको ख़ूब-ख़ूब फ़ायदा पहुँचाया।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ، خَالِدٍ ح وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَالْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ نَحْوَ حَدِيثِهِ .

(6193) इमाम साहब ने यही रिवायत चार और उस्तादों से बयान की है।
(सहीह बुख़ारी : 7021)

حَدَّثَنَا الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، قَالَ قَالَ الأَعْرَجُ وَغَيْرُهُ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رَأَيْتُ ابْنَ أَبِي

(6194) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने अबू क़ुहाफ़ा के बेटे को डोल खींचते देखा...।' आगे ऊपर वाली रिवायत है।

قُحَافَةَ يَنْزِعُ " . بِنَحْوِ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ .

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا عَمِّي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، أَنَّ أَبَا يُونُسَ، مَوْلَى أَبِي هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُرِيتُ أَنِّي أَنْزِعُ عَلَى حَوْضِي أَسْقِي النَّاسَ فَجَاءَنِي أَبُو بَكْرٍ فَأَخَذَ الدَّلْوَ مِنْ يَدِي لِيُرَوِّحَنِي فَنَزَعَ دَلْوَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضُعْفٌ وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ فَجَاءَ ابْنُ الْخَطَّابِ فَأَخَذَ مِنْهُ فَلَمْ أَرَ نَزْعَ رَجُلٍ قَطُّ أَقْوَى مِنْهُ حَتَّى تَوَلَّى النَّاسُ وَالْحَوْضُ مَلآنُ يَتَفَجَّرُ

(6195) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मुझे दिखाया गया, मैं अपने हौज़ पर पानी खींचकर लोगों को पिला रहा हूँ। फिर मेरे पास अबू बकर आये और मेरे हाथ से डोल पकड़ लिया ताकि मुझे आराम पहुँचायें, सो उन्होंने दो डोल खींचे और उसके खींचने में कमज़ोरी थी। अल्लाह उसको माफ़ करे, फिर उमर बिन ख़त्ताब आ गये और उनसे डोल पकड़ लिया, मैंने किसी खींचने वाले आदमी को उनसे ज़्यादा ताक़त के साथ खींचते नहीं देखा, यहाँ तक कि लोग पी कर वापस चले गये और हौज़ भरा हुआ बह रहा था।'

मुफ़रदातुल हदीस : लियुरव्विहनी : ताकि दुनिया की मुसीबतों व मुश्किलों से निकलकर मैं आख़िरत के राहत व सुकून को हासिल कर सकूँ। इसमें भी ख़्वाब में आपको हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर के दौरे ख़िलाफ़त का नज़ारा करवाया गया। जो इस बात की दलील है कि अबू बकर और उमर आपके सहीह जाँनशीन थे और उन्होंने ख़िलाफ़त पर नऊज़ुबिल्लाह ग़ासिबाना क़ब्ज़ा नहीं जमाया था और उन्होंने ख़िलाफ़त का हक़ सहीह तौर पर अदा किया।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ سَالِمٍ، عَنْ سَالِمِ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أُرِيتُ كَأَنِّي أَنْزِعُ

(6196) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे दिखाया गया कि मैं एक कुँऐं पर चरख़ी के डोल को खींच रहा हूँ तो अबू बकर आ गये और उन्होंने एक-दो डोल खींचे और उन्होंने कमज़ोरी के साथ डोल खींचा, अल्लाह तबारक व तआला उसे माफ़ फ़रमाये, फिर उमर आ गये।

بِدَلْوِ بَكْرَةٍ عَلَى قَلِيبٍ فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ فَنَزَعَ نَزْعًا ضَعِيفًا وَاللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَغْفِرُ لَهُ ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ فَاسْتَقَى فَاسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَفْرِي فَرْيَهُ حَتَّى رَوِيَ النَّاسُ وَضَرَبُوا الْعَطَنَ "

उन्होंने पानी निकालना शुरू किया और डोल बहुत बड़ा डोल बन गया। मैंने कोई माहिर और अब्क़री इंसान उस जैसा काम सर अन्जाम देते नहीं देखा, यहाँ तक कि लोग सैराब हो गये और अपने ऊँटों को पानी पिलाकर उनकी जगहों पर बिठा दिया।'
(सहीह बुख़ारी : 3682)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) बिदल्वि बक्रतिन : चरख़ी का डोल है।**(2) बक्रह :** उस चरख़ी को कहते हैं, जिस पर डोल लटकाया जाता है और अगर काफ़ पर सुकून पढ़ें तो जवान ऊँट को कहते हैं। मुराद होगा, ऊँटों को पानी पिलाने का डोल।**(3) यफ़्री फ़र्यह :** उनकी तरह काटता, क्योंकि फ़र्य का मानी होता है, इस्लाह और बेहतरी की ख़ातिर काटना, मुराद है बेहतरीन तौर पर काम करना।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رُؤْيَا، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضى الله عنهما بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(6197) इमाम साहब एक और उस्ताद से अबू बकर और उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) के बारे में रसूलुल्लाह(ﷺ) का ख़्वाब बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 3633, 7020, तिर्मिज़ी : 2289)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، وَابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعَا جَابِرًا، يُخْبِرُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، وَعَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَرَأَيْتُ فِيهَا دَارًا أَوْ قَصْرًا فَقُلْتُ لِمَنْ هَذَا فَقَالُوا لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ . فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَ . فَذَكَرْتُ غَيْرَتَكَ " .

(6198) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से और उस्तादों की सनदों से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने उसमें एक घर या महल देखा तो मैंने पूछा, ये किसका है? उन्होंने कहा, उमर बिन ख़त्ताब का, चुनाँचे मैंने दाख़िल होने का इरादा किया, फिर मुझे तेरी ग़ैरत याद आ गई।' सो उमर रो पड़े और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आपके ख़िलाफ़ भी ग़ैरत की जा सकती है?

فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ أَيْ رَسُولَ اللَّهِ أَوَعَلَيْكَ يُغَارُ.

फ़ायदा : हज़रत उमर(रज़ि.) का रोना मसर्रत व शादमानी और इश्तियाक़ की बिना पर था और उन्होंने अर्ज़ किया, आपकी बिना पर मुझे रिफ़अत व बरतरी मिली और आप ही की बिना पर हिदायत नसीब हुई तो आप पर ग़ैरत कैसे आ सकती है।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، وَابْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، سَمِعَ جَابِرًا، ح وَحَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعْتُ جَابِرًا، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ وَزُهَيْرٍ .

(6199) यही रिवायत इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ فَإِذَا امْرَأَةٌ تَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ فَقُلْتُ لِمَنْ هَذَا فَقَالُوا لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ . فَذَكَرْتُ غَيْرَةَ عُمَرَ فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَبَكَى عُمَرُ وَنَحْنُ جَمِيعًا فِي ذَلِكَ الْمَجْلِسِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ قَالَ عُمَرُ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَعَلَيْكَ أَغَارُ.

(6200) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि मैं सोया हुआ था, मैंने अपने आपको जन्नत में देखा तो मैंने देखा, एक महल की एक तरफ़ एक औरत वुज़ू कर रही है। चुनाँचे मैंने पूछा, ये किसका महल है? उन्होंने कहा, उमर बिन ख़त्ताब का। तो मुझे उमर की ग़ैरत याद आ गई तो मैं पीठ फेरकर चल पड़ा।' हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उमर रो पड़े और हम सब उस मज्लिस में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे, फिर हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, मेरा बाप आप पर क़ुर्बान ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं आप पर ग़ैरत खाऊँगा। (सहीह बुख़ारी : 5227)

وَحَدَّثَنِيهِ عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ، إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6201) यही रिवायत इमाम साहब तीन और उस्तादों से बयान करते हैं।

फ़ायदा : जन्नत दारुल अ़मल या दारुत्तकलीफ़ नहीं है कि वहाँ इंसान किसी अ़मल का मुकल्लफ़ ठहरे, वहाँ वुज़ू सिर्फ़ हुस्नो-जमाल और चमक-दमक में इज़ाफ़े के लिये होगा।

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا حَسَنٌ، الْحُلْوَانِيُّ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ، حَسَنٌ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بْنِ زَيْدٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ سَعْدًا قَالَ اسْتَأْذَنَ عُمَرُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَعِنْدَهُ نِسَاءٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُكَلِّمْنَهُ وَيَسْتَكْثِرْنَهُ عَالِيَةً أَصْوَاتُهُنَّ فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ قُمْنَ يَبْتَدِرْنَ الْحِجَابَ فَأَذِنَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَضْحَكُ فَقَالَ عُمَرُ أَضْحَكَ اللَّهُ سِنَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " عَجِبْتُ مِنْ

(6202) हज़रत सअ़द(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से हाज़िरी की इजाज़त तलब की और आपके पास क़ुरैशी औ़रतें, आपसे बातचीत कर रही थीं और नान व नफ़्क़ा में इज़ाफ़ा चाहती थीं और उनकी आवाज़ें बुलंद थीं तो जब हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने हाज़िरी की इजाज़त तलब की, वो उठकर पर्दे की तरफ़ लपकीं।(फ़ौरन पसे पर्दा चली गईं।) सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे इजाज़त मरहमत फ़रमाई और आप(ﷺ) हँस रहे थे, चुनाँचे हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने पूछा, अल्लाह आपको हमेशा हँसता रखे, ऐ अल्लाह के रसूल! रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे उन औ़रतों पर हैरत हुई जो मेरे पास थीं तो जब उन्होंने तेरी आवाज़ सुनी, जल्द ही पसे पर्दा चली गईं।' हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, आप ऐ अल्लाह के रसूल! हक़दार थे कि वो आपसे हैबत खातीं। फिर उ़मर(रज़ि.) ने कहा, ऐ अपनी दुश्मनो! क्या तुम मुझसे हैबत खाती हो और

هَؤُلاَءِ اللاَّتِي كُنَّ عِنْدِي فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ " . قَالَ عُمَرُ فَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَقُّ أَنْ يَهَبْنَ . ثُمَّ قَالَ عُمَرُ أَىْ عَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ أَتَهَبْنَنِي وَلاَ تَهَبْنَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْنَ نَعَمْ أَنْتَ أَغْلَظُ وَأَفَظُّ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا لَقِيَكَ الشَّيْطَانُ قَطُّ سَالِكًا فَجًّا إِلاَّ سَلَكَ فَجًّا غَيْرَ فَجِّكَ " .

रसूलुल्लाह(ﷺ) से हैबत नहीं खाती हो? उन्होंने कहा, हाँ! आप रसूलुल्लाह(ﷺ) से सख़्त गीर और सख़्त ख़ू हैं। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, शैतान कभी किसी रास्ते पर चलता हुआ, तुम्हें नहीं मिला, मगर तेरा रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर चल पड़ा।'
(सहीह बुख़ारी : 3294, 3683, 6085)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अन्-त अग़लज़ु व अफ़ज़्ज़ु : हर जगह फ़ेअ्ले तफ़्ज़ील का सेग़ा, ज़्यादती के लिये इस्तेमाल नहीं होता, इसलिये यहाँ मुराद सिर्फ़ उमर की सख़्ती और कड़कपन का इज़हार है कि वो किसी की रिआयत और लिहाज़ नहीं करते, जबकि रसूलुल्लाह(ﷺ) चश्मपोशी फ़रमा लेते हैं और हज़रत उमर(रज़ि.) ने नबी(ﷺ) के एहतिराम व हिमायत में उनके हक़ में सख़्त अल्फ़ाज़ कहे।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि हज़रत उमर(रज़ि.) अल्लाह की तौफ़ीक़ से दुरुस्त रास्ता इख़्तियार करते थे, शैतान उनको राहे रास्त से भटका नहीं सकता था।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، حَدَّثَنَا بِهِ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنِي سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَعِنْدَهُ نِسْوَةٌ قَدْ رَفَعْنَ أَصْوَاتَهُنَّ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ

(6203) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के यहाँ हाज़िर हुए और आपके पास कुछ औरतें थीं, जिनकी आवाज़ें रसूलुल्लाह(ﷺ) से बुलंद थीं तो जब हज़रत उमर(रज़ि.) ने हाज़िरी की इजाज़त तलब की, वो जल्दी पर्दे के पीछे चली गईं। आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ، سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ " قَدْ كَانَ يَكُونُ فِي الأُمَمِ قَبْلَكُمْ مُحَدَّثُونَ فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَإِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ مِنْهُمْ " . قَالَ ابْنُ وَهْبٍ تَفْسِيرُ مُحَدَّثُونَ مُلْهَمُونَ .

(6204) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) फ़रमाते थे, 'तुमसे पहली उम्मतों से मुहद्दस होते थे, सो अगर मेरी उम्मत में उनमें से कोई होगा तो उमर बिन ख़त्ताब उनमें दाख़िल है।' इब्ने वहब कहते हैं, मुहद्दसून की तफ़्सीर मुल्हमून है(जिनकी तरफ़ इल्हाम किया जाता है)।
(तिर्मिज़ी : 3693)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6205) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، قَالَ جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ أَخْبَرَنَا عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ عُمَرُ وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلاَثٍ فِي مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ وَفِي الْحِجَابِ وَفِي أُسَارَى بَدْرٍ .

(6206) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उमर(रज़ि.) ने फ़रमाया, 'मैंने तीन बातें अपने रब की मन्शा के मुताबिक़ कीं, मक़ामे इब्राहीम के बारे में, पर्दे के बारे में और बद्र के क़ैदियों के बारे में।'

मुफ़रदातुल हदीस : वाफ़क़्तु रब्बी फ़ी सलासिन : तीन वाक़ियात में, मैंने अपने रब की मुवाफ़िक़त की, यानी मेरी मर्ज़ी अल्लाह के मुनज़्ज़ल हुक्म के मुताबिक़ हुई। चूंकि इन तीन वाक़ियात के बारे में अल्लाह का हुक्म यही था। अगरचे हुक्म बाद में नाज़िल हुआ, इसलिये हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, मेरी राय अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ निकली या अल्लाह के हुक्म का तो पता नहीं था, लेकिन अदब व एहतिराम और अल्लाह की अज़्मत के पेशे नज़र ये कहा, मैंने मुवाफ़िक़त की, ये न

कहा, अल्लाह का हुक्म मेरी राय के मुताबिक़ उतरा और तीन में हस्र नहीं है, क्योंकि हज़रत उमर(रज़ि.) की मुवाफ़िक़ात की तादाद बीस से ज़्यादा है। शाह वलीउल्लाह(रह.) का इस मौज़ूअ पर मुस्तक़िल रिसाला है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ ابْنُ سَلُولَ جَاءَ ابْنُهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَأَلَهُ أَنْ يُعْطِيَهُ قَمِيصَهُ أَنْ يُكَفِّنَ فِيهِ أَبَاهُ فَأَعْطَاهُ ثُمَّ سَأَلَهُ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِيُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَامَ عُمَرُ فَأَخَذَ بِثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُصَلِّي عَلَيْهِ وَقَدْ نَهَاكَ اللَّهُ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّمَا خَيَّرَنِيَ اللَّهُ فَقَالَ {اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً } وَسَأَزِيدُ عَلَى سَبْعِينَ". قَالَ إِنَّهُ مُنَافِقٌ . فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ {وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ} .

(6207) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, जब अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मर गया, उसका बेटा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे दरख़्वास्त की कि आप उसे अपनी क़मीस इनायत फ़रमायें, ताकि वो उसमें अपने बाप को लपेटे। तो आपने देने का वादा फ़रमा लिया, फिर उसने आपसे उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की दरख़्वास्त की तो रसूलुल्लाह(ﷺ) जनाज़ा पढ़ाने के लिये खड़े हो गये। चुनाँचे हज़रत उमर(रज़ि.) ने उठकर रसूलुल्लाह(ﷺ) का कपड़ा पकड़ लिया और अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ायेंगे, हालांकि अल्लाह ने आपको इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से मना कर दिया है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह ने मुझे बस इख़्तियार दिया है और फ़रमाया है, इनके लिये बख़्शिश तलब करो या बख़्शिश तलब न करो, अगर उनके लिये सत्तर बार भी बख़्शिश तलब करोगे, अल्लाह इन्हें माफ़ नहीं फ़रमायेगा।(सूरह तौबा : 80) मैं सत्तर बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा।' हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, वो तो मुनाफ़िक़ है। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसकी नमाज़े जनाज़ा

पढ़ाई और अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'इनमें से किसी की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ो, कभी भी, जब वो मर जाये और न उसकी क़ब्र पर खड़े हो।' (सूरह तौबा : 84)
(सहीह बुख़ारी : 4670)

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ فِي مَعْنَى حَدِيثِ أَبِي أُسَامَةَ وَزَادَ قَالَ فَتَرَكَ الصَّلاَةَ عَلَيْهِمْ ‏.‏

(6208) यही रिवायत इमाम साहब दो उस्तादों से बयान करते हैं और इसमें ये इज़ाफ़ा है, तो आपने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना छोड़ दिया।
(सहीह बुख़ारी : 1269, तिर्मिज़ी : 3098, नसाई : 4/37, इब्ने माजह : 1523)

फ़ायदा : अ़ब्दुल्लाह बिन उबय, मुनाफ़िक़ों का सरग़ना था। जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ज़िल्क़अ़दा 9 हिजरी में तबूक से वापस आये तो वो फ़ौत हो गया। उसके बाप का नाम उबय और माँ का नाम सलूल था और उसके बेटे का नाम भी अ़ब्दुल्लाह था, जो इन्तिहाई जलीलुल क़द्र और आपका वफ़ादार सहाबी थे। यहाँ तक कि उन्होंने आपकी ख़ातिर अपने बाप को क़त्ल करने की भी आपसे इजाज़त तलब की थी और आपने बाप से अच्छे सुलूक की ताकीद फ़रमाई थी और उन्होंने अपने बाप की ख़्वाहिश के मुताबिक़ आपसे क़मीस का मुताल्बा किया था और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की दरख़्वास्त की थी।(तक्मिला, जिल्द 5, पेज नं. 91)

जब आप नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये तैयार हो गये तो हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने आपका कपड़ा पकड़ कर उसकी ख़बासतें और शरारतें गिनवाना शुरू कर दिया और कहा, अल्लाह तआ़ला ने आपको मुनाफ़िक़ों की नमाज़े जनाज़ा से मना फ़रमाया है। क्योंकि जनाज़े का मक़सद तो माफ़ी और बख़्शिश की दुआ करना है और उनको माफ़ी मिलनी नहीं है तो गोया मना कर दिया गया। आपने फ़रमाया, ऐ उ़मर! मुझे मना नहीं किया गया, बल्कि इख़्तियार दिया गया है कि इस्तिग़फ़ार करो या न करो उनको माफ़ी नहीं मिलनी। लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं है इसका मुझे या दूसरे लोगों को फ़ायदा नहीं पहुँचेगा। इसलिये आपके इस वुस्अ़ते अख़्लाक़ और अपने मुख़्लिस सहाबी जो कि उसके बेटे हैं कि दिलजोई की और उसके ख़ानदान पर रहमत व शफ़क़त का ये नतीजा निकला कि बहुत से मुनाफ़िक़ मुसलमान हो गये कि देखो, उसने मरते वक़्त ख़ुद आपसे नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की ख़्वाहिश की और बुख़ारी शरीफ़ के अल्फ़ाज़ हैं, अगर मैं जानता कि सत्तर बार से ज़्यादा मर्तबा इस्तिग़फ़ार करने

से इसकी बख़्शिश हो सकती है तो मैं सत्तर मर्तबा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करता। गोया आपने ये बात वाज़ेह फ़रमा दी, मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से उसको फ़ायदा नहीं होगा और मेरा मक़सद उसको फ़ायदा पहुँचाना नहीं है, उसकी क़ौम की दिलजोई है। लेकिन उसके बाद आपको सरीह तौर पर मुनाफ़िक़ों का जनाज़ा पढ़ने और उनके कफ़न-दफ़न में हिस्सा लेने से रोक दिया गया। क्योंकि इस तरीक़े से मुनाफ़िक़ों की हिम्मत अफ़ज़ाई और मोमिनों की दिलशिकनी का अन्देशा भी था। अगर पहली आयत में आपको जनाज़े से रोकना मुराद होता तो आपके जनाज़ा पढ़ने पर आपको तौबीख़ की जाती, दूसरी आयत न उतारी जाती। जैसाकि जंगे तबूक में आपने मुनाफ़िक़ों को पीछे रहने की इजाज़त दी तो फ़रमाया, अ़फ़ल्लाहु अ़न्-क लि-म अज़िन्-त लहुम!

باب مِنْ فَضَائِلِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رضى الله عنه

बाब 3 : हज़रत उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي حَرْمَلَةَ، عَنْ عَطَاءٍ، وَسُلَيْمَانَ، ابْنَىْ يَسَارٍ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُضْطَجِعًا فِي بَيْتِي كَاشِفًا عَنْ فَخِذَيْهِ أَوْ سَاقَيْهِ فَاسْتَأْذَنَ أَبُو بَكْرٍ فَأَذِنَ لَهُ وَهُوَ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ فَتَحَدَّثَ ثُمَّ اسْتَأْذَنَ عُمَرُ فَأَذِنَ لَهُ وَهُوَ كَذَلِكَ فَتَحَدَّثَ ثُمَّ اسْتَأْذَنَ عُثْمَانُ فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَسَوَّى ثِيَابَهُ - قَالَ مُحَمَّدٌ وَلاَ أَقُولُ

(6209) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे घर में लेटे हुए थे और आपकी दोनों रान या पिण्डलियाँ नंगी थीं, चुनाँचे हज़रत अबू बकर (रज़ि.) ने इजाज़त तलब की, उन्हें इजाज़त दे दी गई और आप इसी हालत में रहे, बातचीत की। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने इजाज़त माँगी, उन्हें भी इजाज़त मिल गई और आप इसी हालत में थे और बातचीत की। फिर उ़समान (रज़ि.) ने इजाज़त चाही तो रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठ गये और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। रावी मुहम्मद कहते हैं, मैं ये नहीं कहता, ये वाक़िया एक ही दिन का है तो हज़रत उ़समान दाख़िल हुए और बातचीत की तो जब वो चले गये, हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने पूछा, अबू बकर आये, आपने कोई

ذَلِكَ فِي يَوْمٍ وَاحِدٍ - فَدَخل فتحدَّثَ فَلَمَّا خَرَجَ قَالَتْ عَائِشَةُ دَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَلَمْ تَهْتَشَّ لَهُ وَلَمْ تُبَالِهِ ثُمَّ دَخَلَ عُمَرُ فَلَمْ تَهْتَشَّ لَهُ وَلَمْ تُبَالِهِ ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ فَجَلَسْتَ وَسَوَّيْتَ ثِيَابَكَ فَقَالَ " أَلاَ أَسْتَحِي مِنْ رَجُلٍ تَسْتَحِي مِنْهُ الْمَلاَئِكَةُ "

एहतिमाम नहीं किया और न उनकी परवाह की, फिर उमर दाख़िल हुए, आपने कोई हरकत नहीं की और न उनकी परवाह की, फिर उसमान आये तो आप बैठ गये और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये? आपने फ़रमाया, 'क्या मैं उस आदमी से हया न करूँ, जिससे फ़रिश्ते भी हया करते हैं।'

मुफ़रदातुल हदीस : लम तह्तशश लहू : आपने उसकी आमद पर ख़न्दा पेशानी और मसर्रत का इज़हार नहीं फ़रमाया।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि हज़रत उसमान(रज़ि.) बहुत बाहया शर्मीले थे, इसलिये आपने भी उनके इस एहसास व.जज़्बे का लिहाज़ रखा और उनसे हया की।

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ، بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَعُثْمَانَ حَدَّثَاهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ اسْتَأْذَنَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ لاَبِسٌ مِرْطَ عَائِشَةَ فَأَذِنَ لأَبِي بَكْرٍ وَهُوَ كَذَلِكَ فَقَضَى إِلَيْهِ حَاجَتَهُ ثُمَّ انْصَرَفَ ثُمَّ اسْتَأْذَنَ عُمَرُ فَأَذِنَ لَهُ وَهُوَ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ فَقَضَى إِلَيْهِ حَاجَتَهُ ثُمَّ انْصَرَفَ . قَالَ عُثْمَانُ ثُمَّ اسْتَأْذَنْتُ عَلَيْهِ فَجَلَسَ وَقَالَ لِعَائِشَةَ " اجْمَعِي عَلَيْكِ ثِيَابَكِ " . فَقَضَيْتُ إِلَيْهِ حَاجَتِي

(6210) नबी(ﷺ) की ज़ौजा हज़रत आइशा और हज़रत उसमान(रज़ि.) बयान करते हैं, अबू बकर(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से हाज़िरी की इजाज़त तलब की, जबकि आप अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे और हज़रत आइशा(रज़ि.) की चादर ओढ़ी हुई थी तो अबू बकर(रज़ि.) को इसी हालत में इजाज़त मिल गई। सो उन्होंने आपसे अपनी ज़रूरत पूरी की, फिर पलट गये। फिर उमर(रज़ि.) ने इजाज़त माँगी तो उन्हें भी उसी हालत में इजाज़त मिल गई, उन्होंने आपसे अपनी हाजत पूरी की, फिर चले गये। उसमान(रज़ि.) कहते हैं, फिर मैंने आपसे हाज़िरी की इजाज़त माँगी, आप बैठ गये और हज़रत आइशा(रज़ि.) ने फ़रमाया, 'अपने कपड़े अपने ऊपर डाल लो, यानी उनको दुरुस्त कर लो।' मैंने आकर आपसे हाजत पूरी की, फिर मैं चला गया तो

ثُمَّ انْصَرَفْتُ فَقَالَتْ عَائِشَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لِي لَمْ أَرَكَ فَزِعْتَ لأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَمَا فَزِعْتَ لِعُثْمَانَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ عُثْمَانَ رَجُلٌ حَيِيٌّ وَإِنِّي خَشِيتُ إِنْ أَذِنْتُ لَهُ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ أَنْ لاَ يَبْلُغَ إِلَىَّ فِي حَاجَتِهِ " .

हज़रत आइशा(रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या बात है? मैंने आपको अबू बकर और उमर के लिये ये एहतिमाम करते नहीं देखा, जो एहतिमाम आपने उसमान के लिये किया हो? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसमान शर्मीला इंसान है और मुझे ख़दशा पैदा हुआ कि मैंने उसे इस हालत में इजाज़त दे दी तो वो अपना मक़सद हासिल नहीं कर सकेंगे।' यानी मेरे सामने अपनी ज़रूरत बयान नहीं कर सकेंगे।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) मिर्त आइशा : आइशा की गर्म चादर।**(2) कमा फ़ज़िअ्-त लिउसमान :** जैसे आपने उसमान के लिये एहतिमाम किया और उनको अहमियत दी।

حَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، كُلُّهُمْ عَنْ يَعْقُوبَ، بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي يَحْيَى، بْنُ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عُثْمَانَ وَعَائِشَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ اسْتَأْذَنَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ عُقَيْلٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ .

(6211) हज़रत उसमान और हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करते हैं कि अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से इजाज़त तलब की, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ غِيَاثٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ،

(6212) हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) बयान करते हैं जबकि रसूलुल्लाह(ﷺ) मदीना के बाग़ात में से एक बाग़ में टेक लगाकर बैठे हुए थे और एक लकड़ी जो

قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي حَائِطٍ مِنْ حَائِطِ الْمَدِينَةِ وَهُوَ مُتَّكِئٌ يَرْكُزُ بِعُودٍ مَعَهُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّينِ إِذَا اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ فَقَالَ " افْتَحْ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ " . قَالَ فَإِذَا أَبُو بَكْرٍ فَفَتَحْتُ لَهُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ - قَالَ - ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ آخَرُ فَقَالَ " افْتَحْ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ " . قَالَ فَذَهَبْتُ فَإِذَا هُوَ عُمَرُ فَفَتَحْتُ لَهُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ آخَرُ - قَالَ - فَجَلَسَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " افْتَحْ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تَكُونُ " . قَالَ فَذَهَبْتُ فَإِذَا هُوَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ - قَالَ - فَفَتَحْتُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ - قَالَ - وَقُلْتُ الَّذِي قَالَ فَقَالَ اللَّهُمَّ صَبْرًا أَوِ اللَّهُ الْمُسْتَعَانُ .

आपके पास थी, उससे पानी और मिट्टी कुरेद रहे थे, अचानक एक आदमी ने दरवाज़ा खुलवाया तो आपने फ़रमाया, 'खोल दो और उसे जन्नत की बशारत दो।' तो वो अबू बकर निकले, सो मैंने उनके लिये दरवाज़ा खोला और उन्हें जन्नत की बशारत दी। फिर एक और आदमी ने दरवाज़ा खुलवाया, आपने फ़रमाया, 'खोल दो और उसे जन्नत की बशारत दो।' मैं गया तो वो उमर(रज़ि.) थे, मैंने उनके लिये दरवाज़ा खोला और उन्हें जन्नत की बशारत सुनाई। फिर एक और आदमी ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) बैठ गये और फ़रमाया, 'खोल दो और उन्हें बल्वा(मुसीबत, आज़माइश) के साथ जन्नत की बशारत दो।' तो मैं गया और वो उसमान(रज़ि.) थे, मैंने दरवाज़ा खोला और उन्हें जन्नत की बशारत दी और मैंने आपकी बात भी बता दी, हज़रत उसमान(रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह! सब्र देना या अल्लाह ही से मदद मतलूब है।

(सहीह बुख़ारी : 3693, 3695, 6216, 7262, तिर्मिज़ी : 3710)

मुफ़रदातुल हदीस : अल्बल्वा और बलिय्यह : मुसीबत, आज़माइश।

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

(6213) हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) एक बाग़ में दाख़िल हुए और मुझे दरवाज़े की हिफ़ाज़त करने का हुक्म दिया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

عليه وسلم دَخَلَ حَائِطًا وَأَمَرَنِي أَنْ أَحْفَظَ الْبَابَ. بِمَعْنَى حَدِيثِ عُثْمَانَ بْنِ غِيَاثٍ .

(6214) हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) बयान करते हैं कि उसने अपने घर में वुज़ू किया, फिर बाहर निकल पड़े और सोचा, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की रफ़ाक़त इख़्तियार करूँगा और आज दिन भर आपके साथ रहूँगा। तो वो मस्जिद में आये और रसूलुल्लाह(ﷺ) के बारे में पूछा, साथियों ने कहा, आप निकलकर उस रुख़ चले गये हैं, सो मैं आपके पीछे आपके बारे में पूछता हुआ निकला, यहाँ तक कि आप अरीस नामी कुँऐं(के बाग़ में) दाख़िल हो गये तो मैं दरवाज़े के पास बैठ गया और उसका दरवाज़ा खजूर की छड़ियों का था। यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हो गये आपने वुज़ू किया, सो मैं खड़ा होकर आपकी तरफ़ गया और आप अरीस की मुण्डेर के दरम्यान बैठ चुके थे और आपने अपनी दोनों पिण्डलियाँ खोलकर उन्हें कुँऐं में लटका लिया था, मैंने आपको सलाम कहा, फिर वापस आकर दरवाज़े पर बैठ गया और दिल में कहता, मैं आज रसूलुल्लाह(ﷺ) का दरबान बनूँगा। चुनाँचे अबू बकर आये और दरवाज़े को धक्का दिया, मैंने पूछा, ये कौन है? उन्होंने कहा, अबू बकर हूँ। तो मैंने कहा, ज़रा ठहरिये! फिर मैं गया और कहा, ऐ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ الْيَمَامِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ بِلاَلٍ - عَنْ شَرِيكِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، أَخْبَرَنِي أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ، أَنَّهُ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ لأَلْزَمَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَلأَكُونَنَّ مَعَهُ يَوْمِي هَذَا . قَالَ فَجَاءَ الْمَسْجِدَ فَسَأَلَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا خَرَجَ . وَجَّهَ هَا هُنَا - قَالَ - فَخَرَجْتُ عَلَى أَثَرِهِ أَسْأَلُ عَنْهُ حَتَّى دَخَلَ بِئْرَ أَرِيسٍ - قَالَ - فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ وَبَابُهَا مِنْ جَرِيدٍ حَتَّى قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَاجَتَهُ وَتَوَضَّأَ فَقُمْتُ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ قَدْ جَلَسَ عَلَى بِئْرِ أَرِيسٍ وَتَوَسَّطَ قُفَّهَا وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ - قَالَ - فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ انْصَرَفْتُ فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ فَقُلْتُ لأَكُونَنَّ بَوَّابَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْيَوْمَ . فَجَاءَ أَبُو

अल्लाह के रसूल! ये अबू बकर हाज़िरी की इजाज़त माँग रहे हैं तो आपने फ़रमाया, 'उसे इजाज़त दीजिये और उसे जन्नत की बशारत सुनाइये।' मैं उनकी तरफ़ बढ़ा यहाँ तक कि मैंने अबू बकर से कहा, दाख़िल हो जाइये और रसूलुल्लाह(ﷺ) आपको जन्नत की बशारत देते हैं। तो अबू बकर दाख़िल हो गये और रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ आपकी दायें जानिब मुण्डेर पर बैठ गये और अपनी टांगें या पाँव कुँऐं में लटका दिये, जैसाकि नबी(ﷺ) किये हुए थे और अपनी पिण्डलियाँ खोल लीं। फिर मैं वापस आकर बैठ गया और मैं अपने भाई को छोड़ आया था कि वुज़ू करके मुझे आ मिले, सो मैंने दिल में कहा, अगर अल्लाह को फ़लाँ(अपना भाई मुराद था), के साथ भलाई मन्ज़ूर है तो उसको ले आयेगा। अचानक एक इंसान दरवाज़ा हिला रहा था। तो मैंने पूछा, ये कौन है? उसने कहा, उमर बिन ख़त्ताब हूँ। तो मैंने कहा, ज़रा ठहरिये! फिर मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया, आपको सलाम किया और अर्ज़ की, ये उमर(रज़ि.) इजाज़त तलब कर रहे हैं तो आपने फ़रमाया, 'उसे इजाज़त दीजिये! और जन्नत की बशारत सुनाइये।' सो मैं उमर के पास आया और कहा, आपको इजाज़त मिल गई है और रसूलुल्लाह(ﷺ) तुझे जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। तो वो दाख़िल हो गये और रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ आपकी बायें

بَكْرٍ فَدَفَعَ الْبَابَ فَقُلْتُ مَنْ هَذَا فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ . فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ - قَالَ - ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ " ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ " . قَالَ فَأَقْبَلْتُ حَتَّى قُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ ادْخُلْ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُبَشِّرُكَ بِالْجَنَّةِ - قَالَ - فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَجَلَسَ عَنْ يَمِينِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَعَهُ فِي الْقُفِّ وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ كَمَا صَنَعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ وَقَدْ تَرَكْتُ أَخِي يَتَوَضَّأُ وَيَلْحَقُنِي فَقُلْتُ إِنْ يُرِدِ اللَّهُ بِفُلاَنٍ - يُرِيدُ أَخَاهُ - خَيْرًا يَأْتِ بِهِ . فَإِذَا إِنْسَانٌ يُحَرِّكُ الْبَابَ فَقُلْتُ مَنْ هَذَا فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ . فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ . ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ وَقُلْتُ هَذَا عُمَرُ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ " ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ " . فَجِئْتُ عُمَرَ فَقُلْتُ أَذِنَ وَيُبَشِّرُكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْجَنَّةِ - قَالَ - فَدَخَلَ فَجَلَسَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْقُفِّ عَنْ

يَسَارِهِ وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ فَقُلْتُ إِنْ يُرِدِ اللَّهُ بِفُلاَنٍ خَيْرًا - يَعْنِي أَخَاهُ - يَأْتِ بِهِ فَجَاءَ إِنْسَانٌ فَحَرَّكَ الْبَابَ فَقُلْتُ مَنْ هَذَا فَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ . فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ - قَالَ - وَجِئْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ " ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ مَعَ بَلْوَى تُصِيبُهُ " . قَالَ فَجِئْتُ فَقُلْتُ ادْخُلْ وَيُبَشِّرُكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْجَنَّةِ مَعَ بَلْوَى تُصِيبُكَ - قَالَ - فَدَخَلَ فَوَجَدَ الْقُفَّ قَدْ مُلِئَ فَجَلَسَ وُجَاهَهُمْ مِنَ الشِّقِّ الآخَرِ . قَالَ شَرِيكٌ فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فَأَوَّلْتُهَا قُبُورَهُمْ .

जानिब मुण्डेर पर बैठ गये और अपनी टांगें कुँऐं में लटका लीं। फिर मैं वापस आ गया और बैठ गया, चुनाँचे मैंने दिल में कहा, अगर अल्लाह को फ़लाँ के साथ भलाई मन्ज़ूर है, मुराद अपना भाई था, उसे ले आयेगा। सो एक आदमी आया और दरवाज़े को हिलाया। मैंने पूछा, ये कौन है? तो उसने कहा, उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान हूँ। मैंने कहा, ज़रा ठहरिये! और मैंने आकर नबी(ﷺ) को इत्तिलाअ़ दी, तो आपने फ़रमाया, 'उसे इजाज़त दो और जन्नत की बशारत एक आज़माइश से दोचार होने की सूरत में दो।' मैं उनके पास आया और कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) आपको एक आज़माइश से दोचार होने की सूरत में जन्नत की बशारत सुनाते हैं।' वो दाख़िल हो गये और देखा मुण्डेर की एक जानिब भर चुकी है तो वो दूसरी जानिब उनके सामने बैठ गये। शरीक कहते हैं, सईद बिन मुसय्यब ने कहा, मैंने इसकी ताबीर क़ब्रों की तफ़रीक़ लगाई।
(सहीह बुख़ारी : 3674, 7097)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) वज्ज-ह हाहुना : उस तरफ़ रुख़ कर लिया।**(2) तवस्स-त क़ुफ़्फ़हा :** मुण्डेर के दरम्यान बैठ गये।**(3) दल्लहुमा :** अद्ला के मानी में है, दोनों को लटका लिया।**(4) लअकूनन्न बव्वा-ब रसूलिल्लाह :** हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रसूलुल्लाह(ﷺ) को बाग़ में दाख़िल होते जा मिले तो आपने उन्हें दरवाज़े पर बैठने का हुक्म दिया, जैसाकि ऊपर गुज़र चुका है।**(5) अम-र बिहिफ़्ज़िल बाब :** आपने उसे दरवाज़े की निगरानी का हुक्म दिया, इससे आपका मक़सद यकसूई से क़ज़ाए हाजत से फ़राग़त हासिल करना था, जब आप क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हो गये और अबू मूसा आपके पास आ गये तो फिर अपनी मर्ज़ी से वापस जाकर दरबान बन बैठे, इसलिये कुछ रिवायात में है।**(6) वलम् यअ्मुर्नी :** आपने मुझे हुक्म नहीं दिया था।**(7) अ़ला रिस्लिक :** ज़रा ठहरिये, कुछ

तवक़्क़ुफ़ कीजिये।(8) **दल्ला रिज्लैहि फ़िल बिअ्रि :** अबू बकर और उ़मर(रज़ि.) ने भी रसूलुल्लाह(ﷺ) की इक़्तिदा में अपनी टांगें कुँऐं में लटका लीं ताकि आप इसी हालत में बैठे रहें, अगर वो अपने पाँव न लटकाते तो शायद आप इस हालत में रहना गवारा न फ़रमाते।(9) **इंय्युरिदिल्लाहु बिफ़ुलानिन ख़ैरा :** अगर अल्लाह को फ़लाँ की भलाई मन्ज़ूर होगी और अबू मूसा अश्अ़री ने जब ये देखा कि आप हाज़िरी की इजाज़त तलब करने वाले को जन्नत की बशारत दे रहे हैं तो उनके दिल में ये तमन्ना और ख़्वाहिश पैदा हुई कि उनका भाई भी आ जाये, ताकि उसे भी ये सआ़दत व बशारत हासिल हो सके।(10) **मअ़ बल्वा तुसीबुहू :** उनको मुसीबतों से गुज़रना पड़ेगा, इसमें उन मुसीबतों और मुश्किलात की तरफ़ इशारा है, जिनसे हज़रत उ़समान(रज़ि.) को अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी सालों में गुज़रना पड़ा और आख़िरकार मज़्लूम शहीद ठहरे। जैसाकि एक दूसरी रिवायत में आपने हज़रत उ़समान के गुज़रने पर फ़रमाया था, युक़्तलु फ़ीहा हाज़ा यौमइज़िन ज़ुल्मन : इस फ़ित्ने में ये ज़ुल्मन शहीद होंगे।(तक्मिला, जिल्द : 5, पेज नं. 100)(11) **जल-स वुजाहहुम :** उनके सामने बैठ गये, यानी रसूलुल्लाह(ﷺ) और उनके साथियों के साथ जगह न मिली, उससे हज़रत सईद बिन मुसय्यब ने ये बात कही कि उन तीनों की क़ब्रें इकट्ठी हुईं और हज़रत उ़समान(रज़ि.) को अलग दफ़न किया गया।

حَدَّثَنِيهِ أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ حَدَّثَنِي أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ، هَا هُنَا - وَأَشَارَ لِي سُلَيْمَانُ إِلَى مَجْلِسِ سَعِيدٍ نَاحِيَةَ الْمَقْصُورَةِ - قَالَ أَبُو مُوسَى خَرَجْتُ أُرِيدُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَوَجَدْتُهُ قَدْ سَلَكَ فِي الأَمْوَالِ فَتَبِعْتُهُ فَوَجَدْتُهُ قَدْ دَخَلَ مَالاً فَجَلَسَ فِي الْقُفِّ وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ ‏.‏ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ يَحْيَى بْنِ حَسَّانَ وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ سَعِيدٍ فَأَوَّلْتُهَا قُبُورَهُمْ ‏.‏

(6215) हज़रत अबू मूसा बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ)(से मुलाक़ात) के इरादे से घर से निकला तो मुझे मालूम हुआ, आप बाग़ात की तरफ़ निकल गये हैं, तो मैंने आपका पीछा किया। सो मैंने आपको इस हाल में पाया कि एक बाग़ में दाख़िल होकर उसकी मुण्डेर पर बैठ गये हैं और अपनी पिण्डलियाँ नंगी करके उन्हें कुँऐं में लटका लिया है, आगे ऊपर वाली रिवायत है और उसमें हज़रत सईद का क़ब्रों की ताबीर वाला क़ौल बयान नहीं किया गया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : सल-क फ़िल्अम्वाल : बाग़ों की राह ली है, बाग़ात के फल चूंकि ज़रिये आमदनी हैं, इसलिये बाग़ को माल से ताबीर कर दिया गया है, इस बिना पर ऊँटों को माल कह दिया जाता था।

حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ قَالاَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي، مَرْيَمَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، أَخْبَرَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ سَعِيدِ، بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمًا إِلَى حَائِطٍ بِالْمَدِينَةِ لِحَاجَتِهِ فَخَرَجْتُ فِي إِثْرِهِ . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ وَذَكَرَ فِي الْحَدِيثِ قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ . فَتَأَوَّلْتُ ذَلِكَ قُبُورَهُمُ اجْتَمَعَتْ هَا هُنَا وَانْفَرَدَ عُثْمَانُ .

(6216) हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दिन किसी ज़रूरत के लिये मदीना के एक बाग़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गये तो मैं भी आपके पीछे चल निकला। आगे सुलैमान बिन बिलाल की ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत है और इसमें सईद बिन मुसय्यब का क़ौल है, मैंने इसकी ताबीर उनकी क़ब्रें लगाई, उन तीनों की क़ब्रें यहाँ इकट्ठी हैं और उ़समान अलग हैं।

باب مِنْ فَضَائِلِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رضى الله عنه

बाब 4 : अ़ली बिन अबी तालिब(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَأَبُو جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ وَعُبَيْدُ اللَّهِ الْقَوَارِيرِيُّ وَسُرَيْجُ بْنُ يُونُسَ كُلُّهُمْ عَنْ يُوسُفَ الْمَاجِشُونِ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الصَّبَّاحِ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ، أَبُو سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ، بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِعَلِيٍّ "

(6217) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अ़ली(रज़ि.) से फ़रमाया, 'तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसाकि मूसा(अलै.) के लिये हारून थे। मगर ये बात है, मेरे बाद कोई नबी नहीं है।' हज़रत सईद कहते हैं, ये रिवायत मैंने आ़मिर बिन सअ़द से सुनी थी, इसलिये मैंने चाहा कि ये रिवायत मैं हज़रत सअ़द(रज़ि.) से रू-ब-रू सुन लूँ, सो मेरी मुलाक़ात हज़रत सअ़द(रज़ि.) से हुई तो मैंने उन्हें, आ़मिर की हदीस़ सुनाई, उन्होंने

أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي " . قَالَ سَعِيدٌ فَأَحْبَبْتُ أَنْ أُشَافِهَ بِهَا سَعْدًا فَلَقِيتُ سَعْدًا فَحَدَّثْتُهُ بِمَا حَدَّثَنِي عَامِرٌ فَقَالَ أَنَا سَمِعْتُهُ . فَقُلْتُ آنْتَ سَمِعْتَهُ فَوَضَعَ إِصْبَعَيْهِ عَلَى أُذُنَيْهِ فَقَالَ نَعَمْ وَإِلاَّ فَاسْتَكَّتَا .

कहा, मैंने ये सुनी है। फिर मैंने कहा, क्या आपने सुनी है? तो उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों पर रखीं और कहा, हाँ! अगर न सुनी हो तो ये कान बहरे हो जायें।
(तिर्मिज़ी : 3731)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अन्-त मिन्नी बिमन्ज़िलति हारू-न मिन मूसा : तेरा मेरे साथ वही मक़ाम है जो हारून का मूसा(अलै.) के साथ था। जब रसूलुल्लाह(ﷺ) जंगे तबूक के लिये निकले तो पीछे हज़रत अली(रज़ि.) को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया, जैसाकि आप ग़ज़्वात के लिये जाते वक़्त किसी न किसी को ख़लीफ़ा बनाकर जाते थे और आपने हज़रत अली(रज़ि.) को यहाँ सिर्फ़ अपने अहलो-अयाल की देखभाल के लिये छोड़ा था। मदीना का गवर्नर किसी और को बनाया था। इसलिये मुनाफ़िक़ों ने हज़रत अली(रज़ि.) पर तअ़्नाज़नी की, तो वो आपके पीछे रवाना हो गये और रास्ते में जा मिले तो आपने उन्हें ये अल्फ़ाज़ फ़रमाकर वापस मदीना भेज दिया कि क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं कि मुझसे तुम्हें वही निस्बत है जो हारून को मूसा(अलै.) से थी और ज़ाहिर है हारून(अलै.) मूसा(अलै.) के ख़लीफ़ा उस वक़्त तक के लिये थे, जब वो तूर पर गये थे। गोया वो मूसा(अलै.) की ज़िन्दगी में ख़लीफ़ा बने, उनकी वफ़ात के बाद जाँनशीन नहीं बने, क्योंकि वो तो मूसा(अलै.) की ज़िन्दगी ही में फ़ौत हो गये थे, इसलिये शीया फ़िर्क़ों का इस हदीस़ से ये इस्तिदलाल करना बातिल है कि आपके बाद ख़िलाफ़त हज़रत अली का हक़ था, जो नऊ़ज़ुबिल्लाह सहाबा ने ग़सब करके दूसरों को ख़लीफ़ा बना दिया।**(2) इल्ला अन्नहू ला नबिय्य बअ़्दी :** मगर वाक़िया ये है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं, आपने ये तसरीह इसलिये फ़रमाई, ताकि हारून से तशबीह देने से कोई इस वहम का शिकार न हो जाये कि हज़रत अली(रज़ि.) भी नबी हैं और इस हदीस़ से ये भी साबित हुआ रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाद किसी क़िस्म की नुबूवत का इम्कान बाक़ी न रहा।**(3) फ़स्तक्कता :** वो दोनों बहरे हो जायें।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا

(6218) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अली बिन अबी

شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ بْنِ، أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ خَلَّفَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ تُخَلِّفُنِي فِي النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ فَقَالَ " أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى غَيْرَ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي " .

तालिब(रज़ि.) को ग़ज़्व-ए-तबूक में अपने पीछे छोड़ा तो उन्होंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे औ़रतों और बच्चों में छोड़ रहे हैं। तो आपने फ़रमाया, 'क्या आप इस पर राज़ी नहीं हैं कि तुम्हें मुझसे वही निस्बत हो जो निस्बत हारून को मूसा से थी, हाँ ये बात है मेरे बाद कोई नबी नहीं है।'
(सहीह बुख़ारी : 4416)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ.

(6219) यही रिवायत इमाम साहब के एक और उस्ताद बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - قَالاَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ أَمَرَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ سَعْدًا فَقَالَ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسُبَّ أَبَا التُّرَابِ فَقَالَ أَمَّا مَا ذَكَرْتُ ثَلاَثًا قَالَهُنَّ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَنْ أَسُبَّهُ لأَنْ تَكُونَ لِي وَاحِدَةٌ مِنْهُنَّ أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ لَهُ خَلَّفَهُ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ فَقَالَ لَهُ

(6220) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) के बेटे आ़मिर अपने बाप से बयान करते हैं, हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान(रज़ि.) ने हज़रत सअ़द को अमीर मुक़र्रर किया तो पूछा, तुम्हें अबू तुराब को ख़ताकार क़रार देने से कौनसी चीज़ रोकती है? तो उन्होंने जवाब दिया, जब तक मुझे दो तीन बातें याद हैं, जो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनके बारे में फ़रमाई थीं। तो मैं उनको हर्गिज़ तन्क़ीद का निशाना नहीं बनाऊँगा, उनमें से एक भी मुझे हासिल होती तो वो मुझे सुर्ख़ ऊँटों से ज़्यादा महबूब होती। मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, जबकि उन्हें किसी ग़ज़्वे में अपने पीछे छोड़ रहे थे, हज़रत अ़ली(रज़ि.) ने आपसे अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे औ़रतों और बच्चों के साथ छोड़ रहे हैं? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने

عَلِيٌّ يَا رَسُولَ اللَّهِ خَلَّفْتَنِي مَعَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نُبُوَّةَ بَعْدِي " . وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ " لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلاً يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ " . قَالَ فَتَطَاوَلْنَا لَهَا فَقَالَ " ادْعُوا لِي عَلِيًّا " . فَأُتِيَ بِهِ أَرْمَدَ فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ وَدَفَعَ الرَّايَةَ إِلَيْهِ فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ { فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ } دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا فَقَالَ " اللَّهُمَّ هَؤُلاَءِ أَهْلِي " .

उन्हें फ़रमाया, 'क्या आप इस पर राज़ी नहीं हैं कि तुम उस मक़ाम पर हो जिस पर हारून, मूसा से थे। मगर ये बात है, मेरे बाद नुबूवत नहीं है।' और मैंने आपको ख़ैबर के दिन ये फ़रमाते सुना, 'मैं झण्डा उस आदमी को दूँगा, जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसका रसूल उससे मुहब्बत करते हैं।' हज़रत सअद कहते हैं, सो हमने उसके लिये अपने आपको नुमायाँ किया, सो आपने फ़रमाया, 'मेरे पास अली को बुलाओ।' तो उन्हें लाया गया, जबकि उनकी आँखें दुखती थीं, आपने उनकी आँखों में जब लुआबे मुबारक डाला और झण्डा उनके हवाले कर दिया तो अल्लाह ने उनके हाथों फ़तह बख़्शी और जब ये आयत उतरी, 'कह दे! आओ हम अपने बेटों को बुलाते हैं और तुम अपने बेटों को लाओ।' (सूरह आले इमरान : 61) रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन(रज़ि.) को बुलाया और फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! ये लोग मेरे अहल हैं।'

(तिर्मिज़ी : 3724)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ततावल्ना : हम बुलंद हुए, गर्दनें उठाईं, तमन्ना और आरज़ू की, मक़सद ये है कि हम आप के सामने नुमायाँ हुए, ताकि आपकी नज़र हम पर पड़ जाये और ये सआदत हमें हासिल हो जाये।**(2) अर्मद :** आशूबे चश्म वाला, उसकी आँखें दुखती हों।**(3) अल्लाहुम्म हाउलाइ अहलु बैती :** ऐ अल्लाह! ये मेरे घर वाले हैं, मेरे अहले बैत हैं, उसूली रू से इंसान का अहले बैत उसकी बीवी है, इसलिये आपका अहले बैत आपकी अज़्वाजे मुतहहरात हैं और उर्फ़ व लुग़त की रू से इसका इत्लाक़ बीवी पर होता है, जैसाकि क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम की बीवी को अहले बैत से ख़िताब किया गया है, दूसरा कोई बित्तबअ और सानवी तौर पर उसमें दाख़िल हो

सकता है और आपकी दुआ के नतीजे में जैसाकि तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है, ज़िक्र किये गये अफ़राद भी अहले बैत में दाख़िल हैं।

फ़ायदा : हज़रत मुआविया(रज़ि.) ने हज़रत सअद(रज़ि.) से पूछा, मा मनअ-क अन् तसुब्ब अबा तुराब? अबू तुराब पर तन्क़ीद व तबसरा और उनके मौक़िफ़ की तग़लीत(ग़लत) करने से तुम्हें क्या चीज़ रोकती है। सब्ब का लफ़्ज़ जिस तरह गाली-गलोच और बद कलामी के लिये आता है, उसी तरह किसी ग़लत काम करने वाले को रोकने-टोकने और उसको सरज़निश व तौबीख़ करने के लिये भी आता है। जैसाकि ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर जब आपने रास्ते में सहाबा किराम को फ़रमाया कि कल काफ़ी दिन चढ़े तुम तबूक के चश्मे पर पहुँचोगे, तो पहुँचने के बाद उससे कोई इंसान पानी न पिये। लेकिन दो आदमियों ने पी लिया तो आपने उनकी इस हरकत की तग़लीत की(ग़लत बताया) और उन पर तन्क़ीद व तबसरा फ़रमाया। इसके लिये ये लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है कि फ़सब्बहुमुन्नबिय्यु(ﷺ) इसी तरह आगे इमाम नववी ने बाब बांधा है, मन लअनहुन्नबिय्यु(ﷺ) जिस पर नबी(ﷺ) ने लानत भेजी है या सब्ब किया है, इसके तहत हज़रत आइशा(रज़ि.) की रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास दो आदमी आये, उन्होंने किसी मसले पर आपसे बातचीत की, जिससे आप नाराज़ हो गये और गुस्से में उनको लअनहुमा व सब्बहुमा उन पर लानत भेजी और उन पर तन्क़ीद व तबसरा फ़रमाया, उनको सरज़निश व तौबीख़ फ़रमाई। इस तरह हज़रत मुआविया(रज़ि.) का मक़सद ये था कि तुम हज़रत अली(रज़ि.) के फ़ेअल(अमल) और राय को ग़लत क़रार दे कर, उन पर तन्क़ीद व तबसरा क्यों नहीं करते? तो हज़रत सअद(रज़ि.) ने जवाब दिया, जो इन फ़ज़ीलतों व ख़ूबियों का हामिल है, मैं उस पर तन्क़ीद व तबसरा नहीं कर सकता और उनकी राय और मौक़िफ़ को हदफ़े तन्क़ीद नहीं बना सकता और उन पर तअ्न व मलामत नहीं कर सकता। हज़रत मुआविया(रज़ि.) उनको सब्ब व शतम और गाली-गलोच किस तरह करवा सकते हैं, जबकि वो उनके फ़ज़ाइल व कमालात को जानते हैं। जब हज़रत अली(रज़ि.) फ़ौत हुए और हज़रत मुआविया(रज़ि.) उनकी मौत पर रोये, उनकी बीवी ने पूछा, इससे जंग भी करते हो और रोते भी हो? तो हज़रत मुआविया(रज़ि.) ने जवाब दिया, तुम पर अफ़सोस! तुम्हें मालूम नहीं है कि लोग किस क़द्र इल्म, फ़िक़्ह और फ़ज़ल से महरूम हो गये हैं।(अल्बिदाया वन्निहाया, जिल्द 8, पेज नं. 13) और जब ज़िरारस्सदाई ने हज़रत मुआविया के रू-ब-रू हज़रत अली(रज़ि.) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान किये, तो हज़रत मुआविया रो पड़े और कहने लगे, रहिमल्लाहु अबल हसन, का-न वल्लाहि कज़ालिक अल्लाह तआला अबुल हसन पर रहमत फ़रमाये, वो इन्हीं ख़ूबियों और सिफ़ात के हामिल थे।(अल्इस्तीआब लिइब्ने अब्दुल बर्र जिल्द 3, पेज नं. 43-44)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ، بْنَ سَعْدٍ عَنْ سَعْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ لِعَلِيٍّ " أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى " .

(6221) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं कि आपने हज़रत अ़ली(रज़ि.) से फ़रमाया, 'क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम्हारी निस्बत मेरे साथ ऐसी हो, जैसी हारून की मूसा(अ़लै.) के साथ थी।'

(सहीह बुख़ारी : 3706, इब्ने माजह, बाब : 115)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ " لأُعْطِيَنَّ هَذِهِ الرَّايَةَ رَجُلاً يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ " . قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ مَا أَحْبَبْتُ الإِمَارَةَ إِلاَّ يَوْمَئِذٍ - قَالَ - فَتَسَاوَرْتُ لَهَا رَجَاءَ أَنْ أُدْعَى لَهَا - قَالَ - فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا وَقَالَ " امْشِ وَلاَ تَلْتَفِتْ حَتَّى يَفْتَحَ اللَّهُ عَلَيْكَ " . قَالَ فَسَارَ عَلِيٌّ شَيْئًا ثُمَّ وَقَفَ وَلَمْ يَلْتَفِتْ فَصَرَخَ يَا رَسُولَ اللَّهِ عَلَى مَاذَا أُقَاتِلُ النَّاسَ

(6222) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़ैबर के दिन फ़रमाया, 'मैं ये झण्डा उस आदमी को दूँगा, जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है, अल्लाह उसके हाथों फ़तह नसीब फ़रमायेगा।' हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) कहते हैं, मैंने सिर्फ़ उसी दिन इमारत से मुहब्बत की और उसकी ख़ातिर अपने को नुमायाँ किया, यानी इसकी ख़्वाहिश की कि आप मुझे देख लें, इस उम्मीद पर कि आप मुझे इसकी दावत दें। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अ़ली बिन अबी तालिब को तलब किया और झण्डा उसे अ़ता फ़रमाया और फ़रमाया, 'चलिये! इधर-उधर तवज्जह न कीजिये, यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हें फ़तह इनायत फ़रमाये।' हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अ़ली(रज़ि.) कुछ मसाफ़त चले, फिर ठहर गये और मुड़कर नहीं देखा, बुलंद आवाज़ से

कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं लोगों से किस बुनियाद पर लड़ूँ? आपने फ़रमाया, 'उनसे लड़ते रहो यहाँ तक कि वो शहादत दें, अल्लाह के सिवा कोई लायक़े बन्दगी नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। जब वो इसका ऐतराफ़ कर लेंगे तो उन्होंने तुझसे अपने ख़ून और माल महफ़ूज़ कर लिये, इल्ला(मगर) ये कि इस कलिमे का हक़ हो(फिर उनके जान व माल महफ़ूज़ नहीं) और उनका मुहासबा अल्लाह का काम है।'

قَالَ " قَاتِلْهُمْ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ فَقَدْ مَنَعُوا مِنْكَ دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللَّهِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : तसावर्तु लहा : मैंने उसके लिये अपनी गर्दन बुलंद की, अल्लाह और रसूल की मुहब्बत की तस्दीक़ और फ़तह की बशारत की बुनियाद पर इमारत के मिलने की ख़्वाहिश और तमन्ना की।

(6223) हज़रत सह्ल बिन सअ़द(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़ैबर के दिन फ़रमाया, 'मैं ये झण्डा उस आदमी को दूँगा, जिसके हाथों अल्लाह फ़तह अ़ता फ़रमायेगा, वो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता होगा और अल्लाह और उसका रसूल उससे मुहब्बत करते होंगे।' तो लोग रात भर इस मसले पर बातचीत करते रहे कि झण्डा किसको दिया जायेगा? तो जब सुबह हुई, लोग रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास गये, उनमें से हर एक उम्मीदवार था कि झण्डा उसे इनायत किया जाये। चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'अली बिन अबी तालिब कहाँ है?' सहाबा किराम(रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! उनकी आँखें दुखती हैं। आपने

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي حَازِمٍ - عَنْ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، -وَاللَّفْظُ هَذَا - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، أَخْبَرَنِي سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ " لأُعْطِيَنَّ هَذِهِ الرَّايَةَ رَجُلاً يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ " . قَالَ فَبَاتَ النَّاسُ يَدُوكُونَ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَاهَا - قَالَ - فَلَمَّا أَصْبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى

फ़रमाया, 'उसकी तरफ़ पैग़ाम भेजो।' या लोगों ने उनकी तरफ़ पैग़ाम भेजा और उन्हें लाया गया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनकी आँखों में लुआब डाला और उनके लिये दुआ फ़रमाई, उनकी आँखें ठीक हो गईं। यहाँ तक कि गोया कि उन्हें कोई तकलीफ़ ही न थी, आपने उन्हें झण्डा दिया तो हज़रत अली(रज़ि.) ने अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उनसे उस वक़्त तक लड़ूँ यहाँ तक कि वो हमारे जैसे हो जायें, यानी मुसलमान हो जायें? तो आपने फ़रमाया, 'आराम से चलते रहो, यहाँ तक कि उनके मैदान में जा उतरो, फिर उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाओ और उन्हें बताओ, उन पर अल्लाह के कौनसे हुक़ूक़ वाजिब हैं, सो अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह तुम्हारे ज़रिये एक आदमी को हिदायत बख़्श दे तो ये तेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है।'

الله عليه وسلم كُلُّهُمْ يَرْجُونَ أَنْ يُعْطَاهَا فَقَالَ " أَيْنَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ " . فَقَالُوا هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ - قَالَ - فَأَرْسَلُوا إِلَيْهِ فَأُتِيَ بِهِ فَبَصَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ فَبَرَأَ حَتَّى كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ فَأَعْطَاهُ الرَّايَةَ فَقَالَ عَلِيٌّ يَا رَسُولَ اللَّهِ أُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا . فَقَالَ " انْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللَّهِ فِيهِ فَوَاللَّهِ لأَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ بِكَ رَجُلاً وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ " .

(सहीह बुख़ारी : 2942, 3701, 3009, 4210)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यदूकून : वो गुफ़्तगू और बातचीत करते रहे, इस मसले में मशग़ूल रहे।**(2) उन्फ़ुज़ अ़ला रिस्लिक :** अपनी चाल चलते रहो।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, किसी इंसान को हिदायत और ईमान पर ले आना, इंसान के लिये दुनिया की हर क़ीमती मताअ़(साज़ो-सामान) से ज़्यादा बेहतर है, क्योंकि अ़रबों के यहाँ सुर्ख़ ऊँट नफ़ीस तरीन माल तसव्वुर किये जाते थे।

(6224) हज़रत सलमा बिन अक्वअ़(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अ़ली(रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में नबी(ﷺ) से

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - يَعْنِي ابْنَ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي، عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ، قَالَ كَانَ عَلِيٌّ قَدْ تَخَلَّفَ

عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي خَيْبَرَ وَكَانَ رَمِدًا فَقَالَ أَنَا أَتَخَلَّفُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏.‏ فَخَرَجَ عَلِيٌّ فَلَحِقَ بِالنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا كَانَ مَسَاءُ اللَّيْلَةِ الَّتِي فَتَحَهَا اللَّهُ فِي صَبَاحِهَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ - أَوْ لَيَأْخُذَنَّ بِالرَّايَةِ - غَدًا رَجُلٌ يُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَوْ قَالَ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَيْهِ ‏"‏ ‏.‏ فَإِذَا نَحْنُ بِعَلِيٍّ وَمَا نَرْجُوهُ فَقَالُوا هَذَا عَلِيٌّ ‏.‏ فَأَعْطَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الرَّايَةَ فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ ‏.‏

आशूबे चश्म(आँख आने) की बिना पर पीछे रह गये थे, उन्होंने दिल में कहा, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) से पीछे रह जाऊँ? तो हज़रत अ़ली(रज़ि.) निकल पड़े और नबी(ﷺ) को जा मिले। तो जब उस सुबह की शाम आई, जिसमें अल्लाह ने फ़तह इनायत फ़रमाई, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं झण्डा दूँगा या कल झण्डा वो आदमी पकड़ेगा, जिससे अल्लाह और उसका रसूल मुहब्बत करते हैं या फ़रमाया, 'वो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है, अल्लाह उसके हाथों फ़तह बख़्शेगा।' तो हम अचानक हज़रत अ़ली(रज़ि.) को देखते हैं, हालांकि हम उनके आने की उम्मीद नहीं रखते थे। सहाबा किराम(रज़ि.) ने कहा, ये हज़रत अ़ली हैं। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने झण्डा उनको इनायत फ़रमाया और अल्लाह ने उनको फ़तह दी।'

(सहीह बुख़ारी : 2975, 3702, 4209)

फ़ायदा : इन हदीसों में रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अ़ली(रज़ि.) की अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत और अल्लाह और उसके रसूल की उनसे मुहब्बत की तस्दीक़ फ़रमाई, जो उनके लिये इन्तिहाई सआदत और उनके कमाले ईमान की खुली दलील है और फिर उनके हाथों ख़ैबर के ग़ैर मामूँली क़िले की फ़तह की बशारत दी है। जो उनकी अल्लाह के यहाँ क़ुबूलियत की अ़लामत है, लेकिन इन जुज़्वी फ़ज़ाइल से पहले तीन ख़ुलफ़ा पर बरतरी साबित नहीं होती, क्योंकि उनकी बरतरी सरीह और वाज़ेह दलाइल से साबित है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَشُجَاعُ بْنُ مَخْلَدٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنِي أَبُو حَيَّانَ،

(6225) हज़रत यज़ीद बिन हय्यान बयान करते हैं कि मैं हुसैन बिन सबरह और उमर बिन मुस्लिम, ज़ैद बिन अरक़म(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो जब हम उनके पास

حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ حَيَّانَ، قَالَ انْطَلَقْتُ أَنَا وَحُصَيْنُ، بْنُ سَبْرَةَ وَعُمَرُ بْنُ مُسْلِمٍ إِلَى زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ فَلَمَّا جَلَسْنَا إِلَيْهِ قَالَ لَهُ حُصَيْنٌ لَقَدْ لَقِيتَ يَا زَيْدُ خَيْرًا كَثِيرًا رَأَيْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَسَمِعْتَ حَدِيثَهُ وَغَزَوْتَ مَعَهُ وَصَلَّيْتَ خَلْفَهُ لَقَدْ لَقِيتَ يَا زَيْدُ خَيْرًا كَثِيرًا حَدِّثْنَا يَا زَيْدُ مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - يَا ابْنَ أَخِي وَاللَّهِ لَقَدْ كَبِرَتْ سِنِّي وَقَدُمَ عَهْدِي وَنَسِيتُ بَعْضَ الَّذِي كُنْتُ أَعِي مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَمَا حَدَّثْتُكُمْ فَاقْبَلُوا وَمَا لاَ فَلاَ تُكَلِّفُونِيهِ . ثُمَّ قَالَ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا فِينَا خَطِيبًا بِمَاءٍ يُدْعَى خُمًّا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَوَعَظَ وَذَكَّرَ ثُمَّ قَالَ " أَمَّا بَعْدُ أَلاَ أَيُّهَا النَّاسُ فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ يُوشِكُ أَنْ يَأْتِيَ رَسُولُ رَبِّي فَأُجِيبَ وَأَنَا تَارِكٌ فِيكُمْ ثَقَلَيْنِ أَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللَّهِ فِيهِ الْهُدَى وَالنُّورُ فَخُذُوا بِكِتَابِ اللَّهِ وَاسْتَمْسِكُوا بِهِ " . فَحَثَّ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ وَرَغَّبَ فِيهِ ثُمَّ قَالَ " وَأَهْلُ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ

बैठ गये, उन्हें हुसैन ने कहा, ऐ ज़ैद! आपको ख़ैरे कसीर हासिल हुई है, आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा है और आपकी बातें सुनी हैं और आपके साथ ग़ज़्वात में हिस्सा लिया है, आपकी इक़्तिदा में नमाज़ें पढ़ी हैं। ऐ ज़ैद! आपको ख़ैरे कसीर मिली है, ऐ ज़ैद! हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी हुई हदीस़ सुनाइये। उन्होंने कहा, ऐ भतीजे! अल्लाह की क़सम! मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरा दौर पुराना हो गया है और रसूलुल्लाह(ﷺ) से मैं जो बातें याद करता था, उनमें से कुछ को भूल गया हूँ तो मैं तुम्हें जो सुना सकूँ क़ुबूल कर लेना और जो बयान न कर सकूँ तो मुझे उनके बयान पर मजबूर न करना। फिर कहने लगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दिन ख़ुम्मन नामी चश्मे पर हमें ख़िताब करने के लिये खड़े हुए, जो मक्का और मदीना के दरम्यान है तो आपने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और वअ़ज़ व नसीहत फ़रमाई। फिर फ़रमाया, 'हम्द व सना के बाद, ऐ लोगो सुनो! मैं बस एक इंसान हूँ, क़रीब है कि अल्लाह का एलची(मौत का फ़रिश्ता) मेरे पास आ जाये और मैं उसको लब्बैक कहूँ, मैं तुममें दो बड़ी अहम और अ़ज़मत वाली चीज़ें छोड़ रहा हूँ, उनमें पहली अल्लाह की किताब है, जिसमें हिदायत और रोशनी है, सो अल्लाह की किताब की पाबंदी करना और उसको मज़बूती से थामे रखना।' तो आपने

فِي أَهْلِ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي " . فَقَالَ لَهُ حُصَيْنٌ وَمَنْ أَهْلُ بَيْتِهِ يَا زَيْدُ أَلَيْسَ نِسَاؤُهُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ قَالَ نِسَاؤُهُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ وَلَكِنْ أَهْلُ بَيْتِهِ مَنْ حُرِمَ الصَّدَقَةَ بَعْدَهُ . قَالَ وَمَنْ هُمْ قَالَ هُمْ آلُ عَلِيٍّ وَآلُ عَقِيلٍ وَآلُ جَعْفَرٍ وَآلُ عَبَّاسٍ . قَالَ كُلُّ هَؤُلاَءِ حُرِمَ الصَّدَقَةَ قَالَ نَعَمْ .

अल्लाह की किताब पर अमल करने पर आमादा किया और उसकी तरग़ीब दिलाई। फिर फ़रमाया, 'और मेरा ख़ानदान, मैं तुम्हें अपने अहले बैत के बारे में अल्लाह याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैत के बारे में अल्लाह याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैत के बारे में अल्लाह याद दिलाता हूँ।' तो हुसैन ने उनसे पूछा, आपके अहले बैत कौन हैं? ऐ ज़ैद! क्या आपकी बीवियाँ, आपके अहले बैत में दाख़िल नहीं हैं? उन्होंने जवाब दिया, आपकी बीवियाँ आपका अहले बैत हैं, लेकिन(यहाँ) आपके अहले बैत से मुराद वो लोग हैं, जो आपके बाद सदक़े से महरूम हो गये हैं। हुसैन ने पूछा, वो कौन हैं? जवाब दिया, वो हज़रत अली की औलाद, अक़ील की औलाद, जअ़फ़र की औलाद और अब्बास की आलाद हैं। हुसैन ने पूछा, ये सब सदक़े से महरूम हैं? जवाब दिया, हाँ!

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارِ بْنِ الرَّيَّانِ، حَدَّثَنَا حَسَّانُ، - يَعْنِي ابْنَ إِبْرَاهِيمَ - عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ حَيَّانَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِنَحْوِهِ بِمَعْنَى حَدِيثِ زُهَيْرٍ .

(6226) इमाम साहब ने ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत एक और उस्ताद से बयान की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا

(6227) इमाम साहब दो और उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, जरीर की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, 'अल्लाह

جَرِيرٌ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي حَيَّانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ إِسْمَاعِيلَ وَزَادَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ " كِتَابُ اللَّهِ فِيهِ الْهُدَى وَالنُّورُ مَنِ اسْتَمْسَكَ بِهِ وَأَخَذَ بِهِ كَانَ عَلَى الْهُدَى وَمَنْ أَخْطَأَهُ ضَلَّ "

की किताब, उसमें हिदायत और रोशनी है, जिसने इसको मज़बूती से थामा और इस पर अमल किया, वो हिदायत याफ़्ता हुआ और जो इससे चूक गया, वो गुमराह हो गया।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارِ بْنِ الرَّيَّانِ، حَدَّثَنَا حَسَّانُ، - يَعْنِي ابْنَ إِبْرَاهِيمَ - عَنْ سَعِيدٍ، - وَهُوَ ابْنُ مَسْرُوقٍ - عَنْ يَزِيدَ بْنِ حَيَّانَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَيْهِ فَقُلْنَا لَهُ لَقَدْ رَأَيْتَ خَيْرًا . لَقَدْ صَاحَبْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَصَلَّيْتَ خَلْفَهُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِنَحْوِ حَدِيثِ أَبِي حَيَّانَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَلاَ وَإِنِّي تَارِكٌ فِيكُمْ ثَقَلَيْنِ أَحَدُهُمَا كِتَابُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ هُوَ حَبْلُ اللَّهِ مَنِ اتَّبَعَهُ كَانَ عَلَى الْهُدَى وَمَنْ تَرَكَهُ كَانَ عَلَى ضَلاَلَةٍ " . وَفِيهِ فَقُلْنَا مَنْ أَهْلُ بَيْتِهِ نِسَاؤُهُ قَالَ لاَ وَايْمُ اللَّهِ إِنَّ الْمَرْأَةَ تَكُونُ مَعَ الرَّجُلِ الْعَصْرَ مِنَ الدَّهْرِ ثُمَّ يُطَلِّقُهَا فَتَرْجِعُ إِلَى أَبِيهَا وَقَوْمِهَا أَهْلُ بَيْتِهِ أَصْلُهُ وَعَصَبَتُهُ الَّذِينَ حُرِمُوا الصَّدَقَةَ بَعْدَهُ .

(6228) यज़ीद बिन हय्यान बयान करते हैं, हम ज़ैद बिन अरक़म(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनसे कहा, आपने बहुत भलाई देखी है, आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) की सोहबत उठाई है और आपकी इक़्तिदा में नमाज़ें पढ़ी हैं? आगे ऊपर वाली रिवायत है, हाँ इतना फ़र्क़ है कि आपने फ़रमाया, 'ख़बरदार! मैं तुममें दो अहम और वज़नदार चीज़ें छोड़ रहा हूँ, उनमें से एक अल्लाह की किताब है, जो अल्लाह का अहदो-पैमान है, जो इसकी पैरवी करेगा वो हिदायत याफ़्ता होगा और जो इसे छोड़ेगा वो गुमराह होगा।' और इस हदीस़ में ये भी है, हमने पूछा, आपके अहले बैत कौन हैं? आपकी बीवियाँ? जवाब दिया, नहीं अल्लाह की क़सम! औरत(बीवी) इंसान के साथ एक अर्से तक रहती है, फिर वो उसे तलाक़ दे देता है तो वो अपने बाप और अपने ख़ानदान की तरफ़ लौट जाती है, उसके अहले बैत उसका ख़ानदान है और उसके वो अस्बात हैं जो आपके बाद सदक़े से महरूम हो गये हैं।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) स़क़लैन : दो अहम और वज़नदान चीज़ें, अरब, हर नफ़ीस और क़ीमती चीज़ को स़कील से ताबीर करते हैं।**(2) हब्लुल्लाह :** अल्लाह का अहदो-पैमान, क्योंकि जिस तरह

रस्सी दो चीज़ों में रब्त व ताल्लुक़ पैदा करती है, अहदो-पैमान भी दो फ़रीक़ों में रब्त व ताल्लुक़ पैदा करता है।(3) **अल्अस्र मिनद्दहरि :** ज़माने का एक हिस्सा या एक मुद्दत व अर्सा।

फ़ायदा : अना तारिकुन फ़ीकुम स़क़लैन : ये बात आपने हज्जतुल वदाअ से वापसी पर ग़दीर ख़ुम्मन में फ़रमाई। **अव्वलुहुमा या अहदुहुमा किताबुल्लाह :** उनमें से पहली या एक किताबुल्लाह है, जिसका मक़ाम व मर्तबा और हक़ ये है कि उसमें हिदायत और रोशनी और वो अल्लाह का अहदो-पैमान है, इसलिये उस पर अमल पैरा होना और उसको मज़बूती के साथ थामना ज़रूरी है, क्योंकि उसकी पैरवी करना ही हिदायत का रास्ता है, उसको छोड़ देना ज़लालत व गुमराही है और किताबुल्लाह में आपकी सुन्नत भी दाख़िल है। क्योंकि इसके बग़ैर किताबुल्लाह को समझना मुम्किन नहीं और वो इसका बयान है और मुस्तदरक हाकिम में हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) की हदीस़ है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर लोगों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया, 'ऐ लोगो! मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़ चला हूँ, अगर तुम उसको मज़बूती से पकड़े रखोगे, कभी भी गुमराह नहीं होगे, अल्लाह की किताब और उसके नबी(ﷺ) की सुन्नत।'

इसके हम मानी और रिवायात भी मौजूद हैं, जिससे स़ाबित हुआ, दीन की असास व बुनियाद, किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल है, जिनके साथ तमस्सुक करने और अमल करने के हम पाबंद हैं, इनके सिवा कोई चीज़ दीन की असास नहीं बन सकती। दूसरी चीज़ के बारे में फ़रमाया, **उज़क्किरुकुमुल्ला-ह फ़ी अह्ले 'बैती** मैं अपने अहले बैत के बारे में तुम्हें अल्लाह याद कराता हूँ।' यानी उनका एहतिराम व तक्रीम करना, उनके मक़ाम व मर्तबे का लिहाज़ रखना, लेकिन तमस्सुक और इताअत की हक़दार सिर्फ़ किताबुल्लाह है, उसके मुक़ाबले में किसी की बात भी क़ाबिले क़ुबूल नहीं है, एहतिराम व तक्रीम और उनसे मुहब्बत व अक़ीदत का ये मानी नहीं, उनकी हर बात आँख बंद करके मान लो और ये हैसियत सिर्फ़ किताबुल्लाह की है।

निसाउ मिन अह्लि बैतिही : उनकी बीवियाँ, उनका अहले बैत हैं। लेकिन आगे रिवायत आ रही है कि उसकी बीवियाँ उसका अहले बैत नहीं है, ये दोनों जवाब हज़रत ज़ैद ने दिये हैं। जिसका ये मतलब हुआ, उनके नज़दीक उर्फ़ व लुग़त और क़ुरआन की रू से तो बीवियाँ अहले बैत हैं, लेकिन इस ख़ुत्बे में वो मुराद नहीं है। यहाँ मुराद आपका ख़ानदान और कुम्बा है और ये सिर्फ़ आले अली, आले अक़ील, आले जअ़फ़र और आले अब्बास के लोग हैं। यहाँ हज़रत ज़ैद(रज़ि.) ने असल की तख़सीस और तहदीद कर दी, हालांकि असल मम्बअ और सर चश्मा को कहते हैं, इसकी रू से तमाम बनू हाशिम इसका मिस्दाक़ होना चाहिये(शामिल होना चाहिये) और अस्बात बाप की तरफ़ से रिश्तेदारों को कहते हैं। इसमें आपके बाप के तमाम भाई और उनकी औलाद आनी चाहिये। नीज़ यहाँ बीवियाँ को निकालने के लिये जो दलील दी है कि अगर उनको तलाक़ हो जाये तो वो अपने ख़ानदान की तरफ़

लौटती हैं। लिहाज़ा वो अहले बैत नहीं, सिर्फ़ यही नहीं कि ये बात उ़र्फ़, लुग़त और क़ुरआन के ख़िलाफ़ है। अपनी जगह भी महल्ले नज़र है। क्योंकि बीवी को जब तलाक़ मिल गई तब वो अहले बैत नहीं होगी। बीवी होने की सूरत में तो वही अहले बैत है। इसलिये इंसान की बेटी, अपने ख़ाविन्द के घर रहती है और बेटा अपना अलग घर बसा लेता है, आख़िरी दम तक की रफ़ीक़े हयात तो बीवी है, उसी ख़ाविन्द के साथ रहती है, कोई बेटा या बेटी तो आख़िरी दम तक साथ नहीं रहता। नीज़ आपकी बीवियों को तो एक और इम्तियाज़ और ख़ुसूसियात हासिल है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको उनको तलाक़ देने से मना कर दिया और आपके बाद उनको आगे निकाह करने से मना कर दिया। इसलिये उनको अहले बैत से कैसे निकाला जा सकता है, जबकि उनको आपके बाद उनके घरों से नहीं निकाला जा सकता था। नीज़ क़ुरआन मजीद में उनको अहले बैत क़रार दिया गया है और क़ुरआन ही असल दलील और हुज्जत है जिस पर अ़मल करना ज़रूरी है।

(6229) हज़रत सह्ल बिन सअ़द(रज़ि.) बयान करते हैं कि मरवान के ख़ानदान का एक आदमी मदीना का गवर्नर मुक़र्रर किया गया, उसने सह्ल बिन सअ़द(रज़ि.) को बुलवाया और उन्हें हज़रत अ़ली(रज़ि.) को बुरा-भला कहने का हुक्म दिया। हज़रत सह्ल(रज़ि.) ने इंकार कर दिया तो उसने उन्हें कहा, अगर ये नहीं मानते हो तो यूँ कहो, अबू तुराब पर अल्लाह की लानत! तो हज़रत सह्ल ने कहा, हज़रत अ़ली(रज़ि.) को अबू तुराब के नाम से ज़्यादा महबूब कोई नाम नहीं था और जब उन्हें इससे पुकारा जाता था तो वो इससे बहुत ख़ुश होते थे। तो उस गवर्नर ने कहा, हमको उनकी इस क़िस्से की ख़बर दीजिये, उनका नाम अबू तुराब क्यों रखा गया? उन्होंने जवाब दिया, रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के घर आये तो आपने हज़रत अ़ली को घर में न पाया। चुनाँचे आपने

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي حَازِمٍ - عَنْ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ اسْتُعْمِلَ عَلَى الْمَدِينَةِ رَجُلٌ مِنْ آلِ مَرْوَانَ - قَالَ - فَدَعَا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ فَأَمَرَهُ أَنْ يَشْتِمَ عَلِيًّا - قَالَ - فَأَبَى سَهْلٌ فَقَالَ لَهُ أَمَّا إِذْ أَبَيْتَ فَقُلْ لَعَنَ اللَّهُ أَبَا التُّرَابِ . فَقَالَ سَهْلٌ مَا كَانَ لِعَلِيٍّ اسْمٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَبِي التُّرَابِ وَإِنْ كَانَ لَيَفْرَحُ إِذَا دُعِيَ بِهَا . فَقَالَ لَهُ أَخْبِرْنَا عَنْ قِصَّتِهِ لِمَ سُمِّيَ أَبَا تُرَابٍ قَالَ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْتَ فَاطِمَةَ فَلَمْ يَجِدْ عَلِيًّا فِي الْبَيْتِ فَقَالَ " أَيْنَ ابْنُ عَمِّكِ " . فَقَالَتْ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ شَىْءٌ فَغَاضَبَنِي فَخَرَجَ فَلَمْ

يَقِلْ عِنْدِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لإِنْسَانٍ " انْظُرْ أَيْنَ هُوَ " . فَجَاءَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هُوَ فِي الْمَسْجِدِ رَاقِدٌ . فَجَاءَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ مُضْطَجِعٌ قَدْ سَقَطَ رِدَاؤُهُ عَنْ شِقِّهِ فَأَصَابَهُ تُرَابٌ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَمْسَحُهُ عَنْهُ وَيَقُولُ " قُمْ أَبَا التُّرَابِ قُمْ أَبَا التُّرَابِ " .

पूछा, 'तेरा चाचाज़ाद कहाँ है?' उन्होंने जवाब दिया, मेरे और उनके दरम्यान कुछ तल्ख़ी हुई तो वो मुझसे नाराज़ होकर चले गये और मेरे यहाँ क़ैलूला नहीं किया। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक आदमी को फ़रमाया, 'देखो! वो कहाँ है?' उसने आकर बताया, ऐ अल्लाह के रसूल! वो मस्जिद में सोये हैं। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) उनके पास आये, जबकि वो लेटे हुए थे और उनकी एक जानिब से उनकी चादर गिर चुकी थी और उन्हें मिट्टी लग गई थी तो रसूलुल्लाह(ﷺ) उनसे मिट्टी साफ़ कर रहे थे और फ़रमा रहे थे, 'ऐ अबू तुराब! उठो, उठो, ऐ अबू तुराब!'

(सहीह बुख़ारी : 3703, 6280)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, जब इंसान पर अ़स्बियत और तअ़स्सुब सवार हो जाये तो वो किस सतह पर उतर आता है, बनू उमय्या के कुछ अफ़राद शिद्दत व अ़स्बियत की बिना पर हज़रत अ़ली(रज़ि.) को पसंद नहीं करते। लेकिन हज़रत सह्ल(रज़ि.) ने गवर्नर की बात नहीं मानी, जिससे स़ाबित हुआ, सहाबा किराम हुक्मरानों की ग़लत बात उनके सामने रद्द कर देते थे। नीज़ उस दौर के हुक्मरान अपनी बात डण्डे के ज़ोर से नहीं मनवाते, इसलिये जब हज़रत सह्ल ने बताया कि हज़रत अ़ली को अबू तुराब ही के नाम से मसर्रत व फ़रहत होती थी तो उसने उस नाम का पसे मन्ज़र(कारण) मालूम करने की ख़्वाहिश की और इस वाक़िये से कोई ग़लत मतलब अख़ज़ नहीं किया।

ऐ-न इब्नु अ़म्मिक : अ़रबी मुहावरे के मुताबिक़ बाप के रिश्तेदार को इब्नुल अ़म्म से ताबीर किया गया है, वरना वो हुज़ूर के चाचाज़ाद थे, हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के चाचाज़ाद न थे। चूंकि हज़रत अ़ली(रज़ि.) के एक पहलू पर मिट्टी लगी हुई थी, इसलिये आपने प्यार व मुहब्बत से उनको मानूस करने के लिये अबू तुराब के अल्फ़ाज़ से पुकारा।

बाब 5 : हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) की फ़ज़ीलत व कमाल

باب فِي فَضْلِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رضى الله عنه

(6230) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक रात जागते रहे। चुनाँचे फ़रमाया, 'ऐ काश! मेरे साथियों में से कोई बासलाहियत आदमी आज रात मेरी हिफ़ाज़त करता।' इतने में हमने हथियारों की आवाज़ सुनी, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'ये कौन है?' उन्होंने कहा, सअद बिन अबी वक़्क़ास हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी पहरेदारी के लिये आया हूँ। हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) सो गये, यहाँ तक कि मैंने आपके ख़र्राटों की आवाज़ सुनी।

(सहीह बुख़ारी : 2885, 7231, तिर्मिज़ी : 3756)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ أَرِقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ لَيْتَ رَجُلاً صَالِحًا مِنْ أَصْحَابِي يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ . قَالَتْ وَسَمِعْنَا صَوْتَ السِّلاَحِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ هَذَا " . قَالَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ جِئْتُ أَحْرُسُكَ . قَالَتْ عَائِشَةُ فَنَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى سَمِعْتُ غَطِيطَهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अरिक़ : जागते रहे या बेदार रहे। **(2) यह्रुसुनी :** मेरा पहरा दे, हिफ़ाज़त करे।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि इंसान को हज़्म व एहतियात इख़्तियार करना चाहिये(होशियार रहना चाहिये) और दुश्मन से चोकन्ना रहना चाहिये और उसके लिये अस्बाब व वसाइल इख़्तियार करना तवक्कुल के मुनाफ़ी(ख़िलाफ़) नहीं है और ख़तरात की सूरत में अपने हुक्मरानों की हिफ़ाज़त का लोगों को बन्दोबस्त करना चाहिये और इससे हज़रत सअद(रज़ि.) की आपसे मुहब्बत व अक़ीदत और आपकी हिफ़ाज़त का जज़्बा भी मालूम होता है और इस वजह से वो आपके फ़रमान, 'रजुलन सालिहन' का मिस्दाक़ बने हैं। लेकिन ये वाक़िया उस वक़्त का है कि अल्लाह तआला ने आपकी हिफ़ाज़त करने का अभी तक मुज़्दा(ख़ुशख़बरी) नहीं सुनाया था, जब ये आयत उतरी कि अल्लाह आपकी लोगों से हिफ़ाज़त करेगा तो फिर आपको किसी ज़ाहिरी पहरेदारी की ज़रूरत न रही।

(6231) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) मदीना आने पर एक रात जागते रहे, चुनाँचे फ़रमाया, 'ऐ काश! मेरे साथियों में से कोई बासलाहियत आदमी आज रात मेरा पहरा देता।' और हम अभी इस बातचीत या हाल में थे, हमने हथियारों की झंकार सुनी तो आपने पूछा, 'ये कौन है?' उन्होंने कहा, सअद बिन अबी वक़्क़ास हूँ। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनसे पूछा, 'क्यों आये हो?' उन्होंने कहा, मेरे दिल में रसूलुल्लाह(ﷺ) के बारे में ख़ौफ़ पैदा हुआ(कि दुश्मन नुक़सान न पहुँचाये) इसलिये मैं आपकी हिफ़ाज़त के लिये आया हूँ। तो आपने उनके हक़ में दुआ फ़रमाई, फिर सो गये। इब्ने रुम्ह की रिवायत में है, क़ुल की जगह क़ुल्ना है, हमने पूछा।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَهِرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَقْدَمَهُ الْمَدِينَةَ لَيْلَةً فَقَالَ " لَيْتَ رَجُلاً صَالِحًا مِنْ أَصْحَابِي يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ " . قَالَتْ فَبَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ سَمِعْنَا خَشْخَشَةَ سِلاَحٍ فَقَالَ " مَنْ هَذَا " . قَالَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا جَاءَ بِكَ " . قَالَ وَقَعَ فِي نَفْسِي خَوْفٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَجِئْتُ أَحْرُسُهُ . فَدَعَا لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ نَامَ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ رُمْحٍ فَقُلْنَا مَنْ هَذَا .

मुफ़रदातुल हदीस : ख़श्ख़श-त सिलाहिन : हथियारों के आपसी टकराव की आवाज़, उनसे पैदा होने वाली झंकार।

(6232) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक रात बेदार रहे, आगे पहली रिवायत की तरह है।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، يَقُولُ قَالَتْ عَائِشَةُ أَرِقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ .

(6233) हज़रत अली(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत सअद बिन मालिक के अलावा किसी के लिये अपने वालिदैन को जमा नहीं फ़रमाया, आप उन्हें उहुद के दिन फ़रमा रहे थे, 'तीर फेंको, तुम पर मेरे बाप-माँ क़ुर्बान।'
(सहीह बुख़ारी : 2905, 4058, 4059, 6184, तिर्मिज़ी : 3754, इब्ने माजह, बाब : 129)

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَلِيًّا، يَقُولُ مَا جَمَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَبَوَيْهِ لأَحَدٍ غَيْرَ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ فَإِنَّهُ جَعَلَ يَقُولُ لَهُ يَوْمَ أُحُدٍ " ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي " .

(6234) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، ح حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَإِسْحَاقُ الْحَنْظَلِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

फ़ायदा : हज़रत सअद(रज़ि.) के वालिद का नाम मालिक है और कुन्नियत अबू वक़्क़ास है और ग़ज़्व-ए-उहुद के दिन आपने ये अल्फ़ाज़ सिर्फ़ हज़रत सअद(रज़ि.) के हक़ में फ़रमाये थे और ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) के बारे में फ़रमाये थे, लेकिन हज़रत अली(रज़ि.) को इसका पता न चल सका या मुराद सिर्फ़ उहुद का दिन है, दूसरे दिन मुराद नहीं।

(6235) हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) बयान करते हैं, उहुद के दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझ पर अपने वालिदैन क़ुर्बान फ़रमाये।
(सहीह बुख़ारी : 3725, 4055, 4056,

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ بِلاَلٍ - عَنْ يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ -عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي

وَقَّاصٍ، قَالَ لَقَدْ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ.

4057, तिर्मिज़ी : 3753, इब्ने माजह, बाब : 130)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، رُمْحٍ عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، كِلاَهُمَا عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6236) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - يَعْنِي ابْنَ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم جَمَعَ لَهُ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ . قَالَ كَانَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَدْ أَحْرَقَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي " . قَالَ فَنَزَعْتُ لَهُ بِسَهْمٍ لَيْسَ فِيهِ نَصْلٌ فَأَصَبْتُ جَنْبَهُ فَسَقَطَ فَانْكَشَفَتْ عَوْرَتُهُ فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى نَوَاجِذِهِ .

(6237) आमिर बिन सअ़द अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने उहुद के दिन, उनके लिये अपने माँ-बाप को जमा फ़रमाया। सअ़द(रज़ि.) बयान करते हैं, एक मुश्रिक आदमी ने मुसलमानों को भून डाला था। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'तीर फेंको। तुझ पर मेरा बाप और मेरी माँ कुर्बान।' हज़रत सअ़द(रज़ि.) कहते हैं, मैंने उसको तीर मारा, जिसका नोक या पर न था तो मैंने उसकी पहलू या पस्ली का निशाना लिया, जिससे वो गिर पड़ा और उसकी शर्मगाह खुल गई। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) हँस पड़े, यहाँ तक कि मैंने आपके नोकदार दाँत देख लिये।

मुफ़रदातुल हदीस़ : अह्रक़ल मुस्लिमीन : उसने मुसलमानों को भून डाला, उनका क़त्ले आ़म किया। इसलिये जब हज़रत सअ़द(रज़ि.) ने उसका निशाना लेकर, उसको तीर मारा और वो चारों शाने चित गिर गया तो आप उसके क़त्ल व ज़िल्लत से ख़ुश होकर हँस दिये, उसकी शर्मगाह के खुल जाने पर नहीं, सबके सामने रुस्वा होने पर ख़ुश हुए।

(6238) हज़रत मुस्अब अपने बाप सअद(रज़ि.) से बयान करते हैं कि सूरते हाल ये है कि उनके बारे में क़ुरआन मजीद की कई आयतें उतरीं। वजह ये है, हज़रत सअद(रज़ि.) की वालिदा ने क़सम खाई कि जब तक वो अपने दीन का इंकार नहीं करते, वो कभी भी उनसे बोलेगी नहीं और न खायेगी और न पियेगी और कहने लगी, तुम्हारा दावा है कि अल्लाह ने तुझे तेरे वालिदैन के बारे में हुस्ने सुलूक की ताकीद की है और मैं तेरी माँ हूँ और मैं तुम्हें ये हुक्म देती हूँ। वो बयान करते हैं, वो तीन दिन इस हालत में रही, यहाँ तक कि भूख से बेहोश हो गई तो उसका उमारा नामी बेटा उठा। उसने उसे पानी पिलाया, तो वो सअद के ख़िलाफ़ बहुआ करने लगी। चुनाँचे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने क़ुरआन में ये आयत उतारी, 'और हमने इंसान को उसके वालिदैन के बारे में अच्छाई की तल्क़ीन की है और अगर वो तुम्हें मजबूर करें या तुझ पर दबाव डालें कि तू मेरे साथ शरीक करे, जिसका तुझे इल्म नहीं, तू उनका कहा न मानना, अल्बत्ता दुनियवी मामलात में उनके साथ भलाई के साथ रिफ़ाक़त रखना।'(सूरह अन्कबूत : 8, सूरह लुक़मान : 14-15) हज़रत सअद(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) को बहुत सा माले ग़नीमत मिला, सो उसमें एक तलवार थी, वो मैंने ले ली और उसे लेकर रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की, ये तलवार बतौरे इनाम मुझे

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي مُصْعَبُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ نَزَلَتْ فِيهِ آيَاتٌ مِنَ الْقُرْآنِ - قَالَ - حَلَفَتْ أُمُّ سَعْدٍ أَنْ لاَ تُكَلِّمَهُ أَبَدًا حَتَّى يَكْفُرَ بِدِينِهِ وَلاَ تَأْكُلَ وَلاَ تَشْرَبَ . قَالَتْ زَعَمْتَ أَنَّ اللَّهَ وَصَّاكَ بِوَالِدَيْكَ وَأَنَا أُمُّكَ وَأَنَا آمُرُكَ بِهَذَا . قَالَ مَكَثَتْ ثَلاَثًا حَتَّى غُشِيَ عَلَيْهَا مِنَ الْجَهْدِ فَقَامَ ابْنٌ لَهَا يُقَالُ لَهُ عُمَارَةُ فَسَقَاهَا فَجَعَلَتْ تَدْعُو عَلَى سَعْدٍ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِي الْقُرْآنِ هَذِهِ الآيَةَ { وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا} {وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي} وَفِيهَا { وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا} قَالَ وَأَصَابَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَنِيمَةً عَظِيمَةً فَإِذَا فِيهَا سَيْفٌ فَأَخَذْتُهُ فَأَتَيْتُ بِهِ الرَّسُولَ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ نَفِّلْنِي هَذَا السَّيْفَ فَأَنَا مَنْ قَدْ عَلِمْتَ حَالَهُ . فَقَالَ " رُدُّهُ مِنْ حَيْثُ أَخَذْتَهُ " . فَانْطَلَقْتُ حَتَّى إِذَا أَرَدْتُ أَنْ أُلْقِيَهُ فِي

इनायत फ़रमायें; क्योंकि मैं उन लोगों में से हूँ जिनके किरदार से आप आगाह हैं। तो आपने फ़रमाया, 'जहाँ से ली है, वहीं लौटा दो।' चुनाँचे मैं चल पड़ा, यहाँ तक कि मैंने उसको ग़नीमत के जमा करने की जगह डालना चाहा, मेरे नफ़्स ने मुझे मलामत की, सो मैं आपकी तरफ़ लौट आया और मैंने कहा, आप ये मुझे इनायत फ़रमायें, तो आपने मुझे सख़्त आवाज़ में फ़रमाया, 'जहाँ से इसे लिया है, वहीं रख दो।' इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी, 'वो आपसे ग़नीमतों के बारे में सवाल करते हैं।'(सूरह अन्फ़ाल : 1) हज़रत सअद(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं बीमार पड़ गया तो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ पैग़ाम भेजा। आप मेरे पास तशरीफ़ लाये, चुनाँचे मैंने कहा, मुझे इजाज़त दीजिये, मैं अपना माल जहाँ चाहूँ तक़सीम करूँ, आपने इंकार फ़रमाया। मैंने कहा, आधे की इजाज़त दीजिये। आपने इंकार फ़रमाया। मैंने कहा, एक तिहाई तो आप ख़ामोश हो गये। तो बाद में तिहाई की इजाज़त मिल गई। वो बयान करते हैं, मैं अन्सार और मुहाजिरीन की एक जमाअत के पास आया। उन्होंने कहा, आइये! हम तुम्हें खाना खिलायें और शराब पिलायें और ये शराब की हुरमत से पहले का वाक़िया है तो मैं उनके साथ एक बाग़ में आ गया, हश्श बाग़ को कहते हैं। अचानक देखता हूँ, उनके पास एक ऊँट का सर भुना हुआ है और शराब की एक मश्क है। सअद(रज़ि.) कहते हैं, मैंने

الْقَبَضِ لاَمَتْنِي نَفْسِي فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ أَعْطِنِيهِ . قَالَ فَشَدَّ لِي صَوْتَهُ " رُدُّهُ مِنْ حَيْثُ أَخَذْتَهُ " . قَالَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } يَسْأَلُونَكَ عَنِ الأَنْفَالِ{ قَالَ وَمَرِضْتُ فَأَرْسَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَأَتَانِي فَقُلْتُ دَعْنِي أَقْسِمْ مَالِي حَيْثُ شِئْتُ . قَالَ فَأَبَى . قُلْتُ فَالنِّصْفَ . قَالَ فَأَبَى . قُلْتُ فَالثُّلُثَ . قَالَ فَسَكَتَ فَكَانَ بَعْدُ الثُّلُثُ جَائِزًا . قَالَ وَأَتَيْتُ عَلَى نَفَرٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرِينَ فَقَالُوا تَعَالَ نُطْعِمْكَ وَنَسْقِيكَ خَمْرًا . وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ تُحَرَّمَ الْخَمْرُ - قَالَ - فَأَتَيْتُهُمْ فِي حَشٍّ - وَالْحَشُّ الْبُسْتَانُ - فَإِذَا رَأْسُ جَزُورٍ مَشْوِيٌّ عِنْدَهُمْ وَزِقٌّ مِنْ خَمْرٍ - قَالَ - فَأَكَلْتُ وَشَرِبْتُ مَعَهُمْ - قَالَ - فَذُكِرَتِ الأَنْصَارُ وَالْمُهَاجِرُونَ عِنْدَهُمْ فَقُلْتُ الْمُهَاجِرُونَ خَيْرٌ مِنَ الأَنْصَارِ - قَالَ - فَأَخَذَ رَجُلٌ أَحَدَ لَحْيَىِ الرَّأْسِ فَضَرَبَنِي بِهِ فَجَرَحَ بِأَنْفِي فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرْتُهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيَّ - يَعْنِي نَفْسَهُ - شَأْنَ الْخَمْرِ { إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ

وَالأَنْصَابُ وَالأَزْلاَمُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ}

उनके साथ खाया और पिया। चुनाँचे वहाँ अन्सार और मुहाजिरों का ज़िक्र छेड़ दिया गया। मैंने कहा, मुहाजिरीन, अन्सार से बेहतर हैं। सअ़द(रज़ि.) कहते हैं, एक आदमी ने सर के जबड़ों में से एक पकड़कर वो मुझे मारा और मेरी नाक ज़ख़्मी कर दी। चुनाँचे मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आकर, आपको इसकी इत्तिलाअ़ दी तो अल्लाह तआ़ला ने मेरे सबब, शराब के बारे में ये आयत उतारी, 'बस शराब, जुवा, आस्ताने और फ़ाल के तीर सिर्फ़ नापाक और शैतानी काम हैं।'(सूरह माएदा : 90)

(अबू दाऊद : 2740, 3079)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ قَالَ أُنْزِلَتْ فِيَّ أَرْبَعُ آيَاتٍ ‏.‏ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ زُهَيْرٍ عَنْ سِمَاكٍ وَزَادَ فِي حَدِيثِ شُعْبَةَ قَالَ فَكَانُوا إِذَا أَرَادُوا أَنْ يُطْعِمُوهَا شَجَرُوا فَاهَا بِعَصًا ثُمَّ أَوْجَرُوهَا. وَفِي حَدِيثِهِ أَيْضًا فَضَرَبَ بِهِ أَنْفَ سَعْدٍ فَفَزَرَهُ وَكَانَ أَنْفُ سَعْدٍ مَفْزُورًا ‏.‏

(6239) हज़रत मुस्अ़ब बिन सअ़द अपने बाप से बयान करते हैं, उन्होंने बताया, मेरे बारे में चार आयतें उतरी हैं। आगे ऊपर की रिवायत के हम मानी रिवायत है। शोबा की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, जब वो लोग उसे(हज़रत सअ़द रज़ि. की माँ को) खाना खिलाना चाहते तो उसका मुँह डण्डे से खोलते, फिर उसमें खाना डाल देते और उसकी हदीस़ में ये भी है, उसने हज़रत सअ़द(रज़ि.) की नाक पर मारा और उसे फाड़ दिया, इसलिये हज़रत सअ़द की नाक फटी हुई थी।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) शजरू फ़ाहा बिअ़सन : वो उसके मुँह में डण्डा डाल देते, ताकि वो उसे बंद न कर सके, फिर(2) **औजरूहा :** उसमें ग़िज़ा डाल देते, ताकि वो पेट में चली जाये।(3) **फ़ज़र** : फाड़ना या मफ़ज़ूरन : फाड़ा हुआ।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدٍ، فِيَّ نَزَلَتْ } وَلاَ تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ{ قَالَ نَزَلَتْ فِي سِتَّةٍ أَنَا وَابْنُ مَسْعُودٍ مِنْهُمْ وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ قَالُوا لَهُ تُدْنِي هَؤُلاَءِ .

(6240) हज़रत सअद(रज़ि.) बयान करते हैं, ये आयत मेरे बारे में उतरी, 'जो लोग अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं, उनको धुतकारिये नहीं।' (सूरह अन्आम : 52)
(इब्ने माजह : 4128)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الأَسَدِيُّ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدٍ، قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم سِتَّةَ نَفَرٍ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم اطْرُدْ هَؤُلاَءِ لاَ يَجْتَرِئُونَ عَلَيْنَا . قَالَ وَكُنْتُ أَنَا وَابْنُ مَسْعُودٍ وَرَجُلٌ مِنْ هُذَيْلٍ وَبِلاَلٌ وَرَجُلاَنِ لَسْتُ أُسَمِّيهِمَا فَوَقَعَ فِي نَفْسِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقَعَ فَحَدَّثَ نَفْسَهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ {وَلاَ تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ}

(6241) हज़रत सअद(रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ छ: आदमी थे, तो मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से कहा, इन लोगों को भगा दीजिये, ये हमारे सामने आने की जसारत न करें। वो कहते हैं, मैं और इब्ने मसऊद थे, एक आदमी बनू हुज़ैल से था, बिलाल थे दो और आदमी थे, मैं उनके नाम नहीं लेता। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) के दिल में जो अल्लाह को मन्ज़ूर था आया और आपने ख़ुद कलामी की। अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी, 'आप उन लोगों को दूर न हटाइये, जो सुबह व शाम अपने रब को उसकी रज़ामन्दी हासिल करने के लिये पुकारते हैं।' (सूरह अन्आम : 52)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) के दिल में, उनकी ख़्वाहिश पर, उनके ईमान लाने की उम्मीद पर ये ख़्याल आया कि उन सरदारों के आने पर उनको मज्लिस से उठा दें, ताकि उन सरदारों के ज़रिये इस्लाम फैलाने में सहूलत पैदा हो जाये और ये लोग तो किसी और वक़्त भी हाज़िर हो सकते हैं। लेकिन अल्लाह तआला को ये बात पसंद न आई, इसलिये आपको मुश्रिका के नाज़ बरदारी से रोक दिया गया।

बाब 6 : तलहा और ज़ुबैर के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ طَلْحَةَ وَالزُّبَيْرِ رضى الله عنهما

(6242) हज़रत अबू उ़समान(रह.) बयान करते हैं, उन कुछ दिनों में जिनमें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुश्रिकों से जंग लड़ी, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास हज़रत तलहा और सअ़द(रज़ि.) के सिवा कोई भी नहीं रहा था, ये बात उन्होंने ख़ुद अबू उ़समान को बताई।
(सहीह बुख़ारी : 3722, 3723)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، وَحَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالُوا حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، - وَهُوَ ابْنُ سُلَيْمَانَ - قَالَ سَمِعْتُ أَبِي، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، قَالَ لَمْ يَبْقَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي بَعْضِ تِلْكَ الأَيَّامِ الَّتِي قَاتَلَ فِيهِنَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ غَيْرُ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ . عَنْ حَدِيثِهِمَا .

फ़ायदा : जंगे उहुद में जब तीर अन्दाज़ों की ग़लती से जंग का पांसा पलट गया और मुसलमानों में भगदड़ मच गई तो आपके साथ क़ुरैश में से सिर्फ़ हज़रत तलहा और सअ़द(रज़ि.) थे और सात अन्सारी थे, सातों अन्सारी आपकी हिफ़ाज़त करते हुए एक के बाद एक शहीद हो गये। तो फिर ये दोनों क़ुरैशी ही रह गये और ये दोनों अ़रब के माहिर तरीन तीर अन्दाज़ थे, उन्होंने तीर मार-मारकर मुश्रिक हमलावरों को दूर रखा और आपकी हिफ़ाज़त करते हुए हज़रत तलहा का हाथ शल हो गया और आपने उन्हें चलता हुआ शहीद क़रार दिया।

(6243) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़न्दक़ के दिन लोगों को एक काम के लिये दावत दी तो ज़ुबैर(रज़ि.) ने कहा, मैं हाज़िर हूँ। आपने फिर दावत दी तो ज़ुबैर(रज़ि.) ने दावत क़ुबूल कर ली, आपने फिर लोगों को दावत दी तो ज़ुबैर(रज़ि.) ने लब्बैक कहा। चुनाँचे नबी(ﷺ) ने फ़रमाया,

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ نَدَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم النَّاسَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه

وسلم " لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيٌّ وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ " .

'हर नबी के ख़ुसूसी मददगार होते हैं और मेरा हवारी ख़ुसूसी मुआविन ज़ुबैर है।'
(सहीह बुख़ारी : 2747, 2997)

मुफ़रदातुल हदीस़ : हवारी : ख़ालिस सफ़ेद, यानी मुख़्लिस साथी, ख़ुसूसी मुआविन।

फ़ायदा : ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर जब बनू क़ुरैज़ा की बद अहदी और ग़द्दारी का आपको इल्म हुआ तो आपने उनके बारे में सहीह मालूमात हासिल करने के लिये किसी को भेजना चाहा, जब हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) ने उसके लिये फ़ौरी तौर पर अपने आपको पेश कर दिया तो फिर किसी और को पेशकश करने की ज़रूरत न रही।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ جَمِيعًا عَنْ وَكِيعٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ عُيَيْنَةَ .

(6244) यही रिवायत इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 2826, 4113, तिर्मिज़ी : 3745, इब्ने माजह, बाब : 122)

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ الْخَلِيلِ، وَسُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ مُسْهِرٍ، قَالَ إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ كُنْتُ أَنَا وَعُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، يَوْمَ الْخَنْدَقِ مَعَ النِّسْوَةِ فِي أُطُمِ حَسَّانٍ فَكَانَ يُطَأْطِئُ لِي مَرَّةً فَأَنْظُرُ وَأُطَأْطِئُ لَهُ مَرَّةً فَيَنْظُرُ فَكُنْتُ أَعْرِفُ أَبِي إِذَا مَرَّ عَلَى فَرَسِهِ فِي السِّلاَحِ إِلَى بَنِي

(6245) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) बयान करते हैं, ख़न्दक़ के दिन मैं और उमर बिन अबी सलमा औरतों के साथ थे, हज़रत हस्सान क़िले में थे। कभी वो(उमर बिन अबी सलमा) मेरे लिये झुक जाते तो मैं देख लेता और कभी मैं उनके लिये झुक जाता तो वो देख लेते। चुनाँचे मैं अपने वालिद को पहचान लेता, जब वो हथियार पहनकर अपने घोड़े पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ जाते, हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं, मैंने इसका ज़िक्र अपने बाप से किया तो उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे!

قُرَيْظَةَ . قَالَ وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لأَبِي فَقَالَ وَرَأَيْتَنِي يَا بُنَىَّ قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَئِذٍ أَبَوَيْهِ فَقَالَ " فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي " .

क्या तूने मुझे देख लिया था? मैंने कहा, जी हाँ! उन्होंने कहा, हाँ अल्लाह की क़सम! उस दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझ पर अपने वालिदैन क़ुर्बान किये। फ़रमाया, 'तुझ पर मेरा बाप और माँ क़ुर्बान।'
(सहीह बुख़ारी : 3720, तिर्मिज़ी : 3743, इब्ने माजह : 123)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) उतुम जमा अताम : क़िला, ख़न्दक़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने औरतों और बच्चों को हज़रत हस्सान बिन साबित(रज़ि.) के क़िले में जमा कर दिया था और हज़रत अब्दुल्लाह उस वक़्त सिर्फ़ चार-पाँच साल के थे।**(2) युतअतिउ :** वो पुश्त झुका लेते, ताकि हम बारी-बारी एक-दूसरे की पुश्त(पीठ) पर खड़े होकर क़िले की दीवार से बाहर नज़र दौड़ा लें और हज़रत ज़ुबैर बनू क़ुरैज़ा का जायज़ा लेने के लिये वहाँ से दो-तीन बार घोड़े पर सवार होकर गुज़रे थे।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْخَنْدَقِ كُنْتُ أَنَا وَعُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ فِي الأُطُمِ الَّذِي فِيهِ النِّسْوَةُ يَعْنِي نِسْوَةَ النَّبِيِّ ﷺ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ مُسْهِرٍ فِي هَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُرْوَةَ فِي الْحَدِيثِ وَلَكِنْ أَدْرَجَ الْقِصَّةَ فِي حَدِيثِ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ الزُّبَيْرِ .

(6246) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) बयान करते हैं, जब ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ पेश आया मैं और उमर बिन अबी सलमा उस क़िले में थे, जिसमें औरतें थीं। यानी नबी(ﷺ) की अज़्वाजे मुतहहरात आगे ऊपर वाली हदीस है, लेकिन यहाँ इब्ने ज़ुबैर का अपने बाप से सवाल जवाब, हिशाम की रिवायत में दाख़िल कर दिया गया है जबकि ऊपर वाली हदीस में इसको अब्दुल्लाह बिन उर्वा से बयान किया गया था।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ عَلَى حِرَاءٍ هُوَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ

(6247) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हिरा पहाड़ पर खड़े थे, आपके साथ अबू बकर, उमर, उसमान, अली, तलहा और ज़ुबैर(रज़ि.) भी थे तो एक चट्टान ने हरकत की। इस पर

وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ فَتَحَرَّكَتِ الصَّخْرَةُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اهْدَأْ فَمَا عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ " .

रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'पुर सुकून हो जा! ठहर जा! क्योंकि तुझ पर बस नबी, सिद्दीक़ या शहीद ही है।' इह्दा : उस्कुन के हम मानी है साकिन हो जा, ठहर जा।
(तिर्मिज़ी : 3696)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) नबी थे और अबू बकर सिद्दीक़ और बाक़ी हज़रात की आपने शहादत की पेशीनगोई फ़रमाई। अगली रिवायत में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) को भी शुहदा में शुमार किया गया है, क्योंकि वो भी उन लोगों में दाख़िल हैं जिनके बारे में आपने जन्नत की गवाही दी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ خُنَيْسٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْدِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ عَلَى جَبَلِ حِرَاءٍ فَتَحَرَّكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اسْكُنْ حِرَاءُ فَمَا عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ " . وَعَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ رضى الله عنهم

(6248) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हिरा पहाड़ पर खड़े थे तो उसने हरकत की तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हिरा ठहर जा! क्योंकि तुम पर सिर्फ़ नबी या सिद्दीक़ या शहीद है।' और उस पर नबी(ﷺ), अबू बकर, उमर, उसमान, अली, तलहा, ज़ुबैर और सअद बिन अबी वक़्क़ास(रज़ि.) थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَعَبْدَةُ، قَالاَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَتْ لِي عَائِشَةُ أَبَوَاكَ وَاللَّهِ مِنَ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ .

(6249) हिशाम अपने बाप से रिवायत करते हैं, मुझे हज़रत आइशा(रज़ि.) ने फ़रमाया, तेरे बाप नाना, अल्लाह की क़सम! उन लोगों में से हैं, जिन्होंने ज़ख़्मी होने के बावजूद अल्लाह और रसूल की बात को माना।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ تَعْنِي أَبَا بَكْرٍ وَالزُّبَيْرَ .

(6250) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें ये इज़ाफ़ा है अबवाक से हज़रत आइशा(रज़ि.) की मुराद, अबू बकर और ज़ुबैर(रज़ि.) थे।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنِ الْبَهِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، قَالَ قَالَتْ لِي عَائِشَةُ كَانَ أَبَوَاكَ مِنَ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ .

(6251) हज़रत उरवा(रह.) बयान करते हैं, हज़रत आइशा(रजि.) ने मुझे फ़रमाया, तेरा बाप, नाना उन लोगों में दाख़िल थे, जिन्होंने ज़ख़्मी होने के बावजूद अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म को क़ुबूल किया।

फ़ायदा : ग़ज़्व-ए-उहुद में जब मुसलमान ज़ख़्मों से चूर थे, आपने 4 शव्वाल बरोज़ हफ़्ता, दुश्मन के तआक़ुब का हुक्म दिया और फ़रमाया, सिर्फ़ वही लोग जायेंगे जो मअरक-ए-उहुद में मौजूद थे। मुसलमान ज़ख़्मों से चूर और ग़म से निढाल और अन्देश-ए-ख़ौफ़ से दोचार थे, लेकिन सबने बिला तरद्दुद सरे इताअत ख़म कर दिया और मुश्रिकीने मक्का के तआक़ुब(पीछा करने) में निकले।(तफ़्सील के लिये देखिये अर्रहीक़ुल मख़्तूम, ग़ज़्वए हुमरा अल्असद)

باب فَضَائِلِ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ رضى الله تعالى عنه

बाब 7 : हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ خَالِدٍ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، قَالَ قَالَ أَنَسٌ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينًا وَإِنَّ أَمِينَنَا أَيَّتُهَا الأُمَّةُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ " .

(6252) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर उम्मत में एक अमीन है और हमारा अमीन ऐ उम्मत! अबू उबैदा बिन जर्राह है।'

(सहीह बुख़ारी : 3744, 4382, 7255)

फ़ायदा : आपके साथियों में अल्लाह तआला ने तमाम इंसानी मकारिमे अख़लाक़(अच्छे अख़लाक़) वदीअत फ़रमाये थे, लेकिन कुछ सिफ़ात में कुछ को ख़ुसूसी इम्तियाज़ हासिल था, हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह सिफ़ते अमानत में मुम्ताज़ थे, लेकिन किसी एक वस्फ़ में इम्तियाज़(ख़ुसूसियात) से कुल्ली तौर पर बरतरी हासिल नहीं होती, इसमें मज्मूई सिफ़ात(ख़ूबियों) का लिहाज़ होता है, जिनमें अबू बकर(रज़ि.) सब पर फ़ाइक़(बुलंद) थे।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - وَهُوَ ابْنُ سَلَمَةَ - عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أَهْلَ الْيَمَنِ، قَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا ابْعَثْ مَعَنَا رَجُلاً يُعَلِّمْنَا السُّنَّةَ وَالإِسْلاَمَ . قَالَ فَأَخَذَ بِيَدِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَقَالَ " هَذَا أَمِينُ هَذِهِ الأُمَّةِ " .

(6253) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि अहले यमन रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे, हमारे साथ कोई आदमी भेजिये, जो हमें सुन्नत और इस्लाम की तालीम दे। तो आपने हज़रत अबू उबैदा(रज़ि.) का हाथ पकड़कर फ़रमाया, 'ये इस उम्मत का अमीन है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، يُحَدِّثُ عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ جَاءَ أَهْلُ نَجْرَانَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْعَثْ إِلَيْنَا رَجُلاً أَمِينًا . فَقَالَ " لأَبْعَثَنَّ إِلَيْكُمْ رَجُلاً أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ حَقَّ أَمِينٍ " . قَالَ فَاسْتَشْرَفَ لَهَا النَّاسُ - قَالَ - فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ .

(6254) हज़रत हुज़ैफ़ा(रज़ि.) बयान करते हैं, अहले नजरान, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे पास कोई अमीन आदमी भेजिये। तो आपने फ़रमाया, 'मैं तुम्हारी तरफ़ एक ऐसा अमीन आदमी भेजूँगा जो वाक़ेई अमीन होगा।' हज़रत हुज़ैफ़ा(रज़ि.) कहते हैं, चुनाँचे लोगों ने उसकी तरफ़ नज़रें उठाईं, इसकी ख़्वाहिश की तो आपने अबू उबैदा बिन जर्राह को भेजा।

(सहीह बुख़ारी : 3745, 4380, 3745, 4380, 7381, 7254, तिर्मिज़ी : 3796, इब्ने माजह, बाब : 135)

मुफ़रदातुल हदीस़ : इस्तश्र-फ़ लहा : इसके लिये नज़रें उठाईं और इस वस्फ़ का अहल होने की आरज़ू और ख़्वाहिश की, अहले नजरान से मुराद यहाँ अहले यमन हैं, दोनों इलाक़े पड़ौस में वाक़ेअ हैं।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ الْحَفَرِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6255) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही हदीस़ नक़ल करते हैं।

फ़ायदा : पहली हदीस़ में अहले यमन की तरफ़ भेजने का तज़्किरा है और इसमें नजरान की तरफ़ जो यमन का हिस्सा नहीं है, लेकिन इससे मुत्तसिल वाक़ेअ है और सहीह बुख़ारी में अहले नजरान का नाम ही है।

باب فَضَائِلِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ رضى الله عنهما

बाब 8 : हज़रत हसन व हुसैन(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي يَزِيدَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ لِحَسَنٍ " اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ وَأَحْبِبْ مَنْ يُحِبُّهُ " .

(6256) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने हज़रत हसन(रज़ि.) के बारे में फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू इससे और इससे मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत फ़रमा।'

(सहीह बुख़ारी : 2122, 5884, इब्ने माजह, बाब : 142)

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي طَائِفَةٍ مِنَ النَّهَارِ لاَ يُكَلِّمُنِي وَلاَ أُكَلِّمُهُ حَتَّى جَاءَ سُوقَ بَنِي قَيْنُقَاعَ ثُمَّ انْصَرَفَ حَتَّى أَتَى خِبَاءَ فَاطِمَةَ فَقَالَ " أَثَمَّ لُكَعُ أَثَمَّ لُكَعُ " . يَعْنِي حَسَنًا

(6257) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ दिन के एक हिस्से में निकला, न आप मेरे साथ हम कलाम हो रहे थे और न मैं आपको बुला रहा था, यहाँ तक कि बनू क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में पहुँच गये। फिर वापस पलटे और हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के घर आये और पूछा, 'क्या इधर बच्चा है? क्या यहाँ बच्चा है?' आपकी मुराद हसन(रज़ि.) थे। हमने ख़याल किया,

فَظَنَنَّا أَنَّهُ إِنَّمَا تَحْبِسُهُ أُمُّهُ لأَنْ تُغَسِّلَهُ وَتُلْبِسَهُ سِخَابًا فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ جَاءَ يَسْعَى حَتَّى اعْتَنَقَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ وَأَحْبِبْ مَنْ يُحِبُّهُ " .

उन्हें उनकी माँ नहलाने और ख़ुश्बूदार हार पहनाने के लिये रोके हुए है तो थोड़ी देर के बाद वो दौड़ते हुए आये, यहाँ तक कि दोनों में से हर एक ने एक-दूसरे के गले में बाहें डाल दीं। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू इससे मुहब्बत फ़रमा और इससे मुहब्बत करने वाले से भी मुहब्बत फ़रमा।'

मुफ़रदातुल हदीस :(1) फ़ी ताइफ़तिम्-मिनन्नहार : दिन के किसी हिस्से में।**(2) साइफ़ह :** दिन की गर्मी में।**(3) ला युकल्लिमुनी वला उकल्लिमुहू :** आप ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूलियत की बिना पर चुप-चाप चल रहे थे और हज़रत अबू हुरैरह आपके अदब व एहतिराम में आपकी मशग़ूलियत में दख़ल अन्दाज़ी नहीं करना चाहते थे, इसलिये वो भी आपसे कलाम नहीं कर रहे थे।**(4) ख़िबाउन :** ख़ेमे को कहते हैं, लेकिन यहाँ मुराद घर है और बुख़ारी शरीफ़ में घर के सामने का आँगन फ़िनाअ का लफ़्ज़ है।**(5) लुकअ़ :** कमीने को कहते हैं, लेकिन प्यार व मुहब्बत के लिये छोटे बच्चे को भी कह देते हैं।**(6) सिख़ाब :** ख़ुश्बू से तैयार करदा हार और बक़ौल कुछ मूँगों का हार।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، - وَهُوَ ابْنُ ثَابِتٍ حَدَّثَنَا الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ، قَالَ رَأَيْتُ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ".

(6258) हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत हसन बिन अ़ली(रज़ि.) को रसूलुल्लाह(ﷺ) के कन्धे पर बैठे देखा और आप फ़रमा रहे थे, 'ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत फ़रमा।'

(सहीह बुख़ारी : 3749, तिर्मिज़ी : 3782)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ قَالَ ابْنُ نَافِعٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، - وَهُوَ ابْنُ ثَابِتٍ - عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَاضِعًا الْحَسَنَ

(6259) हज़रत बराअ(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा, आप हज़रत हसन बिन अ़ली(रज़ि.) को अपने कन्धे पर बिठाये हुए फ़रमा रहे हैं, 'ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत फ़रमा।'

بْنَ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِهِ وَهُوَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ " .

(6260) हज़रत इयास(रह.) अपने बाप(सलमा बिन अक्वअ रज़ि.) से बयान करते हैं, मैं नबी(ﷺ), हज़रत हसन व हज़रत हुसैन(रज़ि.) को आपकी सफ़ेद ख़च्चर पर बिठाकर आगे से पकड़कर चला हूँ, यहाँ तक कि मैंने उन सब को नबी(ﷺ) के कमरे में दाख़िल किया, ये आपके आगे थे और ये आपके पीछे थे।

(सहीह बुख़ारी : 2775)

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الرُّومِيِّ الْيَمَامِيُّ، وَعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، - وَهُوَ ابْنُ عَمَّارٍ - حَدَّثَنَا إِيَاسٌ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ لَقَدْ قُدْتُ بِنَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ بَغْلَتَهُ الشَّهْبَاءَ حَتَّى أَدْخَلْتُهُمْ حُجْرَةَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم هَذَا قُدَّامَهُ وَهَذَا خَلْفَهُ .

फ़ायदा : अगर सवारी का जानवर क़वी हो तो उस पर एक से ज़्यादा लोग सवारी कर सकते हैं और आपने प्यार व मुहब्बत की बिना पर दोनों को अपने आगे और पीछे बिठाया हुआ था। इन हदीसों में हज़रत हसन(रज़ि.) से मुहब्बत करने का तज़्किरा है हज़रत हुसैन(रज़ि.) के बारे में नहीं। लेकिन शीया हज़रात का सारा ज़ोर हज़रत हुसैन(रज़ि.) से प्यार व मुहब्बत पर है जिससे मालूम हुआ ये ख़्वाहिश परस्त लोग हैं जो दीन के तक़ाज़ों से कोसों दूर हैं।

बाब 9 : नबी(ﷺ) के अहले बैत के फ़ज़ाइल

باب فَضَائِلِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

(6261) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, नबी(ﷺ) सुबह को निकले, आप स्याह बालों की चादर ओढ़े हुए थे, जिस पर पालान की तस्वीर या नक़्शा था। तो हज़रत हसन बिन अली(रज़ि.) आ गये। आपने उनको चादर में दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत हुसैन(रज़ि.) आ गये। वो भी उनके

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، -وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ- قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ، قَالَتْ قَالَتْ عَائِشَةُ خَرَجَ النَّبِيُّ صلى الله عليه

وسلم غَدَاةً وَعَلَيْهِ مِرْطٌ مُرَحَّلٌ مِنْ شَعْرٍ أَسْوَدَ فَجَاءَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ فَأَدْخَلَهُ ثُمَّ جَاءَ الْحُسَيْنُ فَدَخَلَ مَعَهُ ثُمَّ جَاءَتْ فَاطِمَةُ فَأَدْخَلَهَا ثُمَّ جَاءَ عَلِيٌّ فَأَدْخَلَهُ ثُمَّ قَالَ { إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا}

साथ दाख़िल हो गये। फिर हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) आ गईं तो आपने उन्हें भी दाख़िल कर लिया। फिर हज़रत अली(रज़ि.) आ गये तो उसे भी दाख़िल कर लिया। फिर फ़रमाया, 'सिवाय इसके नहीं, अल्लाह चाहता है कि तुम से गन्दगी को दूर कर दे, ऐ अहले बैत! और तुम्हें ख़ूब पाक-साफ़ कर दे।' (सूरह अहज़ाब : 32)

फ़ायदा : इस आयते मुबारका की शुरूआत यूँ होती है, 'अपने घरों में क़रार पकड़े रहो और पहले ज़मान-ए-जाहिलिय्यत की तरह अपनी ज़ेबो-ज़ीनत की नुमाइश न करती फिरो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देती रहो ताकि अल्लाह तुमसे पलीदी को दूर कर दे..., आख़िर तक।' इससे साफ़ मालूम होता है कि इस आयत का असल और अव्वलीन मिस्दाक़ अज़्वाजे मुतह्हरात हैं और दूसरा कोई बित्तबअ़ और क़ानूनी तौर पर मुराद बन सकता है और आपकी दुआ की बरकत की बिना पर ऊपर ज़िक्र किये गये लोग, इज़ाफ़ी और सानवी तौर पर दाख़िल हैं। क़ुरआनी आयतों का सियाक़ व सबाक़ यानी मा क़ब्ल वमा बअ़्द सिर्फ़ और सिर्फ़ अज़्वाजे मुतह्हरात के बारे में है, कोई दूसरा इसका एहतिमाल नहीं रखता और रहा ज़मीर मुज़क्कर का मसला तो क़ुरआन और अ़रबी मुहावरात की रू से बीवी को जमा मुज़क्कर के सेग़े से मुख़ातब किया जा सकता है। हज़रत इब्राहीम(अलै.) की बीवी को फ़रिश्तों ने अ़लैकुम अहलुल बैत(तुम अहले बैत पर) से ख़िताब किया और हज़रत मूसा(अलै.) के वाक़िये में कई जगह आया है, आतीकुम लअ़ल्लकुम तस्तलून जमा मुज़क्कर के सेग़े बीवी को मुख़ातब करते हुए इस्तेमाल हुए हैं। अ़रबी अश्आर और अहादीस़ में भी ये उस्लूब मौजूद है।

باب فَضَائِلِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ وَأُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

बाब 10 : हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيُّ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ مَا

(6262) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(बिन उमर रज़ि.) कहा करते थे, हम ज़ैद बिन हारिसा को ज़ैद बिन मुहम्मद ही के नाम से पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुरआन मजीद की ये

كُنَّا نَدْعُو زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ إِلاَّ زَيْدَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَتَّى نَزَلَ الْقُرْآنُ { ادْعُوهُمْ لآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ} قَالَ الشَّيْخُ أَبُو أَحْمَدَ مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى أَخْبَرَنَا أَبُو الْعَبَّاسِ السَّرَّاجُ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُوسُفَ الدُّوَيْرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ بِهَذَا الْحَدِيثِ .

आयत उतरी, 'उनको उनके बापों के नाम से पुकारो, अल्लाह के यहाँ यही क़रीने इंसाफ़ है।' (सूरह अहज़ाब : 5)
(सहीह बुख़ारी : 4782, तिर्मिज़ी : 3209, 3813)

फ़ायदा : हज़रत ज़ैद(रज़ि.) बच्चे थे कि जाहिलिय्यत के दौर में बनू क़ैन के लोगों ने उनको उठाकर उकाज़ के बाज़ार में बेच डाला और हज़रत हकीम बिन हिज़ाम(रज़ि.) ने अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) के लिये ख़रीद लिया और खदीज़ा ने शादी के बाद, हुज़ूर(ﷺ) को हिबा कर दिया। आहिस्ता-आहिस्ता उनके वालिद को पता चल गया, जो उनके फ़िराक़(जुदाई) के ग़म में रोते रहते थे, वो अपने भाई कअ़ब को साथ लेकर फ़िद्ये की रक़म के साथ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आपने फ़रमाया, 'अपने बच्चे से पूछ लो, अगर वो तुम्हारे साथ जाने के लिये तैयार हो तो मुझे कोई इंकार नहीं है, लेकिन अगर वो मेरे साथ रहना चाहते तो ये मुम्किन नहीं है कि मैं उसे नज़र अन्दाज़ कर दूँ। हज़रत ज़ैद ने आपके पास अपने रहने को तरजीह दी तो आपने जाहिलिय्यत के दस्तूर के मुताबिक़ ऐलान कर दिया, आज से ज़ैद मेरा बेटा है, मैं इसका वारिस़ हूँ और वो मेरा वारिस़ होगा। इससे हज़रत ज़ैद के बाप और चाचा ख़ुश और मुत्मइन होकर चले गये और उसके बाद से हज़रत ज़ैद, ज़ैद बिन मुहम्मद कहलाने लगे। यहाँ तक कि क़ुरआन मजीद ने इस रस्म को ख़त्म करने का ऐलान कर दिया। तफ़्सील के लिये देखिये तबक़ात इब्ने सअ़द जिल्द 3, पेज नं. 40 से 43 और अल्इसाबह जिल्द 1 पेज नं. 245-246)

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنِي سَالِمٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، بِمِثْلِهِ .

(6263) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا

(6264) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक लश्कर भेजा और उसका अमीर हज़रत उसामा बिन

وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا - إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ فَطَعَنَ النَّاسُ فِي إِمْرَتِهِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمْرَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي إِمْرَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ وَايْمُ اللَّهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمْرَةِ وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَىَّ وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَىَّ بَعْدَهُ

ज़ैद(रज़ि.) को मुक़र्रर किया, लोगों ने उनकी इमारत(कमान्डरी) पर तअन किया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ख़िताब के लिये खड़े होकर फ़रमाया, 'अगर तुम इनकी इमारत पर तअन कर रहे हो(तो कोई अनोखी बात नहीं है) तुम इससे पहले इसके बाप की इमारत पर भी तअन करते थे(सवाल खड़े करते थे) और अल्लाह की क़सम! वो यक़ीनन इमारत(कमान्डर होने) का अहल था और मेरे महबूब तरीन लोगों में से था और ये इसके बाद, मेरे महबूब तरीन लोगों में से है।'
(सहीह बुख़ारी : 6627, तिर्मिज़ी : 3816)

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा(रज़ि.) को अलग-अलग मौक़ों पर अमीर मुक़र्रर किया था और आख़िरी बार ग़ज़्व-ए-मूता में अमीर मुक़र्रर किया, जिसमें वो शहादत से हमकिनार हो गये। चूंकि उन पर ग़ुलामी का दाग़ लग चुका था, इसलिये कुछ लोग उनकी इमारत पर नागवारी महसूस करते और उस पर ऐतराज़ करते और आपने मर्ज़ुल मौत में हज़रत उसामा को अमीर मुक़र्रर करके लश्कर मूता की तरफ़ जाने का हुक्म दिया और उनकी नौ ख़ेज़ी की बिना पर, किबारे सहाबा(बड़े-बड़े सहाबा) की मौजूदगी में अमीर मुक़र्रर करने पर ऐतराज़ हुआ और ये लश्कर आपकी बीमारी की शिद्दत की बिना पर रुक गया था और बाद में हज़रत अबू बकर(रज़ि.) ने उसको रवाना किया था।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ عُمَرَ، - يَعْنِي ابْنَ حَمْزَةَ -عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ " إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمَارَتِهِ - يُرِيدُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ - فَقَدْ طَعَنْتُمْ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلِهِ وَايْمُ اللَّهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لَهَا . وَايْمُ اللَّهِ إِنْ كَانَ لأَحَبَّ النَّاسِ

(6265) हज़रत सालिम(रह.) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मिम्बर पर फ़रमाया, 'अगर तुम इसकी यानी उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) की इमारत पर तअन करते हो(तो कोई हैरत अंगेज़ बात नहीं) तुम इससे पहले इसके बाप की इमारत(कमान्डर होने) पर भी तअन(ऐतराज़) कर चुके हो और अल्लाह की क़सम! वो इसका अहल और हक़दार था और अल्लाह की क़सम! मुझे

إِلَيَّ . وَايْمُ اللَّهِ إِنَّ هَذَا لَهَا لَخَلِيقٌ -يُرِيدُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ - وَايْمُ اللَّهِ إِنْ كَانَ لأَحَبَّهُمْ إِلَيَّ مِنْ بَعْدِهِ فَأُوصِيكُمْ بِهِ فَإِنَّهُ مِنْ صَالِحِيكُمْ " .

सबसे ज़्यादा महबूब था और अल्लाह की क़सम! ये भी यानी उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) इसका अहल है और अल्लाह की क़सम! अपने बाप के बाद मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है। चुनाँचे मैं तुम्हें इसके बारे में(हुस्ने सुलूक की) ताकीद करता हूँ, क्योंकि ये तुम्हारे बासलाहियत लोगों में से है।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, किसी को कोई काम सुपुर्द करते वक़्त उसकी क़ाबिलियत और अहलियत को देखना चाहिये कि वो ये काम सर अन्जाम दे भी सकता है या नहीं। उसके ख़ानदान या उम्र का लिहाज़ नहीं होना चाहिये।

باب فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ رضى الله عنهما

बाब 11 : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُلَيْكَةَ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ لاِبْنِ الزُّبَيْرِ أَتَذْكُرُ إِذْ تَلَقَّيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَا وَأَنْتَ وَابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ نَعَمْ فَحَمَلَنَا وَتَرَكَكَ .

(6266) अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र(रज़ि.) ने हज़रत इब्ने ज़ुबैर(रज़ि.) से कहा, तुम्हें याद है जब मैंने तुमने और इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) का इस्तिक़बाल किया? उन्होंने कहा, हाँ!(इब्ने जअ़फ़र कहते हैं) तो आपने हमें सवार कर लिया और तुम्हें छोड़ दिया।

(सहीह बुख़ारी : 3082

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ وَإِسْنَادِهِ .

(6267) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

(6268) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र(रज़ि.) बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो आपके ख़ानदान में बच्चे इस्तिक़बाल के लिये ले जाये जाते। वाक़िया ये है, आप एक सफ़र से वापस तशरीफ़ लाये तो मुझे आपके पास पहले ले जाया गया, तो आपने मुझे अपने आगे बिठा लिया। फिर हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) के दो बच्चों में से एक लाया गया, सो आपने उसे अपने पीछे बिठा लिया। इस तरह हम तीन को एक जानवर पर मदीना लाया गया।

(अबू दाऊद : 2566, इब्ने माजह : 3773)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ، يَحْيَى أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ مُوَرِّقٍ الْعِجْلِيِّ، عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ تُلُقِّيَ بِصِبْيَانِ أَهْلِ بَيْتِهِ - قَالَ - وَإِنَّهُ قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ فَسُبِقَ بِي إِلَيْهِ فَحَمَلَنِي بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ جِيءَ بِأَحَدِ ابْنَىْ فَاطِمَةَ فَأَرْدَفَهُ خَلْفَهُ - قَالَ - فَأُدْخِلْنَا الْمَدِينَةَ ثَلاَثَةً عَلَى دَابَّةٍ .

(6269) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) जब किसी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते थे, हमें मिलाया जाता। तो एक बार मुझे, हसन या हुसैन(रज़ि.) को मिलाया गया, चुनाँचे आपने हममें से एक को अपने आगे बिठा लिया और दूसरे को अपने पीछे, यहाँ तक कि हम मदीना में दाख़िल हो गये।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عَاصِمٍ، حَدَّثَنِي مُوَرِّقٌ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ تُلُقِّيَ بِنَا - قَالَ - فَتُلُقِّيَ بِي وَبِالْحَسَنِ أَوْ بِالْحُسَيْنِ - قَالَ - فَحَمَلَ أَحَدَنَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَالآخَرَ خَلْفَهُ حَتَّى دَخَلْنَا الْمَدِينَةَ .

(6270) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक दिन मुझे अपने पीछे सवार कर लिया और मुझे एक राज़ की बात बताई, जो मैं किसी इंसान को नहीं बताऊँगा।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، أَبِي يَعْقُوبَ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ سَعْدٍ، مَوْلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ، قَالَ أَرْدَفَنِي

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ خَلْفَهُ فَأَسَرَّ إِلَىَّ حَدِيثًا لاَ أُحَدِّثُ بِهِ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ .

फ़ायदा : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र(रज़ि.) का आपके इस्तिक़बाल के लिये मदीना से बाहर जाना और आपका उनको अपने आगे या पीछे सवार करना, आपस में मुहब्बत व प्यार करना उसके लिये सआदत व फ़ज़ीलत है।

باب فَضَائِلِ خَدِيجَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رضى الله تعالى عنها

बाब 12 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ وَوَكِيعٌ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، وَاللَّفْظُ، حَدِيثُ أَبِي أُسَامَةَ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ جَعْفَرٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَلِيًّا، بِالْكُوفَةِ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ " . قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ وَأَشَارَ وَكِيعٌ إِلَى السَّمَاءِ وَالأَرْضِ .

(6271) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं कि हज़रत अ़ली(रज़ि.) ने कूफ़ा में बताया, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'अपने दौर की बेहतरीन औरत मरयम बिन्ते इमरान थी और अपने दौर की बेहतरीन औरत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवेलिद(रज़ि.) हैं।' अबू कुरैब कहते हैं, वकीअ़ ने आसमान और ज़मीन की तरफ़ इशारा किया।

(सहीह बुख़ारी : 3815, 3432, तिर्मिज़ी : 3877)

फ़ायदा : हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवेलिद(रज़ि.) इन्तिहाई शरीफ़ुन्नफ़्स, समझदार, सलीक़ा शआर और आपकी ग़म गुसार महबूब बीवी थीं। जिससे आपने पच्चीस साल की उम्र में जबकि उनकी उम्र

चालीस साल थी और शौहर दीदा थीं, शादी की और उनकी ज़िन्दगी में किसी और औरत से शादी नहीं की और हज़रत इब्राहीम के सिवा आपकी तमाम औलाद इन्हीं के बतन से थी और आपकी हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही और जाँ निसारी में उनका दर्जा सब पर फ़ाइक़ है। जिस तरह हज़रत मरयम अपने दौर की तमाम औरतों से अफ़ज़ल और बरतर थीं, उसी तरह हज़रत ख़दीजा अपने दौर की तमाम औरतों से बेहतर थीं। लेकिन हज़रत आइशा और हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) तो अभी छोटी थीं, गोया हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) के दौर में अभी क़ाबिले ज़िक्र ही न थीं, उन्हें जो इम्तियाज़ व शर्फ़ हासिल हुआ वो हज़रत ख़दीजा के दौर के बाद से ताल्लुक़ रखता है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ الْمُثَنَّى وَابْنُ بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، جَمِيعًا عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَمَلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ غَيْرُ مَرْيَمَ بِنْتِ عِمْرَانَ وَآسِيَةَ امْرَأَةِ فِرْعَوْنَ وَإِنَّ فَضْلَ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ " .

(6272) इमाम साहब दो अलग-अलग उस्तादों से हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मर्दों में से बहुत से लोग बाकमाल हुए हैं, लेकिन औरतों में से मरयम बिन्ते इमरान और फ़िरऔन की बीवी आसिया के सिवा कोई कमाल को नहीं पहुँची और हज़रत आइशा को औरतों पर इस तरह फ़ज़ीलत हासिल है जैसे सरीद को बाक़ी खानों पर।'
(सहीह बुख़ारी : 3411)

मुफ़रदातुल हदीस़ : स़रीद : शोरबे में भिगोई हुई रोटी, जो बहुत लज़ीज, ख़ुश ज़ायक़ा, ज़ूदो-हज़म और सेर बख़्श होने की बिना पर क़ुव्वत बख़्श होती है।

फ़ायदा : आपकी बीवियों में से, अपनी ग़मगुसारी और माली तआवुन व ईसार के ऐतबार से सबसे अफ़ज़ल और बरतर ख़दीजा हैं और तवील रिफ़ाक़त व मुहब्बत का शर्फ़ भी इन्हें ही हासिल है। लेकिन अपने इल्म व फ़ज़ल और दीन की इशाअत व तब्लीग़ और आपके मिशन व तालीम में हिस्सा लेने के ऐतबार से सबसे अफ़ज़ल हज़रत आइशा हैं। जैसाकि आपकी बेटियों में से आपकी मौत का ग़म आपकी लख़्ते जिगर हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) को बर्दाश्त करना पड़ा और दूसरी बेटियों का सदमा

आपको उठाना पड़ा, इस तरह आपका जिगर गोशा होने के ऐतबार से यानी शर्फ़ व निस्बत के ऐतबार से वो सब औरतों से मुम्ताज़ और बरतर हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ أَتَى جِبْرِيلُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذِهِ خَدِيجَةُ قَدْ أَتَتْكَ مَعَهَا إِنَاءٌ فِيهِ إِدَامٌ أَوْ طَعَامٌ أَوْ شَرَابٌ فَإِذَا هِيَ أَتَتْكَ فَاقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلاَمَ مِنْ رَبِّهَا عَزَّ وَجَلَّ وَمِنِّي وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لاَ صَخَبَ فِيهِ وَلاَ نَصَبَ . قَالَ أَبُو بَكْرٍ فِي رِوَايَتِهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَلَمْ يَقُلْ سَمِعْتُ . وَلَمْ يَقُلْ فِي الْحَدِيثِ وَمِنِّي

(6273) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, जिब्रईल(अलै.) नबी(ﷺ) के पास तशरीफ़ लाये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ये ख़दीजा आपकी तरफ़ आ रही हैं, उसके पास बर्तन है जिसमें सालन या खाना या मशरूब है। तो जब वो आपके पास पहुँच जाये तो उसे उसके रब्ब अज़्ज़ व जल्ल और मेरी तरफ़ से सलाम कह दीजिये और उसे जन्नत में ऐसे घर की बशारत दीजिये जो ख़ोलदार मोतियों का बना हुआ है, जिसमें न शोर व शग़ब है और न थकान व मशक़्क़त।' अबू बकर की रिवायत में मिन्नी मेरी तरफ़ से, का ज़िक्र नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 3820)

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ग़ारे हिरा में ख़ल्वत नशीन(अकेले) होते तो हज़रत ख़दीजा, खाना-पीना लेकर आतीं और जब आपने हज़रत ख़दीजा को अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम पहुँचाया तो उन्होंने जवाब दिया, इन्नल्ला-ह हुवस्सलाम व अला जिब्रईल अस्सलाम व अलैक या रसूलल्लाह अस्सलामु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू(सुनन नसाई) इससे हज़रत ख़दीजा के फ़हम व ज़हानत और सूझ-बूझ का पता चलता है कि उन्होंने अस्सलामु अलल्लाह नहीं कहा। क्योंकि वो तो सलामती बख़्शने वाला है, वो सलामती की दुआ का मोहताज नहीं है, इसलिये आपने सहाबा किराम को अस्सलामु अलल्लाह कहने का मना फ़रमाया था और फ़रमाया, इन्नल्ला-ह हुवस्सलामु।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ قُلْتُ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى أَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ

(6274) इस्माईल(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबय(रज़ि.) से पूछा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) को जन्नत में घर की बशारत दी थी। उन्होंने कहा,

صلى الله عليه وسلم بَشَّرَ خَدِيجَةَ بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ قَالَ نَعَمْ بَشَّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لاَ صَخَبَ فِيهِ وَلاَ نَصَبَ .

हाँ! आपने उन्हें जन्नत में ख़ोलदार मोतियों से बने हुए घर की बशारत दी थी, जिसमें न शोर व शग़ब होगा और न मशक़्क़त व थकान।
(सहीह बुख़ारी : 1792, 3819)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) क़सब : ख़ोलदार चीज़, लेकिन यहाँ मुराद ख़ोलदार मोती हैं। **(2) सख़ब :** शोर-शराबा। **(3) नसब :** मशक़्क़त, थकान।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، وَجَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(6275) इमाम साहब अपने बहुत से उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : दुनिया ही में किसी को जन्नत के घर की बशारत मिल जाना उसके लिये इन्तिहाई ख़ुशबख़्ती और सआदत की दलील है और उसके लिये फ़ज़ीलत व बरतरी का सबब है।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ بَشَّرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَدِيجَةَ بِنْتَ خُوَيْلِدٍ بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ .

(6276) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (रज़ि.) को जन्नत में घर की बशारत सुनाई।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَلَقَدْ هَلَكَتْ قَبْلَ أَنْ يَتَزَوَّجَنِي بِثَلاَثِ

(6277) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, किसी औरत के ख़िलाफ़ मुझे इतनी हमियत व ग़ैरत नहीं आई, जिस क़द्र ग़ैरत मुझे हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) पर आई। हालांकि वो मेरे साथ आपकी शादी से तीन साल पहले

سِنِينَ لِمَا كُنْتُ أَسْمَعُهُ يَذْكُرُهَا وَلَقَدْ أَمَرَهُ رَبُّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ مِنْ قَصَبٍ فِي الْجَنَّةِ وَإِنْ كَانَ لَيَذْبَحُ الشَّاةَ ثُمَّ يُهْدِيهَا إِلَى خَلاَئِلِهَا ‏.‏

फ़ौत हो गई थीं। क्योंकि मैं आपसे उनका ज़िक्रे ख़ैर सुनती रहती थी और आपके रब अज़्ज़ व जल्ल ने आपको हुक्म दिया था कि आप उन्हें जन्नत में एक ऐसे घर की बशारत दें, जो ख़ोलदार मोतियों का होगा और आप कोई बकरी ज़िब्ह करते तो उसकी सहेलियों को उसमें से हदिया भेजते।

(सहीह बुख़ारी : 6004, 7484)

फ़ायदा : औरत में फ़ितरी और तबई तौर पर अपनी सौकन के बारे में ग़ैरत व हमियत का जज़्बा पाया जाता है और अगर वो तबई हुदूद के अंदर रहे तो इसमें कोई मुज़ायक़ा(हर्ज) नहीं है। हाँ अगर उसके नतीजे में हसद व बुग़्ज़ और नफ़रत पैदा हो जाये और शरई हुदूद को पामाल किया जाये तो फिर क़ाबिले गिरफ़्त होगा। नबी(ﷺ), हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) को उनकी औलाद और उनकी ख़िदमात की बिना पर याद रखते थे और उनसे मुहब्बत व प्यार की बिना पर उनकी सहेलियों और बहन को भी याद रखते थे, इसलिये हज़रत आइशा(रज़ि.) ख़ार खाती थीं कि मुझ जैसी हसीन व जमील, सूझ-बूझ रखने वाली दोशेज़ा के बावजूद आप उसे याद रखते हैं और अभी तक उनके लिये आपके दिल में मुहब्बत व प्यार के जज़्बात हैं, जो मेरी मौजूदगी में ख़त्म या कम से कम कमज़ोर होना चाहिये।

حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا غِرْتُ عَلَى نِسَاءِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِلاَّ عَلَى خَدِيجَةَ وَإِنِّي لَمْ أُدْرِكْهَا ‏.‏ قَالَتْ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا ذَبَحَ الشَّاةَ فَيَقُولُ ‏"‏ أَرْسِلُوا بِهَا إِلَى أَصْدِقَاءِ خَدِيجَةَ ‏"‏ ‏.‏ قَالَتْ فَأَغْضَبْتُهُ يَوْمًا فَقُلْتُ خَدِيجَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ إِنِّي قَدْ رُزِقْتُ حُبَّهَا ‏"‏ ‏.‏

(6278) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मुझे नबी(ﷺ) की बीवियों में से सिर्फ़ हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) पर ग़ैरत आई, हालांकि मैंने उनका दौर नहीं पाया था और रसूलुल्लाह(ﷺ) जब(घर के लिये) बकरी ज़िब्ह करते तो फ़रमाते, 'इसे ख़दीजा की सहेलियों को भेजो।' वो बयान करती हैं, एक दिन मैंने आपसे गुस्से में कहा, पस ख़दीजा ही(बीवी) थीं? तो आपने फ़रमाया, 'मुझे उसकी मुहब्बत बख़्शी गई है।'

(सहीह बुख़ारी : 3818, तिर्मिज़ी : 2017)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ख़लाइल : ख़लीलह की जमा है और अस्दिक़ा सिद्दीक़ा की जमा है, दोनों का मानी सहेलियाँ हैं।

फ़ायदा : हज़रत ख़दीजा बिला किसी हीलो-हुज्जत और चूँ-चरा के सबसे पहले इस्लाम लाईं और अपने माल और अपनी रिफ़ाक़त से आपकी नुसरत(मदद) व हिमायत की और अल्लाह तआला ने उन्हीं से औलाद बख़्शी और वो इन्तिहाई बाकमाल तजुर्बेकार और सर्दो-गर्म चशीदा बीवी थीं और एक तवील अ़र्से तक हर तरह से आपकी ग़मगुसार रही थीं, इसलिये आप उसको याद रखते थे।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نحو حديثِ أَبِي أُسَامَةَ إِلَى قِصَّةِ الشَّاةِ وَلَمْ يَذْكُرِ الزِّيَادَةَ بَعْدَهَا .

(6279) इमाम साहब ये रिवायत दो और उस्तादों से सिर्फ़ बकरी के वाक़िये तक बयान करते हैं, बाद वाला इज़ाफ़ा बयान नहीं करते।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا غِرْتُ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عَلَى امْرَأَةٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ لِكَثْرَةِ ذِكْرِهِ إِيَّاهَا وَمَا رَأَيْتُهَا قَطُّ .

(6280) हज़रत आ़इशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने नबी(ﷺ) के सामने आपकी किसी बीवी पर ग़ैरत नहीं खाई, जितनी ग़ैरत हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) पर दिखाई, क्योंकि आप उसे बहुत याद करते थे हालांकि मैंने उसको देखा भी नहीं था।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) अपनी ज़िन्दा अज़्वाज में से सबसे ज़्यादा मुहब्बत हज़रत आ़इशा से रखते थे, इसलिये उनको किसी और बीवी पर ग़ैरत नहीं आती थी और इस मुहब्बत की नाज़ की बिना पर, वो हज़रत ख़दीजा के ज़िक्रे ख़ैर पर ख़ार खाती थीं।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمْ يَتَزَوَّجِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَلَى خَدِيجَةَ حَتَّى مَاتَتْ .

(6281) हज़रत आ़इशा(रज़ि.) बयान करती हैं, नबी(ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा की वफ़ात तक किसी दूसरी औ़रत से शादी नहीं की।

फ़ायदा : इस तरह आपने अपनी भरपूर जवानी से लेकर पचास साल की उम्र तक अपने से पन्द्रह साल बड़ी उम्र की औरत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी, जो अपने दो शौहर देख चुकी थी जो इस बात की सरीह दलील है कि आप जिन्स ज़दा इंसान नहीं थे, बल्कि पचास साल की उम्र के बाद आपने जितनी शादियाँ कीं, उसके पसे मन्ज़र में दीनी व दावती और इस्लामी मफ़ादात और साथियों के साथ ख़ैरख़्वाही व हमदर्दी का जज़्बा था, इसलिये हज़रत आइशा(रज़ि.) के सिवा बाक़ी औरतें शौहर दीदा(मेरिड) थीं।

حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتِ اسْتَأْذَنَتْ هَالَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ أُخْتُ خَدِيجَةَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَعَرَفَ اسْتِئْذَانَ خَدِيجَةَ فَارْتَاحَ لِذَلِكَ فَقَالَ " اللَّهُمَّ هَالَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ " . فَغِرْتُ فَقُلْتُ وَمَا تَذْكُرُ مِنْ عَجُوزٍ مِنْ عَجَائِزِ قُرَيْشٍ حَمْرَاءِ الشِّدْقَيْنِ هَلَكَتْ فِي الدَّهْرِ فَأَبْدَلَكَ اللَّهُ خَيْرًا مِنْهَا .

(6282) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) की हमशीरा(बहन) हालह बिन्ते ख़ुवेलिद(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से हाज़िरी की इजाज़त माँगी तो आपको हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) का इजाज़त तलब करना याद आ गया और इस पर ख़ुशी से झूम उठे और फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! हालह बिन्ते ख़ुवेलिद है।' तो मुझे ग़ैरत आ गई और मैंने कहा, आप क़ुरैश की बूढ़ियों में से एक ऐसी बूढ़ी को याद करते हैं, जो सुर्ख़ बाछों वाली थीं, यानी जिसके तमाम दाँत भी गिर गये थे और एक अर्सा हुआ फ़ौत हो चुकी है और अल्लाह तआला आपको उसके ऐवज़ उससे बेहतर(नौख़ेज़ दोशेज़ा) इनायत फ़रमा चुका है। (सहीह बुख़ारी : 3821)

मुफ़रदातुल हदीस़ : शिदक़ैन : बाछें, जबड़े, मक़सद ये था इन्तिहाई बूढ़ी हो चुकी थी, यहाँ तक कि मुँह में दाँत भी न रहे थे।

बाब 13 : हज़रत आइशा(रज़ि.) की फ़ज़ीलत

باب فِي فَضْلِ عَائِشَةَ رضى الله تعالى عنها

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، جَمِيعًا عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي الرَّبِيعِ - حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ ثَلاَثَ لَيَالٍ جَاءَنِي بِكِ الْمَلَكُ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ فَيَقُولُ هَذِهِ امْرَأَتُكَ . فَأَكْشِفُ عَنْ وَجْهِكِ فَإِذَا أَنْتِ هِيَ فَأَقُولُ إِنْ يَكُ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ يُمْضِهِ " .

(6283) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम मुझे तीन रातें ख़्वाब में दिखाई गईं, तुम्हें एक फ़रिश्ता रेशमी कपड़े में लेकर आया, वो कहता था, ये तेरी बीवी है तो मैं तेरे चेहरे से पर्दा उठाता, चुनाँचे तू वही है, सो मैं कहता, अगर ये फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से है तो इसे नाफ़िज़ फ़रमायेगा।'
(सहीह बुख़ारी : 5125)

फ़ायदा : हज़रत आइशा(रज़ि.) को ख़्वाब में रेशमी कपड़े में लाने वाले हज़रत जिब्रईल थे और ये आपकी नुबूवत के बाद का वाक़िया है और अम्बिया के ख़्वाब हक़ीक़त पर मबनी होते हैं, इसलिये इंय्यकु शक के लिये नहीं है, बल्कि यक़ीन के लिये है कि उसका अल्लाह की तरफ़ से होना यक़ीनी है, इसलिये ये मेरी बीवी बन कर रहेंगी, जिस तरह ग़ार में फँसने वाले अफ़राद ने कहा था, इन कुन्त तअ्लमु अगर तू जानता है, हालांकि अल्लाह के जानने में क्या शुब्हा हो सकता है। नीज़ आपके देखने पर ऐतराज़ नहीं हो सकता, क्योंकि ये ख़्वाब का वाक़िया है, फ़रिश्ता लाया ही दिखाने के लिये था और मंगेतर को देखना जाइज़ है।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، جَمِيعًا عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6284) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 5078, 7011)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ وَجَدْتُ فِي

(6285) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया,

كِتَابِي عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لأَعْلَمُ إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً وَإِذَا كُنْتِ عَلَىَّ غَضْبَى " . قَالَتْ فَقُلْتُ وَمِنْ أَيْنَ تَعْرِفُ ذَلِكَ قَالَ " أَمَّا إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً فَإِنَّكِ تَقُولِينَ لاَ وَرَبِّ مُحَمَّدٍ وَإِذَا كُنْتِ غَضْبَى قُلْتِ لاَ وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ " . قَالَتْ قُلْتُ أَجَلْ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَهْجُرُ إِلاَّ اسْمَكَ .

'मैं जान लेता हूँ, जब तुम मुझसे राज़ी होती हो और जब तुम मुझ पर नाराज़ या नाख़ुश होती हो।' तो मैंने कहा, आप कैसे शनाख़्त(पहचान) कर लेते हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! जब तुम मुझसे ख़ुश होती हो तो कहती हो, नहीं रब्बे मुहम्मद की क़सम! और जब तुम नाराज़ होती हो, तो कहती हो नहीं रब्बे इब्राहीम की क़सम! मैंने कहा, ठीक है। अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सिर्फ़ आपका नाम ही छोड़ती हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 5228)

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ لاَ وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(6286) इमाम साहब यही रिवायत एक दूसरे उस्ताद से रब्बे इब्राहीम तक बयान करते हैं और बाद वाला हिस्सा बयान नहीं करते।
(सहीह बुख़ारी : 6078)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि हज़रत आइशा(रज़ि.) आपको आलिमुल ग़ैब नहीं समझती थीं, वरना ये सवाल न करतीं, आपको कैसे पता चल जाता है। नीज़ इससे ये भी मालूम हुआ इंसान के क़ौल व अमल से उसकी दिली कैफ़ियत पर रोशनी पड़ती है और क़राइन से किसी के हालात का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है और मियाँ-बीवी का ताल्लुक़ व रिश्ता, सिर्फ़ उम्मती के ताल्लुक़ से बुलंद व बाला है, इसलिये बीवी नाज़ व तदल्लुल और ख़ाविन्द की मुहब्बत की बिना पर ऐसी बात या ऐसी हरकत कर लेती है जो आम तौर पर पसन्दीदा ख़्याल नहीं की जाती। इसलिये बीवी का ख़ाविन्द से जज़्ब-ए-मुहब्बत की बिना पर नाराज़ी का इज़हार क़ाबिले गिरफ़्त नहीं है, क्योंकि वो ज़ाहिरी होता है, दिल में मुहब्बत का रिश्ता क़ायम होता है। इसलिये हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैं सिर्फ़ आपका नाम ही तर्क करती हूँ, दिल में रिश्त-ए-मुहब्बत बरक़रार होता है और नाम भी आप ही के जद्दे आला का लेती हूँ, जो आपके इन्तिहाई क़रीब हैं।

(6287) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह(ﷺ) के यहाँ गुड़ियों से खेलती थी और मेरी सहेलियाँ आतीं थीं और वो रसूलुल्लाह(ﷺ)(की हैबत व हया) से छुप जातीं। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) उन्हें मेरे पास भेजते।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا كَانَتْ تَلْعَبُ بِالْبَنَاتِ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ وَكَانَتْ تَأْتِينِي صَوَاحِبِي فَكُنَّ يَنْقَمِعْنَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُسَرِّبُهُنَّ إِلَىَّ .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यन्क़मिअ्न : वो घर के अंदर छुप जातीं।(2) **युसर्रिबुहुन्न :** आप उन्हें भेजते कि जाओ, खेलो।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ बच्चियों का गुड़ियों से खेलना जाइज़ है और ज़ाहिर बात है कि बच्चियाँ अपने तौर पर जो गुड़िया बनाती हैं, वो सिर्फ़ एक भोण्डी नक़्क़ाली होती है, जिसको तस्वीर का नाम नहीं दिया जा सकता। हाँ तस्वीरी ख़ाका होता है, इसलिये उस पर कारख़ानों में बड़ी महारत और टेक्निक से तैयार की गई गुड़ियों को क़यास करना दुरुस्त नहीं है, क्योंकि वो तो हू-ब-हू नक़्क़ाली होती है, यानी नक़ल मुताबिक़ असल होती है और लोग उनको घरों में आराइश व ज़ेबाइश(सजावट) के लिये रखते हैं, इसलिये उन गुड़ियों को जाइज़ क़रार नहीं दिया जा सकता।

(6288) इमाम साहब तीन उस्तादों की तीन सनदों से हिशाम ही की सनद से ये हदीस़ बयान करते हैं, जरीर की हदीस़ है, मैं आपके घर में बच्चियों से यानी गुड़ियों से खेलती थी।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ كُنْتُ أَلْعَبُ بِالْبَنَاتِ فِي بَيْتِهِ وَهُنَّ اللُّعَبُ .

(6289) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि लोग अपने तोहफ़े-तहाइफ़ देने में हज़रत आइशा(रज़ि.) के दिन का क़सद

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّاسَ، كَانُوا يَتَحَرَّوْنَ

करते थे ताकि इस तरह रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़ुश्नूदी हासिल हो।
(सहीह बुख़ारी : 2574)

بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ يَبْتَغُونَ بِذَلِكَ مَرْضَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

मुफ़रदातुल हदीस़ : यतहरौं-न : क़सद व इरादा करते थे। हज़रत आइशा की बारी के दिन का इन्तिज़ार करते।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, सहाबा किराम को पता था कि हुज़ूर(ﷺ) हज़रत आइशा(रज़ि.) से ज़्यादा मुहब्बत करते हैं, इसलिये उस दिन तोहफ़े पेश करने से आपको ज़्यादा मसर्रत होगी और आप ज़्यादा ख़ुश होंगे। इसलिये वो इस इन्तिज़ार में रहते कि कब हज़रत आइशा(रज़ि.) की बारी आये और हम रसूलुल्लाह(ﷺ) को ख़ुश करने की सआदत हासिल करें।

(6290) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी(ﷺ) की बीवियों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की बेटी फ़ातिमा(रज़ि.) को रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में भेजा, उसने आपसे हाज़िरी की इजाज़त तलब की, जबकि आप मेरे साथ मेरी चादर में लेटे हुए थे तो आपने इजाज़त दे दी। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी बीवियों ने मुझे आपकी ख़िदमत में भेजा है, वो आपसे अबू क़ुहाफ़ा की बेटी के बारे में इंसाफ़ तलब करती हैं। हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैं ख़ामोश रही। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे कहा, 'ऐ प्यारी बेटी! क्या तुझे वो चीज़ पसंद नहीं, जो मैं पसंद करता हूँ।' उसने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! आपने फ़रमाया, 'तू इस(आइशा) से मुहब्बत कर।' हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, जब हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये

حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ عَبْدٌ حَدَّثَنِي وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ أَرْسَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَاسْتَأْذَنَتْ عَلَيْهِ وَهُوَ مُضْطَجِعٌ مَعِي فِي مِرْطِي فَأَذِنَ لَهَا فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَزْوَاجَكَ أَرْسَلْنَنِي إِلَيْكَ يَسْأَلْنَكَ الْعَدْلَ فِي

बात सुनी है तो वो उठ खड़ी हुई और नबी(ﷺ) की बीवियों के पास जाकर उन्हें अपनी बातचीत की इत्तिलाअ दी और उस बात की भी जो रसूलुल्लाह(ﷺ) से फ़रमाई थी। तो उन्होंने उनसे कहा, हमारे ख़्याल में आपने हमें फ़ायदा नहीं पहुँचाया, आप दोबारा रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास जायें और उनसे कहें, आपकी बीवियाँ आपसे अबू क़ुहाफ़ा की बेटी के सिलसिले में अद्ल चाहती हैं तो हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं आपसे इस मसले के बारे में कभी बातचीत नहीं करूँगी। हज़रत आइशा(रज़ि.) कहती हैं, चुनाँचे नबी(ﷺ) की बीवियों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश(रज़ि.) को भेजा। उनमें से वही रसूलुल्लाह(ﷺ) के नज़दीक क़द्र व मन्ज़िलत में मेरी हम पल्ला थीं और मैंने दीनी रू से कोई औरत कभी ज़ैनब से बेहतरीन नहीं देखी और उनसे अल्लाह की हुदूद की ज़्यादा पाबंद और बात की ज़्यादा सच्ची और ज़्यादा सिला रहमी करने वाली और ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात करने वाली और अपने आपको ऐसे काम में ज़्यादा जोतने वाली, जिससे सदक़ा कर सके, अल्लाह का तक़र्रुब हासिल कर सके, इसके कि उसमें हिद्दत व गर्मी का जोश और उबाल था, जिससे वो जल्द ही निकल आती थीं। हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, चुनाँचे उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) से इजाज़त

ابْنَةِ أَبِي قُحَافَةَ وَأَنَا سَاكِتَةٌ - قَالَتْ - فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَىْ بُنَيَّةُ أَلَسْتِ تُحِبِّينَ مَا أُحِبُّ " . فَقَالَتْ بَلَى . قَالَ " فَأَحِبِّي هَذِهِ " . قَالَتْ فَقَامَتْ فَاطِمَةُ حِينَ سَمِعَتْ ذَلِكَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَرَجَعَتْ إِلَى أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَتْهُنَّ بِالَّذِي قَالَتْ وَبِالَّذِي قَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْنَ لَهَا مَا نُرَاكِ أَغْنَيْتِ عَنَّا مِنْ شَىْءٍ فَارْجِعِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُولِي لَهُ إِنَّ أَزْوَاجَكَ يَنْشُدْنَكَ الْعَدْلَ فِي ابْنَةِ أَبِي قُحَافَةَ . فَقَالَتْ فَاطِمَةُ وَاللَّهِ لاَ أُكَلِّمُهُ فِيهَا أَبَدًا . قَالَتْ عَائِشَةُ فَأَرْسَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَهِيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِينِي مِنْهُنَّ فِي الْمَنْزِلَةِ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَلَمْ أَرَ امْرَأَةً قَطُّ خَيْرًا فِي الدِّينِ مِنْ زَيْنَبَ وَأَتْقَى لِلَّهِ وَأَصْدَقَ حَدِيثًا وَأَوْصَلَ لِلرَّحِمِ وَأَعْظَمَ صَدَقَةً وَأَشَدَّ ابْتِذَالاً لِنَفْسِهَا فِي الْعَمَلِ الَّذِي

تَصَدَّقُ بِهِ وَتَقَرَّبُ بِهِ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى مَا عَدَا سَوْرَةً مِنْ حَدٍّ كَانَتْ فِيهَا تُسْرِعُ مِنْهَا الْفَيْئَةَ قَالَتْ فَاسْتَأْذَنَتْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَعَ عَائِشَةَ فِي مِرْطِهَا عَلَى الْحَالَةِ الَّتِي دَخَلَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا وَهُوَ بِهَا فَأَذِنَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَزْوَاجَكَ أَرْسَلْنَنِي إِلَيْكَ يَسْأَلْنَكَ الْعَدْلَ فِي ابْنَةِ أَبِي قُحَافَةَ . قَالَتْ ثُمَّ وَقَعَتْ بِي فَاسْتَطَالَتْ عَلَىَّ وَأَنَا أَرْقُبُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَرْقُبُ طَرْفَهُ هَلْ يَأْذَنُ لِي فِيهَا - قَالَتْ - فَلَمْ تَبْرَحْ زَيْنَبُ حَتَّى عَرَفْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاَ يَكْرَهُ أَنْ أَنْتَصِرَ - قَالَتْ - فَلَمَّا وَقَعْتُ بِهَا لَمْ أَنْشَبْهَا حِينَ أَنْحَيْتُ عَلَيْهَا - قَالَتْ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَبَسَّمَ " إِنَّهَا ابْنَةُ أَبِي بَكْرٍ " .

माँगी और रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत आइशा(रज़ि.) के साथ उसकी चादर में उस हालत में थे, जिस हालत में आपके पास हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) आई थीं तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे इजाज़त दे दी। सो उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी बीवियों ने मुझे आपकी ख़िदमत में भेजा है, वो आपसे अबू क़ुहाफ़ा की बेटी के बारे में अद्ल का सवाल करती हैं। हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, फिर वो मुझ पर बरस पड़ीं और मुझ पर ज़बान दराज़ी की और मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) को देख रही थी और आपकी आँख पर नज़र रखे हुए थी, क्या आप मुझे इसके बारे में इजाज़त देते हैं(कि मैं उनको जवाब दूँ) वो बयान करती हैं, ज़ैनब ने अपनी बात जारी रखी थी कि मैंने जान लिया कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरे बदला लेने को नापसंद नहीं करेंगे तो जब मैंने उनको निशाना बनाया तो थोड़े ही वक़्त में, मैंने उन पर चढ़ाई करके चुप करा दिया। वो बयान करती हैं, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुस्कुरा कर फ़रमाया, 'ये अबू बकर की बेटी है।'(बाप की वज़ाहत व इल्म की वारिस है।)

(सहीह बुख़ारी : 2581, नसाई : 7/65)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) हु-व मुज़्तजिइन मइ-य फ़ी मिर्ती : आप मेरे साथ, मेरी चादर में लेटे हुए थे, इससे मालूम होता है, क़रीबी अज़ीज़ की मौजूदगी में मियाँ-बीवी अपने कपड़ों में, एक चादर में एक जगह लेट सकते हैं, बशर्तेकि उस मुआशरे में ये चीज़ मअ़यूब न हो। अरबों के यहाँ ख़ासकर उस दौर में ये उस्लूबे हयात मअ़यूब न था, जबकि आज-कल मश्रिक़ी मुआशरे में ये मअ़यूब है।(2)

यस्अल्नकल् या यन्शुद्नकल् अद्ल फ़िब्नति अबी कुहाफ़ह : अबू कुहाफ़ा की बेटी के सिलसिले में अद्ल व मसावात(बराबरी) का मुताल्बा करती हैं। हज़रत आइशा(रज़ि.) को उनके दादा की तरफ़ मन्सूब किया गया है। अज़्वाजे मुतह्हरात का तसव्वुर ये था कि दिली मुहब्बत व प्यार में भी यकसानियत और मसावात हो, ताकि सहाबा किराम तोहफ़े-तहाइफ़ में सबको शरीक करें। वो आइशा से ज़्यादा मुहब्बत की बिना पर उनको तरजीह न दें या आप उनको हुक्म दें जैसाकि दूसरी रिवायत में सराहत मौजूद है कि वो हदिया देने के लिये हज़रत आइशा की बारी का इन्तिज़ार न करें, हालांकि तबई और शरई तौर पर दोनों बातें मुम्किन नहीं। तबई और कुदरती तौर पर इंसान के दिल में सबकी मुहब्बत व प्यार यकसाँ नहीं हो सकता, इसलिये शरीअत इंसान को दिली मुहब्बत में यकसानियत और बराबरी का हुक्म नहीं देती, अल्लाह का फ़रमान है, 'और अगर तुम अपनी बीवियों के दरम्यान दिली मुहब्बत में अद्ल करना भी चाहो तो ऐसा हर्गिज़ नहीं कर सकोगे, इसलिये तुमसे सिर्फ़ इस क़द्र मतलूब है कि तुम एक की तरफ़ पूरी तरह माइल न हो जाओ।'(सूरह निसा : 129) इस तरह ये बात अख़्लाक़ी तौर पर पसन्दीदा नहीं है कि इंसान लोगों को तहाइफ़ लेने के सिलसिले में हिदायात देता फिरे कि जिससे ये समझा जाये, ये तहाइफ़ लेने का ख़्वाहाँ है। इसलिये रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने करीमाना अख़्लाक़ की बिना पर सहाबा किराम को उनकी मर्ज़ी और इख़्तियार पर रहने देना चाहते थे, उनके इख़्तियार को महदूद या पाबंद नहीं करना चाहते थे। नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात का अद्ल का मुताल्बा करना नऊज़ुबिल्लाह ज़ुल्म व जोर के मुक़ाबले में न था कि वो ये तसव्वुर करती हों। आप उन पर ज़ुल्म व सितम ढहाते हैं, बल्कि अपने तसव्वुर के मुताबिक़ दिली मुहब्बत व प्यार और तहाइफ़ के आने में बराबरी चाहती थीं, जो अद्ल व इंसाफ़ का तक़ाज़ा या हिस्सा नहीं है।**(3) कानत तुसामीनी :** वो मक़ाम व मन्ज़िलत में मेरी हम पल्ला थीं।**(4) अशद्दब्-तिज़ालन लिनफ़्सिहा :** वो काम-काज में अपने आपको बहुत मशग़ूल रखती थीं, अगरचे उसमें कुल्फ़त व मशक़्क़त ही बर्दाश्त करना पड़े। **सौरह :** जोश, इश्तिआल। **हद्द :** तेज़ी, गर्मी, यानी उन्हें गुस्सा बहुत जल्द आता था, मिज़ाज में तल्ख़ी और शिद्दत थी।**(5) तस्रिउ मिन्हल फ़ैअह :** यानी जिस तरह गुस्सा जल्द आता था, उस तरह जल्द ही गुस्सा उतर जाता था और जल्द ही ऐतदाल व तवाज़ुन क़ायम हो जाता था।**(6) वक़अत बी :** मुझ पर बरसीं, मुझे तअनो-तश्नीअ का निशाना बनाया।**(7) इस्तितालत अलय्य :** मुझ पर ज़बान दराज़ी की।**(8) लम अन्शब्हा :** मैंने उसे ठहरने न दिया, मेरा मुक़ाबला न कर सकी।**(9) हत्ता अन्हैतु अलैहा :** जब मैंने उनका रुख़ किया, उनको निशाने पर लिया, अगली रिवायत में है।**(10) अस्ख़न्तुहा :** मैंने उनको ख़ूब घायल किया, बहुत ज़ख़्म लगाये, यानी उन पर ग़ल्बा पा लिया, वो हार गईं।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि अज़्वाजे मुतह्हरात में तबई और क़ुदरती हद तक

मुनाफ़िसत मौजूद थी, लेकिन वो हद्दे ऐतदाल से तजावुज़ नहीं करती थीं, इसलिये वो एक दूसरी की ख़ूबियों का खुले दिल से ऐतराफ़ करती थीं। हज़रत आइशा(रज़ि.) ने हज़रत ज़ैनब की ख़ूबियों का खुले दिल से इज़हार फ़रमाया है और उनकी तबई हिद्दत व तेज़ी को भी बढ़ा-चढ़ा कर पेश नहीं किया, बल्कि वाज़ेह किया है कि ये तेज़ी भी आरिज़ी होती थी जो जल्दी ही उतर जाती थी, जिससे मालूम होता है कि इंसान की नज़र सिर्फ़ दूसरों के ऐबों व नुक़्सों पर ही नहीं होनी चाहिये, उसकी ख़ूबियों और हुनर व कमाल पर भी नज़र रखनी चाहिये और इसका ऐतराफ़ व इज़हार भी करना चाहिये।

حَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُهْزَاذَ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنِيهِ عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ فِي الْمَعْنَى غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَلَمَّا وَقَعْتُ بِهَا لَمْ أَنْشَبْهَا أَنْ أَثْخَنْتُهَا غَلَبَةً .

(6291) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से ज़ुहरी ही की सनद से, इसके हम मानी बयान करते हैं, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, जब मैं उस पर बरसी तो मैंने जल्द ही उसे ग़ल्बे से घायल कर दिया, यानी उनको चुप करा दिया।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ وَجَدْتُ فِي كِتَابِي عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيَتَفَقَّدُ يَقُولُ " أَيْنَ أَنَا الْيَوْمَ أَيْنَ أَنَا غَدًا " . اسْتِبْطَاءً لِيَوْمِ عَائِشَةَ . قَالَتْ فَلَمَّا كَانَ يَوْمِي قَبَضَهُ اللَّهُ بَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي .

(6292) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ)(मेरी बारी की) जुस्तजू करते थे, फ़रमाते, 'मैं आज कहाँ हूँगा? मैं कल कहाँ ठहरूँगा?' हज़रत आइशा(रज़ि.) के दिन में ताख़ीर महसूस करते हुए वो बयान करती हैं तो जब मेरा दिन आ गया, अल्लाह ने आपको मेरे फेफड़ों और हलक़ के दरम्यान अपने पास बुला लिया।
(सहीह बुख़ारी : 3774)

मुफ़रदातुल हदीस़ : सह्र : फेफड़ा। **बै-न सह्री व नह्री :** आपका सर मेरे सीने और हलक़ के दरम्यान था कि आपको बुलावा आ गया।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ عَبَّادِ

(6293) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से वफ़ात से पहले जबकि वो उनके सीने का

بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا، سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ وَهُوَ مُسْنِدٌ إِلَى صَدْرِهَا وَأَصْغَتْ إِلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ " .

सहारा लिये हुए थे, कुछ सुना और मैंने कान धरा तो आप फ़रमा रहे थे, 'ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे साथियों से मिला।'

(सहीह बुख़ारी : 4440, 5674, तिर्मिज़ी : 3496)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6294) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हिशाम ही के वास्ते से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لَنْ يَمُوتَ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ - قَالَتْ - فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ يَقُولُ { مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا} قَالَتْ فَظَنَنْتُهُ خُيِّرَ حِينَئِذٍ .

(6295) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैं आपसे सुना करती थी कि कोई भी नबी हर्गिज़ फ़ौत नहीं होता यहाँ तक कि उसे दुनिया और आख़िरत के दरम्यान इख़्तियार दे दिया जाता है। चुनाँचे मैंने नबी(ﷺ) से आपकी मर्ज़ुल मौत में सुना, जबकि आपकी आवाज़ भारी, हो चुकी थी, आप फ़रमा रहे थे, 'उन लोगों के साथ, जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया, यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा, सालेहीन के साथ और क्या ही ख़ूब ये साथी हैं।'(सूरह निसा : 69) फ़रमाती हैं तो मैंने आपके बारे में ख़याल किया, इस वक़्त आपको इख़्तियार दे दिया गया है।

(सहीह बुख़ारी : 4435, 4436, 4586, इब्ने माजह : 1620)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अख़ज़त्हु बुह्हतुन : आपकी आवाज़ में भारीपन पैदा हो गया।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि रफ़ीक़ से मुराद वो लोग हैं, जो इस आयत में बयान हुए हैं।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالاَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6296) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ " إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ فِي الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخَيَّرُ " . قَالَتْ عَائِشَةُ فَلَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ سَاعَةً ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى السَّقْفِ ثُمَّ قَالَ " اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى " . قَالَتْ عَائِشَةُ قُلْتُ إِذًا لاَ يَخْتَارُنَا . قَالَتْ عَائِشَةُ وَعَرَفْتُ الْحَدِيثَ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ فِي قَوْلِهِ " إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ

(6297) इमाम ज़ुहरी बयान करते हैं कि सईद बिन मुसय्यब और उ़रवा बिन ज़ुबैर ने अहले इल्म की एक जमाअ़त में नबी(ﷺ) की बीवी हज़रत आ़इशा(रज़ि.) से ये रिवायत सुनाई, रसूलुल्लाह(ﷺ) अपनी तन्दुरुस्ती के दौर में ये फ़रमाया करते थे, 'वाक़िया ये है कि किसी नबी की रूह कभी भी उस वक़्त तक क़ब्ज़ नहीं की गई, जब तक वो जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले, फिर उसे इख़्तियार दिया जाये।' हज़रत आ़इशा(रज़ि.) बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आपका सर मेरी रान पर था, आप पर कुछ वक़्त के लिये बेहोशी तारी हुई, फिर होश में आ गये तो आपने अपनी नज़र छत पर लगा दी। फिर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आ़ला(ऊपर के साथी)।' आ़इशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, 'मैंने सोचा, अब आप हममें रहना पसंद नहीं फ़रमायेंगे और मुझे उस बात की समझ आ गई, जो आप तन्दुरुस्ती में हमें बताया करते थे, 'वाक़िया ये है कि किसी नबी की रूह कभी उस वक़्त तक

مِنَ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخَيَّرُ " . قَالَتْ عَائِشَةُ فَكَانَتْ تِلْكَ آخِرُ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَوْلَهُ " اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى " .

क़ब्ज़ नहीं की जाती, जब तक वो जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले, फिर उसे इख़्तियार दे दिया जाये।' आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का आख़िरी बोल जो आपकी ज़बान पर आया, ये था, 'ऐ अल्लाह! ऊपर का साथी।'

(सहीह बुख़ारी : 4432, 6348, 6509)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي نُعَيْمٍ، قَالَ عَبْدٌ حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْقَاسِمِ، بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا خَرَجَ أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ فَطَارَتِ الْقُرْعَةُ عَلَى عَائِشَةَ وَحَفْصَةَ فَخَرَجَتَا مَعَهُ جَمِيعًا وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا كَانَ بِاللَّيْلِ سَارَ مَعَ عَائِشَةَ يَتَحَدَّثُ مَعَهَا فَقَالَتْ حَفْصَةُ لِعَائِشَةَ أَلاَ تَرْكَبِينَ اللَّيْلَةَ بَعِيرِي وَأَرْكَبُ بَعِيرَكِ فَتَنْظُرِينَ وَأَنْظُرُ قَالَتْ بَلَى . فَرَكِبَتْ عَائِشَةُ عَلَى بَعِيرِ حَفْصَةَ وَرَكِبَتْ حَفْصَةُ عَلَى بَعِيرِ عَائِشَةَ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى جَمَلِ عَائِشَةَ وَعَلَيْهِ

(6298) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) जब सफ़र पर निकलते तो अपनी बीवियों में क़ुरआ अन्दाज़ी करते, चुनाँचे क़ुरआ हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) का निकला तो वो दोनों आपके साथ सफ़र पर रवाना हुईं और जब रात होती तो रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत आइशा(रज़ि.) के साथ चलते और उनसे बातचीत फ़रमाते।(एक रात) हज़रत हफ़्सा ने हज़रत आइशा से कहा, क्या आज रात आप मेरे ऊँट पर सवार न होंगी कि मैं आपके ऊँट पर सवार हूँ, ताकि आप भी नज़ारे कर सकें और मैं भी देख सकूँ? हज़रत आइशा(रज़ि.) ने कहा, क्यों नहीं। तो हज़रत आइशा(रज़ि.) हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) के ऊँट पर सवार हो गईं और हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) हज़रत आइशा(रज़ि.) के ऊँट पर बैठ गईं। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत आइशा(रज़ि.) के ऊँट के पास आये, जिस पर हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) थीं, सलाम कहा। फिर उसके साथ चल पड़े, यहाँ तक कि एक मन्ज़िल पर

حَفْصَةُ فَسَلَّمَ ثُمَّ صَارَ مَعَهَا حَتَّى نَزَلُوا فَافْتَقَدَتْهُ عَائِشَةُ فَغَارَتْ فَلَمَّا نَزَلُوا جَعَلَتْ تَجْعَلُ رِجْلَهَا بَيْنَ الإِذْخِرِ وَتَقُولُ يَا رَبِّ سَلِّطْ عَلَىَّ عَقْرَبًا أَوْ حَيَّةً تَلْدَغُنِي رَسُولُكَ وَلاَ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقُولَ لَهُ شَيْئًا ‏.

उतर पड़े। इसी दौरान में हज़रत आइशा(रज़ि.) ने आपको न पाया तो ग़ैरत खा गईं तो जब पड़ाव किया, अपना पाँव इज़्ख़िर घास में रखतीं और फ़रमातीं, ऐ मेरे रब! मुझ पर कोई बिच्छू या कोई साँप मुसल्लत फ़रमा जो मुझे डस ले, वो तो तेरे रसूल हैं, मैं उन्हें कुछ नहीं कह सकती(क्योंकि ऊँटों का तबादला ख़ुद ही किया था)।

(सहीह बुख़ारी : 5211)

मुफ़रदातुल हदीस़ : तन्ज़ुरी-न वन्ज़ुर : हम नई-नई चीज़ों को देख लें, क्योंकि उनके ऊँट अलग-अलग जेहात(दिशा) व अतराफ़ में थे या एक दूसरे के ऊँट के तौर व अतवार देख लें या मैं आपके साथ रहने का नज़ारा कर लूँ और आप अलग सफ़र का मुशाहिदा कर लें और जब हज़रत आइशा(रज़ि.) को एहसास हुआ तो फिर इज़्ख़िर में पाँव रखकर ये दुआ करने लगीं कि कोई ज़हरीली चीज़ उन्हें डस ले ताकि रसूलुल्लाह(ﷺ) ये सुनकर उनके पास आ जायें और उनसे बातचीत करें, जिससे वो ख़ुद ही महरूम हो गई थीं।

फ़ायदा : सफ़र में अगरचे ख़ाविन्द पर बारी का लिहाज़ रखना ज़रूरी नहीं है, वो जिसे चाहे साथ ले जा सकता है, लेकिन रसूलुल्लाह(ﷺ) बीवियों की तस्कीन और तालीफ़े क़ल्बी के लिये क़ुरआ अन्दाज़ी करते थे।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ بِلاَلٍ - عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ‏"‏ فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ ‏"‏ ‏.

(6299) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'आइशा(रज़ि.) की औरतों पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे स़रीद की बाक़ी खानों पर फ़ज़ीलत है।'

(सहीह बुख़ारी : 3770, 5419, 5428, तिर्मिज़ी : 3887, इब्ने माजह : 3281)

(6300) इमाम साहब यही रिवायत अपने और उस्तादों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَفِي حَدِيثِ إِسْمَاعِيلَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ .

फ़ायदा : इस हदीस़ पर बहस़ पहले हज़रत ख़दीजा के फ़ज़ाइल में गुज़र चुकी है।

(6301) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी(ﷺ) ने उनसे फ़रमाया, 'जिब्रईल तुम्हें सलाम कहते हैं।' तो मैंने कहा, उन पर अल्लाह की तरफ़ से सलामती और रहमत नाज़िल हो।

(सहीह बुख़ारी : 6253, अबू दाऊद : 5232, तिर्मिज़ी : 2693, 3882, इब्ने माजह : 3696)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، وَيَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا حَدَّثَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَهَا " إِنَّ جِبْرِيلَ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ " . قَالَتْ فَقُلْتُ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ .

(6302) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمُلاَئِيُّ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، قَالَ سَمِعْتُ عَامِرًا، يَقُولُ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ عَائِشَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَهَا . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا .

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6303) इमाम साहब ज़िक्र किये गये उस्ताद से एक और सनद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا عَائِشُ هَذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ " . قَالَتْ فَقُلْتُ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ . قَالَتْ وَهُوَ يَرَى مَا لاَ أَرَى .

(6304) हज़रत आइशा(रज़ि.) नबी(ﷺ) की बीवी बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ आइश! ये जिब्राईल(अलै.) तुम्हें सलाम कह रहे हैं।' तो मैंने कहा, अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाह। आइशा(रज़ि.) कहती हैं, आप वो कुछ देखते थे जो मैं नहीं देखती थी।

(सहीह बुख़ारी : 3217, 3768, 6201, 6249, तिर्मिज़ी : 3881, नसाई : 7/70)

باب ذِكْرِ حَدِيثِ أُمِّ زَرْعٍ

बाब 14 : उम्मे ज़रअ की बातचीत

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ جَنَابٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عِيسَى، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ حُجْرٍ - حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَخِيهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ جَلَسَ إِحْدَى عَشْرَةَ امْرَأَةً فَتَعَاهَدْنَ وَتَعَاقَدْنَ أَنْ لاَ يَكْتُمْنَ مِنْ أَخْبَارِ أَزْوَاجِهِنَّ شَيْئًا قَالَتِ الأُولَى زَوْجِي لَحْمُ جَمَلٍ غَثٌّ عَلَى رَأْسِ

(6305) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, ग्यारह सहेलियाँ बैठीं और उन्होंने आपस में अहदो-पैमान बांधा कि वो अपने ख़ाविन्द के हालात से कोई चीज़ छिपायेंगी नहीं। पहली औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द दुबले-पतले ऊँट का गोश्त है, जो दुश्वार गुज़ार पहाड़ की चोटी पर पड़ा है, न उस तक पहुँचना आसान है कि उस पर(आसानी से) चढ़ा जाये और न मोटा-ताज़ा(मरग़ूब है) कि उसके हुसूल के लिये(कोशिश करके) मुन्तक़िल किया जाये। दूसरी औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द! मैं उसकी ख़बर फैलाना नहीं चाहती, क्योंकि मुझे अन्देशा

جَبَلٍ وَعْرٍ لاَ سَهْلٌ فَيُرْتَقَى وَلاَ سَمِينٌ فَيُنْتَقَلَ . قَالَتِ الثَّانِيَةُ زَوْجِي لاَ أَبُثُّ خَبَرَهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ لاَ أَذَرَهُ إِنْ أَذْكُرْهُ أَذْكُرْ عُجَرَهُ وَبُجَرَهُ . قَالَتِ الثَّالِثَةُ زَوْجِي الْعَشَنَّقُ إِنْ أَنْطِقْ أُطَلَّقْ وَإِنْ أَسْكُتْ أُعَلَّقْ . قَالَتِ الرَّابِعَةُ زَوْجِي كَلَيْلِ تِهَامَةَ لاَ حَرٌّ وَلاَ قُرٌّ وَلاَ مَخَافَةَ وَلاَ سَآمَةَ . قَالَتِ الْخَامِسَةُ زَوْجِي إِنْ دَخَلَ فَهِدَ وَإِنْ خَرَجَ أَسِدَ وَلاَ يَسْأَلُ عَمَّا عَهِدَ . قَالَتِ السَّادِسَةُ زَوْجِي إِنْ أَكَلَ لَفَّ وَإِنْ شَرِبَ اشْتَفَّ وَإِنِ اضْطَجَعَ الْتَفَّ وَلاَ يُولِجُ الْكَفَّ لِيَعْلَمَ الْبَثَّ . قَالَتِ السَّابِعَةُ زَوْجِي غَيَايَاءُ أَوْ عَيَايَاءُ طَبَاقَاءُ كُلُّ دَاءٍ لَهُ دَاءٌ شَجَّكِ أَوْ فَلَّكِ أَوْ جَمَعَ كُلاًّ لَكِ . قَالَتِ الثَّامِنَةُ زَوْجِي الرِّيحُ رِيحُ زَرْنَبٍ وَالْمَسُّ مَسُّ أَرْنَبٍ . قَالَتِ التَّاسِعَةُ زَوْجِي رَفِيعُ الْعِمَادِ طَوِيلُ النِّجَادِ عَظِيمُ الرَّمَادِ قَرِيبُ الْبَيْتِ مِنَ النَّادِي . قَالَتِ الْعَاشِرَةُ زَوْجِي مَالِكٌ وَمَا مَالِكٌ مَالِكٌ خَيْرٌ مِنْ ذَلِكِ لَهُ إِبِلٌ كَثِيرَاتُ الْمَبَارِكِ قَلِيلاَتُ الْمَسَارِحِ إِذَا سَمِعْنَ صَوْتَ الْمِزْهَرِ أَيْقَنَّ أَنَّهُنَّ هَوَالِكُ . قَالَتِ الْحَادِيَةَ عَشْرَةَ زَوْجِي أَبُو زَرْعٍ فَمَا أَبُو زَرْعٍ

है मैं उसको छोड़ नहीं सकूँगी या उसको मुकम्मल नहीं कर सकूँगी, अगर मैं उसका तज़्किरा छेड़ूँगी तो उसके तमाम ऐब का कच्चा-चिट्ठा खोल दूँगी, यानी खुले-छिपे तमाम ऐब बयान कर दूँगी। तीसरी औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द लम्बूतरा(लम्बोड़ा), दराज़ क़द अहमक़ है। अगर मैं ज़बान खोलूँ तो मुझे तलाक़ मिल जायेगी। अगर मैं चुप रहूँ तो लटकी हूँ(जो न बेवा है और न ख़ाविन्द वाली)। चौथी औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द तिहामा की रात की तरह(मोतदिल) है। न गर्म और न सर्द, न ख़ौफ़ व डर और न उकताहट व मलाल। पाँचवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द घर आये तो चीता है(सूतड़ है, घर के हालात से बेख़बर) और अगर घर से बाहर निकलता है तो दिलेर व शुजाअ, जो माल व मताअ घर में छोड़ता है, पूछता तक नहीं। छठी ने कहा, मेरा ख़ाविन्द अगर खाता है तो सब कुछ समेट जाता है और जब पीता है तो आख़िरी क़तरा तक चूस लेता है और अगर सोता है तो सिकुड़ जाता है और मेरे तक अपना हाथ नहीं पहुँचाता, मेरी तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाता कि दुख-दर्द जाने। सातवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द शरीर व ज़ालिम, आजिज़ व बेबस, नामर्द और गिराँ बार, अहमक़ है। हर बीमारी उसकी बीमारी है, तमाम ऐबों का मुजस्समा है, तेरा सर फोड़ेगा या अज़्व तोड़ेगा या तेरे लिये दोनों चीज़ें जमा करेगा। आठवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द महक में ज़र्नब ख़ुश्बू और छूने में ख़रगोश(नर्म व मुलायम)। नवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द बुलंद सुतून वाला यानी सरदार है, लम्बे पर तले

أَنَاسَ مِنْ حُلِيٍّ أُذُنَيَّ وَمَلأَ مِنْ شَحْمٍ عَضُدَيَّ وَبَجَّحَنِي فَبَجِحَتْ إِلَيَّ نَفْسِي وَجَدَنِي فِي أَهْلِ غُنَيْمَةٍ بِشَقٍّ فَجَعَلَنِي فِي أَهْلِ صَهِيلٍ وَأَطِيطٍ وَدَائِسٍ وَمُنَقٍّ فَعِنْدَهُ أَقُولُ فَلاَ أُقَبَّحُ وَأَرْقُدُ فَأَتَصَبَّحُ وَأَشْرَبُ فَأَتَقَنَّحُ . أُمُّ أَبِي زَرْعٍ فَمَا أُمُّ أَبِي زَرْعٍ عُكُومُهَا رَدَاحٌ وَبَيْتُهَا فَسَاحٌ . ابْنُ أَبِي زَرْعٍ فَمَا ابْنُ أَبِي زَرْعٍ مَضْجِعُهُ كَمَسَلِّ شَطْبَةٍ وَيُشْبِعُهُ ذِرَاعُ الْجَفْرَةِ . بِنْتُ أَبِي زَرْعٍ فَمَا بِنْتُ أَبِي زَرْعٍ طَوْعُ أَبِيهَا وَطَوْعُ أُمِّهَا وَمِلْءُ كِسَائِهَا وَغَيْظُ جَارَتِهَا . جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ فَمَا جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ لاَ تَبُثُّ حَدِيثَنَا تَبْثِيثًا وَلاَ تُنَقِّثُ مِيرَتَنَا تَنْقِيثًا وَلاَ تَمْلأُ بَيْتَنَا تَعْشِيشًا . قَالَتْ خَرَجَ أَبُو زَرْعٍ وَالأَوْطَابُ تُمْخَضُ فَلَقِيَ امْرَأَةً مَعَهَا وَلَدَانِ لَهَا كَالْفَهْدَيْنِ يَلْعَبَانِ مِنْ تَحْتِ خَصْرِهَا بِرُمَّانَتَيْنِ فَطَلَّقَنِي وَنَكَحَهَا فَنَكَحْتُ بَعْدَهُ رَجُلاً سَرِيًّا رَكِبَ شَرِيًّا وَأَخَذَ خَطِّيًّا وَأَرَاحَ عَلَيَّ نَعَمًا ثَرِيًّا وَأَعْطَانِي مِنْ كُلِّ رَائِحَةٍ زَوْجًا . قَالَ كُلِي أُمَّ زَرْعٍ وَمِيرِي أَهْلَكِ فَلَوْ جَمَعْتُ كُلَّ شَيْءٍ أَعْطَانِي مَا بَلَغَ أَصْغَرَ آنِيَةِ

वाला यानी दराज़ क़द(लम्बा) है। बहुत राख वाला यानी सख़ी है, मेहमान नवाज़ है, इसलिये उसका घर मज्लिस के क़रीब है(लंगर जारी रहता है)। दसवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द मालिक, मालिक का क्या ही कहना, वो सब तारीफ़ों से बेहतर और बुलंद है। उसके ऊँट ज़्यादा अर्सा अपने बाड़े में रहते हैं, बहुत कम चरागाह में जाते हैं। जब वो बांसुरी की आवाज़ सुनते हैं, उन्हें यक़ीन हो जाता है, वो ज़िब्ह होंगे। ग्यारहवीं औरत ने कहा, मेरा ख़ाविन्द अबू ज़रअ है। अबू ज़रअ का क्या ही कहना, उसने ज़ेवरात से मेरे दोनों कान मुहर्रिक कर दिये हैं, चर्बी से मेरे दोनों बाज़ू भर दिये। उसने मेरी इज़्ज़त की तो मैं अपने आपको बड़ी इज़्ज़तदार समझने लगी। उसने मुझे चंद बकरियों के मालिकों में तंग हाल या पहाड़ी कोने में पाया, सो मुझे घोड़े, ऊँट, खेत और ख़रमन वालों में कर दिया। मैं उसके सामने बात करती हूँ तो मुझे फटकार नहीं पड़ती। मैं सोती हूँ तो सुबह तक सोई ही रहती हूँ(काम-काज के लिये मुझे उठना नहीं पड़ता) मैं पीती हूँ तो पेट भर पीती हूँ(बर्तन में छोड़ती हूँ) अबू ज़रअ की माँ! तो अबू ज़रअ की माँ का क्या ही कहना, उसके बोरे-बड़े वसीअ व कुशादा हैं और उसका घर फ़राख़ और खुला है। अबू ज़रअ का बेटा! तो अबू ज़रअ के बेटे का क्या ही कहना? उसकी आरामगाह पतली-दुबली शाख़(इस क़द्र कम ख़ूराक कि) उसको बकरी के बच्चे का बाज़ू सैर कर देता है। अबू ज़रअ की बेटी! अबू ज़रअ की बेटी का क्या ही पूछना, अपने बाप की इताअत गुज़ार, अपनी माँ की फ़रमांबरदार

أَبِي زَرْعٍ . قَالَتْ عَائِشَةُ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كُنْتُ لَكِ كَأَبِي زَرْعٍ لأُمِّ زَرْعٍ " .

अपनी चादर को भर देने वाली(मोटी-ताज़ी) अपनी सौकन के लिये ग़ज़ब का बाइस़। अबू ज़रुअ की लौण्डी! अबू ज़रअ् की लौण्डी क्या ही ख़ूब, वो हमारी घरेलू बातचीत को नहीं फैलाती और हमारे ग़ल्ले को ले जाकर या बिखेर कर ख़राब नहीं करती और हमारे घर को ख़सो-ख़ाशाक से नहीं आलूदा करती। उस औरत ने कहा,(एक दिन सुबह-सुबह) अबू ज़रुअ घर से निकला, जबकि मश्कीज़े बलवे जा रहे थे, चुनाँचे एक औरत को मिला जिसके साथ चीतों जैसे दो(बेटे) बच्चे थे, जो उसकी कमर के नीचे से दो अनारों से खेल रहे थे। तो उसने मुझे तलाक़ देकर उससे शादी कर ली। सो मैंने उसके बाद एक मालदार आदमी से शादी कर ली, जो उम्दा घोड़े पर सवार हुआ, नेज़ा हाथ में पकड़ा और मेरे पास बहुत से हैवानात लाया और मुझे हर क़िस्म के हैवानात का जोड़ा दिया और कहा, ऐ उम्मे ज़रुअ! ख़ुद खा और अपने घर वालों को भी ग़ल्ला दे, उसने मुझे जो कुछ दिया है, अगर सबको जमा करूँ तो वो अबू ज़रुअ के एक छोटे बर्तन को भी नहीं पहुँचता। हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिये ऐसा हूँ, जैसा अबू ज़रुअ, उम्मे ज़रुअ के लिये था।'
(सहीह बुख़ारी : 5189)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) लह्मु जमलिन ग़स्सिन : दुबला-पतला, जो लाग़र(कमज़ोर) होने की बिना पर नापसन्दीदा हो, अगर उसको लह्मुन गोश्त की सिफ़त बनायें तो मरफ़ूअ होगा और जमल ऊँट की सिफ़त होने की सूरत में मजरूर, यानी गोश्त भी ऊँट का है, जो सब गोश्तों में निकम्मा है और है भी कमज़ोर और लाग़र ऊँटों का।**(2) जबलिन् वअ्रिन :** दुश्वार गुज़ार पहाड़ जिस पर चढ़ना मुश्किल है, क्योंकि रस्ता दुश्वार गुज़ार है।**(3) ला सह्लुन फ़युरतक़ा :** रास्ता आसान और सहल

नहीं है कि सहूलत व आसानी की ख़ातिर एक निकम्मी और कम क़ीमत चीज़ की ख़ातिर भी तय कर लिया जाये।(4) **ला समीनुन फ़युन्तक़ल :** मोटा-ताज़ा यानी क़ीमती चीज़ नहीं है कि उसकी ख़ातिर मशक़्क़त और तकलीफ़ बर्दाश्त करते हुए मुश्किल गुज़ार रास्ता उबूर कर लिया जाये, औरत का मक़सद ये है कि उसका ख़ाविन्द बहुत कम फ़ायदा बख़्श है और उससे फ़ायदे का हुसूल भी बहुत मुश्किल है, यानी बद ख़ुल्क़ होने के साथ बख़ील और कन्जूस भी है और अपने आपको बहुत बुलंद व बाला और बरतर भी ख़्याल करता है।(5) **ला अबुस़्सु ख़बरहू :** मैं उसकी हालत को नश्र नहीं करना चाहती। **इन्नी अख़ाफ़ु अल्ला अज़रहू :** मुझे अन्देशा है कि मैं उसकी हालत बयान किये बग़ैर नहीं रहूँगी और बात मुकम्मल नहीं हो सकेगी या अगर मैंने उसके ऐबों व नुक़्सों को बयान कर दिये तो वो मुझे तलाक़ दे देगा और मैं अपनी औलाद और उससे ताल्लुक़ ख़ातिर की बिना पर उसको छोड़ नहीं सकूँगी या अगर अन के बाद ला ज़ाइद मान लिया जाये जैसा कि(6) **मा मनअ-क अल्ला तस्जुद :** में उनके बाद ला ज़ाइदा है तो मानी होगा, मुझे ख़तरा है कि वो मुझे तलाक़ दे देगा और मुझे उसे छोड़ना पड़ेगा।(7) **अज़्कुर उजरहू व बुजरहू :** उसके ज़ाहिरी और बातिनी ऐबों व नुक़्सों या उसके ज़ाहिरी ऐबों और पोशीदा राज़ को बयान कर दूँगी, इस तरह उसने इज्माली तौर पर उसके तमाम ऐबों की तरफ़ इशारा कर दिया, लेकिन तफ़्सील में जाने से गुरेज़ किया।(8) **अशन्नकु :** लम्बा तड़ंगा और बक़ौल कुछ अपनी हट का पक्का, अपनी बात मनवाने वाला, इसलिये उसकी हैबत व रौब की बिना पर उसकी बीवी दिल की बात ज़बान पर नहीं ला सकती और कड़वा घूंट पी कर रह जाती है, इसलिये उसकी बीवी अपनी नागुफ़्ता बे हालत पर चुप-चाप रहकर गुज़ारा कर रही है, क्योंकि अगर वो ज़बान खोलेगी तो उसे तलाक़ मिल जायेगी, जिसके लिये वो आमादा नहीं है। अब अगर ख़ामोश है और अपनी नाख़ुशगवार हालत पर साबिर व शाकिर है तो मुअल्लक़ा है, न बीवी न बेवा, यही मक़सद है इन अन्तिक़ उतल्लक़ व इन अस्कुत उअल्लक़ का।(9) **ज़ौजी कलैलि तिहामह :** तिहामा की रात बहुत ख़ुशगवार होती है, क्योंकि ला हर्र व ला क़र्र जिसमें न गर्मी की शिद्दत व हिद्दत और न ठण्डा और सर्दी की शिद्दत बल्कि मोतदिल और मुतवाज़िन, गोया उसका ख़ाविन्द मोतदिल मिज़ाज है और उसके लिये ख़ुशगवारी का सबब है।(10) **ला मख़ाफ़-त वला सामह :** न उससे अज़ियत व तकलीफ़ पहुँचने का धड़का और न उसकी रिफ़ाक़त व सोहबत से उकताहट व मलाल, करीमाना अख़्लाक़ का मालिक।(11) **इन दख़-ल फ़हिद :** घर में दाख़िल होता है तो मुझसे मुहब्बत व प्यार की वजह से मुझसे दूर नहीं रह सकता या तुन्दख़ू और बद ख़ल्क़ है, ताल्लुक़ात से पहले हँसी मज़ाक़ नहीं करता, दरिन्दों की तरह चढ़-दौड़ता है या सूतड़ है, घर में सोया रहता है, घर का माल व मताअ, बीवी के सुपुर्द कर छोड़ा है, उसका कभी हिसाब-किताब नहीं माँगा।(12) **इन ख़र-ज असिद :** घर के बाहर बड़ा दिलेर और जरी है, दुश्मन उससे ख़ौफ़ खाते हैं, ख़ानदान पर उसकी हैबत और दबदबा है।(13) **ला यस्अलु अम्मा अहि-द :** घर के हालात के बारे में नहीं पूछता,

यानी हर चीज़ फ़रावानी से मुहय्या करता है और फिर हिसाब-किताब नहीं माँगता या फिर घर के हालात की उसे कोई परवाह नहीं, कोई मरे या जिये, तन्दुरुस्त हो या बीमार, उसे नहीं पूछना।(14) **इन अक-ल लफ़्फ़ :** पेटू है, सब कुछ चट कर जाता है, क्योंकि लफ़्फ़ का मानी है, ज़्यादा से ज़्यादा खाना और किसी के लिये कुछ न छोड़ना।(15) **इन शरिबश्तफ़्फ़ :** जब पीना शुरू करता है तो बर्तन में एक क़तरा नहीं छोड़ता, यानी हैवानात की तरह सिर्फ़ खाने-पीने का शौक़ रखता है और सब कुछ ख़ुद ही हज़म कर जाता है, किसी और को मिले या न मिले।(16) **इनिज़्तजअल्-तफ़्फ़ :** खा-पी कर अलग-थलग होकर सिमट-सिमटाकर सो जाता है।(17) **ला यूलिजुल कफ़्फ़ :** अपनी हथेली बीवी की तरफ़ नहीं बढ़ाता, उससे बेरुख़ी और बेनियाज़ी बरतता है।(18) **लियअ्लमल बस्स :** उसके ग़म व हुज़्न और कुल्फ़त जानने की ज़रूरत ही महसूस नहीं करता, मक़सद ये है घर वालों की उसे परवाह ही नहीं है कि उनकी ज़रूरियात मालूम करके उनको पूरा करने की तरफ़ तवज्जह करे।(19) **ग़यायाउ :** अगर ग़यायह से माख़ूज़ है तो मानी ज़ुल्मत व तारीकी है, यानी वो किसी चीज़ से आगाह और वाक़िफ़ नहीं है, उमूरे ज़िन्दगी से नाबलद है, अगर ग़य्य बमानी शर्र से माख़ूज़ है तो मानी होगा, हर वक़्त शरारत में मगन है और अगर ग़य्य बमानी ख़ैबह नाकामी से माख़ूज़ है, हर काम में नाकाम व नामुराद है। अयायाउ : यानी आजिज़ व बेबस, न काम कर सके, न बोल सके और बक़ौल कुछ नामर्द, जो औरत के पास न जा सके। तबक़ाउ : हिमाक़त में डूबा या गिराँ बार, जो औरत से सहीह तौर पर ताल्लुक़ात क़ायम न कर सके, अपना सीना औरत के सीने से मिला दे और पिछला हिस्सा औरत से उठ जाये, कुल्लु दाइ लहू दाउन : तमाम ऐबों का पुतला। जो ऐब व नुक़्स लोगों में अलग-अलग मौजूद हैं, वो सब उसमें जमा हैं।(20) **शज्जक :** तेरा सर फोड़ेगा औ फ़ल्लक : या तेरी हड्डी तोड़ेगा या तेरा सब कुछ छीन लेगा।(21) **औ जमअ कुल्लल्-लक :** या ये दोनों काम करेगा, सर फोड़ेगा, हड्डी पस्ली तोड़ेगा, जब तेरे साथ ये सुलूक करेगा, जबकि तू ग़ैर से है तो मेरा हश्र क्या करता होगा।(22) **अर्रीहु रीहु ज़र्नब :** ज़र्नब एक ख़ुश्बूदार बूटी है या एक बेहतरीन ख़ुश्बू है।(23) **वल्मस्सु मस्सु अर्नब :** उसको छूना, ख़रगोश को छूना है, यानी इन्तिहाई साफ़-सुथरा रहता है और इन्तिहाई नर्म ख़ू है और शीरीं गुफ़्तार है, नर्म व गुदाज़ जिस्म का मालिक है।(24) **रफ़ीउल इमाद :** बुलंद हसब व नसब का मालिक है या बुलंद व बाला इमारत का मालिक है, उसकी शोहरत व चर्चा हर जगह है, मेहमानों और ज़रूरतमन्दों को उसका घर दूर ही से नज़र आ जाता है।(25) **तवीलुन्-निजादि :** निजाद तलवार का परतला, बुलंद व बाला और दराज़ क़ामत है, यानी शुजाअ और बहादुर है या वसीअ इक़्तिदार का मालिक है, हर जगह उसकी बात मानी जाती है।(26) **अज़ीमुर्रिमाद :** हर वक़्त उसके घर आग जलती रहती है और हर वक़्त मेहमानों का आना-जाना जारी रहता है, बहुत सख़ी और मेहमान नवाज़ है। इसलिये घर में बहुत राख जमा रहती है।(27) **क़रीबुल बैति मिनन्नादी :** मज्लिसे शूरा के क़रीब घर है, उसके बग़ैर कोई मशवरा नहीं होता या उसकी जूदो-

सख़ा और मेहमान नवाज़ी की बिना पर मज्लिसे शूरा, उसके घर के क़रीब मुन्अक़िद होती है या हर पुकारने वाले की आवाज़ पर लब्बैक कहता है।(28) **मालिकुन ख़ैरुम् मिन ज़ालिक :** मालिक की तारीफ़ व तौसीफ़ के बारे में, मैं जो कुछ कहूँगी या उसके औसाफ़ के बारे में जो भी तसव्वुर क़ायम किया जाये, वो उससे बुलंद है या औरतों ने अपने ख़ाविन्दों की तारीफ़ में जो कुछ कहा है, वो उससे बरतर व आला है।(29) **कसीरातुल मबारिक :** उसके ऊँट ज़्यादा वक़्त अपने बाड़ों में बैठे रहते हैं, वो हर वक़्त मेहमानों की आव-भगत के लिये मुस्तैद रहता है, वो ऊँट चरने के लिये बाहर नहीं भेजता ताकि मेहमान के आने पर उसे फ़ोरन दूध और गोश्त पेश किया जा सके।(30) **क़लीलातिल मसारिह :** चरने के लिये बाहर बहुत कम जाते हैं, मबारिक मब्रक की जमा है और मसारिक मस्रह की जमा है, ये दोनों मस्दर मीमी भी बन सकते हैं और ज़र्फ़े ज़मान व मकान भी।(31) **सौतल मिज़्हर :** बांसुरी की आवाज़, मेहमानों के आने पर ख़ुशी और मसर्रत का इज़हार करते हुए उनका इस्तिक़बाल बाजे-गाजे से किया जाता है, जिसकी बिना पर ऐक़न्न अन्नहुन्न हवालिक : उन्हें यक़ीन हो जाता है कि अब मेहमानों के लिये उन्हें ज़िब्ह कर दिया जायेगा।(32) **अना-स मिन हुलिय्यी :** अनास : हरकत दी या बोझल करवाया जिसकी बिना पर नीचे लटक कर गिरने लगा, हुलन हिल्यह की जमा है ज़ेवरात। यानी मेरे कानों को बेशुमार ज़ेवरात से बोझल कर दिया है।(33) **मला मिन शह्मिन अज़ुदय्या :** ख़ूब खिला-पिलाकर मुझे मोटी-ताज़ी कर दिया है या ये मानी है, मैं उसके यहाँ ख़ुश व ख़ुर्रम रहती हूँ और फूले नहीं समाती, बाज़ू बोल कर तमाम बदन मुराद लिया है या ये मुराद है मैं ख़ूब ताक़तवर और ज़ोरावर हो गई हूँ।(34) **बज्जहनी :** उसने मुझे ख़ुश कर दिया है या बड़ा बना दिया है या मेरी तौक़ीर व तकरीम करता है।(35) **फ़-ब-जहत् इलय्य नफ़्सी :** जीम पर कसरा है, अगरचे फ़तहा की गुंजाइश है, मैं अपने आपसे ख़ुश हो गई हूँ या अपने आपको बड़ा समझती हूँ, मुझे अपने आप पर फ़ख़्र है।(36) **शिक़्क़िन :** एक जगह का नाम है या जुहद व मशक़्क़त को कहते हैं या पहाड़ी कोना, यानी मैं एक तंग हाल, पुर मशक़्क़त ज़िन्दगी वाले, चंद बकरियों के मालिक ख़ानदान की फ़र्द थी।(37) **अह्लि सहील :** सहील घोड़े का हिनहिनाना, यानी घोड़ों का मालिक।(38) **अतीतिन** : ऊँटों की आवाज़, उनका बिलबिलाना।(39) **अह्लुल अतीत :** ऊँटों वाले।(40) **दाइसिन :** दौस ग़ल्ला घना, यानी बैलों और खेत वाला।(41) **मुनक़्क़िन :** ग़ल्ले की सफ़ाई और तन्क़ीद करने वाला है, मक़सद ये है कि अबू ज़र्अ हर क़िस्म के हैवानात की कसीर तादाद का मालिक है और बहुत बड़ा ज़मीनदार है, इस तरह घर में हर क़िस्म की ख़ुशहाली और फ़ारिग़ुल बाली है, अगर मुनिक़्क़ को नक़ीक़ से माख़ूज़ मानें तो मानी होगा, परिन्दों को ज़िब्ह करने वाला, यानी घर में परिन्दे का गोश्त पकता है।(42) **अक़ू-ल फ़ला उक़ब्बहु :** मेरी बात का बुरा नहीं मनाया जाता, मेरी कोई बात रद्द नहीं की जाती या मुझ पर फटकार नहीं डाली जाती।(43) **व अरक़ुदु फ़अ-तसब्बहु :** सुबह तक सोई रहती हूँ, मैं इस क़द्र महबूबा और प्यारी हूँ कि अमन व सुकून के साथ अपनी नींद सोती हूँ, कोई

मेरी नींद में ख़लल नहीं डालता। अपनी ख़िदमत के लिये मुझे नहीं लगाता या काम-का और ख़िदमत के लिये नोकर-चाकर बहुत हैं, इसलिये मुझे सुबह-सुबह नहीं उठना पड़ता।(**44**) **अश्रबु फ़अ-तक़न्नहु :** मैं ख़ूब सैराब होकर पीती हूँ, यहाँ तक कि मशरूब बर्तन में छोड़ती हूँ, अगर नून की जगह मीम हो यानी अतक़म्मुहु इतना पीती हूँ कि और पीने की गुंजाइश नहीं रहती या ख़ूब सैराब होकर सर उठाती हूँ, हालांकि पानी हमारे यहाँ नायाब है।(**45**) **इकूमुहा :** इक्म की जमा है, ग़ल्ले के बोरे।(**46**) **रदाहुन :** बड़े-बड़े।(**47**) **फ़साहुन :** वसीअ अरीज़ यानी घर बहुत बड़ा, खुला और वसीअ व अरीज़ है और उसमें हर सामान कसरत से है।(**48**) **मज़्जइहू :** आरामगाह, मसल्लुन : मस्दर मीमी है खींचना या ज़र्फ़े मकान, खींचने की जगह या कम-सलिन शत्बतिन : खजूर की छड़ी या तलवार, मतलब ये है वो बहुत छरहरे बदन का है, हल्का-फुल्का है, भारी-भरकम नहीं है, इसलिये बहुत कम जगह घेरता है, तलवार है जो मियान से सोंती गई है।(**49**) **युश्बिइहू :** ज़राउल जफ़रह : जफ़रह बकरी का चार माह का बच्चा यानी बहुत कम ख़ोर, उसके लिये सैर करने के लिये बकरी के बच्चे का एक बाज़ू ही काफ़ी है, पेटू नहीं है।(**50**) **तौइन अबीहा व तौइ उम्मिहा :**(उसकी बेटी) अपने बाप की इताअत गुज़ार और अपनी माँ की फ़रमांबरदार है, यानी दोनों की वफ़ादार है, इसलिये दोनों की आँखों की ठण्डक है।(**51**) **मिल्उ किसाइहा :** भारी-भरकम और मोटी-ताज़ी व तनोमंद होने की बिना पर अपनी चादर को भर लेती है, यानी ख़ूब लहीम व शहीम है, जो अरबों के यहाँ औरतों के हक़ में पसन्दीदा वस्फ़ है।(**52**) **ग़ैज़ु जा-रतिहा :** अपने हुस्ने सूरत और हुस्ने सीरत और बुलंद किरदार की बिना पर अपनी सोकन के लिये ग़ैज़ व ग़ज़ब का बाइस है या पड़ौसनें उससे जलती हैं, क्योंकि सोकन तो हर हालत में जलती है।(**53**) **ला तबुस्सु हदीसना तब्सीसन :** हमारे घर की बातों को फैलाती या नश्र नहीं करती है।(**54**) **ला तबुस्सु हदीसना ला तुनक़्क़िसु मी-रतना तन्क़ीसा :** हमारे ग़ल्ले को बिल्कुल ख़राब नहीं करती या उसको बाहर नहीं ले जाती, इन्तिहाई अमानतदारी और दयानतदारी से मुत्तसिफ़ है, ख़यानत बिल्कुल नहीं करती।(**55**) **ला तम्लउ बैतना तअ्शीशा :** हमारे घर को कूड़े-करकट से नहीं भरती, घर को इन्तिहाई साफ़-सुथरा रखती है, यानी नज़ाफ़त पसंद है, अगर तअ्शीशा हो तो उश(घोंसले) की बजाए ग़िश : धोखा व फ़रेब से माख़ूज़ होगा, यानी बद दयानती और ख़यानत से काम नहीं लेती, या अफ़ीफ़ और पाकदामन है, अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करती है।(**56**) **वल्औताबु तुम्ख़ज़ु :** औताब : वतब की जमा है, दूध के बर्तन, यानी दूध के बर्तन बलवे जा रहे थे, ताकि मक्खन निकाला जाये या मौसमे बहार से किनाया है कि सरसब्ज़ी व शादाबी का मौसम था।(**57**) **यल्अबानि मिन तह्ति ख़सरिहा बिरुम्मानतैनि :** उसके बच्चे उसकी कोख के नीचे से, उसके पिस्तानों से खेल रहे थे, जो अनार की तरह ख़ूबसूरत थे, गोल होने के बावजूद लटक रहे थे, गोया वो भारी-भरकम थी और लेटते वक़्त कमर ज़मीन से उठ जाती थी या उसकी कमर के नीचे से गेंद की तरह अनारों को इधर-उधर फेंक रहे थे।(**58**) **रजुलन**

सरिय्यन : सरदार और शरीफ़ आदमी या साहिबे स़रवत और मालदार आदमी।**(59) रकि-ब शरिय्यन :** तेज़ रफ़्तार, आला क़िस्म के घोड़े पर सवार हुआ, जो मुसलसल बिला थकान व फ़ितूर भागता है। अख़ज़ ख़तीअन : नेज़ा पकड़ा।**(60) अरा-ह अलय्य नअमन् स़रिय्यन :** जो शाम को मेरे पास बेशुमार ऊँट या मवेशी लाया, बक़ौल मुल्ला अली क़ारी नअम से मुराद ऊँट, गाय और बकरी है।**(61) अअ़्तानी मिन कुल्लि राइहतिन ज़ौजन :** शाम को लौटने वाला ऊँट, गाय, भेड़-बकरी और गुलामों को जोड़ा-जोड़ा कर दिया या हर क़िस्म के मवेशी मुझे मुहय्या किये।**(62) कुन्तु लकि कअबी ज़रइन लिउम्मि ज़रइन :** मैं तेरे लिये इस तरह हूँ जिस तरह अबू ज़र्अ उम्मे ज़र्अ के लिये था, कुछ जगह ये तसरीह है।**(63) फ़िल्उल्फ़ति वरिंफ़ाइ ला फ़िल्फ़िरक़ति वल्ज़जला :** मुहब्बत व प्यार और साज़गारी व मुवाफ़िक़त में जुदाई और अलग करने में नहीं और कुछ में है, उसने तलाक़ दे दी थी, मैं तुम्हें तलाक़ नहीं दूँगा और हज़रत आइशा(रज़ि.) ने जवाब में कहा, आप पर मेरे बाप और माँ क़ुर्बान, आप तो मेरे लिये अबू ज़र्अ जैसा उम्मे ज़र्अ के लिये था, उससे बेहतर हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ، بْنُ سَلَمَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ عَيَايَاءُ طَبَاقَاءُ ‏.‏ وَلَمْ يَشُكَّ وَقَالَ قَلِيلاَتُ الْمَسَارِحِ ‏.‏ وَقَالَ وَصِفْرُ رِدَائِهَا وَخَيْرُ نِسَائِهَا وَعَقْرُ جَارَتِهَا ‏.‏ وَقَالَ وَلاَ تَنْقُثُ مِيرَتَنَا تَنْقِيثًا ‏.‏ وَقَالَ وَأَعْطَانِي مِنْ كُلِّ ذَابِحَةٍ زَوْجًا ‏.‏

(6306) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से इन अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ से बयान करते हैं, बिला शक अयायाउ तबाक़ाउ कहा, सिर्फ़ क़लीलातुल मसारिह कहा और कहा, सिफ़रु रिदाइहा अपनी चादर को ख़ाली रखने वाली, अपनी सोकन के लिये तबाहकुन या दहशत अंगेज़ और हमारे ग़ल्ले को मुन्तक़िल नहीं करती और उसने मुझे तमाम ज़िब्ह करने वाले जानवरों का जोड़ा-जोड़ा दिया।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) सिफ़रु रिदाइहा : यानी उसका पेट पिचका हुआ है या उसके पिस्तान उभरे हुए हैं, इसलिये पिस्तानों के नीचे से चादर बुलंद रहती है, बदन के उस हिस्से को चादर नहीं लगती, इस तरह वो ख़ाली रहता है। अक़्रु जा-रतिहा : हसद व ग़ैज़ से सोकन मरी रहती है, या दहशत ज़दा रहती है। जारह से मुराद पड़ौसन भी हो सकती है।**(2) मिन कुल्लि ज़ाबिहतिन :** फ़ाइलह, मफ़्ऊलह के मानी में है, यानी मज़्बूहा हर वो जानवर जो ज़िब्ह होने के क़ाबिल है, उसको ज़िब्ह करना जाइज़ है।

बाब 15 : हज़रत फ़ातिमा बिन्ते नबी(ﷺ) के फ़ज़ाइल

باب فَضَائِلِ فَاطِمَةَ بِنْتِ النَّبِيِّ عَلَيْهَا الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ ابْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ الْقُرَشِيُّ التَّيْمِيُّ، أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ " إِنَّ بَنِي هِشَامِ بْنِ الْمُغِيرَةِ اسْتَأْذَنُونِي أَنْ يُنْكِحُوا ابْنَتَهُمْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَلاَ آذَنُ لَهُمْ ثُمَّ لاَ آذَنُ لَهُمْ ثُمَّ لاَ آذَنُ لَهُمْ إِلاَّ أَنْ يُحِبَّ ابْنُ أَبِي طَالِبٍ أَنْ يُطَلِّقَ ابْنَتِي وَيَنْكِحَ ابْنَتَهُمْ فَإِنَّمَا ابْنَتِي بَضْعَةٌ مِنِّي يَرِيبُنِي مَا رَابَهَا وَيُؤْذِينِي مَا آذَاهَا " .

(6307) हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिम्बर पर ये फ़रमाते हुए सुना, 'हिशाम बिन मुग़ीरह के बेटों ने मुझसे इजाज़त तलब की है कि अपनी बेटी की शादी, अ़ली बिन अबी तालिब से कर दें तो मैं उन्हें इजाज़त नहीं देता, फिर मैं उन्हें इजाज़त नहीं दूँगा, मैं उन्हें इजाज़त नहीं दूँगा, इल्ला ये कि अबू तालिब का बेटा पसंद करे कि मेरी बेटी को तलाक़ देकर उनकी बेटी से शादी कर ले, क्योंकि मेरी बेटी मेरा टुकड़ा है, जो चीज़ उसे इज़्तिराब व परेशानी में डालती है वो मुझे भी बेचैन करती है और जो चीज़ उसके लिये अज़ियत का बाइस़ है, मुझे भी अज़ियत पहुँचाती है।'

(सहीह बुख़ारी : 3764, 3767, 5230, 5278, अबू दाऊद : 2071, तिर्मिज़ी : 3867)

फ़ायदा : हिशाम के बेटे हारिस़(रज़ि.) ने जो अबू जहल का भाई था, उसने अपनी भतीजी की हज़रत अ़ली(रज़ि.) से शादी करने की इजाज़त तलब की, क्योंकि हज़रत अ़ली(रज़ि.) ने अबू जहल की बेटी से शादी करने का पैग़ाम भेजा था। हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) को भी इसका पता चल गया तो उन्होंने आपसे शिकायत की कि आप अपनी बेटियों का दिफ़ाअ़ नहीं करते, इसलिये आपने इस मसले में ख़ुत्बा दिया और पुर ज़ोर अल्फ़ाज़ में इजाज़त न देने की बात की, हज़रत अ़ली(रज़ि.) ने आपसे मशवरा लिया तो आपने उन्हें भी इजाज़त न दी। क्योंकि हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) की वालिदा और तमाम बहनें वफ़ात पा चुकी थीं, अब उनकी ग़मख़्वारी के लिये और उनकी दिलजोई और तसल्ली के लिये आप ही

रह गये थे और वो अपना ग़म किसी और को नहीं बता सकती थीं और अपने दिल का बोझ हल्का नहीं कर सकती थीं और ये चीज़ उनके लिये फ़ित्ना और आज़माइश का बाइस बनती, इसलिये आपने हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) की मौजूदगी में और शादी की इजाज़त न दी। ताकि उसकी परेशानी से आपको परेशानी लाहिक़ न हो, अगरचे फ़ी नफ़्सिही हज़रत अली(रज़ि.) के लिये और शादी करना जाइज़ था, नीज़ दूसरा सबब मख़्तूबा(मंगेतर) का अल्लाह के दुश्मन की बेटी होना है, अगर वो अल्लाह के दुश्मन की बेटी न होती तो ज़्यादा तश्वीश नाक सूरत न होती, हर औरत तबई और फ़ितरी तौर पर अपने बाप का दिफ़ाअ करती है और यहाँ भी इसका इम्कान मौजूद था कि सोकन होने की बिना पर वो कोई ऐसी बात कर लेती है, जो रसूलुल्लाह(ﷺ) के लिये अज़ियत(तकलीफ़) का बाइस बनती, इसलिये ख़राबी व फ़साद के अन्देशे की ख़ातिर सद्दे ज़रीया(सम्भावना को खत्म करने) के तौर पर आपने इजाज़त न दी, ये नहीं कि हज़रत अली(रज़ि.) के लिये और शादी करना जाइज़ न था।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) बिज़्अतुन : टुकड़ा, हिस्सा, जुज़।(2) **यरीबुनी मा राबहा :** जो चीज़ उसके लिये क़ल्क़ व इज़्तिराब का सबब है, वो मेरे लिये भी क़ल्क़ और बेचैनी का बाइस है।

(6308) हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'फ़ातिमा मेरा जिगर गोशा है, जो चीज़ उसे तकलीफ़ पहुँचाती है, वो मेरे लिये भी तकलीफ़देह है।'

حَدَّثَنِي أَبُو مَعْمَرٍ، إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْهُذَلِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّمَا فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي يُؤْذِينِي مَا آذَاهَا ".

(6309) इब्ने शिहाब(रह.) बयान करते हैं, उसे हज़रत अली बिन हुसैन(रज़ि.) ने बताया कि जब वो यज़ीद बिन मुआविया के यहाँ से हज़रत हुसैन बिन अली(रज़ि.) की शहादत के मौक़े पर मदीना पहुँचे तो उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा(रज़ि.) मिले और उनसे कहा, क्या आपको मुझसे कोई ज़रूरत(काम) है तो उसके बारे में फ़रमाइये? तो मैंने उससे कहा, कोई काम नहीं है। हज़र मिस्वर ने उनसे कहा,

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ كَثِيرٍ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ الدُّؤَلِيُّ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ الْحُسَيْنِ حَدَّثَهُ أَنَّهُمْ، حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ مِنْ عِنْدِ يَزِيدَ بْنِ مُعَاوِيَةَ مَقْتَلَ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ

رضى الله عنهما لَقِيَهُ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ فَقَالَ لَهُ هَلْ لَكَ إِلَىَّ مِنْ حَاجَةٍ تَأْمُرُنِي بِهَا قَالَ فَقُلْتُ لَهُ لاَ . قَالَ لَهُ هَلْ أَنْتَ مُعْطِيَّ سَيْفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَغْلِبَكَ الْقَوْمُ عَلَيْهِ وَايْمُ اللَّهِ لَئِنْ أَعْطَيْتَنِيهِ لاَ يُخْلَصُ إِلَيْهِ أَبَدًا حَتَّى تَبْلُغَ نَفْسِي إِنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ عَلَى فَاطِمَةَ فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَخْطُبُ النَّاسَ فِي ذَلِكَ عَلَى مِنْبَرِهِ هَذَا وَأَنَا يَوْمَئِذٍ مُحْتَلِمٌ فَقَالَ " إِنَّ فَاطِمَةَ مِنِّي وَإِنِّي أَتَخَوَّفُ أَنْ تُفْتَنَ فِي دِينِهَا " . قَالَ ثُمَّ ذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ فَأَحْسَنَ قَالَ " حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي وَوَعَدَنِي فَأَوْفَى لِي وَإِنِّي لَسْتُ أُحَرِّمُ حَلاَلاً وَلاَ أُحِلُّ حَرَامًا وَلَكِنْ وَاللَّهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللَّهِ مَكَانًا وَاحِدًا أَبَدًا " .

क्या आप मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) की तलवार इनायत करेंगे? क्योंकि मुझे अन्देशा है कि ये लोग इसके बारे में आप पर ग़ालिब आ जायेंगे(आपसे छीन लेंगे) अल्लाह की क़सम! अगर आप मुझे वो इनायत कर देंगे तो जब तक मुझमें जान है, उस तक कोई भी नहीं पहुँच सकेगा। हज़रत अली बिन अबी तालिब(रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) की मौजूदगी में, अबू जहल की बेटी को मंगनी का पैग़ाम भेजा तो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को इस मसले में अपने इस मिम्बर पर लोगों को ख़िताब करते सुना और मैं उन दिनों बुलूग़त के क़रीब था। आपने फ़रमाया, 'फ़ातिमा मेरा जुज़(हिस्सा) है और मुझे अन्देशा है, उसे उसके दीन के बारे में आज़माइश में डाला जायेगा।' फिर आपने अब्दे शम्स की औलाद में से अपने एक दामाद का तज़्किरा किया और उसकी दामादी की बहुत अच्छी तारीफ़ फ़रमाई। आपने फ़रमाया, 'उसने मुझसे बातचीत की और मुझसे सच बोला, उसने मेरे साथ वादा किया और मेरे साथ किया हुआ वादा पूरा किया और मैं हलाल को हराम नहीं कर सकता और न हराम को हलाल कर सकता हूँ, लेकिन बात ये है अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी कभी यकजा जमा(एक साथ इकट्ठा) नहीं हो सकतीं।'

(सहीह बुख़ारी : 3110, अबू दाऊद : 2069, 2070, इब्ने माजह : 1999)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) हल अन्-त मुअ्तिय्यु सै-फ़ रसूलिल्लाह : क्या आप मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) की तलवार ज़ुल्फ़िक़ार इनायत करेंगे, जो आपके पास है।**(2) इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यग़्लि-बकल् क़ौमु अलैहि :** मुझे अन्देशा है, बनू उमय्या के लोग इसको आपसे छीन लेंगे, ये मिस्वर का अपना ख़्याल है, अगर उन्होंने छीनी होती तो मिस्वर दरम्यान में हाइल नहीं हो सकता था, अगर मुझे दे दोगे तो जब तक मेरे जिस्म में जान है, कोई उस तक पहुँच नहीं सकेगा। चूंकि रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) की दिलजोई और तय्यिब ख़ातिर का बहुत लिहाज़ रखते थे। जैसाकि आपने हज़रत अली के अबू जहल की बेटी से शादी के पैग़ाम पर इसका इज़हार फ़रमाया। इसी तरह मैं आपकी दिलजोई और तय्यिब ख़ातिर चाहता हूँ कि आपको इस तलवार के सिलसिले में किसी परेशानी से दोचार न होना पड़े। इस परेशानी को मैं बर्दाश्त करूँ, इसलिये मुझे दे दें, आपकी ख़ातिर इसकी हिफ़ाज़त करूँगा।**(3) ज़क-र सिह्रन लहू मिन अब्दि शम्स :** इससे मुराद हज़रत ज़ैनब(रज़ि.) के ख़ाविन्द हज़रत अबुल आस बिन रबीअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दे शम्स हैं। उसने काफ़िर होने के दौर में भी हज़रत ज़ैनब को छोड़ना गवारा नहीं किया और इस सिलसिले में हर क़िस्म की लालच को ठुकरा दिया और फिर उनके रसूल(ﷺ) के पास मदीना मुनव्वरा आ जाने पर भी और औरत से शादी नहीं की, इस्लाम लाने के बाद हज़रत ज़ैनब ही उसी के यहाँ गईं।**(4) वअदनी फ़आवा ली :** जब जंगे बद्र में अबुल आस जो उस वक़्त काफ़िर था, क़ैद में आ गया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे इस शर्त पर छोड़ दिया था कि मैं हज़रत ज़ैनब को आपके पास भेज दूँगा, इस सिलसिले में उसने आपसे सच्चा वादा किया और फिर उसको पूरा किया, हज़रत ज़ैनब(रज़ि.) को आपके पास भेज दिया और ये भी मुम्किन है उसने और शादी न करने का वादा किया हो।**(5) इन्नी लस्तु उहर्रिमु हलालंव्-वला उहिल्लु हरामन :** हराम को हलाल ठहराना और हलाल को हराम ठहराना, मेरे बस में नहीं है, हिल्लत व हुरमत अल्लाह के हाथ में है, इसलिये मैं नहीं कहता कि हज़रत अली के लिये और शादी करना हराम है, लेकिन बात ये है ला तज्तमिउ बिन्तु रसूलुल्लाह बिन्तु अदुव्विल्लाहि मकानन वाहिदा अल्लाह के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक साथ इकट्ठा नहीं हो सकतीं, क्योंकि सोकनें तबई तौर पर एक दूसरे से एलर्जिक होती हैं और एक दूसरी से हसद व कीना रखती हैं, इसलिये ये रिश्ता दोनों के ख़ानदानों को मुतास्सिर करता है। हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) की नाराज़ी और तकलीफ़ हुज़ूर(ﷺ) की अज़ियत व तकलीफ़ का बाइस बन सकती हैं और किसी मुसलमान के लिये इसका सबब बनना मुनासिब नहीं है, इसलिये इस शादी की इजाज़त नहीं हो सकती।

(6310) हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब(रज़ि.) ने अबू जहल की बेटी को निकाह का पैग़ाम दिया, जबकि

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، أَنَّ

الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ وَعِنْدَهُ فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا سَمِعَتْ بِذَلِكَ فَاطِمَةُ أَتَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ لَهُ إِنَّ قَوْمَكَ يَتَحَدَّثُونَ أَنَّكَ لاَ تَغْضَبُ لِبَنَاتِكَ وَهَذَا عَلِيٌّ نَاكِحًا ابْنَةَ أَبِي جَهْلٍ . قَالَ الْمِسْوَرُ فَقَامَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعْتُهُ حِينَ تَشَهَّدَ ثُمَّ قَالَ " أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنَ الرَّبِيعِ فَحَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي وَإِنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ مُضْغَةٌ مِنِّي وَإِنَّمَا أَكْرَهُ أَنْ يَفْتِنُوهَا وَإِنَّهَا وَاللَّهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللَّهِ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ أَبَدًا " . قَالَ فَتَرَكَ عَلِيٌّ الْخِطْبَةَ .

रसूलुल्लाह(ﷺ) की बेटी हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) उनके निकाह में थीं तो जब हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) ने ये बात सुनी, वो नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगीं, आपकी क़ौम का ख़्याल है, वो लोग आपस में बातचीत में कहते हैं, आप अपनी बेटियों की ख़ातिर ग़ुस्से में नहीं आते(इसी बिना पर) ये अली(रज़ि.) अबू जहल की बेटी से निकाह करना चाहते हैं, हज़रत मिस्वर(रज़ि.) बयान करते हैं, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ख़िताब के लिये खड़े हुए, जब आपने कलिम-ए-शहादत से शुरू किया तो मैंने आपसे सुना, फिर आपने फ़रमाया, 'हम्दो-सलात के बाद! मैंने अबुल आस बिन रबीअ को रिश्ता दिया तो उसने मुझसे बातचीत की और मुझसे सच बोला और फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद यक़ीनन मेरा टुकड़ा है और मैं इसको नापसंद करता हूँ कि वो लोग उसको आज़माइश में डालें और सूरते हाल ये है, अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी कभी एक आदमी के निकाह में इकट्ठी नहीं हो सकती।' और हज़रत अली(रज़ि.) ने निकाह का पैग़ाम छोड़ दिया।

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا وَهْبٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَرِيرٍ - عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ النُّعْمَانَ، - يَعْنِي ابْنَ رَاشِدٍ - يُحَدِّثُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6311) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، ح

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ عَائِشَةَ حَدَّثَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَعَا فَاطِمَةَ ابْنَتَهُ فَسَارَّهَا فَبَكَتْ ثُمَّ سَارَّهَا فَضَحِكَتْ فَقَالَتْ عَائِشَةُ فَقُلْتُ لِفَاطِمَةَ مَا هَذَا الَّذِي سَارَّكِ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَبَكَيْتِ ثُمَّ سَارَّكِ فَضَحِكْتِ قَالَتْ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي بِمَوْتِهِ فَبَكَيْتُ ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ مَنْ يَتْبَعُهُ مِنْ أَهْلِهِ فَضَحِكْتُ .

(6312) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी बेटी फ़ातिमा(रज़ि.) को बुलाकर उनसे बातचीत की तो वो रो पड़ीं। फिर आपने उससे बातचीत की तो हँस पड़ीं। तो उन्होंने(आपकी वफ़ात के बाद) बताया, आपने बातचीत करते हुए मुझे अपनी मौत की ख़बर दी तो मैं रो पड़ी, फिर आपने बातचीत करते हुए मुझे बताया कि मैं आपके ख़ानदान वालों में सबसे पहले, आपके पीछे पहुँचूँगी तो मैं हँस पड़ी।

(सहीह बुख़ारी : 3715, 3716, तिर्मिज़ी : 3893)

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنَّ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عِنْدَهُ لَمْ يُغَادِرْ مِنْهُنَّ وَاحِدَةً فَأَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ تَمْشِي مَا تُخْطِئُ مِشْيَتُهَا مِنْ مِشْيَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا فَلَمَّا رَآهَا رَحَّبَ بِهَا فَقَالَ " مَرْحَبًا بِابْنَتِي " . ثُمَّ أَجْلَسَهَا عَنْ يَمِينِهِ أَوْ عَنْ شِمَالِهِ

(6313) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं की तमाम बीवियाँ आपके पास थीं, उनमें से कोई पीछे नहीं रह गई थी तो हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) चलती हुई आईं, उसकी चाल गोया बिल्कुल कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की चाल है तो आपने फ़रमाया, 'मेरी बेटी को ख़ुश आमदेद।' चुनाँचे आपने उन्हें अपने दायें या बायें बिठा लिया, फिर आपने उनसे बातचीत में कोई बात कही तो फ़ातिमा(रज़ि.) रो पड़ीं। फिर आपने उससे

ثُمَّ سَارَّهَا فَبَكَتْ بُكَاءً شَدِيدًا فَلَمَّا رَأَى جَزَعَهَا سَارَّهَا الثَّانِيَةَ فَضَحِكَتْ . فَقُلْتُ لَهَا خَصَّكِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ بَيْنِ نِسَائِهِ بِالسِّرَارِ ثُمَّ أَنْتِ تَبْكِينَ فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَأَلْتُهَا مَا قَالَ لَكِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ مَا كُنْتُ أُفْشِي عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سِرَّهُ . قَالَتْ فَلَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْتُ عَزَمْتُ عَلَيْكِ بِمَا لِي عَلَيْكِ مِنَ الْحَقِّ لَمَا حَدَّثْتِنِي مَا قَالَ لَكِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ أَمَّا الآنَ فَنَعَمْ أَمَّا حِينَ سَارَّنِي فِي الْمَرَّةِ الأُولَى فَأَخْبَرَنِي " أَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُهُ الْقُرْآنَ فِي كُلِّ سَنَةٍ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ وَإِنَّهُ عَارَضَهُ الآنَ مَرَّتَيْنِ وَإِنِّي لاَ أُرَى الأَجَلَ إِلاَّ قَدِ اقْتَرَبَ فَاتَّقِي اللَّهَ وَاصْبِرِي فَإِنَّهُ نِعْمَ السَّلَفُ أَنَا لَكِ " . قَالَتْ فَبَكَيْتُ بُكَائِي الَّذِي رَأَيْتِ فَلَمَّا رَأَى جَزَعِي سَارَّنِي الثَّانِيَةَ فَقَالَ " يَا فَاطِمَةُ أَمَا تَرْضَىْ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ أَوْ سَيِّدَةَ نِسَاءِ هَذِهِ الأُمَّةِ " . قَالَتْ فَضَحِكْتُ ضَحِكِي الَّذِي رَأَيْتِ .

बातचीत की तो वो हँस पड़ीं। तो मैंने उससे कहा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी बीवियों को छोड़कर ख़ुसूसियत के साथ तुम्हें राज़ की बात बताई है उसके बावजूद तुम रोती हो? जब रसूलुल्लाह(ﷺ) उठ गये तो मैंने उससे पूछा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तुझसे क्या कहा? उसने कहा कि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) का राज़ इफ़्शा नहीं कर सकती। आइशा बताती है कि जब रसूलुल्लाह(ﷺ) फ़ौत हो गये तो मैंने उससे कहा कि पस तुम उस हक़ की बिना पर जो मेरा तुझ पर है, लाज़िम ठहराती हूँ तू मुझे ज़रूर बतायेगी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तुझे क्या कहा? तो उसने कहा, हाँ! जब मुझसे पहली बार बातचीत की तो आपने मुझे बताया कि जिब्रईल(अलै.) आपसे हर साल एक या दो बार दौर करते थे और सूरते हाल ये है कि उसने इस बार आपसे दो बार दौर किया है और मैं यही समझता हूँ कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ गया है, लिहाज़ा तू अल्लाह से डरना और सब्र करना क्योंकि मैं तेरे लिये बेहतरीन पेश रू हूँ। तो इस पर मैं रोना रोई, जो तूने देखा। तो जब आपने मुझे बेक़रार देखा तो मेरे साथ दोबारा बातचीत की तो फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! क्या तू इस पर राज़ी नहीं कि तू औरतों की सरदार हो या इस उम्मत की औरतों की सरदार हो? तो मैं वो हँसी हँसी जो तूने देखा।

सहीहबुख़ारी:3623,6285,6586, इब्नेमाजह: 1621

फ़ायदा : हज़रत उरवा हज़रत आइशा(रज़ि.) के भान्जे बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यहाँ बातचीत में हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) को अपनी मौत की ग़मनाक ख़बर दी तो वो बेक़रार होकर रो पड़ी, फिर आपने दोबारा बातचीत में ये ग़मनाक ख़बर दी कि जल्द ही मेरे बाद तुम फ़ौत हो जाओगी और मुझे आ मिलोगी, तो मौत की ख़बर पर आपसे मुलाक़ात की ख़बर ग़ालिब आ गई तो वो हँस पड़ीं। लेकिन इसके मुक़ाबले में हज़रत मसरूक़ की एक रिवायत में ये है कि आपने पहली बार बातचीत में अपनी मौत की ख़बर दी और फ़रमाया, तुम अल्लाह से डरना और सब्र करना, क्योंकि मैं तुम्हारा बेहतरीन पेश रू हूँ, जो तुम्हारे इस्तिक़बाल के लिये आगे जा रहा है तो वो आपकी मौत के सदमे की बिना पर रो पड़ीं, फिर दोबारा बातचीत की तो उन्हें उम्मत की औरतों की सरदारी की ख़ुशख़बरी सुनाई और इस पर राज़ी होने के लिये कहा तो हँस पड़ीं और दूसरी रिवायत में ये है कि पहली बार अपनी मौत की ख़बर के साथ हज़रत फ़ातिमा की मौत की ख़बर भी दी, अपनी मौत की ख़बर हँसी और गिर्या दोनों का सबब बन सकती है, मौत के ऐतबार से गिर्या और आपकी मुलाक़ात का सबब होने की बिना पर मसर्रत व शादमानी, इसलिये जब अपनी मौत के साथ ही उनकी मौत की ख़बर देकर गिर्या और हँसी दोनों के हालात पैदा कर दिये गये, गिर्या पर मुलाक़ात की फ़रहत व मसर्रत ग़ालिब आ गई तो फिर बेक़रारी तो दूर हो गई, दोबारा बातचीत की क्या ज़रूरत रही, इसलिये सहीह बात यही मालूम होती है कि दूसरी बातचीत में हज़रत फ़ातिमा की मौत की ख़बर के साथ उन्हें सरदारी की ख़ुशख़बरी भी सुनाई गई तो उन्हें मसर्रत हुई और वो हँसने लगीं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتِ اجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَلَمْ يُغَادِرْ مِنْهُنَّ امْرَأَةً فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ تَمْشِي كَأَنَّ مِشْيَتَهَا مِشْيَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " مَرْحَبًا بِابْنَتِي " . فَأَجْلَسَهَا عَنْ يَمِينِهِ أَوْ عَنْ شِمَالِهِ ثُمَّ إِنَّهُ أَسَرَّ إِلَيْهَا حَدِيثًا فَبَكَتْ فَاطِمَةُ ثُمَّ إِنَّهُ سَارَّهَا فَضَحِكَتْ أَيْضًا

(6314) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, नबी(ﷺ) की तमाम बीवियाँ आपके पास थीं, उनमें से कोई पीछे नहीं रह गई थी तो हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) चलती हुई आईं, उसकी चाल गोया कि बिल्कुल रसूलुल्लाह(ﷺ) की चाल है तो आपने फ़रमाया, 'मेरी बेटी को ख़ुश आमदेद।' चुनाँचे आपने उन्हें अपने दायें या बायें बिठा लिया, फिर आपने उनसे बातचीत में कोई बात कही तो फ़ातिमा(रज़ि.) रो पड़ीं, फिर आपने उससे बातचीत की तो वो हँस पड़ीं। तो मैंने उससे कहा, क्यों रोती हो? उसने कहा, मैं अल्लाह के रसूल का राज़ इफ़्शा नहीं कर सकती। मैंने

فَقُلْتُ لَهَا مَا يُبْكِيكِ فَقَالَتْ مَا كُنْتُ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقُلْتُ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ فَرَحًا أَقْرَبَ مِنْ حُزْنٍ . فَقُلْتُ لَهَا حِينَ بَكَتْ أَخَصَّكِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِحَدِيثِهِ دُونَنَا ثُمَّ تَبْكِينَ وَسَأَلْتُهَا عَمَّا قَالَ فَقَالَتْ مَا كُنْتُ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . حَتَّى إِذَا قُبِضَ سَأَلْتُهَا فَقَالَتْ إِنَّهُ كَانَ حَدَّثَنِي " أَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُهُ بِالْقُرْآنِ كُلَّ عَامٍ مَرَّةً وَإِنَّهُ عَارَضَهُ بِهِ فِي الْعَامِ مَرَّتَيْنِ وَلاَ أُرَانِي إِلاَّ قَدْ حَضَرَ أَجَلِي وَإِنَّكِ أَوَّلُ أَهْلِي لُحُوقًا بِي وَنِعْمَ السَّلَفُ أَنَا لَكِ " . فَبَكَيْتُ لِذَلِكِ ثُمَّ إِنَّهُ سَارَّنِي فَقَالَ " أَلاَ تَرْضَيْنَ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ أَوْ سَيِّدَةَ نِسَاءِ هَذِهِ الأُمَّةِ " . فَضَحِكْتُ لِذَلِكِ .

कहा, मैंने आज जैसे दिन की मसर्रत व ख़ुशी जो रंज व ग़म से इस क़द्र क़रीब हो, नहीं देखी। तो जब वो रो पड़ीं, मैंने उनसे कहा, क्या जबकि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें छोड़कर ख़ुसूसियत के साथ तुम्हें अपनी बात बताई है, फिर भी रोती हो? और मैंने उनसे पूछा, आपने क्या फ़रमाया? तो उसने कहा, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) का राज़ इफ़्शा नहीं कर सकती। तो जब आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली गई, मैंने उनसे पूछा, तो उसने बताया, वाक़िया ये है, आपने मुझे बताया था, 'जिब्रईल(अलै.) आपसे हर साल कुरआन का दौर एक बार करते थे और उन्होंने इस साल इसका दौर दो बार किया है और मैं यही समझता हूँ कि मेरी मौत का वक़्त आ गया है और तुम मेरे ख़ानदान से सबसे पहले मुझे मिलोगी और मैं तुम्हारे लिये बेहतरीन पेशरू हूँ।' तो मैं इस पर रो पड़ी। फिर आपने मेरे साथ बातचीत की और फ़रमाया, 'क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि तुम मोमिनों की औरतों की सरदार हो या इस उम्मत की औरतों की सरदार हो।' तो मैं इससे हँस पड़ी।

باب مِنْ فَضَائِلِ أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رضى الله عنها

बाब 16 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الْقَيْسِيُّ، كِلاَهُمَا عَنِ الْمُعْتَمِرِ، -

(6315) हज़रत सलमान(रज़ि.) ने अपने शागिर्द से कहा, अगर तुमसे हो सके तो सबसे पहले बाज़ार में दाख़िल न होना और न सबसे

قَالَ ابْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، - قَالَ سَمِعْتُ أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، عَنْ سَلْمَانَ، قَالَ لاَ تَكُونَنَّ إِنِ اسْتَطَعْتَ أَوَّلَ مَنْ يَدْخُلُ السُّوقَ وَلاَ آخِرَ مَنْ يَخْرُجُ مِنْهَا فَإِنَّهَا مَعْرَكَةُ الشَّيْطَانِ وَبِهَا يَنْصِبُ رَايَتَهُ . قَالَ وَأُنْبِئْتُ أَنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ أَتَى نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَعِنْدَهُ أُمُّ سَلَمَةَ - قَالَ - فَجَعَلَ يَتَحَدَّثُ ثُمَّ قَامَ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لأُمِّ سَلَمَةَ " مَنْ هَذَا " . أَوْ كَمَا قَالَ قَالَتْ هَذَا دِحْيَةُ - قَالَ - فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ ايْمُ اللَّهِ مَا حَسِبْتُهُ إِلاَّ إِيَّاهُ حَتَّى سَمِعْتُ خُطْبَةَ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُخْبِرُ خَبَرَنَا أَوْ كَمَا قَالَ قَالَ فَقُلْتُ لأَبِي عُثْمَانَ مِمَّنْ سَمِعْتَ هَذَا قَالَ مِنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ .

आख़िर में बाज़ार से निकलना, क्योंकि वो शैतान की रज़्मगाह है और वहीं वो अपना झण्डा गाड़ता है। उन्होंने कहा, मुझे बताया गया है, जिब्राईल(अलै.) अल्लाह के नबी(ﷺ) के पास आये, जबकि आपके पास हज़रत उम्मे सलमा(रज़ि.) मौजूद थीं तो आपसे बातें करने लगे, फिर चले गये। तो नबी(ﷺ) ने हज़रत उम्मे सलमा(रज़ि.) से पूछा, 'ये कौन था?' या जो भी आपने कहा, उम्मे सलमा(रज़ि.) ने कहा, ये दिह्या(रज़ि.) थे। उम्मे सलमा(रज़ि.) बयान करती हैं, अल्लाह की क़सम! मैंने उसे वही समझा था यहाँ तक कि मैंने अल्लाह के नबी का ख़ुत्बा सुना, आप हमारा वाक़िया सुना रहे थे या आपने जो कुछ कहा। अबू उ़स्मान के शागिर्द कहते हैं, मैंने अबू उ़स्मान से पूछा, आपने ये रिवायत किससे सुनी? उसने कहा, उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) से।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ला तकूनन्न अव्व-ल मंय्यदख़ुलु : बाज़ार में सबसे पहले जाना या सबसे आख़िर में निकलना, इस बात की निशानी है कि उस इंसान को बाज़ार जाने का शौक़ व ज़ौक़ है और बाज़ार से मुहब्बत है, हालांकि बाज़ार मुहब्बत गाह नहीं है, एक ज़रूरत की जगह है। जहाँ बक़द्रे ज़रूरत रहना चाहिये।**(2) मअ़्र-कतुश्शैतान :** शैतान की रज़्मगाह है, यहाँ शैतान और उसके चेले-चपाटों और बाज़ार में मौजूद दुकानदारों और ग्राहकों के दरम्यान मअ़्रका बर्पा होता है। वो अपने हवारियों के साथ मिलकर लोगों से ख़िलाफ़े दीन व शरीअ़त काम करवाने की कोशिश करता है और उसके पीछे लगकर लोग ख़िलाफ़े शरीअ़त उमूर के मुर्तकिब होते हैं। इसलिये बिहा यन्सिबु रआ़्यतहू वो बाज़ार में झण्डे गाड़ता है और अपने ऐवान व मददगार को बाज़ार में झोंकता है, ताकि वो लोगों को ग़लत कामों पर उकसायें और उनकी मईशत व मुआशरत में नक़ब लगायें।**(3) युख़्बिरु : ख़बरना :** आपने घर में पेश आने वाले वाक़िये का ख़ुत्बे में तज़्किरा फ़रमाया और जिब्राईल के आने की ख़बर

दी, चूंकि हज़रत जिब्रईल(अलै.) उमूमन हज़रत दिह्या कल्बी की सूरत में आते थे, जो कि इन्तिहाई हसीन व जमील थे। इसलिये उम्मे सलमा(रज़ि.) ने उन्हें दिह्या कल्बी(रज़ि.) ही ख़याल किया। इसलिये युख़्बिर ख़बरना कहना या युख़्बिर ख़ब्र जिब्रईल कहना, दोनों तरह सहीह है इसलिये इसको मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में तस्हीफ़ व तब्दील क़रार देना, दुरुस्त नहीं है। जैसाकि अल्लामा तक़ी(हफ़ि.) ने क़ाज़ी अयाज़ से तस्हीफ़ का क़ौल नक़ल किया है।

बाब 17 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ زَيْنَبَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رضى الله عنها

حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى السِّينَانِيُّ، أَخْبَرَنَا طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَسْرَعُكُنَّ لَحَاقًا بِي أَطْوَلُكُنَّ يَدًا " . قَالَتْ فَكُنَّ يَتَطَاوَلْنَ أَيَّتُهُنَّ أَطْوَلُ يَدًا . قَالَتْ فَكَانَتْ أَطْوَلَنَا يَدًا زَيْنَبُ لأَنَّهَا كَانَتْ تَعْمَلُ بِيَدِهَا وَتَصَدَّقُ .

(6316) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से सबसे पहले मुझे, लम्बे हाथों वाली मिलेगी।' हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, चुनाँचे अज़्वाजे मुतह्हरात अपने हाथों की पैमाइश करती थीं कि उनमें से सबसे लम्बे हाथ किसके हैं? वो बयान करती हैं, हममें से सबसे लम्बे हाथ ज़ैनब(रज़ि.) के थे, क्योंकि वो अपने हाथों से काम करके सदक़ा करती थीं।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) का तूले यद(लम्बे हाथ) से मक़सद हाथ से काम-काज और मेहनत व मज़दूरी करके सदक़ा व ख़ैरात करना था, लेकिन अज़्वाजे मुतह्हरात ने ज़ाहिरी मानी मुराद लेते हुए अपने हाथों की पैमाइश(नापना) की तो सबसे लम्बे हाथ हज़रत सौदा(रज़ि.) के थे। लेकिन जब हज़रत उमर(रज़ि.) के दौर में 20 हिजरी सबसे पहले हज़रत ज़ैनब(रज़ि.) की वफ़ात हो गई, हालांकि उनके हाथ छोटे थे तो फिर पता चला कि लम्बे हाथों से मुराद, ज़ाहिरी या हक़ीक़ी तौर पर लम्बे मुराद नहीं थे और हज़रत सौदा(रज़ि.) की वफ़ात हज़रत मुआविया(रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में हुई, इसलिये इमाम बुख़ारी का अपनी तारीख़े सग़ीर में सबसे पहले मरने वाली हज़रत सौदा को क़रार देना दुरुस्त नहीं है, इस तरह सहीह बुख़ारी में अबू अवाना की रिवायत में हज़रत सौदा(रज़ि.) को सदक़ा व ख़ैरात में मुम्ताज़

क़रार देना दुरुस्त नहीं है, क्योंकि हज़रत सौदा के हाथ तो हक़ीक़ी और ज़ाहिरी तौर पर लम्बे थे तो फिर अगर हज़रत सौदा पहले फ़ौत होतीं तो फिर हक़ीक़ी मानी का ग़लत होना कैसे वाज़ेह होता।

باب مِنْ فَضَائِلِ أُمِّ أَيْمَنَ رضى الله عنها

बाब 18 : हज़रत उम्मे ऐमन(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى أُمِّ أَيْمَنَ فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ فَنَاوَلَتْهُ إِنَاءً فِيهِ شَرَابٌ - قَالَ - فَلاَ أَدْرِي أَصَادَفَتْهُ صَائِمًا أَوْ لَمْ يُرِدْهُ فَجَعَلَتْ تَصْخَبُ عَلَيْهِ وَتَذَمَّرُ عَلَيْهِ .

(6317) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) उम्मे ऐमन(रज़ि.) के घर की तरफ़ चले तो मैं भी आपके साथ चल पड़ा, उसने आपको बर्तन पेश किया जिसमें कोई पीने की चीज़ थी। मुझे मालूम नहीं, आप रोज़े से थे या आपको पीने की ख़्वाहिश न थी(आपने वापस कर दिया) तो वो चिल्लाने लगीं और आप पर गुस्सा निकालने लगीं, तज़म्मरु अलैह आपसे गुस्सा निकालने लगीं।

फ़ायदा : हज़रत उम्मे ऐमन(रज़ि.) ने जब आपको मशरूब पेश किया और आपने किसी सबब से न पिया तो वो आपकी हाज़िना(बचपन में) परवरिश कुनिन्दा होने की बिना पर आप पर गुस्सा होने लगीं और शोर करने लगीं, लेकिन ये सब कुछ नाज़ो-तदल्लुल की बिना पर था, इसलिये आपने गवारा फ़रमाया।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ الْكِلاَبِيُّ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ رضى الله عنه بَعْدَ وَفَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِعُمَرَ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى أُمِّ أَيْمَنَ نَزُورُهَا كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَزُورُهَا

(6318) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर(रज़ि.) ने हज़रत उमर(रज़ि.) से कहा, चलो हज़रत उम्मे ऐमन की ज़ियारत कर आयें, जैसाकि रसूलुल्लाह(ﷺ) उनसे मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले जाया करते थे। तो जब हम उनके पास पहुँच गये, वो रो पड़ीं

. فَلَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَيْهَا بَكَتْ فَقَالاَ لَهَا مَا يُبْكِيكِ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِرَسُولِهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَتْ مَا أَبْكِي أَنْ لاَ أَكُونَ أَعْلَمُ أَنَّ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِرَسُولِهِ صلى الله عليه وسلم وَلَكِنْ أَبْكِي أَنَّ الْوَحْىَ قَدِ انْقَطَعَ مِنَ السَّمَاءِ . فَهَيَّجَتْهُمَا عَلَى الْبُكَاءِ فَجَعَلاَ يَبْكِيَانِ مَعَهَا .

तो दोनों ने उनसे पूछा, क्यों रोती हो? अल्लाह के यहाँ, उसके रसूल(ﷺ) के लिये जो कुछ है, वो बहुत बेहतर है। उन्होंने कहा, मैं इसलिये नहीं रोती कि मुझे ये पता नहीं है कि अल्लाह के यहाँ उसके रसूल के लिये जो मक़ाम व मर्तबा और नेमतें हैं, वो बेहतरीन हैं लेकिन मैं तो इसलिये रो रही हूँ कि आसमानी वह्य मुन्क़तअ हो(कट) गई है। इस तरह उन दोनों को रोने पर उभार दिया, तो वो दोनों भी उनके साथ रोने लगे।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ अपने बुज़ुर्गों, अपने मोहसिनों और अपने मोहसिनों के अक़रबा और अहबाब की मुलाक़ात के लिये जाना पसन्दीदा अमल है और उनके अल्लाह के यहाँ बुलंद दर्जे व मर्तबे के बावजूद उनके फ़िराक़ पर गिर्या करना दुरुस्त है और अपने किसी दोस्त व अज़ीज़ को भी साथ ले जाया जा सकता है।

باب مِنْ فَضَائِلِ أُمِّ سُلَيْمٍ أُمِّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ وَبِلاَلٍ رضى الله عنهما

बाब 19 : हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) की वालिदा हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) और हज़रत बिलाल(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لاَ يَدْخُلُ عَلَى أَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ عَلَى أَزْوَاجِهِ إِلاَّ أُمِّ سُلَيْمٍ فَإِنَّهُ كَانَ يَدْخُلُ عَلَيْهَا فَقِيلَ لَهُ فِي ذَلِكَ فَقَالَ " إِنِّي أَرْحَمُهَا قُتِلَ أَخُوهَا مَعِي " .

(6319) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) उम्मे सुलैम को छोड़कर अपनी अज़्वाज(बीवियों) के सिवा किसी के यहाँ(ठहरने के लिये) नहीं जाते थे, आप उम्मे सुलैम(रज़ि.) के यहाँ जाते थे तो आपसे इसके बारे में पूछा गया तो आपने जवाब दिया, 'मैं उस पर रहम खाता हूँ, उसका भाई मेरे साथ क़त्ल कर दिया गया था।'

(सहीह बुख़ारी : 2844)

फ़ायदा : कुति-ल मइ-य : यानी मेरी नुसरत व हिमायत करता हुआ शहीद हुआ था, क्योंकि उनका भाई हराम बिन मिल्हान(रज़ि.) बिअ्रे मऊना के वाक़िये में शहीद हुआ था, जिसमें रसूलुल्लाह(ﷺ) शरीक नहीं थे, आप उनकी बहन उम्मे हराम(रज़ि.) के यहाँ भी क़ैलूला फ़रमाते थे, इसका सबब भी यही था।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ السَّرِيِّ - حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ خَشْفَةً فَقُلْتُ مَنْ هَذَا قَالُوا هَذِهِ الْغُمَيْصَاءُ بِنْتُ مِلْحَانَ أُمُّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ " .

(6320) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने आहट सुनी, मैंने पूछा, ये कौन है? उन्होंने(फ़रिश्तों) ने कहा, ये अनस बिन मालिक की माँ गुमैसा बिन्ते मिल्हान है।'

फ़ायदा : ग़मस और रमस आँखों के कीचड़ को कहते हैं, चूंकि उनकी आँखों में कीचड़ रहता था, इसलिये उनको गुमैसा और रुमैसा के नाम से पुकारते थे और उनकी बहन उम्मे हराम को रुमैसा कहते थे।

حَدَّثَنِي أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْفَرَجِ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الْحُبَابِ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ، بْنُ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أُرِيتُ الْجَنَّةَ فَرَأَيْتُ امْرَأَةَ أَبِي طَلْحَةَ ثُمَّ سَمِعْتُ خَشْخَشَةً أَمَامِي فَإِذَا بِلاَلٌ " .

(6321) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे जन्नत दिखाई गई तो मैंने अबू तलहा(रज़ि.) की बीवी को देखा, फिर मैंने अपने आगे खटपट सुनी तो वो बिलाल थे।'
(सहीह बुख़ारी : 3679)

फ़ायदा : कई बार ख़ादिम अपने आक़ा के आगे-आगे चलता है और जूतों की खटपट पीछे चलने की सूरत में भी आगे सुनाई दे सकती है और बिलाल के जन्नत में जाने को उनकी ज़िन्दगी में ही रसूलुल्लाह(ﷺ) को तम्सीलन दिखाया गया और इसका सबब उनका अज़ान के बाद दो रकअत

पढ़ना और हर वुज़ू के बाद दो रकअत पढ़ने की पाबंदी को क़रार दिया गया और वुज़ू के बाद दो रकअत पढ़ने की फ़ज़ीलत रसूलुल्लाह(ﷺ) से साबित है, इस तरह अज़ान के बाद नमाज़ साबित है। इसलिये ये इस्तिदलाल करना कि अपने इज्तिहाद से किसी इबादत का वक़्त मुक़र्रर करना जाइज़ है और बिलाल ने दुख़ूले जन्नत का ये मर्तबा अपने इज्तिहाद और इस्तिम्बात से हासिल किया, दुरुस्त नहीं है और उससे अज़ान से पहले सलात व सलाम पढ़ने , मीलाद मनाने और तीजा, सातवाँ और चालीसवाँ मुक़र्रर करने पर इस्तिदलाल करना बिनाये फ़ासिद अला फ़ासिद है। क्योंकि इन चीज़ों को दीन बना दिया गया है और इनकी तल्क़ीन की जाती है। जबकि हज़रत बिलाल ये काम शख़्सी तौर पर करते थे, दूसरों को तल्क़ीन नहीं करते थे, इस तरह हज़रत कुल्सूम बिन हदम अन्सारी नमाज़ की हर रकअत में सूरह इख़्लास अपने तौर पर पढ़ते थे, दूसरों को इसकी तल्क़ीन या अपने इस काम की तशहीर(पब्लिसिटी) नहीं करते थे किसी काम को दीन बनाना और चीज़ है और अपने तौर पर किसी अमल से मुहब्बत करते हुए शरई हुदूद में रहते हुए उसकी पाबंदी करना और चीज़ है। अगर अपने तौर पर किसी नेक अमल के लिये वक़्त की तअयीन और तहदीद जाइज़ है तो आपने जुम्आ के दिन रोज़ा रखने से क्यों मना फ़रमाया और कुछ सहाबा ने सलाम फेरने के बाद हमेशा दायें तरफ़ मुड़ने से क्यों रोका। नीज़ उम्मे सुलैम और बिलाल को जन्नत में देखने का मौक़ा ख़्वाब में पेश आया था, इसलिये इससे ये कैसे साबित होता है कि हज़रत बिलाल और उम्मे सुलैम ज़िन्दगी में ही जसदे उन्सुरी के साथ जन्नत में पहुँच गये थे। अल्लामा सईदी एक तरफ़ तो दरूद व सलाम अज़ान से पहले पढ़ना जाइज़ और बाइसे अज्र क़रार देते हैं और दूसरी तरफ़ लिखते हैं हाँ इन उमूर के साथ फ़र्ज़ और वाजिब का मामला करना और न करने वालों को बुरा जानना और उनको मलामत करना बिदअते सय्यिआ और बिदअते ज़लालह है जो मुसलमान इत्तिबाअे सुन्नत के जज़्बे से अज़ान से पहले या बाद जहरन सलात व सलामत नहीं पढ़ते कि अहदे रिसालत और अहदे सहाबा में ये मामूँल नहीं था उनकी निय्यत पर शक नहीं करना चाहिये।(शरह सहीह मुस्लिम, जिल्द 4, पेज नं. 1115)

तो जब ज़रूरत के बावजूद अहदे रिसालत और अहदे सहाबा में नहीं हुआ हालांकि कोई मानेअ और रुकावट मौजूद नहीं थी वो जाइज़ और बाइसे अज्र कैसे होगा बिदअते सय्यिआ और बिदअते ज़लाला क्यों नहीं हुआ।

बाब 20 : हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

(6322) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) का हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) से एक बेटा फ़ौत हो गया तो उम्मे सुलैम ने अपने घर वालों से कहा, तुम अबू तलहा(रज़ि.) को उसके बेटे के बारे में न बताना, ताकि मैं ख़ुद ही उसको बता सकूँ, चुनाँचे हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) आये तो उसने उन्हें खाना पेश किया, उन्होंने खा-पी लिया। हज़रत अनस कहते हैं, फिर उन्होंने उनकी ख़ातिर पहले से ज़्यादा अच्छा बनाव-सिंघार किया तो उन्होंने उससे ताल्लुक़ात क़ायम कर लिये तो जब उम्मे सुलैम ने देखा, वो सैर हो गये हैं और ताल्लुक़ात भी क़ायम कर चुके हैं तो बोलीं, ऐ अबू तलहा! बताओ अगर कुछ लोग किसी घराने वालों को अपनी कोई चीज़ उधार दें और फिर वो अपनी आरियतन दी हुई चीज़, वापस तलब करें तो क्या उन्हें ये हक़ पहुँचता है कि वो इंकार कर दें? उन्होंने कहा, नहीं! उम्मे सुलैम(रज़ि.) ने कहा, तो आप अपने बेटे पर अल्लाह तआला से सवाब के तालिब बनें। तो वो नाराज़ हो गये और कहने लगे, तुम ने मुझे बेख़बर रखा और जब मैं आलूदा हो गया, फिर मुझे मेरे बेटे के बारे में आगाह कर दिया। चुनाँचे वो चल पड़े

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي طَلْحَةَ الأَنْصَارِيِّ رضى الله تعالى عنه

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ مَاتَ ابْنٌ لأَبِي طَلْحَةَ مِنْ أُمِّ سُلَيْمٍ فَقَالَتْ لأَهْلِهَا لاَ تُحَدِّثُوا أَبَا طَلْحَةَ بِابْنِهِ حَتَّى أَكُونَ أَنَا أُحَدِّثُهُ - قَالَ - فَجَاءَ فَقَرَّبَتْ إِلَيْهِ عَشَاءً فَأَكَلَ وَشَرِبَ - فَقَالَ - ثُمَّ تَصَنَّعَتْ لَهُ أَحْسَنَ مَا كَانَ تَصَنَّعُ قَبْلَ ذَلِكَ فَوَقَعَ بِهَا فَلَمَّا رَأَتْ أَنَّهُ قَدْ شَبِعَ وَأَصَابَ مِنْهَا قَالَتْ يَا أَبَا طَلْحَةَ أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ قَوْمًا أَعَارُوا عَارِيَتَهُمْ أَهْلَ بَيْتٍ فَطَلَبُوا عَارِيَتَهُمْ أَلَهُمْ أَنْ يَمْنَعُوهُمْ قَالَ لاَ ‏.‏ قَالَتْ فَاحْتَسِبِ ابْنَكَ ‏.‏ قَالَ فَغَضِبَ وَقَالَ تَرَكْتِنِي حَتَّى تَلَطَّخْتُ ثُمَّ أَخْبَرْتِنِي بِابْنِي ‏.‏ فَانْطَلَقَ حَتَّى أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ بَارَكَ اللَّهُ لَكُمَا فِي غَابِرِ لَيْلَتِكُمَا ‏"‏ ‏.‏ قَالَ فَحَمَلَتْ -قَالَ - فَكَانَ

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي سَفَرٍ وَهِيَ مَعَهُ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَتَى الْمَدِينَةَ مِنْ سَفَرٍ لاَ يَطْرُقُهَا طُرُوقًا فَدَنَوْا مِنَ الْمَدِينَةِ فَضَرَبَهَا الْمَخَاضُ فَاحْتُبِسَ عَلَيْهَا أَبُو طَلْحَةَ وَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - يَقُولُ أَبُو طَلْحَةَ إِنَّكَ لَتَعْلَمُ يَا رَبِّ إِنَّهُ يُعْجِبُنِي أَنْ أَخْرُجَ مَعَ رَسُولِكَ إِذَا خَرَجَ وَأَدْخُلَ مَعَهُ إِذَا دَخَلَ وَقَدِ احْتُبِسْتُ بِمَا تَرَى - قَالَ - تَقُولُ أُمُّ سُلَيْمٍ يَا أَبَا طَلْحَةَ مَا أَجِدُ الَّذِي كُنْتُ أَجِدُ انْطَلِقْ . فَانْطَلَقْنَا - قَالَ - وَضَرَبَهَا الْمَخَاضُ حِينَ قَدِمَا فَوَلَدَتْ غُلاَمًا فَقَالَتْ لِي أُمِّي يَا أَنَسُ لاَ يُرْضِعُهُ أَحَدٌ حَتَّى تَغْدُوَ بِهِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَلَمَّا أَصْبَحَ احْتَمَلْتُهُ فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَصَادَفْتُهُ وَمَعَهُ مِيسَمٌ فَلَمَّا رَآنِي قَالَ " لَعَلَّ أُمَّ سُلَيْمٍ وَلَدَتْ " . قُلْتُ نَعَمْ . فَوَضَعَ الْمِيسَمَ - قَالَ - وَجِئْتُ بِهِ فَوَضَعْتُهُ فِي حَجْرِهِ وَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِعَجْوَةٍ مِنْ عَجْوَةِ الْمَدِينَةِ فَلاَكَهَا فِي

यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आ गये और आपको जो कुछ हो चुका था, उसकी ख़बर दी। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला तुम्हारी गुज़री हुई रात में बरकत पैदा करे।' चुनाँचे उसे हमल ठहर गया। रसूलुल्लाह(ﷺ) सफ़र में थे और वो भी आपके साथ थीं और रसूलुल्लाह(ﷺ) की आदते मुबारका थी, जब आप सफ़र से वापस मदीना पहुँचते तो आप उसमें रात को दाख़िल नहीं होते थे। चुनाँचे लोग मदीना के क़रीब पहुँच गये तो हज़रत उम्मे सुलैम को दर्दे ज़ेह(डिलिवरी का दर्द) शुरू हो गया। अबू तलहा(रज़ि.) उसकी ख़ातिर रुक गये और रसूलुल्लाह(ﷺ) चल पड़े, अबू तलहा(रज़ि.) कहने लगे, ऐ मेरे रब! तू ख़ूब जानता है, वाक़िया ये है कि मुझे ये बात पसंद है कि जब तेरा रसूल निकले तो मैं उसके साथ निकलूँ और जब वो दाख़िल हो तो मैं उसके साथ दाख़िल हूँ और तू देख रहा है, मैं क्यों रुक गया हूँ। उम्मे सुलैम कहने लगीं, ऐ अबू तलहा! मुझे जो दर्द हो रहा था, अब नहीं हो रहा, चलिये। तो हम चल पड़े। हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, जब मियाँ-बीवी पहुँच गये तो उसे दर्दे ज़ेह शुरू हो गया और उसने बच्चा जना तो मुझे मेरी वालिदा ने कहा, ऐ अनस! इसे कोई दूध न पिलाये यहाँ तक कि इसे रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास ले जाये। तो जब सुबह हुई, मैं उसे उठाकर रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ चल दिया और मैंने

فِيهِ حَتَّى ذَابَتْ ثُمَّ قَذَفَهَا فِي فِي الصَّبِيِّ فَجَعَلَ الصَّبِيُّ يَتَلَمَّظُهَا - قَالَ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " انْظُرُوا إِلَى حُبِّ الأَنْصَارِ التَّمْرَ " . قَالَ فَمَسَحَ وَجْهَهُ وَسَمَّاهُ عَبْدَ اللَّهِ .

आपको इस हाल में पाया कि आपके पास दाग़ देने का आला था तो जब आपने मुझे देखा, फ़रमाया, 'शायद उम्मे सुलैम के यहाँ बच्चा पैदा हुआ है?' मैंने कहा, जी हाँ! और मैंने बच्चा लाकर आपकी गोद में रख दिया। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मदीना की अज्वा खजूरों से एक अज्वा खजूर मगँवाई और उसे अपने मुँह में चबाया, यहाँ तक कि वो घुल गई, फिर आपने उसे बच्चे के मुँह में डाल दिया, चुनाँचे बच्चा उसे चूसने लगा। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'देखो! अन्सार को खजूर से किस क़द्र मुहब्बत है।' आपने उसके चेहरे पर हाथ फेरा और उसका नाम अ़ब्दुल्लाह रख दिया।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) हत्ता तलत्तख़्तु : यहाँ तक कि मैं आलूदा हो गया, यानी ताल्लुक़ाते ज़न व शौहर क़ायम कर लिये।**(2) ला यत्रुकुहा तुरूक़न :** उसमें रात को दाख़िल नहीं होते थे, घर में बिला इत्तिलाअ़ नहीं आते थे।**(3) ज़रबहल मख़ाज़ :** उसे दर्दे ज़ेह शुरू हो गया, बच्चे की पैदाइश के अस़रात पैदा हो गये, विलादत का दर्द शुरू हो गया।**(4) मा अजिदल्लज़ी कुन्तु अजिदु :** वो दर्द जो मैं महसूस कर रही थी, वो नहीं हो रहा।**(5) यतलम्मज़ुहा :** वो उसे चूसने लगा।

फ़ायदा : हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) का बच्चों अबू उ़मैर जिससे हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) बहुत प्यार करते थे और रसूलुल्लाह(ﷺ) उससे दिल्लगी और ख़ुश तबई करते हुए फ़रमाते थे, ऐ अबू उ़मैर! तेरी बुलबुल का क्या बना, वो बीमार हो गया और एक दिन हज़रत अबू तलहा(रज़ि.) की ग़ैर मौजूदगी में फ़ौत हो गया। तो हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) ने ख़ाविन्द के घर आने पर उन्हें मौत से फ़ौरी तौर पर आगाह करना मुनासिब न समझा और दूसरों को भी इत्तिलाअ़ देने से रोक दिया और उन्हें नहला-धुलाकर एक तरफ़ रख दिया और इन्तिहाई सब्र व शकीब से काम लेते हुए, उन्हें महसूस न होने दिया, बल्कि पहले से ज़्यादा बन-ठनकर उन्हें बच्चे की बीमारी के ज़ाइल होने का क़ौली और अ़मली तौर पर तास़्सुर दिया और फिर आख़िर में इन्तिहाई हकीमाना अन्दाज़ में मौत से आगाह किया, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत उम्मे सुलैम के सब्र व तहम्मुल और ख़ाविन्द की दिलदारी करने पर उसकी जगह और बच्चा दिया, जिसका आपने पहले ही दिन नाम अ़ब्दुल्लाह रख दिया।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ خِرَاشٍ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ، الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ مَاتَ ابْنٌ لأَبِي طَلْحَةَ .وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ بِمِثْلِهِ.

(6323) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

باب مِنْ فَضَائِلِ بِلاَلٍ رضى الله عنه

बाब 21 : हज़रत बिलाल(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ يَعِيشَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِبِلاَلٍ عِنْدَ صَلاَةِ الْغَدَاةِ " يَا بِلاَلُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ عِنْدَكَ فِي الإِسْلاَمِ مَنْفَعَةً فَإِنِّي سَمِعْتُ اللَّيْلَةَ خَشْفَ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَىَّ فِي الْجَنَّةِ ". قَالَ بِلاَلٌ مَا عَمِلْتُ عَمَلاً فِي الإِسْلاَمِ أَرْجَى عِنْدِي مَنْفَعَةً مِنْ أَنِّي لاَ أَتَطَهَّرُ طُهُورًا تَامًّا فِي سَاعَةٍ مِنْ لَيْلٍ وَلاَ نَهَارٍ إِلاَّ صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كَتَبَ اللَّهُ لِي أَنْ أُصَلِّيَ .

(6324) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत बिलाल(रज़ि.) से सुबह की नमाज़ के वक़्त पूछा, 'ऐ बिलाल! मुझे बताओ तेरे नज़दीक इस्लाम में सबसे ज़्यादा नफ़ा की उम्मीद तुझे किस अमल पर है? क्योंकि मैंने आज रात जन्नत में अपने आगे तेरी जूतियों की खटपट सुनी है।' हज़रत बिलाल(रज़ि.) ने कहा, मैंने इस्लाम में कोई अमल ऐसा नहीं किया, जिसके नफ़ा की मुझे ज़्यादा उम्मीद है, इस अमल से कि मैं जब भी मुकम्मल वुज़ू करता हूँ, रात के वक़्त या दिन के वक़्त तो उस वुज़ू से जिस क़द्र अल्लाह को मन्ज़ूर होता है, मैं नमाज़ पढ़ता हूँ।

(सहीह बुख़ारी : 1149)

फ़ायदा : इस हदीस़ से इस्तिम्बात करना कि अपने इज्तिहाद से किसी इबादत का वक़्त मुक़र्रर करना जाइज़ है, क्योंकि हज़रत बिलाल ने दुख़ूले जन्नत का ये मर्तबा, अपने इज्तिहाद और इस्तिम्बात से

हासिल किया, दुरुस्त नहीं है। तहिय्यतुल वुज़ू और तहिय्यतुल मस्जिद की आपने ख़ुद तल्क़ीन फ़रमाई है ये अमल हज़रत बिलाल(रज़ि.) ने अपने इस्तिम्बात और इज्तिहाद से शुरू नहीं किया बल्कि आपकी तरग़ीब व तहरीस(शौक़ दिलाने) से शुरू किया। जाहिलिय्यत के दौर में लोगों ने अतीरह के लिये रजब का महीना मुक़र्रर किया था, जब आपसे सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया, अतीरह दुरुस्त है, अगर कोई इस पर अमल करना चाहे तो कर सकता है, लेकिन इसके लिये माहे रजब को ख़ास करना दुरुस्त नहीं है। जिस महीने में भी इसकी तौफ़ीक़ हो कर ले और लोगों को खिला दे, जिससे साबित हुआ अपनी तरफ़ से वक़्त मुक़र्रर करना दुरुस्त नहीं है। हदीस की वज़ाहत पीछे गुज़र चुकी है।

बाब 22 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और उनकी वालिदा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ وَأُمِّهِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

(6325) हज़रत अब्दुल्लाह(बिन मसऊद रज़ि.) बयान करते हैं, जब ये आयत उतरी, 'उन लोगों पर जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे अमल किये, कोई गुनाह नहीं है, इस सिलसिले में जो उन्होंने खाया-पिया, जबकि उन्होंने परहेज़गारी इख़ितयार की और वो ईमान लाये।'(सूरह माएदा : 93) आख़िर तक! मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे बताया गया है कि तू(अब्दुल्लाह) उनमें से है।'
(तिर्मिज़ी : 3053)

حَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، وَسَهْلُ بْنُ عُثْمَانَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَامِرِ بْنِ، زُرَارَةَ الْحَضْرَمِيُّ وَسُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ وَالْوَلِيدُ بْنُ شُجَاعٍ قَالَ سَهْلٌ وَمِنْجَابٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، الآخَرُونَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ { لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا} إِلَى آخِرِ الآيَةِ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قِيلَ لِي أَنْتَ مِنْهُمْ "

मुफ़रदातुल हदीस : अन्-त मिन्हुम : तू उन लोगों में से है, जिन्होंने ईमान और अमले सालेह के साथ तक़वा इख़्तियार किया।

(6326) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं और मेरा भाई यमन से आये तो कुछ अर्सा हम ये समझते रहे कि इब्ने मसऊद और उसकी वालिदा(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के ख़ानदान के लोग हैं, क्योंकि वो कसरत के साथ(बहुत ज़्यादा) आपके घर जाते थे और आपके साथ रहते थे।
(सहीह बुख़ारी : 3763, 4384, तिर्मिज़ी : 3806)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ رَافِعٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي، مِنَ الْيَمَنِ فَكُنَّا حِينًا وَمَا نُرَى ابْنَ مَسْعُودٍ وَأُمَّهُ إِلاَّ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ كَثْرَةِ دُخُولِهِمْ وَلُزُومِهِمْ لَهُ .

(6327) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं मैं और मेरा भाई यमन से आये, आगे ऊपर वाली हदीस है।

حَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، أَنَّهُ سَمِعَ الأَسْوَدَ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى، يَقُولُ لَقَدْ قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي، مِنَ الْيَمَنِ . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

फ़ायदा : जब हज़रत अबू मूसा अश्अरी(रज़ि.) को पता चला कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की बिअ्सत हो गई है, आप(ﷺ) ने अपनी नुबूवत का ऐलान कर दिया है तो वो अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ यमन से आपकी तरफ़ रवाना हुए, लेकिन उनकी कश्ती हब्शा के किनारे पर जा लगी और वो हज़रत जअ्फ़र(रज़ि.) और उनके साथियों के साथ वहीं ठहर गये। फिर 7 हिजरी में जंगे ख़ैबर के मौक़े पर आपको आ मिले।

(6328) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैं ये समझता था कि अ़ब्दुल्लाह(इब्ने मसऊद) अहले बैत का एक

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالُوا حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ

أَبِي مُوسَى، قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَنَا أُرَى أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ . أَوْ مَا ذَكَرَ مِنْ نَحْوِ هَذَا .

फ़र्द है या इस क़िस्म के जो अल्फ़ाज़ उन्होंने बयान किये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لِابْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الأَحْوَصِ، قَالَ شَهِدْتُ أَبَا مُوسَى وَأَبَا مَسْعُودٍ حِينَ مَاتَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ أَتُرَاهُ تَرَكَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ فَقَالَ إِنْ قُلْتَ ذَاكَ إِنْ كَانَ لَيُؤْذَنُ لَهُ إِذَا حُجِبْنَا وَيَشْهَدُ إِذَا غِبْنَا .

(6329) अबुल अह्वस(रह.) बयान करते हैं, जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) फ़ौत हुए तो मैं हज़रत अबू मूसा और हज़रत अबू मसऊ़द(रज़ि.) के पास हाज़िर था तो उनमें से एक ने दूसरे से कहा, क्या ख़्याल है क्या इसने अपने बाद अपने जैसा छोड़ा है? तो दूसरे ने कहा, अगर तुम ये कहते हो(ये कोई अनोखी बात नहीं है) इनकी शान तो ये है कि इन्हें उस वक़्त हाज़िरी की इजाज़त मिल जाती थी, जिस वक़्त हमें महरूम कर दिया जाता था और वो मौजूद होते थे, जबकि हम ग़ायब होते थे।

फ़ायदा : हज़रत इब्ने मसऊ़द(रज़ि.) को उन औक़ात(समय) में बारयाबी(हाज़िरी) का मौक़ा मिल जाता था, जबकि दूसरे हाज़िर नहीं हो सकते थे और वो हर वक़्त आपके साथ रहने की कोशिश करते थे। जबकि दूसरे हर जगह और हर मज्लिस में आपके साथ मौजूद नहीं होते थे, अगर इल्म में उनके हम पल्ला कोई और नहीं है तो ये कोई अनहोनी बात नहीं है, वो 32 हिजरी में हज़रत उ़समान(रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में मदीना मुनव्वरा में फ़ौत हुए।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا قُطْبَةُ، هُوَ ابْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، قَالَ كُنَّا فِي دَارِ أَبِي مُوسَى مَعَ نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ عَبْدِ اللَّهِ وَهُمْ

(6330) अबुल अह्वस(रह.) बयान करते हैं कि हम अ़ब्दुल्लाह के कुछ साथियों के साथ हज़रत अबू मूसा के घर में मुस्हफ़ देख रहे थे कि अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) उठ खड़े हुए तो अबू मसऊ़द(रज़ि.) ने कहा, मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने बाद, इस उठने वाले से ज़्यादा क़ुरआन का कोई जानने वाला

يَنْظُرُونَ فِي مُصْحَفٍ فَقَامَ عَبْدُ اللَّهِ فَقَالَ أَبُو مَسْعُودٍ مَا أَعْلَمُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَرَكَ بَعْدَهُ أَعْلَمَ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ هَذَا الْقَائِمِ . فَقَالَ أَبُو مُوسَى أَمَا لَئِنْ قُلْتَ ذَاكَ لَقَدْ كَانَ يَشْهَدُ إِذَا غِبْنَا وَيُؤْذَنُ لَهُ إِذَا حُجِبْنَا .

छोड़ा हो। इस पर अबू मूसा(रज़ि.) ने कहा, हाँ! अगर तुम ये बात कहते हो तो इसकी वजह ये है, ये उस वक़्त हाज़िर होते थे, जबकि हम ग़ायब होते थे और इन्हें उस वक़्त इजाज़त मिल जाती थी, जबकि हमें रोक दिया जाता था।

फ़ायदा : हज़रत अबू मूसा और हज़रत अबू मसऊद(रज़ि.) ने जो बात उनकी ज़िन्दगी में की थी, हज़रत अ़ब्दुल्लाह की वफ़ात पर, फिर उसको दोहराया और इससे मालूम हुआ, जितना कोई आदमी उस्ताद के साथ ज़्यादा वक़्त गुज़ारता है और उसकी मज्लिसों में शरीक होता है, उतना ही उससे ज़्यादा फ़ैज़ हासिल करता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) क़ुरआन के इल्म में इसलिये ज़्यादा महारत रखते थे कि वो आपके साथ ज़्यादा वक़्त गुज़ारते थे और आपके ख़ादिम थे।

وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، - هُوَ ابْنُ مُوسَى - عَنْ شَيْبَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، قَالَ أَتَيْتُ أَبَا مُوسَى فَوَجَدْتُ عَبْدَ اللَّهِ وَأَبَا مُوسَى ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدَةَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ حُذَيْفَةَ وَأَبِي مُوسَى وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَحَدِيثُ قُطْبَةَ أَتَمُّ وَأَكْثَرُ .

(6331) इमाम साहब एक उस्ताद से अबुल अह्वस(रह.) से बयान करते हैं, मैं अबू मूसा(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो अ़ब्दुल्लाह और अबू मूसा(रज़ि.) को पाया। दूसरे उस्ताद की सनद से ये बयान करते हैं, मैं हुज़ैफ़ा और अबू मूसा(रज़ि.) के साथ बैठा हुआ था, आगे ऊपर वाली हदीस़ है, लेकिन ऊपर वाली क़ुतैबा की रिवायत कामिल और ज़्यादा है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ قَالَ } وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ{ ثُمَّ قَالَ عَلَى قِرَاءَةِ

(6332) शक़ीक़(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) ने कहा, 'जो ख़यानत करेगा वो क़यामत के दिन ख़यानत करदा चीज़ को लेकर हाज़िर होगा।'(सूरह आले इमरान : 161) फिर कहने लगे, तुम

مَنْ تَأْمُرُونِي أَنْ أَقْرَأَ فَلَقَدْ قَرَأْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِضْعًا وَسَبْعِينَ سُورَةً وَلَقَدْ عَلِمَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنِّي أَعْلَمُهُمْ بِكِتَابِ اللَّهِ وَلَوْ أَعْلَمُ أَنَّ أَحَدًا أَعْلَمُ مِنِّي لَرَحَلْتُ إِلَيْهِ . قَالَ شَقِيقٌ فَجَلَسْتُ فِي حَلَقِ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا يَرُدُّ ذَلِكَ عَلَيْهِ وَلاَ يَعِيبُهُ .

मुझे किसी शख़्स की क़िरअत पर क़िरअत करने के लिये कहते हो? मैं 70 से ज़्यादा सूरतें आपको सुना चुका हूँ और रसूलुल्लाह के साथियों को पता है, मैं उन सबसे ज़्यादा किताबुल्लाह का इल्म रखता हूँ और अगर मुझे पता चल जाये, कोई मुझसे ज़्यादा जानता है तो मैं सफ़र करके उसकी ख़िदमत में हाज़िर हूँगा। शक़ीक़(रह.) कहते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों की मज्लिसों में बैठा हूँ तो मैंने किसी को उसकी तर्दीद करते और उस पर ऐतराज़ करते नहीं सुना।

(सहीह बुख़ारी : 5030)

फ़ायदा : हज़रत उ़समान(रज़ि.) के दौर में जब इस्लाम अ़रब से निकल कर रोम और ईरान के दूर-दराज़ इलाक़ों तक पहुँच गया और अलग-अलग सहाबा किराम, अलग-अलग इलाक़ों में पहुँचे और उन्होंने वहाँ के लोगों को अपनी-अपनी क़िरअत के मुताबिक़ कुरआन मजीद की तालीम दी तो लोगों में कुरआन करीम की क़िरअतों के बारे में इख़ितलाफ़ रूनुमा होने लगा, जिसकी इत्तिलाअ़ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान(रज़ि.) ने हज़रत उ़समान(रज़ि.) को दी तो हज़रत उ़समान(रज़ि.) ने जलीलुल क़द्र सहाबा किराम के मशवरे से इस इख़ितलाफ़ से बचने का ये हल निकाला कि तमाम लोगों को एक मुस्हफ़ पर जमा कर दिया जाये। तो हज़रत अबू बकर(रज़ि.) के दौर में जमा किये हुए सहीफ़ों को एक मुस्हफ़ में मुन्तक़िल करके, उसकी अलग-अलग नक़लें(कॉपी) तैयार करवाईं और ये मुकम्मल मैयारी नुस्ख़ा अलग-अलग मक़ामात पर रखवा दिया और लोगों को कहा, अपने नुस्ख़े इस नुस्ख़े के मुताबिक़ तैयार करें और अपने इन्फ़िरादी मुस्हफ़ जिनकी तर्तीब अलग-अलग है, वो नज़्रे आतिश कर दें, ताकि मुस्हफ़ की तर्तीब और रस्मुल ख़त एक समान हो जाये। लेकिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) इसके लिये तैयार नहीं हुए, क्योंकि वो कहते थे, मैंने सत्तर से ज़्यादा सूरतें रसूलुल्लाह(ﷺ) से सीखी हैं, इसलिये मैं अपना मुस्हफ़ क्यों ख़त्म करूँ और इसके लिये उन्होंने अपने कूफ़ी तलामिज़े(शागिर्द) को भी यही तरग़ीब दी कि वो अपने मुस्हफ़ छिपा लें और हज़रत उ़समान के हवाले न करें और इसके लिये ऊपर वाली आयत पेश की कि ख़लीफ़ा को मुस्हफ़ हवाले न करना ख़यानत होगी और हम यही ख़यानत क़यामत के दिन हाज़िर करेंगे। बहरहाल उम्मत ने हज़रत उ़समान

के रस्मुल ख़त और तर्तीब को क़ुबूल किया। इसलिये आज वही रस्मुल ख़त और तर्तीब क़ायम है, अगरचे अज्मियों की सहूलत के लिये इसमें नुक़्तों और हरकात व सकनात रुकूअ, पारे और रुमूज़े औक़ाफ़ का इज़ाफ़ा किया गया है।

(6333) हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई इलाह नहीं है! अल्लाह की किताब की हर सूरत के बारे में, मैं जानता हूँ, वो कहाँ नाज़िल हुई और मैं हर आयत के बारे में जानता हूँ, वो क्यों नाज़िल हुई और अगर मैं किसी के बारे में जान लूँ कि वो अल्लाह की किताब का मुझसे ज़्यादा इल्म रखता है और उसके पास ऊँट पहुँच सकते हों, तो मैं सवार होकर उसके पास पहुँचूँगा।
(सहीह बुख़ारी : 5002)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا قُطْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ وَالَّذِي لاَ إِلَهَ غَيْرُهُ مَا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ سُورَةٌ إِلاَّ أَنَا أَعْلَمُ حَيْثُ نَزَلَتْ وَمَا مِنْ آيَةٍ إِلاَّ أَنَا أَعْلَمُ فِيمَا أُنْزِلَتْ وَلَوْ أَعْلَمُ أَحَدًا هُوَ أَعْلَمُ بِكِتَابِ اللَّهِ مِنِّي تَبْلُغُهُ الإِبِلُ لَرَكِبْتُ إِلَيْهِ .

फ़ायदा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) के तरीक़े कार से ये बात वाज़ेह होती है कि किसी ज़रूरत और मक़सद के तहत इंसान अपने इल्म व फ़ज़ल का इज़हार कर सकता है, लेकिन बिला ज़रूरत या अपनी बड़ाई के इज़हार और फ़ख़्र व रिया की ख़ातिर ऐसा करना जाइज़ नहीं है।

(6334) हज़रत मसरूक़(रह.) बयान करते हैं, हम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते और उनके यहाँ बातचीत करते, चुनाँचे एक दिन हमने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) का ज़िक्र छेड़ दिया तो उन्होंने कहा, तुमने ऐसे आदमी का ज़िक्र छेड़ा है, जिससे मैं उस वक़्त के बाद से मुहब्बत करता हूँ, जब से मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से एक बात सुनी है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरआन मजीद

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ كُنَّا نَأْتِي عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو فَنَتَحَدَّثُ إِلَيْهِ - وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ عِنْدَهُ - فَذَكَرْنَا يَوْمًا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ فَقَالَ لَقَدْ ذَكَرْتُمْ رَجُلاً لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ بَعْدَ شَىْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه

وسلم يَقُولُ " خُذُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ مِنِ ابْنِ أُمِّ عَبْدٍ - فَبَدَأَ بِهِ - وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ وَأُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ " .

चार आदमियों से सीखो, शुरू उम्मे अ़ब्द(मस़ऊद) के बेटे से किया और मुआ़ज़ बिन जबल, उबय बिन कअ़ब और अबू हुज़ैफ़ा के आज़ाद करदा गुलाम सालिम।' कुछ रावियों ने नतहद्दस़ इलैह की जगह नतहद्दस़ इन्दहू कहा मक़सद एक ही है।
(सहीह बुख़ारी : 3758, 3759, 3760, 3806, 3808, 4999)

फ़ायदा : इन चार हज़रात ने अपने आपको क़ुरआन मजीद के लिये वक़्फ़ किया था, आपकी ज़िन्दगी में आपसे ज़्यादा से ज़्यादा सीखा, इसको आपके उस्लूब और लहजे पर याद रखा और आपके बाद दूसरों को क़ुरआन मजीद की तालीम देने के लिये वक़्फ़ किया और आपके बाद इसकी तालीम देते रहे, इसलिये आपने उनसे क़ुरआन मजीद सीखने की तरग़ीब दी।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالُوا حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو فَذَكَرْنَا حَدِيثًا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، فَقَالَ إِنَّ ذَاكَ الرَّجُلَ لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ بَعْدَ شَىْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُهُ سَمِعْتُهُ يَقُولُ " اقْرَءُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ مِنِ ابْنِ أُمِّ عَبْدٍ - فَبَدَأَ بِهِ - وَمِنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ وَمِنْ سَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ وَمِنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ " . وَحَرْفٌ لَمْ يَذْكُرْهُ زُهَيْرٌ قَوْلُهُ يَقُولُهُ .

(6335) हज़रत मसरूक़(रह.) बयान करते हैं कि हम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र(रज़ि.) के पास थे तो हमने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) के बारे में बात की या उनसे एक हदीस़ बयान की तो वो कहने लगे, ये वो आदमी है, मैं हमेशा इससे मुहब्बत करता रहूँगा, उस बात के बाद जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है, मैंने आपको ये फ़रमाते हुए सुना, 'क़ुरआन मजीद चार लोगों से पढ़ो, उम्मे अ़ब्द के बेटे से, शुरू आपने इनसे किया, उबय बिन कअ़ब से, अबू हुज़ैफ़ा के मौला सालिम से और मुआ़ज़ बिन जबल(रज़ि.) से।' ज़ुहैर ने अपनी रिवायत में यक़ूलुहू का लफ़्ज़ नहीं कहा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ وَوَكِيعٍ فِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، قَدَّمَ مُعَاذًا قَبْلَ أُبَىٍّ . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ أُبَىٌّ قَبْلَ مُعَاذٍ .

(6336) इमाम साहब यही रिवायत अपने दो उस्तादों, अबू बकर बिन अबी शैबा और अबू कुरैब से बयान करते हैं, अबू बकर ने अपनी रिवायत में अबी से पहले मुआज़ का नाम लिया है और अबू कुरैब ने मुआज़ से पहले अबी का नाम लिया है।

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ، خَالِدٍ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِهِمْ وَاخْتَلَفَا عَنْ شُعْبَةَ، فِي تَنْسِيقِ الأَرْبَعَةِ .

(6337) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन उस्तादों से बयान करते हैं, लेकिन चारों नामों की तर्तीब में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ ذَكَرُوا ابْنَ مَسْعُودٍ عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو فَقَالَ ذَاكَ رَجُلٌ لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ بَعْدَ مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " اسْتَقْرِئُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ مِنِ ابْنِ مَسْعُودٍ وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ وَأُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ " .

(6338) हज़रत मसरूक़(रह.) बयान करते हैं, साथियों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र(रज़ि.) के पास हज़रत इब्ने मसऊद(रज़ि.) का ज़िक्र छेड़ा तो उन्होंने कहा, ये वो आदमी है जिससे मैं हमेशा मुहब्बत करता रहूँगा, जबकि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये सुन चुका हूँ, 'क़ुरआन मजीद पढ़ना चार लोगों से सीखो, इब्ने मसऊद, सालिम अबू हुज़ैफ़ा का मौला, उबय बिन कअब और मुआज़ बिन जबल(रज़ि.) से।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ قَالَ شُعْبَةُ بَدَأَ بِهَذَيْنِ لاَ أَدْرِي بِأَيِّهِمَا بَدَأَ .

(6339) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, जिसमें ये इज़ाफ़ा है, शोबा ने कहा, उस्ताद ने उन दो नामों से शुरू किया और मुझे मालूम नहीं किसका नाम पहले लिया।

बाब 23 : हज़रत उबय बिन कअ़ब और एक अन्सारी गिरोह(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ وَجَمَاعَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَرْبَعَةٌ كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَأُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَأَبُو زَيْدٍ . قَالَ قَتَادَةُ قُلْتُ لأَنَسٍ مَنْ أَبُو زَيْدٍ قَالَ أَحَدُ عُمُومَتِي.

(6340) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चार सहाबा ने क़ुरआन जमा किया, वो सब अन्सारी थे। मुआज़ बिन जबल, उबय बिन कअ़ब, ज़ैद बिन स़ाबित और अबू ज़ैद(रज़ि.)। क़तादा कहते हैं, मैंने हज़रत अनस(रज़ि.) से पूछा, अबू ज़ैद कौन है? उन्होंने कहा, मेरे चाचाओं में से एक।

(सहीह बुख़ारी : 3810, तिर्मिज़ी : 3794)

फ़ायदा : जमा से यहाँ मुराद पूरे क़ुरआन मजीद की किताबत(लिखना) है कि इन हज़रात ने मुकम्मल क़ुरआन मजीद लिखा था। हिफ़्ज़े क़ुरआन मुराद नहीं है और ये भी उन्होंने अपने इल्म के मुताबिक़ बयान किया है, उनको सिर्फ़ इनका इल्म था। हालांकि जंगे यमामा में शहीद होने वाले हुफ़्फ़ाज़ की तादाद सत्तर थी और अबू बकर व उमर(रज़ि.) ने इसीलिये क़ुरआन मजीद जमा करने का इरादा किया था कि अगर अलग-अलग जंगों में क़ुरआन करीम के हुफ़्फ़ाज़ इसी तरह शहीद होते रहे तो कहीं क़ुरआन मजीद का कोई हिस्सा ही नापैद न हो जाये। फिर ये कैसे मुम्किन है मुहाजिरीन में से किसी ने भी क़ुरआन मजीद याद न किया हो, यहाँ तक कि चारों ख़लीफ़ा भी इससे महरूम रहे हों। नीज़ ये चारों ख़ज़रजी हैं, क्या किसी औसी ने क़ुरआन मजीद याद नहीं किया था और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) का अपना मुस्हफ़ था, जिसको उन्होंने ख़लीफ़ा के हवाले नहीं किया था।

حَدَّثَنِي أَبُو دَاوُدَ، سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، قَالَ قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ مَنْ جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى

(6341) हम्माम(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से पूछा, रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में किन लोगों ने क़ुरआन जमा किया था? उन्होंने कहा, चार

عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ أَرْبَعَةٌ كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ أُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَرَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُكْنَى أَبَا زَيْدٍ .

ने, जो सब अन्सारी थे। उबय बिन कअ़ब, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन स़ाबित और एक अन्सारी आदमी जिसकी कुन्नियत अबू ज़ैद थी।

(सहीह बुख़ारी : 5033)

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لأُبَىٍّ " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ " . قَالَ آللَّهُ سَمَّانِي لَكَ قَالَ " اللَّهُ سَمَّاكَ لِي " . قَالَ فَجَعَلَ أُبَىٌّ يَبْكِي .

(6342) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत उबय(रज़ि.) से फ़रमाया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तेरे सामने क़िरअत करूँ।' हज़रत उबय ने पूछा, क्या अल्लाह ने मेरा नाम लेकर आपको फ़रमाया है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये तेरा नाम लिया है।' तो उबय(मसर्रत से) रोने लगे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لأُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ " إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ] لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا[" . قَالَ وَسَمَّانِي قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ فَبَكَى .

(6343) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत उबय से फ़रमाया, 'अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि तुझे सूरह लम यकुनिल्लज़ी-न कफ़रू सुनाऊँ।' हज़रत उबय ने पूछा और मेरा नाम लिया है? आपने फ़रमाया, 'हाँ!' तो वो ख़ुशी से रो पड़े।

حَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لأُبَىٍّ بِمِثْلِهِ

(6344) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस हदीस़ की तौज़ीह हदीस़ नम्बर 799 के तहत गुज़र चुकी है।

बाब 24 : हज़रत सअद बिन मुआज़(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ رضى الله عنه

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَجَنَازَةُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ " اهْتَزَّ لَهَا عَرْشُ الرَّحْمَنِ " .

(6345) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जबकि हज़रत सअद बिन मुआज़(रज़ि.) का जनाज़ा उनके सामने रखा हुआ था, फ़रमाया, 'इनकी(मौत की) वजह से अर्शे इलाही झूम गया।'
(तिर्मिज़ी : 3884)

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने जमादात में भी कुछ न कुछ शऊर व एहसास रखा है, इसलिये पत्थर भी अल्लाह के ख़ौफ़ व ख़शिय्यत से गिरते हैं और अगर क़ुरआन मजीद पहाड़ पर उतार दिया जाता तो वो भी ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ की बिना पर रेज़ा-रेज़ा हो जाता, इस तरह हज़रत सअद बिन मुआज़ की रूह के परवाज़ करने पर उसके आने पर इज़हारे मसर्रत व शादमानी के लिये अर्शे इलाही मसर्रत से झूम उठा।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ الأَوْدِيُّ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي، سُفْيَانُ عَنْ جَابِرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" اهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمَنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ " .

(6346) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हज़रत सअद बिन मुआज़(रज़ि.) की मौत पर रहमान का अर्श झूम गया।'
(सहीह बुख़ारी : 3803, इब्ने माजह : 158)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَطَاءٍ الْخَفَّافُ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَجِنَازَتُهُ مَوْضُوعَةٌ -يَعْنِي سَعْدًا - " اهْتَزَّ لَهَا عَرْشُ الرَّحْمَنِ "

(6347) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं हज़रत सअद(रज़ि.) का जनाज़ा रखा जा चुका तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसके लिये अर्शे इलाही झूम गया है।'

(6348) हज़रत बराअ(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) को रेशमी जोड़े का तोहफ़ा पेश किया गया तो आपके साथी उसको छूने लगे और उसकी मुलायमत पर तअज्जुब करने लगे तो आपने फ़रमाया, 'क्या तुम इस जोड़े की मुलायमत पर तअज्जुब करते हो, हज़रत सअद बिन मुआज़(रज़ि.) के जन्नत में तोलिये, इससे बेहतर और ज़्यादा नर्म होंगे।'

(सहीह बुख़ारी : 3802)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يَقُولُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حُلَّةُ حَرِيرٍ فَجَعَلَ أَصْحَابُهُ يَلْمُسُونَهَا وَيَعْجَبُونَ مِنْ لِينِهَا فَقَالَ " أَتَعْجَبُونَ مِنْ لِينِ هَذِهِ لَمَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنْهَا وَأَلْيَنُ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से हज़रत सअद(रज़ि.) का जन्नती होना साबित हुआ और ये भी मालूम हुआ कि उनको जन्नत में मिलने वाले कमतर हैसियत के कपड़े भी दुनिया के नफ़ीस तरीन कपड़ों से बेहतर और बरतर होंगे।

(6349) हज़रत बराअ बिन आज़िब(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास रेशमी कपड़े लाये गये, आगे ऊपर वाली हदीस़ या इसके हम मानी रिवायत है और हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से भी इस मानी की हदीस़ मन्क़ूल है।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَنْبَأَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، يَقُولُ أُتِيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِثَوْبِ حَرِيرٍ . فَذَكَرَ الْحَدِيثَ ثُمَّ قَالَ ابْنُ عَبْدَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنِي قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِ هَذَا أَوْ بِمِثْلِهِ .

(6350) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ جَبَلَةَ، حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الْحَدِيثِ بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا كَرِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ .

(6351) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) को रेशमी जुब्बे का तोहफ़ा पेश किया गया और आप रेशम(पहनने) से मना फ़रमाते थे तो लोग इससे तअज्जुब करने लगे, चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! जन्नत में सअद बिन मुआज़ के तोलिये भी इससे ज़्यादा अच्छे हैं।'
(सहीह बुख़ारी : 2615, 3248)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّهُ أُهْدِيَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جُبَّةٌ مِنْ سُنْدُسٍ وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيرِ فَعَجِبَ النَّاسُ مِنْهَا فَقَالَ " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنَّ مَنَادِيلَ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذَا " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : मनादील : मिन्दील की जमा है जो नदल मैल-कुचैल से माख़ूज़ है मानी तोलिया है।

(6352) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि दूमतुल जन्दल के उकैदिर ने रसूलुल्लाह(ﷺ) को एक जोड़ा तोहफ़े में पेश किया, इसमें रेशम से मना करने का ज़िक्र नहीं है, बाकी ऊपर वाली हदीस़ है।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أُكَيْدِرَ، دُومَةِ الْجَنْدَلِ أَهْدَى لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . حُلَّةً فَذَكَرَ نَحْوَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيرِ .

बाब 25 : हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي دُجَانَةَ سِمَاكِ بْنِ خَرَشَةَ رضى الله تعالى عنه

(6353) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उहुद के दिन एक तलवार पकड़कर फ़रमाया, 'ये मुझसे कौन लेगा?' लोगों ने अपने हाथ फैला दिये, हर एक इंसान कह रहा था, मैं-मैं। आपने

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَخَذَ سَيْفًا يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ " مَنْ يَأْخُذُ مِنِّي هَذَا " .

فَبَسَطُوا أَيْدِيَهُمْ كُلُّ إِنْسَانٍ مِنْهُمْ يَقُولُ أَنَا أَنَا . قَالَ " فَمَنْ يَأْخُذُهُ بِحَقِّهِ " . قَالَ فَأَحْجَمَ الْقَوْمُ فَقَالَ سِمَاكُ بْنُ خَرَشَةَ أَبُو دُجَانَةَ أَنَا آخُذُهُ بِحَقِّهِ . قَالَ فَأَخَذَهُ فَفَلَقَ بِهِ هَامَ الْمُشْرِكِينَ .

फ़रमाया, 'इसका हक़ अदा करने की ख़ातिर कौन लेता है?' लोगों ने अपने हाथ रोक लिये, चुनाँचे अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा बोले, मैं इसका हक़ अदा करने के लिये लेता हूँ। उन्होंने तलवार ले ली और मुश्रिकीन की खोपड़ियाँ फाड़ने लगे।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अह्जमल क़ौमु : लोग पीछे हट गये, यानी अपने हाथ रोक लिये कि हुज़ूर(ﷺ) की तलवार का हक़ अदा करना बड़ा मुश्किल काम है।**(2) फ़ल-क़ बिही :** उसके ज़रिये चाक किया, फाड़ा।

بَاب مِنْ فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَرَامٍ وَالِدِ جَابِرٍ رضي الله عنه

बाब 26 : हज़रत जाबिर(रज़ि.) के वालिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हराम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، كِلاَهُمَا عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ، يَقُولُ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ جِيءَ بِأَبِي مُسَجًّى وَقَدْ مُثِلَ بِهِ - قَالَ - فَأَرَدْتُ أَنْ أَرْفَعَ الثَّوْبَ فَنَهَانِي قَوْمِي ثُمَّ أَرَدْتُ أَنْ أَرْفَعَ الثَّوْبَ فَنَهَانِي قَوْمِي فَرَفَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَوْ أَمَرَ بِهِ فَرُفِعَ فَسَمِعَ صَوْتَ بَاكِيَةٍ أَوْ صَائِحَةٍ فَقَالَ " مَنْ هَذِهِ " . فَقَالُوا بِنْتُ عَمْرٍو أَوْ أُخْتُ عَمْرٍو فَقَالَ "وَلِمَ تَبْكِي فَمَا زَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ تُظِلُّهُ بِأَجْنِحَتِهَا حَتَّى رُفِعَ " .

(6354) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, जब उहुद का दिन था, मेरे बाप को ढांप लिया गया, उनका मुस़्ला(डेथ बॉडी के साथ छेड़-छाड़) किया जा चुका था तो मैंने कपड़ा उठाना चाहा, मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे रोका, मैंने फिर कपड़ा उठाने का इरादा किया तो मेरी क़ौम ने मुझे मना किया। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कपड़ा उठाया या आपके हुक्म से उठाया गया तो आपने एक रोने वाली या चिल्लाने वाली की आवाज़ सुनी, आपने पूछा, 'ये कौन है?' लोगों ने कहा, अ़म्र की बेटी या अ़म्र की बहन है। आपने फ़रमाया, 'क्यों रोती हो? फ़रिश्ते इसे अपने परों से साये किये हुए हैं, यहाँ तक कि इन्हें उठा लिया गया।'

(सहीह बुख़ारी : 1293, 2816, नसाई : 4/12)

मुफ़रदातुल हदीस़ : क़द मुस़्लि-ल बिही : उनके आज़ा व जवारेह, हाथ-पाँव, कान-नाक वग़ैरह काट दिये गये हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ أُصِيبَ أَبِي يَوْمَ أُحُدٍ فَجَعَلْتُ أَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ، وَأَبْكِي، وَجَعَلُوا يَنْهَوْنَنِي وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاَ يَنْهَانِي - قَالَ - وَجَعَلَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ عَمْرٍو تَبْكِيهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَبْكِيهِ أَوْ لاَ تَبْكِيهِ مَا زَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ تُظِلُّهُ بِأَجْنِحَتِهَا حَتَّى رَفَعْتُمُوهُ " .

(6355) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि उहुद के दिन मेरा बाप शहीद कर दिया गया तो मैं उनके चेहरे से कपड़ा हटाकर रोने लगा और हाज़िरीन मुझे मना करने लगे और रसूलुल्लाह(ﷺ) मुझे रोक नहीं रहे थे और फ़ातिमा बिन्ते अ़म्र(रज़ि.) उन पर रोने लगीं। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस पर रोया न करो, फ़रिश्ते इसे अपने परों से साये किये हुए हैं यहाँ तक कि तुमने उसे उठा लिया।'

(सहीह बुख़ारी : 1244, 4080, नसाई : 1844)

फ़ायदा : हज़रत जाबिर(रज़ि.) की क़ौम, लाश से कपड़ा हटाने से रोक रही थी कि ये हालत देखकर ज़्यादा ग़म व हुज़्न(उदासी) का शिकार होंगे और ज़्यादा रोयेंगे और रसूलुल्लाह(ﷺ) इसलिये नहीं रोक रहे थे कि इस तरह रोकने से ग़म व हुज़्न में शिद्दत पैदा होती है और देखकर कुछ तसल्ली हो जाती है और आँखों से आँसू बहाना दिल के ग़म को हल्का करता है, इसलिये शरीअ़त ने इसकी इजाज़त दी है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، . بِهَذَا الْحَدِيثِ غَيْرَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ، لَيْسَ فِي حَدِيثِهِ ذِكْرُ الْمَلاَئِكَةِ وَبُكَاءُ الْبَاكِيَةِ .

(6356) इमाम साहब दो और उस्तादों की सनदों से ये हदीस़ बयान करते हैं, लेकिन इब्ने जुरैज की हदीस़ में फ़रिश्तों, मलाइका और रोने वाली के रोने का ज़िक्र नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 1244)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، بْنُ عَمْرٍو عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ جِيءَ بِأَبِي يَوْمَ أُحُدٍ مُجَدَّعًا فَوُضِعَ بَيْنَ يَدَىِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِهِمْ .

(6357) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, उहुद के दिन मेरे बाप को इस हाल में लाया गया कि उनकी नाक और कान कटे हुए थे और उन्हें नबी(ﷺ) के सामने रख दिया गया, आगे ऊपर वाली हदीस़ है।

मुफ़रदातुल हदीस़ : मुजद्दअन : उनके आज़ा या नाक कान कटे हुए थे।

باب مِنْ فَضَائِلِ جُلَيْبِيبٍ رضى الله عنه

बाब 27 : हज़रत जुलैबीब(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عُمَرَ بْنِ سَلِيطٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ كِنَانَةَ، بْنِ نُعَيْمٍ عَنْ أَبِي بَرْزَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ فِي مَغْزًى لَهُ فَأَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ فَقَالَ لأَصْحَابِهِ " هَلْ تَفْقِدُونَ مِنْ أَحَدٍ " . قَالُوا نَعَمْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا . ثُمَّ قَالَ " هَلْ تَفْقِدُونَ مِنْ أَحَدٍ " . قَالُوا نَعَمْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا . ثُمَّ قَالَ " هَلْ تَفْقِدُونَ مِنْ أَحَدٍ " . قَالُوا لاَ . قَالَ " لَكِنِّي أَفْقِدُ جُلَيْبِيبًا فَاطْلُبُوهُ " . فَطُلِبَ فِي الْقَتْلَى فَوَجَدُوهُ إِلَى جَنْبِ سَبْعَةٍ قَدْ قَتَلَهُمْ ثُمَّ

(6358) हज़रत अबू बरज़ा(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) एक ग़ज़्वे में थे तो अल्लाह तआला ने आपको ग़नीमत से नवाज़ा, चुनाँचे आपने अपने साथियों से पूछा, 'क्या तुम किसी को गुम पाते हो?' उन्होंने कहा, हाँ! फ़लाँ, फ़लाँ और फ़लाँ। आपने फिर पूछा, 'क्या तुम किसी को गुम पाते हो?' उन्होंने कहा, जी हाँ! फ़लाँ, फ़लाँ और फ़लाँ। आपने फिर पूछा, 'क्या तुम किसी को गुम पाते हो?' उन्होंने कहा,(और कोई) नहीं। आपने फ़रमाया, 'लेकिन मैं जुलैबीब को गुम पा रहा हूँ, उसे तलाश करो।' चुनाँचे उनको मक़्तूलों में तलाश किया गया तो सहाबा किराम ने उसे सात काफ़िरों के पहलू में पाया, जिन्हें उसने क़त्ल कर डाला

قَتَلُوهُ فَأَتَى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَوَقَفَ عَلَيْهِ فَقَالَ " قَتَلَ سَبْعَةً ثُمَّ قَتَلُوهُ هَذَا مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ هَذَا مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ " . قَالَ فَوَضَعَهُ عَلَى سَاعِدَيْهِ لَيْسَ لَهُ إِلاَّ سَاعِدَا النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَحُفِرَ لَهُ وَوُضِعَ فِي قَبْرِهِ . وَلَمْ يَذْكُرْ غَسْلاً .

था, फिर काफ़िरों ने उसे शहीद कर डाला। सो रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये और उस पर आकर रुक गये और फ़रमाया, 'सात को क़त्ल कर डाला, फिर उन्होंने इसे शहीद कर दिया, ये मुझसे है और मैं इससे हूँ, ये मुझसे है और मैं इससे हूँ।' फिर आपने उसे अपने बाज़ूओं पर उठाया, सिर्फ़ आप ही के बाज़ू उसे उठाये हुए थे तो उसके लिये क़ब्र खोदी गई और उसे उसकी क़ब्र में रख दिया गया। हज़रत अबू बरज़ा ने उनके ग़ुस्ल का तज़्किरा नहीं किया।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत जुलैबीब के हक़ में इन्तिहाई तकरीम(इज़्ज़त) के कलिमात फ़रमाये कि हम दोनों का तर्ज़े अमल तरीक़ा एक ही है और फिर उसे चारपाई की बजाए अपने बाज़ूओं पर उठा लिया और उसकी क़ब्र में रखा।

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي ذَرٍّ رضى الله عنه

बाब 28 : हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ قَالَ أَبُو ذَرٍّ خَرَجْنَا مِنْ قَوْمِنَا غِفَارٍ وَكَانُوا يُحِلُّونَ الشَّهْرَ الْحَرَامَ فَخَرَجْتُ أَنَا وَأَخِي أُنَيْسٌ وَأُمُّنَا فَنَزَلْنَا عَلَى خَالٍ لَنَا فَأَكْرَمَنَا خَالُنَا وَأَحْسَنَ إِلَيْنَا فَحَسَدَنَا قَوْمُهُ فَقَالُوا إِنَّكَ إِذَا خَرَجْتَ عَنْ أَهْلِكَ خَالَفَ إِلَيْهِمْ

(6359) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, हम अपनी क़ौम ग़िफ़ार से निकले, क्योंकि वो हुरमत वाले महीने को भी हलाल समझते थे, चुनाँचे मैं, मेरा भाई उनैस और हमारी माँ निकले और अपने मामूँ के यहाँ जा ठहरे। हमारे मामूँ ने हमारी बहुत इज़्ज़त की और हमारे साथ बहुत अच्छा सुलूक किया तो उसकी क़ौम हमसे हसद करने लगी। चुनाँचे उन्होंने कहा, जब तू अपनी बीवी के पास से चला जाता है तो उनैस उसके यहाँ आ जाता है तो हमारा मामूँ आया और उसे जो कुछ कहा गया था, उसने

हम पर ज़ाहिर कर दिया। तो मैंने कहा, आपने जो नेकी की थी, आपने उसे गदला कर दिया है, अब हम आपके साथ नहीं रह सकते। हम अपने ऊँटों का गिरोह लाये और अपना सामान उन पर लाद लिया और हमारे मामूँ ने अपने कपड़े से अपने आपको ढांप लिया और रोने लगा। चुनाँचे हम चल पड़े यहाँ तक कि मक्का के क़रीब आ ठहरे तो उनैस ने हमारे ऊँटों की उतने ही ऊँटों के साथ शर्त लगाई कि मेरे ऊँट बेहतर हैं। फ़ैसले के लिये दोनों एक काहिन के पास आये तो उसने उनैस को बेहतर क़रार दिया। तो उनैस हमारे पास हमारे ऊँटों का गिरोह और उतने और ऊँट ले आया और अबू ज़र(रज़ि.) ने कहा, ऐ भतीजे! मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिलने से पहले तीन साल नमाज़ पढ़ चुका था। अब्दुल्लाह बिन सामित कहते हैं, मैंने कहा, किस लिये? उसने कहा, अल्लाह के लिये। मैंने पूछा, तो आप रुख़ किस तरफ़ करते थे? उसने कहा, जिधर मेरा रब मेरा रुख़ कर देता, उसी तरफ़ रुख़ कर लेता। मैं इशा की नमाज़ पढ़ता रहता, यहाँ तक कि जब रात का आख़िरी हिस्सा होता, मैं बिस्तर पर यूँ पड़ता गोया कि चादर हूँ, यहाँ तक कि मुझ पर धूप फैल जाती। उनैस ने कहा, मुझे मक्का में काम है, तुम मेरा काम भी करना। उनैस चला यहाँ तक कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँच गया और वापसी में देर कर दी, फिर आ गया। मैंने पूछा, तुमने क्या किया(क्यों देर कर दी)? उसने कहा, मैं मक्का में एक आदमी को मिला जो

أُنَيْسٌ فَجَاءَ خَالُنَا فَنَثَا عَلَيْنَا الَّذِي قِيلَ لَهُ فَقُلْتُ لَهُ أَمَّا مَا مَضَى مِنْ مَعْرُوفِكَ فَقَدْ كَدَّرْتَهُ وَلاَ جِمَاعَ لَكَ فِيمَا بَعْدُ . فَقَرَّبْنَا صِرْمَتَنَا فَاحْتَمَلْنَا عَلَيْهَا وَتَغَطَّى خَالُنَا ثَوْبَهُ فَجَعَلَ يَبْكِي فَانْطَلَقْنَا حَتَّى نَزَلْنَا بِحَضْرَةِ مَكَّةَ فَنَافَرَ أُنَيْسٌ عَنْ صِرْمَتِنَا وَعَنْ مِثْلِهَا فَأَتَيَا الْكَاهِنَ فَخَيَّرَ أُنَيْسًا فَأَتَانَا أُنَيْسٌ بِصِرْمَتِنَا وَمِثْلِهَا مَعَهَا - قَالَ - وَقَدْ صَلَّيْتُ يَا ابْنَ أَخِي قَبْلَ أَنْ أَلْقَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِثَلاَثِ سِنِينَ . قُلْتُ لِمَنْ قَالَ لِلَّهِ . قُلْتُ فَأَيْنَ تَوَجَّهُ قَالَ أَتَوَجَّهُ حَيْثُ يُوَجِّهُنِي رَبِّي أُصَلِّي عِشَاءً حَتَّى إِذَا كَانَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ أُلْقِيتُ كَأَنِّي خِفَاءٌ حَتَّى تَعْلُوَنِي الشَّمْسُ . فَقَالَ أُنَيْسٌ إِنَّ لِي حَاجَةً بِمَكَّةَ فَاكْفِنِي . فَانْطَلَقَ أُنَيْسٌ حَتَّى أَتَى مَكَّةَ فَرَاثَ عَلَىَّ ثُمَّ جَاءَ فَقُلْتُ مَا صَنَعْتَ قَالَ لَقِيتُ رَجُلاً بِمَكَّةَ عَلَى دِينِكَ يَزْعُمُ أَنَّ اللَّهَ أَرْسَلَهُ . قُلْتُ فَمَا يَقُولُ النَّاسُ قَالَ يَقُولُونَ شَاعِرٌ كَاهِنٌ سَاحِرٌ . وَكَانَ أُنَيْسٌ أَحَدَ الشُّعَرَاءِ . قَالَ أُنَيْسٌ لَقَدْ سَمِعْتُ

तुम्हारे दीन पर है। उसका दावा है, अल्लाह ने उसे भेजा है। मैंने पूछा, तो लोग क्या कहते हैं? उसने जवाब दिया, लोग कहते हैं, शाइर है, काहिन है, जादूगर है और उनैस एक शाइर था। उनैस ने कहा, मैं काहिनों का कलाम सुन चुका हूँ, उसका कलाम काहिनों वाला नहीं है और मैंने उसके कलाम को शेअर की क़िस्मों पर परखा तो मेरे बाद किसी की ज़बान पर ये नहीं चढ़ेगा कि वो शेअर है। अल्लाह की क़सम! वो सच्चा है और लोग झूठे हैं। मैंने कहा, तो तुम मेरा काम भी करो ताकि मैं जाकर जायज़ा लूँ। तो मैं मक्का आया। चुनाँचे मैंने उनमें से एक आदमी को नातवाँ ख़याल करके पूछा, वो कहाँ है जिसको तुम साबी(बेदीन) कहते हो? तो उसने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए कहा, साबी को पकड़ो। चुनाँचे अहले वादी(मक्का वाले) मुझ पर सब ढेले और हड्डियाँ लेकर पिल पड़े, यहाँ तक कि मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। तो जब मुझे होश आया, मैं उठ खड़ा हुआ, गोया कि मैं लात बुत हूँ। चुनाँचे मैं ज़मज़म पर पहुँचा और अपने आपसे ख़ून को धोया और उसका पानी पिया। ऐ भतीजे! मैंने तीस दिन रात गुज़ारे, मेरी ग़िज़ा सिर्फ़ ज़मज़म का पानी था। चुनाँचे मैं मोटा हो गया, यहाँ तक कि मेरे पेट की सल्वटें ख़त्म हो गईं और मैंने अपने जिगर में भूख की नातवानी या कमज़ोरी नहीं पाई। इस दौरान में कि मक्का वाले एक चाँदनी रोशन रात में सो गये। उनमें से कोई तवाफ़ नहीं कर रहा था और उनमें से दो औरतें इसाफ़ और

قَوْلَ الْكَهَنَةِ فَمَا هُوَ بِقَوْلِهِمْ وَلَقَدْ وَضَعْتُ قَوْلَهُ عَلَى أَقْرَاءِ الشِّعْرِ فَمَا يَلْتَئِمُ عَلَى لِسَانِ أَحَدٍ بَعْدِي أَنَّهُ شِعْرٌ وَاللَّهِ إِنَّهُ لَصَادِقٌ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ . قَالَ قُلْتُ فَاكْفِنِي حَتَّى أَذْهَبَ فَأَنْظُرَ . قَالَ فَأَتَيْتُ مَكَّةَ فَتَضَعَّفْتُ رَجُلاً مِنْهُمْ فَقُلْتُ أَيْنَ هَذَا الَّذِي تَدْعُونَهُ الصَّابِئَ فَأَشَارَ إِلَىَّ فَقَالَ الصَّابِئَ . فَمَالَ عَلَىَّ أَهْلُ الْوَادِي بِكُلِّ مَدَرَةٍ وَعَظْمٍ حَتَّى خَرَرْتُ مَغْشِيًّا عَلَىَّ - قَالَ - فَارْتَفَعْتُ حِينَ ارْتَفَعْتُ كَأَنِّي نُصُبٌ أَحْمَرُ - قَالَ - فَأَتَيْتُ زَمْزَمَ فَغَسَلْتُ عَنِّي الدِّمَاءَ وَشَرِبْتُ مِنْ مَائِهَا وَلَقَدْ لَبِثْتُ يَا ابْنَ أَخِي ثَلاَثِينَ بَيْنَ لَيْلَةٍ وَيَوْمٍ مَا كَانَ لِي طَعَامٌ إِلاَّ مَاءُ زَمْزَمَ فَسَمِنْتُ حَتَّى تَكَسَّرَتْ عُكَنُ بَطْنِي وَمَا وَجَدْتُ عَلَى كَبِدِي سُخْفَةَ جُوعٍ - قَالَ - فَبَيْنَا أَهْلُ مَكَّةَ فِي لَيْلَةٍ قَمْرَاءَ إِضْحِيَانَ إِذْ ضُرِبَ عَلَى أَسْمِخَتِهِمْ فَمَا يَطُوفُ بِالْبَيْتِ أَحَدٌ وَامْرَأَتَيْنِ مِنْهُمْ تَدْعُوَانِ إِسَافًا وَنَائِلَةَ - قَالَ - فَأَتَتَا عَلَىَّ فِي طَوَافِهِمَا فَقُلْتُ أَنْكِحَا أَحَدَهُمَا الأُخْرَى - قَالَ - فَمَا

تَنَاهَتَا عَنْ قَوْلِهِمَا - قَالَ - فَأَتَتَا عَلَىَّ فَقُلْتُ هَنٌ مِثْلُ الْخَشَبَةِ غَيْرَ أَنِّي لاَ أَكْنِي . فَانْطَلَقَتَا تُوَلْوِلاَنِ وَتَقُولاَنِ لَوْ كَانَ هَا هُنَا أَحَدٌ مِنْ أَنْفَارِنَا . قَالَ فَاسْتَقْبَلَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا هَابِطَانِ قَالَ " مَا لَكُمَا " . قَالَتَا الصَّابِئُ بَيْنَ الْكَعْبَةِ وَأَسْتَارِهَا قَالَ " مَا قَالَ لَكُمَا " . قَالَتَا إِنَّهُ قَالَ لَنَا كَلِمَةً تَمْلأُ الْفَمَ . وَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى اسْتَلَمَ الْحَجَرَ وَطَافَ بِالْبَيْتِ هُوَ وَصَاحِبُهُ ثُمَّ صَلَّى فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ أَبُو ذَرٍّ . فَكُنْتُ أَنَا أَوَّلُ مَنْ حَيَّاهُ بِتَحِيَّةِ الإِسْلاَمِ - قَالَ - فَقُلْتُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ " وَعَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ " . ثُمَّ قَالَ " مَنْ أَنْتَ " . قَالَ قُلْتُ مِنْ غِفَارٍ - قَالَ - فَأَهْوَى بِيَدِهِ فَوَضَعَ أَصَابِعَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ فَقُلْتُ فِي نَفْسِي كَرِهَ أَنِ انْتَمَيْتُ إِلَى غِفَارٍ . فَذَهَبْتُ آخُذُ بِيَدِهِ فَقَدَعَنِي صَاحِبُهُ وَكَانَ أَعْلَمَ بِهِ مِنِّي ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ قَالَ " مَتَى كُنْتَ هَا هُنَا " . قَالَ قُلْتُ

नायला को पुकार रही थीं। वो तवाफ़ करते-करते मेरे पास आईं तो मैंने कहा, इनमें से एक की दूसरी से शादी कर दो। तो फिर भी वो अपनी बात से बाज़ न आईं(उन्हें पुकारती रहीं)। वो दोबारा मेरे पास आईं तो मैंने कहा, फ़रज में लकड़ी या लकड़ी जैसा ज़कर। मैंने साफ़ कहा, किनाये से काम न लिया। यानी इसाफ़ व नायला को नंगी गाली दी। तो वो औरतें चीख़ती-चिल्लाती चलीं और कह रही थीं, ऐ काश! यहाँ कोई हमारी ख़ातिर भड़कने वाला होता, आगे से उन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) और अबू बकर मिले और वो दोनों पहाड़ से उतर रहे थे। आपने पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ?' उन्होंने जवाब दिया, इसने हमें ऐसी बात कही है जिससे मुँह भर जाता है, यानी उसको ज़बान पर नहीं लाया जा सकता और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने आकर हज्रे अस्वद को बोसा दिया और आपने और आपके साथी ने तवाफ़ किया, फिर नमाज़ पढ़ी। तो जब आपने नमाज़ पूरी कर ली तो मैं पहला शख़्स था, जिसने आपको इस्लामी तरीक़े पर सलाम कहा तो मैंने कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह! तो आपने फ़रमाया, 'व अलैक व रह्मतुल्लाह।' फिर आपने पूछा, 'तुम कौन हो?' मैंने कहा, मैं ग़िफ़ार क़बीले का फ़र्द हूँ। तो आपने अपना हाथ बढ़ाया और अपनी उंगलियों को अपनी पेशानी पर रखा। चुनाँचे मैंने अपने दिल में कहा, आपने मेरी ग़िफ़ार की तरफ़ निस्बत को नापसंद किया है। तो मैं आपका हाथ पकड़ने

قَدْ كُنْتُ هَا هُنَا مُنْذُ ثَلاَثِينَ بَيْنَ لَيْلَةٍ وَيَوْمٍ قَالَ " فَمَنْ كَانَ يُطْعِمُكَ " . قَالَ قُلْتُ مَا كَانَ لِي طَعَامٌ إِلاَّ مَاءُ زَمْزَمَ . فَسَمِنْتُ حَتَّى تَكَسَّرَتْ عُكَنُ بَطْنِي وَمَا أَجِدُ عَلَى كَبِدِي سُخْفَةَ جُوعٍ قَالَ " إِنَّهَا مُبَارَكَةٌ إِنَّهَا طَعَامُ طُعْمٍ " . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ ائْذَنْ لِي فِي طَعَامِهِ اللَّيْلَةَ . فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبُو بَكْرٍ وَانْطَلَقْتُ مَعَهُمَا فَفَتَحَ أَبُو بَكْرٍ بَابًا فَجَعَلَ يَقْبِضُ لَنَا مِنْ زَبِيبِ الطَّائِفِ وَكَانَ ذَلِكَ أَوَّلَ طَعَامٍ أَكَلْتُهُ بِهَا ثُمَّ غَبَرْتُ مَا غَبَرْتُ ثُمَّ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنَّهُ قَدْ وُجِّهَتْ لِي أَرْضٌ ذَاتُ نَخْلٍ لاَ أُرَاهَا إِلاَّ يَثْرِبَ فَهَلْ أَنْتَ مُبَلِّغٌ عَنِّي قَوْمَكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَنْفَعَهُمْ بِكَ وَيَأْجُرَكَ فِيهِمْ " . فَأَتَيْتُ أُنَيْسًا فَقَالَ مَا صَنَعْتَ قُلْتُ صَنَعْتُ أَنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ وَصَدَّقْتُ . قَالَ مَا بِي رَغْبَةٌ عَنْ دِينِكَ فَإِنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ وَصَدَّقْتُ . فَأَتَيْنَا أُمَّنَا فَقَالَتْ مَا بِي رَغْبَةٌ عَنْ دِينِكُمَا فَإِنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ

लगा, तो आपके साथी ने मुझे रोक दिया। वो आपको मुझसे ज़्यादा जानता था। फिर आपने सर उठाया और पूछा, तुम कब से यहाँ हो? मैंने कहा, मैं तीस दिन, रात से यहाँ हूँ। आपने पूछा, तो तुम्हें खाना कौन खिलाता है?' मैंने कहा, मेरे पास ज़मज़म के पानी के सिवा कोई खाना नहीं है, जिससे मैं मोटा हो गया हूँ और मेरे पेट की सल्वटें ख़त्म हो गई हैं और मैं अपने कलेजे में भूख की कमज़ोरी नहीं पाता हूँ। आपने फ़रमाया, 'ज़मज़म का पानी बरकत वाला है और खाने की तरह सैर करता है।' सो अबू बकर(रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आज रात इसको खिलाने की मुझे इजाज़त दीजिये। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) और अबू बकर चल पड़े और मैं भी उनके साथ चल पड़ा। तो अबू बकर(रज़ि.) ने एक दरवाज़ा खोला और हमारे लिये ताइफ़ का मुनक़्क़ा या किशमिश निकालने लगे और ये मक्का में पहला खाना था, जो मैंने खाया। फिर मैं इस हालत में रहा जब तक रहा, फिर मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया तो आपने फ़रमाया, 'मुझे एक खजूरों वाली ज़मीन दिखाई गई है, मेरा ख़्याल है वो यसरिब में है तो क्या तुम मेरी तरफ़ से अपनी क़ौम को पैग़ाम पहुँचाओगे? शायद अल्लाह तुझसे उनको नफ़ा पहुँचाये और उनके सबब तुझे अज्र दे।' चुनाँचे मैं उनैस के पास आ गया, उसने पूछा, तूने क्या किया? मैंने कहा, मैंने ये किया है कि मैं इस्लाम ला चुका हूँ और मैंने

وَصَدَّقْتُ . فَاحْتَمَلْنَا حَتَّى أَتَيْنَا قَوْمَنَا غِفَارًا فَأَسْلَمَ نِصْفُهُمْ وَكَانَ يَؤُمُّهُمْ إِيمَاءُ بْنُ رَحَضَةَ الْغِفَارِيُّ وَكَانَ سَيِّدَهُمْ . وَقَالَ نِصْفُهُمْ إِذَا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَدِينَةَ أَسْلَمْنَا . فَقَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَدِينَةَ فَأَسْلَمَ نِصْفُهُمُ الْبَاقِي وَجَاءَتْ أَسْلَمُ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِخْوَتُنَا نُسْلِمُ عَلَى الَّذِي أَسْلَمُوا عَلَيْهِ . فَأَسْلَمُوا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ " .

तस्दीक़ की है। उसने कहा, मैं भी तेरे दीन से बेनियाज़ नहीं हूँ, सो मैं भी इस्लाम लाया और तस्दीक़ की। फिर हम अपनी माँ के पास आये, उसने कहा, मैं भी तुम्हारे दीन से नफ़रत नहीं करती, सो मैं भी इस्लाम लाई और तस्दीक़ की। तो हमने(मक्का के क़रीब से) अपना सामान लादा यहाँ तक कि अपनी क़ौम ग़िफ़ार के पास पहुँच गये। तो उनमें से आधे लोग मुसलमान हो गये और ऐमा बिन रहज़ह ग़िफ़ारी उनकी इमामत करवाता था। वो उनका सरदार था और उनमें से आधे कहने लगे, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) मदीना तशरीफ़ लायेंगे, हम मुसलमान हो जायेंगे। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) मदीना तशरीफ़ ले आये तो बाक़ी आधे भी मुसलमान हो गये और अस्लम क़बीले के लोग आये और कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! हम भी अपने भाईयों के तरीक़े पर इस्लाम लाते हैं। सो वो मुसलमान हो गये तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ग़िफ़ार को अल्लाह बख़्श दे और अस्लम को अल्लाह सलामत रखे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) कानू युहिल्लूनश्शहरल हराम : वो हुरमत वाले महीने को हलाल समझते थे, इसमें जंगो-जिदाल और क़त्लो-ग़ारत से रुकते नहीं थे, इसलिये अबू ज़र अपनी क़ौम से कूच कर गये और अपने मामूँ के यहाँ जा ठहरे।**(2) ख़ाल-फ़ इलैहिम उनैस :** तेरे पीछे तेरी बीवी के पास तेरा भान्जा उनैस चला जाता है, तेरी ग़ैर हाज़िरी में दोनों बदकारी करते हैं।**(3) नशा अलैना** :(क़ौम के इल्ज़ाम का) हम पर इज़्हार किया, गोया उनकी बात को तस्लीम कर लिया।**(4) ला जिमाअ ल-क फ़ीमा बअ्दु :** इस इल्ज़ाम तराशी और बद गुमानी के बाद हम तुम्हारे साथ नहीं रह सकते, हमारा तुम्हारे साथ गुज़ारा नहीं हो सकता।**(5) क़र्रब्ना सिर्मतना :** हमने अपने ऊँटों की टोली को क़रीब किया, यानी ऊँटों को सफ़र के लिये तैयार किया।**(6) तग़त्ता ख़ालुना :** हमारे मामूँ ने हमारे फ़िराक़ के ग़म व हुज़्न की बिना पर अपने ऊपर कपड़ा डाल लिया।**(7) फ़जअ-ल यब्की :**

और नदामत व शर्मिंदगी से रोने लगा।(8) **नज़ल्ना बिहज़्रति मक्कह :** हमने मक्का के क़रीब रिहाइश इख़्तियार कर ली, मक्का के अंदर सकूनत इख़्तियार न की।(9) **नाफ़-र उनैसन :** उनैस ने फ़ख़्र व मुबाहात का इज़हार किया और उस पर शर्त रखकर एक तीसरे फ़र्द को फ़ैसल तस्लीम कर लिया।(10) **ख़य्य-र उनैसन :** उसने उनैस को बरतर क़रार दिया, इस तरह फ़ख़्र व मुबाहात की शर्त उसने जीत ली।(11) **क़द सल्लैतु क़ब्ल अन अल्क़ा रसूलल्लाह :** मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) से मुलाक़ात करने से पहले यानी मुसलमान होने से पहले ही से नमाज़ पढ़ता था।(12) **उल्क़ीतु कअन्नी ख़िफ़ाउन :** रात भर नमाज़ पढ़ने से आख़िरी हिस्से में थक-हार कर ख़िफ़ाअ चादर की तरह गिर पड़ता और सूरज निकलने तक बिस्तर पर पड़ा रहता। फ़रा-स़ अलय्या : उसने आने में देर कर दी। यानी जिन दिनों ये लोग मक्का के क़रीब रिहाइश पज़ीर थे, उनैस किसी ज़रूरत के तहत मक्का गया, रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिला और उसने अबू ज़र को आपकी तरह मुवह्हिद क़रार दिया।(13) **अक़्राउश्शिअ्र :** क़रउन : नौअ या क़िस्म, क़ाफ़िया व बहर।(14) **फ़मा यल्तइमु अला लिसा-न अहृदिन बअ्दी :** मेरे बाद भी किसी की ज़बान पर ये नहीं आ सकेगा, यानी मेरी तरह कोई और भी आपके काम को शेअर क़रार नहीं दे सका।(15) **तज़अ्अफ़्तु रजुलम्-मिन्हुम :** मैंने उनमें से कमज़ोर और नातवाँ का इन्तिख़ाब किया, ताकि मुझे किसी परेशानी का सामना न करना पड़े, लेकिन उसने मेरी राहनुमाई करने की बजाए उल्टा मुझे ही बेदीन ठहराकर लोगों को मेरे ख़िलाफ़ भड़का दिया।(16) **नुसुबुन अह्मर :** लात बुत, जाहिलिय्यत में लोग बुतों के नाम पर जानवर ज़िब्ह करके ख़ून उन पर डाल देते और वो ख़ून में नहा जाते, इस तरह हज़रत अबू ज़र मार-पीट से ख़ून में नहा गये।(17) **इकनु बत्नी :** उक्नतु की जमा है, पेट की सल्वटें, मोटा होने से सल्वटें मिट गईं। सुख़्फ़तु जूअ : भूख के सबब पैदा होने वाली कमज़ोरी व नातवानी।(18) **इज़्हियान :** रोशन व चमकदार रात।(19) **अस्मिख़तिहिम :** सिमाख़ की जमा, कान का सूराख़ यानी कान पर थपकी लगाने से सो गये। इसाफ़ व नाइलह : मुज़क्कर व मुअन्नस़ दो बुत थे, जो सफ़ा और मरवह पर रखे गये थे। हज़रत अबू ज़र ने औरतों को शर्म व आर दिलाते हुए कहा, उनकी आपस में शादी कर दो, लेकिन वो उसके बावजूद बैतुल्लाह में उन बुतों को पुकारने से बाज़ न आईं तो उन्होंने उनको गुस्सा दिलाने के लिये उनको खुल्लम-खुल्ला गाली दी, इशारे किनाये से काम न लिया।(20) **तुवल्विलान :** चीख़ती-चिल्लाती हुई, हलाकत व तबाही की बद्दुआ देती हुई।(21) **अन्फ़ार :** नफ़र या नफ़ीर की जमा है, मदद के लिये उठ खड़े होने वाले लोग।(22) **कलिमतन तम्लउ अल्फ़म :** नागुफ़्ती बात, इन्तिहाई क़बीह और बुरी बात, मुँह को बंद कर देने वाली बात जिसको ज़बान पर न लाया जा सके।(23) **करि-ह अनिन्तयैतु इला ग़िफ़ार :** ग़िफ़ार की तरफ़ निस्बत को नापसंद किया, ग़िफ़ारी लोग रहज़न और डाकू थे। इसलिये आपको तअज्जुब हुआ कि उनमें से ये सईद रूह(नेक रूह) निकल आई, बल्कि कुछ तारीख़ी रिवायात से तो ये मालूम होता है, इब्तिदाई दौर में ख़ुद अबू ज़र बहुत बड़े रहज़न

थे, किसी क़ाफ़िले को सहीह व सालिम गुज़रने नहीं देते थे।(24) **क़द अनी :** मुझे रोका, बाज़ रखा।(25) **तआमु तुअ्मि :** सैर करने वाला खाना और ग़िज़ा है।(26) **ग़बर्तु मा ग़बर्तु :** इसी हालत में मक्का में रहा, जिस क़द्र रहा।(27) **वुज्जिहत ली :** मुझे उसका रुख़ या जहत दिखाई गई है। 28) **हल अन्-त मुबल्लि-ग़ अन्नी क़ौमक :** इस जगह से कूच कर जाओ और अपनी क़ौम में जाकर इस्लाम की तब्लीग़ करो और उन्हें इस्लाम का पैग़ाम सुनाओ, इसलिये वो अपना सामान लाद कर अपनी क़ौम के पास चले गये।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، بْنُ الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ بَعْدَ قَوْلِهِ قُلْتُ فَاكْفِنِي حَتَّى أَذْهَبَ فَأَنْظُرَ . قَالَ نَعَمْ وَكُنْ عَلَى حَذَرٍ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ فَإِنَّهُمْ قَدْ شَنِفُوا لَهُ وَتَجَهَّمُوا .

(6360) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, जिसमें इस क़ौल के बाद मैंने कहा, तुम मेरा काम भी करना ताकि मैं जाकर जायज़ा लूँ, ये इज़ाफ़ा है, उनैस ने कहा, हाँ और अहले मक्का से बचकर रहना, वो उसके दुश्मन हैं और उससे नफ़रत व कराहत का इज़हार करते हैं।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) **क़द शनिफ़ू लहू :** वो उससे बुग़्ज़ व इनाद रखते हैं।(2) **तजह्हमू :** उसको देखकर मुँह बनाते हैं, उससे नफ़रत व कराहत का इज़हार करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، قَالَ أَنْبَأَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ قَالَ أَبُو ذَرٍّ يَا ابْنَ أَخِي صَلَّيْتُ سَنَتَيْنِ قَبْلَ مَبْعَثِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . قَالَ قُلْتُ فَأَيْنَ كُنْتَ تَوَجَّهُ قَالَ حَيْثُ وَجَّهَنِيَ اللَّهُ . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ بِنَحْوِ حَدِيثِ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ وَقَالَ فِي الْحَدِيثِ فَتَنَافَرَا إِلَى رَجُلٍ مِنَ الْكُهَّانِ . قَالَ فَلَمْ يَزَلْ أَخِي أُنَيْسٌ يَمْدَحُهُ حَتَّى غَلَبَهُ -

(6361) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) ने कहा, ऐ भतीजे! मैंने नबी(ﷺ) की बिअ़सत से दो साल पहले नमाज़ शुरू की। अ़ब्दुल्लाह बिन सामित कहते हैं, मैंने कहा, आप रुख़ किस तरफ़ करते थे? उन्होंने कहा, जिधर अल्लाह मेरा रुख़ कर देता, आगे ऊपर वाली रिवायत है और इसमें ये भी है, वो अपना फ़ैसला एक काहिन आदमी के पास ले गये तो मेरा भाई उनैस उसकी मदह करता रहा, यहाँ तक कि उस पर ग़ालिब आ गया। चुनाँचे हमने उसके ऊँटों का गिरोह ले लिया और अपने ऊँटों की टुकड़ी के साथ मिला लिया और इस हदीस़ में

قَالَ - فَأَخَذْنَا صِرْمَتَهُ فَضَمَمْنَاهَا إِلَى صِرْمَتِنَا . وَقَالَ أَيْضًا فِي حَدِيثِهِ قَالَ فَجَاءَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَطَافَ بِالْبَيْتِ وَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَلْفَ الْمَقَامِ - قَالَ - فَأَتَيْتُهُ فَإِنِّي لأَوَّلُ النَّاسِ حَيَّاهُ بِتَحِيَّةِ الإِسْلاَمِ - قَالَ - قُلْتُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " وَعَلَيْكَ السَّلاَمُ مَنْ أَنْتَ " . وَفِي حَدِيثِهِ أَيْضًا فَقَالَ " مُنْذُ كَمْ أَنْتَ هَا هُنَا " . قَالَ قُلْتُ مُنْذُ خَمْسَ عَشْرَةَ . وَفِيهِ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ أَتْحِفْنِي بِضِيَافَتِهِ اللَّيْلَةَ.

ये भी है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअ़तें पढ़ीं। चुनाँचे मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैं पहला शख़्स हूँ जिसने आपको इस्लामी तरीक़े से सलाम कहा। मैंने कहा, अस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह! आपने फ़रमाया, 'व अ़लैकस्सलाम तू कौन है?' इस हदीस़ में ये भी है, आपने पूछा, 'तू कब से यहाँ है?' मैंने कहा, पन्द्रह दिन से और इसमें ये भी है, अबू बकर ने कहा, मुझे आज रात इसकी मेहमान नवाज़ी का शर्फ़ बख़्शिये।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) लम यज़ल अख़ी यम्दहुहू : मेरा भाई काहिन की तारीफ़ में शेअ़र कहता रहा, उसका मद्दे मुक़ाबिल शेअ़र न कह सका, इसलिये काहिन ने उसके हक़ में फ़ैसला दे दिया।**(2) तनाफ़रा :** उसके पास फ़ैसला ले गये, काहिन का हुक्म तस्लीम कर लिया।**(3) अत्हिफ़्नी :** मुझे इ़ज़्ज़त व शर्फ़ बख़्शिये, मुझे मौक़ा दीजिये।**(4) अत्हिफ़्नी मुन्ज़ु ख़म्स अशरह :** गुज़िश्ता हदीस़ में तीस दिन रात कहा है, अगर दिन-रात को अलग-अलग शुमार कर लें तो तीस होंगे, अगर दिन-रात को एक दिन क़रार दें तो पन्द्रह दिन होंगे या पन्द्रह दिन से ज़्यादा और महीने से कम दिन होंगे, इसलिये कुछ ने पन्द्रह दिन कहा और कुछ रावियों ने माह के ऐतबार से तीस कह दिया।

وَحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَرْعَرَةَ السَّامِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، - وَتَقَارَبَا فِي سِيَاقِ الْحَدِيثِ وَاللَّفْظُ لاِبْنِ حَاتِمٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ لَمَّا بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

(6362) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, जब अबू ज़र(रज़ि.) को मक्का में नबी(ﷺ) की बिअ़स़त की ख़बर पहुँची तो उसने अपने भाई से कहा, उस वादी(मक्का) की तरफ़ जाओ और मुझे उस आदमी के बारे में मालूमात फ़राहम करो, जिसका ये दावा है उसके पास आसमान से ख़बरें आती हैं, उसकी बातें सुनो, फिर मेरे पास आओ। दूसरा भाई चल पड़ा, यहाँ तक कि मक्का पहुँच गया और

بِمَكَّةَ قَالَ لأَخِيهِ ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ يَأْتِيهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ فَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ ائْتِنِي . فَانْطَلَقَ الآخَرُ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ وَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَبِي ذَرٍّ فَقَالَ رَأَيْتُهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الأَخْلاَقِ وَكَلاَمًا مَا هُوَ بِالشِّعْرِ . فَقَالَ مَا شَفَيْتَنِي فِيمَا أَرَدْتُ . فَتَزَوَّدَ وَحَمَلَ شَنَّةً لَهُ فِيهَا مَاءٌ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ فَأَتَى الْمَسْجِدَ فَالْتَمَسَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَلاَ يَعْرِفُهُ وَكَرِهَ أَنْ يَسْأَلَ عَنْهُ حَتَّى أَدْرَكَهُ - يَعْنِي اللَّيْلَ - فَاضْطَجَعَ فَرَآهُ عَلِيٌّ فَعَرَفَ أَنَّهُ غَرِيبٌ فَلَمَّا رَآهُ تَبِعَهُ فَلَمْ يَسْأَلْ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَىْءٍ حَتَّى أَصْبَحَ ثُمَّ احْتَمَلَ قُرَيْبَتَهُ وَزَادَهُ إِلَى الْمَسْجِدِ فَظَلَّ ذَلِكَ الْيَوْمَ وَلاَ يَرَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم حَتَّى أَمْسَى فَعَادَ إِلَى مَضْجَعِهِ فَمَرَّ بِهِ عَلِيٌّ فَقَالَ مَا أَنَى لِلرَّجُلِ أَنْ يَعْلَمَ مَنْزِلَهُ فَأَقَامَهُ فَذَهَبَ بِهِ مَعَهُ وَلاَ يَسْأَلُ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَىْءٍ حَتَّى إِذَا كَانَ

आपकी बातें सुनीं। फिर अबू ज़र के पास वापस लौट आया और बताया, मैंने आपको करीमाना अख़्लाक़ की तालीम देते देखा है और ऐसी बातचीत करता है जो शेअर नहीं है। तो अबू ज़र(रज़ि.) ने कहा, तूने मेरी मत्लूबा तसल्ली नहीं की। तो अबू ज़र ने ज़ादे राह लिया और एक मश्कीज़ा उठाया जिसमें पानी था, यहाँ तक कि मक्का पहुँच गये और मस्जिद में आ गये। नबी(ﷺ) को तलाश किया और वो आपको पहचानते नहीं थे और आपके बारे में किसी से पूछना भी पसंद न किया। यहाँ तक कि रात आ गई तो लेट गये। एक दिन हज़रत अली(रज़ि.) ने उन्हें देख लिया और जान लिया कि वो अजनबी है तो अबू ज़र उनका इशारा समझकर उनके पीछे हो लिये, उनमें से किसी ने अपने साथी से कुछ न पूछा। यहाँ तक कि सुबह हो गई तो उन्होंने अपना मश्कीज़ा और ज़ादे राह उठाया और मस्जिद को चले गये। दिन भर गुज़र गया और उन्होंने नबी(ﷺ) को नहीं देखा, यहाँ तक कि शाम हो गई तो वो अपने लेटने की जगह की तरफ़ लौट आये। हज़रत अली(रज़ि.) उनके पास से गुज़रे और पूछा कि अभी इस मुसाफ़िर ने अपनी मन्ज़िले मक़सूद को नहीं जाना, उन्हें उठाया और अपने साथ ले गये। उनमें से कोई एक अपने साथी से कुछ न पूछता था, यहाँ तक कि तीसरा दिन आ गया। उन्होंने पहले की तरह किया तो हज़रत अली(रज़ि.) उन्हें उठाकर, अपने साथ लेकर चल पड़े, फिर उनसे पूछा,

يَوْمُ الثَّالِثِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ فَأَقَامَهُ عَلِيٌّ مَعَهُ ثُمَّ قَالَ لَهُ أَلاَ تُحَدِّثُنِي مَا الَّذِي أَقْدَمَكَ هَذَا الْبَلَدَ قَالَ إِنْ أَعْطَيْتَنِي عَهْدًا وَمِيثَاقًا لَتُرْشِدَنِّي فَعَلْتُ . فَفَعَلَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ فَإِنَّهُ حَقٌّ وَهُوَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا أَصْبَحْتَ فَاتَّبِعْنِي فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ شَيْئًا أَخَافُ عَلَيْكَ قُمْتُ كَأَنِّي أُرِيقُ الْمَاءَ فَإِنْ مَضَيْتُ فَاتَّبِعْنِي حَتَّى تَدْخُلَ مَدْخَلِي . فَفَعَلَ فَانْطَلَقَ يَقْفُوهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَدَخَلَ مَعَهُ فَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ وَأَسْلَمَ مَكَانَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " ارْجِعْ إِلَى قَوْمِكَ فَأَخْبِرْهُمْ حَتَّى يَأْتِيَكَ أَمْرِي " . فَقَالَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَصْرُخَنَّ بِهَا بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ . فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ . وَثَارَ الْقَوْمُ فَضَرَبُوهُ حَتَّى أَضْجَعُوهُ فَأَتَى الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيْهِ فَقَالَ وَيْلَكُمْ أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ مِنْ غِفَارٍ وَأَنَّ طَرِيقَ تُجَّارِكُمْ

क्या आप मुझसे बात नहीं करेंगे? तुम इस शहर में किस ग़र्ज़ के तहत आये हो? अबू ज़र ने कहा, अगर तुम मुझसे अहदो-पैमान बांधो कि मेरी राहनुमाई करोगे तो मैं बताता हूँ। हज़रत अली(रज़ि.) ने अहद किया, चुनाँचे अबू ज़र ने उन्हें आने का मक़सद बता दिया। तो हज़रत अली(रज़ि.) ने कहा, वो बरहक़ है और वो अल्लाह के रसूल हैं। जब सुबह हो तो तुम मेरे पीछे-पीछे आना, अगर मैंने तेरे बारे में कोई ख़तरे की चीज़ देखी तो मैं पेशाब करने के बहाने रुक जाऊँगा, अगर मैं चलता रहूँ तो मेरे पीछे-पीछे आना, यहाँ तक कि मेरे दाख़िल होने की जगह में दाख़िल हो जाना। उन्होंने ऐसे ही किया, हज़रत अबू ज़र उनके पीछे-पीछे चले, यहाँ तक कि वो नबी(ﷺ) के पास पहुँच गये और ये भी उनके साथ ही दाख़िल हो गये। आपकी बातें सुनीं और उसी जगह मुसलमान हो गये। चुनाँचे उन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपनी क़ौम की तरफ़ लौट जाओ और उन्हें इस्लाम से आगाह करो, यहाँ तक कि तुम्हें मेरा हुक्म पहुँच जाये। तो हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) ने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! मैं उन(मुश्रिकीने मक्का) के दरम्यान इसका ऐलान करूँगा, वो वहाँ से निकले यहाँ तक कि मस्जिद(बैतुल्लाह) में आ गये और बुलंद आवाज़ से कहा, मैं इस बात की शहादत देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं और बेशक मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

إِلَى الشَّامِ عَلَيْهِمْ . فَأَنْقَذَهُ مِنْهُمْ ثُمَّ عَادَ مِنَ الْغَدِ بِمِثْلِهَا وَثَارُوا إِلَيْهِ فَضَرَبُوهُ فَأَكَبَّ عَلَيْهِ الْعَبَّاسُ فَأَنْقَذَهُ .

लोग भड़क उठे, उन्हें मार-मार कर लिटा दिया। चुनाँचे हज़रत अब्बास आये और उन पर झुक गये और कहा, तुम पर अफ़सोस है, क्या तुम जानते नहीं हो कि ये ग़िफ़ार क़बीले का फ़र्द है और शाम की तरफ़ तुम्हारे ताजिरों का रास्ता इनसे गुज़रता है, सो उन्हें उनसे बचाया। फिर उन्होंने अगले दिन यही काम किया और वो उन पर पिल पड़े और उसे मारा, हज़रत अब्बास उस पर झुक गये और उसे बचाया।

(सहीह बुख़ारी : 3522, 3861)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) मा शफ़ैतनी फ़ीमा अरत्तु : मेरी मत्लूबा(चाहत के मुताबिक़) मालूमात तसल्ली बख़्श तौर पर नहीं लाये हो।**(2) हम-ल शन्नतन :** अपने साथ पानी का मश्कीज़ा लिया और ज़ादे राह भी लिया, लेकिन ये चीज़ें रास्ते में ही ख़त्म हो गईं, इसलिये मक्का में सिर्फ़ ज़मज़म के पानी पर गुज़ारा करते रहे।**(3) मा अना लिर्रजुलि अंय्यअ्ल-म मन्ज़िलहू :** कि उस आदमी के लिये वो वक़्त नहीं आया कि वो अपनी मन्ज़िल को पा लेता, यानी मक्का में उसको अभी इक़ामत के लिये जगह नहीं मिली या मैंने उसे कल जिस जगह ठहराया था, उसने उसको नहीं पहचाना कि आज भी वो चला जाता।**(4) कअन्नी उरीक़ुल् माअ :** गोया कि मैं पानी बहा रहा हूँ, यानी पेशाब कर रहा हूँ और कुछ रिवायतों में है।**(5) फ़अन्नी उस्लिहु नअ्ली :** गोया कि मैं अपनी जूती दुरुस्त कर रहा हूँ।

फ़ायदा : हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) के ईमान लाने का वाक़िया हज़रत अबू ज़र से अब्दुल्लाह बिन सामित और हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) नक़ल करते हैं और दोनों की तफ़्सीलात में कुछ इख़्तिलाफ़ात हैं, असल वाक़िया यूँ महसूस होता है कि अबू ज़र अपनी इक़ामत गाह से ज़ादे राह और पानी का मश्कीज़ा लेकर चले हैं, जो मक्का पहुँचने तक ख़त्म हो गया और उन्होंने एक आदमी को नातवाँ और ज़ईफ़ समझकर, आपके बारे में सवाल किया तो उसने उम्मीद के ख़िलाफ़ लोगों को उनके ख़िलाफ़ भड़का दिया। फिर उन्होंने किसी से नहीं पूछा। इस तरह कई दिन गुज़र गये और वो ज़मज़म के पानी पर गुज़ारा करते रहे। आख़िर में हज़रत अली(रज़ि.) ने ख़ुद ही उनसे आने का मक़सद पूछा तो उन्होंने पहले वाक़िये से डरते हुए कहा, अगर मेरी राहनुमाई करने का पुख़्ता वादा करो तो मैं तुम्हें अपने आने का मक़सद बताता हूँ। इस तरह वो इस्लाम ले आये और रात के वक़्त वो तवाफ़ के लिये निकले तो उन औरतों वाला वाक़िया पेश आ गया और रसूलुल्लाह(ﷺ) और अबू बकर भी तवाफ़ के लिये आये तो उन्होंने उनको पहचान लिया। इसलिये आपको इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सलाम किया और

आपको रसूलुल्लाह कहकर पुकारा और आपने अबू ज़र से उनके हालात पूछे और उसके बाद अबू ज़र कुछ दिन मक्का में रहे और हज़रत अ़ब्बास(रज़ि.) को भी उनसे वाक़िफ़ियत हो गई। फिर वो रुख़सत होने के लिये रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने उन्हें मक्का के क़रीबी इलाक़े से वापस अपनी क़ौम में जाकर इस्लाम की तब्लीग़ का मशवरा दिया और ये भी बता दिया, मैं भी जल्द हिज्रत करके मदीना मुनव्वरा आने वाला हूँ। तो वापसी के वक़्त हज़रत अबू ज़र ने अपने इस्लाम लाने का ऐलान किया और उन्हें दोबारा मुश्रिकीने मक्का ने मारा। जिससे हज़रत अ़ब्बास ने उन्हें छुटकारा दिलवाया और वो वापस अपने भाई और माँ के पास चले गये। उन दोनों को इस्लाम की तब्लीग़ की, जिससे वो मुसलमान हो गये तो उनको लेकर अपनी क़ौम के पास चले गये, उनको इस्लाम की तब्लीग़ की, आधी क़ौम मुसलमान हो गई और बाक़ी आधी क़ौम आपकी हिज्रत के बाद मुसलमान हो गई और ये लोग मुकम्मल तौर पर जंगे बद्र के बाद मुसलमान हुए हैं।

बाब 29 : हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رضى الله تعالى عنه

(6363) हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, जब से मैं इस्लाम लाया हूँ, मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने(अपनी ख़िदमत में) हाज़िर होने से नहीं रोका और आपने जब भी मुझे देखा, आप मुस्कुराये।

(सहीह बुख़ारी : 3035, 3822, 6089, तिर्मिज़ी : 3820, 3821, इब्ने माजह, बाब : 159)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، ح

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ بَيَانٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ بَيَانٍ، قَالَ سَمِعْتُ قَيْسَ بْنَ أَبِي، حَازِمٍ يَقُولُ قَالَ جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ مَا حَجَبَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلاَ رَآنِي إِلاَّ ضَحِكَ .

(6364) हज़रत जरीर(रज़ि.) बयान करते हैं, जब से मैं मुसलमान हुआ हूँ, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे कभी हाज़िरी से नहीं रोका और आपने

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو أُسَامَةَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ

نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ مَا حَجَبَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلاَ رَآنِي إِلاَّ تَبَسَّمَ فِي وَجْهِي ‏.‏ زَادَ ابْنُ نُمَيْرٍ فِي حَدِيثِهِ عَنِ ابْنِ إِدْرِيسَ وَلَقَدْ شَكَوْتُ إِلَيْهِ أَنِّي لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ ‏"‏ اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا ‏"‏ ‏.‏

जब भी मुझे देखा, मेरे सामने तबस्सुम फ़रमाया(मुस्कुराये)। इब्ने नुमैर की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, मैंने आपसे शिकायत की कि मैं घोड़े पर जम कर नहीं बैठ सकता। तो आपने अपना हाथ सीने पर मारकर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! इसे जमा दे और इसे हिदायत याफ़्ता रहनुमा बना।'

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ بَيَانٍ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ بَيْتٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْخَلَصَةِ وَكَانَ يُقَالُ لَهُ الْكَعْبَةُ الْيَمَانِيَةُ وَالْكَعْبَةُ الشَّامِيَّةُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ هَلْ أَنْتَ مُرِيحِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ وَالْكَعْبَةِ الْيَمَانِيَةِ وَالشَّامِيَّةِ ‏"‏ ‏.‏ فَنَفَرْتُ إِلَيْهِ فِي مِائَةٍ وَخَمْسِينَ مِنْ أَحْمَسَ فَكَسَرْنَاهُ وَقَتَلْنَا مَنْ وَجَدْنَا عِنْدَهُ فَأَتَيْتُهُ فَأَخْبَرْتُهُ - قَالَ - فَدَعَا لَنَا وَلأَحْمَسَ ‏.‏

(6365) हज़रत जरीर(रज़ि.) बयान करते हैं, जाहिलिय्यत के दौर में एक बुत कदा(मूर्ति रखने का घर) था, जिसको ज़ुल्ख़लसा कहते थे और उसे कअ़बा यमानिया और कअ़बा शामिया भी कहते थे। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मुझे ज़ुल्ख़लसा, कअ़बा यमानिया और कअ़बा शामिया से राहत बख़्शोगे?' तो मैं उसकी तरफ़ अहमस क़बीले के डेढ़ सौ अफ़राद लेकर रवाना हुआ। चुनाँचे हमने उसे तोड़ डाला और उसके मुजावरों को क़त्ल कर दिया। फिर मैंने वापस आकर आपको इसकी इत्तिलाअ़ दी तो आपने हमारे और अहमस क़बीले के लिये दुआ फ़रमाई।

(सहीह बुख़ारी : 3020, 3076, 3823, 4355, 4356, 4357, 6333, अबू दाऊद : 2772)

फ़ायदा : ज़ुल्ख़लसा नामी बुत कदा यमन में वाक़ेअ था, इसलिये उसको उसके परस्तार कअ़बा यमानिया का नाम देते थे और इसका एक दरवाज़ा शाम की तरफ़ था, इसलिये इसको कअ़बा शामिया का नाम भी देते थे। हज़रत जरीर(रज़ि.) ने अपने साथियों के साथ मिलकर उसको तोड़-फोड़ कर जला दिया था और उसको ख़ारिशी ऊँट की तरह जिसे तारकोल मिलाया जाता है, कोयला बना दिया था।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسٍ، بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَجَلِيِّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا جَرِيرُ أَلاَ تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ " . بَيْتٍ لِخَثْعَمَ كَانَ يُدْعَى كَعْبَةَ الْيَمَانِيَةِ . قَالَ فَنَفَرْتُ فِي خَمْسِينَ وَمِائَةِ فَارِسٍ وَكُنْتُ لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَضَرَبَ يَدَهُ فِي صَدْرِي فَقَالَ " اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا " . قَالَ فَانْطَلَقَ فَحَرَّقَهَا بِالنَّارِ ثُمَّ بَعَثَ جَرِيرٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً يُبَشِّرُهُ يُكْنَى أَبَا أَرْطَاةَ مِنَّا فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَهُ مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْنَاهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ . فَبَرَّكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا خَمْسَ مَرَّاتٍ .

(6366) हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया, 'ऐ जरीर! क्या मुझे ज़ुल्ख़लसा से राहत नहीं बख़्शोगे।' ये एक ख़स्अ़म क़बीले का बुत कदा था, जिसे कअ़बा यमानिया कहा जाता था। चुनाँचे मैं डेढ़ सौ शहसवारों के साथ निकला और मैं घोड़े पर जम नहीं सकता था, मैंने इसका तज़्किरा रसूलुल्लाह(ﷺ) से किया। आपने अपना हाथ मेरे सीने पर मारकर दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! इसे जमा दे और इसे हिदायत याफ़्ता राहनुमा बना दे।' जरीर(रज़ि.) रवाना हुए और उसे आग से जला डाला। फिर हज़रत जरीर(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ आपको बशारत सुनाने के लिये एक आदमी भेजा, जिसे अबू अरताह कहते थे, जो उनके ख़ानदान से थे, वो रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे कहा, मैं आपके पास उस वक़्त आया हूँ जबकि हमने उसे ख़ारिशी ऊँट की तरह काला स्याह कर डाला है तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अहमस क़बीले के सवारों और पयादों(पैदल चलने वालों) के लिये पाँच बार बरकत की दुआ फ़रमाई।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، - يَعْنِي الْفَزَارِيَّ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فِي حَدِيثِ مَرْوَانَ فَجَاءَ بَشِيرُ جَرِيرٍ أَبُو أَرْطَاةَ حُصَيْنُ بْنُ رَبِيعَةَ يُبَشِّرُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم .

(6367) इमाम साहब ने यही रिवायत अपने कई उस्तादों की सनदों से इस्माईल की ऊपर वाली सनद से बयान की है और मरवान की हदीस़ में है, हज़रत जरीर(रज़ि.) की तरफ़ से बशारत देने वाला अबू अरताह हुसैन बिन रबीआ, नबी(ﷺ) को बशारत सुनाने के लिये आया। कुछ जगह बशारत देने वाले को जरीर बताया गया और कुछ जगह अबू अरताह, दोनों में टकराव नहीं, क्योंकि क़ाइद हज़रत जरीर थे और उन्ही का नुमाइन्दा बनकर अबू अरताह आये थे, इसलिये दोनों की तरफ़ निस्बत करना दुरुस्त है नीज़ ये भी हो सकता है वापसी पर मिलकर उन्होंने ख़ुद बराहे रास्त ख़बर दी।

باب فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضى الله عنهما

बाब 30 : अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ قَالاَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ بْنُ عُمَرَ الْيَشْكُرِيُّ، قَالَ سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي يَزِيدَ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّوسلم أَتَى الْخَلاَءَ فَوَضَعْتُ لَهُ وَضُوءًا فَلَمَّا خَرَجَ قَالَ " مَنْ وَضَعَ هَذَا " . فِي رِوَايَةِ زُهَيْرٍ قَالُوا . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ قُلْتُ ابْنُ عَبَّاسٍ . قَالَ " اللَّهُمَّ فَقِّهْهُ " .

(6368) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये आये तो मैंने आपके लिये पानी रखा तो जब आप बाहर निकले, आपने पूछा, 'ये किसने रखा?' ज़ुहैर की रिवायत में है, क़ालू घर वालों ने कहा और अबू बकर की रिवायत में है, मैंने कहा, इब्ने अ़ब्बास ने। आपने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! इसे(दीन की) सूझ-बूझ इनायत फ़रमा।'

(सहीह बुख़ारी, बाब : 143)

फ़ायदा : हुज़ूर(ﷺ) ने अलग-अलग मौक़ों पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास की ज़हानत और फ़तानत पर ख़ुश होकर उसके मुनासिब अलग-अलग कलिमात से दुआ दी है। कभी फ़रमाया, अल्लाहुम्-म फ़क़्क़िह्हू फ़िद्दीन या अल्लाहुम्-म अ़ल्लिम्हुल किताब या अ़ल्लिम्हुल हिक्मह कभी फ़रमाया, अल्लाहुम्-म फ़क़्क़िह्हु फ़िद्दीनि व अ़ल्लिम्हुत्तअ्वील या अ़ल्लिम्हुल हिक्म-त वत्तअ्वीलल् किताब इस बिना पर उन्हें तर्जुमानुल क़ुरआन का लक़ब मिला।

बाब 31 : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رضى الله عنهما

(6369) हज़रत इब्ने उ़मर(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने ख़्वाब में देखा, गोया कि मेरे हाथ में एक रेशमी टुकड़ा है और मैं जन्नत में जिस जगह का इरादा करता हूँ, वो उसकी तरफ़ उड़ जाता है। चुनाँचे मैंने ये ख़्वाब हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) को सुनाया और हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) ने उसे नबी(ﷺ) को सुना दिया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं अ़ब्दुल्लाह को सालेह आदमी समझता हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 1156, 7015, 7016, तिर्मिज़ी : 3825)

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَخَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ كُلُّهُمْ عَنْ حَمَّادِ، بْنِ زَيْدٍ - قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ فِي يَدِي قِطْعَةَ إِسْتَبْرَقٍ وَلَيْسَ مَكَانٌ أُرِيدُ مِنَ الْجَنَّةِ إِلاَّ طَارَتْ إِلَيْهِ - قَالَ - فَقَصَصْتُهُ عَلَى حَفْصَةَ فَقَصَّتْهُ حَفْصَةُ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " أَرَى عَبْدَ اللَّهِ رَجُلاً صَالِحًا

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, किसी आदमी का ख़्वाब में जन्नत में नज़र आना, उसके नेक और पारसा होने की निशानी है।

(6370) हज़रत इब्ने उ़मर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ज़िन्दगी में जब कोई आदमी ख़्वाब देखता, उसे रसूलुल्लाह(ﷺ) को सुनाता। चुनाँचे मैंने भी आरज़ू की कि मैं ख़्वाब देखूँ और उसे

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لِعَبْدٍ - قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ، الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ،

قَالَ كَانَ الرَّجُلُ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا رَأَى رُؤْيَا قَصَّهَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَتَمَنَّيْتُ أَنْ أَرَى رُؤْيَا أَقُصُّهَا عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَكُنْتُ غُلاَمًا شَابًّا عَزَبًا وَكُنْتُ أَنَامُ فِي الْمَسْجِدِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَرَأَيْتُ فِي النَّوْمِ كَأَنَّ مَلَكَيْنِ أَخَذَانِي فَذَهَبَا بِي إِلَى النَّارِ فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ الْبِئْرِ وَإِذَا لَهَا قَرْنَانِ كَقَرْنَيِ الْبِئْرِ وَإِذَا فِيهَا نَاسٌ قَدْ عَرَفْتُهُمْ فَجَعَلْتُ أَقُولُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ - قَالَ - فَلَقِيَهُمَا مَلَكٌ فَقَالَ لِي لَمْ تُرَعْ . فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " نِعْمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ لَوْ كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ " . قَالَ سَالِمٌ فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بَعْدَ ذَلِكَ لاَ يَنَامُ مِنَ اللَّيْلِ إِلاَّ قَلِيلاً

रसूलुल्लाह(ﷺ) को सुनाऊँ और मैं नौजवान, कुँवारा लड़का था और मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के ज़माने में मस्जिद में सोता था। चुनाँचे मैंने ख़्वाब देखा, गोया कि दो फ़रिश्तों ने मुझे पकड़ लिया और आग की तरफ़ चल पड़े। मैंने उसे देखा कि वो कुँऐं की तरह गहरी खोदी गई है या पेच-दर-पेच है और उस पर कुँऐं की तरह दो लकड़ियाँ हैं और उसमें बहुत से लोग हैं, जिन्हें मैंने पहचान लिया तो मैं कहने लगा, मैं आग से अल्लाह की पनाह में आता हूँ, मैं आग से अल्लाह की पनाह लेता हूँ, मैं आग से अल्लाह की पनाह में आता हूँ। सो उन्हें एक फ़रिश्ता और मिला और उसने मुझे कहा, ख़ौफ़ ज़दा न हो। मैंने ख़्वाब हफ़्सा(रज़ि.) को सुनाया, हफ़्सा(रज़ि.) ने वो रसूलुल्लाह(ﷺ) को सुनाया तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अब्दुल्लाह बहुत अच्छा आदमी है, ऐ काश! वो रात को नमाज़ पढ़ता।' हज़रत सालिम(रह.) बयान करते हैं, उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह रात को बहुत कम सोते थे।

(सहीह बुख़ारी : 1121,1122,3838, 3740, 3741, 7028, 7029, 7030, 7031, इब्ने माजह : 3919)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ، خَتَنُ الْفِرْيَابِيِّ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الْفَزَارِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ كُنْتُ أَبِيتُ فِي

(6371) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रात को मस्जिद में सोता था, क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई थी, मैंने ख़्वाब में देखा, गोया कि मुझे एक कुँऐं की तरफ़ ले जाया गया है, आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत है।

الْمَسْجِدِ وَلَمْ يَكُنْ لِي أَهْلٌ فَرَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّمَا انْطُلِقَ بِي إِلَى بِئْرٍ . فَذَكَرَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि मस्जिद में सोने वालों को तहज्जुद का एहतिमाम करना चाहिये।

बाब 32 : हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضى الله عنه

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أُمِّ سُلَيْمٍ، أَنَّهَا قَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ خَادِمُكَ أَنَسٌ ادْعُ اللَّهَ لَهُ فَقَالَ " اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ " .

(6372) हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) से रिवायत है कि उसने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आपका ख़ादिम अनस, इसके लिये दुआ फ़रमायें। तो आपने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! इसके माल और औलाद को बढ़ा दे और इसे जो कुछ इनायत फ़रमाया है, उसमें बरकत डाल दे।'

(सहीह बुख़ारी : 6378, 6379, तिर्मिज़ी : 3829)

फ़ायदा : इमाम बुख़ारी की अल्अदबुल मुफ़रद की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है कि इसकी उ़म्र लम्बी कर और इसे माफ़ फ़रमा दे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ خَادِمُكَ أَنَسٌ . فَذَكَرَ نَحْوَهُ .

(6373) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 6334, 6344, 6380, 6281)

(6374) इमाम साहब एक और उस्ताद से हज़रत अनस से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ مِثْلَ ذَلِكَ .

(6375) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये, घर में सिर्फ़ मैं मेरी माँ और मेरी ख़ाला उम्मे हराम थे, तो मेरी माँ ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपका प्यारा ख़ादिम, इसके लिये दुआ फ़रमायें। चुनाँचे आपने मेरे लिये हर ख़ैर की दुआ फ़रमाई और जो दुआ मेरे लिये की, उसके आख़िर में फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! इसका माल और औलाद को ज़्यादा कर दे और उसमें बरकत डाल दे।'

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ دَخَلَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَلَيْنَا وَمَا هُوَ إِلاَّ أَنَا وَأُمِّي وَأُمُّ حَرَامٍ خَالَتِي فَقَالَتْ أُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ خُوَيْدِمُكَ ادْعُ اللَّهَ لَهُ - قَالَ - فَدَعَا لِي بِكُلِّ خَيْرٍ وَكَانَ فِي آخِرِ مَا دَعَا لِي بِهِ أَنْ قَالَ "اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيهِ

(6376) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे मेरी माँ, अनस की माँ रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास लाई, उसने अपना आधा दुपट्टा मेरी चादर बनाया हुआ था और आधा मेरी तहबंद और अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! ये प्यारा अनस मेरा बेटा है, मैं इसे आपकी ख़िदमत के लिये लाई हूँ, आप इसके लिये दुआ फ़रमायें। तो आपने दुआ दी, 'ऐ अल्लाह! इसका माल और औलाद ज़्यादा कर।' हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! मेरे पास माल बहुत है और मेरी औलाद और मेरी औलाद की औलाद, आज सौ तक पहुँचते हैं।

حَدَّثَنِي أَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ، قَالَ جَاءَتْ بِي أُمِّي أُمُّ أَنَسٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقَدْ أَزَّرَتْنِي بِنِصْفِ خِمَارِهَا وَرَدَّتْنِي بِنِصْفِهِ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا أُنَيْسٌ ابْنِي أَتَيْتُكَ بِهِ يَخْدُمُكَ فَادْعُ اللَّهَ لَهُ . فَقَالَ " اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ " . قَالَ أَنَسٌ فَوَاللَّهِ إِنَّ مَالِي لَكَثِيرٌ وَإِنَّ وَلَدِي وَوَلَدَ وَلَدِي لَيَتَعَادُّونَ عَلَى نَحْوِ الْمِائَةِ الْيَوْمَ .

फ़ायदा : हज़रत अनस(रज़ि.) का बाग़ साल में दो बार फल लाता था और उसमें गुले रैहान था, जिससे कस्तूरी की ख़ुश्बू आती थी और उनकी सौ से ज़्यादा औलाद फ़ौत हो गई थी।

(6377) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) गुज़रे तो मेरी माँ, उम्मे सुलैम ने आपकी आवाज़ सुन ली। चुनाँचे अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप क़ुर्बान! प्यारा अनस। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरे हक़ में तीन दुआयें कीं, उनमें से दो मैं दुनिया में देख चुका हूँ और मैं तीसरी का आख़िरत में उम्मीदवार हूँ। (तिर्मिज़ी : 3827)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَعْفَرٌ، - يَعْنِي ابْنَ سُلَيْمَانَ - عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعَتْ أُمِّي أُمُّ سُلَيْمٍ صَوْتَهُ فَقَالَتْ بِأَبِي وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ أُنَيْسٌ . فَدَعَا لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثَلاَثَ دَعَوَاتٍ قَدْ رَأَيْتُ مِنْهَا اثْنَتَيْنِ فِي الدُّنْيَا وَأَنَا أَرْجُو الثَّالِثَةَ فِي الآخِرَةِ .

फ़ायदा : माल और औलाद की कसरत(ज़्यादा होने) की दुआयें, तवील(लम्बी) उम्र के साथ दुनिया में पूरी हुईं और मग़फ़िरत की दुआ का नतीजा आख़िरत में सामने आयेगा।

(6378) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, मेरे पास रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये, जबकि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था, आपने हमें सलाम कहा और मुझे एक ज़रूरत के लिये भेज दिया, इसलिये मुझे माँ के पास जाने में देर हो गई। जब मैं आया, माँ ने पूछा, तुझे किस चीज़ ने रोक लिया? मैंने जवाब दिया, मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने किसी काम के लिये भेज दिया था। उसने पूछा, आपका क्या काम था? मैंने कहा, वो एक राज़ है। माँ ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) का राज़ किसी को न बताना। हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे वो किसी को बताना होता तो ऐ साबित! तुम्हें बता देता।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ أَتَى عَلَىَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَنَا أَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ - قَالَ - فَسَلَّمَ عَلَيْنَا فَبَعَثَنِي إِلَى حَاجَةٍ فَأَبْطَأْتُ عَلَى أُمِّي فَلَمَّا جِئْتُ قَالَتْ مَا حَبَسَكَ قُلْتُ بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِحَاجَةٍ . قَالَتْ مَا حَاجَتُهُ قُلْتُ إِنَّهَا سِرٌّ . قَالَتْ لاَ تُحَدِّثَنَّ بِسِرِّ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحَدًا . قَالَ أَنَسٌ وَاللَّهِ لَوْ حَدَّثْتُ بِهِ أَحَدًا لَحَدَّثْتُكَ يَا ثَابِتُ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि कुछ राज़ इस क़द्र पोशीदा रखने वाले होते हैं कि उनके मरने के बाद भी ज़ाहिर नहीं किया जा सकता, इसलिये हज़रत अनस(रज़ि.) ने आपकी वफ़ात के बाद भी अपने शागिर्द साबित को आपके राज़ की इत्तिलाअ नहीं दी।

حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَارِمُ بْنُ الْفَضْلِ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ أَسَرَّ إِلَىَّ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سِرًّا فَمَا أَخْبَرْتُ بِهِ أَحَدًا بَعْدُ . وَلَقَدْ سَأَلَتْنِي عَنْهُ أُمُّ سُلَيْمٍ فَمَا أَخْبَرْتُهَا بِهِ.

(6379) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझसे एक राज़ की बात फ़रमाई तो मैंने आपके बाद किसी को वो नहीं बताई, मुझसे मेरी माँ उम्मे सुलैम ने उसके बारे में पूछा, तो मैंने वो राज़ उनको भी नहीं बताया।

(सहीह बुख़ारी : 6289)

باب مِنْ فَضَائِلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلاَمٍ رضى الله عنه

बाब 33 : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ، مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ لِحَىٍّ يَمْشِي أَنَّهُ فِي الْجَنَّةِ إِلاَّ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلاَمٍ .

(6380) हज़रत आ़मिर बिन सअ़द(रह.) बयान करते हैं, मैंने अपने बाप को ये बयान करते सुना कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से किसी ज़िन्दा चलते-फिरते शख़्स के बारे में अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के सिवा ये नहीं सुना कि वो जन्नती है।

(सहीह बुख़ारी : 3812)

फ़ायदा : हज़रत सअ़द(रज़ि.) जो ख़ुद अ़शर-ए-मुबश्शरह में से हैं, मैंने ये बात हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम की ज़िन्दगी में उस वक़्त कही, जब बाक़ी हज़रात जो हज़रत सअ़द के इल्म में थे, फ़ौत हो चुके थे या जिस उस्लूब और अन्दाज़ में ये बात अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के बारे में फ़रमाई थी वो अन्दाज़ किसी और के लिये इख़्तियार नहीं किया था। अ़शर-ए-मुबश्शरह में से सबसे आख़िर में हज़रत सअ़द(रज़ि.) और सईद(रज़ि.) फ़ौत हुए हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَوْنٍ،

(6381) क़ैस बिन अ़ब्बास(रह.) बयान करते हैं, मैं मदीना में कुछ लोगों में जिनमें से

कुछ नबी(ﷺ) के साथी थे, बैठा हुआ था। चुनाँचे एक आदमी आया, जिसके चेहरे पर फ़रौतनी(मिलनसारी) और आजिज़ी के असरात थे तो लोगों में से किसी ने कहा, ये जन्नती आदमी है, ये जन्नती आदमी है। आने वाले ने हल्की सी दो रकअतें पढ़ीं, फिर चला गया तो मैंने उसका पीछा किया, वो अपने घर में दाख़िल हो गया। मैं भी(इजाज़त लेकर) दाख़िल हो गया और हमने आपस में बातचीत की, जब वो मानूस हो गया मैंने उससे पूछा, जब आप पहले(मस्जिद में) दाख़िल हुए, एक आदमी ने ये-ये बात कही। उन्होंने कहा, सुब्हानअल्लाह! किसी के लिये ये ज़ेबा नहीं है कि ऐसी बात बयान करे, जिसका उसे इल्म नहीं है और मैं तुम्हें उसकी बात का अभी सबब बताता हूँ? मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में ख़्वाब देखा और वो मैंने आपको सुनाया। मैंने अपने आपको एक बाग़ीचे में देखा, उन्होंने उसकी वुस्अत उसकी घास और सरसब्ज़ी व शादाबी का तज़्किरा किया...। बाग़ीचे के दरम्यान एक लोहे का सुतून था, उसका निचला हिस्सा ज़मीन में गड़ा था और उसका ऊपर का हिस्सा आसमान में था और उसके ऊपर वाले हिस्से में एक कुण्डा था। सो मुझे कहा गया, चढ़िये! मैंने उसे कहा, ये मेरे बस में नहीं है। तो मेरे पास एक मिन्सफ़ आया। इब्ने औन कहते हैं, मिन्सफ़ ख़ादिम को कहते हैं। तो उसने पीछे से मेरे कपड़े उठाये, उन्होंने बताया, उसने पीछे से मुझे अपने हाथ से ऊपर उठाया,

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ، قَالَ كُنْتُ بِالْمَدِينَةِ فِي نَاسٍ فِيهِمْ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَجَاءَ رَجُلٌ فِي وَجْهِهِ أَثَرٌ مِنْ خُشُوعٍ فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ . فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ يَتَجَوَّزُ فِيهِمَا ثُمَّ خَرَجَ فَاتَّبَعْتُهُ فَدَخَلَ مَنْزِلَهُ وَدَخَلْتُ فَتَحَدَّثْنَا فَلَمَّا اسْتَأْنَسَ قُلْتُ لَهُ إِنَّكَ لَمَّا دَخَلْتَ قَبْلُ قَالَ رَجُلٌ كَذَا وَكَذَا قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ مَا يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَقُولَ مَا لاَ يَعْلَمُ وَسَأُحَدِّثُكَ لِمَ ذَاكَ رَأَيْتُ رُؤْيَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ رَأَيْتُنِي فِي رَوْضَةٍ - ذَكَرَ سَعَتَهَا وَعُشْبَهَا وَخُضْرَتَهَا - وَوَسْطَ الرَّوْضَةِ عَمُودٌ مِنْ حَدِيدٍ أَسْفَلُهُ فِي الأَرْضِ وَأَعْلاَهُ فِي السَّمَاءِ فِي أَعْلاَهُ عُرْوَةٌ . فَقِيلَ لِي ارْقَهْ . فَقُلْتُ لَهُ لاَ أَسْتَطِيعُ . فَجَاءَنِي مِنْصَفٌ - قَالَ ابْنُ عَوْنٍ وَالْمِنْصَفُ الْخَادِمُ - فَقَالَ بِثِيَابِي مِنْ خَلْفِي - وَصَفَ أَنَّهُ رَفَعَهُ مِنْ خَلْفِهِ بِيَدِهِ - فَرَقِيتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلَى الْعَمُودِ فَأَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ فَقِيلَ لِيَ اسْتَمْسِكْ . فَلَقَدِ اسْتَيْقَظْتُ وَإِنَّهَا لَفِي يَدِي

فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " تِلْكَ الرَّوْضَةُ الإِسْلاَمُ وَذَلِكَ الْعَمُودُ عَمُودُ الإِسْلاَمِ وَتِلْكَ الْعُرْوَةُ عُرْوَةُ الْوُثْقَى وَأَنْتَ عَلَى الإِسْلاَمِ حَتَّى تَمُوتَ " . قَالَ وَالرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلاَمٍ .

तो मैं चढ़ने लगा, यहाँ तक कि सुतून के ऊपर पहुँच गया और मैंने कुण्डा पकड़ लिया। मुझे कहा गया, इसे मज़बूती से पकड़ो, फिर मैं बेदार हो गया।' तो वो कुण्डा मेरे हाथ में था, मैंने ये ख़्वाब नबी(ﷺ) को सुनाया तो आपने फ़रमाया, 'वो बाग़ीचा इस्लाम है और वो सुतून इस्लाम का सुतून है और वो कुण्डा उ़र्वतिल वुस्क़ा(मज़बूत कुण्डा) है और तुम मौत तक इस्लाम पर क़ायम रहोगे और वो आदमी अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम(रज़ि.) थे।
(सहीह बुख़ारी : 3813, 7010)

मुफ़रदातुल हदीस़ : मा यम्बग़ी लिअहदिन अंय्यक़ू-ल मा ला यअ़लमु : किसी को कोई बात बिला सनद व दलील नहीं करनी चाहिये, उन्होंने तुझे ये तो बता दिया कि ये जन्नती है, लेकिन इसकी दलील और सनद बयान नहीं की। इसलिये मैं तुम्हें इसका सबब और पसे मन्ज़र बताता हूँ, ताकि तुम बात दलील से कर सको।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَبَلَةَ بْنِ أَبِي رَوَّادٍ، حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ قَالَ قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ كُنْتُ فِي حَلْقَةٍ فِيهَا سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ وَابْنُ عُمَرَ فَمَرَّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلاَمٍ فَقَالُوا هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ . فَقُمْتُ فَقُلْتُ لَهُ إِنَّهُمْ قَالُوا كَذَا وَكَذَا . قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَهُمْ أَنْ يَقُولُوا مَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ إِنَّمَا رَأَيْتُ كَأَنَّ عَمُودًا وُضِعَ فِي رَوْضَةٍ خَضْرَاءَ فَنُصِبَ فِيهَا وَفِي رَأْسِهَا عُرْوَةٌ وَفِي أَسْفَلِهَا

(6382) क़ैस बिन उ़बाद(रह.) बयान करते हैं, मैं एक मज्लिस में था, जिसमें हज़रत सअ़द बिन मालिक और इब्ने उ़मर(रज़ि.) भी मौजूद थे तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम गुज़रे, चुनाँचे लोगों ने कहा, ये जन्नती आदमी है। तो मैं उठ खड़ा हुआ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से कहा, उन लोगों ने ये-ये बात कही है। उन्होंने कहा, सुब्हानअल्लाह! उनके लिये मुनासिब न था कि ऐसी बात कहते, जिसकी उनके पास सनद या दलील नहीं है। हक़ीक़त ये है, मैंने देखा, गोया कि एक सुतून एक सर-सब्ज़ व शादाब बाग़ीचे में रख दिया गया है, फिर उसे

مِنْصَفٌ - وَالْمِنْصَفُ الْوَصِيفُ - فَقِيلَ لِيَ ارْقَهْ . فَرَقِيتُ حَتَّى أَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ فَقَصَصْتُهَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَمُوتُ عَبْدُ اللَّهِ وَهُوَ آخِذٌ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى " .

उसमें गाड़ दिया गया और उसके सिरे पर एक कुण्डा है और उसके दामन में एक ख़ादिम है, मिन्सफ़ वसीफ़(ख़ादिम) को कहते हैं। मुझे कहा गया, चढ़िये! तो मैं चढ़ने लगा, यहाँ तक कि मैंने कुण्डा पकड़ लिया, मैंने ये ख़्वाब रसूलुल्लाह(ﷺ) को सुनाया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अब्दुल्लाह इस हाल में फ़ौत होगा कि वो(दीन के या ईमान के) मज़बूत कुण्डे को पकड़े हुए होगा।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُسْهِرٍ، عَنْ خَرَشَةَ بْنِ الْحُرِّ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا فِي حَلْقَةٍ فِي مَسْجِدِ الْمَدِينَةِ - قَالَ - وَفِيهَا شَيْخٌ حَسَنُ الْهَيْئَةِ وَهُوَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلاَمٍ - قَالَ - فَجَعَلَ يُحَدِّثُهُمْ حَدِيثًا حَسَنًا - قَالَ - فَلَمَّا قَامَ قَالَ الْقَوْمُ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا . قَالَ فَقُلْتُ وَاللَّهِ لأَتْبَعَنَّهُ فَلأَعْلَمَنَّ مَكَانَ بَيْتِهِ . قَالَ فَتَبِعْتُهُ فَانْطَلَقَ حَتَّى كَادَ أَنْ يَخْرُجَ مِنَ الْمَدِينَةِ ثُمَّ دَخَلَ مَنْزِلَهُ - قَالَ - فَاسْتَأْذَنْتُ عَلَيْهِ فَأَذِنَ لِي فَقَالَ مَا حَاجَتُكَ يَا ابْنَ أَخِي قَالَ فَقُلْتُ لَهُ سَمِعْتُ الْقَوْمَ يَقُولُونَ لَكَ لَمَّا قُمْتَ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ

(6383) ख़रशा बिन हुर्र(रह.) बयान करते हैं, मैं मदीना की मस्जिद में एक हल्क़े में बैठा हुआ था और उसमें एक अच्छी शक्ल व सूरत वाला बूढ़ा बैठा था और वो अब्दुल्लाह बिन सलाम(रज़ि.) थे। चुनाँचे वो उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने लगे, जब वो उठ कर चले गये, लोगों ने कहा, जिसे ये बात अच्छी लगे कि वो एक जन्नती आदमी को देखे तो वो इसको देख ले। तो मैंने दिल में कहा, अल्लाह की क़सम! मैं ज़रूर इनका पीछा करूँगा और इनके घर की जगह देखकर रहूँगा। तो मैंने उनका पीछा किया, वो चलते रहे, यहाँ तक कि क़रीब था कि मदीना से बाहर निकल जायें। फिर वो अपने घर में दाख़िल हो गये। सो मैंने उनसे हाज़िरी की इजाज़त माँगी और उन्होंने मुझे इजाज़त दे दी और पूछा, ऐ भतीजे! तेरी क्या ज़रूरत है? तो मैंने उनसे कहा, जब आप उठ खड़े हुए, मैंने लोगों से आपके बारे में ये सुना, जिसे ये पसंद हो कि वो जन्नती आदमी देखे तो वो इसको देख ले, इसलिये मुझे अच्छा

الْجَنَّةِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا . فَأَعْجَبَنِي أَنْ أَكُونَ مَعَكَ قَالَ اللَّهُ أَعْلَمُ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ وَسَأُحَدِّثُكَ مِمَّ قَالُوا ذَاكَ إِنِّي بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ أَتَانِي رَجُلٌ فَقَالَ لِي قُمْ . فَأَخَذَ بِيَدِي فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ - قَالَ - فَإِذَا أَنَا بِجَوَادَّ عَنْ شِمَالِي - قَالَ - فَأَخَذْتُ لآخُذَ فِيهَا فَقَالَ لِي لاَ تَأْخُذْ فِيهَا فَإِنَّهَا طُرُقُ أَصْحَابِ الشِّمَالِ - قَالَ - فَإِذَا جَوَادُّ مَنْهَجٌ عَلَى يَمِينِي فَقَالَ لِي خُذْ هَا هُنَا . فَأَتَى بِي جَبَلاً فَقَالَ لِي اصْعَدْ - قَالَ - فَجَعَلْتُ إِذَا أَرَدْتُ أَنْ أَصْعَدَ خَرَرْتُ عَلَى اسْتِي - قَالَ - حَتَّى فَعَلْتُ ذَلِكَ مِرَارًا - قَالَ - ثُمَّ انْطَلَقَ بِي حَتَّى أَتَى بِي عَمُودًا رَأْسُهُ فِي السَّمَاءِ وَأَسْفَلُهُ فِي الأَرْضِ فِي أَعْلاَهُ حَلْقَةٌ فَقَالَ لِيَ . اصْعَدْ فَوْقَ هَذَا . قَالَ قُلْتُ كَيْفَ أَصْعَدُ هَذَا وَرَأْسُهُ فِي السَّمَاءِ - قَالَ - فَأَخَذَ بِيَدِي فَزَجَلَ بِي - قَالَ - فَإِذَا أَنَا مُتَعَلِّقٌ بِالْحَلْقَةِ - قَالَ - ثُمَّ ضَرَبَ الْعَمُودَ فَخَرَّ - قَالَ - وَبَقِيتُ مُتَعَلِّقًا بِالْحَلْقَةِ حَتَّى أَصْبَحْتُ - قَالَ - فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ فَقَالَ " أَمَّا الطُّرُقُ الَّتِي رَأَيْتَ عَنْ يَسَارِكَ فَهِيَ طُرُقُ أَصْحَابِ الشِّمَالِ - قَالَ - وَأَمَّا الطُّرُقُ

मालूम हुआ कि आपके साथ कुछ वक़्त गुज़ारूँ। उन्होंने कहा, जन्नतियों को तो अल्लाह ही ख़ूब जानता है और मैं तुम्हें अभी बताता हूँ, उन्होंने ये बात क्यों कही? जबकि मैं सोया हुआ था, तो मेरे पास एक आदमी आया और मुझे कहने लगा, उठो! उसने मेरा हाथ पकड़ लिया तो मैं उसके साथ चल पड़ा। अचानक मैंने अपने बायें हाथ एक खुला रास्ता देखा, तो मैं उसमें चलने लगा। चुनाँचे उसने मुझे कहा, इस रास्ते में न चलो, ये तो बायें वालों के रास्ते हैं। अचानक मैंने देखा, एक खुला सीधा रास्ता मेरे दायें तरफ़ है। सो उसने मुझे कहा, इस रास्ते को इख़्तियार करो। तो वो मुझे एक पहाड़ के पास ले आया तो उसने मुझे कहा, चढ़ो! तो जब मैं चढ़ने का इरादा करता, अपनी सुरीन के बल गिर पड़ता, यहाँ तक कि मैंने ये काम कई बार किया। फिर वो मुझे लेकर चल पड़ा, यहाँ तक कि मुझे एक सुतून के पास ले आया। उसकी चोटी आसमान में थी और उसका निचला हिस्सा ज़मीन में था, उसके ऊपर के हिस्से में एक हल्क़ा(कुण्डा) था, चुनाँचे उसने मुझे कहा, इस पर चढ़ जाओ! मैंने कहा, मैं इस पर कैसे चढ़ जाऊँ? जबकि इसकी चोटी आसमान में है। तो उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे ऊपर फेंक दिया। अचानक मैं देखता हूँ कि मैं कुण्डे से लटका हुआ हूँ। फिर उसने सुतून पर चोट लगाई तो वो गिर गया और मैं कुण्डे के साथ चिमटा रहा, यहाँ तक कि सुबह हो गई। चुनाँचे मैं नबी(ﷺ) की ख़िदमत

الَّتِي رَأَيْتَ عَنْ يَمِينِكَ فَهِيَ طُرُقُ أَصْحَابِ الْيَمِينِ وَأَمَّا الْجَبَلُ فَهُوَ مَنْزِلُ الشُّهَدَاءِ وَلَنْ تَنَالَهُ وَأَمَّا الْعَمُودُ فَهُوَ عَمُودُ الإِسْلاَمِ وَأَمَّا الْعُرْوَةُ فَهِيَ عُرْوَةُ الإِسْلاَمِ وَلَنْ تَزَالَ مُتَمَسِّكًا بِهَا حَتَّى تَمُوتَ " .

में हाज़िर हुआ और आपको ख़्वाब सुनाया तो आपने फ़रमाया, 'रहे वो रास्ते जो तूने अपने बायें हाथ देखे थे तो वो बायें हाथ वालों(दोज़ख़ियों) के रास्ते थे और रहे वो रास्ते जो तूने अपनी दायें जानिब देखे, वो दायें हाथ वालों(जन्नतियों) के रास्ते थे। रहा पहाड़, वो शहीदों का घर है और तू उसे हासिल नहीं कर सकेगा(शहीद नहीं होगे) और रहा अ़मूद, तो वो इस्लाम का सुतून है। रहा कुण्डा, तो वो इस्लाम का कुण्डा है और तू उसे हमेशा मज़बूती से पकड़े रखेगा, यहाँ तक कि फ़ौत हो जायेगा।'

(इब्ने माजह : 3920)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) जवादुन : जाद्दह की जमा है, दाल पर तशदीद है, शाह राहे आ़म, वो खुली राह जिस पर लोग चलते हों।**(2) जवादुन, मन्हजुन :** शाह राहे आ़म जो मुस्तक़ीम और सीधी हो। क्योंकि नहज सीधे रास्ते को कहते हैं। खुला, वाज़ेह और सीधा रास्ता।**(3) ज़ज-ल बी :** मुझे फेंक दिया, यानी ऊपर चढ़ा दिया।

باب فَضَائِلِ حَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ رضى الله عنه

बाब 34 : हज़रत हस्सान बिन स़ाबित(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، كُلُّهُمْ عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ عُمَرَ، مَرَّ بِحَسَّانَ وَهُوَ يُنْشِدُ الشِّعْرَ فِي الْمَسْجِدِ فَلَحَظَ إِلَيْهِ فَقَالَ قَدْ

(6384) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर(रज़ि.), हज़रत हस्सान(रज़ि.) के पास से गुज़रे, जबकि वो मस्जिद में शेअ़र पढ़ रहे थे तो उन्होंने घूर कर देखा तो हज़रत हस्सान(रज़ि.) ने कहा, मैं मस्जिद में उस वक़्त शेअ़र पढ़ा करता था, जबकि इसमें वो शख़्सियत मौजूद होती थी,

كُنْتُ أُنْشِدُ وَفِيهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ . ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ أَنْشُدُكَ اللَّهَ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " أَجِبْ عَنِّي اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ " . قَالَ اللَّهُمَّ نَعَمْ .

जो तुमसे बेहतरीन है। फिर वो हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या तूने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'मेरी तरफ़ से जवाब दीजिये! ऐ अल्लाह! इसकी रूहुल कुदुस से ताईद फ़रमाना।' अबू हुरैरह(रज़ि.) ने जवाब दिया, अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूँ, हाँ!

(सहीह बुख़ारी : 3212, 8152, अबू दाऊद : 5013, 5014, नसाई : 3402)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) लह-ज़ इलैह : उन्हें गुस्से से देखा, गोया चुप हो जाने का इशारा किया।**(2) व फ़ीहि ख़ैरुम्-मिन्क :** जबकि इसमें तुमसे बेहतर शख़्स रसूलुल्लाह(ﷺ) मौजूद थे।**(3) अजिब् अन्नी :** काफ़िरों की बातों और हिजू(बुरी वाणियों) का मेरी तरफ़ से जवाब दो, जिससे स़ाबित हुआ रसूलुल्लाह(ﷺ) की तौसीफ़ व तारीफ़, काफ़िरों की तर्दीद और इस्लाम की तब्लीग़ व दिफ़ाअ पर मुश्तमिल अश्आर मस्जिद में पढ़ना जाइज़ है।

حَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ حَسَّانَ، قَالَ فِي حَلْقَةٍ فِيهِمْ أَبُو هُرَيْرَةَ أَنْشُدُكَ اللَّهَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ مِثْلَهُ .

(6385) हज़रत इब्ने मुसय्यब(रह.) से रिवायत है कि हज़रत हस्सान(रज़ि.) ने उस मज्लिस में जिसमें हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) मौजूद थे, कहा, मैं तुमसे ऐ अबू हुरैरह! अल्लाह के नाम से सवाल करता हूँ, क्या तूने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये सुना है, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ حَسَّانَ بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ، يَسْتَشْهِدُ

(6386) अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान(रह.) बयान करते हैं कि उसने हज़रत हस्सान बिन स़ाबित अन्सारी(रज़ि.) से सुना, वो हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से गवाही तलब कर रहे थे, मैं तुम्हें अल्लाह की

क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तूने नबी(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'ऐ हस्सान! रसूलुल्लाह की तरफ़ से जवाब दे, ऐ अल्लाह! इसकी रूहुल क़ुदुस से ताईद फ़रमा।' हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने कहा, हाँ!

أَبَا هُرَيْرَةَ أَنْشُدُكَ اللَّهَ هَلْ سَمِعْتَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يَا حَسَّانُ أَجِبْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ نَعَمْ .

(6387) हज़रत बराअ बिन आज़िब(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को हज़रत हस्सान बिन साबित(रज़ि.) से ये फ़रमाते सुना, 'उनकी हिजू या मज़म्मत करो, जिब्रईल भी तेरे साथ है।'
(सहीह बुख़ारी : 6153, 3123, 4123)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، - وَهُوَ ابْنُ ثَابِتٍ - قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ " اهْجُهُمْ أَوْ هَاجِهِمْ وَجِبْرِيلُ مَعَكَ " .

(6388) इमाम साहब ये रिवायत अपने तीन और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6389) हज़रत हिशाम(रह.) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हज़रत हस्सान बिन साबित(रज़ि.) उन लोगों में से थे, जिन्होंने हज़रत आइशा(रज़ि.) पर बहुत इल्ज़ाम तराशी की तो मैंने उन्हें बुरा-भला कहा। तो हज़रत आइशा(रज़ि.) ने फ़रमाया, ऐ मेरे भान्जे! इसे कुछ न कहो, क्योंकि वो रसूलुल्लाह(ﷺ) का दिफ़ाअ किया करते थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ حَسَّانَ بْنَ ثَابِتٍ، كَانَ مِمَّنْ كَثَّرَ عَلَى عَائِشَةَ فَسَبَبْتُهُ فَقَالَتْ يَا ابْنَ أُخْتِي دَعْهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) कस्स-र अला आइशह : हज़रत आइशा को बहुत कुछ कहा, उनको ख़ूब निशाना बनाया, यानी वाक़िय-ए-इफ़्क में हिस्सा लिया।**(2) युनाफ़िहु :** वो दिफ़ाअ करते थे, आपकी तरफ़ से शेअरी हमला करते थे।

حَدَّثَنَاهُ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6390) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 4145, 3531, 6150)

حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ وَعِنْدَهَا حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ يُنْشِدُهَا شِعْرًا يُشَبِّبُ بِأَبْيَاتٍ لَهُ فَقَالَ حَصَانٌ رَزَانٌ مَا تُزَنُّ بِرِيبَةٍ وَتُصْبِحُ غَرْثَى مِنْ لُحُومِ الْغَوَافِلِ فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ لَكِنَّكَ لَسْتَ كَذَلِكَ . قَالَ مَسْرُوقٌ فَقُلْتُ لَهَا لِمَ تَأْذَنِينَ لَهُ يَدْخُلُ عَلَيْكِ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ { وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ} فَقَالَتْ فَأَىُّ عَذَابٍ أَشَدُّ مِنَ الْعَمَى إِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ أَوْ يُهَاجِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(6391) इमाम मसरूक़(रह.) बयान करते हैं, मैं हज़रत आइशा(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनके पास हज़रत हस्सान बिन साबित(रज़ि.) उन्हें अपना शेअर सुना रहे थे, अपने शेअरों की शुरूआत में उन्होंने शेअर कहा, 'पाकदामन, अक़्लमंद और मतीन हैं, उन पर किसी ऐब की इल्ज़ाम तराशी नहीं की जा सकती, वो ग़ाफ़िल औरतों की गोश्त ख़ोरी से भूखी रहती हैं।' तो हज़रत आइशा(रज़ि.) ने उन्हें कहा, लेकिन आप तो ऐसे नहीं हैं(ग़ीबत करते हैं)। मसरूक़ कहते हैं, मैंने हज़रत आइशा(रज़ि.) से कहा, आप उसे अपने पास आने की इजाज़त क्यों देती हैं? हालांकि अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'उनमें से जिसने इसमें(इफ़्क में) ज़्यादा हिस्सा लिया, उसके लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।' तो हज़रत आइशा(रज़ि.) मे जवाब दिया, अन्धे होने से बढ़कर अज़ाब कौनसा है? ये रसूलुल्लाह(ﷺ) का दिफ़ाअ करते थे या आपकी तरफ़ से काफ़िरों की हिजू करते थे।

(सहीह बुख़ारी,: 4146, 4755, 4756)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) युशब्बिबु : औरत के महासिन और कमालात से अश्आर की शुरूआत करना।**(2) हसानुन :** अफ़ीफ़ा और पाकदामन हैं, नज़रे बद से महफ़ूज़ हैं।**(3) अज़ानुन :** अक़्लमंद और बावक़ार हैं।**(4) मा तुज़न्नु :** इल्ज़ाम तराशी नहीं की जा सकती।**(5) रीबह :** बेहयाई, बदकारी, शक व शुब्हा।**(6) तुस्बिहु ग़रसा :** ग़रस़, भूख, पेट का ख़ाली होना, यानी वो पाकदामन

औरतों की ग़ीबत नहीं करती।(7) **लाकिन्न-क लस्ता कज़ालिक :** लेकिन तू तो ऐसा नहीं है तूने तो मेरी ग़ीबत की है और मुझ पर इल्ज़ाम तराशी में हिस्सा लिया है और दावा ये करते हैं, उन पर इल्ज़ाम तराशी नहीं हो सकती, लेकिन हज़रत हस्सान(रज़ि.) उस इल्ज़ाम तराशी से इंकार करते थे कि मैंने आप पर बोहतान नहीं बांधा। लोगों ने ख़्वाह-मख़्वाह मुझे उसमें मुलव्विस कर दिया है और उसको शोहरत दी है। हज़रत आइशा(रज़ि.) की मदह में जो अश्आर कहे थे, उनमें ये भी हैं, फ़इन कुन्तु क़द कुल्तुल्लज़ी ज़अमू लकुम, फ़ला रफ़अतु सौती इलय्या अना मिली, अगर वो बात मैंने कही है, जो आपको बताई गई है तो मेरे हाथ की उंगलियाँ, मुझे मेरा कोड़ा न पकड़ा सकें।(8) **वकै-फ़ ववुद्दी मा जबैतु व नुस्रती लिआलि रसूलिल्लाह, जैनिल महाफ़िल :** मैं ये क्योंकर कह सकता हूँ, जबकिं मेरी मौत और मेरी नुसरत ताहयात, रसूलुल्लाह(ﷺ) की आल के लिये है, जो मज्लिसों की ज़ीनत है।(9) **फ़इन्नल्लज़ी क़द क़ी-ल लै-स बिलाइतिन वलाकिन्नहू क़ौलुम्रिइम्-बी मा हिल्लुन :** क्योंकि जो कुछ कहा गया है वो उनसे चिपकने वाला या उन पर चस्पाँ होने वाला नहीं है, लेकिन वो ऐसे आदमी का क़ौल है, जो मेरी चुग़ली खाने वाला है। इन अश्आर से महसूस होता है कि हज़रत हस्सान ने इल्ज़ाम तराशी में हिस्सा नहीं लिया, लेकिन उनको इसमें मुलव्विस किया गया है।(10) **वक़द क़ालल्लाहु वल्लज़ी तवल्ला किब्रहू :** वाक़िया-ए-इफ़्क को हवा देने वाला और उसे घड़ने वाला, अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ था और हज़रत मसरूक़ के ख़्याल में हज़रत हस्सान ने उसकी तक्ज़ीब नहीं की, बल्कि तस्दीक़ की, इसलिये वो भी इस आयत का मिस्दाक़ ठहरे और हज़रत आइशा(रज़ि.) का क़ौल है, 'अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ही इसकी कुरेद करता था और इसको जमा करता था और उसने ही सबसे बढ़कर हिस्सा लिया और उसका बड़ा हिस्सेदार है।'(बुख़ारी शरीफ़ : 7457)

चूंकि हज़रत आइशा(रज़ि.) मशहूर क़ौल से मुतास्सिर थीं, इसलिये उन्होंने हज़रत हस्सान की बीनाई ख़त्म होने को, इस वाक़िये की सज़ा क़रार दिया। लेकिन अल्लामा इब्ने असीर जज़री ने उस्दुल ग़ाबह जिल्द 2 पेज नं. 76 पर लिखा है कि हज़रत आइशा(रज़ि.) ने आख़िर में हज़रत हस्सान का बात तस्लीम कर ली थी और उनको तोहमत लगाने से बरी क़रार दिया था।

(6392) इमाम साहब ये रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें युनाफ़िहु की जगह यज़ुब्बु(दिफ़ाअ करना) है और हसानुन रज़ानुन पाकदामन, अक़्लमंद का ज़िक्र नहीं किया।

حَدَّثَنَاهُ ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ قَالَتْ كَانَ يَذُبُّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَلَمْ يَذْكُرْ حَصَانٌ رَزَانٌ .

(6393) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, हज़रत हस्सान ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे अबू सुफ़ियान के बारे में इजाज़त दें। आपने फ़रमाया, 'उसके साथ जो मेरी रिश्तेदारी है, उसका क्या करोगे?' उसने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको इज़्ज़त बख़्शी! मैं आपको उनसे इस तरह निकाल लूँगा, जिस तरह गुन्धे हुए आटे से बाल निकाल लिया जाता है। फिर हज़रत अस्सान ने ये क़सीदा कहा, जिसकी शुरूआत यूँ है, 'बुज़ुर्गी और शराफ़त, आले हाशिम से मख़्ज़ूम की औलाद को हासिल है और तेरा बाप तो गुलाम है।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ حَسَّانُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ائْذَنْ لِي فِي أَبِي سُفْيَانَ قَالَ " كَيْفَ بِقَرَابَتِي مِنْهُ " . قَالَ وَالَّذِي أَكْرَمَكَ لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعَرَةُ مِنَ الْخَمِيرِ . فَقَالَ حَسَّانُ وَإِنَّ سَنَامَ الْمَجْدِ مِنْ آلِ هَاشِمٍ بَنُو بِنْتِ مَخْزُومٍ وَوَالِدُكَ الْعَبْدُ قَصِيدَتَهُ هَذِهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : सनामल मज्द : बुजुर्गी और इज़्ज़त की कोहान, यानी रिफ़अत व बुलंदी।

फ़ायदा : आपका चचाज़ाद अबू सुफ़ियान बिन हारिस़ इस्लाम लाने से पहले आपकी हिजू करता था,(बुरा भला कहता था) इसलिये हज़रत हस्सान ने उसकी हिजू और मज़म्मत करने की इजाज़त तलब की तो आपने फ़रमाया, वो मेरा क़रीबी अज़ीज़ है, हम दोनों का दादा एक है, उसकी हिजू की सूरत में मेरी भी मज़म्मत होगी। तो हज़रत हस्सान(रज़ि.) ने कहा, आपकी मज़म्मत नहीं होगी और बिन्ते मख़्ज़ूम से मुराद अब्दुल्लाह, जुबैर और अबू तालिब की माँ, फ़ातिमा बिन्ते अम्र बिन आइज़ बिन इमरान बिन मख़्ज़ूम है और अबू सुफ़ियान की दादी सुमय्या बिन्ते मौहिब है और मौहिब, अब्दे मुनाफ़ की औलाद का गुलाम था।

(6394) इमाम साहब एक और उस्ताद से नक़ल करते हैं, हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि हज़रत हस्सान बिन स़ाबित(रज़ि.) ने नबी(ﷺ) की तरफ़ से मुश्रिकों की हिजू की इजाज़त माँगी, अबू सुफ़ियान का नाम नहीं लिया और ख़मीर की जगह अजीन कहा(मानी दोनों का एक ही है)।
(सहीह बुख़ारी : 4145, 3531)

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَتِ اسْتَأْذَنَ حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ . وَلَمْ يَذْكُرْ أَبَا سُفْيَانَ وَقَالَ بَدَلَ الْخَمِيرِ الْعَجِينِ .

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " اهْجُوا قُرَيْشًا فَإِنَّهُ أَشَدُّ عَلَيْهَا مِنْ رَشْقٍ بِالنَّبْلِ " . فَأَرْسَلَ إِلَى ابْنِ رَوَاحَةَ فَقَالَ " اهْجُهُمْ " . فَهَجَاهُمْ فَلَمْ يُرْضِ فَأَرْسَلَ إِلَى كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى حَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ قَالَ حَسَّانُ قَدْ آنَ لَكُمْ أَنْ تُرْسِلُوا إِلَى هَذَا الأَسَدِ الضَّارِبِ بِذَنَبِهِ ثُمَّ أَدْلَعَ لِسَانَهُ فَجَعَلَ يُحَرِّكُهُ فَقَالَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لأَفْرِيَنَّهُمْ بِلِسَانِي فَرْىَ الأَدِيمِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَعْجَلْ فَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ أَعْلَمُ قُرَيْشٍ بِأَنْسَابِهَا - وَإِنَّ لِي فِيهِمْ نَسَبًا - حَتَّى يُلَخِّصَ لَكَ نَسَبِي " . فَأَتَاهُ حَسَّانُ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ لَخَّصَ لِي نَسَبَكَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لأَسُلَّنَّكَ

(6395) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरैश की हिजू करो, क्योंकि ये उन पर तीरों की बोछाड़ से भी ज़्यादा शाक़ गुज़रती है।' चुनाँचे आपने इब्ने रवाहा को पैग़ाम भेजा और फ़रमाया, 'उनकी हिजू कर।' उसने उनकी हिजू की लेकिन आपको पसंद न आई। फिर हज़रत कअब बिन मालिक(रज़ि.) की तरफ़ पैग़ाम भेजा। फिर हज़रत हस्सान बिन साबित(रज़ि.) की तरफ़ पैग़ाम भेजा। जब वो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो कहने लगे, अब तुम्हारे लिये वो वक़्त आ गया है कि उस शेर की तरफ़ पैग़ाम भेजो, जो अपनी दुम मारता है। फिर अपनी ज़बान मुँह से निकाली और उसको हिलाने लगे और अर्ज़ की, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! मैं उनको अपनी ज़बान से इस तरह चीर डालूँगा, जिस तरह चमड़ा चीरा जाता है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जल्दी न करो, अबू बकर क़ुरैश के नसब को सब क़ुरैशियों से ज़्यादा जानते हैं और मेरा नसब भी उन्ही में है, उनसे मेरा नसब अलग करवा लो।' चुनाँचे हस्सान, अबू बकर के पास आये, फिर वापस जाकर कहने लगे, अबू बकर ने आपका नसब, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे अलग कर दिया है, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! मैं आपको उनसे इस तरह निकाल लूँगा जिस तरह आटे से बाल निकाल

लिया जाता है। हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को हज़रत हस्सान को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जब तक तुम अल्लाह और उसके रसूल का दिफ़ाअ करते रहोगे, रूहुल क़ुदुस तुम्हारी ताईद करता रहेगा।' और मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'हस्सान ने उनकी हिजू की, मुसलमानों की तशफ़्फ़ी कर दी और अपनी भी तसल्ली कर ली।' हज़रत हस्सान ने कहा,

(1) तूने मुहम्मद(ﷺ) की हिजू की तो मैंने उनकी तरफ़ से जवाब दिया और उसका बदला अल्लाह ही के पास है।

(2) तूने मुहम्मद(ﷺ) की हिजू की जो इताअ़त शआर और परहेज़गार हैं, अल्लाह के रसूल हैं और उनकी आदत वफ़ा करना है।

(3) बिला शुब्हा, मेरा बाप और उसका बाप और मेरी आबरू, तुमसे मुहम्मद(ﷺ) की इज़्ज़त के लिये ढाल है।

(4) मैं अपने आपको गुम पाऊँ, अगर तुम घोड़ों को कुदा के दोनों अतराफ़ से गर्दो-ग़ुबार उड़ाते न पाओ।

(5) वो घोड़े जो क़ुव्वत व सलाबत में मज़बूत लगामों का मुक़ाबला करते हैं, तुम्हारी तरफ़ चढ़ रहे होंगे, उनके कन्धों पर प्यासे बारीक नेज़े होंगे।

(6) हमारे घोड़े तेज़ी से दौड़ रहे होंगे, उनकी इज़्ज़त व मुहब्बत से औरतें अपने दुपट्टों से उनसे गर्दो-ग़ुबार साफ़ करेंगी या दुश्मन की

مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعَرَةُ مِنَ الْعَجِينِ . قَالَتْ عَائِشَةُ فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ لِحَسَّانَ " إِنَّ رُوحَ الْقُدُسِ لاَ يَزَالُ يُؤَيِّدُكَ مَا نَافَحْتَ عَنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ " . وَقَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " هَجَاهُمْ حَسَّانُ فَشَفَى وَاشْتَفَى " . قَالَ حَسَّانُ هَجَوْتَ مُحَمَّدًا فَأَجَبْتُ عَنْهُ وَعِنْدَ اللَّهِ فِي ذَاكَ الْجَزَاءُ هَجَوْتَ مُحَمَّدًا بَرًّا تَقِيًّا رَسُولَ اللَّهِ شِيمَتُهُ الْوَفَاءُ فَإِنَّ أَبِي وَوَالِدَهُ وَعِرْضِي لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ ثَكِلْتُ بُنَيَّتِي إِنْ لَمْ تَرَوْهَا تُثِيرُ النَّقْعَ مِنْ كَنَفَىْ كَدَاءِ يُبَارِينَ الأَعِنَّةَ مُصْعِدَاتٍ عَلَى أَكْتَافِهَا الأَسَلُ الظِّمَاءُ تَظَلُّ جِيَادُنَا مُتَمَطِّرَاتٍ تُلَطِّمُهُنَّ بِالْخُمُرِ النِّسَاءُ فَإِنْ أَعْرَضْتُمُو عَنَّا اعْتَمَرْنَا وَكَانَ الْفَتْحُ وَانْكَشَفَ الْغِطَاءُ وَإِلاَّ فَاصْبِرُوا لِضِرَابِ يَوْمٍ يُعِزُّ اللَّهُ فِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَقَالَ اللَّهُ قَدْ أَرْسَلْتُ عَبْدًا يَقُولُ الْحَقَّ لَيْسَ بِهِ خَفَاءُ وَقَالَ اللَّهُ قَدْ يَسَّرْتُ جُنْدًا هُمُ الأَنْصَارُ عُرْضَتُهَا اللِّقَاءُ لَنَا فِي كُلِّ يَوْمٍ

مِنْ مَعَدٍّ سِبَابٌ أَوْ قِتَالٌ أَوْ هِجَاءُ فَمَنْ يَهْجُو رَسُولَ اللّٰهِ مِنْكُمْ وَيَمْدَحُهُ وَيَنْصُرُهُ سَوَاءُ وَجِبْرِيلٌ رَسُولُ اللّٰهِ فِينَا وَرُوحُ الْقُدْسِ لَيْسَ لَهُ كِفَاءُ.

औरतें अपने दुपट्टों से उनको मोड़ने की कोशिश करेंगी।

(7) सो अगर तुम हमारे सामने से हट जाओ, हम उमरह कर लेंगे, फ़तह हासिल हो जायेगी और पर्दा उठ जायेगा।

(8) वरना उस दिन की मार का इन्तिज़ार करो, जिस दिन अल्लाह जिसको चाहेगा, इज़्ज़त बख़्शेगा।

(9) अल्लाह का फ़रमान है, मैंने एक बन्दा भेजा है, जो हक़ कहता है और उसमें कोई पोशीदगी नहीं है।

(10) अल्लाह फ़रमाता है, मैंने एक लश्कर तैयार किया है, वो अन्सार हैं, उनका मक़सद टकराना है।

(11) हम अन्सार के लिये हर दिन दौरे कुरैश की तरफ़ से, गाली-गलोच, लड़ाई का हिजू का है।

(12) सो तुममें से जो रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिजू करे और आपकी तारीफ़ करे और आपकी मदद करे, सब बराबर हैं।

(13) जिब्रईल अल्लाह के रसूल, हममें हैं और रूहुल क़ुदुस का कोई हम पल्ला नहीं है।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) रश्क़ुन बिन्नब्ल : तीर अन्दाज़ी, तीर मारना। रश्क़ुन : तीरों की बोछार, उस दौर में अश्आर एक इन्तिहाई मुअस्सिर(कारगर) ज़रिया थे। लोग उनसे बहुत मुतास्सिर होते थे और मुश्रिकीने मक्का भी इस हरबे से काम लेते थे, इसलिये जवाबी तौर पर इसी अस्लहे से काम लिया गया, जिस तरह आज-कल काफ़िर इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ प्रिण्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से काम ले रहे हैं, लेकिन मुसलमान बद क़िस्मती से इस हथियार से जवाबी हमले से ग़ाफ़िल हैं, हालांकि अपना दिफ़ाअ उम्मत का फ़रीज़ा है।**(2) अज़्ज़ारिब बिज़म्बिही :** शेर ग़ैज़ो-ग़ज़ब की

हालत में अपने जिस्म के दोनों तरफ़ अपनी दुम मारता है तो हज़रत हस्सान ने, अपने आपको शेर से तश्बीह देते हुए, अपनी ज़बान को दुम से तश्बीह दी, इसलिये अद्लअ़ लिसानहू : अपनी ज़बान मुँह से निकालकर उसको हिलाया और कहा, लउफ़्रियन्नहुम बिलिसानी : मैं उनकी इ़ज़्ज़त व नामूस को अपनी ज़बान से चीर-फाड़ डालूँगा।(3) **फ़र्यल अदीम :** जिस तरह रन्बी से चमड़े को छील दिया जाता है और चीरा-फाड़ा जाता है।(4) **बर्रुन** : इताअ़त शआ़र, एहसान करने वाला। तक़िय्य की जगह अगर हनीफ़न हो तो मानी होगा, यकसू, हर तरफ़ से कट कर अल्लाह का हो जाने वाला।(5) **शीमतुहू :** उसकी आदत व ख़स्लत, विक़ाउ : ढाल, मुहाफ़िज़, बचाने वाला।(6) **बिन्यती :** मेरा जिस्म व जान, अगर बुनय्यती हो तो मेरी प्यारी बेटी, युबारीन : मुक़ाबला करते हैं।(7) **अल्इन्नह :** अ़नान की जमा है, लगाम, वो कुव्वत व मुसीबत में लगामों के हम पल्ला हैं या सवार की इताअ़त में लगामों की तरह मुड़ने वाले हैं।(8) **मुस्इदात :** तुम्हारी तरफ़ रुख़ करके आ रहे हैं।(9) **अल्असलु :** नेज़े। अज़्ज़िमाउ : दुश्मन के ख़ून के प्यासे या प्यास की वजह से दुबले-पतले।(10) **मुतमत्तिरातुन** : तेज़ी से भागने वाला, एक दूसरे से सबक़त ले जाने वाले।(11) **तुलत्तिमुहुन्न बिल्ख़ुमुर :** घोड़ों की शराफ़त व करामत और उनसे मुहब्बत व प्यार की वजह से मुसलमान औरतें, उनके चेहरों से गर्दो-गुबार अपने दुपट्टों से साफ़ करतीं हैं या घोड़ों के दुश्मन के तआक़ुब में तेज़ रफ़्तारी से भागने की बिना पर दुश्मन की औरतें अपने दिफ़ाअ़ में उनके चेहरों पर अपने दुपट्टे मारती हैं।(12) **इन अ़रज़्तुमू अ़न्ना इअ़्तमरना :** अगर तुम हमारे सामने हट जाओगे, हमें बैतुल्लाह का उ़म्रह करने से नहीं रोकोगे, तो हम उ़म्रह कर लेंगे और हमें अपने मक़सद में कामयाबी हासिल हो जायेगी। इससे मालूम होता है, ये अश्आ़र उ़म्रतुल हुदैबिया के मौक़े पर कहे गये हैं। इसलिये अगले शेअ़र में कहा है, अगर तुम उ़म्रह से रोकोगे, तो फिर उस दिन की जंग का इन्तिज़ार करो, जिसमें अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को फ़तह नसीब फ़रमायेगा और हज़रत हस्सान की पेशीनगोई के मुताबिक़ 8 हिजरी में मक्का फ़तह हो गया और उस दिन मक्का की औरतें घोड़ों का रुख़ मोड़ने के लिये उनके चेहरों पर अपने दुपट्टे मार रही थीं। हाशिया मुहम्मद फ़ुव्वाद अ़ब्दुल बाक़ी, जिल्द 4, पेज नं. 1937(13) **ज़िराबुन** : मार-धाड़, मुक़ाबला।(14) **यस्सर्तु जुन्दन :** मैंने लश्कर तैयार कर दिया है।(15) **उ़र्ज़तुहा लिक़ाउ :** जिसका मतलूब व मक़सद ही दुश्मन से जंगो-जिदाल करना है।(16) **मिम्मअ़्दिन :** मअ़द से मुराद क़ुरैश हैं, क्योंकि वो मअ़द बिन अ़दनान की औलाद हैं।(17) **फ़मन यह्जू मिन्कुम :** अल्लाह का रसूल इस क़द्र बुलंद व बाला मक़ाम पर फ़ाइज़ है कि तुम्हारी हिजू और मज़म्मत से उसका कुछ बिगड़ता नहीं है और तुम्हारी तारीफ़ व मदह और नुसरत से उसका कुछ संवरेगा नहीं, क्योंकि तुम किसी शुमार क़तार में नहीं रहे हो। किफ़ाउन : हम सर, मद्दे मुक़ाबिल, हम पल्ला।

बाब 35 : हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي هُرَيْرَةَ الدَّوْسِيِّ رضى الله عنه

(6396) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं अपनी माँ को इस्लाम की दावत देता था, क्योंकि वो मुश्रिका थी। एक दिन मैंने उसे दावत दी तो उसने मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) के बारे में ऐसी बातें कहीं, जो मेरे लिये नापसन्दीदा थीं। चुनाँचे मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में रोता हुआ हाज़िर हुआ, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपनी माँ को इस्लाम की तरफ़ बुलाता था, वो मेरी बात मानने से इंकार करती थी, सो आज मैंने उसे दावत दी तो उसने मुझे आपके बारे में ऐसी जली-कटी सुनाईं, जो मेरे लिये नागवार हैं, इसलिये आप अल्लाह से दुआ फ़रमायें कि वो अबू हुरैरह की माँ को हिदायत बख़्शे। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! अबू हुरैरह की माँ को हिदायत बख़्श।' मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की दुआ के बाइस ख़ुश-ख़ुश चला। तो जब मैं आकर दरवाज़े की तरफ़ गया, वो बंद था और मेरी माँ ने मेरे क़दमों की चाप सुन ली तो कहने लगी, ऐ अबू हुरैरह! ठहरे रहो और मैंने पानी की हरकत या हलचल सुनी। उसने नहाकर अपनी कुर्ती पहनी और जल्दी में दुपट्टे के बग़ैर दरवाज़ा खोल दिया। फिर कहने लगी, ऐ अबू हुरैरह! मैं गवाही देती हूँ, अल्लाह के सिवा

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ الْيَمَامِيُّ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، عَنْ أَبِي كَثِيرٍ، يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ كُنْتُ أَدْعُو أُمِّي إِلَى الإِسْلاَمِ وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فَدَعَوْتُهَا يَوْمًا فَأَسْمَعَتْنِي فِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا أَكْرَهُ فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَنَا أَبْكِي قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كُنْتُ أَدْعُو أُمِّي إِلَى الإِسْلاَمِ فَتَأْبَى عَلَىَّ فَدَعَوْتُهَا الْيَوْمَ فَأَسْمَعَتْنِي فِيكَ مَا أَكْرَهُ فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَهْدِيَ أُمَّ أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اهْدِ أُمَّ أَبِي هُرَيْرَةَ " . فَخَرَجْتُ مُسْتَبْشِرًا بِدَعْوَةِ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا جِئْتُ فَصِرْتُ إِلَى الْبَابِ فَإِذَا هُوَ مُجَافٌ فَسَمِعَتْ أُمِّي خَشْفَ قَدَمَىَّ فَقَالَتْ مَكَانَكَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ . وَسَمِعْتُ خَضْخَضَةَ

الْمَاءِ قَالَ - فَاغْتَسَلَتْ وَلَبِسَتْ دِرْعَهَا وَعَجِلَتْ عَنْ خِمَارِهَا فَفَتَحَتِ الْبَابَ ثُمَّ قَالَتْ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ - قَالَ - فَرَجَعْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَتَيْتُهُ وَأَنَا أَبْكِي مِنَ الْفَرَحِ - قَالَ - قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَبْشِرْ قَدِ اسْتَجَابَ اللَّهُ دَعْوَتَكَ وَهَدَى أُمَّ أَبِي هُرَيْرَةَ . فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَقَالَ خَيْرًا - قَالَ - قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ أَنْ يُحَبِّبَنِي أَنَا وَأُمِّي إِلَى عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ وَيُحَبِّبَهُمْ إِلَيْنَا - قَالَ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ حَبِّبْ عُبَيْدَكَ هَذَا -يَعْنِي أَبَا هُرَيْرَةَ وَأُمَّهُ - إِلَى عِبَادِكَ الْمُؤْمِنِينَ وَحَبِّبْ إِلَيْهِمُ الْمُؤْمِنِينَ " . فَمَا خُلِقَ مُؤْمِنٌ يَسْمَعُ بِي وَلاَ يَرَانِي إِلاَّ أَحَبَّنِي .

कोई इलाह नहीं है और मैं गवाही देती हूँ, मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। तो मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ पलटा और आपकी ख़िदमत में मसर्रत व शादमानी से रोता हुआ हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बशारत क़ुबूल फ़रमायें, अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ सुन ली और अबू हुरैरह की माँ को हिदायत बख़्श दी। तो आपने अल्लाह की हम्दो-सना बयान की और कलिम-ए-ख़ैर फ़रमाया। मैंने अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ़ फ़रमायें कि वो अपने मोमिन बन्दों के दिल में मेरी और मेरी माँ की मुहब्बत पैदा कर दे और उन्हें हमारा महबूब बना दे। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ़ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! अपने इस बन्दे यानी अबू हुरैरह की और इसकी माँ की अपने मोमिन बन्दों के दिल में मुहब्बत डाल दे और इनकी मुहब्बत उनके दिलों में डाल दे।' हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) कहते हैं, चुनाँचे कोई मोमिन पैदा नहीं हुआ जो मेरे बारे में सुनकर बिना देखे मुझसे मुहब्बत न करता हो या जो मुसलमान मेरे बारे में सुनता या मुझे देखता है वो मुझसे मुहब्बत करता है।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) **मुजाफ़ुन :** बन्द।(2) **ख़श्फ़ुन :** आहट, चाप।(3) **ख़ज़्ख़ज़ह :** हिलने की आवाज़।

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) का जाहिलिय्यत में नाम अ़ब्दुश्शम्स और अ़ब्दे अ़म्र था और इस्लाम में अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान। वो अपनी आस्तीन में बिल्ली उठाये हुए थे तो आपने देखकर अबू हुरैरह के नाम से पुकारा और यही नाम मअ़रूफ़ व मशहूर हो गया और आपकी दुआ़ के सबब, हर मोमिन हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से मुहब्बत करता है और जो उन पर तन्क़ीद करते हैं, वो सोच लें कि वो कौन हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الأَعْرَجِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَاللَّهُ الْمَوْعِدُ كُنْتُ رَجُلاً مِسْكِينًا أَخْدُمُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى مِلْءِ بَطْنِي وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ وَكَانَتِ الأَنْصَارُ يَشْغَلُهُمُ الْقِيَامُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ يَبْسُطْ ثَوْبَهُ فَلَنْ يَنْسَى شَيْئًا سَمِعَهُ مِنِّي " . فَبَسَطْتُ ثَوْبِي حَتَّى قَضَى حَدِيثَهُ ثُمَّ ضَمَمْتُهُ إِلَىَّ فَمَا نَسِيتُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْهُ .

(6397) अअ़रज(रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) को ये कहते सुना, तुम लोग ख़्याल करते हो, अबू हुरैरह रसूलुल्लाह(ﷺ) से बहुत अहादीस़ बयान करता है, अल्लाह ही के हुज़ूर पेश होना है(इसका सबब ये है) मैं एक मिस्कीन आदमी था, पेट भरने के बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत करता था और मुहाजिरों को बाज़ारों की ख़रीदो-फ़रोख़्त मसरूफ़ रखती और अन्सार को अपने माल(खेतियों) की निगेहदाश्त और ज़िम्मेदारी मशग़ूल रखती। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने(एक दिन) फ़रमाया, 'जो शख़्स अपना कपड़ा फैलायेगा तो वो मुझसे सुनी हुई कोई बात हर्गिज़ नहीं भूलेगा।' सो मैंने अपना कपड़ा बिछा दिया यहाँ तक कि आपने अपनी बात पूरी कर ली, फिर मैंने उसे अपने साथ चिमटा लिया, इसलिये जो कुछ मैंने आपसे सुना, उसे नहीं भूला।

(सहीह बुख़ारी : 2350, 7354, इब्ने माजह, बाब : 262)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) वल्लाहुल मौइद : यानी इन्दल्लाहिल मौइद : अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा मुहासबा फ़रमायेगा, अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो मेरी गिरफ़्त फ़रमायेगा, अगर तुम बद गुमानी करते हो तो तुम्हें पूछेगा।**(2) अ़ला मिल्इ बत्नी :** जब पेट भरने के बक़द्र चीज़ मिल जाती तो उसको खाकर सारा वक़्त रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में गुज़ारता, मुझे माल जमा करने की फ़िक्र न थी।**(3) अस्सफ़्कु बिल्अस्वाक़ :** बाज़ारों की ख़रीदो-फ़रोख़्त, सोदा पक्का करने के लिये एक दूसरे के हाथ पर हाथ मारते थे और सफ़्क़ का यही मानी है।**(4) यशग़लुहुमुल क़िया-म अ़ला अम्वालिहिम :** उनको उनकी काश्तकारी(खेतीबाड़ी) और ज़राअ़त की सर अन्जामदेही मशग़ूल रखती थी।

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की रिवायात तमाम सहाबा किराम से ज़्यादा हैं, कोई सहाबी भी इस सिलसिले में उनके हम पल्ला नहीं है। वो पाँच हज़ार तीन सौ चोहत्तर(5374) रिवायात बयान करते हैं। जिनमें से छः सौ नौ बुख़ारी और मुस्लिम में हैं और इसका बुनियादी और असासी सबब यही है कि उन्होंने अपना सारा वक़्त रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ गुज़ारा। आपसे दुआ की दरख़्वास्त की कि मैं आपकी अहादीस़ सुनता हूँ और भूल जाता हूँ तो आपने चादर फैलाने का हुक्म दिया। इसी तरह इस हदीस़ में आपने ख़ुद फ़रमाया कि जो शख़्स अपनी चादर बिछायेगा तो वो मुझसे सुनी हुई कोई चीज़ नहीं भूलेगा और उसकी दूसरी वजह याद रखने का एहतिमाम करना है, जैसाकि आगे आ रहा है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ يَحْيَى بْنِ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مَعْنٌ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ بِهَذَا الْحَدِيثِ غَيْرَ أَنَّ مَالِكًا، انْتَهَى حَدِيثُهُ عِنْدَ انْقِضَاءِ قَوْلِ أَبِي هُرَيْرَةَ وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِهِ الرِّوَايَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " مَنْ يَبْسُطْ ثَوْبَهُ " . إِلَى آخِرِهِ .

(6398) इमाम साहब यही रिवायत इमाम मालिक और मअ़मर से बयान करते हैं, मगर इमाम मालिक की रिवायत हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) के क़ौल पर ख़त्म हो जाती है, इसमें कपड़ा बिछाने का तज़्किरा नहीं है।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ أَلاَ يُعْجِبُكَ أَبُو هُرَيْرَةَ جَاءَ فَجَلَسَ إِلَى جَنْبِ حُجْرَتِي يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يُسْمِعُنِي ذَلِكَ وَكُنْتُ أُسَبِّحُ فَقَامَ قَبْلَ أَنْ أَقْضِيَ سُبْحَتِي وَلَوْ أَدْرَكْتُهُ لَرَدَدْتُ عَلَيْهِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الْحَدِيثَ كَسَرْدِكُمْ .

(6399) हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर(रह.) बयान करते हैं, हज़रत आइशा(रज़ि.) ने फ़रमाया कि तुम्हें अबू हुरैरह पर तअ़ज्जुब नहीं होता, वो आये और मेरे हुजरे के पहलू में बैठ कर रसूलुल्लाह(ﷺ) की रिवायात मुझे सुनाकर बयान करने लगे और मैं नफ़ल पढ़ रही थी और मेरे नफ़ल पूरा करने से पहले चले गये और अगर मुझे उनसे बात करने का मौक़ा मिलता तो मैं उसे टोकती(और बताती) रसूलुल्लाह(ﷺ) तुम्हारी तरह मुसलसल बात नहीं करते थे।

(सहीह बुख़ारी : 3598, अबू दाऊद : 3655)

मुफ़रदातुल हदीस़ : लम यकुन यस्रुदुल हदीस़ : आप मुसलसल, बिला वक़्फ़ा बातचीत नहीं फ़रमाते थे। यानी आहिस्ता-आहिस्ता ठहर-ठहर कर बात करते थे, ताकि सुनने वाले को सुनने और समझने में सहूलत रहे, जल्दी-जल्दी बात करने की सूरत में सुनना और समझना मुश्किल हो जाता है।

قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ يَقُولُونَ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَدْ أَكْثَرَ وَاللَّهُ الْمَوْعِدُ وَيَقُولُونَ مَا بَالُ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ لاَ يَتَحَدَّثُونَ مِثْلَ أَحَادِيثِهِ وَسَأُخْبِرُكُمْ عَنْ ذَلِكَ إِنَّ إِخْوَانِي مِنَ الأَنْصَارِ كَانَ يَشْغَلُهُمْ عَمَلُ أَرَضِيهِمْ وَإِنَّ إِخْوَانِي مِنَ الْمُهَاجِرِينَ كَانَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ وَكُنْتُ أَلْزَمُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى مِلْءِ بَطْنِي فَأَشْهَدُ إِذَا غَابُوا وَأَحْفَظُ إِذَا نَسُوا وَلَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا " أَيُّكُمْ يَبْسُطُ ثَوْبَهُ فَيَأْخُذُ مِنْ حَدِيثِي هَذَا ثُمَّ يَجْمَعُهُ إِلَى صَدْرِهِ فَإِنَّهُ لَمْ يَنْسَ شَيْئًا سَمِعَهُ " . فَبَسَطْتُ بُرْدَةً عَلَىَّ حَتَّى فَرَغَ مِنْ حَدِيثِهِ ثُمَّ جَمَعْتُهَا إِلَى صَدْرِي فَمَا نَسِيتُ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمِ شَيْئًا حَدَّثَنِي بِهِ وَلَوْلاَ آيَتَانِ أَنْزَلَهُمَا اللَّهُ فِي كِتَابِهِ مَا حَدَّثْتُ شَيْئًا أَبَدًا] إِنَّ الَّذِينَ

(2492) इब्ने मुसय्यब(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने फ़रमाया, लोग कहते हैं, अबू हुरैरह अहादीस़ बहुत बयान करता हैं, अल्लाह ही मुहासबा फ़रमायेगा और कहते हैं, क्या वजह है, मुहाजिरीन और अन्सार इसकी तरह अहादीस़ बयान नहीं करते? तो मैं तुम्हें अभी इसका सबब बताता हूँ, मेरे अन्सारी भाई, उन्हें उनकी ज़मीन(खेतीबाड़ी) का काम मशग़ूल रखता था और मेरे मुहाजिरीन भाई, उन्हें बाज़ारों की ख़रीदो-फ़रोख़्त मसरूफ़ रखती थी और मैं अपना पेट भरने के बाद से रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ हाज़िर बाश(हाज़िर रहता) था। चुनाँचे जब वो ग़ायब होते, मैं मौजूद होता और मैं याद करता, जबकि वो(काम में मशग़ूल होकर) भूल जाते और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक दिन फ़रमाया, 'तुममें से कौन अपना कपड़ा बिछायेगा, ताकि मेरी ये हदीसें याद कर ले, फिर उसे अपने सीने से चिमटायेगा तो फिर वो कभी सुनी हुई बात नहीं भूलेगा।' चुनाँचे मैंने ऊपर चादर बिछा दी यहाँ तक कि आप अपनी बातचीत से फ़ारिग़ हो गये। फिर मैंने उसे अपने सीने से चिपका लिया तो उस दिन के बाद से जो कुछ भी आपने मुझे सुनाया, मैं नहीं भूला और अगर अल्लाह तआला ने अपनी किताब में दो आयतें न उतारी होतीं तो मैं कभी कोई चीज़ बयान न करता,

يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى{ إِلَى آخِرِ الآيَتَيْنِ .

'जो लोग हमारी नाज़िल की हुई रोशन दलीलों और हिदायत को छिपाते हैं...।' (सूरह बक़रह : 159-160)
(सहीह बुख़ारी : 2047)

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، عَنْ شُعَيْبٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ إِنَّكُمْ تَقُولُونَ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(6400) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, तुम कहते हो अबू हुरैरह(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बहुत अहादीस़ बयान करता है...., आगे ऊपर वाली रिवायत है।

باب مِنْ فَضَائِلِ أَهْلِ بَدْرٍ رضى الله عنهم وَقِصَّةِ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ

बाब 36 : अहले बद्र(रज़ि.) के फ़ज़ाइल और हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ का वाक़िया

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ، عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي رَافِعٍ، - وَهُوَ كَاتِبُ عَلِيٍّ قَالَ سَمِعْتُ عَلِيًّا، رضى الله عنه وَهُوَ يَقُولُ بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالْمِقْدَادَ فَقَالَ " ائْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا

(6401) हज़रत अ़ली(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे, ज़ुबैर और मिक़्दाद को भेजा तो फ़रमाया, 'रौज़-ए-ख़ाख़ नामी जगह पर पहुँचो, क्योंकि वहाँ एक औरत है, जिसके पास एक ख़त है, वो उससे ले लो।' चुनाँचे हम रवाना हो गये और हमारे घोड़े हमें लेकर दौड़ रहे थे, सो अचानक हमने औरत को जा लिया और कहा, ख़त निकाल! उसने कहा, मेरे पास कोई ख़त नहीं है। तो हमने कहा, तुम ख़त निकालोगी या तुझे कपड़े उतारने होंगे। तो उसने गेसूओं(ज़ुल्फ़ों) से निकाला और वो लेकर

ظَعِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوهُ مِنْهَا " . فَانْطَلَقْنَا تَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا فَإِذَا نَحْنُ بِالْمَرْأَةِ فَقُلْنَا أَخْرِجِي الْكِتَابَ . فَقَالَتْ مَا مَعِي كِتَابٌ . فَقُلْنَا لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَتُلْقِيَنَّ الثِّيَابَ . فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا فِيهِ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى نَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا حَاطِبُ مَا هَذَا " . قَالَ لاَ تَعْجَلْ عَلَىَّ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مُلْصَقًا فِي قُرَيْشٍ - قَالَ سُفْيَانُ كَانَ حَلِيفًا لَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهَا - وَكَانَ مِمَّنْ كَانَ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ لَهُمْ قَرَابَاتٌ يَحْمُونَ بِهَا أَهْلِيهِمْ فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ النَّسَبِ فِيهِمْ أَنْ أَتَّخِذَ فِيهِمْ يَدًا يَحْمُونَ بِهَا قَرَابَتِي وَلَمْ أَفْعَلْهُ كُفْرًا وَلاَ ارْتِدَادًا عَنْ دِينِي وَلاَ رِضًا بِالْكُفْرِ بَعْدَ الإِسْلاَمِ . فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " صَدَقَ " . فَقَالَ عُمَرُ دَعْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ . فَقَالَ " إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ

हम रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में आ गये। उसमें लिखा था, हातिब बिन अबी बल्तआ की तरफ़ से अहले मक्का के कुछ मुश्रिकीन की तरफ़। उन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) के कुछ उमूर(मन्सूबों) की इत्तिलाअ दी गई थी। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ हातिब! ये क्या मामला है?' उसने अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे बारे में जल्दी में फ़ैसला न फ़रमायें। मैं क़ुरैश में मुल्हक़(शामिल) था। सुफ़ियान कहते हैं, वो उनके हलीफ़(दोस्त) थे, उनमें न थे.... और आपके साथ जो मुहाजिरीन हैं, उनकी रिश्तेदारियाँ हैं, जिनके सबब वो अपने अहलो-अयाल की हिफ़ाज़त कर लेते हैं तो मैंने चाहा, चूंकि मेरी उनके साथ रिश्तेदारी नहीं है तो मैं उनके साथ एहसान करूँ, जिसके बाइस वो मेरे अज़ीज़ों की हिफ़ाज़त करें। मैंने ये काम कुफ़्र या अपने दीन से इर्तिदाद(मुर्तद) इख़्तियार करते हुए नहीं किया और न इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र को पसंद करते हुए किया है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसने सच बोला है।' इस पर हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! इजाज़त दीजिये मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ तो आपने जवाब में फ़रमाया, 'वो बद्र में शरीक हो चुका है, तुम्हें क्या मालूम, शायद कि अल्लाह अहले बद्र के हालात से आगाह है और फ़रमाया है, जो चाहो करो! मैं तुम्हें माफ़

" . فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ﴾ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ أَبِي بَكْرٍ وَزُهَيْرٍ ذِكْرُ الآيَةِ وَجَعَلَهَا إِسْحَاقُ فِي رِوَايَتِهِ مِنْ تِلاَوَةِ سُفْيَانَ.

कर चुका हूँ।' इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी, ऐ ईमान वालो! मेरे दुश्मन और अपने दुश्मन को दोस्त न बनाओ।'(सूरह मुम्तहिना : 6) अबू बकर और ज़ुहैर की हदीस में आयत का ज़िक्र नहीं है और इस्हाक़ ने अपनी रिवायत में इसको सुफ़ियान की तिलावत क़रार दिया है।

(सहीह बुख़ारी : 4274, 3107, अबू दाऊद : 2650, 3305)

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ज़ईनह : हौदज में सफ़र करने वाली औरत, क्योंकि ज़अ्न चलने को कहते हैं।**(2) मअहा किताबुन फ़ख़ुज़ू मिन्हा :** उसके पास ख़त है, वो उससे ले लो। जिससे मालूम होता है जासूसी पर मुश्तमिल ख़त व किताबत को क़ब्ज़े में लिया जा सकता है और किसी मस्लिहत और हिक्मत के तहत मुश्तबा ख़ुतूत को पढ़ा जा सकता है।**(3) लतुल्क़ियन्नस्सियाब :** लतुख़्रिजन्न की मुनासिबत से तल्क़ीन की या उसको गिराया नहीं गया। इससे साबित हुआ ज़रूरत और मजबूरी के तहत मुज्रिम या जासूस के कपड़े उतारे जा सकते हैं, ख़्वाह वो औरत ही क्यों न हो।**(4) इक़ास :** अक़ीसह की जमा है, गेसू, गुन्धे हुए बाल।**(5) मुल्सक़ :** जो किसी ख़ानदान में, उनसे दोस्ती के सबब दाख़िल समझा जाये। हज़रत हातिब(रज़ि.) यमनी शाइर और शहसवार थे। जो हज़रत ज़ुबैर(रज़ि.) के हलीफ़ थे, उनकी हिज्रत के बाद उनके बेटे और भाई मक्का में रह गये थे।**(6) लअल्लल्लाह इत्तलअ :** कुछ रिवायात में इन्नल्लाह है लअल्लल्लाह अल्लाह और रसूल के कलाम में यक़ीन का मानी देता है, सिर्फ़ उम्मीद पर दलालत नहीं करता है।**(7) इअ्मलू मा शिअ्तुम :** जो चाहो करो, यानी तुमसे अच्छे काम ही सादिर होंगे। अगर कभी बशरी तक़ाज़े से ग़लत काम हो गया तो तुम्हें तौबा की तौफ़ीक़ मिल जायेगी। इसलिये क़यामत को उस पर पकड़ नहीं होगी, लेकिन दुनिया में अगर कोई क़ाबिले हद या तअ्ज़ीर हरकत सरज़द हुई तो उस पर पकड़ होगी। जैसाकि आपने बद्री सहाबी मिस्तह बिन असासा को हद लगाई थी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، ح وَحَدَّثَنَا رِفَاعَةُ بْنُ

(6402) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अली(रज़ि.) से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे अबू मर्सद ग़नवी और ज़ुबैर बिन

अव्वाम(रज़ि.) को भेजा और हम सब घुड़सवार थे और फ़रमाया, 'रवाना हो जाओ, यहाँ तक कि रौज़-ए-ख़ाख़ नामी जगह पर पहुँच जाओ, क्योंकि वहाँ एक मुश्रिका औरत है, जिसके पास हातिब बिन अबी बल्तआ का मुश्रिकीन की तरफ़ ख़त है....।' आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत है।

(सहीह बुख़ारी : 3983, 6259, 3081, 6939, अबू दाऊद : 2651)

الْهَيْثَمِ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ اللَّهِ - كُلُّهُمْ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبَا مَرْثَدٍ الْغَنَوِيَّ وَالزُّبَيْرَ بْنَ الْعَوَّامِ وَكُلُّنَا فَارِسٌ فَقَالَ " انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا امْرَأَةً مِنَ الْمُشْرِكِينَ مَعَهَا كِتَابٌ مِنْ حَاطِبٍ إِلَى الْمُشْرِكِينَ " . فَذَكَرَ بِمَعْنَى حَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيٍّ .

फ़ायदा : इस वाक़िये में जाने वाले चार लोग थे, पिछली रिवायत में अबू मर्सद का नाम नहीं था और इस रिवायत में मिक़्दाद का नाम नहीं है और हज़रत हातिब ने मुश्रिकीने मक्का को आपकी जंगी तैयारियों से आगाह किया था।

(6403) हज़रत जाबिर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास हज़रत हातिब का ग़ुलाम शिकायत करते हुए आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! हातिब ज़रूर आग में दाख़िल होगा। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम झूठ कहते हो, वो उसमें दाख़िल नहीं होगा, क्योंकि वो बद्र और हुदैबिया में शिरकत कर चुका है।'

(तिर्मिज़ी : 3864)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ عَبْدًا، لِحَاطِبٍ جَاءَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَشْكُو حَاطِبًا فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَيَدْخُلَنَّ حَاطِبٌ النَّارَ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَذَبْتَ لاَ يَدْخُلُهَا فَإِنَّهُ شَهِدَ بَدْرًا وَالْحُدَيْبِيَةَ "

फ़ायदा : हज़रत हातिब के वाक़िये से मालूम होता है, कबीरा गुनाह का मुर्तकिब काफ़िर नहीं है, क्योंकि मुसलमानों की जासूसी कबीरा गुनाह है। इसलिये हज़रत उमर ने क़त्ल की इजाज़त चाही थी। लेकिन हज़रत हातिब से ये ग़लती ग़ैर शऊरी तौर पर सरज़द हुई थी। इसलिये आपने क़त्ल की इजाज़त न दी और हज़रत हातिब का उज़्र तस्लीम कर लिया। जिससे मालूम होता है, मुल्ज़िम को बात करने

का मौक़ा देना चाहिये और अगर उसका उ़ज़्र क़ाबिले क़ुबूल हो तो उससे दरगुज़र करना चाहिये और अगर कोई इंसान दूसरे पर उसके ज़ाहिरी हालात की रोशनी में तबसरा करता है तो वो मुज्रिम नहीं होगा, इसलिये आपने हज़रत उ़मर और हज़रत हातिब के ग़ुलाम को सरज़निश और तौबीख़ नहीं फ़रमाई, अगरचे उनकी बात भी तस्लीम नहीं की।

बाब 37 : अस्हाबे शजरह यानी बैअ़ते रिज़वान में शिरकत करने वालों के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ أَهْلِ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ رضى الله عنهم

(6404) हज़रत उम्मे मुबश्शिर(रज़ि.) बयान करती हैं कि उसने हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) के यहाँ नबी(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'इन्शाअल्लाह! अस्हाबे शजरह से कोई भी जिसने दरख़्त के नीचे बैअ़त कर रखी थी, दोज़ख़ में नहीं होगा।' हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) ने कहा, क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल! आप(ﷺ) ने उसे डांटा। तो हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) ने कहा, अल्लाह का फ़रमान है, 'और तुममें से हर एक को उस पर पहुँचना है।'(सूरह मरयम : 71) इस पर नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, फिर हम मुत्तक़ियों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल गिरे छोड़ देंगे।'(सूरह मरयम : 72)

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ أَخْبَرَتْنِي أُمُّ مُبَشِّرٍ، أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ عِنْدَ حَفْصَةَ " لاَ يَدْخُلُ النَّارَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ أَحَدٌ . الَّذِينَ بَايَعُوا تَحْتَهَا " . قَالَتْ بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَانْتَهَرَهَا فَقَالَتْ حَفْصَةُ { وَإِنْ مِنْكُمْ إِلاَّ وَارِدُهَا} فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " قَدْ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا}

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **इन्शाअल्लाह :** का लफ़्ज़ तबर्रुक के लिये फ़रमाया, किसी शक व शुब्हा की बिना पर नहीं।(2) **क़ालत बला :** हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) ने ये लफ़्ज़ एक शुब्हे का इज़ाला करने के लिये कहा, नऊ़ज़ुबिल्लाह नबी(ﷺ) की बात को रद्द करना मक़सद नहीं था। क्योंकि आयत का ज़ाहिरी मफ़्हूम ये है कि हर इंसान आग में दाख़िल होगा और इस उ़मूम में शजरह के नीचे बैअ़त करने वाले भी दाख़िल हैं। तो आपने जवाब दिया, वारिदुहा से मुराद पुल सिरात पर पहुँचना है, तो वहाँ से मोमिन जन्नत में पहुँच जायेंगे और काफ़िर आग में गिर जायेंगे।

बाब 38 : हज़रत अबू मूसा अश्अरी और हज़रत अबू आमिर अश्अरी(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي مُوسَى وَأَبِي عَامِرٍ الأَشْعَرِيَّيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، قَالَ أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا بُرَيْدٌ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ نَازِلٌ بِالْجِعْرَانَةِ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ وَمَعَهُ بِلاَلٌ فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلٌ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ أَلاَ تُنْجِزُ لِي يَا مُحَمَّدُ مَا وَعَدْتَنِي فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَبْشِرْ " . فَقَالَ لَهُ الأَعْرَابِيُّ أَكْثَرْتَ عَلَىَّ مِنْ " أَبْشِرْ " . فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى أَبِي مُوسَى وَبِلاَلٍ كَهَيْئَةِ الْغَضْبَانِ فَقَالَ " إِنَّ هَذَا قَدْ رَدَّ الْبُشْرَى فَاقْبَلاَ أَنْتُمَا " . فَقَالاَ قَبِلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ . ثُمَّ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِقَدَحٍ فِيهِ مَاءٌ فَغَسَلَ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ فِيهِ وَمَجَّ فِيهِ ثُمَّ قَالَ " اشْرَبَا مِنْهُ وَأَفْرِغَا عَلَى وُجُوهِكُمَا وَنُحُورِكُمَا وَأَبْشِرَا " . فَأَخَذَا الْقَدَحَ فَفَعَلاَ مَا أَمَرَهُمَا بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله

(6405) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास था, जबकि आप मक्का और मदीना के दरम्यान जिअ्राना मक़ाम पर उतरे हुए थे और हज़रत बिलाल(रज़ि.) भी आपके साथ थे। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास एक बदवी आदमी आया और उसने कहा, ऐ मुहम्मद! आपने मेरे साथ जो वादा किया था, उसको पूरा नहीं करेंगे? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'ख़ुश हो जा।' सो आराबी ने आपको जवाब दिया, आपने मुझे बार-बार 'ख़ुश हो जाओ' कहा है। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) अबू मूसा और बिलाल की तरफ़ नाराज़ी की हालत में मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, 'इसने बशारत रद्द कर दी है तो तुम दोनों क़ुबूल कर लो।' दोनों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमने क़ुबूल की। फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक पानी का प्याला मंगवाया, उसमें आपने अपने दोनों हाथ और चेहरा धोया और उसमें कुल्ली की, फिर फ़रमाया, 'इससे पियो और अपने चेहरों और अपने सीनों पर डाल लो और ख़ुश हो जाओ।' तो दोनों ने प्याला पकड़ लिया और रसूलुल्लाह(ﷺ) के फ़रमान पर अमल किया। सो हज़रत उम्मे

عليه وسلم فَنَادَتْهُمَا أُمُّ سَلَمَةَ مِنْ وَرَاءِ السِّتْرِ أَفْضِلاَ لأُمِّكُمَا مِمَّا فِي إِنَائِكُمَا . فَأَفْضَلاَ لَهَا مِنْهُ طَائِفَةً .

सलमा(रज़ि.) ने पर्दे के पीछे से दोनों को आवाज़ दी, जो कुछ तुम्हारे बर्तन में है, उससे अपनी माँ के लिये भी बचाना। तो उन्होंने उनके लिये भी कुछ बचाया।

(सहीह बुख़ारी : 4328)

मुफ़रदातुल हदीस़ : जिअ्रानह : ये मक्का और ताइफ़ के दरम्यान एक वादी है, आपने हुनैन की ग़नीमतों को यहाँ इकट्ठा किया था और ख़ुद ताइफ़ की तरफ़ चले गये और नये-नये मुसलमानों को आपने उन ग़नीमतों से देने का वादा किया था, जिसका वो आराबी मुताल्बा कर रहा था। वापसी पर जब आप मदीना का रुख़ किये हुए थे, आपने उन ग़नीमतों को तक़सीम किया, चूंकि आपका रुख़ मदीना की तरफ़ था, इसलिये जिअ्राना को मक्का और मदीना के दरम्यान कह दिया गया और आराबी इस ताख़ीर पर बेसब्रा हो रहा था कि मुझे ग़नीमत से जल्द से जल्द हिस्सा दें।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ أَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ - وَاللَّفْظُ لأَبِي عَامِرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ لَمَّا فَرَغَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مِنْ حُنَيْنٍ بَعَثَ أَبَا عَامِرٍ عَلَى جَيْشٍ إِلَى أَوْطَاسٍ فَلَقِيَ دُرَيْدَ بْنَ الصِّمَّةِ فَقُتِلَ دُرَيْدٌ وَهَزَمَ اللَّهُ أَصْحَابَهُ فَقَالَ أَبُو مُوسَى وَبَعَثَنِي مَعَ أَبِي عَامِرٍ - قَالَ - فَرُمِيَ أَبُو عَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ رَمَاهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي جُشَمٍ بِسَهْمٍ فَأَثْبَتَهُ فِي رُكْبَتِهِ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ يَا عَمِّ مَنْ رَمَاكَ فَأَشَارَ أَبُو عَامِرٍ

(6406) हज़रत अबू बुरदा(रह.) अपने बाप(अबू मूसा) से बयान करते हैं कि जब नबी(ﷺ) ग़ज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ हुए, अबू आमिर को एक लश्कर का अमीर बनाकर औतास की तरफ़ भेजा। उनकी दुरैद बिन सिम्मह से मुठभेड़ हुई। दुरैद क़त्ल कर दिया गया था और उसके साथियों को अल्लाह ने शिकस्त(हार) दी। अबू मूसा कहते हैं, आपने मुझे भी अबू आमिर के साथ भेजा था। तो अबू आमिर को घुटने में तीर लगा, बनू जुशम के एक आदमी ने उन पर तीर फेंका था, जो उनके घुटने में जमा दिया था। तो मैं उनके पास पहुँचा और पूछा, ऐ चाचा! आपको किसने तीर मारा? तो अबू आमिर ने अबू मूसा को इशारे के ज़रिये बताया कि वो मेरा क़ातिल है, तुम उसे देख रहे हो, उसने मुझे तीर मारा है। अबू मूसा कहते हैं, मैंने उसकी

إِلَى أَبِي مُوسَى فَقَالَ إِنَّ ذَاكَ قَاتِلِي تَرَاهُ ذَلِكَ الَّذِي رَمَانِي . قَالَ أَبُو مُوسَى فَقَصَدْتُ لَهُ فَاعْتَمَدْتُهُ فَلَحِقْتُهُ فَلَمَّا رَآنِي وَلَّى عَنِّي ذَاهِبًا فَاتَّبَعْتُهُ وَجَعَلْتُ أَقُولُ لَهُ أَلاَ تَسْتَحْيِي أَلَسْتَ عَرَبِيًّا أَلاَ تَثْبُتُ فَكَفَّ فَالْتَقَيْتُ أَنَا وَهُوَ فَاخْتَلَفْنَا أَنَا وَهُوَ ضَرْبَتَيْنِ فَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ فَقَتَلْتُهُ ثُمَّ رَجَعْتُ إِلَى أَبِي عَامِرٍ فَقُلْتُ إِنَّ اللَّهَ قَدْ قَتَلَ صَاحِبَكَ . قَالَ فَانْزِعْ هَذَا السَّهْمَ فَنَزَعْتُهُ فَنَزَا مِنْهُ الْمَاءُ فَقَالَ يَا ابْنَ أَخِي انْطَلِقْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَقْرِئْهُ مِنِّي السَّلاَمَ وَقُلْ لَهُ يَقُولُ لَكَ أَبُو عَامِرٍ اسْتَغْفِرْ لِي . قَالَ وَاسْتَعْمَلَنِي أَبُو عَامِرٍ عَلَى النَّاسِ وَمَكَثَ يَسِيرًا ثُمَّ إِنَّهُ مَاتَ فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم دَخَلْتُ عَلَيْهِ وَهُوَ فِي بَيْتٍ عَلَى سَرِيرٍ مُرْمَلٍ وَعَلَيْهِ فِرَاشٌ وَقَدْ أَثَّرَ رِمَالُ السَّرِيرِ بِظَهْرِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَجَنْبَيْهِ فَأَخْبَرْتُهُ بِخَبَرِنَا وَخَبَرِ أَبِي عَامِرٍ وَقُلْتُ لَهُ قَالَ قُلْ لَهُ يَسْتَغْفِرْ لِي . فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى

तरफ़ रुख़ किया और उसे अपनी नज़रों में रख लिया, फिर उसको जा मिला। जब उसने मुझे देखा, मुझे पीठ देकर चल दिया। तो मैंने उसका पीछा किया और उसे कहने लगा, क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? क्या तुम अरबी नहीं हो? क्या ठहरोगे नहीं? तो वो रुक गया, तो मैं और वो टकरा गये और हम दोनों ने एक-दूसरे पर वार किया और मैंने उसे तलवार की चोट से क़त्ल कर दिया। फिर मैं अबू आमिर की तरफ़ लौट आया और कहा, अल्लाह ने आपके क़ातिल को क़त्ल कर दिया। उन्होंने कहा, इस तीर को खींच लो। तो मैंने उसे खींच लिया। जिससे(ख़ून निचुड़ने के बाद) पानी निकल आया तो उसने कहा, ऐ भतीजे! रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ रवाना हो जाओ और उन्हें मेरा सलाम कहो और उनसे अर्ज़ करो, अबू आमिर अर्ज़ करते हैं, मेरे लिये बख़्शिश तलब करो और अबू आमिर ने मुझे लोगों का अमीर मुक़र्रर कर दिया और थोड़ी देर बाद वो फ़ौत हो गये। तो जब मैं नबी(ﷺ) की तरफ़ वापस आया, आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप एक घर में एक खजूर के बान की चारपाई पर लेटे हुए थे, जिस पर बिस्तर था और चारपाई के बान ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की पुश्त(पीठ) पर आपके दोनों पहलुओं पर निशानात बना दिये थे। तो मैंने आपको अपना वाक़िया और अबू आमिर का वाक़िया बताया और आपसे अर्ज़ की, उसने कहा था, आपसे अर्ज़ करूँ आप उसके

الله عليه وسلم بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ مِنْهُ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ " . حَتَّى رَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ ثُمَّ قَالَ " اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَوْقَ كَثِيرٍ مِنْ خَلْقِكَ أَوْ مِنَ النَّاسِ " . فَقُلْتُ وَلِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَاسْتَغْفِرْ . فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ ذَنْبَهُ وَأَدْخِلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُدْخَلاً كَرِيمًا " . قَالَ أَبُو بُرْدَةَ إِحْدَاهُمَا لأَبِي عَامِرٍ وَالأُخْرَى لأَبِي مُوسَى .

लिये मग़्फ़िरत की दुआ फ़रमायें। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पानी मंगवाया और उससे वुज़ू किया, फिर अपने दोनों हाथ उठाये और दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! अबू आमिर को माफ़ फ़रमा दे।' यहाँ तक कि मैंने आपकी बग़लों की सफ़ेदी देखी। फिर आपने दुआ की, 'ऐ अल्लाह! उसे क़यामत के दिन अपने बहुत से बन्दों पर बरतरी बख़्श(अपनी बहुत सी मख़्लूक़ या लोगों पर बरतरी बख़्श)। मैंने अर्ज़ किया, मेरे लिये भी ऐ अल्लाह के रसूल! माफ़ी तलब कीजिये। तो नबी(ﷺ) ने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह बिन क़ैस के गुनाह बख़्श दे और इसे क़यामत के दिन इज़्ज़त के मक़ाम में दाख़िल फ़रमाना।' अबू बुरदा(रह.) कहते हैं, एक दुआ अबू आमिर के लिये की और दूसरी अबू मूसा के हक़ में की।

(सहीह बुख़ारी : 2884, 4323, 6383)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) फ़अ़्तमत्तुहू : मैंने उस पर अपनी नज़रें गाड़ लीं।**(2) फ़नज़ा मिन्हुल माउ :** तीर निकालने से ख़ून बह गया और पानी निकल आया। मुर्मल : रमाल खजूर के बान से बनी हुई। क़ाज़ी अयाज़ वग़ैरह का ख़याल चारपाई पर बिस्तर नहीं था। हदीस़ से लफ़्ज़े मा गिर गया है, क्योंकि बिस्तर की सूरत में निशान न पड़ते।

फ़ायदा : जंगे हुनैन में बनू हवाज़िन शिकस्त खाकर अलग-अलग दिशाओं की तरफ़ भाग निकले, कुछ ने ताइफ़ की राह ली, कुछ बजीला की तरफ़ चल पड़े और कुछ ने औतास का रुख़ किया। आपने औतास की तरफ़ जाने वालों की तरफ़ एक लश्कर भेजा और उनका अमीर अबू आमिर उ़बैद बिन सुलैम अश्अ़री को बनाया और उन्होंने मरते वक़्त अपने भतीजे अबू मूसा अश्अ़री के वास्ते से आपसे बख़्शिश की दुआ की दरख़्वास्त की और आपने बावुज़ू होकर, हाथ उठाकर दुआ माँगी, जिससे मालूम हुआ, आदाबे दुआ में ये भी दाख़िल है कि इंसान बावुज़ू हो और हाथ उठा कर दुआ करे और यहाँ दुआ मय्यित के घर मातम कदा पर नहीं की गई बल्कि एक दूसरे घर में लवाहिक़ीन की दरख़्वास्त

पर की गई है इसलिये इससे ये इस्तिदलाल करना कि मातम कदा पर हाज़िर होने वाला बैठने वालों से दुआ की दरख़्वास्त कर सकता है, ग़लत है।

باب مِنْ فَضَائِلِ الأَشْعَرِيِّينَ رضى الله عنهم

बाब 39 : अश्अरी हज़रात के फ़ज़ाइल(अश्अरियों के फ़ज़ाइल)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا بُرَيْدٌ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لأَعْرِفُ أَصْوَاتَ رُفْقَةِ الأَشْعَرِيِّينَ بِالْقُرْآنِ حِينَ يَدْخُلُونَ بِاللَّيْلِ وَأَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ أَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ وَإِنْ كُنْتُ لَمْ أَرَ مَنَازِلَهُمْ حِينَ نَزَلُوا بِالنَّهَارِ وَمِنْهُمْ حَكِيمٌ إِذَا لَقِيَ الْخَيْلَ - أَوْ قَالَ الْعَدُوَّ -قَالَ لَهُمْ إِنَّ أَصْحَابِي يَأْمُرُونَكُمْ أَنْ تَنْظُرُوهُمْ " .

(6407) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं अश्अरी रुफ़क़ा(दोस्तों) की क़िरअत की आवाज़ें पहचान लेता हूँ, जब वो(कारोबार से वापस आकर) रात को घरों में दाख़िल होते हैं और रात को उनकी क़िरअत की आवाज़ों से उनके घरों की शनाख़्त(पहचान) कर लेता हूँ, अगरचे दिन के वक़्त जब वो अपने घरों में मौजूद होते हैं, मैंने उनके घर नहीं देखे। उन्हीं में से हकीम नामी फ़र्द है, जब वो सवारों या दुश्मन से मिलता है तो उन्हें कहता है, मेरे साथी तुम्हें मशवरा देते हैं कि उनका इन्तिज़ार करो।'
(सहीह बुख़ारी : 4232)

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है अपने घर में रात को बुलंद आवाज़ से क़ुरआन की तिलावत करना, जबकि दूसरों को तकलीफ़ न हो, जाइज़ है और आवाज़ पहचान कर पढ़ने वाले की शनाख़्त हो सकती है। नीज़ अपने घुड़सवारों को ये मशवरा दिया जा सकता है कि अपने पैदल आने वाले साथियों का इन्तिज़ार कर लो, ताकि मुश्तरका तौर पर हमला किया जा सके या दुश्मन को मुक़ाबले में ठहरने की दावत दी जा सकती है कि ठहरो दो-दो हाथ कर लें, क्योंकि ख़ैल से अपना घुड़सवार दस्ता भी मुराद हो सकता है और दुश्मन का भी।

حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، قَالَ أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا أَبُو

(6408) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया,

أُسَامَةَ، حَدَّثَنِي بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الأَشْعَرِيِّينَ إِذَا أَرْمَلُوا فِي الْغَزْوِ أَوْ قَلَّ طَعَامُ عِيَالِهِمْ بِالْمَدِينَةِ جَمَعُوا مَا كَانَ عِنْدَهُمْ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ ثُمَّ اقْتَسَمُوهُ بَيْنَهُمْ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ بِالسَّوِيَّةِ فَهُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ " .

'अश्अरी लोग जब जंग के मौक़े पर मोहताज हो जाते हैं या मदीना में उनके अहलो-अयाल का खाना कम पड़ जाता है तो सबके पास जो कुछ होता है, उसे कपड़े में इकट्ठा कर लेते हैं, फिर एक बर्तन से आपस में बराबर बांट लेते हैं, सो वो मुझसे हैं और मैं उनसे हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 2486)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अर्मलू फ़िल्ग़ज़्व : जंग में उनका खाना ख़त्म हो जाता है।**(2) फ़हुम् मिन्नी व अना मिन्हुम :** मेरा और उनका तरीक़ा या तर्ज़े अमल यकसाँ(बराबर) हैं, वो मेरे नक़्शे क़दम पर चलते हैं, उनमें हमदर्दी और ईस़ार का जज़्बा कूट-कूट कर भरा हुआ है। इसलिये वो मिल-जुल कर खाते हैं और इस हदीस़ से ये भी मालूम हुआ, इंसान बतौर तह्दीसे नेमत या जज़्ब-ए-शुक्र के तहत अपने फ़ज़ाइल व मनाक़िब का दूसरों के सामने इज़हार कर सकता है, क्योंकि इन दोनों हदीस़ों का रावी हज़रत अबू मूसा अश्अरी है।

باب مِنْ فَضَائِلِ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ حَرْبٍ رضى الله عنه

बाब 40 : हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَعْقِرِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا النَّضْرُ، - وَهُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ الْيَمَامِيُّ - حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو زُمَيْلٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَ الْمُسْلِمُونَ لاَ يَنْظُرُونَ إِلَى أَبِي سُفْيَانَ وَلاَ يُقَاعِدُونَهُ فَقَالَ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَا نَبِيَّ اللَّهِ ثَلاَثٌ أَعْطِنِيهِنَّ قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ

(6409) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं कि मुसलमान अबू सुफ़ियान को अहमियत नहीं देते थे, उनकी तरफ़ मुतवज्जह नहीं होते और न ही उससे नशिस्त व बर्ख़ास्त(साथ उठना बैठना) रखते थे। चुनाँचे उन्होंने नबी(ﷺ) से दरख़्वास्त की, ऐ अल्लाह के नबी! आप मेरी तीन दरख़्वास्तें क़ुबूल फ़रमायें। आपने फ़रमाया, 'हाँ!' उन्होंने कहा, मेरे पास अरब की हसीनो-

عِنْدِي أَحْسَنُ الْعَرَبِ وَأَجْمَلُهُ أُمُّ حَبِيبَةَ بِنْتُ أَبِي سُفْيَانَ أُزَوِّجُكَهَا قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ وَمُعَاوِيَةُ تَجْعَلُهُ كَاتِبًا بَيْنَ يَدَيْكَ . قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ وَتُؤَمِّرُنِي حَتَّى أُقَاتِلَ الْكُفَّارَ كَمَا كُنْتُ أُقَاتِلُ الْمُسْلِمِينَ . قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ أَبُو زُمَيْلٍ وَلَوْلاَ أَنَّهُ طَلَبَ ذَلِكَ مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مَا أَعْطَاهُ ذَلِكَ لأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ يُسْأَلُ شَيْئًا إِلاَّ قَالَ " نَعَمْ " .

जमील तरीन औरत उम्मे हबीबा बिन्ते अबी सुफ़ियान हैं मैं उसकी आपसे शादी करता हूँ। आपने फ़रमाया, 'हाँ!' उन्होंने कहा, मुआविया को आप अपना कातिब बना लें। आपने फ़रमाया, 'हाँ!' उन्होंने कहा, आप मुझे लश्कर का अमीर बना दें, ताकि मैं काफ़िरों से जंग लडूँ, जिस तरह मुसलमानों से काफ़िरों की क़यादत करता हुआ जंग लड़ता था। आपने फ़रमाया, 'हाँ!' अबू ज़ुमैल कहते हैं, अगर वो नबी(ﷺ) से इस चीज़ का मुताल्बा करते तो आप उसे ये चीज़ इनायत न फ़रमाते, लेकिन आपकी आदते मुबारका थी, जब आप से कुछ माँगा जाता तो आप इनायत फ़रमा देते।

फ़ायदा : हज़रत अबू सुफ़ियान सख़्र बिन हर्ब चूंकि कुफ़्र की हालत में जंगों में कुफ़्फ़ार के अमीर होते थे और उनसे मुसलमानों को बहुत तकलीफ़ें उठानी पड़ी थीं और फ़तहे मक्का के मौक़े पर हज़रत अब्बास(रज़ि.) के समझाने-बुझाने से मुसलमान हुए थे। अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिश से आम हालात में मुसलमान नहीं हुए थे। इसलिये मुसलमान उनको ज़्यादा अहमियत नहीं देते थे और फ़तहे मक्का के बाद वो ताइफ़ की जंग में आपके साथ शरीक हुए और जंगे यरमूक में अपने बेटे ज़ियाद(रज़ि.) की कमान में लड़े। बेटे की इमारत गोया उनके लिये ही ऐज़ाज़ था और जिस बेटी की शादी की पेशकश की, वो उम्मे हबीबा की बहन थी, जिसकी शादी की ख़्वाहिश और पेशकश ख़ुद उम्मे हबीबा ने भी की थी। क्योंकि उम्मे हबीबा(रज़ि.) की शादी तो अबू सुफ़ियान के मुसलमान होने से बहुत पहले 6 हिजरी या 7 हिजरी में आप से हो चुकी थी और नअम से आपका मक़सद ये था, ये सआदत व इज़्ज़त तुम्हें उम्मे हबीबा की शादी से हासिल हो चुकी है। इस हदीस़ को इब्ने हज़्म का मौज़ूअ(मनघड़त) क़रार देना दुरुस्त नहीं है क्योंकि इसकी तस्हीह व तत्बीक़ मुम्किन है जैसाकि मैंने वज़ाहत की है नीज़ अबू ज़ैदी की बात भी दुरुस्त नहीं है क्योंकि आप इमारत के तालिब को इमारत नहीं देते थे और यहाँ आपका हाँ कहना इस बात की दलील है कि आप अबू सुफ़ियान को इसका अहल समझते थे इसलिये आपने उसको कोई छोटी-मोटी ज़िम्मेदारी दे दी होगी या बेटे को अमीर बनाना ही उसकी इज़्ज़त व तौक़ीर का बाइस़ था।

बाब 41 : हज़रत जअ़्फ़र बिन अबी तालिब, अस्मा बिन्ते उमैस और उनकी कश्ती वालों के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَأَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ وَأَهْلِ سَفِينَتِهِمْ رضى

(6410) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिजरत का पता चला जबकि हम यमन में थे तो हम में और मेरे दो भाई, आपकी तरफ़ हिजरत की निय्यत से निकले, मैं उन दोनों से छोटा था। एक अबू बुरदा और दूसरे अबू रुह्म थे। हमारे साथ मेरी क़ौम के 50 से ऊपर 53 या 52 आदमी थे। हम एक कश्ती पर सवार हुए, हमारी कश्ती ने हमें हब्शा में शाहे हब्शा नजाशी की तरफ़ जा फेंका। तो हमें उसके पास जअ़्फ़र बिन अबी तालिब और उनके रुफ़क़ा मिल गये। तो हज़रत जअ़्फ़र(रज़ि.) ने कहा, हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इधर भेजा है और हमें यहाँ ठहरने का हुक्म दिया है, तुम भी हमारे साथ ठहर जाओ। तो हम उनके साथ ठहर गये, यहाँ तक कि सारे इकट्ठे वहाँ से आये और हम रसूलुल्लाह(ﷺ) को ख़ैबर की फ़तह के मौक़े पर मिले। आपने हमारा हिस्सा रखा या हमें भी उससे दिया, जो लोग ख़ैबर की फ़तह में मौजूद नहीं थे, उनमें से अपने साथ हाज़िर होने वालों के सिवा किसी को कुछ न दिया, सिर्फ़ हमारी कश्ती वालों जअ़्फ़र और उनके रुफ़क़ा को हाज़िर होने

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنِي بُرَيْدٌ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ بَلَغَنَا مَخْرَجُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ فَخَرَجْنَا مُهَاجِرِينَ إِلَيْهِ أَنَا وَأَخَوَانِ لِي أَنَا أَصْغَرُهُمَا أَحَدُهُمَا أَبُو بُرْدَةَ وَالآخَرُ أَبُو رُهْمٍ - إِمَّا قَالَ بِضْعًا وَإِمَّا قَالَ ثَلاَثَةً وَخَمْسِينَ أَوِ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلاً مِنْ قَوْمِي - قَالَ فَرَكِبْنَا سَفِينَةً فَأَلْقَتْنَا سَفِينَتُنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ فَوَافَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأَصْحَابَهُ عِنْدَهُ فَقَالَ جَعْفَرٌ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعَثَنَا هَا هُنَا وَأَمَرَنَا بِالإِقَامَةِ فَأَقِيمُوا مَعَنَا . فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا - قَالَ - فَوَافَقْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ فَأَسْهَمَ لَنَا - أَوْ قَالَ أَعْطَانَا مِنْهَا -وَمَا قَسَمَ لأَحَدٍ غَابَ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرَ مِنْهَا شَيْئًا إِلاَّ لِمَنْ شَهِدَ مَعَهُ إِلاَّ لأَصْحَابِ سَفِينَتِنَا مَعَ جَعْفَرٍ وَأَصْحَابِهِ قَسَمَ

لَهُمْ مَعَهُمْ - قَالَ - فَكَانَ نَاسٌ مِنَ النَّاسِ يَقُولُونَ لَنَا - يَعْنِي لأَهْلِ السَّفِينَةِ - نَحْنُ سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ .

वालों के साथ हिस्सा दिया। तो कुछ लोग हमें कहते थे, यानी कश्ती वालों को, हम तुमसे हिजरत करने में सबक़ ले गये हैं।
(सहीह बुख़ारी : 3136, 3876)

قَالَ فَدَخَلَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ - وَهِيَ مِمَّنْ قَدِمَ مَعَنَا - عَلَى حَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم زَائِرَةً وَقَدْ كَانَتْ هَاجَرَتْ إِلَى النَّجَاشِيِّ فِيمَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِ فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى حَفْصَةَ وَأَسْمَاءُ عِنْدَهَا فَقَالَ عُمَرُ حِينَ رَأَى أَسْمَاءَ مَنْ هَذِهِ قَالَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ . قَالَ عُمَرُ الْحَبَشِيَّةُ هَذِهِ الْبَحْرِيَّةُ هَذِهِ فَقَالَتْ أَسْمَاءُ نَعَمْ . فَقَالَ عُمَرُ سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ فَنَحْنُ أَحَقُّ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْكُمْ . فَغَضِبَتْ وَقَالَتْ كَلِمَةً كَذَبْتَ يَا عُمَرُ كَلاَّ وَاللَّهِ كُنْتُمْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُطْعِمُ جَائِعَكُمْ وَيَعِظُ جَاهِلَكُمْ وَكُنَّا فِي دَارِ أَوْ فِي أَرْضِ الْبُعَدَاءِ الْبُغَضَاءِ فِي الْحَبَشَةِ وَذَلِكَ فِي اللَّهِ وَفِي رَسُولِهِ وَايْمُ اللَّهِ لاَ أَطْعَمُ طَعَامًا وَلاَ أَشْرَبُ شَرَابًا حَتَّى أَذْكُرَ مَا قُلْتَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله

(6411) अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस(रज़ि.) जो हमारे साथ आने वालों में से थीं, नबी(ﷺ) की बीवी हफ़्सा(रज़ि.) के पास मुलाक़ात के लिये गईं, चूंकि वो भी नजाशी की तरफ़ हिजरत करने वालों में से थीं तो हज़रत उमर, हज़रत हफ़्सा(रज़ि.) के पास आ गये, जबकि हज़रत अस्मा वहीं थीं। चुनाँचे हज़रत उमर(रज़ि.) ने हज़रत अस्मा को देखकर कहा, ये कौन है? उसने कहा, अस्मा बिन्ते उमैस हूँ। हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, ये हब्शा से आने वाली है, ये समुन्द्री सफ़र करने वाली है? तो हज़रत अस्मा(रज़ि.) ने कहा, हाँ! इस पर हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, हम तुमसे हिजरत करने में सबक़त ले गये हैं, इसलिये हम तुमसे रसूलुल्लाह(ﷺ) की क़ुर्बत के ज़्यादा हक़दार हैं। तो वो गुस्से में आ गईं और ये कलिमा कहा, ऐ उमर! तुम ग़लत कहते हो, हर्गिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम! तुम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ रहे हो, आप तुममें से भूखों को खिलाते थे और जाहिलों को नसीहत फ़रमाते थे और हम एक घर या दूर की नापसन्दीदा ज़मीन हब्शा में थे और ये अल्लाह और उसके रसूल के लिये था और अल्लाह की क़सम! मैं उस वक़्त तक न

عليه وسلم وَنَحْنُ كُنَّا نُؤْذَى وَنُخَافُ. وَسَأَذْكُرُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَسْأَلُهُ وَوَاللَّهِ لاَ أَكْذِبُ وَلاَ أَزِيغُ وَلاَ أَزِيدُ عَلَى ذَلِكَ . قَالَ فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّ عُمَرَ قَالَ كَذَا وَكَذَا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَيْسَ بِأَحَقَّ بِي مِنْكُمْ وَلَهُ وَلأَصْحَابِهِ هِجْرَةٌ وَاحِدَةٌ وَلَكُمْ أَنْتُمْ أَهْلَ السَّفِينَةِ هِجْرَتَانِ " . قَالَتْ فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ يَأْتُونِي أَرْسَالاً يَسْأَلُونِي عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ مَا مِنَ الدُّنْيَا شَىْءٌ هُمْ بِهِ أَفْرَحُ وَلاَ أَعْظَمُ فِي أَنْفُسِهِمْ مِمَّا قَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ أَبُو بُرْدَةَ فَقَالَتْ أَسْمَاءُ فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَإِنَّهُ لَيَسْتَعِيدُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنِّي .

खाना खाऊँगी और न मशरूब पियूँगी, जब तक रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास तेरी बात बयान नहीं कर लूँगी। हमें तकलीफ़ पहुँचाई जाती थी और हमें ख़ौफ़ ज़दा किया जाता था और मैं उन चीज़ों का तज़्किरा रसूलुल्लाह(ﷺ) से करूँगी और आपसे पूछूंगी, अल्लाह की क़सम! मैं न झूठ बोलूँगी, न इन्हिराफ़ करूँगी और न इस पर इज़ाफ़ा करूँगी। तो जब रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये, उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! हज़रत उमर(रज़ि.) ने ये-ये बात कही है तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उनका मुझ पर ज़्यादा हक़ नहीं है, उसकी और उसके साथियों की हिज्रत एक है और तुम्हारी कश्ती वालों की, दो हिज्रतें हैं।' हज़रत अस्मा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने अबू मूसा और कश्ती वालों को देखा, वो मेरे पास गिरोह-दर-गिरोह आते हैं और मुझसे ये हदीस़ पूछते हैं, दुनिया की कोई चीज़ नहीं थी, जिस पर वो इससे ज़्यादा ख़ुश हों या उनके नज़दीक अ़ज़्मत वाली हो, जो कुछ रसूलुल्लाह(ﷺ) उनके बारे में कहा, अबू बुरदा(रज़ि.) कहते हैं, हज़रत अस्मा ने बताया, मैंने अबू मूसा को देखा, वो मुझसे ये हदीस़ दोहराते थे।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अस्ह-म लना : जंगे ख़ैबर में शरीक होने वालों की रज़ामन्दी से अहले सफ़ीना(कश्ती वालों) को बराबर का हिस्सेदार क़रार दिया गया था, उनके सिवा किसी और ग़ैर हाज़िर को हिस्सा नहीं मिला था।**(2) अरज़िल् बुअ्दाइल् बुग़ज़ा :** ग़ैर रिश्तेदारों की काफ़िरों की ज़मीन थी।**(3) अर्साल :** गिरोह-दर-गिरोह, टोलियाँ-टोलियाँ, क्योंकि अहले मक्का से मदीना की तरफ़ हिज्रत करने वालों ने सिर्फ़ एक हिज्रत की और अहले मक्का जो हब्शा की तरफ़ हिज्रत कर गये, वहाँ से

मदीना की तरफ़ आने वालों की हिज्रत दोहरी हुई, इस पर ये लोग बहुत शादाँ व फ़रहाँ(खुश) थे और हज़रत अस्मा से आपकी ये बात बराहे रास्त सुनने के लिये उनकी ख़िदमत में शौक़ व ज़ौक़ से टोलियाँ-टोलियाँ बनकर आते और मज़े ले-लेकर आपका फ़रमान सुनते। गोया दोनों जहानों की दौलत उन्हें मयस्सर आ गई और ये हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस, हज़रत जअ़्फ़र बिन अबी तालिब की ज़ौजा मोहतरमा थीं।

बाब 42 : हज़रत सलमान, सुहैब और बिलाल(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ سَلْمَانَ وَصُهَيْبٍ وَبِلاَلٍ رضى الله تعالى عنهم

(6412) हज़रत आइज़ बिन अम्र(रज़ि.) बयान करते हैं कि अबू सुफ़ियान का हज़रत सलमान, सुहैब और बिलाल(रज़ि.) से गुज़र हुआ, जबकि वो कुछ साथियों में बैठे हुए थे तो उन हज़रात ने कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह की तलवारें अभी तक अल्लाह के दुश्मन की गर्दन में अपनी जगह तक नहीं पहुँचीं। तो हज़रत अबू बकर(रज़ि.) ने उन साथियों से कहा, क्या तुम ये बात क़ुरैश के मुअज़्ज़ज़ फ़र्द और उनके सरदार के बारे में कह रहे हो? फिर हज़रत अबू बकर ने आकर ये बात नबी(ﷺ) को बताई तो आपने फ़रमाया, 'ऐ अबू बकर! शायद तूने उन साथियों को नाराज़ कर लिया है, अगर तूने उनको गुस्सा दिला दिया है तो तूने अपने रब को नाराज़ कर लिया है।' चुनाँचे अबू बकर(रज़ि.) उनके पास आये और उनसे पूछा, ऐ मेरे भाइयो! मैंने तुम्हें नाराज़ कर लिया है? उन्होंने कहा, नहीं! अल्लाह तुम्हें माफ़ फ़रमाये, ऐ हमारे महबूब भाई।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ، بْنِ قُرَّةَ عَنْ عَائِذِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ، أَتَى عَلَى سَلْمَانَ وَصُهَيْبٍ وَبِلاَلٍ فِي نَفَرٍ فَقَالُوا وَاللَّهِ مَا أَخَذَتْ سُيُوفُ اللَّهِ مِنْ عُنُقِ عَدُوِّ اللَّهِ مَأْخَذَهَا . قَالَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ أَتَقُولُونَ هَذَا لِشَيْخِ قُرَيْشٍ وَسَيِّدِهِمْ فَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ " يَا أَبَا بَكْرٍ لَعَلَّكَ أَغْضَبْتَهُمْ لَئِنْ كُنْتَ أَغْضَبْتَهُمْ لَقَدْ أَغْضَبْتَ رَبَّكَ " . فَأَتَاهُمْ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ يَا إِخْوَتَاهْ أَغْضَبْتُكُمْ قَالُوا لاَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكَ يَا أُخَىَّ .

फ़ायदा : ये वाक़िया सुलहे हुदैबिया के दौरान का है, जबकि अबू सुफ़ियान अभी मुसलमान नहीं हुए थे चूंकि वो अपनी क़ौम के सरदार और लीडर थे, इसलिये अबू बकर ने कहा, तुम्हें ये अन्दाज़ा इख़्तियार नहीं करना चाहिये। तो हुज़ूर(ﷺ) ने अबू बकर से फ़रमाया, ये बात उन्होंने दीनी ग़ैरत व हमियत के तहत कही है, इसलिये तुम्हें उनकी हौसला शिक्नी नहीं करनी चाहिये थी, जिससे मालूम हुआ, अहले दीन को कम हैसियत लोगों की दिल शिक्नी नहीं करना चाहिये बल्कि उनके साथ इज़्ज़त से पेश आना चाहिये दुआइया कलिमात से पहले 'ला' इस अन्दाज़ से नहीं कहना चाहिये कि वो बद्दुआ बन जाये, इसलिये अबू बकर, इस अन्दाज़ से मना फ़रमाते थे, वो फ़रमाते थे, आफ़ाकल्लाह रहमतकल्लाह कहो, इनसे पहले ला इस्तेमाल न करो।

बाब 43 : अन्सार(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ الأَنْصَارِ رضى الله تعالى عنهم

(6413) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, ये आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई है, 'जब तुममें से दो गिरोहों ने बुज़दिली का इरादा किया, हालांकि अल्लाह उनका मददगार था।' यानी बनू सलमा और बनू हारिसा और हम ये नहीं चाहते थे, ये आयत न उतारी जाती, क्योंकि अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर का फ़रमान है, 'अल्लाह उनका हिमायती है।'
(सहीह बुख़ारी : 4051, 4558)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، - وَاللَّفْظُ لإِسْحَاقَ - قَالاَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ فِينَا نَزَلَتْ {إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلاَ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا} بَنُو سَلِمَةَ وَبَنُو حَارِثَةَ وَمَا نُحِبُّ أَنَّهَا لَمْ تَنْزِلْ لِقَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ {وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا} .

फ़ायदा : ये आयत अन्सार के दो क़बीलों बनू सलमा जो हज़रत जाबिर का ख़ज़रजी क़बीला है और बनू हारिसा जो औस ख़ानदान है के बारे में उस वक़्त उतरी, जबकि उन्होंने देखा, अब्दुल्लाह बिन उबय, अपनी जमाअत के साथ मुसलमानों का साथ छोड़ गया है, जिसकी वजह से मुसलमानों की तादाद कम हो गई है तो उनके अंदर कोताह हिम्मती पैदा होने लगी, लेकिन अल्लाह ने उनके पांव जमा दिये, ये ग़ज़्व-ए-उहुद का वाक़िया है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَلأَبْنَاءِ الأَنْصَارِ وَأَبْنَاءِ أَبْنَاءِ الأَنْصَارِ " .

(6414) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! अन्सार को, अन्सार के बेटों को, अन्सार के बेटों के बेटों को माफ़ फ़रमा।'
(तिर्मिज़ी : 3902)

وَحَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6415) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي أَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، - وَهُوَ ابْنُ عَمَّارٍ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ - أَنَّ أَنَسًا، حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم اسْتَغْفَرَ لِلأَنْصَارِ - قَالَ - وَأَحْسِبُهُ قَالَ " وَلِذَرَارِيِّ الأَنْصَارِ وَلِمَوَالِي الأَنْصَارِ " . لاَ أَشُكُّ فِيهِ .

(6416) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अन्सार के लिये बख़्शिश तलब करते हुए ये भी फ़रमाया, 'अन्सार की औलाद को और अन्सार के ग़ुलामों को।' मुझे आपके इस फ़रमान के बारे में शक नहीं है।(ये रावी का क़ौल है)

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، - وَهُوَ ابْنُ صُهَيْبٍ - عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَأَى صِبْيَانًا وَنِسَاءً مُقْبِلِينَ مِنْ عُرْسٍ فَقَامَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ مُمْثِلاً فَقَالَ "

(6417) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने कुछ बच्चों और औरतों को शादी से आते हुए देखा तो नबी(ﷺ) सीधे खड़े हो गये और फ़रमाया, 'अल्लाह गवाह है, तुम मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब हो, अल्लाह गवाह है, तुम मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब हो।' आपकी मुराद अन्सार थे।

اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَىَّ اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَىَّ " . يَعْنِي الأَنْصَارَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : मुम्सिलन् : सीधे होकर।

(6418) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में एक अन्सारी औरत हाज़िर हुई तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उससे अकेले में बात की और तीन बार फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! तुम मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब हो।'

(सहीह बुख़ारी : 3786, 5234, 6645)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنْ غُنْدَرٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ جَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ- قَالَ - فَخَلاَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَقَالَ " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّكُمْ لأَحَبُّ النَّاسِ إِلَىَّ " . ثَلاَثَ مَرَّاتٍ

(6419) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6420) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अन्सार मेरा मेअ़दा और ख़ास ज़म्बील हैं और लोगों की तादाद बढ़ती रहेगी और ये कम होते जायेंगे, तुम इनके नेक लोगों के रवय्ये को क़ुबूल करना और गुनाहगारों के रवय्ये से दरगुज़र करना।'

(सहीह बुख़ारी : 3801, तिर्मिज़ी : 3907)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِنَّ الأَنْصَارَ كَرِشِي وَعَيْبَتِي وَإِنَّ النَّاسَ سَيَكْثُرُونَ وَيَقِلُّونَ فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَاعْفُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) कर्श : मेअ़दा जहाँ ग़िज़ा ठहरती है, यानी ये मेरे मोतमिद लोग हैं और मख़्सूस साथी हैं।(2) **अ़ैबती :** वो बर्तन या गठहरी जिसमें इंसान अपनी क़ीमती चीज़ों को सम्भालता है, यानी ये मेरे राज़दाँ हैं।

باب فِي خَيْرِ دُورِ الأَنْصَارِ رضى الله عنهم

बाब 44 : अन्सार के बेहतरीन घराने

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ " . فَقَالَ سَعْدٌ مَا أُرَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلاَّ قَدْ فَضَّلَ عَلَيْنَا . فَقِيلَ قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى كَثِيرٍ .

(6421) हज़रत अबू उसैद(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अन्सारी घरानों में सबसे बेहतर क़बीला, बनू नज्जार हैं, फिर बनू अ़ब्दे अश्हल हैं, फिर हारिस़ बिन ख़ज़रज की औलाद है, फिर साइदा की औलाद है और तमाम अन्सारी ख़ानदानों में ख़ैर मौजूद है।' हज़रत सअ़द(बिन इबादा रज़ि.) ने कहा, मेरा ख़याल है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दूसरों को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है, उन्हें कहा गया, तुम्हें भी बहुत सों पर फ़ज़ीलत दी है।

(सहीह बुख़ारी : 3789, 3807, तिर्मिज़ी : 3911)

फ़ायदा : इस्लाम के मैयार के मुताबिक़ फ़ज़ीलत व बरतरी का दारोमदार, दीन को पहले इख़्तियार करने, उस पर अ़मल पैरा होने और उसकी नुसरत व हिमायत(मदद करने) पर है। जैसाकि फ़रमाने बारी है, 'तुममें से अल्लाह के यहाँ सबसे मुअ़ज़्ज़ज़ और मोहतरम वो है, जो उसकी हुदूद व अहकाम का सबसे ज़्यादा पाबंद है।'(सूरह हुजुरात : 13) और आपने बनू साइदा जिसके सरदार हज़रत सअ़द बिन इबादा(रज़ि.) थे, को चौथे मर्तबे पर रखा, हालांकि अन्सारी क़बीले और भी बहुत से हैं, इसलिये उन्हें जवाब दिया गया, तुम्हें बहुत सारे क़बीलों पर तरजीह दी गई है।

(6422) इमाम साहब इसके हम मानी रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعْتُ أَنَسًا، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم نَحْوَهُ .

(6423) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अनस(रज़ि.) से बयान करते हैं, लेकिन इसमें हज़रत सअ़द का क़ौल नहीं किया गया।
(सहीह बुख़ारी : 5300, तिर्मिज़ी : 3910)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَابْنُ، رُمْحٍ عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ لاَ يَذْكُرُ فِي الْحَدِيثِ قَوْلَ سَعْدٍ .

(6424) हज़रत अबू उसैद(रज़ि.) ने इब्ने उतबा के यहाँ ख़ुत्बा देते हुए बयान किया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अन्सार का बेहतरीन ख़ानदान बनू नज्जार है, बनू अ़ब्दे अश्हल का घराना है, बनू हारिस बिन ख़ज़रज का क़बीला है और बनू साइदा का ख़ानदान है।' अल्लाह की क़सम! अगर मैं(अपनी तरफ़ से) किसी घराने को तरजीह देता तो अपने ख़ानदान को तरजीह देता।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ عَبَّادٍ - حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ طَلْحَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا أُسَيْدٍ، خَطِيبًا عِنْدَ ابْنِ عُتْبَةَ فَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ دَارُ بَنِي النَّجَّارِ وَدَارُ بَنِي عَبْدِ الأَشْهَلِ وَدَارُ بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ وَدَارُ بَنِي سَاعِدَةَ " . وَاللَّهِ لَوْ كُنْتُ مُؤْثِرًا بِهَا أَحَدًا لآثَرْتُ بِهَا عَشِيرَتِي .

फ़ायदा : हज़रत अबू उसैद(रज़ि.) बनू साइदा से ताल्लुक़ रखते हैं, जैसाकि आगे आ रहा है और वो इस शुब्हे का इज़ाला करना चाहते हैं कि ये तर्तीब मैंने क़ायम की है कि अगर ये तर्तीब मुझे क़ायम करनी होती तो सबसे पहले अपने घराने का नाम लेता।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، قَالَ شَهِدَ أَبُو سَلَمَةَ لَسَمِعَ أَبَا أُسَيْدٍ الأَنْصَارِيَّ يَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ " . قَالَ أَبُو سَلَمَةَ قَالَ أَبُو أُسَيْدٍ أُتَّهَمُ أَنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَوْ كُنْتُ كَاذِبًا لَبَدَأْتُ بِقَوْمِي بَنِي سَاعِدَةَ . وَبَلَغَ ذَلِكَ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فَوَجَدَ فِي نَفْسِهِ وَقَالَ خُلِّفْنَا فَكُنَّا آخِرَ الأَرْبَعِ أَسْرِجُوا لِي حِمَارِي آتِي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَكَلَّمَهُ ابْنُ أَخِيهِ سَهْلٌ فَقَالَ أَتَذْهَبُ لِتَرُدَّ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَعْلَمُ أَوَلَيْسَ حَسْبُكَ أَنْ تَكُونَ رَابِعَ أَرْبَعٍ . فَرَجَعَ وَقَالَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ وَأَمَرَ بِحِمَارِهِ فَحُلَّ عَنْهُ .

(6425) हज़रत अबू उसैद अन्सारी ये शहादत देते थे कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अन्सारी घरानों में बेहतरीन घराना बनू नज्जार हैं, फिर बनू अब्दे अश्हल हैं, फिर बनू हारिस़ बिन ख़ज़रज हैं, फिर बनू साइदा हैं और अन्सार के तमाम घरानों में बेहतरी है।' अबू उसैद(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ ग़लत बात मन्सूब कर सकता हूँ? अगर मुझे झूठ बोलना होता तो शुरू अपनी क़ौम, बनू साइदा से करता। ये हदीस़ हज़रत सअद बिन उबादा(रज़ि.) तक पहुँची तो उन्होंने दिल में रंज महसूस किया और कहा, हमें पीछे छोड़ दिया गया और हमें चार में आख़िर में रखा गया। मेरे गधे पर ज़ेन डालो, ताकि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। तो उनके भतीजे, सहल(रज़ि.) ने उनसे बातचीत की और कहा, क्या तुम रसूलुल्लाह(ﷺ) की तर्दीद करने जाना चाहते हो? रसूलुल्लाह(ﷺ) ही बेहतर जानते हैं, क्या तुम्हारे ये बात काफ़ी नहीं है कि तुम चार में चौथे नम्बर हो। तो वो अपने नज़रिये से बाज़ आ गये और कहने लगे, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं और अपने गधे से ज़ेन उतारने का हुक्म दिया।

(सहीह बुख़ारी : 6053, तिर्मिज़ी : 3910)

(6426) हज़रत अबू उसैद अन्सारी(रज़ि.) बयान करते हैं, उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये सुना, 'अन्सार से बेहतरीन या अन्सार का बेहतरीन घराना' ख़ानदानों का तज़्किरा के सिलसिले में ऊपर की हदीस़ बयान की और सअ़द बिन उ़बादा(रज़ि.) का वाक़िया बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيِّ بْنِ بَحْرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ، عَنْ يَحْيَى، بْنِ أَبِي كَثِيرٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ أَبَا أُسَيْدٍ الأَنْصَارِيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ "خَيْرُ الأَنْصَارِ أَوْ خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ". بِمِثْلِ حَدِيثِهِمْ فِي ذِكْرِ الدُّورِ وَلَمْ يَذْكُرْ قِصَّةَ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رضى الله عنه

(6427) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जबकि आप मुसलमानों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त में तशरीफ़ फ़रमा थे, फ़रमाया, 'क्या मैं तुम्हें अन्सार का बेहतरीन घराना बताऊँ?' हाज़िरीन ने कहा, जी हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल! रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बनू अ़ब्दुल अश्हल।' उन्होंने पूछा, फिर कौन? फ़रमाया, 'फिर बनू हारिस़ बिन ख़ज़रज।' उन्होंने पूछा, फिर कौन? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'फिर बनू साइदा।' हाज़िरीन ने पूछा, फिर कौन? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'बनू साइदा।' हाज़िरीन ने पूछा, फिर कौन? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'फिर अन्सार के तमाम घरानों में ख़ैर है।' तो हज़रत सअ़द बिन उबादा(रज़ि.) गुस्से में उठे और कहा, क्या हम चार में आख़िर नम्बर पर हैं? जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनके घराने का

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، -وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ فِي مَجْلِسٍ عَظِيمٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ " أُحَدِّثُكُمْ بِخَيْرِ دُورِ الأَنْصَارِ " . قَالُوا نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ " . قَالُوا ثُمَّ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " ثُمَّ بَنُو النَّجَّارِ " . قَالُوا ثُمَّ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ " . قَالُوا ثُمَّ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ " . قَالُوا ثُمَّ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " ثُمَّ فِي

كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ " . فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ مُغْضَبًا فَقَالَ أَنَحْنُ آخِرُ الأَرْبَعِ حِينَ سَمَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَارَهُمْ فَأَرَادَ كَلاَمَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَهُ رِجَالٌ مِنْ قَوْمِهِ اجْلِسْ أَلاَ تَرْضَى أَنْ سَمَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَارَكُمْ فِي الأَرْبَعِ الدُّورِ الَّتِي سَمَّى فَمَنْ تَرَكَ فَلَمْ يُسَمِّ أَكْثَرُ مِمَّنْ سَمَّى . فَانْتَهَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ عَنْ كَلاَمِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

नाम लिया, चुनाँचे उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) से बात करना चाही तो उसे उसकी क़ौम के कुछ लोगों ने कहा, बैठ जा! क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तुम्हारे ख़ानदान का नाम उन चार घरानों में लिया है, जिनकी आपने निशानदेही फ़रमाई है? और आपने जिन घरानों का तज़्किरा छोड़ दिया और उनका नाम नहीं लिया, वो उनसे ज़्यादा हैं, जिनका नाम लिया। तो हज़रत सअ़द बिन इबादा(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बात करने से रुक गये।

फ़ायदा : अबू हुरैरह(रज़ि.) की इस रिवायत में पहले दर्जे पर बनू अश्हल को रखा गया है, लेकिन हज़रत अबू उसैद और अबू हुमैद(रज़ि.) दोनों, बनू नज्जार को पहले दर्जे पर बयान करते हैं और हज़रत अनस(रज़ि.) जो बनू नज्जार से हैं, वो भी बनू नज्जार को पहले मर्तबे पर बयान करते हैं और बनू नज्जार को ये इम्तियाज़(फ़र्क़) हासिल है कि आपके दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब की वालिदा, बनू नज्जार से थीं और आप सबसे पहले मदीना में बनू नज्जार के यहाँ ही ठहरे थे। नीज़ हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की रिवायत में बनू नज्जार और बनू अ़ब्दुल अश्हल की तक़्दीम व ताख़ीर में इख़्तिलाफ़ है। इसलिये सहीह बात यही है कि पहला दर्जा बनू नज्जार को हासिल है और बनू अश्हल का दूसरा दर्जा है।(फ़तहुल बारी, जिल्द 7, पेज नं. 146-147)

باب فِي حُسْنِ صُحْبَةِ الأَنْصَارِ رضى الله عنهم

बाब 45 : अन्सार(रज़ि.) के साथ बेहतरीन रिफ़ाक़त इख़्तियार करना

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ، عَرْعَرَةَ - وَاللَّفْظُ لِلْجَهْضَمِيِّ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ

(6428) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं एक सफ़र में हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली(रज़ि.) के साथ में निकला और वो मेरी ख़िदमत करते थे, मैंने

عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ خَرَجْتُ مَعَ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَجَلِيِّ فِي سَفَرٍ فَكَانَ يَخْدُمُنِي فَقُلْتُ لَهُ لاَ تَفْعَلْ . فَقَالَ إِنِّي قَدْ رَأَيْتُ الأَنْصَارَ تَصْنَعُ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا آلَيْتُ أَنْ لاَ أَصْحَبَ أَحَدًا مِنْهُمْ إِلاَّ خَدَمْتُهُ . زَادَ ابْنُ الْمُثَنَّى وَابْنُ بَشَّارٍ فِي حَدِيثِهِمَا وَكَانَ جَرِيرٌ أَكْبَرَ مِنْ أَنَسٍ . وَقَالَ ابْنُ بَشَّارٍ أَسَنَّ مِنْ أَنَسٍ .

उनसे कहा, ऐसा न कीजिये। तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने अन्सार को रसूलुल्लाह(ﷺ) से एक काम(मुहब्बत व ख़िदमत करते) देखा है(इसलिये मैंने) क़सम उठाई है कि मैं उनमें से जिसका भी रफ़ीक़े सफ़र बनूँगा, उसकी ख़िदमत करूँगा। इब्ने बश्शार कहते हैं, हज़रत जरीर(रज़ि.) हज़रत अनस(रज़ि.) से उम्र रसीदा थे, एक रिवायत में है, जरीर(रज़ि.) अनस(रज़ि.) से बड़े थे।
(सहीह बुख़ारी : 2888)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, जो इंसान रसूलुल्लाह(ﷺ) से मुहब्बत रखता है और आपके तरीक़े को अपनाता है, वो क़ाबिले तारीफ़ है। सहाबा किराम अन्सार की इसलिये तौक़ीर करते थे कि वो आपसे मुहब्बत करते थे, वो आपके ख़िदमत गुज़ार थे।

باب دُعَاءِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم لِغِفَارَ وَأَسْلَمَ

बाब 46 : नबी(ﷺ) की ग़िफ़ार और अस्लम क़बीले के लिये दुआ

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ قَالَ أَبُو ذَرٍّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ " .

(6429) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ग़िफ़ार की अल्लाह मग़्फ़िरत फ़रमाये और अस्लम को सलामत रखे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : सअलम : सलम के मानी में है जिस तरह क़ातलहुल्लाह मा क़ातल, क़तलहू के मानी में है कि उनको सहीह व सलामत रखे।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ مَهْدِيٍّ، قَالَ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ، الْجَوْنِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " ائْتِ قَوْمَكَ فَقُلْ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَغِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا " .

(6430) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया, 'अपनी क़ौम को जाकर कहो, रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, 'अस्लम को अल्लाह सलामत रखे और ग़िफ़ार की अल्लाह मग़्फ़िरत फ़रमाये।'

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ

(6431) इमाम साहब यही रिवायत अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ وَسُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ قَالُوا حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ، الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنِي وَرْقَاءُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ

(6432) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) और हज़रत जाबिर(रज़ि.) से बयान करते हैं, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अस्लम को अल्लाह सलामत रखे और ग़िफ़ार की अल्लाह मग़्फ़िरत फ़रमाये।'
(सहीह बुख़ारी : 3514)

بْنُ عُبَادَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ نُمَيْرٍ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي عَاصِمٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، ح وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، كُلُّهُمْ قَالَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَغِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا " .

(6433) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अस्लम को अल्लाह सलामत रखे और ग़िफ़ार की मग़्फ़िरत फ़रमाये, याद रखना ये बात मैंने नहीं कही, बल्कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाई है।'

وَحَدَّثَنِي حُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ خُثَيْمِ بْنِ عِرَاكٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَغِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا أَمَا إِنِّي لَمْ أَقُلْهَا وَلَكِنْ قَالَهَا اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ " .

(6434) हज़रत ख़ुफ़ाफ़(रज़ि.) बिन ईमा ग़िफ़ारी(रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नमाज़ में दुआ की, 'ऐ अल्लाह! बनू लिहयान, रिअ्ल, ज़क्वान और उसय्या पर जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की, लानत भेज। ग़िफ़ार की अल्लाह मग़्फ़िरत फ़रमाये और अस्लम को अल्लाह सलामत रखे।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنِ اللَّيْثِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ أَبِي أَنَسٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ خُفَافِ بْنِ إِيمَاءَ الْغِفَارِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي صَلاَةٍ " اللَّهُمَّ الْعَنْ بَنِي لِحْيَانَ وَرِعْلاً وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَوُا اللَّهَ وَرَسُولَهُ غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ " .

फ़ायदा : बनू लिहयान, रिअ्ल, ज़क्वान और उसय्या चार क़बीलों ने बिअ्रे मऊना के वाक़िये में सत्तर(70) क़ुर्रा, सहाबा किराम के साथ बद अहदी करते हुए उनको शहीद कर दिया था, इसलिये आपने उनके ख़िलाफ़ एक माह तक दुआए क़ुनूत की।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ، عُمَرَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ " .

(6435) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ग़िफ़ार की अल्लाह मग़्फ़िरत फ़रमाये और अस्लम को सालिम रखे और उसय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की।'
(तिर्मिज़ी : 3941)

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَالْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، كُلُّهُمْ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ وَفِي حَدِيثِ صَالِحٍ وَأُسَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ذَلِكَ عَلَى الْمِنْبَرِ.

(6436) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से इब्ने उमर(रज़ि.) की ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, सालेह और उसामा की रिवायत में है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ये बात मिम्बर पर फ़रमाई थी।
(सहीह बुख़ारी : 3513)

وَحَدَّثَنِيهِ حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ، عَنْ يَحْيَى، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ عُمَرَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . مِثْلَ حَدِيثِ هَؤُلاَءِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ .

(6437) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

बाब 47 : ग़िफ़ार, अस्लम, जुहैना, अश्जअ, मुज़ैना, दौस और तय्य के फ़ज़ाइल

باب مِنْ فَضَائِلِ غِفَارَ وَأَسْلَمَ وَجُهَيْنَةَ وَأَشْجَعَ وَمُزَيْنَةَ وَتَمِيمٍ وَدَوْسٍ وَطَيِّئٍ

(6438) हज़रत अबू अय्यूब(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अन्सार, मुज़ैना, जुहैना, ग़िफ़ार, अश्जअ और(ग़तफ़ानी क़बीले के) बनू अब्दुल्लाह के जो लोग हैं, वो लोगों के सिवा मेरे मुआविन और साथी हैं और अल्लाह और उसका रसूल उनके दोस्त हैं।'
(तिर्मिज़ी : 3940, 3493, 3941)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - وَهُوَ ابْنُ هَارُونَ - أَخْبَرَنَا أَبُو مَالِكٍ، الأَشْجَعِيُّ عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الأَنْصَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ وَغِفَارُ وَأَشْجَعُ وَمَنْ كَانَ مِنْ بَنِي عَبْدِ اللَّهِ مَوَالِيَّ دُونَ النَّاسِ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ مَوْلاَهُمْ " .

फ़ायदा : मुज़ैना, जुहैना, ग़िफ़ार, अश्जअ और ग़तफ़ान का ख़ानदान बनू अब्दुल उज़्ज़ा जिसको रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बनू अब्दुल्लाह का नाम दिया, जाहिलिय्यत के दौर में शर्फ़ व मकान और कुव्वत व ताक़त के ऐतबार से बनू आमिर बिन सअ्सआ और बनू तमीम वग़ैरह से कमतर समझे जाते थे, लेकिन जब उन्होंने इस्लाम लाने में पेश क़दमी की तो शर्फ़ व सरफ़राज़ी का मक़ाम उनको हासिल हो गया और जाहिलिय्यत के मुअ़ज़्ज़ज़ ताक़तवर क़बीले पीछे रह गये।

(6439) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरैश, अन्सार, मुज़ैना, जुहैना, अस्लम, ग़िफ़ार और अश्जअ मेरे मुआविन हैं और उनका अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कोई सरपरस्त व दोस्त नहीं है।'
(सहीह बुख़ारी : 3504, 3512)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قُرَيْشٌ وَالأَنْصَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ وَأَشْجَعُ مَوَالِيَّ لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ " .

(6440) इमाम साहब एक और उस्ताद से ये रिवायत बयान करते हैं, लेकिन इस हदीस़ में सअ़द बिन इब्राहीम ने कुछ क़बीलों के लिये जज़्म की बजाए, फ़ीमा अअ्लमु (मेरे इल्म की हद तक) कहा है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي الْحَدِيثِ قَالَ سَعْدٌ فِي بَعْضِ هَذَا فِيمَا أَعْلَمُ .

(6441) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अस्लम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और जो लोग जुहैना ख़ानदान से हैं या जुहैना, बनू तमीम, बनू आमिर और दोनों हलीफ़ों, असद और ग़तफ़ान से बेहतर हैं।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ "أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَمُزَيْنَةُ وَمَنْ كَانَ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ جُهَيْنَةُ خَيْرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَبَنِي عَامِرٍ وَالْحَلِيفَيْنِ أَسَدٍ وَغَطَفَانَ

(6442) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! यक़ीनन ग़िफ़ार, अस्लम, मुज़ैना और जो जुहैना से ताल्लुक़ रखते हैं या जुहैना और जो लोग मुज़ैना से हैं, क़यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक, असद, तय्य औ ग़तफ़ान से होंगे।'
(तिर्मिज़ी : 3950)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ح وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ، الآخَرَانِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ الأَعْرَجِ، قَالَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَغِفَارُ وَأَسْلَمُ وَمُزَيْنَةُ وَمَنْ كَانَ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ قَالَ

جُهَيْنَةُ وَمَنْ كَانَ مِنْ مُزَيْنَةَ خَيْرٌ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَسَدٍ وَطَيِّئٍ وَغَطَفَانَ " .

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَيَعْقُوبُ الدَّوْرَقِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِيَانِ ابْنَ عُلَيَّةَ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لأَسْلَمُ وَغِفَارُ وَشَىْءٌ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ أَوْ شَىْءٌ مِنْ جُهَيْنَةَ وَمُزَيْنَةَ خَيْرٌ عِنْدَ اللَّهِ - قَالَ أَحْسِبُهُ قَالَ - يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَسَدٍ وَغَطَفَانَ وَهَوَازِنَ وَتَمِيمٍ " .

(6443) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अस्लम, ग़िफ़ार, मुज़ैना से कुछ लोग और जुहैना या जुहैना के कुछ लोग और मुज़ैना, अल्लाह के नज़दीक मेरे ख़याल में कहा, क़यामत के दिन, असद और ग़तफ़ान, हवाज़िन और बनू तमीम से बेहतर होंगे।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، سَمِعْتُ عَبْدَ، الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ، جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ إِنَّمَا بَايَعَكَ سُرَّاقُ الْحَجِيجِ مِنْ أَسْلَمَ وَغِفَارَ وَمُزَيْنَةَ - وَأَحْسِبُ جُهَيْنَةَ -مُحَمَّدٌ الَّذِي شَكَّ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَمُزَيْنَةُ - وَأَحْسِبُ جُهَيْنَةَ - خَيْرًا مِنْ

(6444) अब्दुर्रहमान(रह.) बिन अबी बकरह(रज़ि.) अपने बाप से बयान करते हैं कि अक़रअ बिन हाबिस(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आये और कहा, आपकी बैअ़त तो बस हाजियों की चोरी करने वालों अस्लम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और मेरे ख़याल, उसने जुहैना का नाम भी लिया, ने की है। शक का इज़हार मुहम्मद ने किया है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बताओ! अगर अस्लम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और मेरे ख़याल में जुहैना भी कहा, बनू तमीम, बनू आमिर, असद और ग़तफ़ान से बेहतर होंगे तो क्या वो ख़ाइब और ख़ासिर हुए?' तो उसने कहा, हाँ! आपने फ़रमाया, 'तो उस ज़ात की क़सम

जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है! वो इनसे बेहतर हैं।' इब्ने अबी शैबा की रिवायत में ये नहीं है कि शक का इज़हार मुहम्मद ने किया।
(सहीह बुख़ारी : 3515, 3516, 6635, तिर्मिज़ी : 3952)

بَنِي تَمِيمٍ وَبَنِي عَامِرٍ وَأَسَدٍ وَغَطَفَانَ أَخَابُوا وَخَسِرُوا " . فَقَالَ نَعَمْ . قَالَ " فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُمْ لأَخْيَرُ مِنْهُمْ " . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ مُحَمَّدٌ الَّذِي شَكَّ .

फ़ायदा : ग़िफ़ार के लोग जाहिलिय्यत के दौर में रहज़न और डाकू थे और मुम्किन है दूसरे क़बीले के कुछ लोगों ने भी हाजियों की राह मारी हो या उनकी चोरी की हो। लेकिन इस्लाम लाने के बाद उन्होंने ये हरकत नहीं की। इसलिये इस्लाम में पेश क़दमी की बिना पर, उनको पहला मक़ाम मिल गया और जो क़बीले मुअज़्ज़ज़ समझे जाते थे, वो इस्लाम लाने में पीछे रह गये, इसलिये उनका मक़ाम घट गया। हज़रत अक़रअ बिन हाबिस बनू तमीम से थे, जंगे यरमूक में अपने दस बेटों के साथ शहीद हुए। मुहम्मद से मुराद सनद में रावी मुहम्मद बिन अबी याक़ूब है मुहम्मद बिन जअ़फ़र नहीं।

(6445) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, इसमें जुहैना का नाम बिला शक बयान किया गया है।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنِي سَيِّدُ بَنِي، تَمِيمٍ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ الضَّبِّيُّ بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ قَالَ " وَجُهَيْنَةُ " . وَلَمْ يَقُلْ أَحْسِبُ .

(6446) अब्दुर्रहमान बिन अबी बकरह(रह.) अपने बाप से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अस्लम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और जुहैना के क़बीले, बनू तमीम, बनू आमिर और दो हलीफ़ों बनू असद और ग़तफ़ान से बेहतर हैं।'

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ عَبْدِ، الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ خَيْرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَمِنْ بَنِي عَامِرٍ وَالْحَلِيفَيْنِ بَنِي أَسَدٍ وَغَطَفَانَ " .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، ح وَحَدَّثَنِيهِ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6447) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ جُهَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ خَيْرًا مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَبَنِي عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غَطَفَانَ وَعَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ " . وَمَدَّ بِهَا صَوْتَهُ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَدْ خَابُوا وَخَسِرُوا . قَالَ " فَإِنَّهُمْ خَيْرٌ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ " أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ جُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ " .

(6448) अ़ब्दुर्रहमान(रह.) बिन अबी बक्रह(रज़ि.) अपने बाप से बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बताओ, अगर जुहैना, अस्लम और ग़िफ़ार क़बीले बनू तमीम, बनू अ़ब्दुल्लाह बिन ग़तफ़ान और आ़मिर बिन सअ़सआ़ से अफ़ज़ल हों?' और आपने आवाज़ बुलंद की तो हाज़िरीन ने कहा, वो नाकाम हुए और नुक़सान उठाया। आपने फ़रमाया, 'सो वो बेहतर हैं और इमाम कुरैब की रिवायत में है, 'बताओ! अगर जुहैना, मुज़ैना, अस्लम और ग़िफ़ार क़बीले।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ أَتَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقَالَ لِي إِنَّ أَوَّلَ صَدَقَةٍ بَيَّضَتْ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَوُجُوهَ أَصْحَابِهِ صَدَقَةُ طَيِّئٍ جِئْتَ بِهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ .

(6449) हज़रत अ़दी बिन हातिम(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो उन्होंने मुझे बताया, पहला सदक़ा जिससे रसूलुल्लाह(ﷺ) का चेहरा और आपके साथियों का चेहरा(मसर्रत से) रोशन हुआ, वो तय्य का सदक़ा है, जो तुम रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास लाये थे।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَدِمَ الطُّفَيْلُ وَأَصْحَابُهُ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ دَوْسًا قَدْ كَفَرَتْ وَأَبَتْ فَادْعُ اللَّهَ عَلَيْهَا . فَقِيلَ هَلَكَتْ دَوْسٌ فَقَالَ " اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَائْتِ بِهِمْ " .

(6450) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत तुफ़ैल(रज़ि.) और उनके साथी रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! दौस के लोग कुफ़्र पर इसरार कर रहे हैं, उनके ख़िलाफ़ दुआ फ़रमायें, तो कहा गया, दौस हलाक हो गये। लेकिन आपने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत दे और उन्हें यहाँ ले आ।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، قَالَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ لاَ أَزَالُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ مِنْ ثَلاَثٍ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " هُمْ أَشَدُّ أُمَّتِي عَلَى الدَّجَّالِ " . قَالَ وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " هَذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمِنَا " . قَالَ وَكَانَتْ سَبِيَّةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَعْتِقِيهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ " .

(6451) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं बनू तमीम से तीन बातों के सबब, जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी हैं, मुहब्बत करता रहूँगा। मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'वो मेरी उम्मत में से सबसे ज़्यादा दज्जाल के लिये सख़्त साबित होंगे।' और आपके पास उनके सदक़ात पहुँचे तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये हमारी क़ौम के सदक़ात हैं।' और उनमें से एक लौण्डी हज़रत आइशा(रज़ि.) की मिल्कियत में थी तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसे आज़ाद कर दो, क्योंकि ये हज़रत इस्माईल की औलाद में से है।'

(सहीह बुख़ारी : 2542)

फ़ायदा : बनू तमीम चूंकि हज़रत इस्माईल की औलाद से हैं, इसलिये आपने उनको अपनी क़ौम क़रार दिया, बनू तमीम का नसब आपके साथ इलियास बिन मज़्र पर जाकर मिल जाता है। ऊपर वाली रिवायत में पाँच क़बीलों को बनू तमीम पर बरतरी और फ़ज़ीलत बख़्शी गई है तो इसका ये मतलब नहीं है, ये किसी ख़ूबी या कमाल के हामिल नहीं है और हर क़िस्म की फ़ज़ीलत से महरूम हैं।

(6452) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं बनू तमीम से, तीन बातों के बाद जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से उनके बारे में सुनी हैं, मुहब्बत करता रहूँगा, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

(सहीह बुख़ारी : 2543)

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ لاَ أَزَالُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ بَعْدَ ثَلاَثٍ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُهَا فِيهِمْ . فَذَكَرَ مِثْلَهُ .

फ़ायदा : जाहिलिय्यत के दौर में हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) के क़बीले दौस और बनू तमीम में अदावत पाई जाती थी, इसलिये अबू हुरैरह(रज़ि.) बनू तमीम से बुग़्ज़ रखते थे और ये तीन बातें सुनने के बाद उनसे मुहब्बत करने लगे।

(6453) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, बनू तमीम में मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से तीन ख़ूबियाँ सुनी हैं, उसके बाद से मैं उनसे मुहब्बत करता हूँ, आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि आपने फ़रमाया, 'वो लोग लड़ाईयों में सबसे ज़्यादा सख़्त हैं।' और दज्जाल का तज़्किरा नहीं किया।

وَحَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، حَدَّثَنَا مَسْلَمَةُ بْنُ عَلْقَمَةَ الْمَازِنِيُّ، إِمَامُ مَسْجِدِ دَاوُدَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ ثَلاَثُ خِصَالٍ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي بَنِي تَمِيمٍ لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُمْ بَعْدُ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِهَذَا الْمَعْنَى غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " هُمْ أَشَدُّ النَّاسِ قِتَالاً فِي الْمَلاَحِمِ " . وَلَمْ يَذْكُرِ الدَّجَّالَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : मलाहिम : मल्हमह की जमा है, जंगो-जिदाल, लड़ाई का मअ़रका, जब ये लोग दज्जाल के मअ़रक में सबसे सख़्त होंगे तो बाक़ी मअ़रकों में बिल्औला(कहीं ज़्यादा) सख़्त होंगे।

बाब 48 : बेहतरीन लोग

باب خِيَارِ النَّاسِ

(6454) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम लोगों को मअ़दिनयात की तरह पाओगे, तो जो लोग

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ

بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَجِدُونَ النَّاسَ مَعَادِنَ فَخِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقُهُوا وَتَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ فِي هَذَا الأَمْرِ أَكْرَهُهُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ يَقَعَ فِيهِ وَتَجِدُونَ مِنْ شِرَارِ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ ".

जाहिलिय्यत के दौर में बेहतर थे, वो इस्लाम के दौर में भी बेहतर हैं, बशर्तेकि दीन की सूझ-बूझ हासिल कर लें या उसमें मिल्का पैदा कर लें और तुम दीन के मामले या हुकूमत व इक़्तिदार में उन लोगों को बेहतर पाओगे, जो उसको सबसे ज़्यादा नापसंद करते थे, जबकि वो इसमें दाख़िल नहीं हुए थे और तुम बदतरीन लोग उनको पाओगे, जो दो रुख़े हैं, जिनके दो चेहरे हैं, जो इन लोगों के पास एक चेहरे से आते हैं और इनके पास दूसरे चेहरे से।'

मुफ़रदातुल हदीस :(1) अन्नासु मआदिन : लोग मअदनियात की तरह हैं और मअदनियात की ख़ूबियाँ और कमालात और उनकी क़द्रो-क़ीमत अल्लाह तआला ने तबई तौर पर अलग-अलग रखी है।

सोना-चाँदी का दर्जा बराबर नहीं है, लअल व जवाहर और पत्थर का दर्जा बराबर नहीं है। यही हालत इंसानी क़बीलों और ख़ानदानों की है। अल्लाह तआला ने क़ुदरती तौर पर उनमें अलग सिफ़ात और ख़ुसूसियात रखी हैं, जिनकी बिना पर उन्हें एक-दूसरे पर शर्फ़ और बरतरी हासिल है। लेकिन ये चीज़ चूंकि क़ुदरती है, कसबी नहीं है, इसलिये मैयारे फ़ज़ीलत नहीं है। मैयारे फ़ज़ीलत कसबी चीज़ है, जिसमें इंसान का दख़ल है, वो तक़्वा और दीन है। अगर दोनों चीज़ें मिल जायें तो ये नूरुन अ़ला नूर है, तक़्वा के सबब, नसबे ख़ानदान की फ़ज़ीलत को भी अहमियत हासिल हो जाती हैं।**(2) हाज़ल् अम्र या हाज़श्शान** : अम्र और शान से मुराद दीन और इस्लाम भी हो सकता है कि जो लोग इस्लाम के शदीद मुख़ालिफ़ थे, वो इस्लाम लाने के बाद इस्लाम के शदीद हामी(ख़ैरख़्वाह) होंगे। जैसाकि हज़रत उ़मर, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत अ़म्र बिन आ़स, हज़रत इक्रिमा बिन अबी जहल वग़ैरह सहाबा किराम के हालाते ज़िन्दगी इसकी बय्यिन(खुली) दलील हैं और अम्र व शान से मुराद ओ़हदा और मन्सब भी हो सकते हैं कि जो लोग ओ़हदा मन्सब को नापसंद करते हैं, फिर हालात की मजबूरी से इसको क़ुबूल कर लेते हैं तो वो उनके मुक़ाबले में बहुत बेहतर साबित होते हैं, जो उनके हरीस और ख़्वाहाँ होते हैं, क्योंकि पहले लोगों को अल्लाह तआला की नुसरत व हिमायत हासिल होती है और उसकी तौफ़ीक़ उनके शामिले हाल होती है। जबकि दूसरा गिरोह अल्लाह की तौफ़ीक़ व नुसरत से महरूम रहता है, इसलिये हालात उसके लिये साज़गार नहीं रहते। बल्कि ख़राब से ख़राबतर हो जाते हैं, जिसकी रोशन दलील आज की जुम्हूरी हुकूमतें हैं।**(3) ज़ल्वज्हैन** : दो रुख़ा, मफ़ादात का गुलाम, जिसका मज़हब चापलूसी और तम्लक़ है। जिसके पास गया, उसका हो गया और दूसरे में ऐबो-नुक़्स

डालने शुरू कर दिये। यानी सामने तारीफ़ में आसमान व ज़मीन के क़लाबे मिलाते हैं और पसे पुश्त उसमें कोई ख़ूबी नज़र नहीं आती, हर ऐब नज़र आता है। यानी हुनर भी ऐब बन जाते हैं और उनका सिक्का कुछ अरसा तो चलता है, लेकिन अन्जाम कार रुस्वाई और ज़िल्लत के सिवा कुछ हासिल नहीं होता, लेकिन बद क़िस्मती से आज-कल अवाम और ख़्वास सब इस मर्ज़ में मुब्तला हैं।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيُّ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَجِدُونَ النَّاسَ مَعَادِنَ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ أَبِي زُرْعَةَ وَالأَعْرَجِ " تَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ فِي هَذَا الشَّأْنِ أَشَدَّهُمْ لَهُ كَرَاهِيَةً حَتَّى يَقَعَ فِيهِ

(6455) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम लोगों को मअ़दनियात की तरह पाओगे।' आगे ऊपर वाली हदीस़ है, सिर्फ़ इस क़द्र फ़र्क़ है कि अबू ज़ुरआ़ और अअ़्रज की हदीस़ में ये है, 'तुम लोगों में से उसको इस मसले या मामले में बेहतर पाओगे, जो इससे शदीद कराहत रखता है, यहाँ तक कि उसमें वाक़ेअ़ हो जाये।'

(सहीह बुख़ारी : 3493)

باب مِنْ فَضَائِلِ نِسَاءِ قُرَيْشٍ

बाब 49 : क़ुरैशी औरतों के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَعَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ - قَالَ أَحَدُهُمَا صَالِحُ نِسَاءِ قُرَيْشٍ . وَقَالَ الآخَرُ نِسَاءُ قُرَيْشٍ - أَحْنَاهُ عَلَى يَتِيمٍ فِي صِغَرِهِ وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ " .

(6456) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बेहतरीन औरतें, जो ऊँटों पर सवारी करती हैं, वो क़ुरैश की पारसा औरतें हैं या क़ुरैशी औरतें हैं, जो यतीम पर बचपन में बहुत शफ़क़त करती हैं और ख़ाविन्द के हाथ की चीज़ों की बहुत हिफ़ाज़त करती हैं।'

(सहीह बुख़ारी : 5365)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ख़ैरु निसाइन रकिब्नल इबिल : ऊँट सवार औरतों में सबसे बेहतर, यानी अरब औरतों में सबसे बेहतर। क्योंकि अरबी औरतें ही ऊँट पर सवारी करती थीं, गोया अपने दौर में सबसे बेहतर क़ुरैश की बासलाहियत औरतें थीं। इसलिये मरयम(अलै.) को निकालने की ज़रूरत नहीं है, वो इस दौर में थी ही नहीं और इस फ़ज़ीलत व ख़ैरियत की सबब दो ख़ूबियाँ हैं :

(1) अह्नाहु अला यतमी : जो बच्चे पर बचपन में इन्तिहाई शफ़क़त करती हैं, यहाँ तक कि अगर बेवा हो जायें तो औलाद की ख़ातिर, नई शादी करने से गुरेज़ करती हैं, ताकि उनकी परवरिश व परदाख़्त यकसूई से कर सकें।

(2) अरआहु अला ज़ौजिन फ़ी ज़ाति यदिही : ख़ाविन्द की हाथ की चीज़ यानी उसके माल व दौलत की ख़ूब हिफ़ाज़त करती हैं, इसराफ़ व तब्ज़ीर या फ़िज़ूल ख़र्ची से उसको बर्बाद नहीं करतीं। ज़ाहिर है जब वो माल व दौलत की हिफ़ाज़त करती हैं तो उसकी इ़ज़्ज़त व नामूस जो अनमोल चीज़ है, उसकी बिल्औला हिफ़ाज़त करेंगी।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَرْعَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ " . وَلَمْ يَقُلْ يَتِيمٍ .

(6457) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें है, आपने फ़रमाया, 'वो औलाद पर उनके बचपन में बहुत मेहरबान हैं।' यतीम का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " نِسَاءُ قُرَيْشٍ خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ أَحْنَاهُ عَلَى طِفْلٍ وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ " . قَالَ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ عَلَى إِثْرِ ذَلِكَ وَلَمْ تَرْكَبْ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ بَعِيرًا قَطُّ .

(6458) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'क़ुरैशी औरतें, ऊँट सवार औरतों में से बेहतर हैं। वो बच्चे पर बहुत मेहरबान होती हैं और ख़ाविन्द के हाथ की चीज़ों की ख़ूब हिफ़ाज़त करती हैं।' इस हदीस़ के बयान करने के बाद हज़रत अबू हुरैरह फ़रमाते, हज़रत मरयम बिन्ते इमरान(अलै.) कभी ऊँट पर सवार नहीं हुईं।'

(सहीह बुख़ारी : 3434)

(6459) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब को निकाह का पैग़ाम दिया तो उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उम्र रसीदा हो चुकी हूँ और मेरी औलाद भी है तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऊँट सवार औरतों में से अफ़ज़ल...' आगे ऊपर वाली रिवायत है, मगर इसमें ये है, आपने फ़रमाया, 'बच्चे पर उसके बचपन में बहुत मेहरबान और शफ़ीक़।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَطَبَ أُمَّ هَانِئٍ بِنْتَ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي قَدْ كَبِرْتُ وَلِيَ عِيَالٌ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَحْنَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ " .

(6460) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऊँट सवार औरतों में से बेहतरीन, क़ुरैश की बासलाहियत औरतें हैं, बच्चे पर उसके बचपन में बहुत मेहरबान और ख़ाविन्द के मालो-मताअ की बहुत मुहाफ़िज़।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ ابْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ عَبْدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ صَالِحُ نِسَاءِ قُرَيْشٍ أَحْنَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ " .

(6461) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत हू-बहू बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ الأَوْدِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ مَخْلَدٍ - حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ بِلاَلٍ - حَدَّثَنِي سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَعْمَرٍ هَذَا سَوَاءً .

बाब 50 : नबी(ﷺ) का अपने सहाबा किराम(रज़ि.) के दरम्यान उख़ुवत और भाईचारा क़ायम करना

باب مُؤَاخَاةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ أَصْحَابِهِ رضى الله تعالى عنهم

حَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ - عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ آخَى بَيْنَ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ وَبَيْنَ أَبِي طَلْحَةَ .

(6462) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और अबू तलहा(रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा क़ायम फ़रमाया।

फ़ायदा : उख़ुवत या मुवाख़ात का मानी है, उनको भाई-भाई बनाना ताकि वो भाईयों की तरह एक-दूसरे के हमदर्द व मददगार बनें और वो एक-दूसरे के वारिस़ ठहरें। इसको जाहिलिय्यत के दौर में हिल्फ़ और दोस्ताने का नाम दिया जाता था, इस्लाम में इसको बरक़रार रखा गया, यहाँ तक कि जब विरास़त को रिश्तेदारों के साथ ख़ास कर दिया गया तो फिर विरास़त वाला हिस्सा मन्सूख़ हो गया। लेकिन हमदर्दी(ग़म गिसारी) और मदद व नुसरत का हिस्सा बरक़रार रखा और ला हिल्फ़ फ़िल्इस्लाम इस्लाम में दोस्ताना नहीं है, का यही मतलब है कि अब उन्हें जाहिलिय्यत के दौर की तरह उख़ुवत की बिना पर नसबी भाई की तरह वारिस़ नहीं बनाया जा सकता, विरास़त उन्हीं उसूलों के मुताबिक़ तक़सीम होगी जो इस्लाम ने तय कर दिये हैं।

حَدَّثَنِي أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ، قَالَ قِيلَ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ بَلَغَكَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ حِلْفَ فِي الإِسْلاَمِ " . فَقَالَ أَنَسٌ قَدْ حَالَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ قُرَيْشٍ وَالأَنْصَارِ فِي دَارِهِ .

(6463) आसिम अहवल(रह.) बयान करते हैं, हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से पूछा गया, क्या आप तक ये हदीस़ पहुँची है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस्लाम में हिल्फ़ दोस्ती का ऐतबार नहीं।' तो हज़रत अनस(रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने क़ुरैश और अन्सार के दरम्यान उख़ुवत का रिश्ता मेरे घर में क़ायम किया।

सहीह बुख़ारी:2294,6083,7340, अबूदाऊद: 3926

(6464) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने क़ुरैश और अन्सार के दरम्यान मेरे मदीने वाले घर में दोस्ताना क़ायम किया था।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ، سُلَيْمَانَ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ حَالَفَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ قُرَيْشٍ وَالأَنْصَارِ فِي دَارِهِ الَّتِي بِالْمَدِينَةِ .

(6465) हज़रत जुबैर बिन मुत्इम(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस्लाम में दोस्ताने की ज़रूरत नहीं(क्योंकि इस्लाम ख़ुद उख़ुवत व मवद्दत का नाम है) और जो दोस्ताना जाहिलिय्यत के दौर में था इस्लाम ने उसको मज़ीद मज़बूत किया है। (अबू दाऊद : 2925)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ عَنْ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ حِلْفَ فِي الإِسْلاَمِ وَأَيُّمَا حِلْفٍ كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ لَمْ يَزِدْهُ الإِسْلاَمُ إِلاَّ شِدَّةً " .

बाब 51 : नबी(ﷺ) की बक़ा अपने साथियों के लिये और आपके साथियों की बक़ा उम्मत के लिये अमान की ज़ामिन थी

باب بَيَانِ أَنَّ بَقَاءَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَمَانٌ لأَصْحَابِهِ وَبَقَاءَ أَصْحَابِهِ أَمَانٌ

(6466) हज़रत अबू बुरदा अपने बाप(अबू मूसा अश्अरी) से बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ मग़िरब की नमाज़ पढ़ी, फिर हमने कहा, अगर हम बैठे रहे यहाँ तक कि आपके साथ इशा की नमाज़ भी पढ़ लें? तो हम बैठ गये तो आप हमारे पास आये फिर फ़रमाया, 'तुम मुसलसल इधर ही हो?'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ حُسَيْنٍ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الْجُعْفِيُّ، - عَنْ مُجَمِّعِ بْنِ يَحْيَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ

صَلَّيْنَا الْمَغْرِبَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ قُلْنَا لَوْ جَلَسْنَا حَتَّى نُصَلِّيَ مَعَهُ الْعِشَاءَ - قَالَ - فَجَلَسْنَا فَخَرَجَ عَلَيْنَا فَقَالَ " مَا زِلْتُمْ هَا هُنَا " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّيْنَا مَعَكَ الْمَغْرِبَ ثُمَّ قُلْنَا نَجْلِسُ حَتَّى نُصَلِّيَ مَعَكَ الْعِشَاءَ قَالَ " أَحْسَنْتُمْ أَوْ أَصَبْتُمْ " . قَالَ فَرَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ وَكَانَ كَثِيرًا مِمَّا يَرْفَعُ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ " النُّجُومُ أَمَنَةٌ لِلسَّمَاءِ فَإِذَا ذَهَبَتِ النُّجُومُ أَتَى السَّمَاءَ مَا تُوعَدُ وَأَنَا أَمَنَةٌ لأَصْحَابِي فَإِذَا ذَهَبْتُ أَتَى أَصْحَابِي مَا يُوعَدُونَ وَأَصْحَابِي أَمَنَةٌ لأُمَّتِي فَإِذَا ذَهَبَ أَصْحَابِي أَتَى أُمَّتِي مَا يُوعَدُونَ " .

हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमने मग़रिब आपके साथ पढ़ी फिर हमने कहा, हम बैठे रहें यहाँ तक कि इशा भी आपके साथ पढ़ लें। यानी आपने फ़रमाया, 'तुमने अच्छा किया या दुरुस्त किया।' फिर आपने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया आप आम तौर पर अपना सर आसमान की तरफ़ उठाते थे। चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'सितारे आसमान के लिये अमान हैं, तो जब सितारे न रहेंगे, आसमान पर वो चीज़ तारी हो जायेगी जिसका वादा है, यानी क़यामत क़ायम हो जायेगी और मैं अपने साथियों के लिये अमान हूँ, तो जब मैं इनके दरम्यान से चला जाऊँगा, मेरे साथी उस चीज़ से दोचार होंगे, जिसका इनसे वादा है और मेरे साथी, मेरी उम्मत के लिये बचाव और तहफ़्फ़ुज़ का सामान हैं, जब मेरे साथी न रहेंगे तो मेरी उम्मत उन फ़ित्नों से दोचार होगी, जिससे उनको डराया गया है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : अमनतुन : अमन व सलामती का बाइस़ व सबब हैं, जब सितारे झड़ जायेंगे तो क़यामत बर्पा हो जायेगी। जब मैं उनके दरम्यान नहीं रहूँगा तो फ़ित्ने बर्पा होंगे, आपस में जंगें होंगी, आराबी मुर्तद हो जायेंगे, दिलों में उल्फ़त व मुहब्बत की जगह इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ पैदा होगा और सहाबा किराम के उठ जाने के बाद दीन में बिदअतें राह पा लेंगी, बिदअती फ़िर्क़ों का ज़ुहूर होगा, इस्लाम से बुअ्द और दूरी पैदा होगी, क़र्ने शैतान(शैतानी जमाअतें) तुलूअ होगा, रोमियों का ग़ल्बा होगा, मक्का व मदीना की हुरमत पामाल होगी, अपने-अपने वक़्त पर आपकी ये तमाम पेशीनगोइयाँ पूरी हो रही हैं।

बाब 52 : सहाबा किराम, ताबेईन और तबअ़ ताबेईन की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ الصَّحَابَةِ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ

حَدَّثَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، قَالَ سَمِعَ عَمْرٌو، جَابِرًا يُخْبِرُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ لَهُمْ فِيكُمْ مَنْ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيَقُولُونَ ‏.‏ نَعَمْ فَيُفْتَحُ لَهُمْ ثُمَّ يَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ لَهُمْ فِيكُمْ مَنْ رَأَى مَنْ صَحِبَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيَقُولُونَ نَعَمْ ‏.‏ فَيُفْتَحُ لَهُمْ ثُمَّ يَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ لَهُمْ هَلْ فِيكُمْ مَنْ رَأَى مَنْ صَحِبَ مَنْ صَحِبَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيَقُولُونَ نَعَمْ ‏.‏ فَيُفْتَحُ لَهُمْ " ‏.‏

(6467) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) से रिवायत है, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगों में एक वक़्त आयेगा, कुछ लोग लड़ाई के लिये निकलेंगे तो उनसे पूछा जायेगा, क्या तुममें रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखने वाली शख़िसयत है? वो जवाब देंगे, हाँ! तो उन्हें फ़तह हासिल हो जायेगी। फिर लोगों से कुछ गिरोह जिहाद के लिये निकलेंगे तो उनसे पूछा जायेगा, क्या तुममें रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों को देखने वाली शख़िसयत मौजूद है? तो वो जवाब देंगे, हाँ! सो उन्हें फ़तह मिल जायेगी। फिर कुछ लोग जिहाद के लिये निकलेंगे, उनसे पूछा जायेगा, क्या तुममें रसूल के साथियों को देखने वालों को देखने वाली शख़िसयत मौजूद है? सो वो कहेंगे, हाँ! तो उन्हें फ़तह नसीब होगी।'

(सहीह बुख़ारी : 2897)

मुफ़रदातुल हदीस़ : फ़िआमुन : जमाअ़त, गिरोह, ये फ़ाइम(टुकड़ा, हिस्सा) से माख़ूज़ है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि जिसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देख लिया, वो सहाबी है, देखने का लफ़्ज़ उ़मूम और अक्सरियत के ऐतबार से है, ये मानी नहीं है कि नाबीना सहाबी नहीं है, क्योंकि अगर वो बीना होता तो वो भी देख लेता, इसलिये मुराद ये है, जिसको इस्लाम की हालत में कुछ वक़्त आपके साथ रहने की सआ़दत मिल गई और इस्लाम पर फ़ौत हुआ, वो सहाबी है। सोहबत किसी वक़्त की तहदीद की मोहताज नहीं है, कुछ वक़्त की रिफ़ाक़त ही बरकत का बाइस़ बन जायेगी।

(6468) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगों पर एक वक़्त आयेगा, उनमें से एक लश्कर रवाना किया जायेगा तो वो कहेंगे, देखो! क्या तुममें नबी(ﷺ) के साथियों में से कोई एक है? तो उनमें एक ऐसा आदमी पाया जायेगा, सो उसके सबब फ़तह हासिल हो जायेगी। फिर दूसरा लश्कर रवाना किया जायेगा तो वो कहेंगे, क्या इनमें नबी(ﷺ) के साथियों को देखने वाला है? चुनाँचे उसकी बरकत से उन्हें फ़तह हासिल हो जायेगी। फिर तीसरा लश्कर रवाना किया जायेगा तो कहा जायेगा, देखो! क्या तुम उनमें किसी ऐसे फ़र्द को देखते हो, जिसने रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों को देखने वालों को देखा हो? फिर चौथा लश्कर भेजा जायेगा तो कहा जायेगा, देखो क्या तुम उनमें से किसी ऐसे शख़्स को देखते हो, जिसने रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों को देखने वाले किसी एक फ़र्द को देखा हो, एक आदमी ऐसा पाया जायेगा, जिसकी बरकत से उन्हें उन्हें फ़तह नसीब हो जायेगी।'

حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي، الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ، قَالَ زَعَمَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يُبْعَثُ مِنْهُمُ الْبَعْثُ فَيَقُولُونَ انْظُرُوا هَلْ تَجِدُونَ فِيكُمْ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَيُوجَدُ الرَّجُلُ فَيُفْتَحُ لَهُمْ بِهِ ثُمَّ يُبْعَثُ الْبَعْثُ الثَّانِي فَيَقُولُونَ هَلْ فِيهِمْ مَنْ رَأَى أَصْحَابَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَيُفْتَحُ لَهُمْ بِهِ ثُمَّ يُبْعَثُ الْبَعْثُ الثَّالِثُ فَيُقَالُ انْظُرُوا هَلْ تَرَوْنَ فِيهِمْ مَنْ رَأَى مَنْ رَأَى أَصْحَابَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ يَكُونُ الْبَعْثُ الرَّابِعُ فَيُقَالُ انْظُرُوا هَلْ تَرَوْنَ فِيهِمْ أَحَدًا رَأَى مَنْ رَأَى أَحَدًا رَأَى أَصْحَابَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَيُوجَدُ الرَّجُلُ فَيُفْتَحُ لَهُمْ بِهِ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है, किसी एक सहाबी को देखना भी शर्फ़ व सआदत और बरकत का बाइस़ है तो ज़्यादा सहाबा किराम को देखना ज़्यादा ख़ैर व बरकत का बाइस़ होगा।

(6469) हज़रत अब्दुल्लाह(बिन मसऊद रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी उम्मत का बेहतरीन गिरोह वो है जो मुझसे मुत्तसिल(जुड़ा) है, फिर वो लोग जो उनसे मुत्तसिल होंगे, फिर वो लोग जो

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَهَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبِيدَةَ السَّلْمَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ،

قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ أُمَّتِي الْقَرْنُ الَّذِينَ يَلُونِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ وَيَمِينُهُ شَهَادَتَهُ " . لَمْ يَذْكُرْ هَنَّادٌ الْقَرْنَ فِي حَدِيثِهِ وَقَالَ قُتَيْبَةُ " ثُمَّ يَجِيءُ أَقْوَامٌ " .

उनसे मुत्तसिल होंगे, फिर ऐसे लोग आयेंगे, जो क़सम से पहले शहादत देंगे और शहादत(गवाही) से पहले क़सम।' हन्नाद ने अपनी रिवायत में क़र्न का लफ़्ज़ बयान नहीं किया और क़ुतैबा की रिवायत में क़ौम की जगह अक़्वाम का लफ़्ज़ है। क़र्न एक दौर का तबक़ा या गिरोह या जमाअत।

(सहीह बुख़ारी : 2652, 3651, 6429, 6658, तिर्मिज़ी : 3859, इब्ने माजह : 2362)

फ़ायदा : इस हदीस़ में आपकी क़र्न से मुराद, सहाबा किराम हैं। जिससे मालूम हुआ सहाबा किराम तमाम उम्मत से अफ़ज़ल और बरतर हैं। शर्फ़े सोहबत व रिफ़ाक़त में कोई उनका शरीक व सहीम नहीं है। अगरचे इन्फ़िरादी और शख़्सी तौर पर उसके अलावा किसी और सिफ़त में कोई शख़्स, किसी सहाबी से बढ़ जाये, लेकिन मज्मूई तौर पर कोई मज्मूआ किसी ऐतबार से उन पर सबक़त नहीं ले जा सकता। सहाबा किराम के बाद ताबेईने इज़ाम का दर्जा है और उनके बाद बेहतर दर्जा और मर्तबा तबअ़ ताबेईन को हासिल है और बाद वालों का कोई मज्मूआ, उनमें से किसी मज्मूए पर किसी ऐतबार से फ़ाइक़ नहीं हो सकता। हाँ इन्फ़िरादी तौर पर उनमें से किसी फ़र्द पर किसी सिफ़त में बाज़ी ले जा सकता है और क़सम व शहादत का एक दूसरे से सबक़त ले जाने का मक़सद ये है लोग बग़ैर सोचे-समझे, बग़ैर किसी तवक़्क़ुफ़ के क़सम और शहादत के लिये तैयार हो जायेंगे या क़सम और शहादत दोनों को जमा करेंगे। कभी शहादत के बाद क़सम उठायेंगे और कभी क़सम उठाकर शहादत देंगे, आख़िरी तबअ़ ताबेई 220 हिजरी तक ज़िन्दा रहा और आख़िरी ताबेई 170 हिजरी तक रहा। आख़िरी सहाबी 110 हिजरी तक हिजरी तक ज़िन्दा रहा।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَىُّ النَّاسِ خَيْرٌ قَالَ " قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ

(6470) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा गया, कौनसे लोग बेहतर हैं? आपने फ़रमाया, 'मेरे दौर के लोग, फिर जो उनसे मुत्तसिल होंगे, फिर जो उनसे मिले हुए होंगे, फिर ऐसे लोग आयेंगे, उनकी शहादत क़सम से सबक़त ले जायेगी और क़सम शहादत से पहले होगी।'

يَجِيءُ قَوْمٌ تَبْدُرُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ وَتَبْدُرُ يَمِينُهُ شَهَادَتَهُ " . قَالَ إِبْرَاهِيمُ كَانُوا يَنْهَوْنَنَا وَنَحْنُ غِلْمَانٌ عَنِ الْعَهْدِ وَالشَّهَادَاتِ .

इब्राहीम कहते हैं, हमारे बुज़ुर्ग जबकि हम बच्चे थे, हमें अहद और शहादत के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करने से रोकते थे।

फ़ायदा : इब्राहीम नख़ई के दौर के लोग अपने बच्चों को आपस में बातचीत में ज़ोर और ताकीद पैदा करने के लिये अलय्य अह्दुल्लाहि या अलय्य अश्हदु बिल्लाहि के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं करने देते थे ताकि उनकी आदत न पड़ जाये और दिल से इन कलिमात की अज़्मत व एहतिराम न निकल जाये, क्योंकि ये झूठी क़सम और झूठी शहादत का बाइस बनते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا عَنْ مَنْصُورٍ، بِإِسْنَادِ أَبِي الأَحْوَصِ وَجَرِيرٍ بِمَعْنَى حَدِيثِهِمَا وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمَا سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(6471) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ السَّمَّانُ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ " . فَلاَ أَدْرِي فِي الثَّالِثَةِ أَوْ فِي الرَّابِعَةِ قَالَ " ثُمَّ يَتَخَلَّفُ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ وَيَمِينُهُ شَهَادَتَهُ " .

(6472) हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'बेहतरीन लोग मेरे साथी हैं, फिर जो उनसे मिले होंगे, फिर जो उनसे मिले होंगे।' मुझे मालूम नहीं है, आपने ये तीसरी बार फ़रमाया या चौथी बार, 'फिर उनके बाद नाख़लफ़ लोग नायब होंगे, उनकी शहादत क़सम से सबक़त ले जायेगी और उनकी क़सम, शहादत से पहले होगी।'

फ़ायदा : ऊपर की रिवायात की रोशनी में ये बात आपने तबअ ताबेईन के बाद के लोगों के बारे में फ़रमाई।

حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، ح وَحَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ، بْنُ سَالِمٍ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ أُمَّتِي الْقَرْنُ الَّذِينَ بُعِثْتُ فِيهِمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ " . وَاللَّهُ أَعْلَمُ أَذَكَرَ الثَّالِثَ أَمْ لاَ قَالَ " ثُمَّ يَخْلُفُ قَوْمٌ يُحِبُّونَ السَّمَانَةَ يَشْهَدُونَ قَبْلَ أَنْ يُسْتَشْهَدُوا "

(6473) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी उम्मत का बेहतरीन गिरोह वो है, जिसमें मुझे भेजा गया है, फिर जो लोग उनसे मुत्तसिल होंगे।' अल्लाह ही बेहतर जानता है, आपने तीसरे गिरोह का ज़िक्र किया या नहीं और फ़रमाया, 'फिर उनके जाँनशीन ऐसे लोग होंगे, जो मोटापे को पसंद करेंगे और शहादत के तलब करने से पहले शहादत देंगे।'

फ़ायदा : युहिब्बूनस्समानह : वो मोटापे को पसंद करेंगे, यानी दुनियवी लज़्ज़तों व मफ़ादात खाने-पीने का शौक़ होगा और उसकी ख़ातिर हर काम कर गुज़रेंगे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي بِشْرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ شُعْبَةَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَلاَ أَدْرِي مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةً .

(6474) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, सिर्फ़ शोबा की रिवायत में ये है, अबू हुरैरह(रज़ि.) कहते हैं, मुझे मालूम नहीं, आपने दो बार ज़िक्र किया या तीन बार।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنْ غُنْدَرٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ أَبَا جَمْرَةَ، حَدَّثَنِي زَهْدَمُ بْنُ،

(6475) हज़रत इमरान बिन हुसैन(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बिला शुब्हा तुममें से बेहतरीन लोग मेरी जमाअत है, फिर जो लोग उनसे मिले हुए होंगे, फिर जो लोग उनसे मुत्तसिल

مُضَرِّبٍ سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ، يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ خَيْرَكُمْ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ " . قَالَ عِمْرَانُ فَلاَ أَدْرِي أَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعْدَ قَرْنِهِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةً " ثُمَّ يَكُونُ بَعْدَهُمْ قَوْمٌ يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلاَ يُتَّمَنُونَ وَيَنْذُرُونَ وَلاَ يُوفُونَ وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ " .

होंगे, फिर जो लोग उनसे मुत्तसिल होंगे।' हज़रत इमरान(रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे मालूम नहीं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी जमाअत के बाद दो जमाअतों का तज़्किरा फ़रमाया या तीन का। 'फिर उनके बाद ऐसे लोग होंगे, गवाही देंगे, हालांकि उनसे गवाही तलब नहीं की जायेगी, वो ख़यानत करने वाले होंगे, इसलिये उन पर ऐतमाद नहीं किया जायेगा, वो नज़्र मानेंगे और उसको पूरा नहीं करेंगे और उनमें मोटापा ज़ाहिर होगा।'

(सहीह बुख़ारी : 2651, 3650, 6428, 6695, नसाई : 7/18)

फ़ायदा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) की रिवायत से ये बात साबित हो चुकी है कि आपने अपनी जमाअते सहाबा किराम के बाद दो जमाअतों यानी ताबेईन और तबअ ताबेईन का ज़िक्र फ़रमाया और उसके बाद के लोगों के बारे में, ना ख़लफ़ या ना हंजार होने का तज़्किरा फ़रमाया। चूंकि ये लोग मफ़ाद परस्त और ख़ाइन होंगे, इसलिये लोग उन पर ऐतमाद नहीं करेंगे, इसलिये उनको शाहिद नहीं बनायेंगे और न उनकी शहादत पर मुत्मइन होंगे, इसलिये उनसे जानते-बूझते शहादत तलब नहीं करेंगे, लेकिन अगर कोई क़ाबिले ऐतमाद और दयानतदार आदमी हो जिस पर लोगों को ऐतमाद हो और वो किसी के हक़ में गवाही दे सकता हो, जबकि जिसका हक़ है, उसको उसके गिरोह होने का इल्म नहीं है, ऐसी सूरत में अगर वो ख़ुद गवाही की पेशकश करता है तो ये क़ाबिले तारीफ़ काम है और ये पसन्दीदा आदमी है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ، الْعَبْدِيُّ حَدَّثَنَا بَهْزٌ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَفِي حَدِيثِهِمْ قَالَ لاَ أَدْرِي أَذَكَرَ بَعْدَ قَرْنِهِ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةً . وَفِي حَدِيثِ شَبَابَةَ قَالَ

(6476) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन उस्तादों की सनदों से शोबा ही की सनद से बयान करते हैं, इस हदीस में है, मैं नहीं जानता आपने अपनी क़र्न के बाद दो क़र्नों(जमाअतों) का तज़्किरा फ़रमाया या तीन का। शबाबा कहते हैं, मैंने ये हदीस ज़हदम बिन मुज़र्रिब से सुनी, जबकि वो एक

سَمِعْتُ زَهْدَمَ بْنَ مُضَرِّبٍ وَجَاءَنِي فِي حَاجَةٍ عَلَى فَرَسٍ فَحَدَّثَنِي أَنَّهُ سَمِعَ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ . وَفِي حَدِيثِ يَحْيَى وَشَبَابَةَ "يَنْذُرُونَ وَلاَ يَفُونَ " . وَفِي حَدِيثِ بَهْزٍ " يُوفُونَ " . كَمَا قَالَ ابْنُ جَعْفَرٍ .

ज़रूरत के तहत घोड़े पर सवार होकर आया था। यहया और शबाबा की रिवायत में है, 'वो नज़्र मानेंगे और पूरी नहीं करेंगे।' और बहज़ की रिवायत में यफ़ून की जगह यूफ़ून है, जैसाकि इब्ने जअ़फ़र की रिवायत है।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ الأُمَوِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ " خَيْرُ هَذِهِ الأُمَّةِ الْقَرْنُ الَّذِينَ بُعِثْتُ فِيهِمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ " . زَادَ فِي حَدِيثِ أَبِي عَوَانَةَ قَالَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ أَذَكَرَ الثَّالِثَ أَمْ لاَ . بِمِثْلِ حَدِيثِ زَهْدَمٍ عَنْ عِمْرَانَ وَزَادَ فِي حَدِيثِ هِشَامٍ عَنْ قَتَادَةَ " وَيَحْلِفُونَ وَلاَ يُسْتَحْلَفُونَ " .

(6477) हज़रत इमरान बिन हुसैन(रज़ि.) नबी(ﷺ) से यही रिवायत बयान करते हैं, 'इस उम्मत की बेहतरीन क़र्न वो है, जिसमें मुझे भेजा गया है, फिर जो लोग उनसे मुत्तसिल होंगे।' अबू अ़वाना की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, उन्होंने कहा, अल्लाह ही ख़ूब जानता है, आपने तीसरी क़र्न का ज़िक्र फ़रमाया या नहीं। हिशाम, क़तादा से ये इज़ाफ़ा करते हैं, 'वो क़सम उठायेंगे और उनसे क़सम का मुताल्बा नहीं किया गया होगा।'

(अबू दाऊद : 4657, तिर्मिज़ी : 2222)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَشُجَاعُ بْنُ مَخْلَدٍ، -وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، - وَهُوَ ابْنُ عَلِيٍّ الْجُعْفِيُّ - عَنْ زَائِدَةَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ الْبَهِيِّ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَأَلَ رَجُلٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَىُّ النَّاسِ خَيْرٌ قَالَ " الْقَرْنُ الَّذِي أَنَا فِيهِ ثُمَّ الثَّانِي ثُمَّ الثَّالِثُ " .

(6478) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, एक आदमी ने नबी(ﷺ) से पूछा, कौनसे लोग सबसे बेहतर हैं? आपने फ़रमाया, 'वो जमाअ़त जिनमें मैं हूँ, फिर दूसरी जमाअ़त, फिर तीसरी जमाअ़त।'

बाब 53 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का फ़रमान सौ साल के बाद आज के ज़िन्दा लोगों में से कोई ज़िन्दा(जानदार) ज़मीन पर नहीं होगा

باب قَوْلِهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَأْتِي مِائَةُ سَنَةٍ وَعَلَى الأَرْضِ نَفْسٌ مَنْفُوسَةٌ الْيَوْ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ عَبْدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ سُلَيْمَانَ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ صَلاَةَ الْعِشَاءِ فِي آخِرِ حَيَاتِهِ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ فَقَالَ " أَرَأَيْتَكُمْ لَيْلَتَكُمْ هَذِهِ فَإِنَّ عَلَى رَأْسِ مِائَةِ سَنَةٍ مِنْهَا لاَ يَبْقَى مِمَّنْ هُوَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَحَدٌ " . قَالَ ابْنُ عُمَرَ فَوَهَلَ النَّاسُ فِي مَقَالَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تِلْكَ فِيمَا يَتَحَدَّثُونَ مِنْ هَذِهِ الأَحَادِيثِ عَنْ مِائَةِ سَنَةٍ وَإِنَّمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاَ يَبْقَى مِمَّنْ هُوَ الْيَوْمَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ . أَحَدٌ يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَنْخَرِمَ ذَلِكَ الْقَرْنُ .

(6479) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) बयान करते हैं कि एक रात रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इशा की नमाज़ पढ़ाई, ये आपकी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों की बात है, जब आपने सलाम फेरा तो आप खड़े हो गये और फ़रमाया, 'क्या तुमने इस रात के बारे में जान लिया? आज रात के सौ साल बाद जो लोग आज रूए ज़मीन पर मौजूद हैं, उनमें से कोई बाक़ी नहीं रहेगा।' इब्ने उमर(रज़ि.) कहते हैं, लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की इस बात को समझने में ग़लती की और सौ साल के बारे में उस क़िस्म की बातचीत करने लगे, हालांकि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तो बस ये फ़रमाया था, 'जो लोग आज रूए ज़मीन पर मौजूद हैं, उनमें से कोई बाक़ी नहीं रहेगा, आपका मक़सद ये था, ये क़र्न ख़त्म हो जायेगी।'

(अबू दाऊद : 4348, तिर्मिज़ी : 2251)

फ़ायदा : इस हदीस से रसूलुल्लाह(ﷺ) का ये मक़सद था कि ज़मीनी मख़्लूक़ में से, आज रात जो लोग ज़िन्दा मौजूद हैं, सौ साल बाद उनमें से कोई ज़िन्दा नहीं रहेगा और ये बात आपने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी महीने में 11 हिजरी में फ़रमाई थी और आख़िरी सहाबी हज़रत अबू तुफ़ैल(रज़ि.) 110

हिजरी तक ज़िन्दा रहे हैं। उसके बाद आपके साथियों में से कोई आदमी ज़िन्दा नहीं रहा, लेकिन कुछ लोगों ने इस हदीस़ से ये समझ लिया कि सौ साल बाद क़यामत क़ायम हो जायेगी और हज़रत इब्ने उ़मर उन्हीं लोगों की तर्दीद करना चाहते हैं, इसलिये इस रात के बाद पैदा होने वाले इसका मिस्दाक़ नहीं हैं।(इस फ़रमान से अलग है।)

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، وَرَوَاهُ، اللَّيْثُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِ مَعْمَرٍ كَمِثْلِ حَدِيثِهِ ‏.‏

(6480) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही हदीस़ बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 6840)

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ بِشَهْرٍ ‏"‏ تَسْأَلُونِي عَنِ السَّاعَةِ وَإِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَأُقْسِمُ بِاللَّهِ مَا عَلَى الأَرْضِ مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ تَأْتِي عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ ‏"‏ ‏.‏

(6481) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से आपकी मौत से एक महीने पहले ये सुना, 'तुम मुझसे क़यामत के(वुक़ूअ़ के) बारे में पूछते हो, उसका इल्म तो बस अल्लाह ही को है और मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ, ज़मीन पर कोई ज़िन्दा नफ़्स नहीं है, जिस पर सौ साल गुज़र जायें।'

حَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ قَبْلَ مَوْتِهِ بِشَهْرٍ ‏.‏

(6482) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं और इसमें मौत से पहले एक माह का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، كِلاَهُمَا عَنِ الْمُعْتَمِرِ، قَالَ ابْنُ حَبِيبٍ

(6483) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने अपनी मौत से एक माह पहले या

حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو نَضْرَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ ذَلِكَ قَبْلَ مَوْتِهِ بِشَهْرٍ أَوْ نَحْوِ ذَلِكَ " مَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ الْيَوْمَ تَأْتِي عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ وَهْىَ حَيَّةٌ يَوْمَئِذٍ " .

وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، صَاحِبِ السِّقَايَةِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ ذَلِكَ وَفَسَّرَهَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ نَقْصُ الْعُمُرِ .

उसके क़रीब फ़रमाया, 'आज जो नफ़्स ज़िन्दा है, उस पर सौ साल ज़िन्दा होने की हालत में नहीं आयेंगे?' यही रिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) से पानी पिलाने वाले अब्दुर्रहमान भी बयान करते हैं और इसकी तफ़्सीर उम्रों की कमी करते हैं कि इस उम्मत के लोगों की उम्रें कम होंगी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا . مِثْلَهُ .

(6484) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، عَنْ دَاوُدَ، وَاللَّفْظُ، لَهُ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي، شَيْبَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَيَّانَ، عَنْ دَاوُدَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ لَمَّا رَجَعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مِنْ تَبُوكَ سَأَلُوهُ عَنِ السَّاعَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تَأْتِي مِائَةُ سَنَةٍ وَعَلَى الأَرْضِ نَفْسٌ مَنْفُوسَةٌ الْيَوْمَ "

(6485) हज़रत अबू सईद(रज़ि.) बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक से वापस तशरीफ़ ले आये, लोगों ने आपसे क़यामत के बारे में सवाल किया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सौ साल नहीं आयेंगे कि आज ज़िन्दा नफ़्सों में से कोई ज़मीन पर मौजूद हो।'

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ

(6486) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह के नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़िन्दा नफ़्सों में से

جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ تَبْلُغُ مِائَةَ سَنَةٍ " . فَقَالَ سَالِمٌ تَذَاكَرْنَا ذَلِكَ عِنْدَهُ إِنَّمَا هِيَ كُلُّ نَفْسٍ مَخْلُوقَةٍ يَوْمَئِذٍ .

कोई सौ साल को नहीं पहुँचेगा।' हज़रत सालिम(रह.) कहते हैं, हमने उनके सामने इसका ये मानी एक दूसरे का बताया, इसका मक़सद ये है, उस दिन जो मख़्लूक़ ज़िन्दा थी।

फ़ायदा : ग़ज़्व-ए-तबूक से वापसी के बाद का मानी ये नहीं है कि फ़ोरन बाद ये सवाल हुआ कि सिर्फ़ इस क़द्र मक़सूद है, ये सवाल उसके बाद हुआ और हज़रत जाबिर की रिवायत से मालूम हुआ, ये आपकी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में हुआ था और आपने जवाब में पूरी दुनिया की क़यामत का वक़्त नहीं बताया था, बल्कि उस वक़्त मौजूद लोगों की क़यामत(मौत) का तज़्किरा फ़रमाया था कि तुम्हें अपनी फ़िक्र होनी चाहिये।

باب تَحْرِيمِ سَبِّ الصَّحَابَةِ رضى الله عنهم

बाब 54 : सहाबा(रज़ि.) को बुरा-भला कहना नाजाइज़ है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا أَدْرَكَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ " .

(6487) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे साथियों को बुरा मत कहो, मेरे साथियों की बुराई न करना, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर तुममें से कोई उहुद के बराबर सदक़ा करे, वो उनके मुद्द और आधे मुद्द को भी नहीं पहुँच सकेगा।'

फ़वाइद :(1) हाफ़िज़ इब्ने हजर का ख़्याल है, ये हदीस इमाम मुस्लिम ने अबू सईद(रज़ि.) से बयान की है, उनके किसी शागिर्द ने इसको अबू हुरैरह(रज़ि.) की तरफ़ मन्सूब कर दिया।(फ़तहुल बारी जिल्द 7, पेज नं. 45, मक्तबा दारुस्सलाम)(2) सहाबा किराम को बुरा-भला कहना जुम्हूर के

नज़दीक क़ाबिले तअज़ीर है और कुछ मालिकिया के नज़दीक क़त्ल का मूजिब है।(3) सहाबा किराम ने जो कुछ ख़र्च किया, वो इन्तिहाई तंगदस्ती के आलम में, ज़रूरत के मौक़े पर, पूरे इख़्लास और हुस्ने नियत से ख़र्च किया और सबसे बढ़कर, ये बात है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की नुसरत व हिमायत में ख़र्च किया और अब ये सआदत मुम्किन नहीं है, इसलिये बाद के लोगों का बहुत ज़्यादा इन्फ़ाक़ सहाबा किराम के निहायत मामूँली ख़र्च का भी मुक़ाबला नहीं कर सकता, क्योंकि वो वक़्त और वो हालात वापस नहीं आ सकते।

(6488) हज़रत अबू सईद(रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़(रज़ि.) के दरम्यान कुछ तल्ख़ी हुई तो हज़रत ख़ालिद(रज़ि.) ने उन पर तन्क़ीद की। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे साथियों में से किसी को बुरा न कहो, क्योंकि तुममें से कोई अगर उहुद के बराबर सोना ख़र्च करे तो वो उनके मुद्द या आधे मुद्द को भी नहीं पा सकेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 3673, अबू दाऊद : 4658, तिर्मिज़ी : 3861, इब्ने माजह, बाब : 161)

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي، سَعِيدٍ قَالَ كَانَ بَيْنَ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ وَبَيْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ شَىْءٌ فَسَبَّهُ خَالِدٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَسُبُّوا أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِي فَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَوْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا أَدْرَكَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ " .

फ़ायदा : अगर बाद वाले सहाबा किराम पर क़दीमुल इस्लाम सहाबा किराम को ये शर्फ़ हासिल है तो फिर आम उम्मत पर उन्हें किस क़द्र शर्फ़ व मक़ाम हासिल होगा, क्योंकि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद भी फ़तहे मक्का से पहले मुसलमान हो चुके थे।

(6489) इमाम मुस्लिम ने अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से ये हदीस़ बयान की है, जिस तरह जरीर और अबू मुआविया ने बयान की है, लेकिन शोबा और वकीअ की हदीस़ में अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और ख़ालिद बिन वलीद(रज़ि.) का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، جَمِيعًا عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ وَأَبِي مُعَاوِيَةَ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ شُعْبَةَ وَوَكِيعٍ ذِكْرُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, जरीर की तरह अबू मुआविया भी ये हदीस़ अबू सईद से बयान करते हैं, इसलिये अबू मुआविया की रिवायत को अबू हुरैरह(रज़ि.) की तरफ़ मन्सूब करना, इमाम मुस्लिम(रह.) के बाद के किसी रावी का वहम है।

باب مِنْ فَضَائِلِ أُوَيْسٍ الْقَرَنِيِّ رضى الله عنه

बाब 55 : उवैस क़रनी(रज़ि.) के फ़ज़ाइल

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنِي سَعِيدٌ الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ، أَنَّ أَهْلَ الْكُوفَةِ، وَفَدُوا، إِلَى عُمَرَ وَفِيهِمْ رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ يَسْخَرُ بِأُوَيْسٍ فَقَالَ عُمَرُ هَلْ هَا هُنَا أَحَدٌ مِنَ الْقَرَنِيِّينَ فَجَاءَ ذَلِكَ الرَّجُلُ فَقَالَ عُمَرُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدْ قَالَ " إِنَّ رَجُلاً يَأْتِيكُمْ مِنَ الْيَمَنِ يُقَالُ لَهُ أُوَيْسٌ لاَ يَدَعُ بِالْيَمَنِ غَيْرَ أُمٍّ لَهُ قَدْ كَانَ بِهِ بَيَاضٌ فَدَعَا اللَّهَ فَأَذْهَبَهُ عَنْهُ إِلاَّ مَوْضِعَ الدِّينَارِ أَوِ الدِّرْهَمِ فَمَنْ لَقِيَهُ مِنْكُمْ فَلْيَسْتَغْفِرْ لَكُمْ " .

(6490) उसैर बिन जाबिर(रह.) से रिवायत है कि अहले कूफ़ा का एक वफ़द हज़रत इमर(रज़ि.) के पास आया, उनमें एक आदमी था, जो हज़रत उवैस का मज़ाक़ उड़ाता था। सो हज़रत इमर(रज़ि.) ने पूछा, क्या इधर कोई क़र्न क़बीले का आदमी है? तो वो आदमी पेश हुआ तो हज़रत इमर(रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया था, 'तुम्हारे पास यमन से उवैस नामी एक आदमी आयेगा, वो यमन में सिर्फ़ अपनी माँ को छोड़ कर आयेगा, उसको बरस की बीमारी थी, उसने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उसकी बीमारी ख़त्म कर दी, एक दीनार या दिरहम के बक़द्र जगह रह गई तो तुममें से जिसकी भी उससे मुलाक़ात हो, उससे बख़्शिश की दुआ करवाये।'

फ़ायदा : हज़रत उवैस बिन आमिर क़रनी रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में मौजूद थे और आप पर ईमान ला चुके थे, लेकिन अपनी माँ की ख़िदमत के सबब आपकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं हो सके थे, मुस्तजाबुद्दुआ थे, उनके शर्फ़ व मन्ज़िलत की तरफ़ इशारा करने के लिये, आपने सहाबा किराम को उनसे मग़फ़िरत की दुआ करवाने की तल्क़ीन की।

(6491) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'ताबेईन में से बेहतरीन शख़्स उवैस नामी फ़र्द है, उसकी वालिदा है और उसे बरस की बीमारी थी, उससे बख़्शिश की दुआ करने की दरख़्वास्त करना।'

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - وَهُوَ ابْنُ سَلَمَةَ - عَنْ سَعِيدٍ الْجُرَيْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، قَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ خَيْرَ التَّابِعِينَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ أُوَيْسٌ وَلَهُ وَالِدَةٌ وَكَانَ بِهِ بَيَاضٌ فَمُرُوهُ فَلْيَسْتَغْفِرْ لَكُمْ "

(6492) उसैर बिन जाबिर(रह.) बयान करते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) के पास जब अहले यमन से कोई कमक आती, उनसे पूछते, क्या तुममें उवैस बिन आमिर है? यहाँ तक कि उवैस तक पहुँच गये। पूछा, तुम उवैस बिन आमिर हो? उसने कहा, जी हाँ! पूछा, क़बीला मुराद की शाख़ क़रन से हो? उसने कहा, जी हाँ! पूछा, क्या तुम्हें बरस थी, जिससे एक दिरहम की जगह के सिवा सेहत हासिल हो गई। उसने कहा, जी हाँ! पूछा, क्या तुम्हारी वालिदा है? कहा, जी हाँ! हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, 'तुम्हारे पास उवैस बिन आमिर अहले यमन की कमक के साथ आयेगा, जो मुराद क़बीले की क़रन शाख़ से होगा, उसे बरस थी, जिससे तन्दुरुस्ती मिल गई। मगर एक दिरहम के बराबर जगह रह गई। उसकी माँ है, जिसके साथ वो हुस्ने सुलूक करता है, अगर वो अल्लाह की क़सम खाकर कुछ अर्ज़ कर दे तो अल्लाह उसकी क़सम को

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا - وَاللَّفْظُ، لاِبْنِ الْمُثَنَّى - حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ أُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ، قَالَ كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ إِذَا أَتَى عَلَيْهِ أَمْدَادُ أَهْلِ الْيَمَنِ سَأَلَهُمْ أَفِيكُمْ أُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ حَتَّى أَتَى عَلَى أُوَيْسٍ فَقَالَ أَنْتَ أُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ قَالَ نَعَمْ . قَالَ مِنْ مُرَادٍ ثُمَّ مِنْ قَرَنٍ قَالَ نَعَمْ . قَالَ فَكَانَ بِكَ بَرَصٌ فَبَرَأْتَ مِنْهُ إِلاَّ مَوْضِعَ دِرْهَمٍ قَالَ نَعَمْ . قَالَ لَكَ وَالِدَةٌ قَالَ نَعَمْ . قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يَأْتِي عَلَيْكُمْ أُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ مَعَ

أَمْدَادِ أَهْلِ الْيَمَنِ مِنْ مُرَادٍ ثُمَّ مِنْ قَرَنٍ كَانَ بِهِ بَرَصٌ فَبَرَأَ مِنْهُ إِلاَّ مَوْضِعَ دِرْهَمٍ لَهُ وَالِدَةٌ هُوَ بِهَا بَرٌّ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لَكَ فَافْعَلْ " . فَاسْتَغْفِرْ لِي . فَاسْتَغْفَرَ لَهُ . فَقَالَ لَهُ عُمَرُ أَيْنَ تُرِيدُ قَالَ الْكُوفَةَ . قَالَ أَلاَ أَكْتُبُ لَكَ إِلَى عَامِلِهَا قَالَ أَكُونُ فِي غَبْرَاءِ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيَّ . قَالَ فَلَمَّا كَانَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ حَجَّ رَجُلٌ مِنْ أَشْرَافِهِمْ فَوَافَقَ عُمَرَ فَسَأَلَهُ عَنْ أُوَيْسٍ قَالَ تَرَكْتُهُ رَثَّ الْبَيْتِ قَلِيلَ الْمَتَاعِ . قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يَأْتِي عَلَيْكُمْ أُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ مَعَ أَمْدَادِ أَهْلِ الْيَمَنِ مِنْ مُرَادٍ ثُمَّ مِنْ قَرَنٍ كَانَ بِهِ بَرَصٌ فَبَرَأَ مِنْهُ إِلاَّ مَوْضِعَ دِرْهَمٍ لَهُ وَالِدَةٌ هُوَ بِهَا بَرٌّ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لَكَ فَافْعَلْ " . فَأَتَى أُوَيْسًا فَقَالَ اسْتَغْفِرْ لِي . قَالَ أَنْتَ أَحْدَثُ عَهْدًا بِسَفَرٍ صَالِحٍ فَاسْتَغْفِرْ لِي . قَالَ اسْتَغْفِرْ لِي . قَالَ أَنْتَ أَحْدَثُ عَهْدًا بِسَفَرٍ صَالِحٍ فَاسْتَغْفِرْ لِي . قَالَ لَقِيتَ عُمَرَ قَالَ نَعَمْ . فَاسْتَغْفَرَ لَهُ . فَفَطِنَ لَهُ النَّاسُ

पूरा कर देगा। अगर तेरे लिये उससे बख़्शिश की दुआ करवाना मुम्किन हो तो दुआ करवा लेना।' सो मेरे लिये बख़्शिश की दुआ कर। चुनाँचे उसने हज़रत उमर के लिये दुआए बख़्शिश की। हज़रत उमर(रज़ि.) ने उससे पूछा, कहाँ का इरादा है। कहा, कूफ़ा का। हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, क्या तेरे बारे में कूफ़ा के गवर्नर को ख़त लिख दूँ? उसने कहा, मुझे ख़ाक नशीन लोगों में रहना ज़्यादा पसंद है। उसैर कहते हैं, जब अगला साल आया तो कूफ़ा के अशराफ़ में से एक आदमी हज पर आया और उसकी हज़रत उमर से मुलाक़ात हो गई। आपने उससे हज़रत उवैस(रह.) के बारे में पूछा। उसने कहा, मैं उसको शिकस्ता घर, कम सामान में छोड़कर आया हूँ। हज़रत उमर(रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'तुम्हारे पास उवैस बिन आमिर, अहले यमन के कमक के साथ आयेगा, जो क़बीला मुराद की क़रन शाख़ से होगा, उसे बरस थी, जिससे वो एक दिरहम की जगह के सिवा सेहतयाब हो गया। उसकी माँ है, जिसका वो वफ़ादार है, अगर अल्लाह को क़सम उठाकर कह दे तो वो उसको पूरा कर देगा। अगर तुम्हारे लिये उससे बख़्शिश की दुआ करवाना मुम्किन हो तो करवा लेना।' चुनाँचे वो आदमी उवैस के पास आया और कहने लगा, मेरे लिये मग़फ़िरत की दुआ करो। उवैस ने कहा, तुम नेक सफ़र से नये-नये आये हो, इसलिये मेरे लिये बख़्शिश तलब करो।

فَانْطَلَقَ عَلَى وَجْهِهِ . قَالَ أُسَيْرٌ وَكَسَوْتُهُ بُرْدَةً فَكَانَ كُلَّمَا رَآهُ إِنْسَانٌ قَالَ مِنْ أَيْنَ لأُوَيْسٍ هَذِهِ الْبُرْدَةُ.

उसने कहा, मेरे लिये बख़्शिश करो। उसने कहा, तुम नेक सफ़र से नये-नये आये हो मेरे लिये बख़्शिश तलब करो और पूछा, क्या हज़रत उमर(रज़ि.) से मिले हो? उसने कहा, हाँ! तो उसने उस आदमी के लिये बख़्शिश की दुआ माँगी तो लोगों को उनके मक़ाम व मर्तबे का पता चल गया और वो वहाँ से अपने रुख़ रवाना हो गये। उसैर कहते हैं, मैंने उन्हें एक चादर पहनाई, तो जब कोई इंसान उन्हें उसमें देखता, कहता, उवैस को ये आला चादर कहाँ से मिल गई।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) यस्ख़रु बिउवैस : (वो उसैस की क़द्रो-मन्ज़िलत से आगाह न था) इसलिये उनका मज़ाक उड़ाता था, जिससे मालूम होता है, वो लोगों से अपने मक़ाम व मर्तबे को छिपाते थे और गुमनाम होकर रहते थे। **(2) अम्दाद :** इस्लामी लश्कर की मदद व नुसरत को पहुँचने वाली कमक, मदद की जमा है। **(3) गुबराइन्नास :** ख़ाक नशीनी, फ़क़ीर व मोहताज। **(4) रस़्स़ल बैत :** इन्तिहाई सादा और शिकस्ता घर। **(5) मिन ऐ-न लिल्उवैस :** इस क़ल्लाश और मोहताज को कहाँ से मिल गई।

باب وَصِيَّةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِأَهْلِ مِصْرَ

बाब 56 : नबी(ﷺ) की अहले मिस्र के बारे में वसियत

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي حَرْمَلَةُ، ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ، سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ، -وَهُوَ ابْنُ عِمْرَانَ التُّجِيبِيُّ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بْنِ شُمَاسَةَ الْمَهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّكُمْ سَتَفْتَحُونَ أَرْضًا يُذْكَرُ فِيهَا الْقِيرَاطُ فَاسْتَوْصُوا

(6493) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम जल्द ही एक ज़मीन फ़तह करोगे, जिसमें क़ीरात का चलन होगा तो उसके बाशिन्दों के बारे में भलाई की वसियत क़ुबूल करो या उनके बारे में दूसरों को भलाई की तल्क़ीन करना, क्योंकि उनको अहदो-पैमान और रिश्तेदारी का शर्फ़ हासिल है और जब तुम देखो, दो आदमियों को एक ईंट की जगह पर झगड़ रहे

بِأَهْلِهَا خَيْرًا فَإِنَّ لَهُمْ ذِمَّةً وَرَحِمًا فَإِذَا رَأَيْتُمْ رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلاَنِ فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَاخْرُجْ مِنْهَا " . قَالَ فَمَرَّ بِرَبِيعَةَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْنَىْ شُرَحْبِيلَ بْنِ حَسَنَةَ يَتَنَازَعَانِ فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَخَرَجَ مِنْهَا

हैं तो वहाँ से निकल जाना।' चुनाँचे हज़रत अबू ज़र, शुरहबील बिन हसना के दो बेटों रबीआ और अब्दुर्रहमान के पास से गुज़रे, वो एक ईंट की जगह पर झगड़ रहे थे तो वो वहाँ से निकल गये।

नोट : क़ीरात, दिरहम का चौबीसवाँ हिस्सा है और ये सिक्का मिस्र में आम राइज था।

मुफ़रदातुल हदीस :(1) ज़िम्मतंव्-व रहिमा : अहद और रिश्तेदारी से मुराद, हज़रत हाजरा का अहले मिस्र से होना है, उनकी बिना पर वो एहतिराम का हक़ रखते हैं।**(2) यतना-ज़आनि फ़ी मौज़िइ लबिनतिन :** वो ईंट के बराबर जगह पर झगड़ेंगे, यानी मामूली फ़वाइद व मुनाफ़े और मफ़ादात पर इख़्तिलाफ़ शुरू हो जायेंगे, खेतीबाड़ी का ग़लबा होगा और दीन की अहमियत नहीं रहेगी।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، سَمِعْتُ حَرْمَلَةَ الْمِصْرِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شُمَاسَةَ، عَنْ أَبِي بَصْرَةَ، عَنْ أَبِي، ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّكُمْ سَتَفْتَحُونَ مِصْرَ وَهِيَ أَرْضٌ يُسَمَّى فِيهَا الْقِيرَاطُ فَإِذَا فَتَحْتُمُوهَا فَأَحْسِنُوا إِلَى أَهْلِهَا فَإِنَّ لَهُمْ ذِمَّةً وَرَحِمًا " . أَوْ قَالَ " ذِمَّةً وَصِهْرًا فَإِذَا رَأَيْتَ رَجُلَيْنِ يَخْتَصِمَانِ فِيهَا فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَاخْرُجْ مِنْهَا " . قَالَ فَرَأَيْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ شُرَحْبِيلَ بْنِ حَسَنَةَ وَأَخَاهُ رَبِيعَةَ يَخْتَصِمَانِ فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَخَرَجْتُ مِنْهَا .

(6494) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम जल्द ही मिस्र फ़तह करोगे और वो ऐसी सरज़मीन है, जहाँ क़ीरात राइज है तो जब तुम उसे फ़तह कर लो, उसके बाशिन्दों से हुस्ने सुलूक से पेश आना, क्योंकि उन्हें हुरमत व रिश्तेदारी हासिल है या हक़ और सुसराली रिश्तेदारी है, सो जब वहाँ दो आदमी ईंट की जगह पर झगड़ते देखो तो उससे निकल जाना।' हज़रत अबू ज़र कहते हैं, मैंने शुरहबील बिन हसना के बेटे अब्दुर्रहमान और उसके भाई रबीआ को देखा, वो एक ईंट की जगह पर झगड़ रहे हैं तो मैं वहाँ से निकल गया।

मुफ़रदातुल हदीस : सिह्र : सुसराली रिश्ता, क्योंकि आपके लख़्ते जिगर हज़रत इब्राहीम की वालिदा साहिबा हज़रत मारिया क़िब्तिया मिस्री थीं।

फ़ायदा : आपने इस हदीस में जिन उमूर की पेशीनगोई फ़रमाई, वो पूरी हुई और हज़रत अबू ज़र ने आपके फ़रमान की फ़ौरन तामील की।

बाब 57 : अहले उमान की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ أَهْلِ عُمَانَ

(6495) हज़रत अबू बरज़ा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक आदमी को अरबी क़बीलों में से एक क़बीले की तरफ़ भेजा तो उन्होंने उसे बुरा-भला कहा और मारा-पीटा। वो रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया और आपको बताया, आपने फ़रमाया, 'अगर तू अहले उमान के पास जाता तो वो तुझे बुरा-भला न कहते न मारते-पीटते।'

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، عَنْ أَبِي الْوَازِعِ، جَابِرِ بْنِ عَمْرٍو الرَّاسِبِيِّ سَمِعْتُ أَبَا بَرْزَةَ، يَقُولُ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً إِلَى حَىٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ فَسَبُّوهُ وَضَرَبُوهُ فَجَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَوْ أَنَّ أَهْلَ عُمَانَ أَتَيْتَ مَا سَبُّوكَ وَلاَ ضَرَبُوكَ " .

फ़ायदा : उमान से मुराद वो इलाक़ा है, जिसका दारुल हुकूमत मस्क़त है, जो असल में यमन में दाख़िल है, उससे मुराद उर्दुन का इलाक़ा उमान नहीं है, इस तरह आपने उन लोगों के हुस्ने मामला की तारीफ़ की।

बाब 58 : सक़ीफ़ के झूठे और ज़ालिम का ज़िक्र

باب ذِكْرِ كَذَّابِ ثَقِيفٍ وَمُبِيرِهَا

(6496) अबू नोफ़ल(रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) को(मक्का में) मदीना की घाटी पर(सूली पर लटके हुए) देखा, वहाँ से क़ुरैश और दूसरे लोग गुज़रने लगे, यहाँ तक कि उसके पास से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) गुज़रे तो वो उनके पास रुक गये और कहने लगे, ऐ अबू ख़ुबैब!

حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ إِسْحَاقَ الْحَضْرَمِيَّ - أَخْبَرَنَا الأَسْوَدُ بْنُ شَيْبَانَ، عَنْ أَبِي نَوْفَلٍ، رَأَيْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ عَلَى عَقَبَةِ الْمَدِينَةِ

تُم پر सलामती हो, ऐ अबू ख़ुबैब! अस्सलामु अलैक! ऐ अबू ख़ुबैब! अस्सलामु अलैक! हाँ अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें इस काम(ख़िलाफ़त का दावा) से रोकता था, हाँ अल्लाह की क़सम! मैं आपको इससे मना करता था, हाँ अल्लाह की क़सम! मैं आपको इससे बाज़ करता था, हाँ अल्लाह की क़सम! मेरे इल्म के मुताबिक़, आप बहुत रोज़े रखने वाले, बहुत सिला रहमी करने वाले थे। हाँ अल्लाह की क़सम! वो जमाअत जिसमें से आप बदतर हैं, दर हक़ीक़त बहुत अच्छी जमाअत है। फिर अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) चले गये। चुनाँचे हज्जाज को हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) के ठहरने और आपकी बातचीत की ख़बर हुई तो उसने हज़रत इब्ने ज़ुबैर की लाश के पास किसी को भेजा और उनको सूली से उतरवा लिया और उन्हें यहूदियों के क़ब्रिस्तान में फेंक दिया गया। फिर उनकी वालिदा हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बकर(रज़ि.) को बुलावा भेजा तो उन्होंने उसके पास आने से इंकार कर दिया। तो उसने उनकी तरफ़ दोबारा ऐलची भेजा कि मेरे पास आ जाओ, वरना मैं तुम्हारी तरफ़ ऐसा आदमी भेजूँगा, जो तुम्हें तुम्हारे बालों से घसीट कर लायेगा। उन्होंने आने से इंकार कर दिया और फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं तेरे पास उस वक़्त तक नहीं आऊँगी, यहाँ तक मेरे पास ऐसे शख़्स को भेजो, जो मेरे बालों से घसीट लाये। तो हज्जाज ने(ख़ादिमों को) कहा, मेरी बिन

-قَالَ - فَجَعَلَتْ قُرَيْشٌ تَمُرُّ عَلَيْهِ وَالنَّاسُ حَتَّى مَرَّ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَوَقَفَ عَلَيْهِ فَقَالَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ إِنْ كُنْتَ مَا عَلِمْتُ صَوَّامًا قَوَّامًا وَصُولاً لِلرَّحِمِ أَمَا وَاللَّهِ لأُمَّةٌ أَنْتَ أَشَرُّهَا لأُمَّةٌ خَيْرٌ . ثُمَّ نَفَذَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَبَلَغَ الْحَجَّاجَ مَوْقِفُ عَبْدِ اللَّهِ وَقَوْلُهُ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَأُنْزِلَ عَنْ جِذْعِهِ فَأُلْقِيَ فِي قُبُورِ الْيَهُودِ ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى أُمِّهِ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ فَأَبَتْ أَنْ تَأْتِيَهُ فَأَعَادَ عَلَيْهَا الرَّسُولَ لَتَأْتِيَنِّي أَوْ لأَبْعَثَنَّ إِلَيْكِ مَنْ يَسْحَبُكِ بِقُرُونِكِ - قَالَ - فَأَبَتْ وَقَالَتْ وَاللَّهِ لاَ آتِيكَ حَتَّى تَبْعَثَ إِلَىَّ مَنْ يَسْحَبُنِي بِقُرُونِي - قَالَ - فَقَالَ أَرُونِي سِبْتَيَّ . فَأَخَذَ نَعْلَيْهِ ثُمَّ انْطَلَقَ يَتَوَذَّفُ حَتَّى دَخَلَ عَلَيْهَا فَقَالَ كَيْفَ رَأَيْتِنِي صَنَعْتُ بِعَدُوِّ اللَّهِ قَالَتْ رَأَيْتُكَ أَفْسَدْتَ عَلَيْهِ دُنْيَاهُ وَأَفْسَدَ عَلَيْكَ آخِرَتَكَ بَلَغَنِي أَنَّكَ تَقُولُ لَهُ يَا ابْنَ ذَاتِ

النِّطَاقَيْنِ أَنَا وَاللَّهِ ذَاتُ النِّطَاقَيْنِ أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكُنْتُ أَرْفَعُ بِهِ طَعَامَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَطَعَامَ أَبِي بَكْرٍ مِنَ الدَّوَابِّ وَأَمَّا الآخَرُ فَنِطَاقُ الْمَرْأَةِ الَّتِي لاَ تَسْتَغْنِي عَنْهُ أَمَا إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدَّثَنَا " أَنَّ فِي ثَقِيفٍ كَذَّابًا وَمُبِيرًا " . فَأَمَّا الْكَذَّابُ فَرَأَيْنَاهُ وَأَمَّا الْمُبِيرُ فَلاَ إِخَالُكَ إِلاَّ إِيَّاهُ - قَالَ - فَقَامَ عَنْهَا وَلَمْ يُرَاجِعْهَا .

बालों वाली जूती लाओ। फिर तेज़ी से अकड़ता हुआ चल पड़ा, यहाँ तक कि उनके पास पहुँच गया और कहने लगा, तूने मुझे कैसे देखा, मैं ने अल्लाह के दुश्मन के साथ क्या सुलूक किया? वो फ़रमाने लगीं, मैंने तुझे देखा है तूने उसकी दुनिया बिगाड़ दी और उसने तेरी आख़िरत बर्बाद कर दी। मुझे ख़बर मिली है तू उसे दो कमर बन्दों वाली का बेटा कहता है, मैं अल्लाह की क़सम! दो कमर बन्दों वाली हूँ, रहा उनमें से एक कमर बन्द तो उसे मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) और अबू बकर के खाने को, जानवरों से बुलंद करती थी कि वो उसे खा न लें, रहा दूसरा तो वो औरत का कमर बन्द था, जिससे औरत मुस्तग़ना नहीं हो सकती। हाँ रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें बताया था, 'बनू सक़ीफ़ में एक झूठ है और एक ज़ालिम है।' रहा कज़्ज़ाब(झूठा) तो हम उसको देख चुके हैं, रहा ज़ालिम तो मेरे ख़याल में तू ही वो है। तो वो उनके पास से उठकर चला गया और उन्हें कुछ जवाब न दिया।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अक़बतुल मदीना : मक्का की वो घाटी जिससे मदीना को जाया जाता है, जहाँ हज्जाज ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) को उनकी शहादत के बाद सूली पर लटका रखा था।**(2) अस्सलामु अलैक या अबा ख़ुबैब :** हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर(रज़ि.) के बड़े बेटे का नाम ख़ुबैब था, इसलिये उनको अबू ख़ुबैब के नाम से पुकार कर सलाम कहा, जिससे मालूम होता है, मय्यित के पास आकर दफ़न से पहले भी उसको सलाम कहा जा सकता है।**(3) लक़द कुन्तु उन्हाक अन हाज़ा :** मैं आपको ख़िलाफ़त के दावे से रोकता था कि इससे मुसलमानों में आपस में ख़ून रेज़ी होती है और ज़ालिम हुक्मरानों के मद्दे मुक़ाबिल खड़ा होने से, नफ़ा की बजाए नुक़सान ज़्यादा होता है। जिस तरह आज-कल हम देख रहे हैं कि ज़ालिम हुक्मरानों के ख़िलाफ़ तहरीक पैदा करके, उनको इक़्तिदार से निकालने के नतीजे में फ़ायदों से ज़्यादा नुक़सानात उठाने पड़ रहे हैं। अगर

उनके मुक़ाबले में आकर उनको निकालने की बजाए उन्हीं को कुबूल करते हुए इस्लाह और बेहतरी की कोशिश की जाये तो उसके नतीजे ज़्यादा बेहतर निकलेंगे। इसलिये इब्ने उमर(रज़ि.) इक़्तिदार की ख़्वाहिश किये बग़ैर, हुक्मरानों को टोकते थे, जिस तरह यहाँ उन्होंने बग़ैर किसी ख़ौफ़ व ख़तरे के हज़रत इब्ने जुबैर की ख़ूबियाँ और कमालात बयान किये और इसकी परवाह नहीं की कि हज्जाज और उसके हवारी तो उनको अल्लाह का दुश्मन और ज़ालिम क़रार देते हैं और हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) ने ये भी फ़रमाया, जिस उम्मत में तेरे जैसा आदमी दुश्मनों के बक़ौल बदतरीन है, वो उम्मत बहुत ही बेहतर और अफ़ज़ल है।(4) **यतवज़्ज़फ़ु** : तेज़ चलते हुए या अकड़कर तंजर के साथ चलते हुए।(5) **ज़ातिन्निताक़ैन** : निताक़ उस पटके को कहते हैं, जिसे औरत काम-काज करते वक़्त कमर पर बांधती है। सफ़रे हिज्रत के वक़्त, सफ़री खाने को बांधने के लिये, उन्होंने अपने कमर बन्द के दो हिस्से कर लिये थे, एक के साथ सफ़री खाना बांधा और दूसरे के साथ मश्कीज़े का मुँह बांध दिया।(फ़तहुल बारी जिल्द 7, पेज नं. 294) लेकिन मुस्लिम की रिवायत से मालूम होता है, उन्होंने इक़ामते मक्का के दौरान भी कीड़ों-मकोड़ों से बचाने के लिये खूंटी पर बांधने के लिये अपना कमर बन्द दो हिस्सों में तक़सीम किया था।(6) **कज़्ज़ाब** : झूठा, इससे मुराद मुख़्तार सक़फ़ी है, जिसने ये दावा किया था कि मेरे पास वह्य आती है।(7) **मुबीर** : ज़ालिम व सफ़्फ़ाक। इससे मुराद हज़रत अस्मा ने हज्जाज को लिया और उलमाए उम्मत ने उनके क़ौल को कुबूल किया।

बाब 59 : फ़ारसियों की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ فَارِسَ

(6497) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर दीन सुरय्या के पास होता तो एक फ़ारसी आदमी उसे ले जाता' या फ़रमाया, 'फ़ारस के बाशिन्दे उसे हासिल कर लेते।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ جَعْفَرٍ الْجَزَرِيِّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَوْ كَانَ الدِّينُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَذَهَبَ بِهِ رَجُلٌ مِنْ فَارِسَ - أَوْ قَالَ مِنْ أَبْنَاءِ فَارِسَ - حَتَّى يَتَنَاوَلَهُ " .

फ़ायदा : सुरय्या : एक बहुत ही बुलंद व बाला सितारा है, जिस तक रसाई हासिल करना मुश्किल है। कुछ हदीसों में दीन की जगह इल्म का लफ़्ज़ आया है। जिससे मालूम होता है इससे मुराद इल्मे दीन

है और अबना के लफ़्ज़ से मालूम होता है, दीन के इल्म के हुसूल के लिये मेहनत व कोशिश करने वाली एक जमाअत होगी और इल्मे हदीस के हुसूल और उसकी तदवीन और नश्रो-इशाअत के लिये जिस क़द्र मेहनत व कोशिश अइम्म-ए-हदीस और मुहद्दिसीन ने की है, उसकी कोई मिसाल और नज़ीर नहीं है। कुछ हज़रात ने इसका मिस्दाक़ इमाम अबू हनीफ़ा को बनाया है, हालांकि हदीस की जमा व तदवीन में उनकी मेहनत व कोशिश को मुहद्दिसीन की मेहनत व कोशिश के साथ कोई निस्बत नहीं दी जा सकती और उनका अहले फ़ारस से होना भी शक में है। क्योंकि उनके आबाओ-अज्दाद काबुल के रहने वाले थे। जो फ़ारस का इलाक़ा नहीं है। अगरचे अहनाफ़ ने उनके आबाओ-अज्दाद को फ़ारस के बाशिन्दे गर्दाना है और कुछ हज़रात ने इस हदीस का मिस्दाक़ इमाम बुख़ारी को बनाया है, लेकिन जमा के सेग़े से मालूम होता है, इससे मुराद सिर्फ़ एक फ़र्द नहीं है, बल्कि एक जमाअत है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِذْ نَزَلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْجُمُعَةِ فَلَمَّا قَرَأَ { وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ} قَالَ رَجُلٌ مَنْ هَؤُلاَءِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَمْ يُرَاجِعْهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم حَتَّى سَأَلَهُ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا - قَالَ - وَفِينَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ - قَالَ - فَوَضَعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ " لَوْ كَانَ الإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رِجَالٌ مِنْ هَؤُلاَءِ " .

(6498) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, हम नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आप पर सूरह जुम्आ नाज़िल हुई। तो जब आपने ये आयत पढ़ी, 'और उनमें से कुछ और लोग जो अभी उनके साथ मिले नहीं।'(सूरह जुम्आ : 3) एक आदमी ने पूछा, ये कौन लोग हैं? ऐ अल्लाह के रसूल! तो आपने उसे कोई जवाब न दिया, यहाँ तक कि उसने आप से एक बार दो बार या तीन बार पूछा। हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, हममें सलमान फ़ारसी भी मौजूद थे। चुनाँचे नबी(ﷺ) ने अपना हाथ सलमान पर रखकर फ़रमाया, 'अगर ईमान सुरय्या के पास होता तो उसे इसकी क़ौम के कुछ अफ़राद हासिल कर लेते।'

(सहीह बुख़ारी : 4897, 4898, तिर्मिज़ी : 2310, 3933)

बाब 60:रसूलुल्लाह(ﷺ) का फ़रमान, 'लोग सौ ऊँटों की तरह हैं, जिनमें एक भी सवारी के क़ाबिल नहीं है।'

باب قَوْلِهِ صلى الله عليه وسلم " النَّاسُ كَإِبِلٍ مِائَةٍ لاَ تَجِدُ فِيهَا رَاحِلَةً "

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لِمُحَمَّدٍ - قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، ابْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَجِدُونَ النَّاسَ كَإِبِلٍ مِائَةٍ لاَ يَجِدُ الرَّجُلُ فِيهَا رَاحِلَةً "

(6499) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम लोगों को सौ ऊँटों की तरह पाओगे, उनमें आदमी को एक भी सवारी के क़ाबिल नहीं मिलता।'
(तिर्मिज़ी : 2872)

मुफ़रदातुल हदीस : राहिलह : वो ऊँट या ऊँटनी जो इन्तिहाई आला और उम्दा हो, सवारी और बार बरदारी के काबिल हो और औसाफ़े कामिला से मुत्तसिफ़ हो।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि दुनिया में इंसान तो बहुत है, लेकिन उनमें अहले इल्म और अहले फ़ज़ल या आलिम बाअमल बहुत कम हैं, जिस तरह ऊँट तो बेशुमार हैं, लेकिन उनमें उम्दा और आला सवारी के क़ाबिल बहुत कम हैं या इंसानों में उम्दा ख़स्लतों और कामिल औसाफ़ के हामिल लोग बहुत कम हैं, जिन्हें दुनियाए फ़ानी के मुक़ाबले में आलमे बक़ा और आख़िरी जहान की फ़िक्र ज़्यादा हो और दुनिया से दिलचस्पी और रग़बत वाजिबी सी हो, जैसे ऊँटों में कामिल औसाफ़ के हामिल अच्छे और उम्दा ऊँट बहुत कम हैं। ये मानी भी हो सकता है ऐसे लोग जो जूदो-सख़ा से मुत्तसिफ़ और लोगों के बोझ को उठायें और उनके क़र्ज़ चुकायें, उनकी तकलीफ़ों-मुसीबतों को दूर करें और कम होंगे जैसकि सवारी और बार बरदारी के क़ाबिल ऊँट बहुत कम होते हैं।

इस किताब के कुल बाब 52 और 223 हदीसें हैं।

كتاب البر والصلة والآداب

किताबुल बिर्र वस्सिलह वल्आदाब

वफ़ादारी, सिला रहमी और सलीक़ा शिआरी

हदीस़ नम्बर 6500 से 6722 तक

तआरुफ़ किताबुल बिर्र वस्सिलह् वल्आदाब

रिसालत मआब(ﷺ) ने 'बिर्र' के बारे में फ़रमाया कि ये हुस्ने सुलूक का नाम है। हुस्ने सुलूक का दायरा वालिदैन से शुरू होकर आम मुसलमानों बल्कि जानवरों तक वसीअ है। हुस्ने सुलूक के सबसे ज़्यादा हक़दार वालिदैन हैं, इसलिये जब ख़ाली 'बिर्र' का नाम लिया जाये तो इससे उमूमन वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक मुराद लिया जाता है, अगरचे हक़ीक़त में इस सिफ़त से मुत्तसिफ़ इंसान दर्जा-बदर्जा सबके साथ हुस्ने सुलूक करने वाला होता है।

'सिला' से मुराद सिला रहमी है। बिर्र के साथ सिला का ज़िक्र रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक की अहमियत को उजागर करने के लिये किया जाता है। कुछ हज़रात ने इस किताब का उन्वान 'किताबुल अदब' भी तजवीज़ किया है। इसका सबब ये है कि इस किताब में हुस्ने मुआशिरत ही के आदाब बयान हुए हैं।

इमाम मुस्लिम(रह.) ने किताब की शुरूआत वालिदा के साथ हुस्ने सुलूक के साथ किया है क्योंकि इस्लाम में वो हुस्ने सुलूक की सबसे ज़्यादा हक़दार है। उसके बाद वालिद है। वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक जिहाद से भी मुक़द्दम है। बल्कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के अल्फ़ाज़ 'फ़फ़ीहिमा फ़जाहिद' उन दोनों(की ख़िदमत बजा लाने) में जिहाद करो।(सहीह मुस्लिम : 6504) से वाज़ेह होता है कि ख़िदमते वालिदैन जिहाद से भी मुक़द्दम है।

वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की अहमियत इस क़द्र है कि उनके बुलाने पर नफ़ल नमाज़ तक तोड़ देना ज़रूरी है। अल्लाह की रज़ा के लिये वालिदैन को राज़ी रखने का अज्र इतना है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इससे महरूम रह जाने वाले को सबसे ज़्यादा बद क़िस्मत और इज़्ज़त से महरूम इंसान क़रार दिया है। वालिदैन के बाद उनके दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक भी 'अबर्रुल बिर्र' (सबसे ऊँचे दर्जे का हुस्ने सुलूक) क़रार दिया गया है।

उसके बाद रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक आता है। क़तअ रहमी(रिश्ता तोड़ना) तबाह करने वाला जुर्म है। इसकी बिना पर इंसान का अपने रब से भी ताल्लुक़ क़तअ हो जाता(रिश्ता टूट जाता) है। सिला रहमी रिज़्क़ में कुशादगी का ज़रिया भी है। आम तौर पर इंसान ये समझता है कि अगर दूसरा क़तअ रहमी कर रहा है तो अब वो भी जवाबन क़तअ ताल्लुक़ पर मअज़ूर होगा, लेकिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने वाज़ेह फ़रमाया है कि क़तअ रहमी का मुक़ाबला सिला रहमी ही के ज़रिये से हो सकता है। जो शख़्स क़तअ रहमी के जवाब में सिला रहमी करता है वो दूसरे फ़रीक़ को तपती हुई राख का सफ़ूफ़ खिलाकर उनका इलाज कर रहा है और जब तक ये सिला रहमी करता रहता है उसे अल्लाह की तरफ़ से एक मददगार मयस्सर रहता है जिसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता, इसके होते हुए उस शख़्स को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

उसके बाद आम मुसलमानों के साथ हुस्ने सुलूक का बयान है। इसकी बुनियाद इस पर है कि मुसलमान आपस में हसद, बुग़्ज़, ऐराज़ और क़तअ ताल्लुक़ से परहेज़ करते हुए अल्लाह के साथ बन्दगी के रिश्ते की बिना पर एक-दूसरे के भाई बनकर रहें। रसूलुल्लाह(ﷺ) तीन दिन से ज़्यादा एक मुसलमान की दूसरे से नाराज़ी को हराम क़रार देते हैं। आपके फ़रमान के मुताबिक़ अफ़ज़ल वही है जो सुलह में शुरूआत करता है। आपने इस रिश्ते को मज़बूत बनाने के लिये इस बात की तालीम दी है कि मुसलमान एक-दूसरे की बुराइयाँ न ढूण्ढें, तजस्सुस(जासूसी) से काम न लें, न दूसरे मुसलमान पर ज़ुल्म करें, न उसे ज़ालिम के सुपुर्द करे और न उसे ख़ुद से कमतर समझे। हर मुसलमान का ख़ून इन्तिहाई क़ाबिले एहतिराम है। आप(ﷺ) ने इसी को तक़वा क़रार दिया है और वाज़ेह फ़रमाया है कि तक़वा का ताल्लुक़ दिल से है। दिल नेक जज़्बात से मामूर है तो इंसान मुत्तक़ी है। अल्लाह तआला इंसान की शक्लो-सूरत और उसके माल को नहीं देखता, जिस पर अक्सर इंसान इतराते हैं। वो दिलों और अमलों को देखता है और पाकीज़ा दिल रखने वालों और नेक आमाल करने वालों को पसंद करता है।

मुसलमान की आपस में दुश्मनी बख़्शिश में रुकावट बन जाती है और अल्लाह तआला की अज़्मत के लिये आपस में मुहब्बत अज़ीम तरीन इनाम का हक़दार बना देती है। इससे दुनिया में भी इज़्ज़त और आराम मयस्सर आता है और आख़िरत में भी अल्लाह के अर्श का साया नसीब होता है।

दिल के अच्छे जज़्बात का तक़ाज़ा है कि मुसलमान दूसरे मुसलमान की आफ़ियत और सेहत व सलामती का तलबगार हो। बीमारी और दूसरी तकलीफ़ें भी उन्ही मोमिनों के हिस्से में आती हैं जो अल्लाह के बहुत क़रीब होते हैं। हर मुश्किल पर मोमिन को अज्र मिलता है। एक बीमार मुसलमान की इयादत भी अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रिया बन जाती है।

दूसरी तरफ़ किसी मुसलमान पर ज़ुल्म इंसान के मुक़द्दर को तारीक(अन्धेरा) कर देता है। ज़ुल्म ज़ुलुमात(अन्धेरों) के मुतरादिफ़ है। एक मुसलमान जानता है कि उसे किसी पर ज़ुल्म करने की ज़रूरत ही नहीं। वो जो कुछ चाहता है अपने रब के ख़ज़ानों से हासिल कर सकता है। माल या दुनिया की किसी नेमत के हवाले से उसे ख़ौफ़ और बेइत्मीनानी का शिकार होने की ज़रूरत नहीं। अगर वो बहुत ज़्यादा बरकतें चाहता है तो मुसलमान भाइयों पर ख़र्च करे, आफ़ियत चाहता है तो मुसलमान भाइयों की तकलीफ़ें दूर करे। उनको दुख देने से बचे क्योंकि ज़ुल्म व ज़्यादती करने से उसकी अपनी नेकियाँ दूसरे को मिलने लगेंगी और उसका दामन ख़ाली रह जायेगा। मुसलमान दूसरे मुसलमान की हर हालत में मदद करे, उसे ज़ुल्म से बचाये, अगर वो ज़ालिम है तो उसे ज़ुल्म से रोके।

रहम दिली बहुत बड़ी नेमत है, अल्लाह बेपनाह रहम करने वाला है। नर्मी और रहम दिली को पसंद फ़रमाता है। रहम दिली पर इतना कुछ अता करता है कि किसी और बात पर उतना अता नहीं करता। मुसलमान की रहम दिली का दायरा इंसानों से आगे तमाम जानदारों तक वसीअ होता है। वो ग़ुस्से में किसी जानवर पर भी लानत नहीं करता। मख़्लूक़ात में सबसे ज़्यादा रहम दिल रसूलुल्लाह(ﷺ) हैं। आपने अपनी बद्दुआ और किसी मुसलमान के हक़ में इस्तेमाल किये जाने वाले सख़्त अल्फ़ाज़ को भी अल्लाह से उनके हक़ में दुआ बना देने की भीख माँगी है।

मुसलमान के साथ नर्मी और आपस में मुहब्बत को फ़रोग़ देना इतना अहम है कि उसके लिये जो बातें बज़ाहिर ख़िलाफ़े वाक़ेअ नज़र आती हैं लेकिन दो मुसलमानों को एक-दूसरे के क़रीब कर सकती हैं, उनकी इजाज़त है और बद तरीन शख़्स उसे क़रार दिया गया जो अलग-अलग चेहरों के साथ अलग-अलग लोगों को मिलता है और उनके दरम्यान नफ़रत का बीज बोता है। अगर किसी मुसलमान में कोई कमज़ोरी मौजूद है तो उसका तज़्किरा ज़बान पर लाना भी मना है, यही ग़ीबत है। सच्चाई आपस में मुहब्बत को फ़रोग़ देती है और झूठ नफ़रत फैलाता है। अगर मुसलमानों के ऐब छिपाते हुए उनकी अच्छाइयों के बारे में सच बोला जाये तो मुआशरा(समाज) अमन का गहवारा बन सकता है। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुसलमानों को ग़ुस्सा क़ाबू में रखने की तालीम दी है क्योंकि ग़ुस्सा आपस में ताल्लुक़ात को तबाह करता है। ग़ुस्से पर क़ाबू पाना अगरचे मुश्किल होता है क्योंकि ये इंसान के मिज़ाज में मौजूद है, लेकिन इसको क़ाबू में रखना इंसान को ताक़तवर बनाता है, उसे मख़्लूक़ का महबूब(पसन्दीदा) बनाता है। अगर तादीब(अदब सिखाने) के लिये सज़ा देना नागुज़ीर(ज़रूरी) हो जाये तो भी दूसरे की इज़्ज़ते नफ़्स को बचाना ज़रूरी है। किसी को मुँह पर मारना मना है। किसी को ग़ैर ज़रूरी तौर पर अज़ियत में मुब्तला करना अल्लाह के अज़ाब को दावत देने के बराबर है। किसी मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा तक करने की इजाज़त नहीं। हथियार हाथ में हो तो इस तरह कि उसका निशाना बनाने वाला हिस्सा अपने हाथ में हो, किसी दूसरे की तरफ़ उठा हुआ न हो। अज़ियत पहुँचाने वाली चीज़ को रास्ते से दूर करना भी निजात का सबब बन सकती है। किब्र, अपनी नेकी पर अजब,(ख़ुश होना) दूसरों के बारे में ऐसे तब्सरे जो दूसरों को निजात से महरूम करने के हवाले से किये जायें या ऐसे मामूली अल्फ़ाज़ भी, जिनमें तमाम इंसानों की हलाकत का तज़्किरा हो, मना हैं।

हमसाये(पड़ौसी) के साथ ख़ुसूसी हुस्ने सुलूक, सबसे बशाशत के साथ मिलना, दूसरों का हक़ दिलाने या जाइज़ ज़रूरत पूरी करने के लिये सिफ़ारिश करना, सब मुसलमानों की सिफ़ात में शामिल हैं और औलाद में से निस्बतन कमज़ोर, ख़ुसूसन बेटियों से हुस्ने सुलूक बहुत बड़ी नेकी है। वालिदैन के दिलों में अल्लाह ने औलाद के लिये जो मुहब्बत व शफ़क़त रखी है वो अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है। इस हवाले से किसी मोमिन को सदमा पहुँचता है, उसके बच्चे उससे ले लिये जाते हैं, तो उसे उस पर सब्र करने के बदले में जन्नत अता की जाती है।

ये हुस्ने मुआशिरत के आदाब हैं। जो इनको अपना लेता है वो अल्लाह का महबूब बन जाता है। जो अल्लाह का महबूब बन जाये वो फ़रिश्तों और तमाम कायनात को प्यारा होता है। अच्छे लोगों की रूहें भी अच्छाई की बिना पर एक-दूसरे से मुहब्बत करती हैं। अल्लाह और उसकी मख़्लूक़ से मुहब्बत रखने में इतनी कुव्वत है कि इंसान को आख़िरत में भी अच्छे लोगों से दिली मुहब्बत की बिना पर उन्ही का साथ नसीब होगा। जिसके हुस्ने अख़्लाक़ की लोग दुनिया में तारीफ़ करें, अल्लाह उस तारीफ़ को उसके लिये आख़िरत के इनामात की पेशगी ख़ुशख़बरी क़रार देता है।
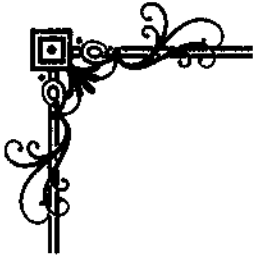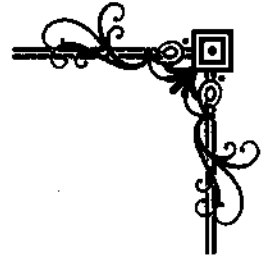
كتاب البر والصلة والآداب

47. वफ़ादारी, सिला रहमी और सलीक़ा शिआरी

باب بِرِّ الْوَالِدَيْنِ وَأَنَّهُمَا أَحَقُّ بِهِ

बाब 1 : वालिदैन से हुस्ने सुलूक और उनका उसका ज़्यादा हक़दार होना

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ جَمِيلِ بْنِ طَرِيفٍ الثَّقَفِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي قَالَ " أُمُّكَ " . قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ " ثُمَّ أُمُّكَ " . قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ " ثُمَّ أُمُّكَ " . قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ " ثُمَّ أَبُوكَ " . وَفِي حَدِيثِ قُتَيْبَةَ مَنْ أَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِي وَلَمْ يَذْكُرِ النَّاسَ .

(6500) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, मेरी अच्छी रिफ़ाक़त(अच्छा सुलूक) का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है? आपने फ़रमाया, 'तेरी माँ।' उसने पूछा, फिर कौन? फ़रमाया, 'तेरी वालिदा।' पूछा, फिर कौन? फ़रमाया, 'फिर भी तेरी माँ।' उसने पूछा, फिर कौन? फ़रमाया, 'फिर तेरा बाप।'

(सहीह बुख़ारी : 5971, इब्ने माजह : 2706)

मुफ़रदातुल हदीस़ : हुस्नि सहाबती : मेरी बेहतरीन रिफ़ाक़त यानी हुस्ने सुलूक और हुस्ने मुआशरत और ख़िदमत।

फ़ायदा : जामेअ तिर्मिज़ी और सुनन अबी दाऊद में इस मफ़हूम का सवाल मुआविया बिन हैदा क़ुशैरी(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से किया था और इस हदीस़ से मालूम होता है कि ख़िदमत और

हुस्ने सुलूक के बारे में माँ का हक़ बाप से ज़्यादा मुक़द्दम है। क्योंकि माँ सिन्फ़े नाज़ुक और कमज़ोर होने की वजह से इसकी ज़रूरतमन्द ज़्यादा है। जबकि आम तौर पर उसकी रहमदिली और नर्मी की वजह से नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है और बाप के रौब व दाब और घर का निगरान व निगेहबान होने की वजह से ज़्यादा ख़्याल रखा जाता है। इसलिये शरीअत में इस कमज़ोर सिन्फ़ की ख़िदमत को ज़्यादा अहमियत के साथ बयान किया गया है। नीज़ क़ुरआन मजीद में माँ-बाप के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद करते हुए ख़ास तौर पर माँ की तीन तकलीफ़ों और मुसीबतों का ज़िक्र किया गया है, जो हमल विलादत, जिसमें माँ को मौत व हयात की कश्मकश के इन्तिहाई मुश्किल और जान तोड़ मरहले से गुज़रना पड़ता है। फिर दूध पिलाने और परवरिश व परदाख़्त का मरहला पेश आता है, जिसमें माँ को औलाद की ख़ातिर अपना आराम व सुकून तज करना पड़ता है। बहुत सी चीज़ों से दस्त कश होना पड़ता है, गर्म और सर्द मौसम के गर्म व सर्द हालात से दोचार होना पड़ता है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَارَةَ، بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَحَقُّ بِحُسْنِ الصُّحْبَةِ قَالَ " أُمُّكَ ثُمَّ أُمُّكَ ثُمَّ أُمُّكَ ثُمَّ أَبُوكَ ثُمَّ أَدْنَاكَ أَدْنَاكَ " .

(6501) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! हुस्ने रिफ़ाक़त का हक़दार कौन है? आपने फ़रमाया, 'तेरी माँ, फिर तेरी माँ, फिर तेरी माँ, फिर तेरा बाप, फिर दर्जा-बदर्जा तेरे रिश्तेदार।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ वालिदैन के बाद, वालिदैन के भाई-बहन और उसके दूसरे रिश्तेदार व अज़ीज़ दर्जा-बदर्जा अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक़ हुस्ने सुलूक के हक़दार हैं। इसलिये हर साहिबे हक़ को उसका हक़ मिलना चाहिये, तज़ाहुम और टकराव की सूरत में वालिदैन का हक़ मुक़द्दम होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عُمَارَةَ، وَابْنِ، شُبْرُمَةَ عَنْ أَبِي، زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ وَزَادَ فَقَالَ " نَعَمْ وَأَبِيكَ لَتُنَبَّأَنَّ " .

(6502) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आगे पहली हदीस़ बयान की और ये इज़ाफ़ा किया, आपने फ़रमाया, 'हाँ! तेरे बाप की क़सम! तुम्हें ज़रूर बताया जायेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 5971, इब्ने माजह)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) ने साइल के सवाल का जवाब देने से पहले ताकीद और ज़ोर पैदा करने के लिये व अबीक फ़रमाया जो अरबी कलाम की ताकीद के लिये इस्तेमाल करते थे। क़सम मक़सूद नहीं होती, क्योंकि ग़ैरुल्लाह की क़सम उठाना तो जाइज़ नहीं है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ، ح وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ، بْنُ خِرَاشٍ حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ شُبْرُمَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ فِي حَدِيثِ وُهَيْبٍ مَنْ أَبَرُّ وَفِي حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ طَلْحَةَ أَىُّ النَّاسِ أَحَقُّ مِنِّي بِحُسْنِ الصُّحْبَةِ ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ ‏.‏

(6503) इमाम साहब अपने दो उस्तादों की सनदों से इब्ने शुब्रुमा की ऊपर वाली सनद से ये रिवायत बयान करते हैं। वुहैब की रिवायत में है, मैं किससे हुस्ने सुलूक करूँ? और मुहम्मद बिन तलहा की रिवायत में है, सब लोगों में से मेरी हुस्ने रिफ़ाक़त का ज़्यादा हक़दार कौन है? फिर वही हदीस बयान की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ حَبِيبٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ - عَنْ سُفْيَانَ، وَشُعْبَةَ قَالاَ حَدَّثَنَا حَبِيبٌ، عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَسْتَأْذِنُهُ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ ‏"‏ أَحَىٌّ وَالِدَاكَ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ نَعَمْ ‏.‏ قَالَ ‏"‏ فَفِيهِمَا فَجَاهِدْ ‏"‏ ‏.‏

(6504) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपसे जिहाद में शिरकत की इजाज़त तलब की तो आपने पूछा, 'क्या तेरे माँ-बाप ज़िन्दा हैं?' उसने कहा, जी हाँ! फ़रमाया, 'तो फिर ख़ूब मेहनत से उनकी ख़िदमत कर।'

(सहीह बुख़ारी : 3004, 5972, अबू दाऊद : 2529, तिर्मिज़ी : 1671, नसाई : 3103)

फ़ायदा : इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद, औज़ाई, सौरी वग़ैरह का मौक़िफ़ और नज़रिया ये है कि जिहाद में निकलने के लिये वालिदैन की इजाज़त ज़रूरी है। लेकिन ये इस सूरत में है, जब जिहाद फ़र्ज़े ऐन न हो। लेकिन अगर दुश्मन की कुव्वत व ताक़त की कसरत के पेशे नज़र तमाम अफ़राद का निकलना नागुज़ीर(ज़रूरी) हो, किसी के लिये पीछे रहना जाइज़ न हो, क्योंकि नफ़ीरे आम है तो फिर इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं है, सिवाये इसके कि उनकी ख़िदमत व हिफ़ाज़त करने

वाला कोई न हो और वो ख़ुद अपने आपको सम्भाल न सकते हों। तो फिर बक़ौल इमाम इब्ने हज़्म उस पर जिहाद में हिस्सा लेना बिल्इज्माअ साक़ित हो जायेगा। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इस हदीस़ से ये भी इस्तिम्बात किया है कि वालिदैन की इजाज़त के बग़ैर अगर जिहाद के लिये निकलना जाइज़ नहीं है तो आम सफ़र के लिये बिल्औला निकलना जाइज़ नहीं होगा।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ حَبِيبٍ، سَمِعْتُ أَبَا الْعَبَّاسِ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، يَقُولُ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ . قَالَ مُسْلِمٌ أَبُو الْعَبَّاسِ اسْمُهُ السَّائِبُ بْنُ فَرُّوخَ الْمَكِّيُّ .

(6505) अबुल अब्बास(रह.) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस(रज़ि.) से बयान करते हैं, एक आदमी नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आगे ऊपर वाली रिवायत बयान की है। इमाम मुस्लिम(रह.) फ़रमाते हैं, अबुल अब्बास का नाम साइब बिन फ़र्रुख़ मक्की है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، ح وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، الْجُعْفِيُّ عَنْ زَائِدَةَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، جَمِيعًا عَنْ حَبِيبٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6506) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की सनदों से हबीब की ऊपर वाली सनद से यही हदीस़ बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، أَنَّ نَاعِمًا، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ أَقْبَلَ رَجُلٌ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ أُبَايِعُكَ عَلَى الْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ أَبْتَغِي

(6507) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी अल्लाह के नबी(ﷺ) की तरफ़ आया और आपसे अर्ज़ किया, मैं आपसे हिज्रत और जिहाद पर बैअत करता हूँ, इस पर अल्लाह से अज्र का तलबगार हूँ। आपने पूछा, 'क्या तेरे वालिदैन में से कोई एक ज़िन्दा है?' उसने कहा, जी हाँ! बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं। आपने

الأَجْرَ مِنَ اللَّهِ . قَالَ " فَهَلْ مِنْ وَالِدَيْكَ أَحَدٌ حَيٌّ " . قَالَ نَعَمْ بَلْ كِلاَهُمَا . قَالَ " فَتَبْتَغِي الأَجْرَ مِنَ اللَّهِ " . قَالَ نَعَمْ . قَالَ " فَارْجِعْ إِلَى وَالِدَيْكَ فَأَحْسِنْ صُحْبَتَهُمَا " .

पूछा, 'तुम अल्लाह से अज्र के ख़्वाहाँ हो?' उसने कहा, जी हाँ! आपने फ़रमाया, 'तो फिर अपने वालिदैन की तरफ़ लौट जाओ और उन दोनों से हुस्ने सुलूक से पेश आओ।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, जब माँ-बाप ख़िदमत के सख़्त मोहताज हों, कोई दूसरा उनकी ख़बर गीरी और निगेहदाश्त(देख-रेख) करने वाला न हो और इस बिना पर वो इजाज़त न दें तो फिर उनकी ख़िदमत व ख़बर गीरी हिज्रत और जिहाद से मुक़द्दम है।

باب تَقْدِيمِ بِرِّ الْوَالِدَيْنِ عَلَى التَّطَوُّعِ بِالصَّلاَةِ وَغَيْرِهَا

बाब 2 : वालिदैन की ख़िदमत और उनसे हुस्ने सुलूक नफ़ल नमाज़ वग़ैरह पर मुक़द्दम है

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ كَانَ جُرَيْجٌ يَتَعَبَّدُ فِي صَوْمَعَةٍ فَجَاءَتْ أُمُّهُ . قَالَ حُمَيْدٌ فَوَصَفَ لَنَا أَبُو رَافِعٍ صِفَةَ أَبِي هُرَيْرَةَ لِصِفَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أُمَّهُ حِينَ دَعَتْهُ كَيْفَ جَعَلَتْ كَفَّهَا فَوْقَ حَاجِبِهَا ثُمَّ رَفَعَتْ رَأْسَهَا إِلَيْهِ تَدْعُوهُ فَقَالَتْ يَا جُرَيْجُ أَنَا أُمُّكَ كَلِّمْنِي . فَصَادَفَتْهُ يُصَلِّي فَقَالَ اللَّهُمَّ أُمِّي وَصَلاَتِي . فَاخْتَارَ صَلاَتَهُ فَرَجَعَتْ ثُمَّ عَادَتْ فِي الثَّانِيَةِ فَقَالَتْ يَا جُرَيْجُ أَنَا أُمُّكَ

(6508) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, जुरैज अपनी इबादत गाह में इबादत करते थे, चुनाँचे उसकी माँ आई। हुमैद कहते हैं, हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने उसकी माँ की जो कैफ़ियत रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान की, वही कैफ़ियत व सूरत अबू राफ़ेअ ने हमें बताई। उसकी माँ ने जब उसे बुलाया तो कैसे अपनी हथेली, अपने अब्रू पर रखी थी। फिर उसे बुलाने के लिये, उसकी तरफ़ अपना सर उठाया और आवाज़ दी, ऐ जुरैज! मैं तेरी माँ हूँ, मुझसे बातचीत करो। तो उसने उसे नमाज़ पढ़ते हुए पाया। जुरैज ने दिल में कहा, ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़ और मेरी माँ(किस को तरजीह दूँ?) फिर उसने नमाज़ को तरजीह दी, तो वो वापस चली गई। फिर दोबारा आई और आवाज़ दी ऐ जुरैज! मैं तेरी माँ हूँ, मुझसे हम कलाम हो। उसने दिल में कहा, ऐ अल्लाह! मेरी

فَكَلِّمْنِي . قَالَ اللَّهُمَّ أُمِّي وَصَلاَتِي . فَاخْتَارَ صَلاَتَهُ فَقَالَتِ اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا جُرَيْجٌ وَهُوَ ابْنِي وَإِنِّي كَلَّمْتُهُ فَأَبَى أَنْ يُكَلِّمَنِي اللَّهُمَّ فَلاَ تُمِتْهُ حَتَّى تُرِيَهُ الْمُومِسَاتِ . قَالَ وَلَوْ دَعَتْ عَلَيْهِ أَنْ يُفْتَنَ لَفُتِنَ . قَالَ وَكَانَ رَاعِي ضَأْنٍ يَأْوِي إِلَى دَيْرِهِ - قَالَ - فَخَرَجَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الْقَرْيَةِ فَوَقَعَ عَلَيْهَا الرَّاعِي فَحَمَلَتْ فَوَلَدَتْ غُلاَمًا فَقِيلَ لَهَا مَا هَذَا قَالَتْ مِنْ صَاحِبِ هَذَا الدَّيْرِ . قَالَ فَجَاءُوا بِفُئُوسِهِمْ وَمَسَاحِيهِمْ فَنَادَوْهُ فَصَادَفُوهُ يُصَلِّي فَلَمْ يُكَلِّمْهُمْ - قَالَ - فَأَخَذُوا يَهْدِمُونَ دَيْرَهُ فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ نَزَلَ إِلَيْهِمْ فَقَالُوا لَهُ سَلْ هَذِهِ - قَالَ - فَتَبَسَّمَ ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَ الصَّبِيِّ فَقَالَ مَنْ أَبُوكَ قَالَ أَبِي رَاعِي الضَّأْنِ . فَلَمَّا سَمِعُوا ذَلِكَ مِنْهُ قَالُوا نَبْنِي مَا هَدَمْنَا مِنْ دَيْرِكَ بِالذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ . قَالَ لاَ وَلَكِنْ أَعِيدُوهُ تُرَابًا كَمَا كَانَ ثُمَّ عَلاَهُ .

माँ और मेरी नमाज़, तो उसने नमाज़ को चुना। तो उसकी माँ ने कहा, ऐ अल्लाह! ये जुरैज है और ये मेरा बेटा है और मैंने इससे हम कलाम होना चाहा है, सो इसने मुझसे बातचीत करने से इंकार किया है। ऐ अल्लाह! इसको उस वक़्त तक न मारना, जब तक तू इसे बदकार औरतों का नज़ारा न करा दे। आपने फ़रमाया, 'अगर वो उसके बारे में फ़ित्ने में मुब्तला होने की दुआ करती तो वो फ़ित्ने में मुब्तला कर दिया जाता।' आपने फ़रमाया, 'एक दुम्बों का चरवाहा था, जो उसके दैर(इबादतगाह) के पास ठहरता था, चुनाँचे एक औरत बस्ती से निकली और चरवाहे ने उससे बदकारी की, जिससे उसे हमल ठहर गया और उसने एक बच्चा जना। उससे पूछा गया, ये किसकी हरकत है? उसने कहा, उस दैर वाले की। तो लोग अपने कुल्हाड़े और कसियाँ लेकर आ गये और उसे आवाज़ दी, तो उन्होंने उसे नमाज़ पढ़ते हुए पाया, इसलिये उसने उनको जवाब न दिया। तो लोग उसका दैर यानी इबादत ख़ाना गिराने लगे। तो जब उसने ये सूरते हाल देखी, उनके पास उतर आया। लोगों ने उसे कहा, उस औरत से पूछो? तो वो मुस्कुराया, फिर बच्चे के सर पर हाथ फेरा और पूछा, तेरा बाप कौन है? उसने कहा, मेरा बाप दुम्बों का चरवाहा है। तो जब लोगों ने बच्चे से ये सुना, कहने लगे, हमने तेरा जो मअ़बद(इबादत ख़ाना) गिराया है, हम उसे सोने और चाँदी से बना देते हैं, उसने कहा नहीं। लेकिन इसे पहले ही की तरह मिट्टी का बना दो, फिर वो उसमें चढ़ गया।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) सौमअह : मख़रूती शक्ल का चबारा या मिनारा।(2) **मूमिसात :** मुफ़रद मूमिसह है, बदकार और ज़ानिया औरत, फ़ुऊस : फ़ास की जमा है, कुदाल मुराद है, जिससे ज़मीन खोदी जाती है।(3) **मसाही :** मिस्हाह की जमा है, जिस आले से ज़मीन से मिट्टी इकट्ठी की जाती है, फावड़ा, कसी।(4) **अबी राइज़्ज़अन :** मेरा बाप भेड़ों का चरवाहा है। चूंकि वो उसके नुत्फ़े से पैदा हुआ था, इसलिये उसको बाप का नाम दिया गया और उसका नाम बाबोस था।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, अगर इंसान नमाज़ पढ़ रहा हो और उसकी वालिदा को उसका इल्म न हो सके और जवाब न देने की सूरत में उसकी ममता को ठेस पहुँचती हो, यानी जवाब न देना, उसके लिये अज़ियत और नागवारी का बाइस़ हो तो नमाज़ तोड़कर उसको जवाब देना चाहिये। क्योंकि नमाज़ अगर नफ़्ल है तो उसको दोबारा पढ़ा जा सकता है और अगर फ़र्ज़ है तो उसकी क़ज़ाई मुम्किन है और पहली उम्मतों में तो नमाज़ के दौरान ज़रूरी बातचीत करना जाइज़ था, जैसाकि इस्लाम में भी शुरू में जाइज़ रहा है। इसलिये उसे जवाब देना चाहिये था, उसने तशद्दुद और इन्तिहा पसन्दी से काम लिया, इसलिये माँ की बद्दुआ क़ुबूल हो गई।

(6509) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'पिंघोड़े(दूध पीने की उम्र में) सिर्फ़ तीन लोगों ने बातचीत की है, हज़रत ईसा बिन मरयम, जुरैज का साथी और जुरैज एक इबादत गुज़ार आदमी था, उसने एक इबादतगाह(कुटिया) बनाई, वो उसमें रहता था। चुनाँचे उसकी माँ आई, जबकि वो नमाज़ पढ़ रहा था, वो कहने लगी, ऐ जुरैज! उसने दिल में कहा, ऐ मेरे रब! मेरी माँ और मेरी नमाज़। सो वो अपनी नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो गया और उसकी माँ वापस लौट गई। चुनाँचे वो अगले दिन फिर आई और वो नमाज़ पढ़ रहा था।' उसने आवाज़ दी, ऐ जुरैज! उसने दिल में कहा, ऐ मेरे रब! मेरी माँ और मेरी नमाज़। फिर वो अपनी नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो गया और उसकी माँ वापस लौट गई। चुनाँचे वो अगले दिन फिर आई और वो नमाज़ पढ़ रहा था। उसने

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي الْمَهْدِ إِلاَّ ثَلاَثَةٌ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَصَاحِبُ جُرَيْجٍ وَكَانَ جُرَيْجٌ رَجُلاً عَابِدًا فَاتَّخَذَ صَوْمَعَةً فَكَانَ فِيهَا فَأَتَتْهُ أُمُّهُ وَهُوَ يُصَلِّي فَقَالَتْ يَا جُرَيْجُ . فَقَالَ يَا رَبِّ أُمِّي وَصَلاَتِي . فَأَقْبَلَ عَلَى صَلاَتِهِ فَانْصَرَفَتْ فَلَمَّا كَانَ مِنَ الْغَدِ أَتَتْهُ وَهُوَ يُصَلِّي فَقَالَتْ يَا جُرَيْجُ فَقَالَ يَا رَبِّ أُمِّي وَصَلاَتِي فَأَقْبَلَ عَلَى صَلاَتِهِ فَانْصَرَفَتْ فَلَمَّا كَانَ مِنَ الْغَدِ

आवाज़ दी, ऐ जुरैज! उसने दिल में कहा, ऐ मेरे रब! मेरी माँ और मेरी नमाज़। फिर वो अपनी नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो गया। चुनाँचे उसकी माँ ने कहा, ऐ अल्लाह! इसको उस वक़्त तक न मारना, जब तक ये बदकार औरतों का चेहरा न देख ले। बनी इस्राईल में जुरैज और उसकी इबादतगाह का चर्चा हुआ और एक ज़ानिया औरत थी जिसका हुस्न मिसाली था। उसने कहा, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें उसको फ़ित्ने में मुब्तला कर देती हूँ। तो वो उसके दरपे हुई और उसने उसकी तरफ़ तवज्जह न की, उसकी परवाह न की। तो वो एक चरवाहे के पास आई जो उसकी कुटिया के पास ठहरता था और अपने आपको उसके हवाले कर दिया, उसने उससे ताल्लुक़ात क़ायम किये, जिससे उसे हमल ठहर गया। तो जब बच्चा पैदा हुआ, वो कहने लगी, ये जुरैज का है। लोग उसके पास आये, उसे उसकी कुटिया से नीचे उतारा, उसकी कुटिया को गिरा दिया और उसे मारने-पीटने लगे, उसने पूछा, ये मामला क्या है? उन्होंने कहा, तूने उस ज़ानिया से ज़िना किया है और उसने तुझसे बच्चा जना है। जुरैज ने कहा, बच्चा कहाँ है? तो लोग उसे ले आये। उसने कहा, मुझे नमाज़ पढ़ने की मोहलत दो। चुनाँचे उसने नमाज़ पढ़ी तो जब सलाम फेरा, बच्चे के पास आकर उसके पेट पर ठोकर लगाई और पूछा, ऐ बच्चे! तेरा बाप कौन है? उसने जवाब दिया, फ़लाँ चरवाहा। चुनाँचे लोग जुरैज की तरफ़ बढ़े, उसको बोसा देते थे और(प्यार व मुहब्बत से)

أَتَتْهُ وَهُوَ يُصَلِّي فَقَالَتْ يَا جُرَيْجُ . فَقَالَ أَىْ رَبِّ أُمِّي وَصَلاَتِي . فَأَقْبَلَ عَلَى صَلاَتِهِ فَقَالَتِ اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْهُ حَتَّى يَنْظُرَ إِلَى وُجُوهِ الْمُومِسَاتِ . فَتَذَاكَرَ بَنُو إِسْرَائِيلَ جُرَيْجًا وَعِبَادَتَهُ وَكَانَتِ امْرَأَةٌ بَغِيٌّ يُتَمَثَّلُ بِحُسْنِهَا فَقَالَتْ إِنْ شِئْتُمْ لأَفْتِنَنَّهُ لَكُمْ - قَالَ - فَتَعَرَّضَتْ لَهُ فَلَمْ يَلْتَفِتْ إِلَيْهَا فَأَتَتْ رَاعِيًا كَانَ يَأْوِي إِلَى صَوْمَعَتِهِ فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا فَوَقَعَ عَلَيْهَا فَحَمَلَتْ فَلَمَّا وَلَدَتْ قَالَتْ هُوَ مِنْ جُرَيْجٍ . فَأَتَوْهُ فَاسْتَنْزَلُوهُ وَهَدَمُوا صَوْمَعَتَهُ وَجَعَلُوا يَضْرِبُونَهُ فَقَالَ مَا شَأْنُكُمْ قَالُوا زَنَيْتَ بِهَذِهِ الْبَغِيِّ فَوَلَدَتْ مِنْكَ . فَقَالَ أَيْنَ الصَّبِيُّ فَجَاءُوا بِهِ فَقَالَ دَعُونِي حَتَّى أُصَلِّيَ فَصَلَّى فَلَمَّا انْصَرَفَ أَتَى الصَّبِيَّ فَطَعَنَ فِي بَطْنِهِ وَقَالَ يَا غُلاَمُ مَنْ أَبُوكَ قَالَ فُلاَنٌ الرَّاعِي - قَالَ - فَأَقْبَلُوا عَلَى جُرَيْجٍ يُقَبِّلُونَهُ وَيَتَمَسَّحُونَ بِهِ وَقَالُوا نَبْنِي لَكَ صَوْمَعَتَكَ مِنْ ذَهَبٍ . قَالَ لاَ أَعِيدُوهَا مِنْ طِينٍ كَمَا كَانَتْ . فَفَعَلُوا . وَبَيْنَا صَبِيٌّ يَرْضَعُ مِنْ أُمِّهِ فَمَرَّ رَجُلٌ رَاكِبٌ عَلَى دَابَّةٍ فَارِهَةٍ وَشَارَةٍ حَسَنَةٍ فَقَالَتْ أُمُّهُ

اللَّهُمَّ اجْعَلِ ابْنِي مِثْلَ هَذَا ‏.‏ فَتَرَكَ الثَّدْىَ وَأَقْبَلَ إِلَيْهِ فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَقَالَ اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ ‏.‏ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى ثَدْيِهِ فَجَعَلَ يَرْتَضِعُ ‏.‏ قَالَ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَحْكِي ارْتِضَاعَهُ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ فِي فَمِهِ فَجَعَلَ يَمُصُّهَا ‏.‏ قَالَ وَمَرُّوا بِجَارِيَةٍ وَهُمْ يَضْرِبُونَهَا وَيَقُولُونَ زَنَيْتِ سَرَقْتِ ‏.‏ وَهِيَ تَقُولُ حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ‏.‏ فَقَالَتْ أُمُّهُ اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلِ ابْنِي مِثْلَهَا ‏.‏ فَتَرَكَ الرَّضَاعَ وَنَظَرَ إِلَيْهَا فَقَالَ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا ‏.‏ فَهُنَاكَ تَرَاجَعَا الْحَدِيثَ فَقَالَتْ حَلْقَى مَرَّ رَجُلٌ حَسَنُ الْهَيْئَةِ فَقُلْتُ اللَّهُمَّ اجْعَلِ ابْنِي مِثْلَهُ ‏.‏ فَقُلْتَ اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ ‏.‏ وَمَرُّوا بِهَذِهِ الأَمَةِ وَهُمْ يَضْرِبُونَهَا وَيَقُولُونَ زَنَيْتِ سَرَقْتِ ‏.‏ فَقُلْتُ اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلِ ابْنِي مِثْلَهَا ‏.‏ فَقُلْتَ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا قَالَ إِنَّ ذَاكَ الرَّجُلَ كَانَ جَبَّارًا فَقُلْتُ اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ ‏.‏ وَإِنَّ هَذِهِ يَقُولُونَ لَهَا زَنَيْتِ ‏.‏ وَلَمْ تَزْنِ وَسَرَقْتِ وَلَمْ تَسْرِقْ فَقُلْتُ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا ‏.‏

उस पर हाथ फेरते थे और कहने लगे, हम तेरी कुटिया सोने से बना देते हैं। उसने कहा, नहीं! इसको गारे से ही बना दो, जैसाकि वो पहले थी, तो उन्होंने ऐसा ही किया। इस तरह एक बच्चा अपनी माँ का दूध पी रहा था, इस दौरान एक आदमी एक तेज़ रफ़्तार सवारी पर बेहतरीन शक्लो-सूरत और अच्छे लिबास वाला गुज़रा तो उसकी माँ ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को इस जैसा बना दे। सो उसने पिस्तान छोड़ दी और उस आदमी की तरफ़ मुतवज्जह होकर, उस पर नज़र दौड़ाई और कहा, ऐ अल्लाह! मुझे इस जैसा न बनाना। फिर पिस्तान की तरफ़ रुख़ करके दूध पीने लगा।' हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) कहते हैं, गोया मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) को देख रहा हूँ और आप बच्चे के दूध पीने की नक़ल उतारते हुए और अपनी शहादत की उंगली अपने मुँह में डालते हुए हैं और उसे चूसने लगे हैं और लोग एक लौण्डी को लेकर गुज़रे, वो उसे मार रहे थे और कहते थे, तूने ज़िना किया है, तूने चोरी की है और वो कह रही थी, मेरे लिये अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है। तो बच्चे की माँ ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को इस जैसा न बनाना। चुनाँचे बच्चे ने दूध पीना छोड़ दिया और उस लौण्डी पर नज़र दौड़ाई फिर कहा, ऐ अल्लाह! मुझे इस जैसा बना दे। तब माँ-बेटे ने आपस में बातचीत की। माँ ने कहा, हाय मेरा हलक़! एक आदमी अच्छी हेयत वाला गुज़रा तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को इस जैसा बना दे तो तूने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे इस जैसा न

बनाना और लोग उस लौण्डी को मारते हुए लेकर गुज़रे और वो कह रहे थे तूने ज़िना किया है, तूने चोरी की है। तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को इस जैसा न बनाना, तो तूने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे इस जैसा बना दे। बच्चे ने कहा, वो आदमी सरकश व ज़ालिम था, इसलिये मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न बनाना और ये लौण्डी जिसे कह रहे हैं तूने ज़िना किया है तूने चोरी की है, उसने ज़िना और चोरी नहीं की, इसलिये मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे इस जैसा(पारसा) बना दे।'

(सहीह बुख़ारी : 3436, 2482)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यतमस़्स़लु बिहुस्निहा : उसका हुस्नो-जमाल ज़र्बुल मस़ल था।**(2) दाब्बतिन फ़ारिहह :** चाको-चोबन्द और तेज़ रफ़्तार जानवर।**(3) शारतिन :** अच्छी शक्लो-सूरत और उम्दा लिबास वाला।**(4) ला तज्अल्नी मिस़्लहू :** मुझे इस जैसा न बनाना, बच्चे के ज़रिये अल्लाह तआला ने इस हक़ीक़त को वाज़ेह किया कि सिर्फ़ किसी के ज़ाहिर से मुतास़्सिर नहीं होना चाहिये, उसके बातिन और अस्लियत को भी जानने की कोशिश करना चाहिये, घुड़सवार इंसान बज़ाहिर अच्छी शक्लो-सूरत वाला और मालदार था। इसलिये माँ ने, बेटे के लिये उस जैसा बनाने की दुआ की, हालांकि वो दर हक़ीक़त बहुत ख़ुद पसंद और जाबिर व सरकश था और लौण्डी जिसको लोग लअन-तअन करके मार-पीट रहे थे और माँ ने इसी वजह से उस जैसा न बनाने की दुआ की थी, दर हक़ीक़त एक नेक और पारसा औरत थी, इसलिये बच्चे ने उसकी नेकी और पारसाई की ख़्वाहिश की, क्योंकि तश्बीह में किसी एक सिफ़त में तश्बीह मक़सूद होती है, हर हैसियत में मुशाबिहत नहीं होती कि ये कहा जा सके, बच्चे ने ये ख़्वाहिश की, मुझे भी मार-पीट से दोचार होना पड़े और मुझ पर भी इल्ज़ामात लगें।

बाब 3 : जो इंसान अपने वालिदैन या उनमें से एक को बुढ़ापे की हालत में पाकर(उनकी ख़िदमत करके) जन्नत में दाख़िला नहीं लेता, वो ज़लील व नाकाम हुआ

باب رَغِمَ أَنْفُ مَنْ أَدْرَكَ أَبَوَيْهِ أَوْ أَحَدَهُمَا عِنْدَ الْكِبَرِ فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ

(6510) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'नाक ख़ाक आलूद हो, फिर नाक ख़ाक आलूद हो, फिर नाक ख़ाक आलूद हो।' आपसे पूछा गया, किसकी? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'जिस शख़्स ने अपने वालिदैन को बुढ़ापे की हालत में पाया, उनमें से एक को या दोनों को फिर(उनकी ख़िदमत करके) जन्नत में दाख़िल न हुआ।'

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رَغِمَ أَنْفُ ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ " . قِيلَ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " مَنْ أَدْرَكَ أَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : रग़ि-म अन्फ़ुहु : उसकी नाक रुग़ाम गर्दो-गुबार और ख़ाक में मिले, यानी वो ज़लील व ख़्वार और रुस्वा हो।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, माँ-बाप की ख़िदमत उनसे हुस्ने सुलूक और उनको राहत पहुँचाकर उनकी दुआ लेना जन्नत हासिल करने का ख़ास वसीला है। वालिदैन की ख़िदमत और उनसे हुस्ने सुलूक हर उम्र में मतलूब है, लेकिन बुढ़ापे की उम्र में जब वो अज़ कारे रफ़्ता(मोहताज) हो जायें तो वो उस वक़्त ज़्यादा ख़िदमत और राहत रसानी के मोहताज होते हैं, चूंकि इस सूरत में वो एक बोझ महसूस होते हैं, क्योंकि वो देने की बजाए लेने की उम्र को पहुँच चुके हैं। इसलिये इसी हालत में उनकी ख़िदमत करना और उनको राहत पहुँचाकर ख़ुश रखना, अल्लाह तआला को महबूब व मक़्बूल अमल है, जो जन्नत में दाख़िल होने का आसान ज़ीना(सीढ़ी) है। इसलिये जिस अल्लाह के बन्दे को माँ-बाप दोनों या उनमें से एक ही बुढ़ापे की हालत में ख़िदमत करके जन्नत में जाने का मौक़ा मयस्सर आ जाये, लेकिन वो उनकी ख़िदमत करके जन्नत में दाख़िल न हो सके, बिला शुब्हा वो बड़ा बद नसीब और महरूम है, इसलिये आपने ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया, 'वो नामुराद, ज़लील व ख़्वार और रुस्वा हों।'

(6511) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसका नाक ख़ाक आलूद हो, फिर उसका नाक ख़ाक आलूद हो, फिर उसका नाक ख़ाक आलूद हो।' पूछा गया, किसकी? ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'जिसने अपने वालिदैन को बुढ़ापे की हालत में पाया, उनमें से एक को या दोनों को, फिर(उनकी ख़िदमत और उनका दिल ख़ुश करके) जन्नत हासिल न कर सका।'

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رَغِمَ أَنْفُهُ ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُهُ ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُهُ " . قِيلَ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " مَنْ أَدْرَكَ وَالِدَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا ثُمَّ لَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ " .

(6512) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसका नाक ख़ाक आलूद हो।' तीन बार फ़रमाया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رَغِمَ أَنْفُهُ " . ثَلاَثًا ثُمَّ ذَكَرَ مِثْلَهُ .

बाब 4 : माँ-बाप वग़ैरह के दोस्तों से ताल्लुक़ व रब्त रखने की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ صِلَةِ أَصْدِقَاءِ الأَبِ وَالأُمِّ وَنَحْوِهِمَا

(6513) अब्दुल्लाह बिन दीनार(रह.) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) के बारे में बयान करते हैं कि एक आराबी(गाँव का रहने वाला) उन्हें मक्का के रास्ते में मिला तो हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) ने उसे सलाम कहा और गधे पर सवार थे, वो उसे सवारी के लिये दे दिया और उसे अपने सर वाली पगड़ी इनायत की। इब्ने दीनार(रह.) कहते हैं,

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ أَبِي الْوَلِيدِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَجُلاً، مِنَ الأَعْرَابِ لَقِيَهُ بِطَرِيقِ مَكَّةَ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ وَحَمَلَهُ عَلَى حِمَارٍ كَانَ يَرْكَبُهُ

चुनाँचे मैंने उनसे कहा, अल्लाह तआला आपके हालात दुरुस्त रखे, ये जंगली लोग हैं और ये लोग मामूली चीज़ पर भी ख़ुश हो जाते हैं। तो हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) ने जवाब दिया, इसका बाप उमर बिन ख़त्ताब(रज़ि.) का दोस्त था और मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'सबसे बड़ी वफ़ादारी और नेकी ये है कि औलाद अपने बाप से मुहब्बत करने वालों से ताल्लुक़ रखे।' (तिर्मिज़ी : 1903)

وَأَعْطَاهُ عِمَامَةً كَانَتْ عَلَى رَأْسِهِ فَقَالَ ابْنُ دِينَارٍ فَقُلْنَا لَهُ أَصْلَحَكَ اللَّهُ إِنَّهُمُ الأَعْرَابُ وَإِنَّهُمْ يَرْضَوْنَ بِالْيَسِيرِ . فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ إِنَّ أَبَا هَذَا كَانَ وُدًّا لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ أَبَرَّ الْبِرِّ صِلَةُ الْوَلَدِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : विद्द या वुद्दि : मुहब्बत व मवद्दत को कहते हैं और यहाँ मुराद, मुहब्बत करने वाला दोस्त है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, बाप की ख़िदमत और हुस्ने सुलूक की एक आला क़िस्म ये है कि उसकी वफ़ात के बाद उसके दोस्तों के साथ एहतिराम व इकराम और मुहब्बत व मवद्दत का ताल्लुक़ रखा जाये और बाप की दोस्ती व मुहब्बत का हक़ अदा किया जाये और उसमें इंसान की माँ भी दाख़िल है, क्योंकि सुनन की रिवायत में माँ-बाप दोनों के अहले क़राबत के साथ हुस्ने सुलूक और अहले मुहब्बत के इकराम व एहतिराम को औलाद पर माँ-बाप के मरने के बाद उनका हक़ बताया गया है।

(6514) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सबसे बड़ा ईफ़ाए अहद या हुक़ूक़ की अदायगी, आदमी का अपने बाप से मुहब्बत करने वालों से ताल्लुक़ रखना है।'

(अबू दाऊद : 5143)

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، عَنِ ابْنِ، الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَبَرُّ الْبِرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ وُدَّ أَبِيهِ " .

(6515) अब्दुल्लाह बिन दीनार(रह.) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) के बारे में बयान करते हैं कि जब वो मक्का के सफ़र पर रवाना हुए तो उनके साथ एक गधा होता, जब वो ऊँट

حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، وَاللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ جَمِيعًا عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُسَامَةَ

بْنِ الْهَادِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ كَانَ إِذَا خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ كَانَ لَهُ حِمَارٌ يَتَرَوَّحُ عَلَيْهِ إِذَا مَلَّ رُكُوبَ الرَّاحِلَةِ وَعِمَامَةٌ يَشُدُّ بِهَا رَأْسَهُ فَبَيْنَا هُوَ يَوْمًا عَلَى ذَلِكَ الْحِمَارِ إِذْ مَرَّ بِهِ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ أَلَسْتَ ابْنَ فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ قَالَ بَلَى . فَأَعْطَاهُ الْحِمَارَ وَقَالَ ارْكَبْ هَذَا وَالْعِمَامَةَ - قَالَ - اشْدُدْ بِهَا رَأْسَكَ . فَقَالَ لَهُ بَعْضُ أَصْحَابِهِ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ أَعْطَيْتَ هَذَا الأَعْرَابِيَّ حِمَارًا كُنْتَ تَرَوَّحُ عَلَيْهِ وَعِمَامَةً كُنْتَ تَشُدُّ بِهَا رَأْسَكَ . فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ مِنْ أَبَرِّ الْبِرِّ صِلَةَ الرَّجُلِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ بَعْدَ أَنْ يُوَلِّيَ " . وَإِنَّ أَبَاهُ كَانَ صَدِيقًا لِعُمَرَ .

की सवारी से उकता जाते तो उस पर सवार होकर आराम हासिल करते और एक पगड़ी थी, जिसे अपने सर पर बांधते थे, एक दिन वो उस गधे पर सवार थे कि इस दौरान उनके पास से एक बदवी गुज़रा। चुनाँचे उन्होंने पूछा, क्या तुम फ़लाँ बिन फ़लाँ के बेटे नहीं हो? उसने कहा, क्यों नहीं! तो उन्होंने उसे अपना गधा दे दिया और फ़रमाया, इस पर सवार हो जा और पगड़ी दी कि इसे अपने सर पर बांध लो। तो उन्हें उनके कुछ अहबाब ने कहा, अल्लाह आपकी मग़्फ़िरत फ़रमाये, आपने उस बद्दू को वो गधा दे दिया है, जिस पर आप राहत हासिल करते थे और वो पगड़ी इनायत फ़रमा दी है, जिसे अपने सर पर बांधते थे। तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'हुस्ने सुलूक की एक आला क़िस्म ये है कि बाप के इन्तिक़ाल के बाद इंसान अपने बाप के दोस्तों के साथ(एहतिराम व तकरीम) का ताल्लुक़ रखे।' और इसका बाप उमर(रज़ि.) का दोस्त था।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) यतरव्वहु अलैह : उस पर राहत व सुकून हासिल करते।**(2) बअ़्द अंय्युवल्ली :** जब वो पुश्त फेर जाये, ग़ायब हो या फ़ौत हो जाये।

باب تَفْسِيرِ الْبِرِّ وَالإِثْمِ

बाब 5 : नेकी और गुनाह की तफ़्सीर

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ

(6516) हज़रत नव्वास बिन सिम्आन अन्सारी(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से बिर्र और इस्म के बारे में पूछा। आपने जवाब दिया, 'बिर्र हुस्ने ख़ल्क़

النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْبِرِّ وَالإِثْمِ فَقَالَ " الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ وَالإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِكَ وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ

है और इस्म वो है जो तेरे दिल में खटकता रहे और तू इस बात को मक्रूह व नापसंद ख़याल करे कि लोग उससे आगाह हों।'

(तिर्मिज़ी : 2389)

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ، - يَعْنِي ابْنَ صَالِحٍ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ نَوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ، قَالَ أَقَمْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْمَدِينَةِ سَنَةً مَا يَمْنَعُنِي مِنَ الْهِجْرَةِ إِلاَّ الْمَسْأَلَةُ كَانَ أَحَدُنَا إِذَا هَاجَرَ لَمْ يَسْأَلْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ شَىْءٍ - قَالَ - فَسَأَلْتُهُ عَنِ الْبِرِّ وَالإِثْمِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ وَالإِثْمُ مَا حَاكَ فِي نَفْسِكَ وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ " .

(6517) हज़रत नव्वास बिन सिम्आन(रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ एक साल ठहरा रहा और मुझे सवालात करने के सिवा कोई चीज़ हिजरत करने से मानेअ(रूकावट) नहीं थी। हममें से कोई एक जब हिजरत कर लेता तो वो रसूलुल्लाह(ﷺ) से किसी चीज़ के बारे में सवाल नहीं करता था तो मैंने आपसे बिर्र और इस्म(नेकी और गुनाह) के बारे में सवाल किया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जवाब दिया, 'बिर्र हुस्ने ख़ल्क़ से ताबीर है और इस्म जो तेरे दिल में खटका पैदा करे और तुम ये नापसंद करो कि लोगों को उसका इल्म व आगाही हो।'

फ़ायदा : हज़रत नव्वास बिन सिम्आन, बनू किलाब से ताल्लुक़ रखते थे, वो अपने वतन से आपसे मुलाक़ात के लिये मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये थे, फिर एक साल तक मदीना में एक मुसाफ़िर की हैसियत से ठहरे रहे, ताकि आपसे सवाल करने में सहूलत और आसानी रहे। क्योंकि जो लोग अपना वतन छोड़कर यानी मुहाजिरीन मदीना में इक़ामत इख़्तियार कर लेते थे, वो सवाल करने से गुरेज़ करते थे और चाहते थे कि बाहर के लोग या जंगली लोग आपसे सवालात करें ताकि हमें भी दीन के बारे में मज़ीद मालूमात हासिल हों, बाद में उन्होंने अन्सार से दोस्ताना क़ायम कर लिया होगा, इसलिये उनको किलाबी की बजाए अन्सारी कहा गया है।

बाब 6 : सिला रहमी और उसको काटने की हुरमत

باب صِلَةِ الرَّحِمِ وَتَحْرِيمِ قَطِيعَتِهَا

(6518) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बेशक अल्लाह ने मख़लूक़ को पैदा किया, यहाँ तक कि जब वो उनके पैदा करने से फ़ारिग़ हुआ तो रहम(रिश्तेदारी) ने खड़े होकर कहा, ये इसका मक़ाम है, जो क़तअ रहमी से पनाह चाहता है। अल्लाह ने फ़रमाया, हाँ! क्या तू इस पर राज़ी नहीं है कि मैं उससे(ताल्लुक़ व राब्ता) जोड़ूँ जो तुझे जोड़े और उससे(ताल्लुक़ व रब्त) काट लूँ जो तुझे तोड़े? हक़्क़े क़राबत ने कहा, क्यों नहीं! अल्लाह ने फ़रमाया, ये तुझे हासिल है।' फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तुम चाहो तो ये आयत पढ़ लो, 'कहीं ऐसे तो नहीं है, अगर तुम्हें इक़्तिदार मिले तो तुम ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रहमों(रिश्तों) को काटो, ऐसे ही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत भेजी और उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अन्धा कर दिया, तो क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते या इनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं।'(सूरह मुहम्मद : 22-24)

(सहीह बुख़ारी : 4830, 4831, 4832)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ جَمِيلِ بْنِ طَرِيفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الثَّقَفِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ مُعَاوِيَةَ، - وَهُوَ ابْنُ أَبِي مُزَرِّدٍ مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ - حَدَّثَنِي عَمِّي أَبُو الْحُبَابِ، سَعِيدُ بْنُ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الْخَلْقَ حَتَّى إِذَا فَرَغَ مِنْهُمْ قَامَتِ الرَّحِمُ فَقَالَتْ هَذَا مَقَامُ الْعَائِذِ مِنَ الْقَطِيعَةِ . قَالَ نَعَمْ أَمَا تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ قَالَتْ بَلَى . قَالَ فَذَاكِ لَكِ " . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ { فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ * أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَى أَبْصَارَهُمْ * أَفَلاَ يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا} " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि इंसानों की आपसी क़राबत और रिश्तेदारी को अल्लाह तआला के यहाँ ख़ुसूसी अहमियत हासिल है। बल्कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है, 'रहम रहमान से मुश्तक़(जुड़ा) है और अल्लाह की सिफ़त रहमत ही उसका सरचश्मा व मम्बअ है। इसलिये जो सिला

रहमी करते हुए रिश्तेदारों और क़राबत के हुक़ूक़ अदा करेगा और उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आयेगा, अल्लाह तआला उसको अपने से वाबस्ता कर लेगा और अपना बना लेगा और जो क़तअ रहमी का रवय्या इख़्तियार करेगा, अल्लाह तआला उसको अपने से काट देगा और उसको दूर और बेताल्लुक़ कर देगा और ऐसा इंसान अल्लाह के लुत्फ़ व करम और उसके एहसान व इक्राम से महरूम होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي مُزَرِّدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُومَانَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "الرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُولُ مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللَّهُ وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ اللَّهُ".

(6519) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़राबत, रिश्तेदारी अ़र्श के साथ लटक कर कह रही है, 'जो मुझे जोड़े अल्लाह उसे जोड़े और जो मुझे तोड़े, अल्लाह उसे तोड़े।'

(सहीह बुख़ारी : 5989)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ، بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ " . قَالَ ابْنُ أَبِي عُمَرَ قَالَ سُفْيَانُ يَعْنِي قَاطِعَ رَحِمٍ

(6520) हज़रत मुहम्मद बिन जुबैर अपने बाप से बयान करते हैं, नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़तअ़ करने वाला, जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।' सुफ़ियान कहते हैं, यानी रिश्तेदारी काटने वाला।

(सहीह बुख़ारी : 5984, अबू दाऊद : 1696, तिर्मिज़ी : 1909)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि क़तअ रहमी(रिश्ते को काटना) इस क़द्र घिनौना और संगीन जुर्म है कि इस गुनाह की गन्दगी के साथ कोई जन्नत में नहीं जा सकेगा, हाँ अल्लाह उसको सज़ा देकर पाक कर देगा या उसकी दूसरी बड़ी नेकियों की वजह से उसको माफ़ कर दिया जायेगा तो फिर जा सकेगा।

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ الضُّبَعِيُّ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعُ رَحِمٍ " .

(6521) हज़रत मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम(रज़ि.) अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़तअ़ रहमी करने वाला, जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ وَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(6522) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبْسَطَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ أَوْ يُنْسَأَ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ " .

(6523) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जिस शख़्स को ये बात पसंद हो कि उसकी रोज़ी में फ़राख़ी की जाये या उसके नक़्शे क़दम में ताख़ीर की जाये, यानी उसकी उम्र दराज़ हो तो वो अपने अहले क़राबत के साथ सिला रहमी करे।'

(सहीह बुख़ारी : 2067, अबू दाऊद : 1693)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि सिला रहमी यानी अहले क़राबत के हुक़ूक़ की अदायगी और उनसे हुस्ने सुलूक ऐसा मुबारक अमल है, जिससे सिला में उख़रवी अज्र व स़वाब के साथ-साथ दुनिया में भी रिज़्क़ में वुस्अत व फ़राख़ी और उम्र में ज़्यादती और बरकत मालूम होती है। सिला रहमी की दो सूरतें हैं, एक ये कि इंसान अपनी सई और अमल से कमाई हुई दौलत से अहले क़राबत का माली तआवुन करे, दूसरी ये कि अपने वक़्त और अपनी ज़िन्दगी का कुछ हिस्सा उनके कामों और ख़िदमत में सर्फ़ करे। उसके सिले में रिज़्क़ व माल में कुशादगी और वुस्अत और ज़िन्दगी की मुद्दत में इज़ाफ़ा और बरकत बिल्कुल क़रीने क़यास और अल्लाह तआला की हिक्मत व रहमत के ऐन मुताबिक़ है और ये वाक़िया आम तजुर्बे में आने वाली बात है कि ख़ानदानी झगड़े और ख़ान्गी मसाइल और उल्झनें जो ज़्यादातर हुक़ूक़े क़राबत की अदायगी में कोताही के नतीजे में पैदा होती हैं, इंसान के दिल के लिये परेशानी और अंदुरूनी कुढ़न का सबब बनती है, जिनसे इंसान का कारोबार और सेहत व तन्दुरुस्ती दोनों मुतास्सिर होते हैं और जो लोग अज़ीज़ो-अक़ारिब के साथ हुस्ने सुलूक और नेक बर्ताव करते हैं, उनकी ज़िन्दगी इन्शिराहे सद्र और तमानियत व ख़ुश दिली से गुज़र होती है। इसलिये उनके हालात हर लिहाज़ से बेहतर रहते हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल व करम उनके शामिले हाल होता है। ये याद रहे इस तरह की अहादीस़ का तक़दीर के मसले से टकराव नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला को अज़ल से मालूम है कि फ़लाँ आदमी सिला रहमी करेगा और अज़ीज़ो-अक़ारिब से हुस्ने सुलूक से पेश आयेगा, इस लिहाज़ से उसकी उम्र में इज़ाफ़ा कर दिया गया और उसके रिज़्क़ में वुस्अत व बरकत रख दी गई।

(6524) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स इस बात को पसंद करे कि उसकी रोज़ी में फ़राख़ी पैदा की जायेगी और उसके नक़्शे पा को मुअख़्ख़र किया जाये, यानी उसकी उम्र लम्बी हो, तो वो अपने रिश्तेदारों से सिला रहमी करे।'

(सहीह बुख़ारी : 5986)

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ، خَالِدٍ قَالَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ وَيُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ " .

(6525) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि एक इंसान ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ क़राबतदार हैं, मैं उनसे सिला रहमी करता हूँ और वो मुझसे ताल्लुक़ तोड़ते हैं, मैं उनसे एहसान करता हूँ और वो मुझसे बद सुलूकी करते हैं और मैं उनसे तहम्मुल और बुर्दबारी का बर्ताव करता हूँ और वो मुझसे इश्तिआल अंगेज़, जाहिलाना तरीक़े से पेश आते हैं। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तू वाक़ेई ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करता है, जैसा तूने बताया है तो गोया तू उनके मुँह में गर्म राख रख रहा है और उनके मुक़ाबले में हमेशा तेरे साथ अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मुआविन व मददगार रहेगा, जब तक तेरा ये रवय्या बरक़रार रहेगा।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ الْعَلاَءَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلاً، قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي قَرَابَةً أَصِلُهُمْ وَيَقْطَعُونِي وَأُحْسِنُ إِلَيْهِمْ وَيُسِيئُونَ إِلَىَّ وَأَحْلُمُ عَنْهُمْ وَيَجْهَلُونَ عَلَىَّ . فَقَالَ " لَئِنْ كُنْتَ كَمَا قُلْتَ فَكَأَنَّمَا تُسِفُّهُمُ الْمَلَّ وَلاَ يَزَالُ مَعَكَ مِنَ اللَّهِ ظَهِيرٌ عَلَيْهِمْ مَا دُمْتَ عَلَى ذَلِكَ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **यज्हलू-न अलय्य :** जुह्ल, हिल्म के मुक़ाबले में है। इसलिये इससे मुराद इश्तिआल अंगेज़ सुलूक है। जिससे इंसान के जज़्बात भड़क उठते हैं और वो अपने ऊपर क़ाबू नहीं रख सकता, इसलिये मुराद लड़ाई-झगड़ा भी हो सकता है। (2) **तुसिफ़्फ़ुहुम :** असफ़्फ़ल बईर से माख़ूज़ है, यानी ऊँट को ख़ुश्क घास चराई। (3) **अल्मल्लु :** गर्म राख, यानी तू उनको गर्म राख

खिला रहा है, जिस तरह गर्म राख खाने वाले को तकलीफ़ होती है, उसी तरह उन क़तअ रहमी करने वालों को गुनाह मिलेगा।(4) **मिनल्लाहि ज़हीर :** अल्लाह की तरफ़ से मुआविन व मददगार।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि किसी रिश्तेदार की बद सुलूकी और क़तअ रहमी, दूसरे रिश्तेदार के लिये बद सुलूकी और क़तअ रहमी की वजहे जवाज़ नहीं बन सकती, क्योंकि अगर एक रिश्तेदार बुरा तरीक़ा इख़्तियार करता है या ताल्लुक़ात को तोड़ता है तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा और उसके साथ अच्छा सुलूक करना गोया उसको गर्म राख खिलाना है, जिसकी तकलीफ़ और अज़ियत से वही दोचार होगा। अच्छा सुलूक करने वाला या तहम्मुल व बुर्दबारी का वतीरा इख़्तियार करते हुए, सिला रहमी करने वाला तो अल्लाह के यहाँ मुअज़्ज़ज़ और मोहतरम ठहरता है और उसको अल्लाह की तरफ़ से मुईन और मददगार मिलता है और बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) की रिवायत है कि आपने फ़रमाया, 'वो आदमी सिला रहमी का हक़ अदा नहीं करता जो अपने रिश्तेदारों के साथ बदले में सिला रहमी करता है, जो उसके साथ सिला रहमी का वतीरा अपनाते हैं, सिला रहमी का हक़ अदा करने वाला दर असल वो है जो इस हालत में सिला रहमी करता है, जबकि उसका रिश्तेदार उसके साथ क़तअ रहमी का मामला करता है, यानी उसके हुक़ूक़ तलफ़ करता है(अदा नहीं करता)।

बाब 7 : आपस में हसद और बुग़्ज़ और ऐराज़, रूगर्दानी करना नाजाइज़ है

باب النَّهْىِ عَنِ التَّحَاسُدِ، وَالتَّبَاغُضِ، وَالتَّدَابُرِ

(6526) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, एक दूसरे से हसद न करो और एक दूसरे से रूगर्दानी न करो और अल्लाह के बन्दे, भाई-भाई बन जाओ या अल्लाह के बन्दो! भाई-भाई हो जाओ! किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है कि वो अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा ताल्लुक़ात काटे या उसको छोड़ दे।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا وَلاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثٍ " .

(सहीह बुख़ारी : 6076, अबू दाऊद : 4910)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) ला तबाग़ज़ू : एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, क्योंकि बुग़्ज़ के नतीजे में हसद और कीना पैदा होता है, उसके ख़िलाफ़ दिल में नफ़रत पैदा होती है और उसको देखना नागवार हो

जाता है, जिसके नतीजे में हसद पैदा होता है। इंसान के दिल में ये ख़्वाहिश और तमन्ना पैदा होती है, वो नेमतों से महरूम हो जाये, उसकी नेमत से महरूमी ख़ुशी और मसर्रत का बाइस़ बनती है और किसी नेमत का हासिल होना ग़म व हुज़्न का बाइस़ बनता है और उसके नतीजे में उससे ताल्लुक़ात तोड़ लिये जाते हैं और एक-दूसरे से रूगर्दानी और ऐराज़ किया जाता है। इसलिये आपने फ़रमाया,(2) **वला तहासदू :** एक-दूसरे से हसद न रखो, एक दूसरे की नेमतों के ज़वाल(ख़त्म होने) की ख़्वाहिश न करो।(3) **वला तदाबरू :** एक-दूसरे को पुश्त न दिखाओ, एक-दूसरे के दुश्मन न बन जाओ, बल्कि(4) **कूनू इबादल्लाहि इख़्वाना :** अल्लाह के बन्दे बनो और अल्लाह के बन्दे आपस में भाई-भाई होते हैं, इसलिये ये न भूलो कि तुम अल्लाह के बन्दे हो ताकि तुम्हारे अंदर बुग़्ज़ व कीना और हसद व रूगर्दानी की जगह उख़ुवत और भाईचारे का रिश्ता उस्तवार हो।

حَدَّثَنَا حَاجِبُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ الزُّبَيْدِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ح

وَحَدَّثَنِيهِ حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ .

(6527) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ ابْنُ عُيَيْنَةَ " وَلاَ تَقَاطَعُوا "

(6528) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से इब्ने उयय्ना से ये लफ़्ज़ ज़्यादा लाते हैं, वला तक़ातऊ आपस में ताल्लुक़ात न तोड़ो। (तिर्मिज़ी : 1935)

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ، بْنُ حُمَيْدٍ كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، جَمِيعًا عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . أَمَّا رِوَايَةُ يَزِيدَ عَنْهُ فَكَرِوَايَةِ سُفْيَانَ عَنِ الزُّهْرِيِّ يَذْكُرُ

(6529) इमाम साहब यही रिवायत यज़ीद से, सुफ़ियान की पहली रिवायत की तरह बयान करते हैं, इसमें चार ख़स्लतों का ज़िक्र है और अब्दुर्रज़्ज़ाक से इस तरह बयान करते हैं, 'एक-दूसरे से हसद न रखो, आपस में

الْخِصَالَ الأَرْبَعَةَ جَمِيعًا وَأَمَّا حَدِيثُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ "وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَقَاطَعُوا وَلاَ تَدَابَرُوا "

ताल्लुक़ात न तोड़ो और एक-दूसरे से रूगर्दानी न करो।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّوسلم قَالَ " لاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَقَاطَعُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا " .

(6530) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक-दूसरे से हसद न रखो और एक-दूसरे से बुग़्ज़ न रखो और एक-दूसरे से ताल्लुक़ात न तोड़ो और अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बनो।'

حَدَّثَنِيهِ عَلِيُّ بْنُ نَصْرٍ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَزَادَ " كَمَا أَمَرَكُمُ اللَّهُ " .

(6531) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, आख़िर में ये इज़ाफ़ा है, 'जैसे कि अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।'

باب تَحْرِيمِ الْهَجْرِ فَوْقَ ثَلاَثٍ بِلاَ عُذْرٍ شَرْعِيٍّ

बाब 8 : बिला शरई उ़ज़्र तीन दिन से ज़्यादा तर्के ताल्लुक़ात(बातचीत न करना) नाजाइज़ है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ، اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هَذَا وَيُعْرِضُ هَذَا وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلاَمِ " .

(6532) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है कि वो अपने भाई को तीन रातों से ज़्यादा छोड़ दे कि आपस में मिलें तो ये उधर मुँह कर ले, वो उधर मुँह कर ले, उनमें से बेहतर वही है जो सलाम करने में पहल करे।'

(सहीह बुख़ारी : 6077, 6237, अबू दाऊद : 4911, तिर्मिज़ी : 1932)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अंय्यह्जुर : तर्क कर दे, छोड़ दे, यानी आमना-सामना हो जाये तो बातचीत करने की बजाए एक-दूसरे से मुँह फेर लें, लेकिन इंसान की फ़ितरत और मिज़ाज का लिहाज़ रखते

हुए, तीन दिन तक इंसान गुनाह होने से महफ़ूज़ रहता है, हाँ अगर कोई शरई तक़ाज़ा हो कि उसके साथ बोल-चाल से शरई हुदूद के पामाल होने की सूरत पैदा होती है तो फिर तर्के ताल्लुक़ात जाइज़ है या बतौर तादीब और सरज़निश जाइज़ है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنَا حَاجِبُ، بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنِ الزُّبَيْدِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَمُحَمَّدُ، بْنُ رَافِعٍ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِ مَالِكٍ وَمِثْلِ حَدِيثِهِ إِلاَّ قَوْلَهُ " فَيُعْرِضُ هَذَا وَيُعْرِضُ هَذَا " . فَإِنَّهُمْ جَمِيعًا قَالُوا فِي حَدِيثِهِمْ غَيْرَ مَالِكٍ " فَيَصُدُّ هَذَا وَيَصُدُّ هَذَا " .

(6533) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से ऊपर वाली हदीस़ बयान करते हैं और इस हदीस़ में युअ़रिज़ु की जगह यसुदु है, दोनों एक-दूसरे से रुकते हैं, ऐराज़ करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، أَخْبَرَنَا الضَّحَّاكُ، - وَهُوَ ابْنُ عُثْمَانَ - عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ"لاَ يَحِلُّ لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ " .

(6534) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'किसी मोमिन के लिये जाइज़ नहीं है कि वो अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा तर्के ताल्लुक़ रखे।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ ثَلاَثٍ " .

(6535) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तीन दिन के बाद तर्के ताल्लुक़ की गुंजाइश नहीं है।'

बाब 9 : बदगुमानी, जासूसी, तनाफ़ुस, धोखादेही वग़ैरह जाइज़ नहीं है

باب تَحْرِيمِ الظَّنِّ وَالتَّجَسُّسِ وَالتَّنَافُسِ وَالتَّنَاجُشِ وَنَحْوِهَا

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ وَلاَ تَحَسَّسُوا وَلاَ تَجَسَّسُوا وَلاَ تَنَافَسُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا " .

(6536) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, **'तुम दूसरों के मुताल्लिक़ बद गुमानी से बचो, क्योंकि बद गुमानी सबसे झूठी बात है और तुम किसी की कमज़ोरियों की टोह में न रहा करो(और किसी के ऐबों को मालूम करने के लिये) जासूसी न करो और न एक-दूसरे पर बढ़ने की बेजा हवस करो और न एक दूसरे से हसद करो और न एक-दूसरे से बुग़्ज़ रखो और न एक-दूसरे को पीठ दिखाओ और अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बन कर रहो।'**

(सहीह बुख़ारी : 6066, अबू दाऊद : 4917)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) इय्याकुम वज़्ज़न्न : बद गुमानी से बचो, बिला वजह और बिला सबब किसी के काम को बद नियती पर महमूल करना या उसके बारे में बुरा ख़याल दिल में बिठा लेना, उसकी तरफ़ ग़लत क़ौल या अमल मन्सूब करना, क्योंकि ये सबसे झूठा वहम और ख़याल है, जो दिल में उभरता है। क्योंकि बद गुमानी के नतीजे में ही इंसान दूसरों की कमज़ोरियों की टोह में रहता है और जासूसों की तरह राज़दाराना तरीक़े से दूसरों के ऐबों व नुक़्सों को मालूम करने की कोशिश करता है, एक-दूसरे पर बुलन्दी हासिल करने और बढ़ने की कोशिश करता है और बाद वाले नुक़्स और कमज़ोरियाँ पैदा होती हैं।**(2) ला तहस्ससू :** कुरेद न करो, टोह न लगाओ, ये हास्सह से है, हवास इस्तेमाल न करो।**(3) वला तजस्ससू :** जस्सुन से है, हाथ से जायज़ा लेना, मक़सद है लोगों के ऐबों व नुक़्सों को जानने की जुस्तजू न करो और बक़ौल कुछ तहस्स का मानी है, दूसरों की बातें सुनने की कोशिश करना और तजस्सुस है ऐबों की टोह लगाना या बातिनी उमूर जानने की कोशिश करना तजस्सुस है और हवासे ज़ाहिरा से मालूम करने की कोशिश करना, तजस्सुस है यानी ये उस सूरत में है, जब किसी दुनियवी या दीनी मस्लिहत इसकी मुतक़ाज़ी न हो कि उससे दूसरों को किसी क़िस्म का नुक़सान न पहुँच रहा हो।**(4) ला तनाफ़सू :** दुनियवी माल व दौलत में एक-दूसरे से बढ़ने की बेजा हिर्स व आरज़ू में मुब्तला न हो, क्योंकि ख़ैरात और नेकियों में मुसाबिक़त और तनाफ़ुस मतलूब है।

(6537) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बद कलामी न करो, एक-दूसरे से मुँह न फेरो, किसी की कमज़ोरियों की टोह न लगाओ, एक-दूसरे की बैअ(सौदे) पर बैअ(सौदा) न करो और अल्लाह के बन्दो, भाई-भाई बन कर रहो।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَهَجَّرُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَلاَ تَحَسَّسُوا وَلاَ يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا " .

(6538) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक-दूसरे से हसद न करो और एक-दूसरे से बुग़्ज़ न रखो और एक-दूसरे की जासूसी न करो, दूसरों की कमज़ोरियों की टोह न रखो, किसी को फांसने के लिये क़ीमत न बढ़ाओ और अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बन कर रहो।'

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَجَسَّسُوا وَلاَ تَحَسَّسُوا وَلاَ تَنَاجَشُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا

मुफ़रदातुल हदीस़ : ला तनाजशू : नजश से माख़ूज़ है, सामान फ़रोख़्त करने के लिये उसकी उम्दगी और बेहतरी की तारीफ़ करना या ख़रीदने की नियत के बग़ैर उसका नर्ख़ चढ़ाना, उसकी बोली बढ़ाना।

(6539) इमाम साहब ये रिवायत अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं कि एक-दूसरे से क़तअ ताल्लुक़ न करो और न एक-दूसरे को पीठ दिखाओ और न एक-दूसरे से बुग़्ज़ रखो और न एक-दूसरे से हसद करो और भाई-भाई बन जाओ जैसाकि अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَلِيُّ بْنُ نَصْرٍ الْجَهْضَمِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَهْبُ، بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ " لاَ تَقَاطَعُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا وَكُونُوا إِخْوَانًا كَمَا أَمَرَكُمُ اللَّهُ " .

(6540) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों से आमश की ऊपर वाली सनद से

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ،

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَلاَ تَنَافَسُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا " .

बयान करते हैं, 'एक-दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, एक-दूसरे से मुँह न फेरो, एक-दूसरे से(माल व दौलत) में बढ़ने की कोशिश न करो और अल्लाह के बन्दो! भाई-भाई बन जाओ।'

باب تَحْرِيمِ ظُلْمِ الْمُسْلِمِ وَخَذْلِهِ وَاحْتِقَارِهِ وَدَمِهِ وَعِرْضِهِ وَمَالِهِ

बाब 10 : मुसलमान पर ज़ुल्म करना, उसको बेयारो-मददगार छोड़ना, उसको हक़ीर जानना, उसके ख़ून, इज़्ज़त और माल का एहतिराम न करना हराम है

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، - يَعْنِي ابْنَ قَيْسٍ - عَنْ أَبِي، سَعِيدٍ مَوْلَى عَامِرِ بْنِ كُرَيْزٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَنَاجَشُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَلاَ يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا . الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لاَ يَظْلِمُهُ وَلاَ يَخْذُلُهُ وَلاَ يَحْقِرُهُ . التَّقْوَى هَا هُنَا " . وَيُشِيرُ إِلَى صَدْرِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ " بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يَحْقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ " .

(6541) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक-दूसरे से हसद न करो और बोली न बढ़ाओ, एक-दूसरे से बुग़्ज़ न रखो और एक-दूसरे से मुँह न फेरो और एक-दूसरे की ख़रीदो-फ़रोख़्त पर ख़रीदो-फ़रोख़्त न करो और अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बन कर रहो, हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, उस पर ज़ुल्म व ज़्यादती न करे और जब वो उसकी मदद व इआनत का मोहताज हो उसकी मदद करे, उसको बेयारो-मददगार न छोड़े, उसको हक़ीर न जाने, यानी उसके साथ हिक़ारत का बर्ताव न करे, तक़वा यहाँ है।' फिर आपने तीन बार अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, 'आदमी के लिये बुरा होने के लिये इतना काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे। मुस्लिम की हर चीज़ दूसरे मुसलमान के लिये क़ाबिले एहतिराम है, उसका ख़ून, उसका माल और उसकी इज़्ज़त व आबरू।' (इब्ने माजह : 4213, 3933)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) ला यख़्ज़ुलुहू : जब वो उसकी मदद व इआनत का मोहताज हो तो उसकी मदद से दस्तकश न हो, उसको ज़ुल्म व सितम से बचाने के लिये उसकी मदद और इआनत करे। यानी जब उसको ज़ुल्म व सितम से बचाना उसके लिये मुम्किन हो तो वो उससे गुरेज़ न करे।**(2) ला यह्क़िरूहु :** उसको हक़ीर ख़याल न करे और उसके साथ हिक़ारत आमेज़ सुलूक न करे।**(3) अत्तक़्वा हाहुना :** अल्लाह के डर और ख़ौफ़ का ताल्लुक़ दिल से है और किसी के मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम का मदार तक़्वा पर है। हो सकता है तुम किसी को ज़ाहिरी हाल से कमतर ख़याल करो और वो अपने दिली तक़्वा की बिना पर अल्लाह के यहाँ मोहतरम व मुकर्रम(इज़्ज़तदार) हो।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ أُسَامَةَ، -وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ - أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ، مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ كُرَيْزٍ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا، هُرَيْرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ دَاوُدَ وَزَادَ وَنَقَصَ وَمِمَّا زَادَ فِيهِ " إِنَّ اللَّهَ لاَ يَنْظُرُ إِلَى أَجْسَادِكُمْ وَلاَ إِلَى صُوَرِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ " . وَأَشَارَ بِأَصَابِعِهِ إِلَى صَدْرِهِ .

(6542) इमाम साहब हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की रिवायत एक दूसरे उस्ताद से कमी व बेशी करते हुए बयान करते हैं, इसमें इज़ाफ़ा ये है, 'अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों और तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता, लेकिन वो तो तुम्हारे दिलों को देखता है।' और आपने उंगलियों से अपने सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाया।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ بُرْقَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ، الأَصَمِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ لاَ يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ "

(6543) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और माल व दौलत को नहीं देखता, लेकिन वो तुम्हारे दिलों और तुम्हारे अमलों को देखता है।'

(इब्ने माजह : 4143)

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की हदीस़ से साबित होता है कि अल्लाह तआला के यहाँ मक़्बूलियत का दारोमदार किसी की डील-डोल और जिस्मानी क़ुव्वत व ताक़त या उसकी शक्लो-सूरत की ज़ेबाइश और जमाल या उसकी माल व दौलत की फ़रावानी नहीं है। बल्कि दिल की इस्लाह व दुरुस्तगी, हुस्ने नियत और इख़्लास के साथ, नेक किरदारी और आमाले सालेहा हैं। अगर किसी

शख़्स के आमाल बज़ाहिर अच्छे हों, लेकिन उसका दिल इख़्लास से ख़ाली हो और उसकी नियत दुरुस्त न हो तो वो अमल हर्गिज़ क़ुबूल न होगा। इसका ये मतलब नहीं है कि आमाले ज़ाहिरा की ज़रूरत नहीं है, बस दिल का तज़्किया और इख़्लास काफ़ी है। क्योंकि अगर आमाले ज़ाहिरा की ज़रूरत न होती या उनकी हैसियत न होती तो क़ुलूब के बाद आमाल लाने की ज़रूरत न थी और जहाँ ये आया है, ज़ाहिरी आमाल को नहीं देखता, इसका मानी है, मख़्सूस अमल के ज़ाहिर को नहीं देखता है। बल्कि उसके इख़्लास और नियत को देखता है। जैसाकि आपका फ़रमान, 'इन्नमल् अअ्मालु बिन्नियात अमलों की सेहत व फ़साद और क़ुबूलियत का दारोमदार नियतों पर है।'

बाब 11 : आपस में अदावत(दुश्मनी) व नफ़रत और तर्के ताल्लुक़ मना है

باب النَّهْىِ عَنِ الشَّحْنَاءِ، وَالتَّهَاجُرِ

(6544) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सोमवार और जुमेरात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं और हर उस बन्दे को माफ़ कर दिया जाता है, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, सिवाये उस बन्दे के कि उसके और उसके भाई के दरम्यान कीना और अदावत है, उनके बारे में कहा जाता है, इन दोनों का मामला मुअख़्ख़र करो, यहाँ तक कि आपस में सुलह कर लें, इन दोनों को मोहलत दो, यहाँ तक कि आपस में सुलह कर लें, इन दोनों को ढील दो, यहाँ तक कि आपस में सुलह कर लें।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تُفْتَحُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ وَيَوْمَ الْخَمِيسِ فَيُغْفَرُ لِكُلِّ عَبْدٍ لاَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا إِلاَّ رَجُلاً كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ أَنْظِرُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَصْطَلِحَا أَنْظِرُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَصْطَلِحَا أَنْظِرُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَصْطَلِحَا " .

मुफ़रदातुल हदीस : शह्नाउ : बुग़्ज़ व अदावत और कीना। अन्ज़िरू : उनकी मोहलत और ढील और उनके माफ़ी के मामले को मुअख़्ख़र कर दो।

फ़ायदा : पीर और जुमेरात के दिन अल्लाह के हुज़ूर आमाल की पेशी, एक रूटीन वर्क या ज़ाब्तेकार है। वरना अल्लाह तआला तमाम आमाल से शख़्सी तौर पर आगाह है और जन्नत के दरवाज़े खोलना इस बात की अलामत है कि आज लोगों को माफ़ी मिलेगी और जो इंसान कुफ़्र व शिर्क से बचकर

ईमान रखता है, उसको माफ़ी मिल जाती है। लेकिन आपस में अदावत और कीना ऐसा घिनौना जुर्म है कि उसके मुर्तकिब के लिये माफ़ी नहीं है, जब तक इस जुर्म से बाज़ न आ जाये।

حَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، الضَّبِّيُّ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ الدَّرَاوَرْدِيِّ، كِلاَهُمَا عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، بِإِسْنَادِ مَالِكٍ نَحْوَ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ الدَّرَاوَرْدِيِّ " إِلاَّ الْمُتَهَاجِرَيْنِ " . مِنْ رِوَايَةِ ابْنِ عَبْدَةَ وَقَالَ قُتَيْبَةُ " إِلاَّ الْمُهْتَجِرَيْنِ "

(6545) इमाम साहब यही हदीस़ अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, सिर्फ़ ये लफ़्ज़ फ़र्क़ है कि दरावरदी के लफ़्ज़ हैं, इल्लल् मुतहाजिरैन और क़ुतैबा कहते हैं, इल्लल् मुह्तजिरैन दोनों का मानी है, ताल्लुक़ात मुन्क़तअ(कट) करने वाले दो लोग। (तिर्मिज़ी : 2023)

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، رَفَعَهُ مَرَّةً قَالَ " تُعْرَضُ الأَعْمَالُ فِي كُلِّ يَوْمِ خَمِيسٍ وَاثْنَيْنِ فَيَغْفِرُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ لِكُلِّ امْرِئٍ لاَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا إِلاَّ امْرَأً كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ ارْكُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَصْطَلِحَا ارْكُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَصْطَلِحَا".

(6546) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'हर जुमेरात और पीर के दिन आमाल पेश किये जाते हैं, चुनाँचे अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल इस दिन हर उस इंसान को माफ़ कर देता है, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, सिवाये उस इंसान के कि उसके और उसके भाई के दरम्यान कीना और अदावत है तो कहा जाता है, इनके मामले को मुअख़्ख़र कर दो, यहाँ तक कि ये दोनों आपस में सुलह कर लें, इन दोनों के मामले को मुअख़्ख़र करो यहाँ तक कि ये दोनों सुलह कर लें।

मुफ़रदातुल हदीस़ : उर्कू या अर्कू : मुअख़्ख़र(लेट) कर दो।

फ़ायदा : इस हदीस़ की तशरीह औसत तबरानी की उस रिवायत से होती है जिसे इमाम मुन्ज़िरी ने अत्तरग़ीब वत्तरहीब में नक़ल किया है कि हर दो शम्बा(सोमवार) और पंज शम्बा(जुमेरात) को लोगों के आमाल पेश होते हैं तो जिसने अल्लाह से बख़्शिश और माफ़ी माँगी होती है उसको माफ़ी दी जाती है और जिसने तौबा की होती है, उसकी तौबा क़ुबूल की जाती है। लेकिन आपस में कीना रखने वालों के आमाल उनके कीना के सबब लौटा दिये जाते हैं(यानी उनकी माफ़ी और तौबा क़ुबूल नहीं होती)

जब तक वो उससे बाज़ न आ जायें, यानी जिस मुसलमान के दिल में दूसरे मुसलमान भाई के लिये कीना होगा, जब तक वो उस कीना से अपने दिल और सीने को पाक-साफ़ न कर ले, उस वक़्त तक वो अल्लाह की रहमत व मग़्फ़िरत का मुस्तहिक़ न होगा।(मआरिफ़ुल हदीस़, जिल्द 2, पेज नं. 219 अज़ मौलाना मन्ज़ूर अहमद नोमानी)

حَدَّثَنَا أَبُو الطَّاهِرِ، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ، أَنَسٍ عَنْ مُسْلِمِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ "تُعْرَضُ أَعْمَالُ النَّاسِ فِي كُلِّ جُمُعَةٍ مَرَّتَيْنِ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ وَيَوْمَ الْخَمِيسِ فَيُغْفَرُ لِكُلِّ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ إِلاَّ عَبْدًا بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ اتْرُكُوا - أَوِ ارْكُوا - هَذَيْنِ حَتَّى يَفِيئَا "

(6547) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'लोगों के आमाल हर हफ़्ते में दो दिन, पीर और जुमेरात को पेश किये जाते हैं तो हर मोमिन बन्दे को माफ़ कर दिया जाता है, सिवाये उस बन्दे के कि उसके और उसके भाई के दरम्यान कीना हो, उनके बारे में कहा जाता है, इन दोनों को छोड़े रखो या मुअख़्ख़र रखो यहाँ तक कि ये आपस के कीना और आपस में अदावत से बाज़ आ जायें।'

(तिर्मिज़ी : 747, इब्ने माजह : 1740)

باب فَضْلِ الْحُبِّ فِي اللَّهِ تَعَالَى

बाब 12 : अल्लाह तआला के लिये मुहब्बत करने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ، الرَّحْمَنِ بْنِ مَعْمَرٍ عَنْ أَبِي الْحُبَابِ، سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم"إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَيْنَ الْمُتَحَابُّونَ بِجَلاَلِي الْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي يَوْمَ لاَ ظِلَّ إِلاَّ ظِلِّي " .

(6548) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला क़यामत के दिन पूछेगा, मेरी जलालत व अज़्मत के सबब आपस में मुहब्बत करने वाले कहाँ हैं? आज के दिन मैं उन्हें अपने साये में साया फ़राहम करूँगा, जबकि मेरे साये के सिवा कोई साया नहीं है।'

फ़ायदा : जो लोग आपस में सिर्फ़ अल्लाह की अ़ज़्मत व जलालत की ख़ातिर उसकी रज़ा और ख़ुश्नूदी के हुसूल के लिये मुहब्बत करते हैं कोई दुनियवी मफ़ाद मतलूब नहीं होता, उन्हें क़यामत के दिन अपने अ़र्श का साया फ़राहम फ़रमायेगा या अपनी ख़ास हिफ़ाज़त व रहमत का साया बख़्शेगा।

बाब 13 : अल्लाह के लिये मुहब्बत की फ़ज़ीलत

باب فِي فَضْلِ الْحُبِّ فِي اللَّهِ

(6549) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, 'एक भाई अपने भाई की मुलाक़ात के लिये जो दूसरी बस्ती में रहता था, निकला तो अल्लाह तआ़ला ने उसकी रह गुज़र पर एक फ़रिश्ता इन्तिज़ार में बिठा दिया। चुनाँचे जब वो उसके पास पहुँचा, उससे पूछा, तेरा कहाँ का इरादा है? उसने जवाब दिया, मैं इस बस्ती में रहने वाले अपने एक भाई से मिलने जा रहा हूँ। फ़रिश्ते ने कहा, क्या तेरा उस पर कोई एहसान है, जिसको तुम पूरा करने या दुरुस्त करने जा रहे हो? उसने कहा, नहीं। मेरे जाने का बाइ़स इसके सिवा कुछ नहीं है कि मुझे अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के लिये उससे मुहब्बत है। फ़रिश्ते ने कहा, मुझे अल्लाह ने तेरी तरफ़ ये बताने के लिये भेजा है कि अल्लाह तुझसे मुहब्बत करता है, जैसाकि तुम अल्लाह के लिये उससे मुहब्बत करते हो।'

حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " أَنَّ رَجُلاً زَارَ أَخًا لَهُ فِي قَرْيَةٍ أُخْرَى فَأَرْصَدَ اللَّهُ لَهُ عَلَى مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا فَلَمَّا أَتَى عَلَيْهِ قَالَ أَيْنَ تُرِيدُ قَالَ أُرِيدُ أَخًا لِي فِي هَذِهِ الْقَرْيَةِ ‏.‏ قَالَ هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا قَالَ لاَ غَيْرَ أَنِّي أَحْبَبْتُهُ فِي اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ‏.‏ قَالَ فَإِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكَ بِأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَبَّكَ كَمَا أَحْبَبْتَهُ فِيهِ "

मुफ़रदातुल हदीस़ : **(1) अर्सदहू :** उसको इन्तिज़ार में बिठा दिया। **(2) मद्‌रजतिही :** उसकी रह गुज़र पर। यानी रास्ता जिस पर वो चलकर आ रहा था। **(3) निअ़्मतन तरुब्बुहा :** एहसान जिसको तुम पुख़्ता करना चाहते हो। उसकी इस्लाह व दुरुस्तगी चाहते हो। यानी कोई दुनियवी मफ़ाद वाबस्ता है, जिसकी इस्लाह या वसूल मक़सूद है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि अल्लाह के किसी बन्दे का अपने किसी भाई से अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी के हुसूल के लिये मुहब्बत करना और उस लिल्लाही मुहब्बत के तक़ाज़े से, उससे मेल-मुलाक़ात रखना ऐसा महबूब अमल है जो बन्दे को अल्लाह का महबूब बना देता है और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अल्लाह तआला अपने ख़ास फ़रिश्ते के ज़रिये उसको अपनी मुहब्बत का पैग़ाम पहुँचा देता है।

قَالَ الشَّيْخُ أَبُو أَحْمَدَ أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ زَنْجُويَهْ الْقُشَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ، الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ،بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ

(6550) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

باب فَضْلِ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ

बाब 14 : बीमार की बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِيَانِ ابْنَ زَيْدٍ - عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَفِي حَدِيثِ سَعِيدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" عَائِدُ الْمَرِيضِ فِي مَخْرَفَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَرْجِعَ "

(6551) हज़रत स़ौबान(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बीमार की इयादत करने वाला, वापस लौटने तक जन्नत के बाग़ीचे में रहता है।'

(तिर्मिज़ी : 967-968)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي، أَسْمَاءَ عَنْ ثَوْبَانَ، مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ عَادَ مَرِيضًا لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَرْجِعَ " .

(6552) रसूलुल्लाह(ﷺ) के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत स़ौबान(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो बीमार की इयादत के लिये गया, वो वापस लौटने तक जन्नत के फल में रहता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : मख़रफ़ह : बाग़ या उसकी रविश या उस तक पहुँचाने का रास्ता। **ख़ुर्फ़ह :** फ़ल।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ बीमार की इयादत के लिये आना-जाना, इस क़द्र पसन्दीदा और आला अ़मल है कि वो जन्नत में जाने और उसके फल के हुसूल का ज़रिया और सबब है। क्योंकि ये अ़मल बीमार की तसल्ली और मसर्रत का बाइस़ बनता है। इसलिये इस अ़मल को उसकी राहत व आसाइश में ख़लल का बाइस़ नहीं होना चाहिये या उसके पास इतना ज़्यादा वक़्त बैठना कि उसके लिये अज़ियत और तकलीफ़ का सबब बने, दुरुस्त नहीं है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا عَادَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَرْجِعَ " .

(6553) हज़रत स़ौबान(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'बिला शुब्हा, जब एक मुसलमान अपने मुसलमान भाई की इयादत के लिये जाता है, वो वापस लौटने तक जन्नत के फलों में रहता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنْ يَزِيدَ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ -حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ، - وَهُوَ أَبُو قِلاَبَةَ -عَنْ أَبِي الأَشْعَثِ الصَّنْعَانِيِّ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ، مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ " مَنْ عَادَ مَرِيضًا لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ " . قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا خُرْفَةُ الْجَنَّةِ قَالَ " جَنَاهَا " .

(6554) रसूलुल्लाह(ﷺ) के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत स़ौबान(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जो बीमार की इयादत के लिये गया, वो जन्नत के ख़ुर्फ़ह में रहा।' पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत का ख़ुर्फ़ह क्या है? आपने फ़रमाया, 'उसका फल।'

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6555) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَا ابْنَ آدَمَ مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِي . قَالَ يَا رَبِّ كَيْفَ أَعُودُكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ . قَالَ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ عَبْدِي فُلاَنًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّكَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِي عِنْدَهُ يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِي . قَالَ يَا رَبِّ وَكَيْفَ أُطْعِمُكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ . قَالَ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّهُ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِي فُلاَنٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّكَ لَوْ أَطْعَمْتَهُ لَوَجَدْتَ ذَلِكَ عِنْدِي يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَسْقَيْتُكَ فَلَمْ تَسْقِنِي . قَالَ يَا رَبِّ كَيْفَ أَسْقِيكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ قَالَ اسْتَسْقَاكَ عَبْدِي فُلاَنٌ فَلَمْ تَسْقِهِ أَمَا إِنَّكَ لَوْ سَقَيْتَهُ وَجَدْتَ ذَلِكَ عِنْدِي" .

(6556) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल क़यामत के दिन पूछेगा, ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार पड़ा, तूने मेरी बीमार पुर्सी नहीं की? वो अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरे आक़ा! मैं तेरी बीमार पुर्सी कैसे करता? तू सारी कायनात का रब है। अल्लाह फ़रमायेगा, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं, मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार पड़ा, तो तूने उसकी इयादत नहीं की। क्या तुम्हें पता नहीं है अगर तू उसकी इयादत करता तो मुझे उसके पास पाता? ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझसे खाना माँगा, तूने मुझे खाना न खिलाया। वो अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैं तुझे कैसे खिलाता? तू तो सारी कायनात का रब है। अल्लाह फ़रमायेगा, 'क्या तुझे मालूम नहीं है, मेरे फ़लाँ बन्दे ने तुझसे खाना माँगा, तो तूने उसे खाना न खिलाया? क्या तुम्हें पता नहीं है, अगर तू उसे खाना खिलाता तो उसका बदला मुझसे पाता। ऐ आदम! के बेटे मैंने तुझसे पानी तलब किया, तो तूने मुझे पानी न पिलाया। वो अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैं तुझे कैसे पिलाता? तू तो कायनात का रब है। अल्लाह फ़रमायेगा, 'मेरे फ़लाँ बन्दे ने तुझसे पानी माँगा, तो तूने उसे न पिलाया। हाँ! अगर तू उसे पानी पिलाता, तो ये अ़मल मेरे यहाँ पाता।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ अल्लाह तआ़ला के किसी नेक बन्दे की इयादत करना, उसको खाना खिलाना और उसको पानी पिलाना, इस क़द्र पसन्दीदा अ़मल है कि गोया अल्लाह की इयादत और उसको खिलाना-पिलाना है, क्योंकि उसके बन्दों की रिआ़यत व लिहाज़, उसकी ख़ातिर है। इसी तरह गोया उसकी रिआ़यत और हिफ़ाज़त व लिहाज़ है।

बाब 15 : मोमिन का सवाब जो उसे बीमारी, परेशानी वग़ैरह की सूरत में मिलता है या कांटे की सूरत में जो उसे चुभता है

باب ثَوَابِ الْمُؤْمِنِ فِيمَا يُصِيبُهُ مِنْ مَرَضٍ أَوْ حُزْنٍ أَوْ نَحْوِ ذَلِكَ حَتَّى الشَّوْكَةِ يُشَ

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ مَا رَأَيْتُ رَجُلاً أَشَدَّ عَلَيْهِ الْوَجَعُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. وَفِي رِوَايَةِ عُثْمَانَ مَكَانَ الْوَجَعِ وَجَعًا .

(6557) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सख़्त बीमारी, किसी आदमी की नहीं देखी। उसमान की रिवायत में वजअ़न की जगह वज्अ़न है।

(सहीह बुख़ारी : 5646, इब्ने माजह : 1622)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ الْمِقْدَامِ، كِلاَهُمَا عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ مِثْلَ حَدِيثِهِ

(6558) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ

(6559) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, जबकि आपको बुख़ार था। चुनाँचे मैंने आपको अपना हाथ लगाकर देखा

और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आपको तो बहुत शदीद बुख़ार है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! मुझे तुममें से दो आदमियों के बराबर बुख़ार होता है।' सो मैंने कहा, ये इसलिये है कि आपको दो गुना अज्र मिलता है। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ!' फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस मुसलमान को भी कोई तकलीफ़ पहुँचती है, बीमारी हो या कोई मुसीबत, तो अल्लाह उसके सबब उसकी बुराइयाँ गिरा देता है, जिस तरह(सूखा) दरख़्त अपने पत्ते झाड़ता है।' ज़ुहैर की हदीस़ में अपने हाथ से छूने का ज़िक्र नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 5647, 5648, 5660, 5661, 5667)

إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يُوعَكُ فَمَسِسْتُهُ بِيَدِي فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَجَلْ إِنِّي أُوعَكُ كَمَا يُوعَكُ رَجُلاَنِ مِنْكُمْ " . قَالَ فَقُلْتُ ذَلِكَ أَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَجَلْ " . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى مِنْ مَرَضٍ فَمَا سِوَاهُ إِلاَّ حَطَّ اللَّهُ بِهِ سَيِّئَاتِهِ كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا " . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ زُهَيْرٍ فَمَسِسْتُهُ بِيَدِي .

(6560) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, अबू मुआविया की हदीस़ में ये इज़ाफ़ा है, आपने फ़रमाया, 'हाँ! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! रूए ज़मीन पर जो भी मुसलमान है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، وَيَحْيَى بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي غَنِيَّةَ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ . نَحْوَ حَدِيثِهِ وَزَادَ فِي حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ قَالَ " نَعَمْ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا عَلَى الأَرْضِ مُسْلِمٌ" .

(6561) हज़रत अस्वद(रह.) बयान करते हैं, कुछ क़ुरैशी नौजवान मिना में हज़रत आइशा(रज़ि.) के पास हँसते हुए गये तो

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، جَمِيعًا عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ

مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، قَالَ دَخَلَ شَبَابٌ مِنْ قُرَيْشٍ عَلَى عَائِشَةَ وَهِيَ بِمِنًى وَهُمْ يَضْحَكُونَ فَقَالَتْ مَا يُضْحِكُكُمْ قَالُوا فُلاَنٌ خَرَّ عَلَى طُنُبِ فُسْطَاطٍ فَكَادَتْ عُنُقُهُ أَوْ عَيْنُهُ أَنْ تَذْهَبَ . فَقَالَتْ لاَ تَضْحَكُوا فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُشَاكُ شَوْكَةً فَمَا فَوْقَهَا إِلاَّ كُتِبَتْ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ وَمُحِيَتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ " .

उन्होंने पूछा, क्यों हँसते हो? उन्होंने कहा, फ़लाँ इंसान ख़ेमे की तुनाब(रस्सी) पर गिर पड़ा और क़रीब था उसकी गर्दन या उसकी आँख ज़ाया हो जाती। तो उन्होंने फ़रमाया, मत हँसो! क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जिस मुसलमान को भी कांटा या उससे बड़ी चीज़ चुभती है या उससे कम तकलीफ़ पहुँचती है तो उसके लिये उसके सबब एक दर्जा लिख दिया जाता है और उसके सबब उसकी एक लग़्ज़िश(गुनाह) मिटा दी जाती है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **तुनुबुन :** तुनाब, रस्सी। (2) **फ़ुस्तातुन :** बड़ा ख़ेमा।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَاللَّفْظُ لَهُمَا ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْحَنْظَلِيُّ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" مَا يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ مِنْ شَوْكَةٍ فَمَا فَوْقَهَا إِلاَّ رَفَعَهُ اللَّهُ بِهَا دَرَجَةً أَوْ حَطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةً " .

(6562) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमान को कांटे की तकलीफ़ या उससे कमो-बेश तकलीफ़ पहुँचती है तो उसके सबब अल्लाह उसका एक दर्जा बुलंद करता है या उसका गुनाह मिटा देता है।'

(तिर्मिज़ी : 965)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تُصِيبُ الْمُؤْمِنَ شَوْكَةٌ فَمَا فَوْقَهَا إِلاَّ قَصَّ اللَّهُ بِهَا مِنْ خَطِيئَتِهِ " .

(6563) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमान को कांटा या उससे कमो-बेश तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह उसको उसकी लग़्ज़िश का कफ़्फ़ारा बना देता है।'

(6564) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6565) हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'कोई मुसीबत भी अगर मुसलमान को पहुँचती है तो वो उसके लिये कफ़्फ़ारा बनती है, यहाँ तक कि कांटा भी जो उसे चुभ जाता है।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، وَيُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ "مَا مِنْ مُصِيبَةٍ يُصَابُ بِهَا الْمُسْلِمُ إِلاَّ كُفِّرَ بِهَا عَنْهُ حَتَّى الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا "

(6566) नबी(ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मोमिन को किसी क़िस्म की तकलीफ़ नहीं पहुँचती यहाँ तक कि कांटा नहीं चुभता, मगर वो उसके क़ुसूरों का मुआवज़ा ठहरता है या उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनता है।' रावी को मालूम नहीं इन दोनों कलिमात में से उरवा ने कौनसा कलिमा बोला।

حَدَّثَنَا أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ مِنْ مُصِيبَةٍ حَتَّى الشَّوْكَةِ إِلاَّ قُصَّ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ أَوْ كُفِّرَ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ " . لاَ يَدْرِي يَزِيدُ أَيَّتُهُمَا قَالَ عُرْوَةُ .

(6567) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना है, 'मोमिन को जो मुसीबत भी पहुँचती है यहाँ तक कि कांटा, जो चुभ जाता है तो उसके सबब उसके लिये एक नेकी लिख दी जाती है या उसके सबब उससे एक लग़िज़श झाड़ दी जाती है।'

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَزْمٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَا مِنْ شَىْءٍ يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ حَتَّى الشَّوْكَةِ تُصِيبُهُ إِلاَّ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً أَوْ حُطَّتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ "

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ، كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَأَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّهُمَا سَمِعَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَا يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ مِنْ وَصَبٍ وَلاَ نَصَبٍ وَلاَ سَقَمٍ وَلاَ حَزَنٍ حَتَّى الْهَمِّ يُهَمُّهُ إِلاَّ كُفِّرَ بِهِ مِنْ سَيِّئَاتِهِ "

(6568) हज़रत अबू सईद और अबू हुरैरह(रज़ि.) दोनों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मुसलमान को जो मर्ज़ हो या थकावट, तकलीफ़ हो या परेशानी या ग़म जो उसको फ़िक्र में मुब्तला करे उसके सबब उसकी बुराइयाँ मिटती हैं।'

(सहीह बुख़ारी : 5641, 5642, तिर्मिज़ी : 1966)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) वसबुन : मर्ज़।**(2) नसबुन :** थकान।**(3) सक़मुन :** बीमारी।**(4) हज़नुन :** परेशानी।**(5) हम्मुन :** फ़िक्र व अन्देशा जो अज़ियत का बाइस़ बने।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ مُحَيْصِنٍ، شَيْخٍ مِنْ قُرَيْشٍ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ قَيْسِ بْنِ مَخْرَمَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ { مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ} بَلَغَتْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ مَبْلَغًا شَدِيدًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَارِبُوا وَسَدِّدُوا فَفِي كُلِّ مَا يُصَابُ بِهِ الْمُسْلِمُ كَفَّارَةٌ حَتَّى النَّكْبَةِ يُنْكَبُهَا أَوِ الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا " . قَالَ مُسْلِمٌ هُوَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُحَيْصِنٍ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ .

(6569) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, जब ये आयते मुबारका उतरी, 'जो भी बुराई का इर्तिकाब करेगा, उसको उसकी जज़ा मिलेगी।' (सूरह निसा : 123) मुसलमानों को इससे इन्तिहाई सख़्त तश्वीश लाहिक़ हुई। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'म्याना रवी इख़्तियार करो और राहे रास्त पर चलो, मुसलमानों को जो तकलीफ़ भी पहुँचती है वो कफ़्फ़ारा बनती है, यहाँ तक कि जो ठोकर लगती है या कांटा जो चुभ जाता है।' इमाम मुस्लिम(रह.) फ़रमाते हैं, उमर बिन अब्दुर्रहमान बिन मुहैसिन मक्का का बाशिन्दा है।(तिर्मिज़ी : 3038)

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) क़ारिबू : इफ़रात व तफ़रीत(लिमिट को क्रॉस) से बचकर ऐतदाल और म्याना रवी इख़्तियार करो।**(2) सद्दिदू :** सद्दाद, दुरुस्तगी अपनाओ।**(3) नक्बह :** मुसीबत, ज़ख़्म, ठोकर।

(6570) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) उम्मे साइब या उम्मे मुसय्यब के यहाँ तशरीफ़ ले गये और पूछा, 'ऐ उम्मे साइब! या उम्मे मुसय्यब! तुम्हें क्या हुआ है? तुम कांप रही हो?' उसने जवाब दिया, बुख़ार है। अल्लाह इसको बरकत न दे। तो आपने फ़रमाया, 'बुख़ार को बुरा न कहो, क्योंकि ये इंसान के गुनाह ख़त्म करता है, जिस तरह भट्टी लोहे के मैल-कुचेल को दूर करती है।'

حدثني عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا يزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ الصَّوَّافُ، حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ عَلَى أُمِّ السَّائِبِ أَوْ أُمِّ الْمُسَيَّبِ فَقَالَ " مَا لَكِ يا أُمَّ السَّائِبِ أَوْ يَا أُمَّ الْمُسَيَّبِ تُزَفْزِفِينَ " . قَالَتِ الْحُمَّى لاَ بَارَكَ اللَّهُ فِيهَا . فَقَالَ " لاَ تَسُبِّي الْحُمَّى فَإِنَّهَا تُذْهِبُ خَطَايَا بَنِي آدَمَ كَمَا يُذْهِبُ الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيدِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : ला तसुब्बी : किसी को बुरा-भला, उससे परेशान होकर या उकता कर, उसकी तहक़ीर के लिये कहा जाता है। तो उसने बुख़ार को नापसंद करते हुए बद्दुआ दी, इसलिये आपने उसको सब्ब(गाली) से ताबीर फ़रमाया।

फ़ायदा : भट्टी अपनी हरारत और गर्मी से लोहे की मैल-कुचेल और ज़ंग को ख़त्म कर देती है, उसी तरह बुख़ार अपनी हिद्दत व शिद्दत से गुनाह दूर कर देता है। ऊपर वाली हदीसों से मालूम होता है, मुसलमान के लिये हर क़िस्म की परेशानी, दुख, तकलीफ़, रंज व अलम और ग़म व फ़िक्र का बाइस़ बनने वाली चीज़ गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती है। उसके दरजात व मर्तबे बढ़ते हैं और नेकियाँ लिखी जाती हैं और अम्बिया और उनसे क़रीबतर लोग ज़्यादा दुख-दर्द में मुब्तला होते हैं, क्योंकि उनके मरातिब और दरजात ज़्यादा बुलंद हैं और उनको अज्र व स़वाब ज़्यादा मिलता है।

(6571) हज़रत अ़ता बिन अबी रबाह(रह.) बयान करते हैं, मुझे हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें जन्नती औ़रत न दिखाऊँ? मैंने कहा, क्यों नहीं! उन्होंने कहा, ये स्याह फ़ाम औ़रत। नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगी, मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है और मेरा

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَبِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، قَالاَ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ، قَالَ قَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ أَلاَ أُرِيكَ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ قُلْتُ بَلَى . قَالَ هَذِهِ الْمَرْأَةُ

السَّوْدَاءُ أَتَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ إِنِّي أُصْرَعُ وَإِنِّي أَتَكَشَّفُ فَادْعُ اللَّهَ لِي . قَالَ " إِنْ شِئْتِ صَبَرْتِ وَلَكِ الْجَنَّةُ وَإِنْ شِئْتِ دَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُعَافِيَكِ . قَالَتْ أَصْبِرُ . قَالَتْ فَإِنِّي أَتَكَشَّفُ فَادْعُ اللَّهَ أَنْ لاَ أَتَكَشَّفَ . فَدَعَا لَهَا .

सतर खुल जाता है, आप मेरे लिये अल्लाह से दुआ फ़रमायें। आपने फ़रमाया, 'अगर तू चाहे तो सब्र कर, तुझे जन्नत मिल जायेगी और अगर तू चाहे तो मैं अल्लाह से दुआ कर देता हूँ, वो तुझे सेहत बख़्शे।' उसने कहा, मैं सब्र करूँगी और कहा, मैं बेपर्दा हो जाती हूँ। तो आप अल्लाह से दुआ फ़रमायें, मैं बेपर्दा न हूँ। चुनाँचे आपने उसके लिये दुआ फ़रमाई।

(सहीह बुख़ारी : 5652)

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है अगर इंसान के अंदर सब्र व स़बात का जज़्बा मोजिज़न(भरपूर) है और वो तकलीफ़ व बीमारी पर सब्र कर सकता है और कमज़ोरी का ख़तरा नहीं है तो उसके लिये इलाज व मुआल्जा करवाना ज़रूरी नहीं है लेकिन अगर वो उस पर क़ायम नहीं रह सकता या उससे उसके मामलात मुतास़्सिर होते हैं तो फिर उसको इलाज करवाना चाहिये, उसके लिये इलाज करवाना ही बेहतर है।

باب تَحْرِيمِ الظُّلْمِ

बाब 16 : ज़ुल्म की हुरमत

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَهْرَامَ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ الدِّمَشْقِيَّ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِيمَا رَوَى عَنِ اللَّهِ، تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ " يَا عِبَادِي إِنِّي حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِي وَجَعَلْتُهُ بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلاَ تَظَالَمُوا يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلاَّ مَنْ هَدَيْتُهُ فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ

(6572) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) ने नबी(ﷺ) से रिवायत की है, 'अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'ऐ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म को हराम किया है और मैंने उसे तुम्हारे दरम्यान भी हराम ठहराया है, लिहाज़ा तुम एक-दूसरे पर ज़ुल्म न करो। ऐ मेरे बन्दो! तुम तमाम राहे रास्त से हटे हुए हो, मगर जिसको मैं राहयाब करूँ, इसलिये मुझसे हिदायत तलब करो, मैं तुम्हें हिदायत दूँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब भूखे हो, मगर जिसको मैं खिला दूँ, इसलिये मुझसे खाना माँगो, मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब नंगे हो, मगर जिसको मैं लिबास पहना

يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلاَّ مَنْ أَطْعَمْتُهُ فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ عَارٍ إِلاَّ مَنْ كَسَوْتُهُ فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ تُخْطِئُونَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَأَنَا أَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا فَاسْتَغْفِرُونِي أَغْفِرْ لَكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضَرِّي فَتَضُرُّونِي وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِي فَتَنْفَعُونِي يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِمَّا عِنْدِي إِلاَّ كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ يَا عِبَادِي إِنَّمَا هِيَ أَعْمَالُكُمْ أُحْصِيهَا لَكُمْ ثُمَّ أُوَفِّيكُمْ إِيَّاهَا فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدِ اللَّهَ وَمَنْ وَجَدَ غَيْرَ ذَلِكَ فَلاَ يَلُومَنَّ إِلاَّ نَفْسَهُ " . قَالَ سَعِيدٌ كَانَ أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيُّ إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ جَثَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ .

दूँ, इसलिये तुम मुझसे लिबास माँगो, मैं तुम्हें लिबास दूँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब दिन-रात गुनाह, क़ुसूर करते हो और मैं सब गुनाह माफ़ करता हूँ, लिहाज़ा सब मुझसे बख़्शिश तलब करो, मैं तुम्हें माफ़ करूँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब मुझे नुक़सान पहुँचाने की ताक़त नहीं रखते कि मुझे नुक़सान पहुँचा सको और न तुम मुझे नफ़ा पहुँचाने की सकत तक पहुँच सकोगे कि मुझे नफ़ा पहुँचाओ। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले और पिछले, तुममें से इंसान और जिन्न, तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी आदमी के दिल वाले हो जायें, उससे मेरे इक़्तिदार में कुछ इज़ाफ़ा नहीं होगा। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले और पिछले, तुममें से इंसान और जिन्न, तुममें सबसे ज़्यादा बदकार दिल के आदमी जैसे हो जायें, उससे मेरे इक़्तिदार में कुछ कमी वाक़ेअ नहीं होगी। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुममें से पहले और पिछले, तुममें से इंसान और जिन्न, एक मैदान में खड़े होकर मुझसे माँगने लगें, चुनाँचे मैं हर फ़र्द का मुताल्बा पूरा कर दूँ तो मेरे ख़ज़ानों में सिर्फ़ इतनी कमी होगी, जितनी सूई को समुन्द्र में डालने से कमी हो। ऐ मेरे बन्दो! ये तो तुम्हारे आमाल ही हैं जिनको मैं तुम्हारे लिये महफ़ूज़ कर रहा हूँ, फिर वो पूरे-पूरे तुम्हें दे दूँगा। पस जिसको ख़ैर मिले वो अल्लाह का शुक्र अदा करे और जिसको उसके सिवा मिले, वो अपने आप ही को मलामत करे।' सईद कहते हैं, हज़रत अबू इदरीस ख़ोलानी(रह.) जब ये रिवायत बयान करते तो घुटनों के बल खड़े हो जाते।

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) हर्रम्तुज़्ज़ुल्-म अला नफ़्सी : मैंने अपने लिये ये उसूल और ज़ाब्ता बना रखा है कि मैं किसी पर ज़ुल्म(हक़ तल्फ़ी) नहीं करूँगा। क्योंकि मैं ज़ुल्म करने से बहुत बुलंद व बाला हूँ और मैंने तुम्हें भी इसका हुक्म दिया है, क्योंकि तुम मामूर(हुक्म के पाबंद) हो।**(2) यन्क़ुसुल मिख़्यत** : जितना सूई कम करती है, यानी जिस तरह सूई समुन्द्र के पानी में कोई कमी नहीं करती उसी तरह मैं हर इंसान का मुताल्बा पूरा कर दूँ तो मेरे ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं होगी और ये बात सिर्फ़ तफ़्हीम(समझाने) के लिये है, वरना समुन्द्र का पानी महदूद है, इसलिये इसमें कमी का इम्कान है और अल्लाह तआला के ख़ज़ाने ला महदूद हैं, इसलिये उनमें कमी का इम्कान नहीं है।**(3) मिख़्यतुन :** सूई।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि इंसान को जो कुछ भी मिलता है, वो अल्लाह की तौफ़ीक़ और इनायत से मिलता है। अपनी क़ुव्वत व ताक़त या फ़हम व फ़रासत के बल-बूते पर वो कुछ भी हासिल नहीं कर सकता, इसलिये हर चीज़ की तौफ़ीक़ व इनायत की दरख़्वास्त या अपील अल्लाह ही से करना चाहिये। अस्बाब व वसाइल से बालातर होकर किसी और से दरख़्वास्त करना और माँगना जाइज़ नहीं है और इंसान की नेकी व बदी या ख़ैर व शर से अल्लाह के इख़्तिदार में कोई कमी व बेशी नहीं होती है और न उसको नफ़ा या नुक़सान पहुँचता है, इंसान की नेकी और बदी का असर, नफ़ा या नुक़सान उसी को पहुँचता है और उसकी कामयाबी व नाकामी का मदार उसके अपने ही आमाल हैं, अगर नेक अमल क़ुबूल हो गये तो ये उसका फ़ज़्ल व करम है और अगर बद आमालियों पर मुवाख़ज़ा(पकड़) हुआ तो ये उसका अद्ल व इंसाफ़ है, इसलिये इंसान को अपने रवय्ये का हर वक़्त मुहासबा करते रहना चाहिये।

(6573) इमाम साहब यही हदीस़ एक और उस्ताद से बयान करते हैं, लेकिन ऊपर वाली रिवायत ज़्यादा कामिल है।

حَدَّثَنِيهِ أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُسْهِرٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ مَرْوَانَ أَتَمُّهُمَا حَدِيثًا ‏.‏

(6574) एक और सनद से ऊपर वाली हदीस़ मुकम्मल तौर पर बयान की है।

قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا بِهَذَا الْحَدِيثِ الْحَسَنُ، وَالْحُسَيْنُ، ابْنَا بِشْرٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو مُسْهِرٍ ‏.‏ فَذَكَرُوا الْحَدِيثَ بِطُولِهِ ‏.‏

(6575) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने रब्ब तबारक व तआला से बयान फ़रमाया, 'मैंने ज़ुल्म को

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الصَّمَدِ بْنِ عَبْدِ، الْوَارِثِ

حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِيمَا يَرْوِي عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى " إِنِّي حَرَّمْتُ عَلَى نَفْسِي الظُّلْمَ وَعَلَى عِبَادِي فَلاَ تَظَالَمُوا " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِنَحْوِهِ وَحَدِيثُ أَبِي إِدْرِيسَ الَّذِي ذَكَرْنَاهُ أَتَمُّ مِنْ هَذَا .

अपने ऊपर और अपने बन्दों पर हराम ठहराया है, इसलिये आपस में ज़ुल्म न करो।' आगे ऊपर वाली हदीस़ के हम मानी रिवायत बयान की, लेकिन अबू इदरीस की ऊपर वाली रिवायत इससे ज़्यादा कामिल है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، - يَعْنِي ابْنَ قَيْسٍ - عَنْ عُبَيْدِ، اللَّهِ بْنِ مِقْسَمٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " اتَّقُوا الظُّلْمَ فَإِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاتَّقُوا الشُّحَّ فَإِنَّ الشُّحَّ أَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَمَلَهُمْ عَلَى أَنْ سَفَكُوا دِمَاءَهُمْ وَاسْتَحَلُّوا مَحَارِمَهُمْ " .

(6576) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़ुल्म से बचो, क्योंकि ज़ुल्म क़यामत के दिन अन्धेरा बनेगा और हिर्स व आरज़ू से बचो, क्योंकि हिर्स ने तुमसे पहले लोगों को तबाह कर दिया, उन्हें आपस में ख़ूनरेज़ी और हराम की गई चीज़ों के हलाल समझने पर आमादा किया।'

मुफ़रदातुल हदीस़ :(1) अज़्ज़ुल्मु ज़ुलुमातुन : आख़िरत में जब इंसान नूर और रोशनी का मोहताज होगा। ज़ुल्म और हक़ तल्फ़ी तारीकियों(अन्धेरों) का सबब बनेगा या शदाइद व मुश्किलात का बाइस़ होगा। जैसकि इरशादे बारी है, 'उनसे पूछो! तुम्हें ख़ुश्की और समुन्द्र की मुसीबतों व शदाइद से कौन निजात देता है, इसलिये सज़ा और उक़ूबात भी मानी हो सकता है।**(2) अश्शुह्ह :** हिर्स व आरज़ू, जो चीज़ हासिल नहीं है उसकी ख़्वाहिश और लालच करना और बुख़्ल, जो चीज़ हासिल है उसको रोके रखना, मौक़ा व महल पर ख़र्च न करना।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है माल व दौलत की हिर्स व लालच और मफ़ादात की असीरी, आपस में ख़ूनरेज़ी और हराम चीज़ों को हलाल करने पर आमादा करती है, जिससे दुनिया भी तबाह होती है और आख़िरत में भी ये चीज़ हलाकत व तबाही का बाइस़ बनेगी।

(6577) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़ुल्म क़यामत के दिन तारीकियों का बाइस बनेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 2447, तिर्मिज़ी : 2030)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ الْمَاجِشُونُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6578) हज़रत सालिम(रह.) अपने बाप(इब्ने उमर रज़ि.) से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमान, मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही बेयारो-मददगार छोड़ता है, जो शख़्स अपने भाई की हाजत रवाई में रहता है, अल्लाह उसकी हाजत रवाई करता है और जो शख़्स किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करता है, अल्लाह तआला क़यामत की मुसीबतों में से कोई मुसीबत उसके बाइस दूर फ़रमायेगा और जो किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करता है, अल्लाह क़यामत के दिन उसकी पर्दा पोशी फ़रमायेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 2442, 6951, अबू दाऊद : 4893, तिर्मिज़ी : 1426)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لاَ يَظْلِمُهُ وَلاَ يُسْلِمُهُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيهِ كَانَ اللَّهُ فِي حَاجَتِهِ وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللَّهُ عَنْهُ بِهَا كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, मुसलमान भाई का जाइज़ काम में तआवुन करना, उसकी ज़रूरत को पूरा करना, दर हक़ीक़त अपनी ज़रूरत व हाजत को पूरा करना है, क्योंकि अगर हम किसी की जाइज़ ज़रूरत पूरी करेंगे तो अल्लाह तआला हमारी हाजतें पूरी फ़रमायेगा, इसी तरह हम अगर किसी की कोई मुश्किल हल करते हैं, उसकी मुसीबत में आने वाले दिरहमे, क़दमे सुख़्ने किसी सूरत में भी तआवुन(मदद) करते हैं तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन हमारी मुसीबत का इज़ाला फ़रमायेगा। इस तरह अगर कोई शख़्स और इन्फ़िरादी तौर पर कभी किसी ग़लती का इर्तिकाब कर लेता है और ये लग़्ज़िश उसकी आदत या वतीरा नहीं है और इससे दूसरे मुतास्सिर नहीं होते, वो ख़ुद भी उस पर शर्मसार है, तो उसकी ग़लती की पर्दा पोशी करना मत्लूब है, लेकिन अगर वो बार-बार उसका इर्तिकाब करता है और दूसरों को नुक़सान पहुँचाता है, फिर उसका पर्दा चाक करना पसन्दीदा है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَتَدْرُونَ مَا الْمُفْلِسُ " . قَالُوا الْمُفْلِسُ فِينَا مَنْ لاَ دِرْهَمَ لَهُ وَلاَ مَتَاعَ . فَقَالَ " إِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ أُمَّتِي يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصَلاَةٍ وَصِيَامٍ وَزَكَاةٍ وَيَأْتِي قَدْ شَتَمَ هَذَا وَقَذَفَ هَذَا وَأَكَلَ مَالَ هَذَا وَسَفَكَ دَمَ هَذَا وَضَرَبَ هَذَا فَيُعْطَى هَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ وَهَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ فَإِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهُ قَبْلَ أَنْ يُقْضَى مَا عَلَيْهِ أُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرِحَ فِي النَّارِ " .

(6579) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है?' सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया, हमारे नज़दीक मुफ़्लिस वो है जिसके पास कोई दिरहम नहीं है और न किसी क़िस्म का सामान है। आपने फ़रमाया, 'मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वो है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात लेकर हाज़िर होगा और साथ ही ये सूरत होगी, किसी को गाली दी है, किसी पर बोहतान बांधा है, किसी का माल हड़प किया है, किसी का ख़ून बहाया है, किसी को मारा-पीटा है तो उसको भी उसकी नेकियाँ दे दी जायेगी और उसको भी नेकियाँ मिल जायेंगी और अगर उसकी नेकियाँ ख़त्म हो जायेंगी लेकिन हुक़ूक़ अदा नहीं हो सकेंगे तो फिर उन लोगों के क़ुसूर और कोताहियाँ, उनसे लेकर उस पर डाल दी जायेंगी, फिर उनकी पादाश में आग में फेंक दिया जायेगा।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, माल व दौलत और दुनियवी साज़ो-सामान से तही दामनी या महरूमी असल इफ़्लास(फ़क़ीरी) नहीं है, दर हक़ीक़त मुफ़्लिस वो इंसान है जिसने दुनिया में लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती की, जिसकी बिना पर वो क़यामत के दिन अपनी तमाम नेकियों से महरूम हो जायेगा, मज़्लूमों की फ़रियाद रसी या दाद रसी करते हुए अल्लाह उसकी नेकियाँ उनको दे देगा, अगर फिर भी मज़्लूमों का हक़ न पूरा हुआ तो उनके गुनाह उस पर लाद दिये जायेंगे और ये उनकी सज़ा भुगतने के लिये दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा, इस तरह उसने जो बोया था उसको काट लेगा और अपने किये की सज़ा पायेगा, दूसरों के गुनाह, अपने ज़ुल्म की पादाश में उठायेगा।

(6580) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़यामत के दिन हक़ वालों को उनका हक़ दिलवाया जायेगा यहाँ तक कि बेसींग बकरी को सींग वाली बकरी से उसका बदला दिलवाया जायेगा।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَتُؤَدُّنَّ الْحُقُوقَ إِلَى أَهْلِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُقَادَ لِلشَّاةِ الْجَلْحَاءِ مِنَ الشَّاةِ الْقَرْنَاءِ " .

मुफ़रदातुल हदीस :(1) जल्हाइ : बेसींग।**(2) क़रनाइ :** सींग वाली।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि क़यामत के दिन हैवानात को भी उठाया जायेगा और उनको भी एक दूसरे से बदला दिलवाया जायेगा, लेकिन चूंकि वो मुकल्लफ़ नहीं हैं इसलिये उनके लिये जन्नत या दोज़ख़ नहीं है।

(6581) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला ज़ालिम को मोहलत और ढील देता है(सम्भलने का मौक़ा देता है) लेकिन जब उसे पकड़ता है तो उसे छोड़ता नहीं है(भागने का मौक़ा नहीं देता) फिर ये आयत पढ़ी, और इसी तरह आपके रब की गिरफ़्त है, जब वो ज़ालिम बस्तियों को पकड़ता है, बेशक उसकी गिरफ़्त बड़ी दर्दनाक और सख़्त है।'(सूरह हूद : 102)

(सहीह बुख़ारी : 4686, तिर्मिज़ी : 3110, इब्ने माजह : 4018)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُمْلِي لِلظَّالِمِ فَإِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ " . ثُمَّ قَرَأَ {وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ}

बाब 17 : अपने भाई की मदद करो, ज़ालिम हो या मज़्लूम हो

باب نَصْرِ الأَخِ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ اقْتَتَلَ غُلاَمَانِ غُلاَمٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَغُلاَمٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَنَادَى الْمُهَاجِرُ أَوِ الْمُهَاجِرُونَ يَا لَلْمُهَاجِرِينَ . وَنَادَى الأَنْصَارِيُّ يَا لَلأَنْصَارِ . فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " مَا هَذَا دَعْوَى أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ " . قَالُوا لاَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلاَّ أَنَّ غُلاَمَيْنِ اقْتَتَلاَ فَكَسَعَ أَحَدُهُمَا الآخَرَ قَالَ " فَلاَ بَأْسَ وَلْيَنْصُرِ الرَّجُلُ أَخَاهُ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا إِنْ كَانَ ظَالِمًا فَلْيَنْهَهُ فَإِنَّهُ لَهُ نَصْرٌ وَإِنْ كَانَ مَظْلُومًا فَلْيَنْصُرْهُ " .

(6582) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं कि दो ग़ुलाम आपस में लड़ पड़े, एक ग़ुलाम मुहाजिरों का और दूसरा अन्सार का। मुहाजिर ग़ुलाम या मुहाजिरों ने आवाज़ बुलंद की, ऐ मुहाजिरो! मदद करो और अन्सारी ने पुकारा, ऐ अन्सारियो! मदद करो। तो रसूलुल्लाह(ﷺ)(ख़ेमे से) निकले और फ़रमाया, 'ये जाहिलाना पुकार कैसी है?' सहाबा किराम(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, कुछ नहीं। ऐ अल्लाह के रसूल! सिर्फ़ इतनी बात है दो ग़ुलाम लड़ पड़े(क्योंकि) एक ने दूसरे की सुरीन पर लात मारी। आपने फ़रमाया, 'कोई ख़तरे की बात नहीं है, इंसान को अपने भाई की मदद करना चाहिये, ज़ालिम हो या मज़्लूम। अगर वो ज़ुल्म कर रहा है तो उसे रोके, क्योंकि यही उसकी नुसरत(मदद) है और अगर मज़्लूम है तो उसकी मदद करे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : कसअ़ : सुरीन पर लात मारना या चुटकी लेना।

फ़ायदा : ग़ज़्व-ए-म्रीसीअ़ में हज़रत उ़मर(रज़ि.) के ग़ुलाम जहजाह बिन क़ैस ग़िफ़ारी ने जिनकी तबीअ़त में ख़ुशतबई थी, सिनान बिन वबरह जुहनी, जो अन्सार के हलीफ़ थे, की सुरीन पर हँसी में लात मार दी। उसने उसको बहुत बुरा और मअ़यूब कहा और मदद के लिये अन्सार को पुकारा। जवाब में हज़रत उ़मर(रज़ि.) के ग़ुलाम ने मुहाजिरीन को आवाज़ दी तो इस तरह क़बीलों की बुनियाद पर आवाज देना जाहिलिय्यत के दौर का तरीक़ा था, जिसमें हक़ व सदाक़त की बजाए, अपने-अपने ख़ानदान के फ़र्द की हिमायत की जाती थी। इसलिये आपने फ़रमाया, ये जाहिलिय्यत के दौर की पुकार कैसी है? तो सहाबा किराम(रज़ि.) ने जवाब दिया, इस पुकार से ज़्यादा लोग मुतास़्स़िर नहीं हुए और अ़स्बियत के जज़्बे ने सर नहीं उठाया। इसलिये कुछ असर नहीं हुआ तो आपने फ़रमाया, चलो

कोई ख़तरा और ख़ौफ़ की बात नहीं है, क्योंकि तुम इससे मुतास्सिर नहीं हुए। भाई की मदद ज़रूर करो, लेकिन ज़ालिम भाई की मदद यही है कि उसको शरीअत की मुख़ालिफ़त से रोको, ग़लत काम से बाज़ रखो ताकि वो अल्लाह की पकड़ से बच जाये। इसी तरह आपने जाहिलिय्यत के इस मक़ूले को तो बरक़रार रखा कि अपने भाई की मदद करो ख़्वाह ज़ालिम हो या मज़्लूम, लेकिन इसका मफ़्हूम बदल दिया और अस्बियत(क़ौम परस्ती) को ख़त्म कर डाला।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، وَابْنُ أَبِي، عُمَرَ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي شَيْبَةَ - قَالَ ابْنُ عَبْدَةَ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ، عُيَيْنَةَ قَالَ سَمِعَ عَمْرٌو، جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي غَزَاةٍ فَكَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ يَا لَلأَنْصَارِ وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ يَا لَلْمُهَاجِرِينَ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا بَالُ دَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ كَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ . فَقَالَ " دَعُوهَا فَإِنَّهَا مُنْتِنَةٌ " . فَسَمِعَهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ فَقَالَ قَدْ فَعَلُوهَا وَاللَّهِ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ . قَالَ عُمَرُ دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ فَقَالَ " دَعْهُ لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ مُحَمَّدًا يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ " .

(6583)हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, हम एक ग़ज़्वे में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे तो एक ने एक अन्सारी की दुबुर(सुरीन) पर हाथ मारा। तो अन्सारी ने कहा, ऐ अन्सारियो! मदद करो और मुहाजिर ने कहा, ऐ मुहाजिरो! मदद के लिये पहुँचो। तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जाहिलिय्यत की पुकार का सबब क्या है?' तो लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मुहाजिरीन में से एक आदमी ने एक अन्सारी आदमी की दुबुर पर हाथ मारा है। चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'इस पुकार को छोड़ो, क्योंकि ये तो बदबूदार और नापसन्दीदा है।' इस वाक़िये को अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने सुन लिया तो कहने लगा, क्या उन्होंने ये काम किया है? अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना वापस गये तो अ़ज़ीजतर(इज़्ज़तदार) आदमी ज़लीलतर आदमी को बाहर निकाल देगा। हज़रत उ़मर(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, मुझे इजाज़त दीजिये मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ? तो आपने फ़रमाया, 'इसे छोड़ दो लोग ये बातें न करें कि मुहम्मद अपने साथियों को ही क़त्ल करवा देता है।'(सहीह बुख़ारी : 4905, 4907, तिर्मिज़ी : 3315)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है अगर किसी ग़लत काम पर ग़लती करने वाले आदमी की पकड़ करने की सूरत में ज़्यादा फ़ित्ना-फ़साद उभरता हो तो कम फ़साद और शर पर सब्र कर लेना चाहिये।

रसूलुल्लाह(ﷺ) लोगों को क़रीब करने के लिये, दावते इस्लाम फैलाने की ख़ातिर, लोगों की दिलजोई के लिये, बद्दुओं, मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर ईमान वाले लोगों की नागवार और तकलीफ़देह बातें बर्दाश्त कर लेते थे ताकि उन लोगों से हुस्ने सुलूक के लिये दूसरे लोग इस्लाम की तरफ़ राग़िब हों, मुसलमानों को तक़्वियत(मज़बूती) मिले और मुअल्ल-फ़तिल क़ुलूब के दिलों में ईमान रासिख़ हो जाये और अब भी अगर बड़े शर से बचने के लिये कम शर से सर्फ़े नज़र(दरगुज़र) करने की ज़रूरत हो तो उसको बर्दाश्त कर लेना चाहिये। आपने उस मुनाफ़िक़ के रासिख़ुल ईमान बेटे को भी बाप को क़त्ल करने की इजाज़त नहीं दी थी बल्कि हुस्ने सुलूक और नर्म रवय्या इख़्तियार करने का हुक्म दिया था।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالَ ابْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ الْقَوَدَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ " دَعُوهَا فَإِنَّهَا مُنْتِنَةٌ " . قَالَ ابْنُ مَنْصُورٍ فِي رِوَايَتِهِ عَمْرٌو قَالَ سَمِعْتُ جَابِرًا .

(6584) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक मुहाजिर आदमी ने एक अन्सारी आदमी की दुबुर पर हाथ मारा, उसने नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़िसास का मुतालबा किया। आपने फ़रमाया 'इस अन्दाज़ को छोड़ दो क्योंकि ये बदबूदार है।' यानी ये पुकार नाशाइस्ता और क़बीह हरकत है। इब्ने मन्सूर की रिवायत में अम्र बिन दीनार के हज़रत जाबिर(रज़ि.) ने सुनने की सराहत की है।

باب تَرَاحُمِ الْمُؤْمِنِينَ وَتَعَاطُفِهِمْ وَتَعَاضُدِهِمْ

बाब 18 : मोमिनों का आपस में रहम खाना, शफ़क़त व मेहरबानी करना और एक-दूसरे को तक़्वियत (मज़बूती) पहुँचाना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، وَأَبُو أُسَامَةَ ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، وَابْنُ، إِدْرِيسَ

(6585) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिये एक इमारत की तरह है कि उसका कुछ(हिस्सा) दूसरे कुछ(हिस्से) की तक़्वियत का बाइस

या एक-दूसरे के लिये पुख़्तगी का सबब है।'

(सहीह बुख़ारी : 2446, 6026, तिर्मिज़ी : 1928, नसाई : 5/80)

وَأَبُو أُسَامَةَ كُلُّهُمْ عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ"الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا ".

फ़ायदा : एक इमारत उस वक़्त तक क़ायम रहती है, जब तक उसके हिस्से आपस में पेवस्त रहते हैं अगर उनके रब्त व ताल्लुक़ ख़त्म हो जाये तो इमारत ज़मीन बोस हो जाती(ढह जाती) है। इसी तरह मुसलमानों को इस तरह आपस में मिलकर एक ऐसी मज़बूत दीवार बन जाना चाहिये जिसकी ईंटें आपस में पेवस्ता और एक-दूसरे से जुड़ी हुई हों और उनमें कहीं कोई ख़ला न हो, वरना वो मज़बूत और ताक़तवर नहीं रह सकेंगे जैसाकि आज मुसलमान अपने इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ की बिना पर किसी हैसियत के मालिक नहीं रहे। हर मैदान में ज़लील व रुस्वा हो रहे हैं बल्कि दीन व दुनिया दोनों से महरूम हैं।

(6586) हज़रत नोमान बिन बशीर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मोमिनों की आपस में मुहब्बत करने, एक-दूसरे पर रहम करने और शफ़क़त व मेहरबानी करने में तम्सील(मिसाल) जिस्मे इंसानी की तरह है, जब उसका कोई अज़्व(हिस्सा) बीमार पड़ता है, तकलीफ़ में मुब्तला होता है तो उसकी ख़ातिर सारा जिस्म बेख़्वाबी और बुख़ार को दावत देता है, यानी जिस्म के बाक़ी हिस्से भी बेख़्वाबी और बुख़ार में शरीक हो जाते हैं।'

(सहीह बुख़ारी : 6011)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "مَثَلُ الْمُؤْمِنِينَ فِي تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ مَثَلُ الْجَسَدِ إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, ईमान वालों में आपस में ऐसी मुहब्बत व मवद्दत, ऐसी रहमत व शफ़क़त और हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही और ऐसा दिली ताल्लुक़ होना चाहिये कि देखने वाली आँख उनको इस हालत में देखे कि अगर उनमें से कोई दुख, दर्द या तकलीफ़ व मुश्किल में मुब्तला है तो सब उसको अपना दुख, दर्द और मुसीबत ख़्याल करें और सब उसकी परेशानी व बेक़रारी में मुब्तला हों और उसको अपने दुख, दर्द की तरह दूर करने की कोशिश करें।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ، بَشِيرٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِهِ .

(6587) इमाम साहब एक और उस्ताद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الْمُؤْمِنُونَ كَرَجُلٍ وَاحِدٍ إِنِ اشْتَكَى رَأْسُهُ تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالْحُمَّى وَالسَّهَرِ " .

(6588) हज़रत नोमान बिन बशीर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मोमिन एक शख़्स की तरह हैं, अगर उसका सर तकलीफ़ में मुब्तला है, उसकी ख़ातिर सारा जिस्म बुख़ार और बेख़्वाबी में शरीक है।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الْمُسْلِمُونَ كَرَجُلٍ وَاحِدٍ إِنِ اشْتَكَى عَيْنُهُ اشْتَكَى كُلُّهُ وَإِنِ اشْتَكَى رَأْسُهُ اشْتَكَى كُلُّهُ " .

(6589) हज़रत नोमान बिन बशीर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुसलमान एक आदमी की तरह हैं, अगर उसकी आँख दुखती है पूरा जिस्म तकलीफ़ महसूस करता है और उसका सर दुखता है तो सारा जिस्म बीमार पड़ जाता है।'

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ، بْنِ بَشِيرٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم نَحْوَهُ .

(6590) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।

बाब 19 : गाली-गलोच से मुमानिअ़त(मनाही)

باب النَّهْىِ عَنِ السِّبَابِ

(6591) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'आपस में गाली-गलोच करने वाले दो शख़्स जो कुछ भी कहते हैं, उसका वबाल गुनाह शुरू करने वाले पर है, बशर्तेकि मज़्लूम ज़्यादती न करे, हद से तजावुज़ न करे(आगे न बढ़े)।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ "الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالاَ فَعَلَى الْبَادِئِ مَا لَمْ يَعْتَدِ الْمَظْلُومُ " .

फ़ायदा : ज़ालिम से बदला और इन्तिक़ाम लेने की इजाज़त है, अगरचे अ़फ़्व व दरगुज़र से काम लेना अफ़ज़ल(बेहतर) है और बदला यही है कि जो बात उसने कही, जवाबन वही बात उसको कह दी जाये, इस सूरत में शुरू करने वाला गुनाहगार होगा। लेकिन अगर वो जवाबन ईंट का जवाब पत्थर से देता है तो वो भी गुनाह में शरीक है और अपने किये की सज़ा भुगतेगा।

बाब 20 : अ़फ़्व और तवाज़ोअ़ (इन्किसारी व फ़रौतनी) का बेहतर होना

باب اسْتِحْبَابِ الْعَفْوِ وَالتَّوَاضُعِ

(6592) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'सदक़ा माल में कमी नहीं करता और अल्लाह बन्दे को अ़फ़्व व दरगुज़र करने पर ज़्यादा इज़्ज़त बख़्शता है और जो भी अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी के लिये इजज़ व नियाज़(नर्मी) अपनाता है, अल्लाह उसको रिफ़्अ़त व बुलंदी बख़्शता है।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ وَمَا زَادَ اللَّهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلاَّ عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلَّهِ إِلاَّ رَفَعَهُ اللَّهُ " .

फ़ायदा : इंसान अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी के लिये अगर माल ख़र्च करता है तो दुनिया में उसके

माल व दौलत में बरकत पैदा होती है, कम माल से ज़्यादा ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं और वो मुसीबतों व मुश्किलों में मुब्तला होने से महफ़ूज़ रहता है, इसी तरह उसका माल बचा रहता है, इसी तरह उसकी ज़ाहिरी कमी का मुतबादिल हो जाता है, इस तरह क़यामत के दिन उसको उस पर जो अज्र व सवाब हासिल होगा वो बहुत ज़्यादा है। एक खजूर उहुद पहाड़ के बराबर हो जायेगी। इसी तरह जो इंसान दूसरों को माफ़ करता है, उनके नज़दीक उसकी इज़्ज़त व वक़ार बढ़ जाता है और लोग उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करते हैं और आख़िरत में भी उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा होगा और जो इंसान अल्लाह की रज़ा के लिये आजिज़ी व फ़रौतनी इख़्तियार करता है, लोगों के दिलों में उसकी क़द्र व मन्ज़िलत बढ़ जाती है और क़यामत के दिन भी उसके दरजात व मर्तबों में रिफ़अत व बुलंदी पैदा होगी।

बाब 21 : ग़ीबत और बयान तराशी की मज़म्मत

باب تَحْرِيمِ الْغِيبَةِ

(6293) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'क्या जानते हो ग़ीबत क्या है?' सहाबा किराम ने जवाब दिया, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरा अपने भाई का तज़्किरा करना जिसे वो नापसंद करे।' पूछा गया, तो बताइये! अगर जो कुछ मैं कहता हूँ, मेरे भाई में मौजूद हो? फ़रमाया, 'अगर जो कुछ तू कहता है उसमें मौजूद है तूने उसकी ग़ीबत की और उसमें मौजूद नहीं, तो तूने उस पर बोहतान बांधा।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَتَدْرُونَ مَا الْغِيبَةُ " . قَالُوا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ " ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ " . قِيلَ أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِي أَخِي مَا أَقُولُ قَالَ " إِنْ كَانَ فِيهِ مَا تَقُولُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ " .

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी भाई की ऐसी बात या ऐसा अमल या हाल बयान करना, जो उसके अंदर मौजूद है लेकिन उसके ज़िक्र से उसको नागवारी और अज़ियत(तकलीफ़) पहुँचती है, क्योंकि उससे वो ज़लील व ख़्वार होता है और उसकी तहक़ीर व तन्क़ीस होती है, ये ग़ीबत है। लेकिन अगर वो ऐब या नुक़्स या बुराई उसके अंदर मौजूद ही नहीं है तो फिर ये ग़ीबत नहीं है बल्कि बोहतान और इल्ज़ाम तराशी है, जो ग़ीबत से ज़्यादा सख़्त और संगीन है।

इमाम नववी(रह.) लिखते हैं, ग़ीबत ये है कि तुम किसी इंसान के मुताल्लिक़ उस चीज़ का

ज़िक्र करो, जो उसे नागवार गुज़रे, ख़्वाह उसका ताल्लुक़ उसके दीन से या दुनिया से या उसके नफ़्स और जिस्मानी बनावट से, उसके माल से हो या अख़्लाक़ से, लिबास से हो या उसकी चाल-ढाल से उसके बीवी-बच्चों से हो या वालिदैन और नोकरों-चाकरों से, ख़्वाह ये ज़िक्र कलाम से हो या तहरीर करके या इशारे-किनाये से, लेकिन ये ख़्याल रहे, ऐबों व नुक़्सों का ज़िक्र ग़ीबत और गुनाह इस सूरत में होगा, अगर उसकी दुनियवी और दीनी तौर पर कोई ज़रूरत व हाजत नहीं है। अगर दूसरों की ख़ैरख़्वाही व हमदर्दी या किसी मुफ़्सिदा और ख़राबी के इन्सिदाद(रोकने) के लिये शख़्स या गिरोह की वाक़ेई बुराई दूसरों के सामने बयान करना ज़रूरी हो या किसी शरई, अख़्लाक़ और तमद्दुनी मक़सद का हुसूल उस पर मौक़ूफ़ हो तो फिर किसी शख़्स या गिरोह की बुराई, उसका ऐब व नुक़्स और कमज़ोरी बयान करना ग़ीबत नहीं होगा, बल्कि कारे सवाब होगा। जैसे किसी हाकिम के सामने उसके ख़िलाफ़ गवाही देना, किसी पेशावर धोखेबाज़ के धोखे से लोगों को आगाह करना, हज़राते मुहद्दिसीन का रिवायात की जाँच-पड़ताल के सिलसिले में ग़ैर आदिल रावियों के ऐबों व नुक़्सों को बयान करना, दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त और मुदाफ़िअत के लिये ज़रूरी और अहले बिद्अत की ग़लतियों और बिद्अतों का पर्दा चाक करना और लोगों को उनकी करतूतों से आगाह करना, ग़ीबत नहीं है बल्कि एक दीनी फ़रीज़ा और शरई ज़रूरत है जिसके पूरा करने पर अज्र व सवाब मिलेगा।

باب بِشَارَةِ مَنْ سَتَرَ اللَّهُ تَعَالَى عَيْبَهُ فِي الدُّنْيَا بِأَنْ يَسْتُرَ عَلَيْهِ فِي الآخِرَةِ

बाब 22 : उस शख़्स के लिये ख़ुशख़बरी जिसके ऐबों पर अल्लाह तआला ने दुनिया में पर्दा डाला कि क़यामत को भी उसकी पर्दा पोशी होगी

حَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامٍ الْعَيْشِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَسْتُرُ اللَّهُ عَلَى عَبْدٍ فِي الدُّنْيَا إِلاَّ سَتَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6594) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करते हैं, 'अल्लाह तआला जिस बन्दे की दुनिया में पर्दा पोशी फ़रमाता है क़यामत के दिन भी अल्लाह उसकी पर्दा पोशी फ़रमायेगा।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ

(6595) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'कोई बन्दा किसी बन्दे पर भी दुनिया में पर्दा नहीं

أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " لاَ يَسْتُرُ عَبْدٌ عَبْدًا فِي الدُّنْيَا إِلاَّ سَتَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

डालता, मगर अल्लाह क़यामत के दिन उस पर पर्दा डालेगा।'

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने जिसके ऐबों की दुनिया में पर्दा पोशी की, क़यामत के दिन उसके जुर्मों और गुनाहों से अहले महशर को आगाह नहीं फ़रमायेगा। सिर्फ़ अपने सामने उससे गुनाहों का इक़रार और ऐतराफ़ करवा लेगा और फिर फ़रमायेगा, मैंने दुनिया में तेरे गुनाहों की पर्दा पोशी की थी और आज तुम्हें माफ़ करता हूँ और इंसान का इंसान के गुनाहों की पर्दा पोशी का मफ़्हूम, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म में गुज़र चुका है हदीस नम्बर 58।

باب مُدَارَاةِ مَنْ يُتَّقَى فُحْشُهُ

बाब 23 : किसी की बदकलामी से बचने के लिये उससे नर्म गुफ़्तगू करना

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ كُلُّهُمْ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، - وَهُوَ ابْنُ عُيَيْنَةَ -عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، يَقُولُ حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ، أَنَّ رَجُلاً، اسْتَأْذَنَ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " ائْذَنُوا لَهُ فَلَبِئْسَ ابْنُ الْعَشِيرَةِ أَوْ بِئْسَ رَجُلُ الْعَشِيرَةِ " . فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ أَلاَنَ لَهُ الْقَوْلَ قَالَتْ عَائِشَةُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قُلْتَ لَهُ الَّذِي قُلْتَ ثُمَّ أَلَنْتَ لَهُ الْقَوْلَ قَالَ " يَا عَائِشَةُ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْزِلَةً عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ وَدَعَهُ أَوْ تَرَكَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ فُحْشِهِ " .

(6596) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, एक आदमी ने नबी(ﷺ) से मिलने की इजाज़त तलब की तो आपने फ़रमाया, 'उसे इजाज़त दे दो, ये अपने क़बीले का बुरा फ़र्द या बुरा आदमी है।' तो जब वो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने उससे नर्मी से गुफ़्तगू फ़रमाई। हज़रत आइशा(रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैंने आपसे अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने इसके बारे में जो कुछ फ़रमाया आपको मालूम है, फिर आपने उससे नर्मी से बातचीत की? आपने फ़रमाया, 'ऐ आइशा! क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ सबसे बुरे मर्तबा का हामिल वो इंसान होगा, जिसकी बद ज़बानी या बद कलामी से बचते हुए लोग उसको छोड़ दें या अलग रहें।'

(सहीह बुख़ारी : 6054, 3132, अबू दाऊद : 4791, तिर्मिज़ी : 1996)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ .مِثْلَ مَعْنَاهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ "بِئْسَ أَخُو الْقَوْمِ وَابْنُ الْعَشِيرَةِ "

(6597) इमाम साहब इसी रिवायत के हम मानी रिवायत दो और उस्तादों से इस फ़र्क़ से बयान करते हैं कि बिअ्-स रजुलुल अशीरह की जगह बिअ्-स अख़ुल क़ौमि वब्नुल अशीरह है, मानी एक ही है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है, बुरे आदमी से भी दुरुश्ती और सख़्ती से पेश नहीं आना चाहिये बल्कि नर्म गुफ़्तारी और ख़न्दा पेशानी से उसको मुतास्सिर करने की कोशिश करनी चाहिये। क्योंकि प्यार व मुहब्बत नर्मी से तो उसको क़रीब किया जा सकता है, अगर उससे दुरुश्ती व सख़्ती का रवय्या इख़्तियार किया जायेगा तो वो बद कलामी और फ़हशगोई पर उतर आयेगा, अगरचे दूसरों को उसकी बुरी हरकात और बुरी बातों से बचाने के लिये आगाह कर दिया जायेगा ताकि वो उससे होशियार और चोकन्ने रहें, उसके फ़रेब या धोखे का शिकार न हो जायें।

باب فَضْلِ الرِّفْقِ

बाब 24 : रिफ़्क़ व नर्मी की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ تَمِيمِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ " .

(6598) हज़रत जरीर(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जिसको नर्मी व मुलायमत से महरूम किया गया, वो सिरे से ख़ैर से महरूम किया गया।'

(अबू दाऊद : 4809, इब्ने माजह : 3687)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, नर्मी और लोगों के लिये आसानी व सहूलत पैदा करने की सिफ़त, इतनी बड़ी चीज़ है और इसका दर्जा इस क़द्र बुलंद है कि जो इससे महरूम रहा, गोया वो अच्छाई और भलाई से यकसर(बिल्कुल) महरूम रहा। जिससे मालूम हुआ, इंसान की अक्सर अच्छाइयों और भलाइयों का मम्बअ(सर चशमा) और जड़ बुनियाद उसकी नर्म मिज़ाजी है, इसलिये जो शख़्स इससे महरूम रहा, वो हर क़िस्म के ख़ैर और हर अच्छाई से महरूम और ख़ाली हाथ रहा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ،

(6599) इमाम साहब अपने बहुत से उस्तादों से रिवायत करते हैं, हज़रत जरीर(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने

रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जो नर्मी से महरूम रखा जाता है, वो हर ख़ैर से महरूम रखा जाता है।'

ح وَحَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ - كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ - وَاللَّفْظُ لَهُمَا - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ تَمِيمِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِلاَلٍ الْعَبْسِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ جَرِيرًا، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ " .

(6600) हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो नर्मी से महरूम रखा गया, हर ख़ैर से महरूम रखा गया या जो नर्मी से महरूम किया जायेगा, हर ख़ैर व भलाई से महरूम रखा जायेगा।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي إِسْمَاعِيلَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِلاَلٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم" مَنْ حُرِمَ الرِّفْقَ حُرِمَ الْخَيْرَ أَوْ مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ" .

(6601) नबी(ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ आइशा! बेशक अल्लाह रफ़ीक़ है(सहूलत व आसानी पैदा करता है) नर्मी और मुलायमत को महबूब रखता है और वो नर्मी व मेहरबानी पर इतना देता है, जितना कि दुरुश्ती और सख़्ती पर नहीं देता और जितना कि नर्मी के सिवा किसी और चीज़ पर नहीं देता।'

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي حَيْوَةُ، حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَزْمٍ، عَنْ عَمْرَةَ، - يَعْنِي بِنْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللَّهَ رَفِيقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ وَيُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَا لاَ يُعْطِي عَلَى الْعُنْفِ وَمَا لاَ يُعْطِي عَلَى مَا سِوَاهُ " .

फ़ायदा : कुछ लोग अपने मामले और बर्ताव में सख़्तगीर(सख़्ती करने वाले) होते हैं और ये समझते हैं कि आदमी सख़्तगीरी से वो कुछ हासिल कर लेता है, जो नर्मी से हासिल नहीं हो सकता, गोया उनके नज़दीक दुरुश्ती और सख़्ती और दुश्वार पसन्दी कार बरारी का ज़रिया और हुसूले मक़ासिद की कुन्जी(चाबी) है। आपने इसकी इस्लाह फ़रमाते हुए, पहले तो नर्म ख़ूई(नर्मी) की अ़ज़्मत और सिफ़त बयान फ़रमाई है कि वो अल्लाह की ज़ाती सिफ़त है, उसके बाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को ये महबूब है कि उसके बन्दे भी आपसी मामले और बर्ताव में नर्मी अपनायें। फिर बताया कि मक़ासिद को पूरा होना या न होना और किसी चीज़ का मिलना या न मिलना तो अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है, जो कुछ होता है उसके फ़ैसले और मशिय्यत(चाहत) से होता है और उसका ज़ाब्ता ये है कि वो नर्मी पर इस क़द्र देता है, जिस क़द्र दुरुश्ती और सख़्ती पर नहीं देता बल्कि नर्मी के अ़लावा किसी चीज़ पर भी उतना नहीं देता, जिस क़द्र नर्मी पर देता है।

(6602) नबी(ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत आइशा(रज़ि.) नबी(ﷺ) से बयान करती हैं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, 'नर्मी और मुलायमत जिस चीज़ में भी होती है, उसको मुज़य्यन(ख़ूबसूरत) बना देती है और जिस चीज़ से छीन ली जाती है, उसको ऐबदार, बद सूरत बना देती है।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمِقْدَامِ، - وَهُوَ ابْنُ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ - عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الرِّفْقَ لاَ يَكُونُ فِي شَىْءٍ إِلاَّ زَانَهُ وَلاَ يُنْزَعُ مِنْ شَىْءٍ إِلاَّ شَانَهُ " .

फ़ायदा : इससे मालूम हुआ किसी चीज़ में रिफ़्क़ और नर्मी का होना, उसके ख़ूबसूरत और हसीन, अच्छा और उ़म्दा होने का सबब बनता है और नर्मी को नज़र अन्दाज़ कर देना, उसके ऐब और नुक़्स का बाइ़स बनता है।

(6603) इमाम साहब यही हदीस़ अपने दो और उस्तादों से इस इज़ाफ़े के साथ बयान करते हैं कि हज़रत आइशा(रज़ि.) एक ऊँट पर सवार हुईं, वो कुछ अनाड़ी और सरकश था तो वो उसको चक्कर देने लगीं। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन्हें फ़रमाया, 'नर्मी को इख़्तियार करो।' आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ الْمِقْدَامَ بْنَ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ فِي الْحَدِيثِ رَكِبَتْ عَائِشَةُ بَعِيرًا فَكَانَتْ فِيهِ صُعُوبَةٌ فَجَعَلَتْ تُرَدِّدُهُ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

बाब 25 : चौपायों(हैवानात) वग़ैरह पर लानत भेजना मना है

باب النَّهْىِ عَنْ لَعْنِ الدَّوَابِّ، وَغَيْرِهَا

(6604) हज़रत इमरान बिन हुसैन(रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने किसी सफ़र पर जा रहे थे और एक अन्सारी औरत एक ऊँटनी पर सवार थी, उससे उकता गई और उस औरत ने उस पर लानत भेजी। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने भी उसको सुन लिया, चुनाँचे फ़रमाया, 'उस पर जो साज़ो-सामान है, वो ले लो और उसको छोड़ दो, क्योंकि उस पर लानत की गई है।' हज़रत इमरान बिन हुसैन(रज़ि.) कहते हैं, गोया कि मैं उसे अभी लोगों में चलती-फिरती देख रहा हूँ, कोई शख़्स उससे तअर्रुज़ नहीं कर रहा।

(अबू दाऊद : 2561)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي الْمُهَلَّبِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ، حُصَيْنٍ قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ وَامْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ عَلَى نَاقَةٍ فَضَجِرَتْ فَلَعَنَتْهَا فَسَمِعَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " خُذُوا مَا عَلَيْهَا وَدَعُوهَا فَإِنَّهَا مَلْعُونَةٌ " . قَالَ عِمْرَانُ فَكَأَنِّي أَرَاهَا الآنَ تَمْشِي فِي النَّاسِ مَا يَعْرِضُ لَهَا أَحَدٌ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : ज़जिरत : औरत उसकी सुस्त रफ़्तारी से उकता गई।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) ने चौपायों पर लानत भेजने से मना फ़रमाया था, लेकिन उसके बावजूद उस औरत ने अपनी ऊँटनी पर लानत भेजी तो आपने बतौरे सज़ा उस औरत को हुक्म दिया कि जब ये ऊँटनी मल्ऊना है तो फिर इसको हमारे साथ क्यों ला रही हो, इसको छोड़ दो। क्योंकि जो चीज़ अल्लाह की रहमत से महरूम हो, वो ख़ैर का बाइस़ नहीं बन सकती।

(6605) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से ऊपर वाली हदीस़ बयान करते हैं, हम्माद की रिवायत में ये है, हज़रत इमरान(रज़ि.) कहते हैं, गोया कि मैं उस ऊँटनी को देख रहा हूँ, वो ख़ाकी रंग की

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا الثَّقَفِيُّ، كِلاَهُمَا عَنْ أَيُّوبَ، بِإِسْنَادِ إِسْمَاعِيلَ . نَحْوَ حَدِيثِهِ إِلاَّ أَنَّ فِي حَدِيثِ

حَمَّادٍ قَالَ عِمْرَانُ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهَا نَاقَةً وَرْقَاءَ وَفِي حَدِيثِ الثَّقَفِيِّ فَقَالَ " خُذُوا مَا عَلَيْهَا وَأَعْرُوهَا فَإِنَّهَا مَلْعُونَةٌ " .

ऊँटनी है और सक़फ़ी की हदीस में है, आपने फ़रमाया, 'उस पर जो सामान है, वो ले लो और उसकी पीठ नंगी कर दो, यानी सामान और पालान वग़ैरह सब उतारो, क्योंकि उस पर लानत भेजी गई है।'

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ، قَالَ بَيْنَمَا جَارِيَةٌ عَلَى نَاقَةٍ عَلَيْهَا بَعْضُ مَتَاعِ الْقَوْمِ إِذْ بَصُرَتْ بِالنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَتَضَايَقَ بِهِمُ الْجَبَلُ فَقَالَتْ حَلْ اللَّهُمَّ الْعَنْهَا . قَالَ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لاَ تُصَاحِبْنَا نَاقَةٌ عَلَيْهَا لَعْنَةٌ " .

(6606) हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी(रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि एक बान्दी एक ऊँटनी पर सवार थी, उस पर लोगों का कुछ सामान था कि उसने नबी(ﷺ) को देख लिया और पहाड़ी रास्ता तंग हो गया तो उसने(ऊँटनी को तेज़ करने के लिये) कहा, चल। ऐ अल्लाह! इस पर लानत भेज(क्योंकि वो रसूलुल्लाह(ﷺ) के लिये रास्ता नहीं बना रही थी), चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'हमारे साथ, वो ऊँटनी न रहे, जिस पर लानत की गई है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، ح وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - جَمِيعًا عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ فِي حَدِيثِ الْمُعْتَمِرِ " لاَ ايْمُ اللَّهِ لاَ تُصَاحِبْنَا رَاحِلَةٌ عَلَيْهَا لَعْنَةٌ مِنَ اللَّهِ " . أَوْ كَمَا قَالَ .

(6607) इमाम साहब अपने दो उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, मुअ्तमिर की हदीस में ये इज़ाफ़ा है, 'नहीं, अल्लाह की क़सम! हमारे साथ वो ऊँटनी न रहे, जिस पर अल्लाह की तरफ़ से लानत है।' या जो आपने फ़रमाया।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ بِلاَلٍ - عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يَنْبَغِي لِصِدِّيقٍ أَنْ يَكُونَ لَعَّانًا

(6608) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सिद्दीक़ के शायाने शान नहीं है कि वो लानत भेजने वाला हो।'

फ़ायदा : सिद्दीक़, यानी मोमिन के लिये दूसरों पर लानत भेजना और उनको अल्लाह की रहमत से दूर होने की बद्दुआ देना मुनासिब नहीं है, क्योंकि मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं और दूसरे भाई के लिये वो चीज़ पसंद करते हैं, जो अपने लिये पसंद करते हैं और एक-दूसरे के हमदर्द और ग़मख़्वार हैं।

حَدَّثَنِيهِ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ، الرَّحْمَنِ بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6609) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، أَنَّ عَبْدَ الْمَلِكِ، بْنَ مَرْوَانَ بَعَثَ إِلَى أُمِّ الدَّرْدَاءِ بِأَنْجَادٍ مِنْ عِنْدِهِ فَلَمَّا أَنْ كَانَ ذَاتَ لَيْلَةٍ قَامَ عَبْدُ الْمَلِكِ مِنَ اللَّيْلِ فَدَعَا خَادِمَهُ فَكَأَنَّهُ أَبْطَأَ عَلَيْهِ فَلَعَنَهُ فَلَمَّا أَصْبَحَ قَالَتْ لَهُ أُمُّ الدَّرْدَاءِ سَمِعْتُكَ اللَّيْلَةَ لَعَنْتَ خَادِمَكَ حِينَ دَعَوْتَهُ . فَقَالَتْ سَمِعْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَكُونُ اللَّعَّانُونَ شُفَعَاءَ وَلاَ شُهَدَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6610) ज़ैद बिन अस्लम(रह.) से रिवायत है कि अब्दुल मलिक बिन मरवान ने उम्मे दरदा(रह.) को अपनी तरफ़ से कुछ घर की आराइश का सामान भेजा(वो उसके यहाँ मेहमान थीं) फिर किसी रात को अब्दुल मलिक रात के वक़्त उठा और अपने ख़ादिम को आवाज़ दी तो गोया उसने आने में ताख़ीर की। चुनाँचे उसने उस पर लानत भेजी तो जब सुबह हुई, हज़रत उम्मे दरदा(रह.) ने उसे कहा, मैंने रात तुझे सुना तूने जब अपने ख़ादिम को बुलाया, उस पर लानत भेजी। मैंने हज़रत अबू दरदा(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बताया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'लानत भेजना जिनकी आदत है, वो क़यामत के दिन सिफ़ारिशी और गवाह नहीं बन सकेंगे।'

(अबू दाऊद : 4907)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अन्जाद : नजदुन की जमा है, घर की आराइश व ज़ेबाइश का सामान।

फ़ायदा : क़यामत के दिन, मोमिन अपने मोमिन भाइयों के बारे में सिफ़ारिश करेंगे, लेकिन लानत भेजना जिनका वतीरा(आदत) है वो सिफ़ारिश करने से महरूम हो जायेंगे, इसी तरह वो क़यामत के दिन दूसरी उम्मतों के सामने उनके रसूलों की पैग़ाम रसानी की शहादत नहीं देंगे या अल्लाह की राह में

शहीद होने की नेमत से महरूम रहेंगे, लेकिन जिन लोगों पर अल्लाह ने लानत भेजी है उन पर लानत भेजना, इसमें दाख़िल नहीं है।

(6611) इमाम साहब यही रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ وَعَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ قَالُوا حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، كِلاَهُمَا عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِ مَعْنَى حَدِيثِ حَفْصِ بْنِ مَيْسَرَةَ .

(6612) हज़रत अबू दरदा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'बहुत ज़्यादा लानत करने वाले क़यामत के दिन न गवाह होंगे न सिफ़ारिशी।'

लअ्आनीन से मक़सद ये है कि दूसरों पर लानत भेजना उनका शेवा और आदत है अगर कभी-कभार या ज़रूरत के मौक़े महल पर ये अमल सरज़द हो जाये तो वो इसमें दाख़िल नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، وَأَبِي، حَازِمٍ عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ اللَّعَّانِينَ لاَ يَكُونُونَ شُهَدَاءَ وَلاَ شُفَعَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6613) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने बयान किया, रसूलुल्लाह(ﷺ) से अ़र्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल! मुश्रिकों के ख़िलाफ़ बद्दुआ फ़रमायें? आपने फ़रमाया, 'मुझे लानत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया, मुझे तो बस रहमत बनाकर भेजा गया है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، - يَعْنِيَانِ الْفَزَارِيَّ - عَنْ يَزِيدَ، - وَهُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ عَلَى الْمُشْرِكِينَ قَالَ " إِنِّي لَمْ أُبْعَثْ لَعَّانًا وَإِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً " .

फ़ायदा : मुश्रिकों पर बिला सबब और बिला वजह लानत भेजना दुरुस्त नहीं है, हाँ अगर वो मुसलमानों से जंग करें, उन्हें तंग करें और उनके ख़िलाफ़ साज़िशें करें तो फिर मख़्सूस हालात में उन पर लानत भेजना दुरुस्त है, जैसाकि क़ुनूते नाज़िला में उनके ख़िलाफ़ दुआ की जाती है।

बाब 26 : रसूलुल्लाह(ﷺ) का किसी पर लानत भेजना या उसको बुरा-भला कहना या उसके ख़िलाफ़ दुआ करना जबकि वो उस चीज़ का मुस्तहिक़ नहीं है, उसके लिये तज़्किये व सफ़ाई, अज्र व सवाब और रहमत का बाइस है

باب مَنْ لَعَنَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَوْ سَبَّهُ أَوْ دَعَا عَلَيْهِ وَلَيْسَ هُوَ اَهْلًا لِذٰلِکَ كَانَ لَہٗ زَكٰوةً وَّاَجْرًا وَّرَحْمَةً

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاَنِ فَكَلَّمَاهُ بِشَىْءٍ لاَ أَدْرِي مَا هُوَ فَأَغْضَبَاهُ فَلَعَنَهُمَا وَسَبَّهُمَا فَلَمَّا خَرَجَا قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَصَابَ مِنَ الْخَيْرِ شَيْئًا مَا أَصَابَهُ هَذَانِ قَالَ " وَمَا ذَاكِ " . قَالَتْ قُلْتُ لَعَنْتَهُمَا وَسَبَبْتَهُمَا قَالَ " أَوَمَا عَلِمْتِ مَا شَارَطْتُ عَلَيْهِ رَبِّي قُلْتُ اللَّهُمَّ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَىُّ الْمُسْلِمِينَ لَعَنْتُهُ أَوْ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْهُ لَهُ زَكَاةً وَأَجْرًا " .

(6614) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में दो आदमी हाज़िर हुए और आपसे किसी चीज़ के बारे में गुफ़्तगू की, मुझे मालूम नहीं वो क्या मसला था तो आपको गुस्सा दिला दिया। चुनाँचे आपने उन पर लानत भेजी और सख़्त कलामी की, तो जब वो दोनों चले गये। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! और किसी को तो ख़ैर मयस्सर आ सकती है, ये दोनों तो उसको हासिल नहीं कर सकते। आपने पूछा, 'ये क्यों?' मैंने कहा, आपने उन पर लानत भेजी है और उनको बुरा-भला कहा है। आपने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं है, मैंने अपने रब से क्या तय किया है? क्या शर्त की है? मैंने कहा है, ऐ अल्लाह! मैं सिर्फ़ बशर हूँ(इलाह नहीं हूँ) तो जिस मुसलमान पर मैं लानत भेजूँ या उसको बुरा-भला कहूँ तू उसे उसके लिये पाकीज़गी और अज्र का बाइस बना दे।'

फ़ायदा : हज़रत अनस(रज़ि.) की हदीस में आगे ये क़ैद आ रही है कि लै-स लहा अह्ल वो उसका मुस्तहिक़ नहीं है तो फिर मेरी लानत और तल्ख़ कलामी उसके लिये पाकीज़गी और रहमत व तक़र्रुब का बाइस बने। इस पर ये सवाल पैदा होता है कि आपने ग़ैर मुस्तहिक़ के ख़िलाफ़ बद्दुआ क्यों फ़रमाई।

तो इसका जवाब ये है, आपने ये बात मोमिनों के बारे में फ़रमाई है, जिन पर इन्तिहाई शफ़ीक़ व मेहरबान हैं, जैसाकि वो इरशादे बारी तआला है, 'तुम्हारी भलाई का बहुत ख़्वाहिशमन्द, मोमिनों के साथ बहुत शफ़क़त करने वाला और बहुत मेहरबान।'(सूरह तौबा 9 : 28)

इसलिये कई बार कोई मोमिन ग़ैर शऊरी तौर पर या नादानिस्ता तौर पर या नफ़्स व शैतान के बहकावे में आकर कोई ऐसी हरकत कर बैठता है, जो उसके लिये मुनासिब नहीं होती और बाद में उसको भी एहसास हो जाता है और आप भी बशरी तक़ाज़े के तहत नाराज़ होकर उस पर लानत भेजते या उसको बुरा-भला कह सकते थे, जो आपकी शफ़क़त व रहमत और मोमिनों के साथ ख़ैरख़्वाही के जज़्बे के मुताबिक़ न होता, इसलिये आपने पेश बन्दी के तौर पर ये शर्त लगाई। क्योंकि आपकी आदते मुबारका यही थी, आप दरगुज़र और चश्म पोशी से काम लेते थे, यहाँ तक कि मुनाफ़िक़ों की बातें भी बर्दाश्त कर लेते थे और आप ये कैसे गवारा कर सकते थे, आपके मुख़्लिस साथियों को आपकी किसी बद्दुआ से नुक़सान पहुँच जाये।

(6615) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, ईसा की हदीस़ में ये है, उन दोनों ने आपसे अकेले में बात की, चुनाँचे आपने उनको बुरा-भला कहा और लानत भेजी और उनको निकलवा दिया।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، جَمِيعًا عَنْ عِيسَى بْنِ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ جَرِيرٍ وَقَالَ فِي حَدِيثِ عِيسَى فَخَلَوَا بِهِ فَسَبَّهُمَا وَلَعَنَهُمَا وَأَخْرَجَهُمَا .

(6616) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! मैं एक बशर ही हूँ(गुस्से में आ सकता हूँ) तो जिस मुसलमान आदमी को मैं बुरा-भला कहूँ या उस पर लानत भेजूँ या उसको सज़ा दूँ तो उस चीज़ को उसके लिये पाकीज़गी और रहमत बना दे।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَيُّمَا رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ سَبَبْتُهُ أَوْ لَعَنْتُهُ أَوْ جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْهَا لَهُ زَكَاةً وَرَحْمَةً " .

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ إِلاَّ أَنَّ فِيهِ "زَكَاةً وَأَجْرًا".

(6617) हज़रत जाबिर(रज़ि.) नबी(ﷺ) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, सिर्फ़ ये फ़र्क़ है कि इसमें रहमत की जगह अज्र का लफ़्ज़ है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِإِسْنَادِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ . مِثْلَ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِ عِيسَى جَعَلَ " وَأَجْرًا " . فِي حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ وَجَعَلَ " وَرَحْمَةً " . فِي حَدِيثِ جَابِرٍ .

(6618) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं। ईसा(रह.) ने अज्र का लफ़्ज़ अबू हुरैरह की रिवायत में कहा है और रहमत का लफ़्ज़ हज़रत जाबिर की रिवायत में।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَتَّخِذُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيهِ فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَىُّ الْمُؤْمِنِينَ آذَيْتُهُ شَتَمْتُهُ لَعَنْتُهُ جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْهَا لَهُ صَلاَةً وَزَكَاةً وَقُرْبَةً تُقَرِّبُهُ بِهَا إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6619) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ये अहद लेता हूँ तू मेरे साथ इसके ख़िलाफ़ नहीं करेगा, मैं एक बशर ही तो हूँ, इसलिये जिस मोमिन को मैंने अज़ियत दी है, उसको सख़्त-सुस्त कहा है, उस पर लानत भेजी है, उसको सज़ा दी है, तू उसको उसके लिये रहमत, पाकीज़गी और ऐसी क़ुरबत बना दे, जिसके ज़रिये तू उसे क़यामत के दिन अपना तक़र्रुब बख़्शे।'

حَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ " أَوْ جَلَدُّهُ " . قَالَ أَبُو الزِّنَادِ وَهِيَ لُغَةُ أَبِي هُرَيْرَةَ وَإِنَّمَا هِيَ " جَلَدْتُهُ " .

(6620) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें जल्दतुहू की जगह जलदुहू है, अबू ज़िनाद(रह.) कहते हैं, जलदुहू अबू हुरैरह(रज़ि.) की लुग़त है, असल में जलद्तुहू है।

नोट : दाल का ता में मुद्ग़म कर देना जाइज़ है, इस इद्ग़ाम से जलदुहू बन गया।

(6621) इमाम साहब एक और उस्ताद की सनद से ऊपर वाली रिवायत के हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِهِ .

(6622) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'ऐ अल्लाह! मुहम्मद बशर ही है, जिस तरह बशर को ग़ुस्सा आता है, उसे भी ग़ुस्सा आता है और मैं तुझसे अ़हद लेता हूँ, जिसकी तू हर्गिज़ मेरे साथ ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं फ़रमायेगा, जिस मोमिन को मैंने अज़ियत दी है या उसे बुरा-भला कहा है या मैंने उसे कोड़े मारे हैं तू उसको उसके लिये कफ़्फ़ारा और ऐसी क़ुरबत बना दे, जिसके ज़रिये तू उसे क़यामत के दिन अपना तक़र्रुब बख़्श दे।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ سَالِمٍ، مَوْلَى النَّصْرِيِّينَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنَّمَا مُحَمَّدٌ بَشَرٌ يَغْضَبُ كَمَا يَغْضَبُ الْبَشَرُ وَإِنِّي قَدِ اتَّخَذْتُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيهِ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ آذَيْتُهُ أَوْ سَبَبْتُهُ أَوْ جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْهَا لَهُ كَفَّارَةً وَقُرْبَةً تُقَرِّبُهُ بِهَا إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6623) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'ऐ अल्लाह! जिस मुसलमान बंदे को मैंने बुरा-भला कहा है, तू उसे उसके लिये क़यामत के दिन अपनी नज़दीकी का सबब बना दे।'

(सहीह बुख़ारी : 6361)

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " اللَّهُمَّ فَأَيُّمَا عَبْدٍ مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6624) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, वो बयान करते हैं, मैंने

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ

रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'ऐ अल्लाह! मैंने तुझसे अ़हद लिया, जिसकी तू मेरे साथ ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं फ़रमायेगा, जिस मोमिन को मैंने बुरा कहा है या उसे कोड़े लगाये हैं, उसको उसके लिये क़यामत के दिन कफ़्फ़ारा बना देना।'

أَخِي ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَمِّهِ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي اتَّخَذْتُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيهِ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ أَوْ جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ كَفَّارَةً لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6625) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'मैं बशर ही तो हूँ और मैंने अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल के साथ ये तय किया है, जिस मुसलमान बन्दे को मैं बुरा-भला कहूँ या उससे सख़्त कलामी करूँ, ये चीज़ उसके लिये पाकीज़गी और अज्र बने।'

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنِّي اشْتَرَطْتُ عَلَى رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ أَىُّ عَبْدٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ سَبَبْتُهُ أَوْ شَتَمْتُهُ أَنْ يَكُونَ ذَلِكَ لَهُ زَكَاةً وَأَجْرًا" .

(6626) यही रिवायत इमाम साहब दो और सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنِيهِ ابْنُ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ ح وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(6627) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, उम्मे सुलैम(रज़ि.) जो हज़रत अनस(रज़ि.) की वालिदा हैं, के पास एक यतीम बच्ची थी। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यतीम बच्ची को देखा तो फ़रमाया, 'तू वही है(इतनी जल्द जवान हो गई)? तू बड़ी हो गई है, तेरी उम्र बड़ी न हो।' चुनाँचे यतीम बच्ची रोती हुई उम्मे सुलैम(रज़ि.) के पास आई तो उम्मे

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا عُمَرُ، بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ كَانَتْ عِنْدَ أُمِّ سُلَيْمٍ يَتِيمَةٌ وَهِيَ أُمُّ أَنَسٍ فَرَأَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْيَتِيمَةَ فَقَالَ " آنْتِ

هِيَهْ لَقَدْ كَبِرْتِ لاَ كَبِرَ سِنُّكِ " . فَرَجَعَتِ الْيَتِيمَةُ إِلَى أُمِّ سُلَيْمٍ تَبْكِي فَقَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ مَا لَكِ يَا بُنَيَّةُ قَالَتِ الْجَارِيَةُ دَعَا عَلَىَّ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ لاَ يَكْبَرَ سِنِّي فَالآنَ لاَ يَكْبَرُ سِنِّي أَبَدًا - أَوْ قَالَتْ قَرْنِي - فَخَرَجَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ مُسْتَعْجِلَةً تَلُوثُ خِمَارَهَا حَتَّى لَقِيَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا لَكِ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ " . فَقَالَتْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَدَعَوْتَ عَلَى يَتِيمَتِي قَالَ " وَمَا ذَاكِ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ " . قَالَتْ زَعَمَتْ أَنَّكَ دَعَوْتَ أَنْ لاَ يَكْبَرَ سِنُّهَا وَلاَ يَكْبَرَ قَرْنُهَا - قَالَ - فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ قَالَ " يَا أُمَّ سُلَيْمٍ أَمَا تَعْلَمِينَ أَنَّ شَرْطِي عَلَى رَبِّي أَنِّي اشْتَرَطْتُ عَلَى رَبِّي فَقُلْتُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ أَرْضَى كَمَا يَرْضَى الْبَشَرُ وَأَغْضَبُ كَمَا يَغْضَبُ الْبَشَرُ فَأَيُّمَا أَحَدٍ دَعَوْتُ عَلَيْهِ مِنْ أُمَّتِي بِدَعْوَةٍ لَيْسَ لَهَا بِأَهْلٍ أَنْ تَجْعَلَهَا لَهُ طَهُورًا وَزَكَاةً وَقُرْبَةً يُقَرِّبُهُ بِهَا مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " . وَقَالَ أَبُو مَعْنٍ يُتَيِّمَةٌ . بِالتَّصْغِيرِ فِي الْمَوَاضِعِ الثَّلاَثَةِ مِنَ الْحَدِيثِ .

सुलैम(रज़ि.) ने पूछा, तुझे क्या हुआ? ऐ बेटी! बच्ची ने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरे ख़िलाफ़ दुआ की है कि मेरी उम्र बड़ी न हो, इसलिये अब कभी मेरी उम्र ज़्यादा नहीं होगी या कहा, मेरा दौर ज़्यादा न होगा। चुनाँचे हज़रत उम्मे सुलैम(रज़ि.) जल्दी-जल्दी दुपट्टा लपेटती हुई निकलीं, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिलीं तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उससे पूछा, ऐ उम्मे सुलैम! तुम्हें क्या हुआ?' उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आपने मेरे यहाँ यतीम बच्ची के ख़िलाफ़ दुआ फ़रमाई है? आपने पूछा, 'क्या वाक़िया है? ऐ उम्मे सुलैम!' उसने अ़र्ज़ किया, बच्ची का गुमान है, आपने दुआ फ़रमाई है कि उसकी उम्र न बढ़े और उसका दौर या अ़हद ज़्यादा न हो? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) हँस पड़े, फिर फ़रमाया, 'ऐ उम्मे सुलैम! क्या तुझे मालूम नहीं है, मेरी अपने रब के साथ शर्त है, मैंने अपने रब से तय किया है, मैंने कहा, मैं बशर(इंसान) ही तो हूँ, जिस तरह बशर राज़ी होता है, मैं राज़ी होता हूँ और जिस तरह बशर गुस्से में आ जाता है, मैं गुस्से में आ जाता हूँ, तो जिसके ख़िलाफ़ भी मैं अपनी उम्मत में से ऐसी दुआ करूँ, जिसका वो मुस्तहिक़(हक़दार) नहीं है, उसे वो उसके लिये तहारत, पाकीज़गी और ऐसी क़ुरबत बना दे, जिसके सबब तू उसे क़यामत के दिन अपना तक़र्रुब बख़्शे।' अबू मअ़न की रिवायत में यतीमुह्न का लफ़्ज़ तीनों जगह मुसग़्ग़र है, यानी युतय्यिमह्न है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ الْقَصَّابِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كُنْتُ أَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَتَوَارَيْتُ خَلْفَ بَابٍ - قَالَ - فَجَاءَ فَحَطَأَنِي حَطْأَةً وَقَالَ " اذْهَبْ وَادْعُ لِي مُعَاوِيَةَ " . قَالَ فَجِئْتُ فَقُلْتُ هُوَ يَأْكُلُ -قَالَ - ثُمَّ قَالَ لِيَ " اذْهَبْ وَادْعُ لِي مُعَاوِيَةَ " . قَالَ فَجِئْتُ فَقُلْتُ هُوَ يَأْكُلُ فَقَالَ " لاَ أَشْبَعَ اللَّهُ بَطْنَهُ " . قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى قُلْتُ لأُمَيَّةَ مَا حَطَأَنِي قَالَ قَفَدَنِي قَفْدَةً .

(6628) हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं बच्चों के साथ खेल रहा था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये और मैं दरवाज़े के पीछे छिप गया। आपने आकर मेरे कन्धों के दरम्यान प्यार से थपकी दी और फ़रमाया, 'जाओ! और मेरे लिये मुआविया को बुला लो।' तो मैंने आकर कहा, वो खाना खा रहा है। आपने फ़रमाया, 'जाओ और मेरी ख़ातिर मुआविया को बुला लाओ।' तो मैंने वापस आकर कहा, वो खाना खा रहा है। चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'अल्लाह उसका पेट न भरे।' इब्ने मुसन्ना कहते हैं, मैंने अपने उस्ताद उमय्या से पूछा, हतअनी का क्या मानी है? उसने कहा, क़फ़दनी क़फ़्दतन गुद्दी पर धूल मारी।

फ़ायदा : हज़रत मुआविया(रज़ि.) को हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) बुलाने गये तो वो खाना खा रहे थे, वो देखकर वापस आ गये और आपको बता दिया, इससे ये मालूम नहीं होता कि हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) ने हज़रत मुआविया(रज़ि.) को भी आपके बुलाने की इत्तिलाअ दी थी या फ़ौरन आने के लिये कहा था। इसलिये आपने अरबों की आदत के मुताबिक़, बेतकल्लुफ़ी का इज़हार करते हुए फ़रमाया, अल्लाह उसका पेट न भरे। जिस तरह आज भी साथी और दोस्त बेतकल्लुफ़ी से खाने वाले को कह देते हैं, तेरा पेट है या तन्नूर है, जो भरने का नाम ही नहीं लेता और आपने उम्मे सुलैम की यतीम बच्ची को कहा था, उसकी उम्र न बढ़े या हज़रत हफ़्सा को कहा था, अक़री हल्क़ा कई बार कहा, तरिबत यमीनुक ऐसे मौक़ों पर सिर्फ़ प्यार व मुहब्बत और बेतकल्लुफ़ी का इज़हार होता है, बद्दुआ मक़सूद नहीं होती, इसलिये इमाम मुस्लिम इसको उन हदीसों में लाये हैं, जिनमें बताया गया है कि अगर मैं अपने किसी उम्मत के ख़िलाफ़ ऐसी दुआ करूँ, जिसका वो मुस्तहिक़ न हो तो उसको उसके लिये अज्र व सवाब, रहमत और तक़र्रुब का बाइस बना, इस तरह ये अल्फ़ाज़ उनके हक़ में दुआ बन गये।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ كُنْتُ أَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَاخْتَبَأْتُ مِنْهُ . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

(6629) हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) बयान करते हैं, मैं बच्चों के साथ खेल रहा था तो रसूलुल्लाह(ﷺ) तशरीफ़ लाये और मैं आपसे छिप गया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

باب ذَمِّ ذِي الْوَجْهَيْنِ وَتَحْرِيمِ فِعْلِهِ

बाब 27 : दो रुख़े आदमी की मज़म्मत और उसके करतूत की हुरमत

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ مِنْ شَرِّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ " .

(6630) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'दो रुख़ा बदतरीन लोगों में से है, जो कुछ लोगों के पास जाता है तो उसका रुख़ और होता है और दूसरों के पास जाता है तो और।'

फ़ायदा : कुछ लोगों की आदत होती है कि जब दो आदमियों या दो जमाअ़तों में इख़्तिलाफ़ और तनाज़अ(झगड़ा) हो तो वो हर फ़रीक़ के पास जाकर दूसरे फ़रीक़ के ख़िलाफ़ बढ़-चढ़कर बातें करते हैं या किसी के साथ जब मिलते हैं या उसकी मज्लिस में होते हैं तो उसके साथ अपने हुस्ने ताल्लुक़ का इज़हार करते हैं और ख़ुशामद व चापलूसी की तमाम हुदूद(सीमायें) उ़बूर(पार) कर जाते हैं, लेकिन जब वो चला जाता है तो उसके पीछे, उसकी तहक़ीर व तन्क़ीस और बुराई व बदख़्वाही की बातें करते हैं, इसको अ़रबी में 'ज़ुल्वज्हैन' और उर्दू में 'दो रुख़ा' कहते हैं और ज़ाहिर है ये तरीक़ा एक तरह की मुनाफ़िक़त और एक क़िस्म की धोखेबाज़ी है और ये एक इन्तिहाई ख़तरनाक और संगीन जुर्म है, जिसको आज-कल एक ख़ूबी व कमाल समझा जाता है और ये इंसान की ज़हानत व फ़तानत और दानिशमन्दी की अ़लामत बन चुका है और डिप्लोमेसी कहलाता है लेकिन ऐसा इंसान आख़िरकार रुस्वा और ज़लील होता है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا

(6631) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये

مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ شَرَّ النَّاسِ ذُو الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ " .

फ़रमाते हुए सुना, 'दो रुख़ा शख़्स बदतरीन इंसान है, उन लोगों के साथ एक चेहरे से मिलता है और इन लोगों के साथ दूसरे चेहरे के साथ मिलता है।'

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "تَجِدُونَ مِنْ شَرِّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ".

(6632) इमाम साहब हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से दो सनदों के साथ बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम दो रुख़े को बदतरीन लोगों में से पाओगे, जो उन लोगों के पास एक रुख़ से आता है और इनके पास दूसरे रुख़ से जाता है।'

باب تَحْرِيمِ الْكَذِبِ وَبَيَانِ مَا يُبَاحُ مِنْهُ

बाब 28 : झूठ की हुरमत और उसकी मुबाह(जाइज़) सूरत

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ أُمَّهُ أُمَّ كُلْثُومٍ بِنْتَ عُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ، وَكَانَتْ، مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلِ اللاَّتِي بَايَعْنَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ

(6633) हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्ते उक़बा बिन अबी मुऐत(रज़ि.) जो पहले हिज्रत करने वालियों और नबी(ﷺ) से बैअ़त करने वालियों में से हैं, बयान करती हैं कि उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जो लोगों के दरम्यान सुलह करवाता है, वो झूठा नहीं है, अच्छी बात कहता है और अच्छी बात दूसरों की तरफ़ मन्सूब करता है।' इब्ने

صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَقُولُ " لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ وَيَقُولُ خَيْرًا وَيَنْمِي خَيْرًا " . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَلَمْ أَسْمَعْ يُرَخَّصُ فِي شَىْءٍ مِمَّا يَقُولُ النَّاسُ كَذِبٌ إِلاَّ فِي ثَلاَثٍ الْحَرْبُ وَالإِصْلاَحُ بَيْنَ النَّاسِ وَحَدِيثُ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ وَحَدِيثُ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا .

शिहाब(रह.) बयान करते हैं, लोग जिसको झूठ कहते हैं, मैंने उसकी सिर्फ़ तीन मौक़ों पर रुख़सत सुनी है, जंग व जिहाद, लोगों के दरम्यान सुलह कराना और मर्द का अपनी बीवी से बात करना और बीवी की अपने ख़ाविन्द से बातचीत।

(सहीह बुख़ारी : 2692, अबू दाऊद : 4920, 4921, तिर्मिज़ी : 1938)

मुफ़रदातुल हदीस़ : यन्मी ख़ैरन : एक फ़रीक़ की दूसरे फ़रीक तक अच्छी और बेहतर बात पहुँचाता है, ताकि उनके दरम्यान सुलह(समझोता) करवा सके औ यक़ूलु ख़ैरन और अच्छा अस़र डालने वाली बात बयान करता है और बुरी बात से ख़ामोशी इख़्तियार करता है, वो नक़ल नहीं करता।

फ़ायदा : कभी ऐसा होता है कि दो आदमियों या दो गिरोहों में सख़्त नज़ाअ(झगड़ा) और रंजिश है, हर फ़रीक़ दूसरे को अपना दुश्मन समझता है और एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बातें करता है, उनमें कुछ बातें ऐसी भी होती हैं, जो आपस में इख़्तिलाफ़ और नज़ाअ को ख़त्म करने या कम से कम, कम करने का बाइस़ बन सकती हैं। ऐसी सूरत में अगर कोई नेक निय्यत और मुख़्लिस इंसान दोनों फ़रीक़ों में सुलह कराने की कोशिश करता है और उसके लिये एक फ़रीक़ की तरफ़ से दूसरे फ़रीक़ को ख़ैर अन्देशी की बातें पहुँचाता है, जिनसे अदावत व इख़्तिलाफ़ की आग ठण्डी हो सके और ख़ुशगुमानी और मुसालिहत की फ़िज़ा पैदा हो सके और एक-दूसरे की मुख़ालिफ़त व अदावत में कही गई बातें छिपा ले तो ये अच्छी और बेहतर बात है, इसी तरह जंगो-जिदाल में तोरिया व तअ़रीज़ से काम लिया जा सकता है और मियाँ-बीवी एक-दूसरे को ख़ुश करने के लिये एक दूसरे से मुहब्बत व प्यार के इज़हार में मुबाल्ग़े से काम ले सकते हैं और एक दूसरे के लिये अच्छे-अच्छे जज़्बात का इज़हार कर सकते हैं, तो ये झूठ नहीं है। तफ़्सील किताबुल जिहाद में बाब जवाज़ुल ख़दाइ फ़िल्हर्ब 'लड़ाई में धोखे का जवाज़' में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ

(6634) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं और ऊपर की रिवायत में जिस क़ौल को इब्ने शिहाब की तरफ़ मन्सूब किया गया है, उसको हज़रत

صَالِحٍ وَقَالَتْ وَلَمْ أَسْمَعْهُ يُرَخِّصُ فِي شَىْءٍ مِمَّا يَقُولُ النَّاسُ إِلاَّ فِي ثَلاَثٍ . بِمِثْلِ مَا جَعَلَهُ يُونُسُ مِنْ قَوْلِ ابْنِ شِهَابٍ .

उम्मे कुल्सूम(रज़ि.) का क़ौल क़रार दिया है, वो उसको आपका क़ौल क़रार देती हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ "وَنَمَى خَيْرًا" . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(6635) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से नमा ख़ैरन तक बयान करते हैं, उसके बाद वाला हिस्सा बयान नहीं करते।

باب تَحْرِيمِ النَّمِيمَةِ

बाब 29 : चुग़ली की हुरमत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ إِنَّ مُحَمَّدًا صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ مَا الْعَضْهُ هِيَ النَّمِيمَةُ الْقَالَةُ بَيْنَ النَّاسِ " . وَإِنَّ مُحَمَّدًا صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الرَّجُلَ يَصْدُقُ حَتَّى يُكْتَبَ صِدِّيقًا وَيَكْذِبُ حَتَّى يُكْتَبَ كَذَّابًا

(6636) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) बयान करते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मैं तुम्हें न बताऊँ, कौनसी चीज़ ताल्लुक़ ख़त्म करने वाली और इन्तिहाई संगीन झूठ है? चुग़ल ख़ोरी और लोगों के दरम्यान लगाई-बझाई है।' और मुहम्मद(ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदमी सच बोलता रहता है, यहाँ तक कि सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूठ बोलता रहता है, यहाँ तक कि कज़्ज़ाब(बहुत झूठा) लिख दिया जाता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : **अल्अज़्हु :** टुकड़ा, क़तआ, क्योंकि चुग़ली, लोगों को एक-दूसरे से काट देती है। **अल्अज़्हु :** झूठ, जादू, ये बहुत संगीन सख़्त हराम चीज़ अल्क़ालतु बैनन्नास लोगों में फैल जाने वाली बात।

फ़ायदा : किसी की ऐसी बात दूसरे को पहुँचाना जो दूसरे आदमी की बद गुमानी और नाराज़ करके आपस में ताल्लुक़ात को बिगाड़ दे, इन्तिहाई संगीन जुर्म और गुनाहे अ़ज़ीम है। क्योंकि इससे आपस

में बुग़्ज़ व अदावत और मुख़ालिफ़त व मुनाफ़िरत(नफ़रत) जन्म लेती है। जबकि शरीअत ताल्लुक़ात की दुरुस्ती व ख़ुशगवारी और आपस में हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही के जज़्बात उभारना चाहती है, अल्लामा ज़ुबैदी लनोई ने लिखा है, उकसाने, भड़काने और फ़साद डालने के लिये किसी की बात को फैलाना नमीमा है।

باب قُبْحِ الْكَذِبِ وَحُسْنِ الصِّدْقِ وَفَضْلِهِ

बाब 30 : झूठ की क़बाहत और सच का हुस्न व फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتَّى يُكْتَبَ صِدِّيقًا وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتَّى يُكْتَبَ كَذَّابًا ".

(6637) हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बिला शुब्हा सच नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है और बिला शुब्हा आदमी हमेशा सच बोलता रहता है, यहाँ तक कि सिद्दीक़(इन्तिहाई सच्चा, जिसके क़ौलो-अमल में यकसानियत हो) लिख दिया जाता है और यक़ीनन झूठ बुराई और बदकारी के रास्ते पर डाल देता है और बदकारी दोज़ख़ तक पहुँचा देती है और आदमी झूठ बोलता रहता है(झूठ का आदी हो जाता है) यहाँ तक कि कज़्ज़ाब(बहुत झूठा) लिख दिया जाता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6094)

मुफ़रदातुल हदीस : सिद्दीक़ : जिसके क़ौलो-अमल और ज़बान व दिल में मुवाफ़िक़त(यक्सानियत) हो, क्योंकि सिद्क़ क़ौल के दिल और वाक़िये के मुताबिक़ होने का नाम है और जो इंसान सिद्क़ को इख़्तियार करता है, वो अल्लाह के यहाँ सिद्दीक़ ठहरता है और उनका सवाब पायेगा और लोगों के यहाँ भी सच्चा समझा जायेगा। इसके बरख़िलाफ़ जो झूठ बोलने की आदत बना लेता है, वो अल्लाह के यहाँ झूठा ठहरता है और उन ही की सज़ा और उक़ूबत का मुस्तहिक़ होगा और लोगों में भी झूठा मशहूर व मअरूफ़ होगा।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, सच बोलना बज़ाते ख़ुद अच्छी और पसन्दीदा आदत है, जिसकी ख़ासियत और इम्तियाज़ ये है कि आदमी को ज़िन्दगी के तमाम पहलूओं में नेक किरदार और सालेह बनाकर जन्नत का मुस्तहिक़(हक़दार) बना देती है, क्योंकि 'बिर्र' तमाम उमूर के मज्मूए का नाम है और हमेशा सच बोलने वाला आदमी मक़ामे सिद्दीक़ियत पर फ़ाइज़ हो जाता है। इसके बरख़िलाफ़ झूठ बोलना बज़ाते ख़ुद एक ख़बीस़ और बुरी ख़स्लत है, जिसकी ख़ासियत इंसान के अंदर फ़िस्क़ व फ़ुजूर और बदी का मैलान व रुझान पैदा करके, उसकी पूरी ज़िन्दगी को बदकारी की ज़िन्दगी बनाकर दोज़ख़ में पहुँचाता है और झूठ बोलने का आदी कज़्ज़ाबियत(बहुत बड़ा झूठा) के दर्जे तक पहुँचकर अल्लाह की लानत का मुस्तहिक़ ठहरता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَهَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الصِّدْقَ بِرٌّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَإِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِدِّيقًا وَإِنَّ الْكَذِبَ فُجُورٌ وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ وَإِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ حَتَّى يُكْتَبَ كَذَّابًا " . قَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ فِي رِوَايَتِهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

(6638) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'सिद्क़, वफ़ादारी और अदाए हुक़ूक़ का नाम है और वफ़ादारी जन्नत तक पहुँचा देती है और इंसान सच बोलने की कोशिश करता रहता है यहाँ तक कि अल्लाह के नज़दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूठ बद किरदारी का नाम है और बद किरदारी दोज़ख़ तक पहुँचाती है और इंसान झूठ बोलने का क़सद करता रहता है, यहाँ तक कि कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।' इब्ने अबी शैबा की रिवायत में क़ा-ल रसूलुल्लाह की जगह अनिन्नबिय्यि(ﷺ) है।

मुफ़रदातुल हदीस़ : बिर्र : का अरबी लुग़त में असल मफ़्हूम किसी का हक़ पूरा करना है, उसका ताल्लुक़ हुक़ूक़ुल्लाह से हो या हुक़ूक़ुल इबाद से और इसके मुक़ाबले में फ़ुजूर सीधी, राह से हट जाने और इस्तिक़ामत से किनारा कशी इख़्तियार कर लेने का नाम है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، قَالاَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا

(6639) हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि सच्चाई नेकी व वफ़ादारी के रास्ते पर डाल देती है और

الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِدِّيقًا وَإِيَّاكُمْ وَالْكَذِبَ فَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَكْذِبُ وَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ كَذَّابًا " .

नेक किरदारी जन्नत तक पहुँचा देती है और आदमी हमेशा सच बोलता रहता है और सच्चाई ही को इख़्तियार कर लेता है, यहाँ तक कि अल्लाह के यहाँ सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और तुम झूठ बोलने से बचते रहो, क्योंकि झूठ बदकारी के रास्ते पर डाल देता है और बद किरदारी दोज़ख़ तक पहुँचा देती है और आदमी हमेशा झूठ बोलता रहता है और झूठ को इख़्तियार कर लेता है, यहाँ तक कि अल्लाह के यहाँ कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।'

(अबू दाऊद : 4989, तिर्मिज़ी : 1971)

حَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ، إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِ عِيسَى " وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ وَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ". وَفِي حَدِيثِ ابْنِ مُسْهِرٍ " حَتَّى يَكْتُبَهُ اللَّهُ " .

(6640) इमाम साहब यही हदीस़ अपने दो उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, ईसा की रिवायत में यतहर्रस्सिद्क़(सच को इख़्तियार करता है) व यतहर्रल कज़िब(झूठ को इख़्तियार करता है) नहीं है और इब्ने मुस्हिर की रिवायत में है, हत्ता यक्तुबहुल्लाहु यहाँ तक कि अल्लाह उसको लिख देता है।

باب فَضْلِ مَنْ يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ وَبِأَىِّ شَىْءٍ يَذْهَبُ الْغَضَبُ

बाब 31 : गुस्से के वक़्त अपने ऊपर क़ाबू रखने वाले की फ़ज़ीलत और गुस्सा किस तरह ख़त्म किया जाता है

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَ

(6641) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'तुम अपने अंदर रक़ूब(बेऔलाद) किसको समझते हो?' हमने कहा, जिसकी औलाद न हो। आपने फ़रमाया,

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا تَعُدُّونَ الرَّقُوبَ فِيكُمْ " . قَالَ قُلْنَا الَّذِي لاَ يُولَدُ لَهُ . قَالَ " لَيْسَ ذَاكَ بِالرَّقُوبِ وَلَكِنَّهُ الرَّجُلُ الَّذِي لَمْ يُقَدِّمْ مِنْ وَلَدِهِ شَيْئًا " . قَالَ " فَمَا تَعُدُّونَ الصُّرَعَةَ فِيكُمْ " . قَالَ قُلْنَا الَّذِي لاَ يَصْرَعُهُ الرِّجَالُ . قَالَ " لَيْسَ بِذَلِكَ وَلَكِنَّهُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ " .

'वो रक़ूब नहीं है, लेकिन वो शख़्स रक़ूब है जिसने अपने आगे किसी बच्चे को न भेजा हो(जो क़यामत के दिन उसको आगे लेने के लिये आये)।' आपने पूछा, 'तुम अपने अंदर शह ज़ोर(गिराने वाला/पहलवान) किसको समझते हो?' हमने अ़र्ज़ किया, जिसको कोई पछाड़ न सके। आपने फ़रमाया, 'वो ताक़तवर नहीं है, बल्कि ताक़तवर पहलवान वो है, जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखता है।'

(अबू दाऊद : 4779)

मुफ़रदातुल हदीस़ : रक़ूब : जिसकी औलाद न बचे। **सुरअ़ह :** शहज़ोर, पहलवान, जो मद्दे मुक़ाबिल को पछाड़ दे और कोई उसको पछाड़ न सके।

फ़ायदा : आम तौर पर लोग उसी को ला वलद ख़्याल करते हैं, जिसकी औलाद ज़िन्दा न रहे, जबकि शरअ़न वो ला वलद है जिसकी ज़िन्दगी में उसकी औलाद फ़ौत नहीं होती कि वो उसकी मौत पर अल्लाह तआ़ला से अज्र व सवाब हासिल करने के लिये सब्र करे और क़यामत के दिन वो उसके लिये पेशरू और पेशवा बन सके। इसी तरह ज़ोरावर, पहलवान उसको ख़्याल किया जाता है, जो मद्दे मुक़ाबिल को पछाड़ दे, जबकि शरई नुक़्ते नज़र से शहज़ोर और पहलवान वो है, जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे। क्योंकि सबसे बड़ा और बहुत ही मुश्किल काम अपने नफ़्स को ज़ेर करना और उस पर क़ाबू पाना है। इसलिये नफ़्स को सख़्त तरीन दुश्मन क़रार दिया जाता है और ख़ास कर गुस्से की सूरत में तो इस पर क़ाबू निहायत कठिन और मुश्किल काम है। इसलिये आपने फ़रमाया कि ताक़तवर और पहलवान कहलाने का असल और सहीह हक़दार वो अल्लाह का बन्दा है जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले और नफ़्सानियत उससे कोई बेजा हरकत और ग़लत काम न करवा सके। इस हदीस़ से मालूम हुआ कि कमाल और ख़ूबी ये नहीं है और न बन्दे से ये मुताल्बा है कि उसको गुस्सा आये ही नहीं, क्योंकि किसी की सख़्त नागवार हरकत पर गुस्सा आना एक तबई और फ़ितरी जज़्बा है, जिसको ख़त्म नहीं किया जा सकता। मतलूब ये है कि गुस्से की कैफ़ियत के वक़्त नफ़्स पर पूरा क़ाबू रहे, ऐसा न हो कि गुस्से से मग़्लूब होकर इंसान ख़िलाफ़े शरीअ़त और शाने बन्दगी के मुनाफ़ी(ख़िलाफ़) हरकतें करने लग जाये।

(6642) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَ مَعْنَاهُ .

(6643) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ताक़तवर, मद्दे मुक़ाबिल को पछाड़ देने वाला नहीं है, ताक़तवर और मज़बूत तो बस वो है, जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6114)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَعَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، قَالاَ كِلاَهُمَا قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ " .

(6644) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'शहज़ोर(पहलवान) वो नहीं है जो बहुत गिराने वाला है।' सहाबा किराम ने पूछा, तो फिर शहज़ोर कौन है?' ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाया, 'जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे।'

حَدَّثَنَا حَاجِبُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنِ الزُّبَيْدِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ " . قَالُوا فَالشَّدِيدُ أَيُّمَ هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ " .

(6645) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَهْرَامَ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، كِلاَهُمَا عَنِ

الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ، قَالَ اسْتَبَّ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَجَعَلَ أَحَدُهُمَا تَحْمَرُّ عَيْنَاهُ وَتَنْتَفِخُ أَوْدَاجُهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لأَعْرِفُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ عَنْهُ الَّذِي يَجِدُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ " . فَقَالَ الرَّجُلُ وَهَلْ تَرَى بِي مِنْ جُنُونٍ قَالَ ابْنُ الْعَلاَءِ فَقَالَ وَهَلْ تَرَى . وَلَمْ يَذْكُرِ الرَّجُلَ.

(6646) हज़रत सुलैमान बिन सुरद(रज़ि.) बयान करते हैं, दो आदमी नबी(ﷺ) के सामने गाली-गलोच करने लगे और उनमें से एक की आँखें सुर्ख़ होने लगीं और रगें फूलने लगीं। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं एक बोल जानता हूँ, अगर ये वो कह ले तो जो कैफ़ियत ये पा रहा है, ख़त्म हो जायेगी। ये कहे, 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम मैं मर्दूद शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।' तो उस आदमी ने कहा, क्या आप मुझे पागल ख़याल करते हैं? इब्ने अला की रिवायत में हल तरा है और अर्रजुलु का लफ़्ज़ नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 3282, 6048, 6115, अबू दाऊद : 4781)

मुफ़रदातुल हदीस़ : औदाजु : वदजुन की जमा है, गर्दन की रगें।

फ़ायदा : गुस्से से बेक़ाबू होना, शैतानी हरकत है। जिस पर इंसान को शैतान उकसाता है, इसलिये इसका इलाज, शैतान से अल्लाह की पनाह में आना है और गुस्से की हालत में इंसान ऐतदाल से निकल जाता है और ये जुनून व दीवानगी की एक सूरत है जिसके सबब इंसान फ़हम व शऊर से आ़री हो जाता है और उसे ये मालूम नहीं रहता मुझे क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। इसलिये दीवाना कभी अपने दीवाने होने को तस्लीम नहीं करता, इस कम फ़हमी और ना समझी का मुज़ाहिरा करते हुए, उस ग़ज़बनाक आदमी ने कहा, क्या मैं पागल हूँ? कुछ रिवायात में आया है, अगर वो खड़ा है तो बैठ जाये फिर भी गुस्सा ज़ाइल(ख़त्म) न हो तो लेट जाये।

(6647) हज़रत सुलैमान बिन सुरद(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) के सामने दो आदमियों में तल्ख़ कलामी और तकरार हुआ, उनमें से एक ग़ुस्से में लाल-पीला हो रहा था। चुनाँचे नबी(ﷺ) ने उसकी कैफ़ियत को देखकर फ़रमाया, 'मैं एक कलिमा(बोल) जानता हूँ, अगर ये वो कलिमा कह ले तो इसका ग़ुस्सा दूर हो जाये यानी अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।' तो एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) से ये सुनकर उस आदमी के पास गया और कहा, क्या जानते हो अभी-अभी रसूलुल्लाह(ﷺ) ने क्या फ़रमाया है? आपने फ़रमाया, 'मैं एक बोल जानता हूँ, अगर ये कह ले तो उसकी ये कैफ़ियत दूर हो जाये अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।' तो उस आदमी ने उसे जवाब दिया, क्या तुम मुझे पागल देखते(समझते) हो?'

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، سَمِعْتُ الأَعْمَشَ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَدِيَّ بْنَ ثَابِتٍ، يَقُولُ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ صُرَدٍ، قَالَ اسْتَبَّ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَجَعَلَ أَحَدُهُمَا يَغْضَبُ وَيَحْمَرُّ وَجْهُهُ فَنَظَرَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ ذَا عَنْهُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ". فَقَامَ إِلَى الرَّجُلِ رَجُلٌ مِمَّنْ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ أَتَدْرِي مَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم آنِفًا قَالَ " إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ ذَا عَنْهُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ". فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ أَمَجْنُونًا تَرَانِي.

फ़ायदा : सुनन अबी दाऊद की रिवायत से मालूम होता है, हुज़ूर(ﷺ) से सुनकर जाकर समझाने वाला शख़्स हज़रत मुआज़ बिन जबल(रज़ि.) थे।

(6648) इमाम साहब ये रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

बाब 32 : बेक़ाबू होना इंसान की सरशत(फ़ितरत) है

باب خُلِقَ الإِنْسَانُ خَلْقًا لاَ يَتَمَالَكُ

(6649) हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब अल्लाह ने जन्नत में आदम(अलै.) की सूरत(पुतला) बनाई तो जब तक चाहा उसे उसी तरह छोड़े रखा। चुनाँचे इब्लीस उसके पास घूमने लगा। देखता था, वो क्या है? जब उसने उसे अंदर से खोखला और पेट वाला देखा, समझ गया कि इसे ऐसी बनावट दी गई है कि वो ख़ुद पर क़ाबू न रख सकेगा।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَمَّا صَوَّرَ اللَّهُ آدَمَ فِي الْجَنَّةِ تَرَكَهُ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَتْرُكَهُ فَجَعَلَ إِبْلِيسُ يُطِيفُ بِهِ يَنْظُرُ مَا هُوَ فَلَمَّا رَآهُ أَجْوَفَ عَرَفَ أَنَّهُ خُلِقَ خَلْقًا لاَ يَتَمَالَكُ " .

(6650) इमाम साहब इस क़िस्म की रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

फ़ायदा : अंदर से ख़ाली और खोखला होना या पेट वाला होना, इस बात की अलामत है कि ये अपनी ख़्वाहिशात का क़ैदी होगा, अपनी ख़्वाहिशात व मफ़ादात पर आसानी से ग़ालिब नहीं आ सकेगा, इसलिये उसको बहकाना- फुस्लाना आसान होगा और वाक़िअतन यही सूरते हाल है। शैतान इंसान पर उसकी ख़्वाहिशात और लज़्ज़तों के ज़रिये से क़ाबू पाता है और इंसान अपने ऊपर क़ाबू नहीं रख सकता, इसलिये फ़रमाने बारी है, 'रहा वो इंसान जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिशात से बाज़ रखा तो यक़ीनन जन्नत ही उसका ठिकाना होगा।'(सूरह नाज़िआत : 40-41)

बाब 33 : चेहरे पर मारना मना है

باب النَّهْىِ عَنْ ضَرْبِ الْوَجْهِ

(6651) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई अपने भाई से लड़े तो चेहरे(पर मारने) से बचे।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي، الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ "

फ़ायदा : इंसान के हुस्नो-जमाल और ख़ूबसूरती का मज़हर(केन्द्र) उसका चेहरा है, जो एक इन्तिहाई नाज़ुक और लतीफ़ अंग है और मार को बर्दाश्त नहीं कर सकता। मार से इंसान का चेहरा बिगड़ सकता है। जिससे उसका हुस्नो-जमाल मुतास्सिर(प्रभावित) होगा, क्योंकि चेहरे की मार-पीट से इंसान की आँख की बीनाई ज़ाइल(ख़त्म) हो सकती है, आँख मुतास्सिर हो सकती है, उसकी दूसरी वजह आगे आ रही है।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " إِذَا ضَرَبَ أَحَدُكُمْ " .

(6652) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें क़ात-ल की जगह ज़र-ब का लफ़्ज़ है।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَتَّقِ الْوَجْهَ " .

(6653) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई शख़्स अपने भाई से लड़े तो चेहरे(पर मारने) से बचाव करे।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعَ أَبَا، أَيُّوبَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلاَ يَلْطِمَنَّ الْوَجْهَ " .

(6654) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई शख़्स अपने भाई से लड़े तो उसके चेहरे पर तमांचा बिल्कुल न मारे।'

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ، حَاتِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنِ الْمُثَنَّى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه

(6655) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई अपने भाई से लड़े तो चेहरे से बचे, क्योंकि अल्लाह तआला ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया है।'

وسلم وَفِي حَدِيثِ ابْنِ حَاتِمٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ فَإِنَّ اللَّهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ

फ़ायदा : आदम(अलै.) को अपनी सूरत पर पैदा किया है, कुछ रिवायात से इसकी तफ़्सीर(एक्सप्लेन) हो जाती है कि इंसान के चेहरे की सूरत रहमान के चेहरे की सूरत पर है और कुरआनो-सुन्नत में अल्लाह के लिये 'वज्ह' का लफ़्ज़ आया है, लेकिन जिस तरह उसके क़दम, समअ व बसर की कैफ़ियत को समझना मुम्किन नहीं है, उसकी सूरत की माहियत और हक़ीक़त को जानना भी मुम्किन नहीं है। इंसान मख़्लूक़ है, इसलिये उसकी सूरत उसकी शान के मुताबिक़ है और रहमान ख़ालिक़ है, इसलिये उसकी सूरत उसके शान व मक़ाम के लायक़ होगी और उसी सूरत में वो महशर में मोमिनों के सामने आयेगा और लोग उसको पहचान लेंगे। अगर ये हदीस़ न होती तो फिर ये मानी करना मुम्किन था कि रहमान ने उसे अपनी पसन्दीदा शक्लो-सूरत पर पैदा किया है, इसलिये मार कर उसे बिगाड़ो नहीं, क्योंकि ख़ूबसूरती का हक़ीक़ी मज़हर इंसान का चेहरा-मोहरा ही है। अगरचे सारा जिस्म ही उसने अपनी पसंद के मुताबिक़ अह्सने तक़्वीम(बेहतरीन ढांचे में) बनाया है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ يَحْيَى، بْنِ مَالِكٍ الْمَرَاغِيِّ - وَهُوَ أَبُو أَيُّوبَ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ"

(6656) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई शख़्स जब अपने भाई से लड़ पड़े तो चेहरे से परहेज़ करे।'

باب الْوَعِيدِ الشَّدِيدِ لِمَنْ عَذَّبَ النَّاسَ بِغَيْرِ حَقٍّ

बाब 34 : जो इंसान लोगों को नाहक़ दुख पहुँचाये, उसके लिये सख़्त वईद है

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ، قَالَ مَرَّ بِالشَّامِ عَلَى

(6657) हज़रत हकीम बिन हिज़ाम(रज़ि.) के बेटे हिशाम बयान करते हैं कि उनका गुज़र शाम में कुछ लोगों के पास से हुआ, जो धूप में खड़े किये गये थे और उनके सरों पर रोग़न

أُنَاسٍ وَقَدْ أُقِيمُوا فِي الشَّمْسِ وَصُبَّ عَلَى رُءُوسِهِمُ الزَّيْتُ فَقَالَ مَا هَذَا قِيلَ يُعَذَّبُونَ فِي الْخَرَاجِ ‏.‏ فَقَالَ أَمَا إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ‏"‏ إِنَّ اللَّهَ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُعَذِّبُونَ فِي الدُّنْيَا ‏"‏ ‏.‏

ज़ैतून डाला गया था। उन्होंने पूछा, ये क्या हो रहा है? उन्हें बताया गया, इन्हें ख़राज(न देने) की वजह से अ़ज़ाब दिया जा रहा है। तो उन्होंने कहा, हाँ! मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना है, 'अल्लाह उन लोगों को अ़ज़ाब देगा, जो दुनिया में लोगों को(नाजाइज़) अ़ज़ाब देते हैं।' (अबू दाऊद : 3045)

फ़ायदा : शरई उसूलों और ज़वाबित के मुताबिक़ किसी को जिस्मानी हद या तअ़्ज़ीर लगाना जुर्म नहीं है, अगर कोई हुक्मरान नाजाइज़ तौर पर किसी को हद लगाता है या सज़ा देता है तो वो क़यामत के दिन सज़ा का हक़दार होगा। हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम(रज़ि.) ने ये हदीस़ इसलिये सुनाई ताकि सज़ा देने वाले अपने काम पर ग़ौर कर लें कि हमारा ये काम सहीह है या ग़लत है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ مَرَّ هِشَامُ بْنُ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ عَلَى أُنَاسٍ مِنَ الأَنْبَاطِ بِالشَّامِ قَدْ أُقِيمُوا فِي الشَّمْسِ فَقَالَ مَا شَأْنُهُمْ قَالُوا حُبِسُوا فِي الْجِزْيَةِ ‏.‏ فَقَالَ هِشَامٌ أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ‏"‏ إِنَّ اللَّهَ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُعَذِّبُونَ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا ‏"‏ ‏.‏

(6658) हज़रत हिशाम(रह.) अपने बाप(उरवा रह.) से बयान करते हैं कि हज़रत हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम(रज़ि.) का गुज़र शाम के कुछ किसानों पर हुआ, उन्हें धूप में खड़ा किया गया था। तो उन्होंने पूछा, इनका क्या मामला है? लोगों ने बताया, इन्हें जिज़्ये(की वसूली) की ख़ातिर रोका गया है। चुनाँचे हज़रत हिशाम(रज़ि.) ने कहा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'अल्लाह उन लोगों को अ़ज़ाब देगा, जो लोगों को दुनिया में अ़ज़ाब देते हैं।'

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ قَالَ وَأَمِيرُهُمْ يَوْمَئِذٍ عُمَيْرُ بْنُ سَعْدٍ عَلَى

(6659) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं, हिशाम से जरीर की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, उन दिनों उन लोगों के फ़िलिस्तीन में अमीर हज़रत उमैर बिन सअ़द(रज़ि.) थे तो हज़रत

فِلَسْطِينَ فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَحَدَّثَهُ فَأَمَرَ بِهِمْ فَخُلُّوا

हिशाम(रज़ि.) के पास गये और उन्हें ये हदीस़ सुनाई तो उन्होंने उनको छोड़ने का हुक्म दिया और वो छोड़ दिये गये।

फ़ायदा : जिज़्या को ख़राज भी कह देते हैं, इसलिये कुछ रिवायतों में ख़राज(लगान) का लफ़्ज़ आया है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ هِشَامَ بْنَ حَكِيمٍ، وَجَدَ رَجُلاً وَهُوَ عَلَى حِمْصَ يُشَمِّسُ نَاسًا مِنَ النَّبَطِ فِي أَدَاءِ الْجِزْيَةِ فَقَالَ مَا هَذَا إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ اللَّهَ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُعَذِّبُونَ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا " .

(6660) हज़रत उरवा(रह.) बिन ज़ुबैर बयान करते हैं, हिशाम बिन हकीम(रज़ि.) ने हिम्स के गवर्नर को देखा उसने जिज़्या की अदायगी के लिये कुछ किसानों को धूप में खड़ा किया हुआ है तो उन्होंने पूछा, ये क्या सज़ा है? मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना है, 'अल्लाह उन लोगों को अज़ाब देगा, जो दुनिया में लोगों को अज़ाब देते हैं।'

फ़ायदा : जिज़्या और ख़राज से मुराद वो रक़म है जो मुसलमानों के इलाक़े में रहने वाले ग़ैर मुस्लिमों से उनके तहफ़्फ़ुज़(सुरक्षा) और पनाह देने के बाइस़ वसूल की जाती थी।

باب أَمْرِ مَنْ مَرَّ بِسِلاَحٍ فِي مَسْجِدٍ أَوْ سُوقٍ أَوْ غَيْرِهِمَا مِنَ الْمَوَاضِعِ الْجَامِعَةِ لِلنَّاسِ أَنْ يُمْسِکَ بِنِصَالِهَا

बाब 35 : जो शख़्स मस्जिद, बाज़ार वग़ैरह ऐसी जगहों से गुज़रे, जहाँ लोग जमा होते हैं, उसको हथियार के फल पकड़ने का हुक्म दिया जायेगा

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا - سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، سَمِعَ جَابِرًا، يَقُولُ مَرَّ رَجُلٌ فِي الْمَسْجِدِ بِسِهَامٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " أَمْسِكْ بِنِصَالِهَا "

(6661) हज़रत जाबिर(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी मस्जिद से तीर लेकर गुज़रा तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'तीरों के पैकान को पकड़ लो।'

(सहीह बुख़ारी : 7073, नसाई : 717, इब्ने माजह : 3777)

(6662) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी तीर लेकर मस्जिद से गुज़रा, जिनके पैकान खुले हुए(नंगे) थे तो आपने उसे उनके पैकान पकड़ने का हुक्म दिया, ताकि किसी मुसलमान को ख़राश न लगा दे।

(सहीह बुख़ारी : 7074)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو الرَّبِيعِ، قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا وَقَالَ، يَحْيَى - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَجُلاً، مَرَّ بِأَسْهُمٍ فِي الْمَسْجِدِ قَدْ أَبْدَى نُصُولَهَا فَأُمِرَ أَنْ يَأْخُذَ بِنُصُولِهَا كَىْ لاَ يَخْدِشَ مُسْلِمًا .

मुफ़रदातुल हदीस़ : नसलुन नुसूलुन : तीर या नेज़े की अनी, फल, नोकदार लोहा।

(6663) हज़रत जाबिर(रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपने एक आदमी को जो मस्जिद में तीरों का सदक़ा कर रहा था, हुक्म दिया कि वो मस्जिद से तीरों के पैकान पकड़े बग़ैर न गुज़रे। इब्ने रुम्ह की रिवायत में यतसद्दक़ है यानी ता को सॉद में मुद्ग़म कर दिया गया।

(अबू दाऊद : 2586)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ أَمَرَ رَجُلاً كَانَ يَتَصَدَّقُ بِالنَّبْلِ فِي الْمَسْجِدِ أَنْ لاَ يَمُرَّ بِهَا إِلاَّ وَهُوَ آخِذٌ بِنُصُولِهَا . وَقَالَ ابْنُ رُمْحٍ كَانَ يَصَّدَّقُ بِالنَّبْلِ

(6664) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई अपने हाथ में तीर लेकर मज्लिस में या बाज़ार से गुज़रे तो वो उसका पैकान पकड़ ले, फिर उसके पैकान को पकड़ ले, फिर उसके पैकान को पकड़ ले।' यानी ख़ूब अच्छी तरह पकड़ ले। हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम! हमने मरने से पहले, एक-दूसरे के चेहरे(रुख़) की तरफ़ सीधे कर लिये।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي، مُوسَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا مَرَّ أَحَدُكُمْ فِي مَجْلِسٍ أَوْ سُوقٍ وَبِيَدِهِ نَبْلٌ فَلْيَأْخُذْ بِنِصَالِهَا ثُمَّ لْيَأْخُذْ بِنِصَالِهَا ثُمَّ لْيَأْخُذْ بِنِصَالِهَا " . قَالَ فَقَالَ أَبُو مُوسَى وَاللَّهِ مَا مُتْنَا حَتَّى سَدَّدْنَاهَا بَعْضُنَا فِي وُجُوهِ بَعْضٍ .

फ़ायदा : नबी(ﷺ) की तल्क़ीन और ताकीद ये थी कि जिस जगह लोगों का इज्तिमाअ हो, वहाँ हथियार या कोई ख़तरनाक चीज़ इस अन्दाज़ से न ले जाये कि दूसरों को उससे तकलीफ़ पहुँचे, लेकिन आपके फ़रमान के बर ख़िलाफ़ बाद में लोग हथियार लेकर एक-दूसरे के सामने आ गये और आज बद क़िस्मती से लोगों को बमों का निशाना बनाया जा रहा है और दहशतगर्दी को आम कर दिया गया है, यहाँ तक कि अल्लाह के घर मस्जिदें भी इससे महफ़ूज़(सुरक्षित) नहीं हैं, अआज़नल्लाहु मिन्हु!

(6665) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई हमारी मस्जिदों या हमारे बाज़ारों से तीर लेकर गुज़रे तो वो अपनी हथेली से उसके पैकान(नोक) को पकड़ ले, ताकि उससे किसी मुसलमान को नुक़सान न पहुँचे।' या आपने फ़रमाया, 'उसके पैकान पर क़ब्ज़ा कर ले।'

(सहीह बुख़ारी : 7075, अबू दाऊद : 2856, इब्ने माजह : 3778)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، - وَاللَّفْظُ لِعَبْدِ اللَّهِ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا مَرَّ أَحَدُكُمْ فِي مَسْجِدِنَا أَوْ فِي سُوقِنَا وَمَعَهُ نَبْلٌ فَلْيُمْسِكْ عَلَى نِصَالِهَا بِكَفِّهِ أَنْ يُصِيبَ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ مِنْهَا بِشَىْءٍ " . أَوْ قَالَ " لِيَقْبِضْ عَلَى نِصَالِهَا " .

बाब 36 : किसी मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा करना मना है

باب النَّهْىِ عَنِ الإِشَارَةِ، بِالسِّلاَحِ إِلَى مُسْلِمٍ

(6666) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने अबुल क़ासिम(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जिसने अपने भाई की तरफ़ तेज़ धार आले से इशारा किया(उसको डराने या ख़ौफ़ज़दा करने के लिये) तो फ़रिश्ते उस पर लानत भेजेंगे, यहाँ तक कि उसको छोड़ दे अगरचे वो उसका हक़ीक़ी भाई ही क्यों न हो।'

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَشَارَ إِلَى أَخِيهِ بِحَدِيدَةٍ فَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَلْعَنُهُ حَتَّى وَإِنْ كَانَ أَخَاهُ لأَبِيهِ وَأُمِّهِ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, अपने किसी भाई को ख़ौफ़ज़दा करने के लिये या सिर्फ़ ख़ुश तबई(मज़ाक़) में परेशान करने के लिये उसकी तरफ़ किसी हथियार का रुख़ करना फ़रिश्तों की लानत

का बाइस है, जिससे साबित होता है किसी मुसलमान भाई को तंग करना, उसको परेशान करना, मुसलमानों का शेवा नहीं है। क्योंकि कई बार हथियार ग़ैर शऊरी तौर पर नुक़सान पहुँचाने का बाइस बन सकता है, इसलिये इसका सद्दे बाब करते हुए शरीअत ने इससे सिर्फ़ इशारा करना भी जुर्म क़रार दिया और आज मुसलमान इशारे की बजाए हथियारों से दूसरे मुसलमानों को निशाना बना रहे हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ

(6667) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يُشِيرُ أَحَدُكُمْ إِلَى أَخِيهِ بِالسِّلاَحِ فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي أَحَدُكُمْ لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ " .

(6668) हम्माम बिन मुनब्बिह को बयान करदा हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) की हदीसों में से एक हदीस ये है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई अपने भाई की तरफ़ अस्लहे से इशारा न करे, क्योंकि तुममें से किसी को पता नहीं है, शायद शैतान छीनकर उसके हाथ से चलवा दे, इस तरह वो आग के गढ़े में जा गिरे।' यानी दूसरे भाई को नुक़सान न पहुँच जाये, जो आग की सज़ा का बाइस बन जाये। (सहीह बुख़ारी : 7072)

باب فَضْلِ إِزَالَةِ الأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ

बाब 37 : रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ दूर करने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سُمَىٍّ، مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ وَجَدَ غُصْنَ شَوْكٍ عَلَى الطَّرِيقِ فَأَخَّرَهُ فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ " .

(6669) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जबकि एक आदमी रास्ते पर जा रहा था, उसने रास्ते पर ख़ारदार(कांटों वाली) टहनी देखी तो उसे हटा दिया, चुनाँचे अल्लाह तआला ने उसके अमल की क़द्र की और उसे माफ़ कर दिया।'

(सहीह बुख़ारी : 2472, तिर्मिज़ी : 1958)

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, कई बार एक मामूली अमल अल्लाह के यहाँ इस दर्जा क़ुबूलियत हासिल कर लेता है कि उसकी ज़िन्दगी की काया पलट जाती है और वो नेक किरदारी का रास्ता अपनाकर जन्नत में चला जाता है।

(6670) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक आदमी रास्ते पर एक दरख़्त की शाख़ से गुज़रा तो कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मैं इसको मुसलमानों से दूर करके रहूँगा, ताकि उनको तकलीफ़ न पहुँचाये तो वो उसके सबब जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَرَّ رَجُلٌ بِغُصْنِ شَجَرَةٍ عَلَى ظَهْرِ طَرِيقٍ فَقَالَ وَاللَّهِ لأُنَحِّيَنَّ هَذَا عَنِ الْمُسْلِمِينَ لاَ يُؤْذِيهِمْ . فَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ " .

(6671) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'मैंने जन्नत में एक आदमी को एक दरख़्त रास्ते की पीठ से काटने की वजह से, चलते हुए देखा, वो दरख़्त लोगों को तकलीफ़ पहुँचा रहा था।'

حَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلاً يَتَقَلَّبُ فِي الْجَنَّةِ فِي شَجَرَةٍ قَطَعَهَا مِنْ ظَهْرِ الطَّرِيقِ كَانَتْ تُؤْذِي النَّاسَ " .

फ़ायदा : गुज़िश्ता रिवायात में एक शाख़ काटने का ज़िक्र है और यहाँ दरख़्त कहा गया है, क्योंकि वो शाख़ दरख़्त से रास्ते पर गुज़रने वालों को लगती थी, उसके काटने को दरख़्त के काटने से ताबीर कर दिया, क्योंकि वो दरख़्त का हिस्सा थी।

(6672) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक दरख़्त मुसलमानों के लिये तकलीफ़ का बाइस था, एक आदमी ने आकर उसे काट डाला और उसकी वजह से जन्नत में चला गया।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ شَجَرَةً كَانَتْ تُؤْذِي الْمُسْلِمِينَ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَطَعَهَا فَدَخَلَ الْجَنَّةَ " .

(6673) हज़रत अबू बरज़ा(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखायें, जिससे मैं फ़ायदा उठा सकूँ। आपने फ़रमाया, 'मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटा दो।' (इब्ने माजह : 3681)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ أَبَانَ بْنِ صَمْعَةَ، حَدَّثَنِي أَبُو الْوَازِعِ حَدَّثَنِي أَبُو بَرْزَةَ، قَالَ قُلْتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَنْتَفِعُ بِهِ قَالَ " اعْزِلِ الأَذَى عَنْ طَرِيقِ الْمُسْلِمِينَ " .

(6674) हज़रत अबू बरज़ा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे मालूम नहीं, शायद आप दुनिया से रुख़सत हो जायें और मैं आपके बाद ज़िन्दा रहूँ तो मुझे कोई ऐसा तोशा इनायत फ़रमायें, जिससे अल्लाह मुझे नफ़ा पहुँचाये। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये काम करो, ये काम करो।' अबू बकर काम का नाम भूल गये और 'रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ दूर कर दो।'(और आज मुसलमान तकलीफ़देह चीज़ें रास्तों पर फेंकते हैं।)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ الْحَبْحَابِ، عَنْ أَبِي الْوَازِعِ، الرَّاسِبِيِّ عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ، أَنَّ أَبَا بَرْزَةَ، قَالَ قُلْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي لاَ أَدْرِي لَعَسَى أَنْ تَمْضِيَ وَأَبْقَى بَعْدَكَ فَزَوِّدْنِي شَيْئًا يَنْفَعُنِي اللَّهُ بِهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " افْعَلْ كَذَا افْعَلْ كَذَا - أَبُو بَكْرٍ نَسِيَهُ - وَأَمِرَّ الأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ " .

बाब 38 : वो हैवानात, बिल्ली वग़ैरह जो अज़ियत नहीं पहुँचाते उनको तकलीफ़ पहुँचाना मना है

باب تَحْرِيمِ تَعْذِيبِ الْهِرَّةِ وَنَحْوِهَا مِنَ الْحَيَوَانِ الَّذِي لاَ يُؤْذِي

(6675) हज़रत अब्दुल्लाह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक औरत को बिल्ली के सबब अज़ाब हो रहा है, उसने उसे क़ैद किया, यहाँ तक कि वो मर गई, वो उसके सबब आग में दाख़िल हो गई जब उसने उसे बांधा था, न खिलया, न

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ بْنِ عُبَيْدٍ الضُّبَعِيُّ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، - يَعْنِي ابْنَ أَسْمَاءَ - عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " عُذِّبَتِ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ

سَجَنَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ فَدَخَلَتْ فِيهَا النَّارَ لاَ هِيَ أَطْعَمَتْهَا وَسَقَتْهَا إِذْ هِيَ حَبَسَتْهَا وَلاَ هِيَ تَرَكَتْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ " .

पिलाया और न उसने उसे छोड़ा कि वो ज़मीन के कीड़े-मकोड़े खा लेती।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : ख़शाश : ख़ पर ज़म्मा(पेश) और कसरा(ज़ेर) भी जाइज़ है, कीड़े-मकोड़े, चूहा, चूज़े वग़ैरह।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ يَحْيَى بْنِ خَالِدٍ، جَمِيعًا عَنْ مَعْنِ بْنِ عِيسَى، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ جُوَيْرِيَةَ .

(6676) इमाम साहब इसके हम मानी रिवायत दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " عُذِّبَتِ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ أَوْثَقَتْهَا فَلَمْ تُطْعِمْهَا وَلَمْ تَسْقِهَا وَلَمْ تَدَعْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ "

(6677) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक औरत बिल्ली के बांधने के सबब अज़ाब दी गई, न उसने उसे खिलाया और न उसे पिलाया और न उसे छोड़ा कि वो ज़मीन के जानदार(हशरात) खा लेती।'

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(6678) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसके रावी हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله

(6679) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) ने हम्माम बिन मुनब्बिह(रह.) को बहुत सी हदीसें सुनाईं, उनमें से एक ये है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक औरत अपनी बिल्ली की

عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " دَخَلَتِ امْرَأَةٌ النَّارَ مِنْ جَرَّاءِ هِرَّةٍ لَهَا - أَوْ هِرٍّ - رَبَطَتْهَا فَلاَ هِيَ أَطْعَمَتْهَا وَلاَ هِيَ أَرْسَلَتْهَا تُرَمِّمُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ حَتَّى مَاتَتْ هَزْلاً " .

पादाश में आग में चली गई, उसे बांध दिया। फिर न उसे खिलया, न उसे पिलाया और न उसने उसे छोड़ा कि वो अपने मुँह से ज़मीन के कीड़े-मकोड़े पकड़ लेती, यहाँ तक कि वो लाग़री(कमज़ोरी) से मर गई।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, हैवानात या जानदार चीज़ों को बिला वजह और बिला ज़रूरत तकलीफ़ और अज़ियत पहुँचाना जाइज़ नहीं है और कई बार ये इन्तिहाई संगीन नतीजे का बाइस़ बन सकता है। क्योंकि ये अज़ियत(तकलीफ़) किसी जानदार की मौत का बाइस़ बन सकती है, जिसकी वजह से इंसान अ़ज़ाब से दोचार हो सकता है।

باب تَحْرِيمِ الْكِبْرِ

बाब 39 : तकब्बुर की हुरमत

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي مُسْلِمٍ الأَغَرِّ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، وَأَبِي، هُرَيْرَةَ قَالاَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "الْعِزُّ إِزَارُهُ وَالْكِبْرِيَاءُ رِدَاؤُهُ فَمَنْ يُنَازِعُنِي عَذَّبْتُهُ" .

(6680) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इज़्ज़त अल्लाह की इज़ार है और अ़ज़्मत व किब्रियाई उसकी चादर है(अल्लाह फ़रमाता है) जो मुझसे छीनेगा, यानी तकब्बुर करेगा, मैं उसे अ़ज़ाब दूँगा।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, तकब्बुर करना, अपने आपको बड़ा और अ़ज़ीम समझना, अल्लाह की सिफ़ते अ़ज़्मत और किब्रियाई में शराकत का दावा करना है। हालांकि अल्लाह का कोई शरीक व सहीम नहीं है और जो उसका शरीक बनने की कोशिश करता है, वो अ़ज़ाब से दोचार होगा, क्योंकि अगर किसी को कोई कमाल और ख़ूबी हासिल है तो वो अल्लाह की अ़ता की हुई है, जो आ़जिजी व फ़रौतनी और तवाज़ोअ़(मिलनसारी) व इन्किसारी का सबब बननी चाहिये न कि जिसने इनायत की है, उसके मुक़ाबले में आने का।

बाब 40 : इंसान को अल्लाह की रहमत से मायूस या नाउम्मीद होना मना है

باب النَّهْىِ عَنْ تَقْنِيطِ الإِنْسَانِ، مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ تَعَالَى

حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مُعْتَمِرِ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ، عَنْ جُنْدَبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدَّثَ " أَنَّ رَجُلاً قَالَ وَاللَّهِ لاَ يَغْفِرُ اللَّهُ لِفُلاَنٍ وَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ مَنْ ذَا الَّذِي يَتَأَلَّى عَلَىَّ أَنْ لاَ أَغْفِرَ لِفُلاَنٍ فَإِنِّي قَدْ غَفَرْتُ لِفُلاَنٍ وَأَحْبَطْتُ عَمَلَكَ " . أَوْ كَمَا قَالَ .

(6681) हज़रत जुन्दब(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बताया, 'एक आदमी ने कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह फ़लाँ को माफ़ नहीं करेगा। चुनाँचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे बारे में ये क़सम उठाने वाला कौन है? कि मैं फ़लाँ को माफ़ नहीं करूँगा। मैंने फ़लाँ को बख़्श दिया और तेरे(क़सम उठाने वाले के) अमल ज़ाया(बर्बाद) कर दिये।' या जो आपने फ़रमाया।

फ़ायदा : किसी गुनाहगार और ख़ताकार मुसलमान के बारे में ये क़सम उठाना कि अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा, ये दावा करना है कि मुझे ग़ैब का इल्म है या अल्लाह के यहाँ मेरा मक़ाम व मर्तबा ये है जो मैं कहूँगा। अल्लाह तआला इसी तरह करेगा या इस तरह दूसरे को अल्लाह की रहमत से मायूस करना है और ये तमाम बातें ग़लत हैं और कई गुनाहों की नहूसत इस क़द्र ज़्यादा है कि वो नेकियों के बर्बाद होने की वजह बनते हैं, अगरचे इंसान उनसे काफ़िर नहीं होता।

बाब 41 : ज़ईफ़ों और गुमनामों की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ الضُّعَفَاءِ وَالْخَامِلِينَ

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رُبَّ أَشْعَثَ مَدْفُوعٍ بِالأَبْوَابِ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ " .

(6682) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बहुत से परागन्दा बाल, जिनको दरवाज़ों से धुतकार दिया जाता है, ऐसे हैं कि अगर वो अल्लाह की क़सम उठा लें तो अल्लाह उनकी क़सम को पूरा कर देता है।'

फ़ायदा : अल्लाह के कुछ इन्तिहाई मुत्तक़ी और परहेज़गार बन्दे, जो दुनियवी साज़ो-सामान से तही दामन और ख़ाक नशीन होते हैं, अपने जिस्म के हुस्नो-जमाल को अहमियत नहीं देते, अल्लाह के यहाँ इस क़द्र मक़्बूल होते हैं कि अगर वो किसी काम के बारे में क़सम उठा लें कि अल्लाह की क़सम ये काम यूँ होगा तो अल्लाह उनकी क़सम को पूरा फ़रमा देता है, हालांकि लोगों के यहाँ उनकी कोई क़द्र व मन्ज़िलत नहीं होती, वो अगर किसी की सिफ़ारिश करें तो कोई मानने के लिये तैयार नहीं होता, कोई उन्हें अपने पास बिठाने का रवादार नहीं होता।

बाब 42 : ये कहना जाइज़ नहीं है, 'लोग तबाह हो गये'

باب النَّهْىِ عَنْ قَوْلِ، هَلَكَ النَّاسُ

(6683) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब इंसान कहता है, तमाम इंसान तबाह हो गये तो वो सबसे बढ़कर तबाह होता है।'

अबू इस्हाक़(किताब के रावी) कहते हैं, मुझे मालूम नहीं है, 'अह्लकहुम पर नस्ब(ज़बर) है या रफ़अ(पेश)।

(अबू दाऊद : 4983)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِذَا قَالَ الرَّجُلُ هَلَكَ النَّاسُ . فَهُوَ أَهْلَكُهُمْ " . قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ لاَ أَدْرِي أَهْلَكَهُمْ بِالنَّصْبِ أَوْ أَهْلَكُهُمْ بِالرَّفْعِ .

फ़ायदा : अगर कोई इंसान लोगों की तहक़ीर व तज़्लील करते हुए अपनी रिफ़अत व बरतरी ज़ाहिर करते हुए ख़ुद पसन्दी और फ़ख़्र व गुरूर में मुब्तला होकर कहता है, सब लोग तबाह व बर्बाद हो रहे हैं, मैं ही राहे रास्त पर चल रहा हूँ तो वो ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर का मरीज़ है, इसलिये सबसे ज़्यादा तबाही का शिकार वही है। एक इंसान हर वक़्त लोगों के ऐबों व नुक़्सों को बयान करता रहता है और बद अन्जामी बयान करता है तो वो उनकी तबाही व बर्बादी का बाइस बनता है, दूसरी सूरत में लाम पर नसब(ज़बर) होगा, यानी फ़त्हा होगा, क्योंकि ये माज़ी का सेग़ा होगा, अफ़अलुत्तफ़्ज़ील नहीं होगा, जबकि पहली सूरत में अफ़अलुत्तफ़्ज़ील होगा।

(6684) इमाम साहब ऊपर वाली हदीस़ दो और सनदों से सुहैल ही से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ رَوْحِ بْنِ الْقَاسِمِ، ح وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، جَمِيعًا عَنْ سُهَيْلٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

बाब 43 : पड़ौसी के बारे में वसिय्यत(और उससे हुस्ने सुलूक से पेश आना)

باب الْوَصِيَّةِ بِالْجَارِ وَالإِحْسَانِ إِلَيْهِ

(6685) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से हज़रत आइशा(रज़ि.) से बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जिब्रईल(अलै.) मुझे पड़ौसी के बारे में हमेशा वसिय्यत करते रहे, यहाँ तक कि मैं गुमान करने लगा कि वो उसको वारिस़ ही ठहरा देंगे।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، -وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي الثَّقَفِيَّ - سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرٍ، - وَهُوَ ابْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ -أَنَّ عَمْرَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا، سَمِعَتْ عَائِشَةَ، تَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ لَيُوَرِّثَنَّهُ " .

फ़ायदा : इस्लाम में पड़ौसी को बहुत अहमियत दी गई है और इसके अलग-अलग मर्तबे व दरजात मुक़र्रर किये गये हैं और हर पड़ौसी से उसकी हैसियत और मर्तबे के मुताबिक़ सुलूक होगा। एक सिर्फ़ घर का पड़ौसी है, लेकिन मुसलमान नहीं है, एक पड़ौसी भी है और मुसलमान भी है, नेक किरदार और

आपका ख़ैरख़्वाह और हमदर्द भी है, आपका बद ख़्वाह और दुश्मन नहीं है, एक पड़ौसी मुसलमान भी है और आपका रिश्तेदार भी है, एक आरिज़ी पड़ोसी है और एक दायमी और हर वक़्त का पड़ोसी है, जैसाकि ख़ुद क़ुरआन मजीद सूरह निसा आयत नम्बर 47 में इसकी तरफ़ इशारा फ़रमाया गया है।

(6686) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي عَمْرُو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(6687) हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिब्रईल(अलै.) मुझे हमेशा पड़ौसी से हुस्ने सुलूक की ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि मैंने गुमान किया कि वो यक़ीनन हमसाये को वारिस बना देंगे।'

(सहीह बुख़ारी : 6015)

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ " .

(6688) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अबू ज़र! जब तुम शोरबे वाला सालन पकाओ तो उसमें पानी ज़्यादा डालो और अपने पड़ौसियों का ख़्याल रखो।'

(तिर्मिज़ी : 1833, इब्ने माजह : 3362)

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، -وَاللَّفْظُ لإِسْحَاقَ - قَالَ أَبُو كَامِلٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ، الْجَوْنِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا طَبَخْتَ مَرَقَةً فَأَكْثِرْ مَاءَهَا وَتَعَاهَدْ جِيرَانَكَ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : तआहद : उनका हालात का जायज़ा लो, उनका ध्यान और ख़्याल रखो।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, अगर पड़ौसी मोहताज और ज़रूरतमन्द हो और आसूदा हाल और मालदार न हो तो उसको नज़र अन्दाज़ करके अपने काम व दहन की लज़्ज़त ही सामने रखना दुरुस्त नहीं है, बल्कि अगर ज़्यादा गुंजाइश और वुस्अत नहीं है तो शोरबा ज़्यादा करके ही, उसको कुछ दे देना चाहिये।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ إِنَّ خَلِيلِي صلى الله عليه وسلم أَوْصَانِي " إِذَا طَبَخْتَ مَرَقًا فَأَكْثِرْ مَاءَهُ ثُمَّ انْظُرْ أَهْلَ بَيْتٍ مِنْ جِيرَانِكَ فَأَصِبْهُمْ مِنْهَا بِمَعْرُوفٍ " .

(6689) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझे मेरे ख़लील(ﷺ) ने ताकीद फ़रमाई, 'जब तुम शोरबे वाला सालन पकाओ तो उसमें पानी ज़्यादा कर लो, फिर अपने पड़ौसियों में से किसी घराने का जायज़ा लो और उसके ज़रिये उनसे नेकी करो(नेकी कमाओ)।'

باب اسْتِحْبَابِ طَلاَقَةِ الْوَجْهِ عِنْدَ اللِّقَاءِ

बाब 44 : मुलाक़ात के वक़्त कुशादा रूई पसन्दीदा अमल है

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، - يَعْنِي الْخَزَّازَ - عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ لِيَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ شَيْئًا وَلَوْ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ " .

(6690) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया, 'किसी नेकी को कमतर(हक़ीर) ख़्याल न करो, अगरचे अपने भाई को कुशादा चेहरे से मिलना ही हो।'

(तिर्मिज़ी : 1833)

फ़ायदा : चूंकि नेकी, नेकी के लिये रास्ते हमवार करती है। इसलिये शैतान, इंसान को नेकी से महरूम रखने के लिये, उसके दिल में ये बात डाल देता है तूने बड़े-बड़े गुनाह किये हैं, कोई बड़ी नेकी नहीं की है, तुम्हें इस छोटी सी नेकी करने से क्या हासिल होगा। हालांकि कई बार, इख़लास और नेक निय्यत से की गई छोटी सी नेकी इंसान की काया पलट देती है, बड़ी नेकियों का रास्ता हमवार कर देती है, गुनाहों की बख़्शिश का बाइस बन जाती है और बदी(बुरे कामों) का रास्ता रोक लेती है। जैसाकि एक औरत की काया सिर्फ़ कुत्ते को पानी पिलाने से पलट गई थी, दूसरे के लिये एक काटेदार शाख़ के रास्ते से हटाने पर जन्नत की राह हमवार की थी, इसलिये किसी नेकी को कमतर समझकर उससे बाज़ नहीं रहना चाहिये।

باب اسْتِحْبَابِ الشَّفَاعَةِ فِيمَا لَيْسَ بِحَرَامٍ

बाब 45 : जो काम हराम न हो, यानी जाइज़ काम में सिफ़ारिश पसन्दीदा अमल है

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، وَحَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ بُرَيْدِ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَتَاهُ طَالِبُ حَاجَةٍ أَقْبَلَ عَلَى جُلَسَائِهِ فَقَالَ " اشْفَعُوا فَلْتُؤْجَرُوا وَلْيَقْضِ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا أَحَبَّ " .

(6691) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास जब कोई ज़रूरतमन्द आता, आप अपने साथियों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते, 'सिफ़ारिश करके, अज्र कमाओ, अल्लाह अपने नबी की ज़बान से वही फ़ैसला करवायेगा, जो उसे पसंद होगा।'

(सहीह बुख़ारी : 1432, 6027, 7476, अबू दाऊद : 5131, तिर्मिज़ी : 2672)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, अगर किसी इंसान के बस में हो कि वो अपनी इ़ज़्ज़त व एहतिराम या मक़ाम व मर्तबे की बिना पर किसी की जाइज़ काम में सिफ़ारिश कर सकता है, वो आ़म लोगों से या ओ़हदे और मन्सब वालों से किसी का जाइज़ काम करवा सकता है, किसी मुसीबत से छुड़ा सकता है तो उसे सिफ़ारिश करके स़वाब हासिल करना चाहिये। सिफ़ारिश क़ुबूल हो या न हो, उसको स़वाब मिल जायेगा, क्योंकि हर सूरत में सिफ़ारिश का मानना ज़रूरी नहीं है, इसमें भी मसालेह(मस्लिहतों) और हिक्मतों का लिहाज़ रखना ज़रूरी है।

باب اسْتِحْبَابِ مُجَالَسَةِ الصَّالِحِينَ وَمُجَانَبَةِ قُرَنَاءِ السَّوْءِ

बाब 46 : नेक लोगों की हमनशीनी(साथ उठना-बैठना) पसन्दीदा है, बुरे साथियों से बचना चाहिये

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح

(6692) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'अच्छे साथी और बुरे साथी की मिस़ाल तो बस

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّمَا مَثَلُ الْجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالْجَلِيسِ السَّوْءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيرِ فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً وَنَافِخُ الْكِيرِ إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ رِيحًا خَبِيثَةً "

मुश्क(कस्तूरी) उठाने वाले और भट्टी धोंकने वाले की तरह है। कस्तूरी उठाने वाला या तो आपको तोहफ़ा देगा या आप उससे ख़रीद लेंगे या उससे तुम्हें अच्छी ख़ुश्बू मिलेगी और भट्टी धोंकने वाला या तो तुम्हारे कपड़े जला देगा या तुम्हें उससे बदबू पहुँचेगी।'

(सहीह बुख़ारी :-2101, 5534)

मुफ़रदातुल हदीस़ : कीर : भट्टी के ऊपर आग जलाने के लिये जो मश्क चस्पाँ की जाती है और बक़ौल कुछ इसका इत्लाक़ भट्टी पर भी हो जाता है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, अच्छे और नेक लोगों की हमनशीनी और रिफ़ाक़त ही इख़्तियार करना चाहिये क्योंकि उनके पास बैठने से अच्छी मालूमात ही हासिल होंगी, नेकी का जज़्बा पैदा होगा या कम से कम इंसान बुराई ही से महफ़ूज़ रहेगा और अगर बुरे लोगों को दोस्त बनायेगा तो उनसे बुरी बातें और बुरे मन्सूबे ही सीखेगा और बदी(ग़लत काम) का रुझान पैदा होगा।

باب فَضْلِ الإِحْسَانِ إِلَى الْبَنَاتِ

बाब 47 : बेटियों के साथ एहसान(हुस्ने सुलूक) करने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُهْزَاذَ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَزْمٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَهْرَامَ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ - وَاللَّفْظُ لَهُمَا - قَالاَ

(6693) नबी(ﷺ) की ज़ौजा हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि मेरे पास एक औरत आई, उसके साथ उसकी दो बेटियाँ थीं, चुनाँचे उसने मुझसे माँगा। मेरे पास एक खजूर के सिवा कुछ न था, मैंने वही उसे दे दी। तो उसने उसको लेकर अपनी दोनों बेटियों में बांट दिया और ख़ुद उससे कुछ न खाया, फिर उठी और अपनी बेटियों के साथ

أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، أَنَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ جَاءَتْنِي امْرَأَةٌ وَمَعَهَا ابْنَتَانِ لَهَا فَسَأَلَتْنِي فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِي شَيْئًا غَيْرَ تَمْرَةٍ وَاحِدَةٍ فَأَعْطَيْتُهَا إِيَّاهَا فَأَخَذَتْهَا فَقَسَمَتْهَا بَيْنَ ابْنَتَيْهَا وَلَمْ تَأْكُلْ مِنْهَا شَيْئًا ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ وَابْنَتَاهَا فَدَخَلَ عَلَىَّ النَّبِيُّ ﷺ فَحَدَّثْتُهُ حَدِيثَهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ "مَنِ ابْتُلِيَ مِنَ الْبَنَاتِ بِشَىْءٍ فَأَحْسَنَ إِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ".

चली गई। सो नबी(ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये तो मैंने आपको उसका क़िस्सा सुनाया। चुनाँचे नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसका किसी बेटी के ज़रिये इम्तिहान लिया जाये और वो उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आये तो वो उसके लिये आग से पर्दा बनेंगी।'

(सहीह बुख़ारी : 1418, 5995, तिर्मिज़ी : 1915)

फ़ायदा : इस हदीस में बच्चियों की परवरिश को इब्तिला यानी आज़माइश और इम्तिहान से ताबीर किया गया है, क्योंकि उनकी परवरिश की फ़िक्र और एहतिमाम ज़्यादा करना पड़ता है और कसबे मआश में बच्चों के मुक़ाबले में उनका हिस्सा कम होता है, उनके लिये बर(जोड़ी) तलाश करने के लिये भी मशक़्क़त और मेहनत उठानी पड़ती है और शादी के बाद भी उनका ख़्याल रखना पड़ता है, इस वजह से तबई तौर पर लोग उनको बच्चों के मुक़ाबले में कम अहमियत देते हैं, इसलिये उनसे हुस्ने सुलूक की ख़ुसूसी तल्क़ीन की गई है, वरना एहसान तो मुज़क्कर व मुअन्नस(मेल-फिमेल) हर क़िस्म की औलाद से मत्लूब है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُضَرَ - عَنِ ابْنِ الْهَادِ، أَنَّ زِيَادَ، بْنَ أَبِي زِيَادٍ مَوْلَى ابْنِ عَيَّاشٍ حَدَّثَهُ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ، سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ، عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ جَاءَتْنِي مِسْكِينَةٌ تَحْمِلُ ابْنَتَيْنِ لَهَا فَأَطْعَمْتُهَا ثَلاَثَ تَمَرَاتٍ

(6694) हज़रत आइशा(रज़ि.) बयान करती हैं कि उनके पास एक मिस्कीन औरत अपनी दो बच्चियों को उठाये हुए आई तो मैंने उसको खाने के लिये तीन खजूरें दीं। तो उसने उनमें से हर एक को एक खजूर दे दी और एक खजूर खाने के लिये अपने मुँह की तरफ़ उठाई, तो दोनों बच्चियों ने उसके खाने की भी ख़्वाहिश की, चुनाँचे उसने वो खजूर जिसे वो

ख़ुद खाना चाहती थी, उन दोनों के दरम्यान बांट दी। तो मुझे उसकी इस हालत से बहुत तअज्जुब हुआ, चुनाँचे मैंने उसके इस काम का तज़्किरा रसूलुल्लाह(ﷺ) से किया तो आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला ने उसके लिये इस अमल पर जन्नत वाजिब ठहरा दी या इसके ज़रिये उसको आग से आज़ाद फ़रमा दिया।'

فَأَعْطَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا تَمْرَةً وَرَفَعَتْ إِلَى فِيهَا تَمْرَةً لِتَأْكُلَهَا فَاسْتَطْعَمَتْهَا ابْنَتَاهَا فَشَقَّتِ التَّمْرَةَ الَّتِي كَانَتْ تُرِيدُ أَنْ تَأْكُلَهَا بَيْنَهُمَا فَأَعْجَبَنِي شَأْنُهَا فَذَكَرْتُ الَّذِي صَنَعَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَوْجَبَ لَهَا بِهَا الْجَنَّةَ أَوْ أَعْتَقَهَا بِهَا مِنَ النَّارِ "

फ़ायदा : अगर ये वाक़िया अलग नहीं है, ऊपर वाला वाक़िया ही है तो फिर ऊपर वाली हदीस़ में एक खजूर का तज़्किरा इसलिये है कि उनमें से हर एक को एक खजूर ही मिली थी और यहाँ मज्मूई ऐतबार से तीन कह दिया गया है या चूंकि तक़सीम का ताल्लुक़ अपने हिस्से में आने वाली खजूर से है इसलिये ऊपर वाली हदीस़ में सिर्फ़ तक़सीम होने वाली खजूर का तज़्किरा किया, बच्चियों को मिलने वाली दोनों खजूरों को नज़र अन्दाज़ा कर दिया गया है।

(6695) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने दो बच्चियों का उनके बालिग़ होने तक ख़र्चा बर्दाश्त किया, उनकी परवरिश की, क़यामत के दिन मैं और वो इस तरह आयेंगे' और आपने अपनी उंगलियों को मिला लिया।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ حَتَّى تَبْلُغَا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنَا وَهُوَ " . وَضَمَّ أَصَابِعَهُ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से बज़ाहिर ये महसूस होता है कि ये मक़ाम व मर्तबा उसको हासिल होगा, जिसने दो बच्चियों का नानो-नफ़्क़ा और दूसरे ख़र्च बर्दाश्त किये, लेकिन पहली हदीस़ और दूसरी हदीसों से मालूम होता है कि एक बच्ची की परवरिश भी अज्र व स़वाब और फ़ज़ीलत का काम है और ज़ाहिर है ज़्यादा बच्चियों की फ़िक्र व एहतिमाम अज्र व स़वाब और दर्जे व मर्तबे में रिफ़अत(बुलंदी) का बाइस़ बनेगा, क्योंकि अज्र व स़वाब के इज़ाफ़े में मेहनत व मशक़्क़त में इज़ाफ़े को दख़ल है।

बाब 48 : औलाद की वफ़ात पर हुसूले सवाब की निय्यत की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ مَنْ يَمُوتُ لَهُ وَلَدٌ فَيَحْتَسِبُهُ

(6696) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) नबी(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जिस मुसलमान के तीन बच्चे फ़ौत होंगे, उसे आग सिर्फ़ क़सम पूरा करने के लिये छूएगी।'

(सहीह बुख़ारी : 6656, तिर्मिज़ी : 1060, नसाई : 1874)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَمُوتُ لأَحَدٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ فَتَمَسَّهُ النَّارُ إِلاَّ تَحِلَّةَ الْقَسَمِ " .

फ़ायदा : इल्ला तहिल्लतल् क़सम : से मुराद अल्लाह का फ़रमान है, 'तुममें से हर एक को उससे गुज़रना है, ये अल्लाह का तयशुदा वादा है।'(सूरह मरयम : 71) और उस पर से गुज़रने वालों की अलग-अलग क़िस्में हैं, जिनके लिये हसना तय है, वो आग की आवाज़ भी नहीं सुनेंगे।(सूरह अम्बिया : 102) इस तरह जिसके तीन बच्चे फ़ौत हुए और उसने अल्लाह की रज़ा और हुसूले सवाब की ख़ातिर सब्र किया, वो बड़ी तेज़ी से आग के ऊपर से गुज़र जायेगा।

(6697) इमाम साहब यही रिवायत और उस्तादों से भी बयान करते हैं, लेकिन सुफ़ियान की रिवायत में फ़तमस्सहुन्नार की जगह फ़यलिजन्नार है और यहाँ वुलूज से मुराद मुरूर(गुज़रना) ही है।

(सहीह बुख़ारी : 1253, इब्ने माजह : 1603)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، بْنُ عُيَيْنَةَ ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَابْنُ، رَافِعٍ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، . بِإِسْنَادِ مَالِكٍ وَبِمَعْنَى حَدِيثِهِ إِلاَّ أَنَّ فِي حَدِيثِ سُفْيَانَ " فَيَلِجَ النَّارَ إِلاَّ تَحِلَّةَ الْقَسَمِ " .

(6698) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अन्सार की औरतों से फ़रमाया, 'तुममें से जिस औरत के तीन बच्चे फ़ौत हुए और उसने सवाब हासिल करने की निय्यत की, तो वो जन्नत में दाख़िल होगी।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لِنِسْوَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ " لاَ يَمُوتُ لإِحْدَاكُنَّ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ فَتَحْتَسِبَهُ إِلاَّ دَخَلَتِ

الْجَنَّةَ " . فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ أَوِ اثْنَيْنِ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " أَوِ اثْنَيْنِ " .

फ़ायदा : एक बच्चे के बारे में सवाल करने की कोई हदीस़ सहीह नहीं है, मगर अबू हुरैरह(रज़ि.) की ये रिवायत सहीह है, 'अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, मैं अपने जिस मोमिन बन्दे की अहले दुनिया से महबूब शख़्सियत फ़ौत करता हूँ और वो उस पर मेरी रज़ा चाहता है तो मैं उसको जन्नत में दाख़िल करूँगा।'(सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़)

(6699) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी(रज़ि.) बयान करते हैं, एक औरत रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी बातें तो मर्द ले गये तो आप हमें भी अपनी तरफ़ से एक दिन इनायत फ़रमायें, उसमें हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो सकें, अल्लाह ने जो कुछ आपको सिखाया है, आप हमें भी सिखायें। आपने फ़रमाया, 'फ़लाँ-फ़लाँ दिन जमा हो जाना।' तो औरतें जमा हो गईं, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाये और अल्लाह ने जो तालीम आपको दी है उन्हें भी सिखाई। फिर फ़रमाया, 'तुममें से जो भी औरत अपने तीन बच्चे आगे भेजती है, वो उसके लिये आग से आड़ बनेंगे।' तो एक औरत ने कहा, और दो और दो और दो? तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'और दो और दो और दो।' (सहीह बुख़ारी : 1249, 7310)

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، ذَكْوَانَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ تُعَلِّمُنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللَّهُ . قَالَ " اجْتَمِعْنَ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا " . فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللَّهُ ثُمَّ قَالَ " مَا مِنْكُنَّ مِنِ امْرَأَةٍ تُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ وَلَدِهَا ثَلاَثَةً إِلاَّ كَانُوا لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ " . فَقَالَتِ امْرَأَةٌ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ " .

(6700) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं कि आपने फ़रमाया, 'ऐसे तीन बच्चे जो बालिग़ न हुए हों या गुनाह की उम्र को न पहुँचे हों।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ، اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

الأَصْبَهَانِيِّ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ . بِمِثْلِ مَعْنَاهُ وَزَادَا جَمِيعًا عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ ثَلاَثَةً لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ".

फ़ायदा : वालिदैन छोटे बच्चों से ज़्यादा प्यार व मुहब्बत करते हैं, इसलिये उनके मरने पर ग़म व हुज़्न भी ज़्यादा होता है, अक्सर उलमा के नज़दीक ये क़ैद एहतिराज़ी है कि नाबालिग़ बच्चों वाला सवाब बालिग़ बच्चों के मरने पर नहीं मिलेगा। लेकिन कुछ का ख़्याल है, छोटा बच्चा वालिदैन पर बोझ होता है, अगर उसके मरने पर ये सवाब है तो जो बच्चा माँ-बाप का बोझ उठाता है और घर के नज़्म व नस्क़ को सम्भालता है, उस पर बिल्औला(कहीं ज़्यादा) ये सवाब होगा, क्योंकि उसके मरने का ग़म ज़्यादा होगा।

حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - قَالاَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي السَّلِيلِ، عَنْ أَبِي حَسَّانَ، قَالَ قُلْتُ لأَبِي هُرَيْرَةَ إِنَّهُ قَدْ مَاتَ لِيَ ابْنَانِ فَمَا أَنْتَ مُحَدِّثِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِحَدِيثٍ تُطَيِّبُ بِهِ أَنْفُسَنَا عَنْ مَوْتَانَا قَالَ قَالَ نَعَمْ " صِغَارُهُمْ دَعَامِيصُ الْجَنَّةِ يَتَلَقَّى أَحَدُهُمْ أَبَاهُ - أَوْ قَالَ أَبَوَيْهِ - فَيَأْخُذُ بِثَوْبِهِ - أَوْ قَالَ بِيَدِهِ - كَمَا آخُذُ أَنَا بِصَنِفَةِ ثَوْبِكَ هَذَا فَلاَ يَتَنَاهَى - أَوْ قَالَ فَلاَ يَنْتَهِي - حَتَّى يُدْخِلَهُ اللَّهُ وَأَبَاهُ الْجَنَّةَ " . وَفِي رِوَايَةِ سُوَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو السَّلِيلِ.

(6701) अबू हस्सान(रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से कहा, वाक़िया ये है कि मेरे दो बच्चे मर गये हैं, तो आप क्या हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) से ऐसी हदीस नहीं सुनायेंगे, जिससे हमारे दिलों को हमारे मरने वालों के बारे में तसल्ली हो? उन्होंने कहा, हाँ! आपने फ़रमाया, 'छोटे बच्चे जन्नत के कोरे(पानी के कीड़े) हैं, उनमें से कोई अपने बाप को' या फ़रमाया, 'वालिदैन को मिलेगा तो उसका कपड़ा पकड़ लेगा।' या फ़रमाया, 'उसका हाथ पकड़ लेगा, जिस तरह मैं तुम्हारे इस कपड़े के किनारे को पकड़ा हुआ हूँ तो वो उस वक़्त रुकेगा नहीं या बाज़ नहीं आयेगा, यहाँ तक कि अल्लाह उसे और उसके बाप को जन्नत में दाख़िल कर देगा।' सुवेद की रिवायत में है, उसने कहा, क्या आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) से कुछ सुना है, जिससे आप हमें हमारे फ़ौत शुदगान के बारे में तसल्ली दे सकें।

मुफ़रदातुल हदीस़ : दआमीस : दुअ्मूस की जमा है, पानी के उन कीड़ों को कहते हैं, जो उससे अलग नहीं होते, यानी ये छोटे बच्चे जन्नत से अलग नहीं होंगे। **सनिफ़ह :**(कपड़े का) किनारा। **फ़ला यतनाहा या फ़ला यन्तही :** रुकेगा नहीं, बाज़ नहीं आयेगा, यानी अपने वालिद के दामन या हाथ को छोड़ेगा नहीं।

(6702) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से नक़ल करते हैं, क्या आपने नबी(ﷺ) से कोई ऐसी हदीस़ सुनी है, जिससे आप हमारे नफ़्सों को तसल्ली दे सकें? उसने(अबू हुरैरह ने) कहा, हाँ!

وَحَدَّثَنِيهِ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - عَنِ التَّيْمِيِّ بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فَهَلْ سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ شَيْئًا تُطَيِّبُ بِهِ أَنْفُسَنَا عَنْ مَوْتَانَا قَالَ نَعَمْ .

(नसाई : 1876)

मुफ़रदातुल हदीस़ : हिज़ार : बाड़, आड़, वो चार दीवारी जो बाग़ या मवेशियों की हिफ़ाज़त के लिये बनाई जाये।

(6703) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक औरत नबी(ﷺ) के पास अपना एक बच्चा लेकर आई और दरख़्वास्त की, ऐ अल्लाह के नबी! आप इसके लिये अल्लाह से दुआ फ़रमायें, मैं अपने तीन बच्चे दफ़न कर चुकी हूँ। आपने फ़रमाया, 'क्या तूने तीन बच्चे दफ़न किये हैं?' उसने कहा, हाँ! आपने फ़रमाया, 'तूने आग से मज़बूत बाड़ बना ली है।' उमर बिन हफ़्स ने अन जद्दिही अपने दादा से कहा बाक़ी रावियों ने सिर्फ़ अन तल्क़िन कहा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ -وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنُونَ ابْنَ غِيَاثٍ ح وَحَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ، بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ جَدِّهِ، طَلْقِ بْنِ مُعَاوِيَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أَتَتِ امْرَأَةٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم بِصَبِيٍّ لَهَا فَقَالَتْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ لَهُ فَلَقَدْ دَفَنْتُ ثَلاَثَةً قَالَ " دَفَنْتِ ثَلاَثَةً " . قَالَتْ نَعَمْ . قَالَ " لَقَدِ احْتَظَرْتِ بِحِظَارٍ شَدِيدٍ مِنَ النَّارِ " . قَالَ عُمَرُ مِنْ بَيْنِهِمْ عَنْ جَدِّهِ . وَقَالَ الْبَاقُونَ عَنْ طَلْقٍ . وَلَمْ يَذْكُرُوا الْجَدَّ .

फ़ायदा : इन हदीसों से साबित होता है, मुसलमानों के नाबालिग़ बच्चे जन्नती हैं और एक मोमिन इंसान के लिये दोज़ख़ से हिफ़ाज़त का ज़रिया हैं और नाबालिग़ बच्चा चूंकि मासूम होता है, इसलिये जिस तरह वो मचल सकता है, बालिग़ बच्चा उस तरह मचल कर अपने वालिदैन की निजात के लिये इसरार नहीं कर सकता, उसे ख़ुद अपनी फ़िक्र होती है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ طَلْقِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، النَّخَعِيِّ أَبِي غِيَاثٍ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِابْنٍ لَهَا فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ يَشْتَكِي وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْهِ قَدْ دَفَنْتُ ثَلاَثَةً . قَالَ " لَقَدِ احْتَظَرْتِ بِحِظَارٍ شَدِيدٍ مِنَ النَّارِ " . قَالَ زُهَيْرٌ عَنْ طَلْقٍ . وَلَمْ يَذْكُرِ الْكُنْيَةَ .

(6704) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, एक औरत नबी(ﷺ) के पास अपना बेटा लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! ये बीमार है और मुझे इसके बारे में डर है, मैं तीन बच्चे दफ़न कर चुकी हूँ। आपने फ़रमाया, 'तूने आग से एक मुस्तहकम(मज़बूत) बाड़ या रोक बना ली है।' ज़ुहैर ने अन तल्क़िन कहा और कुन्नियत अबू ग़ियास का तज़्किरा नहीं किया।

باب إِذَا أَحَبَّ اللَّهُ عَبْدًا حَبَّبَهُ إِلَى عِبَادِهِ

बाब 49 : अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है, उसे अपने बन्दों का महबूब बना देता है

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا دَعَا جِبْرِيلَ فَقَالَ إِنِّي أُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبَّهُ - قَالَ - فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ ثُمَّ يُنَادِي فِي السَّمَاءِ فَيَقُولُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ . فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ - قَالَ - ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ . وَإِذَا أَبْغَضَ عَبْدًا دَعَا

(6705) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है, जिब्रईल(अलै.) को तलब करके फ़रमाता है, मैं फ़लाँ से मुहब्बत करता हूँ, तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे जिब्रईल(अलै.) उससे मुहब्बत करते हैं, फिर आसमान में मुनादी करते हैं कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है, तुम भी उससे मुहब्बत करो, सो आसमान वाले भी उससे मुहब्बत

جِبْرِيلَ فَيَقُولُ إِنِّي أُبْغِضُ فُلاَنًا فَأَبْغِضْهُ - قَالَ - فَيُبْغِضُهُ جِبْرِيلُ ثُمَّ يُنَادِي فِي أَهْلِ السَّمَاءِ إِنَّ اللَّهَ يُبْغِضُ فُلاَنًا فَأَبْغِضُوهُ - قَالَ - فَيُبْغِضُونَهُ ثُمَّ تُوضَعُ لَهُ الْبَغْضَاءُ فِي الأَرْضِ " .

करते हैं, फिर ज़मीन में भी उसके लिये क़ुबूलियत रख दी जाती है और जब वो किसी बन्दे से बुग़्ज़ रखता है, जिब्रईल(अलै.) को तलब करके फ़रमाता है, मैं फ़लाँ से बुग़्ज़ रखता हूँ, तुम भी उससे बुग़्ज़ रखो। चुनाँचे जिब्रईल उससे बुग़्ज़ रखता है, तो फिर आसमान वालों में ऐलान करता है, अल्लाह फ़लाँ से बुग़्ज़ रखता है, तुम भी उससे बुग़्ज़ रखो, तो वो उससे बुग़्ज़ रखते हैं, फिर उसके लिये ज़मीन वालों में बुग़्ज़ रख दिया जाता है।'

फ़ायदा : अल्लाह तआला अपने जिस नेक और सालेह बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसके लिये आसमान वालों में भी मुहब्बत का जज़्बा पैदा कर देता है और अहले ज़मीन में से भी अल्लाह के नेक और पारसा बन्दे, उससे मुहब्बत करते हैं, अगरचे आम लोग और बदकार लोग उसको अपने दरवाज़े से धक्के दें, इसलिये ये रुब्बा अश्अस अग़बर वाली हदीस के मुनाफ़ी(ख़िलाफ़) नहीं है, क्योंकि कुनद हम जिन्स बेह हम जिन्स परवाज़, यही हालत बुग़्ज़ की है और अल्लाह की मुहब्बत व बुग़्ज़ उसकी ख़ालिक़ियत के शायाने शान है और मख़्लूक़ का बुग़्ज़ व मुहब्बत उनके मक़ाम के मुताबिक़ है, इसमें तावील की ज़रूरत नहीं है कि अल्लाह की मुहब्बत से मुराद उसके लिये ख़ैर, हिदायत, इनाम व एहसान व रहमत का इरादा करना है और बुग़्ज़ से मुराद उसको सज़ा देने, हिदायत से महरूम करने का इरादा करना है। अल्लाह की रहमत व बुग़्ज़ उसकी शान के मुताबिक़ है, उसकी कैफ़ियत का जानना हमारे लिये मुम्किन नहीं है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - وَقَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ، ح وَحَدَّثَنَاهُ سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْثَرٌ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، - وَهُوَ ابْنُ أَنَسٍ - كُلُّهُمْ عَنْ سُهَيْلٍ، بِهَذَا

(6706) इमाम साहब यही हदीस अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से, सुहैल ही की सनद से बयान करते हैं, लेकिन अला इब्ने मुसय्यब की रिवायत में बुग़्ज़ का ज़िक्र नहीं है।

(तिर्मिज़ी : 3161)

الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ حَدِيثَ، الْعَلاَءِ بْنِ الْمُسَيَّبِ لَيْسَ فِيهِ ذِكْرُ الْبُغْضِ .

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، قَالَ كُنَّا بِعَرَفَةَ فَمَرَّ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ وَهُوَ عَلَى الْمَوْسِمِ فَقَامَ النَّاسُ يَنْظُرُونَ إِلَيْهِ فَقُلْتُ لأَبِي يَا أَبَتِ إِنِّي أَرَى اللَّهَ يُحِبُّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ . قَالَ وَمَا ذَاكَ قُلْتُ لِمَا لَهُ مِنَ الْحُبِّ فِي قُلُوبِ النَّاسِ . فَقَالَ بِأَبِيكَ أَنْتَ سَمِعْتَ أَبَا هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ عَنْ سُهَيْلٍ .

(6707) सुहैल बिन अबी सालेह कहते हैं, हम अरफ़े में थे कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़(रह.) गुज़रे, जबकि वो अमीरे हज थे, चुनाँचे लोग खड़े होकर उनको देखने लगे, तो मैंने अपने बाप से कहा, ऐ अब्बा जान! मैं समझता हूँ, अल्लाह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से मुहब्बत करता है। उसने कहा, ये कैसे? मैंने कहा, क्योंकि लोगों के दिलों में उससे मुहब्बत है। उन्होंने कहा, तूने क्या ही ख़ूब कहा, मैंने हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान करते हुए सुना है, फिर ऊपर वाली हदीस़ बयान की।

फ़ायदा : अबी-क अन्-त अरबी मुहावरे की रू से ये मदह तारीफ़ का कलिमा है, मानी ये होता है नअम मा कुल्त तूने क्या ही अच्छी बात कही।

باب الأَرْوَاحِ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ

बाब 50 : अर्वाह मुज्तमअ(झुण्ड-झुण्ड) लश्कर हैं

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " الأَرْوَاحُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا ائْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اخْتَلَفَ".

(6708) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'रूह जमा किये गये लश्कर हैं, जिनमें मअरिफ़त जान-पहचान पैदा हो गई, वो आपस में जुड़ गये, उनमें उल्फ़त पैदा हो गई और जिनमें अज्नबियत रही, उनमें इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया।'

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने अर्वाह को अलग-अलग अन्वाअ व अक़्साम(क़िस्मों) में पैदा किया है और हर नौअ व क़िस्म की सिफ़ात व ख़ुसूसियात अलग-अलग हैं, इसलिये जिनकी सिफ़ात व ख़ुसूसियात में यकसानियत और मुवाफ़िक़त है, दुनिया में उनमें आपस में उल्फ़त व मुहब्बत रहती है और जिनकी सिफ़ात अलग-अलग और जुदा-जुदा हैं उनमें दुनिया में जिस्मों में आकर भी उल्फ़त व मुहब्बत पैदा नहीं होती, वो अलग-अलग ही रहती हैं, इसलिये अगर नेक किरदार और अच्छे अख़लाक़ के लोगों में आपस में नफ़रत पैदा हो जाये तो उन्हें सबबे नफ़रत को मालूम करके, उस नफ़रत को ख़त्म करना चाहिये।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ بُرْقَانَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، بِحَدِيثٍ يَرْفَعُهُ قَالَ " النَّاسُ مَعَادِنُ كَمَعَادِنِ الْفِضَّةِ وَالذَّهَبِ خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقُهُوا وَالأَرْوَاحُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا ائْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اخْتَلَفَ " .

(6709) हज़रत अबू हुरैरह(रज़ि.) मरफ़ूअन बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'लोग सोने-चाँदी की मअदिन(कान) की तरह मअ्दनियात हैं, उनमें जो लोग जाहिलिय्यत के दौर में बेहतर थे, वो इस्लाम में भी बेहतर हैं, बशर्तेकि दीन की सूझ-बूझ पैदा कर लें और अर्वाह मुज्तमअ(इकट्ठा) लश्कर हैं, चुनाँचे जिनमें जान-पहचान थी, उनमें उल्फ़त हो गई और जिनमें ग़ैरत थी, अज्नबियत थीं वो अलग-अलग रहेंगी।'

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) ने लोगों को मअदनियात से तश्बीह दी है, जिनकी सिफ़ात व ख़ुसूसियात जुदा-जुदा हैं, इस तरह लोगों की तबीअतें और मिज़ाज अलग-अलग हैं और उनकी क़द्रो-क़ीमत उनकी ख़ूबियों और सिफ़ात के मुताबिक़ है।

باب الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ

बाब 51 : इंसान उन्ही लोगों के साथ होगा, जिनसे वो मुहब्बत करता है

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا، قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَتَى

(6710) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) से रिवायत है कि एक आराबी ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा, क़यामत कब होगी? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उससे फ़रमाया, 'तूने उसके लिये क्या तैयार किया है?' उसने

السَّاعَةُ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا أَعْدَدْتَ لَهَا " . قَالَ حُبَّ اللَّهِ وَرَسُولِهِ . قَالَ " أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ " .

जवाब दिया, अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत। आपने फ़रमाया, 'तू उन्ही के साथ होगा, जिनसे तुम्हें मुहब्बत है।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, क़यामत कब होगी? ये अहम और क़ाबिले सवाल चीज़ नहीं है, अहमियत उस इस्तिअ़्दाद और तैयारी को हासिल है, जो क़यामत के एहसास और जवाबदेही के लिये की जाती है और उस इस्तिअ़दाद और तैयारी के लिये अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत और उनके इताअ़त गुज़ार और फ़रमांबरदार होने को अहमियत हासिल है, क्योंकि इंसान जिनसे मुहब्बत रखता है, उन्हीं के तौर-तरीक़े और उस्लूबे हयात को अपनाने की कोशिश करता है और मुहब्बत की कसौटी और मैयार, इत्तिबाअ़ और पैरवी ही है और इंसान जिनका तौर-तरीक़ा अपनाता है, अन्जाम भी उन्ही के साथ होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَتَى السَّاعَةُ قَالَ " وَمَا أَعْدَدْتَ لَهَا" . فَلَمْ يَذْكُرْ كَبِيرًا . قَالَ وَلَكِنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ . قَالَ " فَأَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ " .

(6711) हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क़यामत कब होगी? आपने फ़रमाया, 'तूने उसके लिये क्या तैयारी की है?' तो उसने कोई बड़ा अमल बयान नहीं किया, उसने कहा, लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। आपने फ़रमाया, 'तो तू उन्ही के साथ होगा, जिनसे तू मुहब्बत करता है।'

حَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَجُلاً، مِنَ الأَعْرَابِ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ مَا أَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيرٍ أَحْمَدُ عَلَيْهِ نَفْسِي .

(6712) इमाम साहब यही रिवायत अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं कि एक अ़राबी(देहाती) इंसान रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आगे इस फ़र्क़ के साथ ऊपर वाली रिवायत है कि उसने कहा, मैंने उसके लिये ज़्यादा तैयारी नहीं की, जिस पर मैं अपनी तारीफ़ कर सकूँ।

(6713) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क़यामत कब है? आपने पूछा, 'और तूने क़यामत के लिये क्या तैयार किया है?' उसने कहा, अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत। आपने फ़रमाया, 'तो तू उन्ही के साथ होगा, जिनसे तुझे मुहब्बत है।' हज़रत अनस(रज़ि.) कहते हैं, इस्लाम लाने के बाद हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) के इस फ़रमान, 'तो तू उन्ही के साथ होगा जिनसे तुझे मुहब्बत है' से बढ़कर किसी चीज़ से ख़ुशी नहीं होती। हज़रत अनस(रज़ि.) बयान करते हैं, चूंकि मैं अल्लाह, उसके रसूल और अबू बकर व उमर(रज़ि.) से मुहब्बत करता हूँ, इसलिये उनके साथ का उम्मीदवार हूँ, अगरचे उन जैसे आमाल नहीं कर सके।

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَتَى السَّاعَةُ قَالَ " وَمَا أَعْدَدْتَ لِلسَّاعَةِ " . قَالَ حُبَّ اللَّهِ وَرَسُولِهِ قَالَ " فَإِنَّكَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ " . قَالَ أَنَسٌ فَمَا فَرِحْنَا بَعْدَ الإِسْلاَمِ فَرَحًا أَشَدَّ مِنْ قَوْلِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " فَإِنَّكَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ " . قَالَ أَنَسٌ فَأَنَا أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ فَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِأَعْمَالِهِمْ .

(सहीह बुख़ारी : 3688)

नोट : इस किताब की ख़िदमत करने वाला, इसकी नश्रो-इशाअत में हिस्सा लेने वाले तमाम अफ़राद हज़रत अनस(रज़ि.) के क़ौल की ताईद व तस्दीक़ करते हुए यही कहते हैं, हम अल्लाह, उसके रसूल, उसके ख़ुलफ़ा, सहाबा किराम और मुहद्दिसीने इज़ाम से दिल की अथाह गहराइयों से मुहब्बत करते हैं, अल्लाह तआला हमे उनके नक़्शे-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाये और उन जैसे आमाल न कर सकने के बावजूद अल्लाह की रहमत व फ़ज़्ल से उनके साथ और रिफ़ाक़ात की उम्मीद रखते हैं, आमीन। और शाइर का क़ौल है, 'उहिब्बुस्सालिहीन व लस्तु मिन्हुम, लअ़ल्लल्लाहु, यरज़ुक़नी सलाहन!

(6714) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, लेकिन इसमें हज़रत अनस(रज़ि.) का ये क़ौल नक़ल नहीं करते

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْغُبَرِيُّ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ

مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ أَنَسٍ فَأَنَا أُحِبُّ . وَمَا بَعْدَهُ.

कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ, आख़िर तक।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ بَيْنَمَا أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ، صلى الله عليه وسلم خَارِجَيْنِ مِنَ الْمَسْجِدِ فَلَقِينَا رَجُلاً عِنْدَ سُدَّةِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَتَى السَّاعَةُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا أَعْدَدْتَ لَهَا " . قَالَ فَكَأَنَّ الرَّجُلَ اسْتَكَانَ ثُمَّ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَعْدَدْتُ لَهَا كَبِيرَ صَلاَةٍ وَلاَ صِيَامٍ وَلاَ صَدَقَةٍ وَلَكِنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ . قَالَ " فَأَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ " .

(6715) हज़रत अनस बिन मालिक(रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि मैं और रसूलुल्लाह(ﷺ) मस्जिद से निकल रहे थे कि हमें एक आदमी मस्जिद के सायबान के पास मिला और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क़यामत कब है? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'तूने उसके लिये क्या तैयारी की है?' तो उससे गोया वो आदमी झेंप या दब गया, फिर उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने उसके लिये कोई ज़्यादा नमाज़, रोज़े या सदक़ात तैयार नहीं किये, लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। आपने फ़रमाया, 'सो तुझे उन्हीं का साथ मिलेगा, जिनसे तू मुहब्बत करता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6171, 7153)

मुफ़रदातुल हदीस़ : सद्दतुल मस्जिद : मस्जिद के दरवाज़े का सायबान या दरवाज़ा बंद करने का गेट। **इस्तकान :** बेबसी और बेचारगी ज़ाहिर की, दब गया या झुक गया।

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर(रह.) के बक़ौल ये आदमी हज़रत ज़ुल्ख़ुवेसिरह यमानी(रज़ि.) थे।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ الْيَشْكُرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ، جَبَلَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِهِ .

(6716) इमाम साहब एक और उस्ताद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، ح
وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعْتُ أَنَسًا، ح
وَحَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - يَعْنِي ابْنَ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ .

(6717) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से, हज़रत अनस(रज़ि.) की ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 6167)

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَرَى فِي رَجُلٍ أَحَبَّ قَوْمًا وَلَمَّا يَلْحَقْ بِهِمْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ " .

(6718) हज़रत अ़ब्दुल्लाह(बिन मसऊ़द रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर पूछने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपका उस आदमी के बारे में क्या ख़याल है, जो कुछ लोगों से मुहब्बत रखता है और अभी तक उन जैसे अ़मल नहीं कर सका? रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'इंसान का अन्जाम उन्हीं के साथ होगा, जिनसे वो मुहब्बत करता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6168, 6169)

फ़ायदा : ये सवाल करने वाले अलग-अलग सहाबा किराम, अबू मूसा, सफ़्वान बिन कुदामा और अबू ज़र(रज़ि.) वग़ैरह हैं(फ़तहुल बारी, बहवाला तक्मिला जिल्द 5, पेज नं. 465)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنِيهِ بِشْرُ، بْنُ

(6719) इमाम साहब यही रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

خَالِدٍ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الْجَوَّابِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ قَرْمٍ، جَمِيعًا عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(6720) हज़रत अबू मूसा(रज़ि.) बयान करते हैं, नबी(ﷺ) के पास एक आदमी आया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

(सहीह बुख़ारी : 6170)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَجُلٌ . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ عَنِ الأَعْمَشِ.

बाब 52 : नेक किरदार आदमी की तारीफ़ उसके हक़ में बशारत है, नुक़सानदेह नहीं है

باب إِذَا أُثْنِيَ عَلَى الصَّالِحِ فَهِيَ بُشْرَى وَلاَ تَضُرُّهُ

(6721) हज़रत अबू ज़र(रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा गया, बताइये एक आदमी नेक काम करता है और उस पर लोग उसकी तारीफ़ करते हैं? आपने फ़रमाया, 'ये मोमिन के लिये फ़ोरी बशारत(ख़ुशख़बरी) है।

(इब्ने माजह : 4225)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، وَأَبُو كَامِلٍ فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَرَأَيْتَ الرَّجُلَ يَعْمَلُ الْعَمَلَ مِنَ الْخَيْرِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَيْهِ قَالَ " تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَى الْمُؤْمِنِ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, किसी नेक इंसान के नेक और अच्छे काम पर लोगों का उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करना उख़रवी बशारत बुशराकुमुल यौ-म जन्नातुन(सूरह हदीद : 12) का अक्स है और अल्लाह के यहाँ उसकी क़ुबूलियत और रज़ामन्दी की दलील है, लेकिन ये तब है जब वो उसका ख़्वाहाँ और तालिब नहीं है और उसके लिये कोशिश और हीला नहीं करता।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ وَكِيعٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي عَبْدُ الصَّمَدِ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، بِإِسْنَادِ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِهِمْ عَنْ شُعْبَةَ غَيْرَ عَبْدِ الصَّمَدِ وَيُحِبُّهُ النَّاسُ عَلَيْهِ . وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الصَّمَدِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ . كَمَا قَالَ حَمَّادٌ .

(6722) इमाम साहब यही रिवायत अलग-अलग उस्तादों की अलग-अलग सनदों से बयान करते हैं, अ़ब्दुस्समद की रिवायत में यह्मदुहुन्नास लोग उसकी तारीफ़ करते हैं और बाक़ियों की रिवायत युहिब्बुहुन्नासु अ़लैह उसके सबब लोग उससे मुहब्बत करते हैं।

इस किताब के कुल बाब 8 और 52 हदीसें हैं।

كتاب القدر

किताबुल क़द्र

तक़दीर का बयान

हदीस़ नम्बर 6723 से 6774 तक

तआरुफ़ किताबुल क़द्र

'क़द्र' का तर्जुमा आम तौर पर 'अन्दाज़ा' किया जाता है। इससे अल्लाह की तक़दीर का मफ़्हूम सहीह तौर पर वाज़ेह नहीं हो पाता क्योंकि इंसानी तसर्रुफ़ के मुताबिक़ अन्दाज़ा मुस्तक़बिल के हवाले से ग़ैर हतमी और ग़ैर यक़ीनी क़िस्म के इल्म को कहते हैं जबकि अल्लाह की क़ुदरत और उसका इल्म ग़ैर हतमी और ग़ैर यक़ीनी होने से मुबर्रा है। क़द्र (अन्दाज़े) की निस्बत अगर 'मिक़्दार' के मफ़्हूम से 'क़द्र' या 'तक़दीर' का मफ़्हूम समझने की कोशिश की जाये तो ज़्यादा बेहतर तौर पर समझ में आ सकता है। तक़दीर के हवाले से ये लफ़्ज़ ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बोला है। (सहीह मुस्लिम : 6748) अल्लाह ने फ़रमाया है, 'अल्लाह जानता है जो मादा अपने शिकम (पेट) में रखती है और अरहाम जितने सिकुड़ते और जितने बढ़ते हैं और उसके पास हर चीज़ मुक़र्ररह मिक़्दार के मुताबिक़ है।' (सूरह रअद 13 : 8) कोई चीज़ छिपी है तो जितनी उसने रखी पूरी है और पूरी तरह उसके इल्म में है और कोई चीज़ खुली है तो जितनी उसने रखी है उतनी ही है और उसके इल्म में है। उसमें जो तग़य्युर (चेंन्जिंग) आता है, वो भी उतना है जितना उसने रखा और पूरी तरह उसके इल्म में है, वो सबसे बड़ा है, हर चीज़ पर उसका कामिल इख़्तियार है, सबसे बुलंद है और हर चीज़ उसके सामने वाज़ेह है। फिर ये फ़रमाया, 'बराबर है तुममें से जो चुपके से बात कहे और जो ऊँची आवाज़ से कहे और (उसके नज़दीक बराबर है) जो रात को छिपा हुआ है और जो दिन को सामने फिर रहा है।' (सूरह रअद 13 : 10) ये सब कुछ उसी तरह उसी मिक़्दार के मुताबिक़ है जो उसने रखी, मुकम्मल तौर पर उसके इख़्तियार में है और हर अमल से जो नतीजा निकलता है वो बिल्कुल माद्दी, ज़मानी, ज़मीनी हर तरह की मिक़्दार के तअयीन के लिये क़द्र या तक़दीर का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है और उस मिक़्दार के मुताबिक़ क्या होगा और कब नतीजा निकलेगा उसके लिये उमूमन क़ज़ा (फ़ैसले) का लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है। हक़ीक़त में हर तरह की मिक़्दार का तअयीन भी अल्लाह ही के फ़ैसले से होता है। अल्लाह का फ़ैसला हतमी है, उसे वो ख़ुद जहाँ चाहे, जब चाहे और जिस तरह चाहे बदल सकता है। इस बात को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस तरह बयान फ़रमाया है, 'दुआ के सिवा कोई चीज़ (अल्लाह के) फ़ैसले को बदल नहीं सकती।' (जामेअ तिर्मिज़ी :) यानी कोई भी किसी तरह से भी अल्लाह के फ़ैसले को नहीं बदल सकता। इंसान यही कर सकता है कि वो अल्लाह के सामने दुआ करे। वो चाहे तो उसे क़ुबूल फ़रमा कर अपने फ़ैसले को बदल दे। यहाँ ये बात ज़हन में रहनी चाहिये कि ये भी पहले से अल्लाह के इल्म और इख़्तियार में है कि फ़रिश्तों को कौनसा फ़ैसला लिखकर नाफ़िज़ करने के लिये दिया जायेगा और कौन किस काम के लिये दुआ करेगा और कौनसी दुआ क़ुबूल करके कौनसा फ़ैसला बदलकर किस सूरत में नाफ़िज़ करने के लिये मलाइका (फ़रिश्तों) के सुपुर्द किया जायेगा।

इमाम मुस्लिम (रह.) ने सहीह मुस्लिम की किताबुल क़द्र की शुरूआत इंसान की पैदाइश के हवाले से उन हदीसों से की है जिनमें माँ के पेट में तय होने वाले मरहले, उम्र, अमल, रिज़्क़, ख़ुश बख़्ती या बद बख़्ती और इस हवाले से तमाम मिक़्दारों के तअयीन और उनके लिखे जाने के बारे में बताया गया है। उसकी उम्र और अमल की तमाम तफ़्सीलात यहाँ तक कि उसकी साँसों की गिनती और उसके क़दमों के निशान कि कितने होंगे और कहाँ-कहाँ लगेंगे सब कुछ फ़रिश्ते को लिखवा दिया जाता है। ये सब तफ़्सीलात उस असल किताब के मुताबिक़ होती हैं जो आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले लिख दी गई थी। (सहीह मुस्लिम : 6748) फिर इस सवाल का जवाब है कि सब कुछ पहले से लिखा हुआ है तो हम उसी पर भरोसा क्यों न करें? अमल क्यों करें? आप (ﷺ) ने इसका जवाब ये दिया कि यही लिखा हुआ है कि कौन है जो (अपने इख़्तियार और फ़ैसले से) ख़ुशनसीबों के जैसे अमल करेगा और कौन है जो (अपने इख़्तियार और अमल से) बद नसीबी की राह पर चलेगा और साथ ये समझाया कि तक़दीर का मतलब ये है कि इंसान का ठिकाना जन्नत या दोज़ख़ में कहाँ होगा। इस बात का अल्लाह तआला को पहले से इल्म है। अल्लाह ने अपने इख़्तियार से दोनों रास्तों पर चलने वालों के लिये सहूलत मुहय्या कर दी है। अल्लाह को पूरा इल्म है कि कौन इंसान किस रास्ते पर चलेगा और ये सब कुछ पैदाइश से पहले लिख भी दिया गया। ये लिखा हुआ ऐन उसके मुताबिक़ है जो किसी भी इंसान को करना है। दोनों में तफ़ावुत (फ़र्क़) नहीं। सिर्फ़ लिखे हुए को पेशे नज़र रखा जाये तो तख़्लीक़ से पहले ही पता है कि कौन तख़्लीक़ के मरहले से गुज़रने के बाद क्या कुछ करने का फ़ैसला करके कहाँ पहुँचेगा, जन्नती होगा या जहन्नमी होगा। ये अहम नुक्ता है कि जैसे मन्ज़िल पहले से मालूम है तो ये भी पहले से मालूम है कि वो अपने इख़्तियार से अमल क्या करेगा। ये पेशगी इल्म है, ये उसके इख़्तियार पर क़दग़न नहीं लगाता। उससे उसकी मर्ज़ी नहीं छीनता, उसको किसी तरफ़ धकेलता नहीं, रास्ते दोनों तरफ़ जाने के मयस्सर हैं।

हज़रत मूसा (अलै.) और हज़रत आदम (अलै.) का जो मुकाल्मा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नक़ल फ़रमाया है उससे ये बात वाज़ेह होती है कि अल्लाह ने निज़ामे तख़्लीक़ ही यही फ़रमाया था कि आदम (अलै.) को जन्नत में रखा जायेगा। वो उसे ख़ुद लेंगे, फिर उन्हें वहाँ से ज़मीन पर मुन्तक़िल किया जायेगा। यहाँ आकर भी वो ख़ुद और उनकी औलाद जन्नत ही की मुतलाशी होगी जो हर तरह की कोशिश के बावजूद दुनियवी ज़िन्दगी में ज़मीन पर मयस्सर न होगी। उसके हुसूल का रास्ता यही होगा कि अपने इख़्तियार और अपनी सवाबदीद से जन्नत की तरफ़ जाने वाला रास्ता इख़्तियार करना होगा। इंसान को जिन बशरी कमज़ोरियों के साथ पैदा किया गया है उसका इम्तिहान यही है कि उन पर क़ाबू पाये। अगर न भी पा सके और अल्लाह से अफ़्व व रहमत का तलबगार हो तो वो मुअज़्ज़ज़ है। अपनी कमज़ोरियों के बावजूद तमाम मख़्लूक़ात में अफ़ज़ल है। आदम (अलै.) अपनी ख़ल्क़ी कमज़ोरियों के

बावजूद मस्जूदे मलाइका थे। वो ज़मीन पर लाये गये, इस पर उन्हें मलामत नहीं की जा सकती। उन्होंने ख़ुद भी इस्तिग़फ़ार का रास्ता इख़्तियार किया और अपनी औलाद को भी यही रास्ता दिखाया। इस पर वो सताइश और शुक्र के मुस्तहिक़ हैं। बशरी कमज़ोरियों के बिल्मुक़ाबिल मग़्फ़िरत और रहमत अल्लाह की अ़ज़ीम तरीन नेमत है।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब ये नुक्ता समझाया कि इंसानों के दिल अल्लाह की मशिय्यत (मर्ज़ी) और उसके इरादे के ताबेअ़ हैं तो इस मौक़े पर अल्लाह का अ़ज़ीमतरीन सिफ़ाती नाम 'अर्रह्मान' इस्तेमाल किया। इसमें इशारा है कि उसका दिलों को फेरना उसकी रहमत पर मबनी है। आदमी पिछली ग़लतियों पर मग़्फ़िरत और आइन्दा हिदायत का तलबगार हो तो वो बेपनाह रहमत से काम लेता है। दिलों को अपनी इताअ़त की तरफ़ फेर देता है। अगर वो ये फ़ैसला फ़रमाता कि दिलों को नहीं फेरेगा तो बनी आदम एक बार भटक जाने के बाद दोबारा सहीह रास्ते पर न आ सकते।

इंसान अगर गुनाह का इर्तिकाब करता है तो उसकी हुदूद भी मुतअ़य्यन कर दी गई है। कोई अपनी मुक़र्ररह हुदूद से बाहर नहीं निकल सकता। निज़ाम में ऐसा ख़लल नहीं डाल सकता जो इंसानों की कामयाबी की राह को मस्दूद कर दे या इतना ज़्यादा हो जाये कि ख़ुद उसका अपने गुनाहों से निकलना मुम्किन न रहे। अल्बत्ता अगर वो गुनाह पर मुसलसल इसरार करता है तो उसकी अपनी राह ज़रूर मस्दूद हो जाती है। ये अल्लाह की रहमत है कि जब वो इंसान को ज़िन्दगी अ़ता करता है तो फ़ितरत के मुताबिक़ अपनी पाकीज़गी, अमानत और अच्छाई की तरफ़ रग़बत के साथ ज़िन्दगी अ़ता करता है।

किसी भी इंसान का अन्जाम क्या होगा? इसके बारे में दुनिया में रहते हुए कोई अन्दाज़ा नहीं कर सकता। ये मालूम है कि अल्लाह का फ़ैसला अ़द्ल बल्कि रहमत की बुनियाद पर होगा, लेकिन क्या होगा? इसके बारे में पूरी तरह मालूम नहीं किया जा सकता। कम उ़म्र में फ़ौत हो जाने वाले बच्चों के बारे में होने वाले फ़ैसले का अभी से तअ़यीन नहीं किया जा सकता। ये इख़्फ़ा (छिपाना) इसलिये ज़रूरी है कि लोग न कभी अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जायें, न रहमत से मायूस हो। उम्मीद और ख़ौफ़ की कैफ़ियत बरक़रार रहनी ज़रूरी है ताकि इंसान कामयाबी के रास्ते को इख़्तियार करे। अल्लाह से रहमत व मग़्फ़िरत माँगता रहे और इम्तिहान के लिये दुनिया में जिन हालात से गुज़ारा जाये उनसे दिल बुर्दा न करे, हालात को क़ुबूल करे और हर तरह से कामयाबी के हुसूल के लिये कोशिश करता रहे।

كتاب القدر

48. तक़दीर का बयान

बाब 1 : माँ के पेट में आदमी की पैदाइश की कैफ़ियत और उसके रिज़्क़, मुद्दते हयात (उम्र), अमल और शक़ावत व सआदत (नेक व बद) का लिखा जाना

بَاب كَيْفِيَّةِ خَلْقِ الْآدَمِيِّ فِي بَطْنِ أُمِّهِ وَكِتَابَةِ رِزْقِهِ وَأَجَلِهِ وَعَمَلِهِ وَشَقَاوَتِهِ وَسَعَادَتِهِ

(6723) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) जो सादिक़ और मसदूक़ हैं, ने बताया, 'तुममें से हर एक माद्द-ए-तख़्लीक़ चालीस दिन अपनी माँ के पेट में नुत्फ़े की शक्ल में रहता है, फिर उतने दिनों में मुन्जमिद (जमे हुए) ख़ून की शक्ल इख़ितयार करता है, फिर उतनी ही मुद्दत में गोश्त के लोथड़े की शक्ल इख़ितयार करता है, फिर फ़रिश्ते को भेजा जाता है और वो उसमें रूह फूंकता है और उसे चार बातों के लिखने का हुक्म दिया जाता है, उसका रिज़्क़, उसकी मुद्दते हयात, उसके आमाल और वो नेकबख़्त है या बदबख़्त है, लिख दिया जाता है। पस उस ज़ात की क़सम

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ الْهَمْدَانِيُّ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَوَكِيعٌ قَالُوا حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ " إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا ثُمَّ يَكُونُ فِي ذَلِكَ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يَكُونُ فِي ذَلِكَ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يُرْسَلُ الْمَلَكُ فَيَنْفُخُ فِيهِ

الرُّوحَ وَيُؤْمَرُ بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ بِكَتْبِ رِزْقِهِ وَأَجَلِهِ وَعَمَلِهِ وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ فَوَالَّذِي لاَ إِلَهَ غَيْرُهُ إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى مَا يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُهَا وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلاَّ ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا ".

जिसके सिवा कोई लायक़े बन्दगी नहीं है! कभी ऐसा होता है कि तुममें से कोई शख़्स जन्नतियों वाले अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जन्नत के दरम्यान एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर नविश्ता (तक़दीर) उस पर ग़ालिब आ जाता है तो वो दोज़ख़ियों वाले अमल करने लगता है और दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है। (इस तरह कभी ऐसा होता है) तुममें से कोई शख़्स दोज़ख़ियों वाले अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और दोज़ख़ के दरम्यान एक हाथ फ़ासला रह जाता है, फिर उस पर नविश्ता (तक़दीर) ग़ालिब आता है, सो वो जन्नतियों वाले अमल करने लगता है और अन्जामकार उसमें दाख़िल हो जाता है।'

(सहीह बुख़ारी : 3208, 3332, 7454, अबू दाऊद : 4708, तिर्मिज़ी : 2137, इब्ने माजह : 760)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अस्सादिक़ : सच कहने वाला। **मस्दूक़ :** जिसके क़ौल और वह्य की तस्दीक़ की जाती है। **युज्मअ् ख़ल्क़हू फ़ी बतनि उम्मिही :** माँ के पेट में मनी का नुत्फ़ा चालीस दिन तक अलग-अलग मरहलों से गुज़रता है, फिर चालीस दिन मुन्जमिद (जमे हुए) ख़ून के अलग-अलग मरहलों से गुज़रता है और फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की शक्ल में अलग-अलग मरहले तय करता है और उस मुद्दत में आज़ा (अंगों) की तश्कील और हड्डियों की बनावट के आसार पैदा हो जाते हैं और चार माह के बाद जब आज़ा, हड्डियों और गोश्त-पोस्त का ज़ुहूर हो जाता है तो उसमें रूह फूंक दी जाती है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, इंसान जब रहमे मादर में होता है और उस पर तीन चिल्ले, यानी चार माह गुज़र जाते हैं तो फिर उसमें रूह फूंक दी जाती है और अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ फ़रिश्ता उसके मुताल्लिक़ चार बातें लिखता है, उसका रिज़्क़, उसकी मुद्दते हयात (उम्र), उसके आमाल और उसका नेकबख़्त या बदबख़्त होना और ये नविश्ता इतना क़तई और अटल होता है कि

एक शख़्स जो इस नविश्ते में दोज़ख़ियों में यानी शक़ी और बदबख़्त लिखा होता है, कई बार वो एक मुद्दत तक जन्नतियों की सी पाकबाज़ाना ज़िन्दगी गुज़ारता रहता है और बज़ाहिर नेक आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि वो जन्नत के बहुत क़रीब हो जाता है, लेकिन फिर एक दम उसके रवय्ये में तब्दील रूनुमा हो जाती है और वो दोज़ख़ में ले जाने वाले बुरे आमाल करने लगता है और इस हाल में मर कर बिल्आख़िर दोज़ख़ में चला जाता है और इस तरह कई बार ऐसा भी होता है कि एक इंसान जो नविश्ता में जन्नती लिखा होता है, वो एक अरसे तक बज़ाहिर दोज़ख़ियों वाला रवय्या इख़्तियार किये रहता है और बुरे आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि वो दोज़ख़ के बहुत क़रीब पहुँच जाता है, लेकिन फिर अचानक वो पलटा खाता है और वो सम्भल जाता है और अहले जन्नत वाले आमाले सालेहा करने लग जाता है और आमाले सालेहा पर ही उसका ख़ातमा होता है और वो जन्नत में चला जाता है। इसलिये किसी को बद आमालियों में मुब्तला देखकर उसके दोज़ख़ी होने का क़तई हुक्म लगाना दुरुस्त नहीं है, क्या मालूम ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में उसका रवय्या और तर्ज़े अमल यकसर (बिल्कुल) बदल जाये। इसी तरह अगर किसी को आज अल्लाह की तरफ़ से नेक अमलों की तौफ़ीक़ मयस्सर आ रही है तो उसे उस पर मुत्मइन और बेफ़िक्र नहीं हो जाना चाहिये, बल्कि पूरी दिलजमई और क़ुव्वत से बराबर हुस्ने ख़ातमा के लिये कोशाँ रहना चाहिये। सिर्फ़ अच्छे अमलों पर शादाँ और फ़रहाँ (खुश) नहीं होना चाहिये, क्योंकि दारोमदार और इन्हिसार (डिपेन्ड) ख़ातमे पर है, जो इंसान को मालूम नहीं है।

अल्लाह तआला का इल्म चूंकि अज़ली व अबदी है इसलिये उसे इस बात का इल्म है कि उसका ख़ातमा किन आमाल पर होगा, अच्छे या बुरे। उसी के मुताबिक़ उसका सईद या शक़ी (नेक व बुरा) होना लिखा जाता है।

अल्लाह के इल्म में चूंकि तख़ल्लुफ़ मुम्किन नहीं है, उसका इल्म वाक़िये और हेयत के मुताबिक़ होता है उसके ख़िलाफ़ मुम्किन नहीं होगा जैसा अन्जाम होता है वैसे आमाल ही उसे करने होते हैं।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ، الْحَمِيدِ ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ، الأَشَجُّ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَاهُ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا

(6724) इमाम साहब यही रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, वकीअ की हदीस़ में है, 'तुममें से हर एक का माद्द-ए-तख़्लीक़ चालीस रातों तक जमा किया जाता है।' और मुआज़, शोबा से बयान करते हैं, 'चालीस रातों या चालीस

أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْحَجَّاجِ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . قَالَ فِي حَدِيثِ وَكِيعٍ " إِنَّ خَلْقَ أَحَدِكُمْ يُجْمَعُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً " . وَقَالَ فِي حَدِيثِ مُعَاذٍ عَنْ شُعْبَةَ " أَرْبَعِينَ لَيْلَةً أَرْبَعِينَ يَوْمًا " . وَأَمَّا فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ وَعِيسَى " أَرْبَعِينَ يَوْمًا " .

दिनों तक।' और जरीर ईसा की रिवायत में है, 'चालीस दिन तक।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، -وَاللَّفْظُ لاِبْنِ نُمَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ " يَدْخُلُ الْمَلَكُ عَلَى النُّطْفَةِ بَعْدَ مَا تَسْتَقِرُّ فِي الرَّحِمِ بِأَرْبَعِينَ أَوْ خَمْسَةٍ وَأَرْبَعِينَ لَيْلَةً فَيَقُولُ يَا رَبِّ أَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ فَيُكْتَبَانِ فَيَقُولُ أَىْ رَبِّ أَذَكَرٌ أَوْ أُنْثَى فَيُكْتَبَانِ وَيُكْتَبُ عَمَلُهُ وَأَثَرُهُ وَأَجَلُهُ وَرِزْقُهُ ثُمَّ تُطْوَى الصُّحُفُ فَلاَ يُزَادُ فِيهَا وَلاَ يُنْقَصُ " .

(6725) हज़रत हुज़ैफ़ा बिन असीद (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं, 'जब नुत्फ़ा रहम में चालीस या पैंतालीस रातें ठहरा रहता है तो फ़रिश्ता आता है और पूछता है ऐ मेरे रब! ये बदबख़्त है या नेकबख़्त? फिर उन दोनों को लिख दिया जाता है और वो पूछता है, ऐ मेरे रब! मुज़क्कर (मेल) है या मुअन्नस (फिमेल)? और उनको लिख दिया जाता है और उसके अमल और नतीजे और उसकी उम्र और उसका रिज़्क़ लिख दिया जाता है, फिर नविश्ते लपेट दिये जाते हैं, सो उनमें न ज़्यादती होती है और न कमी।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, ऊपर वाली हदीस़ चार बातों को दूसरे मरहले में लिख दिया जाता है, जबकि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की हदीस़ से मालूम होता है कि ये काम तीसरे मरहले के बाद यानी चार माह बाद तय किये जाते हैं, लेकिन सहीह बात ये मालूम होती है, इन चीज़ों की शुरूआत तो दूसरे मरहले में हो जाती है, लेकिन तक्मील तीसरे मरहले के बाद होती है, जब इंसान के आज़ा (अंग), हड्डियाँ और गोश्त-पोस्त पूरी तरह नुमायाँ हो जाते हैं, इसलिये दोनों हदीस़ों में तज़ाद (टकराव) नहीं है, क्योंकि हज़रत हुज़ैफ़ा की हदीस़ में है, ये काम चालीस या पैंतालीस दिन या रातों के बाद होता है और बाद के लिये फ़ोरियत ज़रूरी नहीं है कि ये फ़ोरन ही हो जाता है।

(6726) हज़रत आमिर बिन वासिला बयान करते हैं कि उसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) को ये फ़रमाते सुना, बद बख़्त वो है जो अपनी माँ के पेट में बद बख़्त हुआ और नेक बख़्त वो है जो दूसरों से सबक़ व इबरत हासिल करे और फिर वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के एक साथी हुज़ैफ़ा बिन असीद ग़िफ़ारी (रज़ि.) नामी सहाबी के पास आया, चुनाँचे उन्हें हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का ये क़ौल सुनाया और पूछा, अमल के बग़ैर इंसान कैसे बद बख़्त हो सकता है? तो उन्होंने उसे कहा, क्या तुझे इस पर तअज्जुब है? मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना है, 'जब नुत्फ़े पर चालीस रातें गुज़र जाती हैं तो अल्लाह उसकी तरफ़ एक फ़रिश्ता भेजता है, तो वो उसकी तस्वीर कशी करता है, उसके कान, आँख, खाल, गोश्त और उसकी हड्डियाँ बनाता है, फिर अर्ज़ करता है, ऐ मेरे रब! क्या मुज़क्कर है या मुअन्नस? तो अल्लाह जो फ़ैसला चाहता है फ़रमाता है और फ़रिश्ता लिख देता है। फिर फ़रिश्ता पूछता है, ऐ मेरे रब! इसकी उम्र क्या है? तो तेरा रब जो चाहता है फ़रमा देता है और फ़रिश्ता लिख लेता है। फिर वो पूछता है, ऐ मेरे रब! इसका रिज़्क़? तो तेरा रब जो चाहता है, फ़ैसला फ़रमाता है और फ़रिश्ता उसे लिख लेता है। फिर फ़रिश्ता नविश्ता हाथ में लेकर निकल जाता है, उसको जो हुक्म मिलता है, उसमें न इज़ाफ़ा करता है और न कमी।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو، بْنُ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ الْمَكِّيِّ، أَنَّ عَامِرَ بْنَ وَاثِلَةَ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ الشَّقِيُّ مَنْ شَقِيَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ وَالسَّعِيدُ مَنْ وُعِظَ بِغَيْرِهِ . فَأَتَى رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُقَالُ لَهُ حُذَيْفَةُ بْنُ أَسِيدٍ الْغِفَارِيُّ فَحَدَّثَهُ بِذَلِكَ مِنْ قَوْلِ ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ وَكَيْفَ يَشْقَى رَجُلٌ بِغَيْرِ عَمَلٍ فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ أَتَعْجَبُ مِنْ ذَلِكَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا مَرَّ بِالنُّطْفَةِ ثِنْتَانِ وَأَرْبَعُونَ لَيْلَةً بَعَثَ اللَّهُ إِلَيْهَا مَلَكًا فَصَوَّرَهَا وَخَلَقَ سَمْعَهَا وَبَصَرَهَا وَجِلْدَهَا وَلَحْمَهَا وَعِظَامَهَا ثُمَّ . قَالَ يَا رَبِّ أَذَكَرٌ أَمْ أُنْثَى فَيَقْضِي رَبُّكَ مَا شَاءَ وَيَكْتُبُ الْمَلَكُ ثُمَّ يَقُولُ يَا رَبِّ أَجَلُهُ . فَيَقُولُ رَبُّكَ مَا شَاءَ وَيَكْتُبُ الْمَلَكُ ثُمَّ يَقُولُ يَا رَبِّ رِزْقُهُ . فَيَقْضِي رَبُّكَ مَا شَاءَ وَيَكْتُبُ الْمَلَكُ ثُمَّ يَخْرُجُ الْمَلَكُ بِالصَّحِيفَةِ فِي يَدِهِ فَلاَ يَزِيدُ عَلَى مَا أُمِرَ وَلاَ يَنْقُصُ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि इंसान की तस्वीर कशी का आग़ाज़, नुत्फ़े के अ़लक़े में बदलने के आग़ाज़ से होता है और आहिस्ता-आहिस्ता तदरीजन (धीरे-धीरे) उस ख़ाके में रंग भरना शुरू होता है और नोक पलक चार माह गुज़रने के बाद संवारे जाते हैं। जैसाकि क़ुरआन मजीद की सूरह मूमिनून आयत 13-14 से स़ाबित होता है कि नुत्फ़े से अ़लक़ा बनता है, फिर उससे मुज़ग़ह बनता है, फिर मुज़ग़ह से हड्डियाँ बनती हैं और हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया जाता है, फिर उसको एक नई तख़्लीक़ में पैदा किया जाता है। यानी गोश्त-पोस्त चढ़ाने के बाद रूह फूंकी जाती है और उन मरहलों की तफ़्सील हज़रत अ़ब्दुल्लाह की हदीस़ में गुज़र चुकी है। इस तरह इस हदीस़ से हज़रत अ़ब्दुल्लाह की रिवायत की ताईद होती है कि चार बातों की मुकम्मल तहरीर का वक़्त चार माह के बाद आता है, जब इंसान का मुकम्मल ढांचा बन चुका होता है और क़ुरआन मजीद से भी हज़रत अ़ब्दुल्लाह की रिवायत की तस्दीक़ होती है और इज्माली हदीस़ का मानी, तफ़्सीली हदीस़ के मुताबिक़ ही लिया जायेगा। हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीस़ से भी हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की ताईद होती है।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ النَّوْفَلِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّ أَبَا الطُّفَيْلِ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِ حَدِيثِ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ .

(6727) इमाम साहब एक और उस्ताद से अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ أَبُو خَيْثَمَةَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَطَاءٍ، أَنَّ عِكْرِمَةَ بْنَ خَالِدٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا الطُّفَيْلِ حَدَّثَهُ قَالَ دَخَلْتُ عَلَى أَبِي سَرِيحَةَ حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ الْغِفَارِيِّ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِأُذُنَىَّ هَاتَيْنِ يَقُولُ " إِنَّ النُّطْفَةَ تَقَعُ فِي الرَّحِمِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ يَتَصَوَّرُ عَلَيْهَا الْمَلَكُ "

(6728) हज़रत हुज़ैफ़ा बिन असीद ग़िफ़ारी (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने अपने इन दो कानों से रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'नुत्फ़ा रहम में चालीस रातों तक पड़ा रहता है, फिर फ़रिश्ता उसकी तस्वीर कशी के लिये आता है।' ज़ुहैर कहते हैं, मेरा ख़याल है, उन्होंने कहा, जो उसकी तख़्लीक़ करता है, 'फिर वो पूछता है, ऐ मेरे रब! मुज़क्कर (मेल) या मुअन्नस़ (फिमेल)? तो अल्लाह उसे मुज़क्कर या मुअन्नस़ बना देता है। फिर वो पूछता है, ऐ मेरे रब! कामिलुल आ़ज़ा या

. قَالَ زُهَيْرٌ حَسِبْتُهُ قَالَ الَّذِي يَخْلُقُهَا " فَيَقُولُ يَا رَبِّ أَذَكَرٌ أَوْ أُنْثَى فَيَجْعَلُهُ اللَّهُ ذَكَرًا أَوْ أُنْثَى ثُمَّ يَقُولُ يَا رَبِّ أَسَوِيٌّ أَوْ غَيْرُ سَوِيٍّ فَيَجْعَلُهُ اللَّهُ سَوِيًّا أَوْ غَيْرَ سَوِيٍّ ثُمَّ يَقُولُ يَا رَبِّ مَا رِزْقُهُ مَا أَجَلُهُ مَا خُلُقُهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ اللَّهُ شَقِيًّا أَوْ سَعِيدًا " .

नाक़िसुल ख़िल्क़त? तो अल्लाह उसे ताम्मुल आज़ा या नाक़िसुल आज़ा बना देता है। फिर पूछता है, ऐ मेरे रब! इसका रिज़्क़ कितना है? इसकी उम्र कितनी है? इसका अख़्लाक़ कैसा है? फिर अल्लाह उसको शक़ी (बद) या सईद (नेक) बना देता है।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا رَبِيعَةُ بْنُ كُلْثُومٍ، حَدَّثَنِي أَبِي كُلْثُومٌ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ الْغِفَارِيِّ، صَاحِبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَفَعَ الْحَدِيثَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَنَّ مَلَكًا مُوَكَّلاً بِالرَّحِمِ إِذَا أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَخْلُقَ شَيْئًا بِإِذْنِ اللَّهِ لِبِضْعٍ وَأَرْبَعِينَ لَيْلَةً " . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِهِمْ .

(6729) रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी, हुज़ैफ़ा बिन असीद ग़िफ़ारी, रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते हैं, 'एक फ़रिश्ता रहम पर मुक़र्रर है, जब अल्लाह चाहता है कि वो चालीस से ऊपर, रातों के बाद अल्लाह की इजाज़त से तख़्लीक़ का आग़ाज़ करे।' फिर आगे ऊपर वाली हदीस़ है।

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ، اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، وَرَفَعَ الْحَدِيثَ، أَنَّهُ قَالَ " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ وَكَّلَ بِالرَّحِمِ مَلَكًا فَيَقُولُ أَىْ رَبِّ نُطْفَةٌ أَىْ رَبِّ عَلَقَةٌ أَىْ رَبِّ مُضْغَةٌ . فَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَقْضِيَ خَلْقًا - قَالَ - قَالَ الْمَلَكُ أَىْ

(6730) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) मरफ़ूअन बयान करते हैं कि आपने फ़रमाया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल (बरतर और बुज़ुर्ग) ने रहम पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया है, वो कहता है, ऐ मेरे रब! ये नुत्फ़ा है। ऐ मेरे रब! (अब ये) अलक़ा बन गया है, ऐ मेरे रब! अब ये गोश्त का लोथड़ा बन गया है। चुनाँचे जब अल्लाह उसकी तख़्लीक़ का फ़ैसला कर लेता है तो फ़रिश्ता पूछता है, ऐ मेरे रब! मुज़क्कर या मुअन्नस़? बद बख़्त है या नेक

رَبِّ ذَكَرٌ أَوْ أُنْثَى شَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ فَمَا الرِّزْقُ فَمَا الأَجَلُ فَيُكْتَبُ كَذَلِكَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ " .

बख़्त? इसका रिज़्क़, इसकी मुद्दते हयात कितनी है? ये सब कुछ उसकी माँ के पेट में लिख दिया जाता है।'

(सहीह बुख़ारी : 3333)

फ़ायदा : इस हदीस़ से भी ये मालूम होता है कि मुज़ग़ह गोश्त का लोथड़ा बनने के बाद, आज़ा (अंग) और जवारेह की तक्मील शुरू होती है और उस वक़्त उसके मुज़क्कर या मुअन्नस़ (मेल या फिमेल) होने का फ़ैसला होता है और उसकी तक़दीर लिखी जाती है और तक़दीर लिखने वाला फ़रिश्ता, रहम पर मुक़र्रर फ़रिश्ते से अलग भी हो सकता है और दोनों काम करने वाला फ़रिश्ता एक भी हो सकता है।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، -وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ كُنَّا فِي جَنَازَةٍ فِي بَقِيعِ الْغَرْقَدِ فَأَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَعَدَ وَقَعَدْنَا حَوْلَهُ وَمَعَهُ مِخْصَرَةٌ فَنَكَّسَ فَجَعَلَ يَنْكُتُ بِمِخْصَرَتِهِ ثُمَّ قَالَ " مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ مَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ إِلاَّ وَقَدْ كَتَبَ اللَّهُ مَكَانَهَا مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ وَإِلاَّ وَقَدْ كُتِبَتْ شَقِيَّةً أَوْ سَعِيدَةً " . قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلاَ نَمْكُثُ عَلَى كِتَابِنَا وَنَدَعُ الْعَمَلَ فَقَالَ " مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ

(6731) हज़रत अ़ली (रज़ि.) बयान करते हैं, हम एक जनाज़े के सिलसिले में बक़ीअ़ ग़रक़द में थे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये और बैठ गये और हम आपके आस-पास बैठ गये और आपके पास एक छड़ी थी, चुनाँचे आपने सर झुका लिया और अपनी छड़ी से ज़मीन कुरेदने लगे। फिर फ़रमाया, 'तुममें से हर एक शख़्स और हर जानदार, नफ़्स का ठिकाना जन्नत और दोज़ख़ में अल्लाह ने लिख दिया है और ये भी लिख दिया गया है बद बख़्त है या नेक बख़्त।' एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने नविश्ते पर न ठहर जायें और अ़मल छोड़ दें?' तो आपने फ़रमाया, 'जो अहले सआ़दत (नेक लोगों) में से हैं वो यक़ीनन उन अहले सआ़दत वाले आ़माल की तरफ़ रुख़ करेगा और जो अहले शक़ावत (बुरे लोगों) में से हैं, वो यक़ीनन अहले शक़ावत के आ़माल की तरफ़ चलेगा।' और आपने फ़रमाया, 'अ़मल करो, हर एक के लिये आसान होगा,

فَسَيَصِيرُ إِلَى عَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ فَسَيَصِيرُ إِلَى عَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ " . فَقَالَ " اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ أَمَّا أَهْلُ السَّعَادَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ وَأَمَّا أَهْلُ الشَّقَاوَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ " . ثُمَّ قَرَأَ { فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى * وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى * وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى}

पस जो कोई अहले सआदत से है तो उनके लिये अहले सआदत वाले काम आसान कर दिये जायेंगे और रहे अहले शक़ावत, तो उनके लिये अहले शक़ावत वाले आमाल आसान कर दिये जायेंगे।' फिर आपने इन आयात की तिलावत फ़रमाई, 'पस जिसने अल्लाह की राह में दिया और हुदूदे इलाही की पाबंदी की और अच्छी बात (शरीअत) की तस्दीक़ की, तो हम उसको चैन व राहत की ज़िन्दगी यानी जन्नत हासिल करने की तौफ़ीक़ देंगे और पस जिसने बुख़्ल से काम लिया और बेनियाज़ी इख़्तियार की और अच्छी बात (दावते इस्लाम) को झुठलाया तो हम उसके लिये तकलीफ़देह और दुश्वारी वाली ज़िन्दगी यानी दोज़ख़ की तरफ़ चलना आसान कर देंगे।' (सूरह लैल 5-10)

(सहीह बुख़ारी : 1362, 4945, 4946, 4947, 4948, 4949, 6217, 6605, 6217, 6605, 7552, तिर्मिज़ी : 2136, 3344, इब्ने माजह : 78)

मुफ़रदातुल हदीस़ : बक़ीइल ग़रक़द : ये मदीना मुनव्वरा का क़ब्रिस्तान है, जिसे अब जन्नतुल बक़ीअ कहते हैं। **मिख़सरह :** छड़ी। **नकस और नक्कस :** सर झुका लिया। **यन्कुतु :** कुरेदने लगे। **अफ़ला नम्कुसु अला किताबिना :** ये क्या हम अपने नविश्त-ए-तक़दीर पर भरोसा करके बैठ न जायें और सई व अमल छोड़ दें? **इअ्मलू फ़कुल्लम् मुयस्सरुन :** अमल करो क्योंकि हर एक को उसी की तौफ़ीक़ मिलती है, जिसके लिये वो पैदा हुआ है, जन्नत व दोज़ख़ का मदार अमल पर है, इसलिये अमलों के बग़ैर चारा नहीं है और उनको छोड़ना मुम्किन नहीं है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ अल्लाह का इल्म चूंकि अज़ली और अबदी है और उसे किसी चीज़ की तख़्लीक़ और उसके अमल से पहले ही मालूम है कि वो कब पैदा होगा, कैसे ज़िन्दगी गुज़ारेगा और क्या उसका अन्जाम होगा, इसलिये हर शख़्स का ठिकाना, दोज़ख़ है या जन्नत है,

अल्लाह को पहले ही से मालूम हो चुका है और ये भी मालूम हो चुका है कि वो कौनसे बुरे या अच्छे आमाल करेगा, यानी उसका जन्नत या दोज़ख़ तक पहुँचने का रास्ता भी पहले से मालूम है और लिख दिया गया है और तक़दीरे इलाही में ये तय हो चुका है कि जो जन्नत में जायेगा, वो अपने-अपने फ़लाँ आमाले सालेहा की बिना पर जन्नत में जायेगा और जो दोज़ख़ में जायेगा, वो अपने-अपने फ़लाँ-फ़लाँ आमाले बद की बिना पर दोज़ख़ में जायेगा। इसलिये अमल बेफ़ायदा और फ़िज़ूल नहीं हैं और उनको छोड़ना मुम्किन नहीं है जन्नत और दोज़ख़ में जाने का रास्ता उन आमाल के ज़रिये तय होगा। इंसान इसलिये अमल नहीं कर रहा कि वो लिख दिये गये हैं, बल्कि लिखे इसलिये गये हैं कि उसे वो अमल करने थे और उसे जैसे और जो अमल करने थे, वो लिख दिये गये हैं और अल्लाह का इल्म चूंकि अज़ली और अबदी है, इसलिये वो वाक़िये और हक़ीक़त के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता, ये मुम्किन नहीं है कि इंसान को और अमल करने हों और लिख और दिये जायें या वो और अमल कर सके।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَهَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ فِي مَعْنَاهُ وَقَالَ فَأَخَذَ عُودًا . وَلَمْ يَقُلْ مِخْصَرَةً . وَقَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ فِي حَدِيثِهِ عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(6732) इमाम साहब ऊपर वाली हदीस़ अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं और इसमें मिख़सरतन की जगह ऊ़दन (लकड़ी) है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالُوا حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ جَالِسًا وَفِي

(6733) हज़रत अ़ली (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन तशरीफ़ फ़रमा थे और आपके हाथ में एक छड़ी थी, जिससे आप कुरेद रहे थे। चुनाँचे आपने सर उठाकर फ़रमाया, 'तुममें से हर जानदार (शख़्स) की जगह जन्नत और दोज़ख़ में जानी जा चुकी है।' सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! तो फिर अमल किस लिये हैं? तो क्या हम भरोसा न कर लें? आपने फ़रमाया, 'नहीं! अमल करते रहो, क्योंकि हर एक को उसकी

يَدِهِ عُودٌ يَنْكُتُ بِهِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ " مَا مِنْكُمْ مِنْ نَفْسٍ إِلاَّ وَقَدْ عُلِمَ مَنْزِلُهَا مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلِمَ نَعْمَلُ أَفَلاَ نَتَّكِلُ قَالَ " لاَ . اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ " . ثُمَّ قَرَأَ {فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى} إِلَى قَوْلِهِ {فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى}

तौफ़ीक़ मिलेगी, जिसके लिये वो पैदा किया गया है।' फिर आपने पढ़ा, 'जिसने अल्लाह की राह में दिया और तक़वा इख़्तियार किया, अच्छी बात (दावते इस्लाम) को क़ुबूल कर लिया....' (सूरह लैल : 5) से लेकर 'तो हम उसके लिये दुश्वारी और तकलीफ़ वाली ज़िन्दगी (दोज़ख़) की तरफ़ चलना आसान कर देंगे।' (सूरह लैल 10) तक।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَالأَعْمَشِ، أَنَّهُمَا سَمِعَا سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ، يُحَدِّثُهُ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِنَحْوِهِ .

(6734) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ جَاءَ سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ بَيِّنْ لَنَا دِينَنَا كَأَنَّا خُلِقْنَا الآنَ فِيمَا الْعَمَلُ الْيَوْمَ أَفِيمَا جَفَّتْ بِهِ الأَقْلاَمُ وَجَرَتْ بِهِ الْمَقَادِيرُ أَمْ فِيمَا نَسْتَقْبِلُ قَالَ " لاَ . بَلْ فِيمَا جَفَّتْ بِهِ الأَقْلاَمُ وَجَرَتْ بِهِ الْمَقَادِيرُ " . قَالَ فَفِيمَ الْعَمَلُ قَالَ زُهَيْرٌ

(6735) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत सुराक़ा बिन मालिक बिन जुअ्शुम (रज़ि.) ने आकर पूछा, क्या ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे लिये हमारा दीन (दस्तूरे ज़िन्दगी) इस तरह बयान फ़रमायें गोया हम अभी पैदा हुए हैं (हमें किसी चीज़ का पता नहीं है) आज-कल जो हम कर रहे, उसकी क्या सूरत है? क्या ये उन चीज़ों में से है जिसे क़लम लिखकर ख़ुश्क हो चुके हैं और तक़दीर तय हो चुकी है या हम नये सिरे से कर रहे हैं (तक़दीर का दख़ल नहीं है) आपने फ़रमाया, 'नहीं! बल्कि उन बातों में से है, जो क़लम लिखकर ख़ुश्क हो चुके हैं और

ثُمَّ تَكَلَّمَ أَبُو الزُّبَيْرِ بِشَيْءٍ لَمْ أَفْهَمْهُ فَسَأَلْتُ مَا قَالَ فَقَالَ " اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ " .

तक़दीर (फ़ैसला) तय हो चुका है।' उन्होंने अर्ज़ किया, तो फिर अमल की क्या हैसियत? ज़ुहैर कहते हैं, फिर अबू ज़ुबैर ने कोई बात कही जो मैं समझ न सका तो मैंने पूछा, क्या कहा? उन्होंने कहा, आपने फ़रमाया, 'अमल करते रहो, हर एक के लिये आसान कर दिये जायेंगे।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا الْمَعْنَى وَفِيهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " كُلُّ عَامِلٍ مُيَسَّرٌ لِعَمَلِهِ "

(6736) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) इसके हम मानी रिवायत करते हैं, इसमें है, आपने फ़रमाया, 'हर अमल करने वाले के लिये उसका अमल आसान कर दिया जाता है।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَزِيدَ الضُّبَعِيِّ، حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَعُلِمَ أَهْلُ الْجَنَّةِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ قَالَ فَقَالَ " نَعَمْ " . قَالَ قِيلَ فَفِيمَ يَعْمَلُ الْعَامِلُونَ قَالَ " كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ " .

(6737) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) बयान करते हैं, पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अहले जन्नत अहले दोज़ख़ से अलग जान लिये गये हैं? तो आपने फ़रमाया, 'हाँ!' पूछा गया तो फिर अमल करने वाले अमल किसकी ख़ातिर कर रहे हैं? आपने फ़रमाया, 'हर एक के लिये वो अमल आसान कर दिये गये हैं, जिनके लिये वो पैदा किया गया है।'

(सहीह बुख़ारी : 6596, 7551, अबू दाऊद : 4709)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَابْنُ نُمَيْرٍ عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى،

(6738) इमाम साहब यही रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, अब्दुल वारिस (रह.) की हदीस यही है, मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल!

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، كُلُّهُمْ عَنْ يَزِيدَ الرِّشْكِ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ حَمَّادٍ وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الْوَارِثِ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ .

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ، ثَابِتٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُقَيْلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ الدِّيلِيِّ، قَالَ قَالَ لِي عِمْرَانُ بْنُ الْحُصَيْنِ أَرَأَيْتَ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ الْيَوْمَ وَيَكْدَحُونَ فِيهِ أَشَىْءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ وَمَضَى عَلَيْهِمْ مِنْ قَدَرِ مَا سَبَقَ أَوْ فِيمَا يُسْتَقْبَلُونَ بِهِ مِمَّا أَتَاهُمْ بِهِ نَبِيُّهُمْ وَثَبَتَتِ الْحُجَّةُ عَلَيْهِمْ فَقُلْتُ بَلْ شَىْءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ وَمَضَى عَلَيْهِمْ قَالَ فَقَالَ أَفَلاَ يَكُونُ ظُلْمًا قَالَ فَفَزِعْتُ مِنْ ذَلِكَ فَزَعًا شَدِيدًا وَقُلْتُ كُلُّ شَىْءٍ خَلْقُ اللَّهِ وَمِلْكُ يَدِهِ فَلاَ يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ . فَقَالَ لِي يَرْحَمُكَ اللَّهُ إِنِّي لَمْ أُرِدْ بِمَا سَأَلْتُكَ إِلاَّ لأَحْزُرَ عَقْلَكَ إِنَّ رَجُلَيْنِ مِنْ مُزَيْنَةَ أَتَيَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالاَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ الْيَوْمَ وَيَكْدَحُونَ فِيهِ أَشَىْءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ

(6739) अबुल अस्वद दिअली (रह.) कहते हैं, मुझे हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कहा, क्या जानते हो? आज लोग जो अमल कर रहे हैं और उसके लिये जो मशक़्क़त बर्दाश्त कर रहे हैं, क्या ये ऐसी चीज़ है जिसका उनके बारे में फ़ैसला कर दिया गया है, वो साबिक़ा तक़दीर से ये तय हो चुके हैं? या उनका नबी जो शरीअत लाया और उन पर हुज्जत क़ायम हो गई है, उसकी रोशनी में नये सिरे से हो रहे हैं? तो मैंने कहा, बल्कि ये ऐसी चीज़ है जिसका उनके बारे में फ़ैसला हो चुका है और उनके लिये तय हो चुकी है? तो उन्होंने कहा, तो क्या ये ज़ुल्म न होगा (कि उन्हें जो अमल करने हैं, उसका फ़ैसला पहले ही हो चुका है और जज़ा व सज़ा उन्हें भुगतनी है) चुनाँचे मैं उससे बहुत ज़्यादा घबरा गया और मैंने कहा, हर चीज़ अल्लाह की पैदा की हुई है और उसकी मम्लूक है, इसलिये उससे उसके काम के बारे में पूछा नहीं जा सकता और मख़्लूक़ से पूछा जायेगा। तो हज़रत इमरान (रज़ि.) ने मुझे कहा, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाये, मैंने तुझसे सवाल सिर्फ़ तेरे अक़्ल व शऊर का

وَمَضَى فِيهِمْ مِنْ قَدَرٍ قَدْ سَبَقَ أَوْ فِيمَا يُسْتَقْبَلُونَ بِهِ مِمَّا أَتَاهُمْ بِهِ نَبِيُّهُمْ وَثَبَتَتِ الْحُجَّةُ عَلَيْهِمْ فَقَالَ " لاَ بَلْ شَىْءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ وَمَضَى فِيهِمْ وَتَصْدِيقُ ذَلِكَ فِي كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ { وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا * فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا}".

अन्दाज़ा लगाने के लिये किया। मुज़ैना क़बीले के दो आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! बताइये लोग आज जो अ़मल कर रहे हैं और उसके लिये जो मेहनत व मशक़्क़त कर रहे हैं, क्या ये ऐसी चीज़ है, जिसका उनके बारे में फ़ैसला हो चुका है और साबिक़ा तक़दीर से उनके बारे में तय हो चुका है या नये सिरे से कर रहे हैं, उस शरीअ़त की रोशनी में, जो उनका नबी उनके पास लाया है और उन पर हुज्जत क़ायम हो चुकी है? तो आपने फ़रमाया, 'नहीं! बल्कि ये ऐसी चीज़ है, जिसका उनके बारे में फ़ैसला हो चुका है और उनके बारे में तय हो चुकी है और उसकी तस्दीक़ अल्लाह बरतर और बुज़ुर्ग की किताब में मौजूद है और शाहिद है नफ़्स और उसका नोक पलक संवारना कि उसका उसे उसकी बदी और तक़वा का इल्हाम फ़रमाना।' (सूरह शम्स : 7-8)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ अल्लाह तआ़ला ने हर इंसान को बदी और तक़वा के दरम्यान इम्तियाज़ (फ़र्क़) करने की सलाहियत और शऊर बख़्शा है और उससे काम लेकर वो नेकी या बदी कर रहा है। लेकिन अल्लाह को पहले से पता है, उसे नेकी करनी है या बदी। इसलिये अपने इल्म के मुताबिक़ उसने लिख दिया है कि उसे कौनसे अ़मल करने हैं और उसके मुताबिक़ वो अ़मल कर रहा है, इसलिये ये जबर नहीं है कि उसको ज़ुल्म क़रार दिया जाये, बिल्फ़र्ज़ वो अगर जबर भी करता तो ये ज़ुल्म न होता, क्योंकि वो हर चीज़ का ख़ालिक़ और मालिक है, इसलिये वो किसी को जवाबदेह नहीं है, इंसान मख़्लूक़ होने की बिना पर अपने आ़माल का जवाबदेह है, उससे सवाल होगा, तूने ये अ़मल क्यों किया, ला युस्अलु अ़म्मा यफ़अलु वहुम् युस्अलून (सूरह अम्बिया)

(6740) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक इंसान, लम्बे अरसे तक जन्नत वाले काम करता रहता है।' फिर उसके अमलों का ख़ातमा अहले नार वाले अमल पर होता है और एक इंसान एक तवील (लम्बी) मुद्दत तक दोज़ख़ियों वाले अमल करता रहता है, फिर उसके अमलों का ख़ातमा जन्नतियों वाले अमल पर हो जाता है।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ الزَّمَنَ الطَّوِيلَ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخْتَمُ لَهُ عَمَلُهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ الزَّمَنَ الطَّوِيلَ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ ثُمَّ يُخْتَمُ لَهُ عَمَلُهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ "

फ़ायदा : इंसान का ख़ातमा किस क़िस्म के अमल पर होगा, इंसान अपने नाक़िस और कम इल्म की बिना पर इससे आगाह नहीं हो सकता, इसलिये वो समझता है कि फ़लाँ जन्नतियों वाले काम कर रहा है और उसका ख़ातमा उस पर होगा, हालांकि ऐसे नहीं होता, क्योंकि उसके उन अच्छे आमाल का दाइया और मुहर्रिक अच्छा नहीं होता, इसलिये उसका ख़ातमा बुरे अमल पर होता है। इस तरह दूसरा इंसान किसी मजबूरी की बिना पर बुरा काम करता है, दिल से वो उसे बुरा ही ख़याल करता है और उस बुरे अमल से बचना चाहता है, इसलिये उसका ख़ातमा अच्छे अमल पर होता है, इसलिये आपने उसके साथ फ़ीमा यब्दउ लिन्नास की क़ैद लगाई है, जिस तरह कि अगली हदीस़ में आ रहा है कि लोग ये समझते हैं, जबकि हक़ीक़त इसके बर ख़िलाफ़ है, जिसका ज़ुहूर ख़ातमे पर होता है।

(6741) हज़रत सहल बिन सअद साइदी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक इंसान अहले जन्नत वाले अमल करता रहता है, लोगों के सामने के हालात के ऐतबार से, हालांकि वो अहले नार (जहन्नमियों में) से होता है और एक इंसान लोगों के सामने के हालात के ऐतबार से दोज़ख़ियों वाले अमल करता रहता है, हालांकि वो जन्नती होता है।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ . وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ " .

बाब 2 : आदम और मूसा (अलै.) का मुकाल्मा या मुनाज़रा

باب حِجَاجِ آدَمَ وَمُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ دِينَارٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، الضَّبِّيُّ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ حَاتِمٍ وَابْنِ دِينَارٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ، عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ طَاوُسٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى فَقَالَ مُوسَى يَا آدَمُ أَنْتَ أَبُونَا خَيَّبْتَنَا وَأَخْرَجْتَنَا مِنَ الْجَنَّةِ فَقَالَ لَهُ آدَمُ أَنْتَ مُوسَى اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِكَلاَمِهِ وَخَطَّ لَكَ بِيَدِهِ أَتَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قَدَّرَهُ اللَّهُ عَلَىَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي بِأَرْبَعِينَ سَنَةً". فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم "فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى". وَفِي حَدِيثِ ابْنِ أَبِي عُمَرَ وَابْنِ عَبْدَةَ قَالَ أَحَدُهُمَا خَطَّ . وَقَالَ الآخَرُ كَتَبَ لَكَ التَّوْرَاةَ بِيَدِهِ.

(6742) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम और मूसा (अलै.) का मुबाहिसा हुआ तो मूसा (अलै.) ने कहा, ऐ आदम! आप हमारे बाप हैं, आपने हमें नाकाम किया और आपने हमें जन्नत से निकलवा दिया। तो आदम (ﷺ) ने उन्हें जवाब दिया, आप मूसा (अलै.) हैं, अल्लाह तआला ने तुम्हें अपने साथ हम कलाम होने का शर्फ़ बख़्शा और अपने हाथ से तुझे लिख कर दिया, क्या आप मुझे ऐसी बात पर मलामत करते हैं, जिसका अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से चालीस साल पहले, मेरे बारे में फ़ैसला कर दिया था?' चुनाँचे नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम, मूसा (अलै.) पर ग़ालिब आ गये, आदम (अलै.), मूसा पर ग़ालिब आ गये।' इब्ने अबी उमर और इब्ने अब्दह में से एक ने कहा, ख़त (लिख दिया) दूसरे ने कहा, तुझे तौरात अपने हाथ से लिख कर दी।

(सहीह बुख़ारी : 6614, अबू दाऊद : 4701, इब्ने माजह : 80)

फ़वाइद : (1) हज़रत आदम (अलै.) की तख़्लीक़ दुनिया में भेजने के लिये हुई थी, इसमें हज़रत आदम (अलै.) के फ़ेअल या अमल को कोई दख़ल नहीं है। एक तक्वीनी (होनी) चीज़ है और हज़रत आदम (अलै.) ने अपने अमल से तौबा कर ली थी और माफ़ी माँग ली थी, इसलिये उन्होंने तक़दीर

को अपने अ़मल के लिये हुज्जत नहीं बनाया, बल्कि जन्नत से निकाले जाने की मुसीबत पर दलील बनाया और तक़दीर को अपने अ़मल के लिये हुज्जत बनाना जाइज़ नहीं है और अपने साथ होने वाली मुसीबत पर दलील व हुज्जत बनाना दुरुस्त है। इसलिये कहा जाता है, तक़दीर को मआ़युब (ऐबों) के लिये हुज्जत व दलील नहीं बनाना चाहिये, ताकि इंसान अपने गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार कर सके और उनसे बाज़ आने की कोशिश करे, लेकिन मुसीबतों पर दलील व हुज्जत बनाना चाहिये ताकि सब्र व तसल्ली हो सके। क्योंकि तकलीफ़ व मुसीबत से दोचार होने के बाद उस पर जज़अ़ व फ़ज़अ़ का कोई फ़ायदा नहीं है, बल्कि नुक़सान है कि सब्र व शकीब से महरूम होकर इंसान अज्र व स़वाब से भी महरूम हो जाता है और उस जज़अ़ व फ़ज़अ़ के नतीजे में कुछ हासिल भी नहीं होता। **(2)** अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें तौरात अपने हाथ से लिख कर दी। अल्लाह इस कायनात का ख़ालिक़ और मालिक है और कायनात और उसकी हर चीज़ मख़्लूक़ है, तो जिस तरह हम ख़ालिक़ की ज़ात की हक़ीक़त व माहियत से आगाह नहीं हैं, उसी तरह उसके हाथ की कैफ़ियत व सूरत से भी आगाह नहीं, जिस तरह उसकी ज़ात, उसकी ख़ालिक़ियत के लायक़ और मुनासिब है, उसी तरह उसका हाथ भी उसकी ख़ालिक़ियत की शान के मुताबिक़ है। हमें उस पर ईमान लाना चाहिये और उसकी कैफ़ियत व सूरत पर बहस़ नहीं करना चाहिये कि वो कैसी है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَحَاجَّ آدَمُ وَمُوسَى فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى فَقَالَ لَهُ مُوسَى أَنْتَ آدَمُ الَّذِي أَغْوَيْتَ النَّاسَ وَأَخْرَجْتَهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ فَقَالَ آدَمُ أَنْتَ الَّذِي أَعْطَاهُ اللَّهُ عِلْمَ كُلِّ شَىْءٍ وَاصْطَفَاهُ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِهِ قَالَ نَعَمْ . قَالَ فَتَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قُدِّرَ عَلَىَّ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ " .

(6743) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम (अ़लै.) और मूसा (अ़लै.) में मुबाहिस़ा हुआ तो आदम (अ़लै.) ग़ालिब आ गये। चुनाँचे मूसा (अ़लै.) ने उन्हें कहा, आप वो आदम हैं, जिसने लोगों को (जन्नत की राह से) हटा दिया और उन्हें जन्नत से निकलवा दिया? तो आदम (अ़लै.) ने जवाब दिया, आप वो शख़्सियत हैं, जिसको अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का इल्म दिया और लोगों पर अपनी पैग़म्बरी के सबब बरगुज़ीदा किया। मूसा (अ़लै.) ने कहा, हाँ! आदम (अ़लै.) ने कहा, तो मुझे ऐसे मामले पर मलामत करते हो, जिसका मेरे बारे में, मेरी पैदाइश से भी पहले फ़ैसला हो चुका था।'

फ़ायदा : हज़रत मूसा (अलै.) का ग़वायत से ये मक़सद है, अगर आप जन्नत के दरख़्त के फल न खाते, जन्नत से न निकलते और लोग दुनियवी मफ़ादात और ख़्वाहिशात के ग़ुलाम न होते और शैतान उनको गुमराह न कर सकता और न लोग अल्लाह की नाफ़रमानी करके जन्नत से महरूम होते। हालांकि आदम (अलै.) का जन्नत से निकलने में कोई दख़ल नहीं है और दुनिया में लोगों को इम्तिहान व आज़माइश के लिये ही भेजा गया है और शैतान से बचाव की तदबीरें भी अक़्ल व शऊर और रसूलों के ज़रिये बता दी गई हैं और उसमें आदम (अलै.) का कोई दख़ल नहीं है, ये तो ऐसे ही है, जैसे शहद की मक्खी को परवाने का क़ातिल क़रार दिया जाये।

(6744) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम और मूसा (अलै.) का अपने रब के हुज़ूर मुबाहिसा हुआ तो आदम (अलै.), मूसा पर ग़ालिब आ गये। मूसा (अलै.) ने कहा, आप वो आदम हैं, जिसे अल्लाह तआला ने अपने हाथ से पैदा किया और तुझमें अपनी रूह फूंकी और तुझे अपने फ़रिश्तों से सज्दा करवाया और तुझे अपनी जन्नत में आबाद किया, फिर तूने अपनी चूक की पादाश में लोगों को ज़मीन में उतरवा दिया। चुनाँचे आदम (अलै.) ने जवाब दिया, आप वो मूसा हैं, जिसे अल्लाह ने अपनी रिसालत और हम कलामी के लिये चुना और तुझे वो तख़्तियाँ दी, जिनमें हर चीज़ की वज़ाहत मौजूद है और तुझे सरगोशी (बातचीत) का शर्फ़ बख़्शा (बातचीत के लिये तुझे क़ुर्ब बख़्शा) तो आपने मेरी तख़्लीक़ से कितना अरसा पहले, अल्लाह को तौरात लिखे हुए पाया? मूसा (अलै.) ने कहा, चालीस साल। आदम (अलै.) ने पूछा, क्या आपने उसमें ये भी लिखा हुआ पाया, आदम ने अपने रब की (ग़ैर

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُوسَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنِي الْحَارِثُ بْنُ أَبِي ذُبَابٍ، عَنْ يَزِيدَ، - وَهُوَ ابْنُ هُرْمُزَ - وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ قَالاَ سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ عِنْدَ رَبِّهِمَا فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى قَالَ مُوسَى أَنْتَ آدَمُ الَّذِي خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلاَئِكَتَهُ وَأَسْكَنَكَ فِي جَنَّتِهِ ثُمَّ أَهْبَطْتَ النَّاسَ بِخَطِيئَتِكَ إِلَى الأَرْضِ فَقَالَ آدَمُ أَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ وَأَعْطَاكَ الأَلْوَاحَ فِيهَا تِبْيَانُ كُلِّ شَىْءٍ وَقَرَّبَكَ نَجِيًّا فَبِكَمْ وَجَدْتَ اللَّهَ كَتَبَ التَّوْرَاةَ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ قَالَ مُوسَى بِأَرْبَعِينَ عَامًا . قَالَ آدَمُ

فَهَلْ وَجَدْتَ فِيهَا] وَعَصَى آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَى[قَالَ نَعَمْ . قَالَ أَفَتَلُومُنِي عَلَى أَنْ عَمِلْتُ عَمَلاً كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَىَّ أَنْ أَعْمَلَهُ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي بِأَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى " .

शऊरी तौर पर) नाफ़रमानी की, इसलिये वो अपने (मक़सद) को न पा सके? हाँ! आदम (अलै.) ने कहा, तो क्या मुझे ऐसे अमल के करने पर मलामत करते हैं, जिसका करना अल्लाह तआला ने मेरे बारे में मेरी पैदाइश से भी चालीस साल पहले लाज़िम ठहरा चुका था?' रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस तरह आदम (अलै.) ग़ालिब आ गये।'

फ़ायदा : व असा आदमु रब्बहू फ़ग़वा : (सूरह ताहा आयत नम्बर 121) अल्लाह के नबी की शान और मर्तबा चूंकि बहुत बुलंद व बाला होता है, इसलिये उसके ग़ैर शऊरी इक़्दाम को भी इस्यान से ताबीर कर दिया जाता है, हालांकि वो इक़्दाम लोगों के ऐतबार से इस्यान नहीं है, अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'फ़नसि-य वलम् नजिद् लहू अज़्मा' (सूरह ताहा : 115) अल्लाह की हिदायत को भूल गये, वो उनकी आँखों से ओझल हो गये, इसलिये वो मज़बूत अज़्म के साथ उन पर जम न सके और ज़ाहिर है भूल-चूक क़ाबिले मुवाख़िज़ा (पकड़) नहीं है, लेकिन उस भूल का ये नतीजा निकला, वो नाकाम और नामुराद हो गये। जन्नत की नेमतों से महरूम हो गये और जिस मक़सद के लिये ये काम किया था और शैतान ने जिन तरग़ीबात के ज़रिये, उन्हें अल्लाह की ताकीद व हिदायत से ग़ाफ़िल किया था और जिन तरग़ीबात से उसके दामे फ़रेब में फंस गये थे, उनमें से कुछ भी हासिल न हुआ। क्योंकि ग़वा का मानी है, ज़ल्ल, ख़ाब। मक़सद से भटक गये और उसके हासिल करने से नाकाम व नामुराद हो गये और मेरी पैदाइश से चालीस साल पहले लिखने का मक़सद ये है कि ये वाक़िया तौरात में मेरी तख़्लीक़ से चालीस साल पहले लिख दिया, वरना अल्लाह का इल्म तो अज़ली है, उसने आसमान व ज़मीन की तख़्लीक़ से पचास हज़ार साल पहले, अपने अज़ली इल्म के मुताबिक़ सब कुछ लोहे महफ़ूज़ में लिख दिया था, जैसाकि आगे हदीस आ रही है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ، حَاتِمٍ قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى فَقَالَ لَهُ مُوسَى

(6745) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदम और मूसा (अलै.) में मुकाल्मा हुआ तो मूसा (अलै.) ने उन्हें कहा, आप वो आदम हैं, जिसकी चूक ने उसे जन्नत से निकलवा दिया। तो आदम (अलै.) ने उन्हें कहा, आप वो मूसा (अलै.) हैं, जिसको अल्लाह ने अपनी

أَنْتَ آدَمُ الَّذِي أَخْرَجَتْكَ خَطِيئَتُكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَقَالَ لَهُ آدَمُ أَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ ثُمَّ تَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِّرَ عَلَىَّ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى " .

रिसालत और हम कलामी के लिये चुन लिया, फिर तुम मुझे ऐसे काम पर मलामत करते हो जो मेरी पैदाइश से पहले फ़ैसला हो चुका था। चुनाँचे आदम (अलै.) मूसा (अलै.) पर ग़ालिब आ गये।'

(सहीह बुख़ारी : 3409, 7515)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ النَّجَّارِ الْيَمَامِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمَعْنَى حَدِيثِهِمْ.

(6746) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 4838)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَحْوَ حَدِيثِهِمْ .

(6747) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ حَدَّثَنَا ابْنُ، وَهْبٍ أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ الْخَوْلاَنِيُّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبُلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو، بْنِ الْعَاصِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " كَتَبَ اللَّهُ مَقَادِيرَ الْخَلاَئِقِ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ بِخَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ - قَالَ - وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ " .

(6748) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ात की तक़दीरें, आसमान व ज़मीन की तख़्लीक़ (पैदाइश) से पचास हज़ार साल पहले लिख दी थीं और उसका अर्श पानी पर था।' (तिर्मिज़ी : 2156)

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا نَافِعٌ، - يَعْنِي ابْنَ يَزِيدَ - كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي هَانِئٍ، . بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّهُمَا لَمْ يَذْكُرَا وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ .

(6749) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों की सनदों से अबू हानी ही की सनद से बयान करते हैं, लेकिन इसमें इसका ज़िक्र नहीं है कि उसका अ़र्श पानी पर था।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि तमाम मख़्लूक़ात जिनको आसमान व ज़मीन के अंदर पैदा करना था, उनके बारे में हर क़िस्म की तफ़्सीलात कि उनकी बनावट, शक्ल व सूरत, रंग व रोग़न, उनका मक़सद, उनका तरीक़ेकार और उनका अ़मल, जो अल्लाह के इल्मे अज़ली में पहले से मालूम थीं, उनको लिख भी दिया गया और उनको तय और मुक़र्रर भी कर दिया गया और पचास हज़ार से मुराद एक तवील अ़रसा है और अ़रबी ज़बान में किसी चीज़ के तय कर देने और मुअ़य्यन व मुक़र्रर कर देने के लिये भी किताबत का लफ़्ज़ इस्तेमाल हो जाता, जैसाकि अल्लाह का फ़रमान है, कत-ब अ़ला नफ़्सिहिर्रह्मह अल्लाह ने अपने बारे में ये तय फ़रमाया है कि वो मख़्लूक़ से रहमत का बर्ताव करेगा। (हुज्जतुल्लाह, जिल्द 1, पेज नं. 166)

शाह साहब ने कत-ब का मानी मुक़र्रर करना किया है और कुछ रिवायात में कत-ब की जगह क़द-र का लफ़्ज़ भी इस मानी का क़रीना है और इस हदीस़ से ये भी मालूम हुआ, उस वक़्त अ़र्श और पानी पैदा किये जा चुके थे और उससे मुराद पचास हज़ार की मुअ़य्यना मुद्दत भी ली जा सकती है कि अगर माह व साल होते तो इतना अ़रसा बनता, क्योंकि माह व साल का आग़ाज़ तो आसमान व ज़मीन की तख़्लीक़ के बाद हुआ है।

باب تَصْرِيفِ اللَّهِ تَعَالَى الْقُلُوبَ كَيْفَ شَاءَ

बाब 3 : अल्लाह तआ़ला जिस तरह चाहे दिलों को फेर देता है

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ كِلاَهُمَا عَنِ الْمُقْرِئِ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ، اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ قَالَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ، أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبُلِيَّ، أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، يَقُولُ أَنَّهُ

(6750) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'बनू आदम के तमाम क़ुलूब (दिल) रहमान की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरम्यान हैं, एक दिल की तरह, वो उसे जैसे चाहे फेर देता

سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ قُلُوبَ بَنِي آدَمَ كُلَّهَا بَيْنَ إِصْبَعَيْنِ مِنْ أَصَابِعِ الرَّحْمَنِ كَقَلْبٍ وَاحِدٍ يُصَرِّفُهُ حَيْثُ يَشَاءُ " . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ صَرِّفْ قُلُوبَنَا عَلَى طَاعَتِكَ "

है।' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! दिलों के फेरने वाले! हमारे दिल अपनी इताअत व बन्दगी की तरफ़ फेर दे।'

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ इंसानों के अमल अल्लाह तआला के इख़्तियार और उसके क़ब्ज़े में हैं, वही जिधर चाहे, उन्हें फेर देता है और ये उसकी हिक्मत और मस्लिहत के मुताबिक़ होता है। हर इंसान से वो वही सुलूक करता है, उधर ही उसका दिल मोड़ता है, जिसका वो अहल होता है। वो इंसानों से फ़ज़्ल व रहमत का सुलूक तो करता है, किसी के साथ ज़ुल्म व ज़्यादती और नाइंसाफ़ी नहीं करता और अल्लाह की उंगलियों से मुराद, वो उंगलियाँ हैं, जो उसकी शाने ख़ालिक़ियत के लायक़ हैं, उनकी कैफ़ियत व हक़ीक़त को जानना मुम्किन नहीं है।

باب كُلُّ شَىْءٍ بِقَدَرٍ

बाब 4 : हर चीज़ तक़दीर से है, यानी हर चीज़ तक़दीर के मुताबिक़ वुजूद में आ रही है

حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ زِيَادِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَاوُسٍ، أَنَّهُ قَالَ أَدْرَكْتُ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَقُولُونَ كُلُّ شَىْءٍ بِقَدَرٍ . قَالَ وَسَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " كُلُّ شَىْءٍ بِقَدَرٍ حَتَّى الْعَجْزُ وَالْكَيْسُ أَوِ الْكَيْسُ وَالْعَجْزُ " .

(6751) ताऊस (रह.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के बहुत से सहाबियों को मिला, सब यही कहते थे, हर चीज़ तक़दीर से है और मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को ये बयान करते हुए सुना, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर चीज़ तक़दीर से जुड़ी है, यहाँ तक कि बेचारगी व बेबसी (नाक़ाबिल व नाकारा होना) और महारत व होशियारी भी, दानिशमन्दी और होशियारी और बेबसी व कमज़ोरी भी।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ कि आदमी की सिफ़ात क़ाबिलियत व नाक़ाबिलियत, सलाहियत व ग़ैर सलाहियत और दानिशमन्दी व होशियारी (और बेवक़ूफ़ी व काहिली वग़ैरह भी अल्लाह की तक़दीर से हैं अल्ग़र्ज़ दुनिया में जो कोई जैसा) और जिस हालत में है, वो अल्लाह की क़द्र से वाबस्ता है, हर चीज़ का अल्लाह को अज़ल से इल्म है और उसके मुताबिक़ तय हो चुका है और उसके मुताबिक़ हो रहा है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ زِيَادِ، بْنِ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ الْمَخْزُومِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ جَاءَ مُشْرِكُو قُرَيْشٍ يُخَاصِمُونَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْقَدَرِ فَنَزَلَتْ { يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ* إِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ}

(6752) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि क़ुरैशी मुश्रिक रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये, वो आपसे तक़दीर के मसले पर झगड़ते थे। चुनाँचे ये आयतें उतरीं, 'जिस दिन वो जहन्नम में ओन्धे मुँह घसीटे जायेंगे (कहा जायेगा) दोज़ख़ के अ़ज़ाब से दोचार हो, बेशक हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से बनाया है।' (सूरह क़मर : 48-49)

(तिर्मिज़ी : 2157, इब्ने माजह : 83)

फ़ायदा : इस आयते मुबारका से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ एक ख़ास अन्दाज़े से बनाई है और उसने हर चीज़ के लिये एक वक़्ते मुक़र्ररह, मुअय्यन ठहरा दिया है और उसको मोहलत देता है ताकि वो अपनी ग़ायत और इन्तिहा को पहुँच जाये, क़ौमों के साथ भी उसका मामला इसी उसूल के मुताबिक़ है, कोई क़ौम सरकशी की राह इख़्तियार करती है तो वो उसको फ़ोरन नहीं पकड़ता, बल्कि उसको इतनी मोहलत देता है कि वो अपनी ख़ैर व शर की तमाम सलाहियतें उजागर कर सके, ताकि उस पर हुज्जत पूरी हो जाये और क़यामत के दिन कोई बहाना न पेश कर सके।

باب قُدِّرَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظُّهُ مِنَ الزِّنَى وَغَيْرِهِ

बाब 5 : आदम के बेटे पर ज़िना वग़ैरह का हिस्सा मुक़द्दर (तय) है

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لإِسْحَاقَ - قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ

(6753) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने लमम की सबसे ज़्यादा सहीह वज़ाहत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के बयान करदा क़ौल में देखी है कि नबी (ﷺ) ने

ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَشْبَهَ بِاللَّمَمِ مِمَّا قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَى أَدْرَكَ ذَلِكَ لاَ مَحَالَةَ فَزِنَى الْعَيْنَيْنِ النَّظَرُ وَزِنَى اللِّسَانِ النُّطْقُ وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذَلِكَ أَوْ يُكَذِّبُهُ " . قَالَ عَبْدٌ فِي رِوَايَتِهِ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ .

फ़रमाया, 'बेशक अल्लाह तआला ने इब्ने आदम के बारे में ज़िना में, उसका हिस्सा मुक़र्रर कर दिया है, जिसको वो ला मुहाला हासिल करके रहेगा। चुनाँचे आँखों का ज़िना नज़रे बद है और ज़बान का ज़िना (शहवत अंगेज़) बातचीत है और दिल तमन्ना (आरज़ू) और ख़्वाहिश करता है और शर्मगाह उसकी तस्दीक़ या तक्ज़ीब करती है।'

(सहीह बुख़ारी : 6343, 6612, अबू दाऊद : 2152)

फ़ायदा : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का मक़सद सूरह नज्म की आयत अल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल् इस्मि वल्फ़वाहि-श इल्लल्लमम (सूरह नज्म : 32) 'वो लोग जो कबीरा गुनाहों (बड़े-बड़े गुनाहों) और बेहयाई के कामों से रुकते हैं, मगर छोटे गुनाह का इर्तिकाब कर बैठते हैं।' में लफ़्ज़ 'लमम' की तफ़्सीर बयान करना है कि इस हदीस में जिन गुनाहों को फ़रज के गुनाह के सिवा बयान किया है, वो 'लमम' हैं। इस हदीस से मालूम हुआ नज़रे बद, शहवत अंगेज़ बातचीत और बोसो-किनार, किसी अजनबी औरत को हाथ लगाना और ग़लतकारी की निय्यत से उसकी तरफ़ चल कर जाना, ये तमाम गुनाह 'लमम' में दाख़िल हैं, उनसे गुनाह की तरफ़ मैलान का इज़हार होता है और ये उसकी तस्दीक़ या तक्ज़ीब शर्मगाह करती है, यानी उन कामों से शर्मगाह में हरकत और दाइया पैदा होता है तो फिर ये ज़िना होगा। अगर उन कामों से शर्मगाह मुतास्सिर नहीं होती तो ये ज़िना नहीं होगा, अगरचे ग़लत काम होगा और इससे ये भी मालूम हुआ तस्दीक़ और तक्ज़ीब सिर्फ़ दिल और ज़बान का काम नहीं है, आज़ा और जवारेह (अंगों) का अमल भी तस्दीक़ और तक्ज़ीब पर दलालत करता है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو هِشَامٍ الْمَخْزُومِيُّ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " كُتِبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ نَصِيبُهُ مِنَ الزِّنَى مُدْرِكٌ ذَلِكَ لاَ

(6754) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'आदम के बेटे पर ज़िना में हिस्सा तय कर दिया गया है, जिसे वो ला मुहाला हासिल करके रहेगा, चुनाँचे आँखों का ज़िना नज़रे बद है, कानों का ज़िना (बेहयाई की, फ़हश बातचीत) सुनना है और ज़बान का ज़िना इस

مَحَالَةَ فَالْعَيْنَانِ زِنَاهُمَا النَّظَرُ وَالأُذُنَانِ زِنَاهُمَا الاِسْتِمَاعُ وَاللِّسَانُ زِنَاهُ الْكَلاَمُ وَالْيَدُ زِنَاهَا الْبَطْشُ وَالرِّجْلُ زِنَاهَا الْخُطَا وَالْقَلْبُ يَهْوَى وَيَتَمَنَّى وَيُصَدِّقُ ذَلِكَ الْفَرْجُ وَيُكَذِّبُهُ".

सिलसिले में बातचीत करना है और हाथ का ज़िना (बुरी निय्यत से) पकड़ना है और पाँव का ज़िना (ज़िना की ख़ातिर) चलना है और दिल ख़्वाहिश और तमन्ना करता है और शर्मगाह उसकी तस्दीक़ या तक्ज़ीब करती है।'

بَاب مَعْنَى كُلِّ مَوْلُودٍ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ وَحُكْمِ مَوْتِ أَطْفَالِ الْكُفَّارِ وَأَطْفَالِ الْمُسْلِمِينَ

बाब 6 : 'हर पैदा होने वाला बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है' का मफ़्हूम और काफ़िरों के बच्चों और मुसलमानों के बच्चों का अन्जाम या उनकी मौत का हुक्म

حَدَّثَنَا حَاجِبُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنِ الزُّبَيْدِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلاَّ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ وَيُمَجِّسَانِهِ كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ " . ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ وَاقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ {فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ} الآيَةَ .

(6755) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर मौलूद (पैदा होने वाला) फ़ितरत पर पैदा होता है, चुनाँचे उसके वालिदैन उसको यहूदी, ईसाई और मजूसी बना डालते हैं, जैसे चौपाये का बच्चा, कामिलुल आज़ा (पूरे अंग वाला) पैदा होता है, क्या तुम्हें उनमें कोई कटे हुए कान वाला नज़र आता है?' फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) फ़रमाते, अगर चाहो तो ये आयत पढ़ लो, 'उस फ़ितरत की पाबंदी करो, जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह तआला की पैदा की हुई सरशत (ख़िल्क़त) बदल नहीं सकती।' (सूरह रूम : 30)

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने तमाम बनू आदम की रूहों से अहदे रुबूबियत (अहदे अलस्तु) लिया था और उसके मुताबिक़, तमाम इंसानों की फ़ितरत व सरशत या जिबिल्लत में अल्लाह तआला की रुबूबियत का इक़रार रख दिया है और अल्लाह की रुबूबियत ही दीन का बीज है, इसलिये हर इंसान फ़ितरते इस्लामिया पर पैदा होता है, उसमें क़ुबूल करने की सलाहियत व इस्तिअदाद रख दी गई है,

लेकिन माहौल इंसान को मुतास्सिर (प्रभावित) करता है और सबसे ज़्यादा इंसान अपने वालिदैन से मुतास्सिर होता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، كِلاَهُمَا عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً " . وَلَمْ يَذْكُرْ جَمْعَاءَ .

(6756) इमाम साहब यही रिवायत अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं, इसमें है, 'जैसे चौपाये के यहाँ चौपाये पैदा होता है।' इसमें जम्आअ् (सालिम जानवर) का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ، يَزِيدَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلاَّ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ " . ثُمَّ يَقُولُ اقْرَءُوا { فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ}

(6757) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है।' फिर फ़रमाते ये आयत पढ़ो, 'अल्लाह की फ़ितरत की पाबंदी करो, जिस पर उसने लोगों को पैदा फ़रमाया है, अल्लाह की फ़ितरत को न बदलो, यही सीधा मुस्तहकम (मज़बूत) दीन है।'

(सहीह बुख़ारी : 1359)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلاَّ يُلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ وَيُشَرِّكَانِهِ " . فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ لَوْ مَاتَ قَبْلَ ذَلِكَ قَالَ " اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ "

(6758) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है, चुनाँचे उसके वालिदैन उसे यहूदी या ईसाई या मुश्रिक बना डालते हैं।' तो एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! बताइये, अगर वो उससे पहले मर जाये? आपने फ़रमाया 'अल्लाह को ख़ूब इल्म है, उन्हें जो अमल करने थे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : युलिद : असल में वुलिद था, कई बार 'वाव' को 'या' से बदल देते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . فِي حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ " مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلاَّ وَهُوَ عَلَى الْمِلَّةِ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ " إِلاَّ عَلَى هَذِهِ الْمِلَّةِ حَتَّى يُبَيِّنَ عَنْهُ لِسَانُهُ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ " لَيْسَ مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلاَّ عَلَى هَذِهِ الْفِطْرَةِ حَتَّى يُعَبِّرَ عَنْهُ لِسَانُهُ " .

(6759) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से अअ़्मश ही की ऊपर वाली सनद से बयान करते हैं, इब्ने नुमैर की रिवायत में है, 'हर बच्चा जो पैदा होता है, वो मिल्लत पर पैदा होता है।' अबू बकर की रिवायत में है, 'मगर उस मिल्लत पर यहाँ तक कि वो ज़बान से उसका इज़हार करे।' और अबू कुरैब की रिवायत है, 'हर बच्चा उस फ़ितरत पर पैदा होता है, यहाँ तक कि उसकी ज़बान उसको बयान करे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : अल्लाहु अअ़्लमु बिमा कानू आ़मिलीन : अल्लाह को ख़ूब मालूम है, अगर वो ज़िन्दा रहते तो बालिग़ (बड़े) होने के बाद कौनसे अ़मल करते, क्योंकि उसका इ़ल्म अज़ली भी है और अबदी भी, इसलिये वही उनका अन्जाम बता सकता है। **हत्ता युबय्य-न अ़न्हु औ युअ़ब्बिरु अ़न्हु लिसानुहू :** जब तक वो शऊ़र और तमीज़ की उ़म्र को पहुँच कर अपने मौक़िफ़ और दीन का इज़हार नहीं करता, वो फ़ितरत पर क़ायम होता है और मिल्लते इस्लामिया पर अ़मल पैरा होने और उसको क़ुबूल करने की सलाहियत (ताक़त) मौजूद होती है, उसकी फ़ितरत में बिगाड़ अगर पैदा होता है तो वो अपने माहौल और गर्दो-पेश की बिना पर होता है और आ़म तौर पर ज़्यादा अस़र वालिदैन की राय और फ़िक्र का होता है और उन्ही का दीन क़ुबूल करता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ يُولَدُ يُولَدُ عَلَى هَذِهِ الْفِطْرَةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ

(6760) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने हम्माम बिन मुनब्बिह को बहुत सी हदीसें सुनाईं, उनमें से एक ये है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो बच्चा पैदा होता है, फ़ितरत पर पैदा होता है (उसकी फ़ितरत में कोई बिगाड़ और ख़राबी नहीं होती) चुनाँचे उसके वालिदैन उसको यहूदी और नसरानी बनाते हैं, जिस तरह तुम ऊँट का बच्चा लेते हो, क्या तुम उनमें कान

कटा पाते हो? यहाँ तक कि तुम ख़ुद ही उनका कान काटते हो।' सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! बतायें जो बच्चे छोटे ही फ़ौत हो जाते हैं (बुलूग़त को नहीं पहुँचते)?' आपने फ़रमाया, 'अल्लाह को ख़ूब इल्म है, उन्हें कौनसे अमल करने थे।'

كَمَا تَنْتِجُونَ الإِبِلَ فَهَلْ تَجِدُونَ فِيهَا جَدْعَاءَ حَتَّى تَكُونُوا أَنْتُمْ تَجْدَعُونَهَا " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَرَأَيْتَ مَنْ يَمُوتُ صَغِيرًا قَالَ " اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ " .

(सहीह बुख़ारी : 6599, 6600)

फ़ायदा : जो बच्चे बुलूग़त से पहले-पहले फ़ौत हो जाते हैं, अगर उनके वालिदैन मुसलमान हैं तो अहले सुन्नत के नज़दीक वो जन्नती हैं, लेकिन अगर वो अभी मुश्रिक हैं तो फिर इस मसले में उलमा के अलग-अलग अक़्वाल हैं, उनमें से अहम अक़्वाल छ: हैं :

(1) जुम्हूर अइम्मा के नज़दीक वो जन्नती हैं, क्योंकि वो फ़ितरत पर मरे हैं और जिन्हें दोज़ख़ में जाना है, उन्होंने अपनी फ़ितरत के ख़िलाफ़ बुरे आमाल किये और शिर्क व कुफ़्र के नतीजे हमेशा-हमेशा के लिये जहन्नमी बने या ईमान लाने के बाद, बद आमाली की पादाश में आरिज़ी तौर पर दोज़ख़ में दाख़िल हुए, लेकिन उनको तो अमल का मौक़ा ही नहीं मिला और बुख़ारी शरीफ़, किताबुत्तअ्बीर में रिवायत है कि जो बच्चा फ़ितरत पर फ़ौत होता है, वो जन्नती है ख़्वाह उसके वालिदैन मुश्रिक ही क्यों न हों। सहीह मौक़िफ़ यही है क्योंकि वो अभी मुकल्लफ़ ही न थे।

(2) वो अपने वालिदैन के ताबेअ हैं, चूंकि उनके वालिदैन मुश्रिक थे, इसलिये वो भी उनके हुक्म में हैं और वो दोज़ख़ी हैं, ये इन्तिहा पसंद, ख़ारिजियों के गिरोह इज़ारक़ा का मौक़िफ़ है।

(3) वो जन्नत और दोज़ख़ के दरम्यान में अस्हाबुल आराफ़ होंगे।

(4) ये जन्नतियों के ख़ुद्दाम (सेवक) होंगे।

(5) उनका आख़िरत में इम्तिहान होगा।

(6) उनके बारे में तवक़्क़ुफ़ (ख़ामोशी) इख़्तियार करेंगे, कोई राय क़ायम नहीं करेंगे।

(6761) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर इंसान जिसे उसकी वालिदा जनती है, वो फ़ितरत पर है। बाद में उसके वालिदैन उसे यहूदी, नसरानी और मजूसी बनाते हैं, अगर

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " كُلُّ إِنْسَانٍ تَلِدُهُ أُمُّهُ عَلَى الْفِطْرَةِ

وَأَبَوَاهُ بَعْدُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ وَيُمَجِّسَانِهِ فَإِنْ كَانَا مُسْلِمَيْنِ فَمُسْلِمٌ كُلُّ إِنْسَانٍ تَلِدُهُ أُمُّهُ يَلْكُزُهُ الشَّيْطَانُ فِي حِضْنَيْهِ إِلاَّ مَرْيَمَ وَابْنَهَا "

वालिदैन मुसलमान हों तो वो मुसलमान रहता है, हर इंसान जिसे वालिदा जनती है, शैतान उसकी कोखों में (दोनों पहलुओं में) मुक्का मारता है, सिवाये मरयम और उसके बेटे के।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : यल्कुज़ुहू : उसको मुक्का मारता है। **हिज़्नैही :** हिज़्न : पहलू, कोख।

حَدَّثَنَا أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، وَيُونُسُ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سُئِلَ عَنْ أَوْلاَدِ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ " اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ " .

(6762) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुश्रिकों के बच्चों के बारे में पूछा गया, तो आपने फ़रमाया, 'अल्लाह को ख़ूब इल्म है, उन्हें कौनसे अमल करने थे।'

(सहीह बुख़ारी : 1384, 6598, नसाई : 1948)

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ، عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَهْرَامَ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، ح وَحَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، - وَهُوَ ابْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ - كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ وَابْنِ أَبِي ذِئْبٍ . مِثْلَ حَدِيثِهِمَا غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِ شُعَيْبٍ وَمَعْقِلٍ سُئِلَ عَنْ ذَرَارِيِّ الْمُشْرِكِينَ .

(6763) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, शुऐब और मअ़क़िल की रिवायत औलाद की जगह ज़रारिय्यि का लफ़्ज़ है (मानी एक ही है)।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَطْفَالِ الْمُشْرِكِينَ مَنْ يَمُوتُ مِنْهُمْ صَغِيرًا فَقَالَ " اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ".

(6764) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुश्रिकों के उन बच्चों के बारे में पूछा गया, जो बचपन में फ़ौत हो जाते हैं। आपने फ़रमाया, 'अल्लाह को ख़ूब इल्म है, उन्हें किस क़िस्म के अमल करने थे।'

(6765) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुश्रिकों के बच्चों के बारे में पूछा गया? आपने फ़रमाया, 'जब अल्लाह ने उनको पैदा किया है तो उसे ये भी ख़ूब इल्म है, वो कौनसे अमल करने वाले थे।'

(सहीह बुख़ारी : 1383, 6597, अबू दाऊद : 4711, नसाई : 1951)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَطْفَالِ الْمُشْرِكِينَ قَالَ " اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ إِذْ خَلَقَهُمْ " .

फ़ायदा : अहले सुन्नत के नज़दीक अल्लाह को, मा का-न (जो हो चुका) मा यकूनु (जो होगा) मा ला यकूनु (जो नहीं होगा), लौ का-न कै-फ़ का-न यकूनु अगर उसे होना होता तो कैसे होता, सबका इल्म है।

(6766) हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बच्चा जिसे हज़रत ख़िज़्र ने क़त्ल किया था, उस पर कुफ़्र की मुहर लगी हुई थी और वो अगर ज़िन्दा रहता तो अपने वालिदैन को कुफ़्र और सरकशी पर फंसा देता।'

(अबू दाऊद : 4705, तिर्मिज़ी : 3150)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَقَبَةَ، بْنِ مَسْقَلَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الْغُلاَمَ الَّذِي قَتَلَهُ الْخَضِرُ طُبِعَ كَافِرًا وَلَوْ عَاشَ لأَرْهَقَ أَبَوَيْهِ طُغْيَانًا وَكُفْرًا " .

फ़ायदा : ये बच्चा फ़ितरते सलीमा पर पैदा हुआ था, लेकिन अगर ये ज़िन्दा रहता तो बुरे माहौल में बैठकर कुफ़्र इख़्तियार कर लेता, उसके वालिदैन उसकी मुहब्बत में, उसका रवय्या और तर्ज़े अमल क़ुबूल करते हुए सरकशी और कुफ़्र में मुब्तला हो जाते, अल्लाह तआला ने उनके नेक आमाल की बरकत से, उन पर रहम व करम फ़रमाया और उस बच्चे को मौत से दोचार कर दिया और हम बयान कर चुके हैं कि अल्लाह तआला को इल्म है जो नहीं हुआ है, अगर उसे होना होता तो कैसे होता।

(6767) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, एक बच्चा फ़ौत हो

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ عَمْرٍو،

عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ تُوُفِّيَ صَبِيٌّ فَقُلْتُ طُوبَى لَهُ عُصْفُورٌ مِنْ عَصَافِيرِ الْجَنَّةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوَلاَ تَدْرِينَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ الْجَنَّةَ وَخَلَقَ النَّارَ فَخَلَقَ لِهَذِهِ أَهْلاً وَلِهَذِهِ أَهْلاً " .

गया तो मैंने कहा, उसके लिये मसर्रत व शादमानी है, जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया है। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं है, अल्लाह ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया है तो उसके लिये भी बाशिन्दे पैदा किये हैं और उसके लिये भी अहल पैदा किये हैं।'

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) का मक़सद ये था अल्लाह, जो इंसान का ख़ालिक़ है और जन्नत व दोज़ख़ का भी ख़ालिक़ है, उसे ही सहीह और यक़ीनी तौर पर इल्म है कि जन्नती कौन है और दोज़ख़ी कौन है, उसके बताये बग़ैर अपनी तरफ़ से किसी को जन्नती और दोज़ख़ी कहने में जल्दबाज़ी का मुज़ाहिरा नहीं करना चाहिये, मालूम होता है, ये बात आपने उस दौर में फ़रमाई थी, जबकि अभी आपको बच्चों के जन्नती होने का इल्म नहीं था या आपने अभी दूसरों को उससे आगाह नहीं फ़रमाया था।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ عَمَّتِهِ، عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ دُعِيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى جَنَازَةِ صَبِيٍّ مِنَ الأَنْصَارِ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ طُوبَى لِهَذَا عُصْفُورٌ مِنْ عَصَافِيرِ الْجَنَّةِ لَمْ يَعْمَلِ السُّوءَ وَلَمْ يُدْرِكْهُ قَالَ " أَوَغَيْرَ ذَلِكَ يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ لِلْجَنَّةِ أَهْلاً خَلَقَهُمْ لَهَا وَهُمْ فِي أَصْلاَبِ آبَائِهِمْ وَخَلَقَ لِلنَّارِ أَهْلاً خَلَقَهُمْ لَهَا وَهُمْ فِي أَصْلاَبِ آبَائِهِمْ " .

(6768) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक अन्सारी बच्चे के जनाज़े के लिये बुलाया गया तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! उसके लिये मसर्रत व शादमानी है, जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया है, उसने कोई बुरा काम नहीं किया और न उसका वक़्त पाया। आपने फ़रमाया, 'या और कुछ है, ऐ आइशा! बेशक अल्लाह ने जन्नत के अहल पैदा किये हैं, उन्हें उसके लिये पैदा किया है, जबकि वो अभी अपने बापों की पीठों में थे और दोज़ख़ के अहल पैदा किये हैं, उन्हें उसके लिये पैदा किया है, जबकि वो अभी अपने बापों की पुश्तों में थे।'

(अबू दाऊद : 4713, नसाई : 1946, इब्ने माजह : 82)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, अल्लाह को इंसानी आमाल का उसके वुजूद में आने से पहले से इल्म है और हमें इंसान के आमाल का इल्म नहीं है, इसलिये किसी के जन्नती या दोज़ख़ी होने का फ़ैसला करना हमारी दस्तरस (पहुँच) से बाहर है, ये अल्लाह ही बता सकता है, इसलिये अपने तौर पर किसी के बारे में कुछ नहीं कहना चाहिये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، ح وَحَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حَفْصٍ، ح وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، كِلاَهُمَا عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، بِإِسْنَادِ وَكِيعٍ نَحْوَ حَدِيثِهِ .

(6769) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन और उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

بَاب بَيَانِ أَنَّ الآجَالَ وَالأَرْزَاقَ وَغَيْرَهَا لَا تَزِيدُ وَلَا تَنْقُصُ عَمَّا سَبَقَ بِهِ الْقَدَرُ

बाब 7 : जो उम्र और रिज़्क़ वग़ैरह तक़दीर में पहले तय हो चुका है, उसमें कमी व बेशी नहीं होती

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْيَشْكُرِيِّ، عَنِ الْمَعْرُورِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ زَوْجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ أَمْتِعْنِي بِزَوْجِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَبِأَبِي أَبِي سُفْيَانَ وَبِأَخِي مُعَاوِيَةَ . قَالَ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " قَدْ سَأَلْتِ اللَّهَ لآجَالٍ

(6770) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद रज़ि.) बयान करते हैं, नबी (ﷺ) की बीवी हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मुझे अपने ख़ाविन्द रसूलुल्लाह (ﷺ) और अपने बाप अबू सुफ़ियान (रज़ि.) और अपने भाई मुआविया (रज़ि.) से फ़ायदा उठाने का मौक़ा इनायत फ़रमा। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तूने अल्लाह से तय शुदा उम्रों, शुमार शुदा (गिने हुए) दिनों और तक़सीम शुदा रोज़ियों के बारे में दरख़्वास्त की है और वो किसी चीज़ को उसके तय शुदा वक़्त से पहले करेगा और न

مَضْرُوبَةٍ وَأَيَّامٍ مَعْدُودَةٍ وَأَرْزَاقٍ مَقْسُومَةٍ لَنْ يُعَجِّلَ شَيْئًا قَبْلَ حِلِّهِ أَوْ يُؤَخِّرَ شَيْئًا عَنْ حِلِّهِ وَلَوْ كُنْتِ سَأَلْتِ اللَّهَ أَنْ يُعِيذَكِ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ أَوْ عَذَابٍ فِي الْقَبْرِ كَانَ خَيْرًا وَأَفْضَلَ " . قَالَ وَذُكِرَتْ عِنْدَهُ الْقِرَدَةُ قَالَ مِسْعَرٌ وَأُرَاهُ قَالَ وَالْخَنَازِيرُ مِنْ مَسْخٍ فَقَالَ " إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَجْعَلْ لِمَسْخٍ نَسْلاً وَلاَ عَقِبًا وَقَدْ كَانَتِ الْقِرَدَةُ وَالْخَنَازِيرُ قَبْلَ ذَلِكَ " .

वक़्ते मुअय्यना से मुअख़्ख़र (देरी) करेगा और अगर तू अल्लाह तआला से ये दरख़्वास्त करती कि वो तुम्हें आग के अ़ज़ाब से या क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाये तो ये बेहतर और अफ़ज़ल होता।' रावी कहते हैं कि आपके सामने मस्ख़ के सबब बंदरों और मिस्अर कहते हैं, मेरे ख़्याल में ख़िन्ज़ीरों का भी ज़िक्र आया। तो आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला ने मस्ख़शुदा क़ौम की नसल या औलाद जारी नहीं की, यक़ीनन बंदर और ख़िन्ज़ीर उससे पहले भी मौजूद थे।'

حَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِهِ عَنِ ابْنِ بِشْرٍ وَوَكِيعٍ جَمِيعًا " مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ " .

(6771) इमाम साहब यही रिवायत अबू कुरैब से बयान करते हैं, इसमें औ (या) की जगह वाव है कि 'आग के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से।'

फ़वाइद : (1) उम्र और रिज़्क़ तय हैं, इसी तरह दोज़ख़ या क़ब्र का अ़ज़ाब मुकर्रर है। ये सब चीज़ें अल्लाह को पहले से मालूम हैं, लेकिन ये भी तय है कि उन अस्बाब की बिना पर उसकी उम्र कम या रिज़्क़ कम होगा या ज़्यादा। उम्र और रिज़्क़ में सिला रहमी से इज़ाफ़ा होता है और दुआ से भी इज़ाफ़ा होता है और ये भी पहले से अल्लाह के इल्म में है कि फ़लाँ सिला रहमी करेगा या उसके लिये तवील (लम्बी) उम्र की दुआ होगी और उसके मुताबिक़ उसकी उम्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा पहले से लिखा जा चुका है। जिस तरह सिला रहमी और दुआ लिखी जा चुकी है, इसलिये नये सिरे से उसका असर मुरत्तब नहीं होता और उनमें कमी व बेशी नहीं होती, कमी व बेशी तक़दीर में हो चुकी है, इसलिये आपका ये मक़सद नहीं था, आप उनकी या अपनी उम्र में इज़ाफ़े की दुआ न करें, बल्कि ये मक़सद था कि उम्र और रिज़्क़ का ताल्लुक़ दुनिया से है और आग या क़ब्र के अ़ज़ाब का ताल्लुक़ आख़िरत से है और आख़िरत दुनिया के मुक़ाबले में बेहतर और अफ़ज़ल है। इसलिये उसके लिये दुआ करना भी अफ़ज़ल (बेहतर) है, नीज़ जब मन्फ़अत के मुक़ाबले में दफ़्अे मज़र्रत ज़्यादा अहम है, इसलिये उम्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़े के मुक़ाबले में, आग और क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह माँगना ज़्यादा अफ़ज़ल है और आपने

हज़रत अनस के लिये तवील उम्र की दुआ फ़रमाई थी। इमाम बुख़ारी (रह.) की अल्अदबुल मुफ़रद में है, अल्लाहुम्-म अक्सिर मालहू, व वलदहू व अतिल्ल हयातहू और इमाम बुख़ारी ने बुख़ारी शरीफ़ में बाब बांधा है, 'बाब दअ्वतुन्नबिय्यि (ﷺ) लिख़ादिमिही बितूलि उम्रिही बिकस्रति मालिही' (फ़तहुल बारी जिल्द 11, पेज नं. 173 मक्तबा दारुस्सलाम रियाज़) इस तरह आपने उम्र और रिज़्क़ दोनों में कसरत और इज़ाफ़े की दुआ फ़रमाई है, जिससे साबित हुआ कि उम्र में और रिज़्क़ में इज़ाफ़े की दुआ जाइज़ है और ये भी पहले ही से लिखा जा चुका है, इसलिये तक़दीर को मुब्रम और मुअल्लक़ दो क़िस्मों में बांटने की कोई ज़रूरत नहीं है। **(2)** बंदर और ख़िन्ज़ीर मुस्तक़िल हैवानात हैं, ये मम्सूख़ (मस्ख़शुदा) इंसानों की नसल या औलाद नहीं हैं, क्योंकि बनू इस्राईल के बाद लोगों को बंदर और ख़िन्ज़ीर बनाने से पहले भी तो बंदर और ख़िन्ज़ीर मौजूद थे।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، - وَاللَّفْظُ لِحَجَّاجٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْيَشْكُرِيِّ، عَنْ مَعْرُورِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِزَوْجِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَبِأَبِي أَبِي سُفْيَانَ وَبِأَخِي مُعَاوِيَةَ . فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّكِ سَأَلْتِ اللَّهَ لآجَالٍ مَضْرُوبَةٍ وَآثَارٍ مَوْطُوءَةٍ وَأَرْزَاقٍ مَقْسُومَةٍ لاَ يُعَجِّلُ شَيْئًا مِنْهَا قَبْلَ حِلِّهِ وَلاَ يُؤَخِّرُ مِنْهَا شَيْئًا بَعْدَ حِلِّهِ وَلَوْ سَأَلْتِ اللَّهَ أَنْ يُعَافِيَكِ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ لَكَانَ خَيْرًا لَكِ " . قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ الْقِرَدَةُ وَالْخَنَازِيرُ هِيَ

(6772) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मुझे अपने ख़ाविन्द रसूलुल्लाह (ﷺ), अपने बाप अबू सुफ़ियान (रज़ि.) और अपने भाई मुआविया (रज़ि.) से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दे। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'तूने अल्लाह तआला से उन उम्रों का सवाल किया जो मुक़र्रर हैं और उन क़दमों का जो रोन्दे हुए या पामाल शुदा हैं (मुअय्यन हैं) और उन रिज़्क़ों का जो तक़सीम शुदा हैं, अल्लाह तआला किसी चीज़ को उसके वक़्ते मुक़र्ररह से पहले नहीं करता और न किसी चीज़ को उसके वक़्ते मुक़र्रर से मुअख़्ख़र (देरी) करता है, अगर तुम ये सवाल करतीं कि अल्लाह तआला तुम्हें आग के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाये तो तुम्हारे लिये बेहतर होता।' और एक आदमी ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बंदर और

ख़िन्ज़ीर ये मस्ख़शुदा लोगों की नस्ल हैं? तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने कोई क़ौम हलाक नहीं की या किसी क़ौम को अ़ज़ाब नहीं दिया कि फिर उनकी नसल चलाई हो, बंदर और ख़िन्ज़ीर उससे पहले मौजूद थे।'

مِمَّا مُسِخَ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ لَمْ يُهْلِكْ قَوْمًا أَوْ يُعَذِّبْ قَوْمًا فَيَجْعَلَ لَهُمْ نَسْلاً وَإِنَّ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ " .

(6773) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं, इसमें है आसारिन मब्लूग़तिन 'क़दम जिन तक रसाई हो चुकी है।' यानी शुमार हो चुके हैं। इब्ने मअ़्बद कहते हैं, कुछ ने यूँ बयान किया है, 'क़ब्ल हिल्लिही' अय् नुज़ूलिही वक़्त के आने से पहले।

حَدَّثَنِيهِ أَبُو دَاوُدَ، سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " وَآثَارٍ مَبْلُوغَةٍ " . قَالَ ابْنُ مَعْبَدٍ وَرَوَى بَعْضُهُمْ " قَبْلَ حِلِّهِ " . أَىْ نُزُولِهِ .

बाब 8 : अ़ज़्मियत व पुख़्तगी को इख़्तियार करना, बेचारगी व बेबसी को छोड़ना, अल्लाह तआ़ला से मदद तलब करना और तक़दीर को अल्लाह के हवाले करना

بَاب فِي الْأَمْرِ بِالْقُوَّةِ وَتَرْكِ الْعَجْزِ وَالِاسْتِعَانَةِ بِاللَّهِ وَتَفْوِيضِ الْمَقَادِيرِ لِلَّهِ

(6774) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'कुव्वत वाला मोमिन, कमज़ोर मोमिन से बेहतर और अल्लाह को ज़्यादा पसंद है और दोनों में ख़ैर मौजूद है। जो चीज़ तुम्हारे लिये सूदमन्द है, उसके लिये कोशिश कर और अल्लाह से मदद तलब कर, बेबसी और कमज़ोरी का इज़हार न कर, अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो ये न कहो, अगर मैं ऐसा

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَأَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيفِ وَفِي كُلٍّ خَيْرٌ احْرِصْ عَلَى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ

وَلاَ تَعْجِزْ وَإِنْ أَصَابَكَ شَيْءٌ فَلاَ تَقُلْ لَوْ أَنِّي فَعَلْتُ كَانَ كَذَا وَكَذَا . وَلَكِنْ قُلْ قَدَرُ اللَّهِ وَمَا شَاءَ فَعَلَ فَإِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ " .

करता तो ऐसा-ऐसा होता, अल्बत्ता ये कहो, अल्लाह की तक़दीर है, उसने जो चाहा किया, क्योंकि लौ (अगर) शैतान के लिये राहे अमल खोलता है।'

(इब्ने माजह : 79)

फ़ायदा : अल्मुअ्मिनुल क़विय्यु से मुराद वो मोमिन है, जो इरादे का मज़बूत और पुख़्ताकार है, हर काम को पूरी हिम्मत और हौसले से सर अन्जाम देता है और मोमिने ज़ईफ़ से मुराद है जो कोताह हिम्मत है। काम करने के लिये हौसला नहीं पाता और पूरे जोश व जज़्बे और सरगर्मी से काम नहीं करता, क्योंकि इंसान के लिये ये ज़रूरी है वो नफ़ाबख़्श दुनियवी व उख़रवी काम पूरी मेहनत व कोशिश और हौसला व हिम्मत से करे, उसमें सुस्ती व काहिली, कोताह हिम्मती इख़्तियार करके हिम्मत न हारे और उसके लिये अल्लाह तआ़ला से नुसरत व इआनत (मदद) और तौफ़ीक़ तलब करे, लेकिन मोमिन होने के सबब हर सूरत ख़ैर दोनों में मौजूद है और मुसीबतों व तकलीफ़ों के सिलसिले में अस्बाब व वसाइल पर भरोसा करते हुए ये न कहे, अगर मैं ये तदबीर और हीला इख़्तियार कर लेता तो इस मुसीबत और मुश्किल में मुब्तला न होता। क्योंकि तदबीर से तक़दीर को नहीं बदला जा सकता, हाँ अगर लौ का ताल्लुक़ तक़दीर की तब्दीली से न हो, बल्कि अपनी कमज़ोरियों के इज़ाले से हो या अपनी ला इल्मी के इज़हार के लिये हो, अल्लाह की तक़दीर पर और उसकी मशिय्यत (मर्ज़ी) के नुफ़ूज़ (नाफ़िज़ होने) पर मुकम्मल ईमान हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं है, जैसे बिला मेहनत इंसान कह सकता है, अगर मैं मेहनत करता तो नाकाम न होता, अगर मुझे इस चीज़ का पहले से इल्म होता तो मैं ये न करता, अगर दुश्मन ने हम पर क़ाबू पा लिया तो वो हमें ज़लील व ख़्वार करेगा।

इस किताब के कुल बाब 06 और 30 हदीसें हैं।

كتاب العلم

किताबुल इल्म
इल्म का बयान

हदीस नम्बर 6775 से 6804 तक

इल्म का ज़वाल (ख़त्म होना) और उसकी वजह

इस हिस्से में उन अस्बाब की निशानदेही की गई है जिनसे इल्म ज़ाइल होगा। पहला फ़ित्ना इस तरह नमूदार होगा कि लोग मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़ जायेंगे, ज़न्न व गुमान से अपनी मर्ज़ी का मफ़्हूम बयान करेंगे, ऐसे लोगों से बहुत दूर रहने की तल्क़ीन की गई है। उसके बाद ये मरहला आयेगा कि क़ुरआन का जो मफ़्हूम किसी ने समझ लिया होगा वो न सिर्फ़ उस पर डट जायेगा बल्कि ऐसे लोग एक-दूसरे से झगड़ेंगे। आप (ﷺ) ने इस हवाले से यह रहनुमाई फ़रमाई कि जूंही क़ुरआन के फ़हम के हवाले से इख़्तिलाफ़ के आसार नमूदार हों, उसी वक़्त उस पर मज़ीद बात करने से तवक़्क़ुफ़ इख़्तियार किया जाये (अपने आपको रोक लिया जाये) और जिस पर सब मुत्तफ़िक़ हों उसी को अपना कर अमल किया जाये। ऐसा न किया जायेगा तो इख़्तिलाफ़ का ये मरहला सख़्त तरीन झगड़ों का नतीजा बनेगा, झगड़ालू लोग सामने आ जायेंगे, फिर ये मरहला आयेगा कि लोग क़ुरआन और सुन्नत को छोड़कर यहूदियों और ईसाइयों के तौर-तरीक़े अपना लेंगे, उनकी अन्धी तक़लीद करने लगेंगे। उसका नतीजा ये होगा कि अल्लाह तआला उलमा को उठा लेगा और जाहिल लोग रहनुमा-ए-दीन बन जायेंगे, वो लोगों को गुमराही पर चलायेंगे।

किताब के आख़िर में उम्मत को गुमराही से बचाने के लिये ये वाज़ेह किया गया है कि जो शख़्स अच्छा काम करेगा और लोग उस पर चलेंगे तो शुरूआत करने वाले को उन लोगों के बराबर अज्र मिलेगा जो अच्छा काम कर रहे होंगे और जो शख़्स बुरा काम करेगा और लोग उसके पीछे चलेंगे तो उसे बुराई में पीछे चलने वालों के बराबर गुनाह होगा।

باب النَّهْيِ عَنْ اتِّبَاعِ مُتَشَابِهِ الْقُرْآنِ وَالتَّحْذِيرِ مِنْ مُتَّبِعِيهِ وَالنَّهْيِ عَنْ الِاخْتِلَافِ فِي الْقُرْآنِ

बाब 1 : मुतशाबिहाते क़ुरआन की पैरवी से मुमानिअत (मनाही) और उनकी पैरवी करने वालों से डराना और क़ुरआन में इख़्तिलाफ़ करने की मुमानिअत

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ التُّسْتَرِيُّ، عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ تَلاَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم } هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلاَّ اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلاَّ أُولُو الأَلْبَابِ{ قَالَتْ قَالَ رَسُولُ

(6775) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, 'वही तो है जिसने आप पर ये किताब नाज़िल की जिसकी कुछ आयतें मुहकम हैं और यही किताब की असल बुनियाद हैं और दूसरी मुतशाबिहात हैं, चुनाँचे जिन लोगों के दिलों में कजी है तो वो उसकी मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़े रहते हैं, फ़ित्ना अंगेज़ी की ख़ातिर और उनका हक़ीक़ी मानी तलाश करने के लिये, हालांकि उनका सहीह और हक़ीक़ी मफ़्हूम (असल मुराद) अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता और जो लोग इल्म में पुख़्ता हैं, वो कहते हैं, हम इन (मुतशाबिहात) पर ईमान लाये, सारा क़ुरआन हमारे रब की तरफ़ से है और किसी चीज़ से इबरत या सबक़

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ سَمَّى اللَّهُ فَاحْذَرُوهُمْ " .

सिर्फ़ अक़्लमंद हासिल करते हैं। (सूरह आले इमरान : 7) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम उन लोगों को देखो जो इसकी मुतशाबेह आयतों के दर्पे हैं तो उन्हीं लोगों का अल्लाह ने नाम बताया है, उनसे बचो।'

(सहीह बुख़ारी : 4547, अबू दाऊद : 4598, तिर्मिज़ी : 2993, 2994)

मुफ़रदातुल हदीस़ : मुह्कमातिन : जिनका मानी साफ़ और वाज़ेह है, उसमें कोई इश्तिबाह (शक) नहीं है और बक़ौल शाह वलीउल्लाह, माहिरे ज़बान जिससे एक ही मानी समझे वो मुहकम है और जिसमें एक से ज़्यादा मानी का एहतिमाल हो वो मुतशाबेह है। जैसे ज़मीर के मरजअ में इख़्तिलाफ़ है या कलिमे के एक से ज़्यादा मानी आते हैं या अत्फ़ क़रीब पर भी हो सकता है और बईद (दूर) पर भी या जुम्ला आतिफ़ा भी हो सकता है और मुस्तानिफ़ा भी नया और मुस्तक़िल जुम्ला।

हुन्न उम्मुल किताब : यानी सारी किताब का मरजअ व मर्कज़ और असल वही हैं, उनकी रोशनी में मुतशाबिहात का मानी किया जायेगा, उनके मुनाफ़ी मानी नहीं लिया जा सकेगा।

वमा यअ्लमु तअ्वी-लहू इल्लल्लाह : उनकी असल हक़ीक़त अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, क्योंकि उनमें ऐसी बातें बयान की गई हैं, जो हमारे मुशाहिदे और मालूमात की दस्तरस से बाहर हैं। जैसे अल्लाह की सिफ़ात व अफ़्आल अल्लाह की जन्नत में नेमतें और दोज़ख़ में आलाम व मसाइब, उनकी असल हक़ीक़त और सूरत हमारे ज़हन से बाला (ऊपर) है, अगरचे उनका ज़ाहिरी मानी जो इबरत और सबक़ आमूज़ी के लिये काफ़ी है, हम समझ सकते हैं और उस मानी के ऐतबार से रासिख़ फ़िल्इल्म उनके मानी और मतलबों को जानते हैं, लेकिन असल हक़ीक़त को जानने के दर्पे हों, उनसे बचना ज़रूरी है और मुतकल्लिमीन ने आयाते सिफ़ात की तावील करके फ़ित्ने का दरवाज़ा खोल दिया और शऊरी व ग़ैर शऊरी तौर पर बिदअती फ़िर्क़ों मोतज़िला, मुर्जिया और ख़्वारिज के लिये तावील की गुंजाइश का रास्ता खोल दिया, जिससे बिदअती फ़िर्क़ों ने ख़ूब फ़ायदा उठाया और आज तक उठा रहे हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ

(6776) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) बयान करते हैं, एक दिन मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत के लिये जल्दी

الْجَوْنِيُّ قَالَ كَتَبَ إِلَيَّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَبَاحٍ الأَنْصَارِيُّ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو قَالَ هَجَّرْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا - قَالَ - فَسَمِعَ أَصْوَاتَ رَجُلَيْنِ اخْتَلَفَا فِي آيَةٍ فَخَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُعْرَفُ فِي وَجْهِهِ الْغَضَبُ فَقَالَ " إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِاخْتِلاَفِهِمْ فِي الْكِتَابِ".

हाज़िर हुआ, यानी सुबह-सवेरे गया, तो आपने दो आदमियों की आवाज़ें सुनीं, जो एक आयत के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाये, आपके चेहरे पर ग़ुस्से के आसार नज़र आ रहे थे, सो आपने फ़रमाया, 'तुमसे पहले लोग अपनी किताब में इख़्तिलाफ़ की बिना पर हलाक हुए।'

फ़ायदा : क़ुरआन मजीद की क़िरअत या मानी में ऐसा इख़्तिलाफ़ जिसकी गुंजाइश न हो या ऐसी तावील सिजका कोई क़रीना न हो और उसकी बुनियाद पर नये-नये मसाइल और अक़ाइद निकालना, बद अमली और इन्तिशार व इफ़्तिराक़ (फ़िर्क़ावारियत) का बाइस़ बनता है और उम्मत की बद अमली, आमाल व अक़ाइद में नई-नई मूशगाफ़ियाँ और उम्मत में इफ़्तिराक़ व इन्तिशार, उम्मत की तबाही का बाइस़ बनता है और इस इफ़्तिराक़ व इख़्तिलाफ़ से रोकना मक़सूद है। दलील की बुनियाद पर नज़री और इल्मी इख़्तिलाफ़ मसाइल की तन्क़ीह और तहज़ीब का सबब बनता है, फ़िर्क़ा साज़ी और गिरोहबन्दी का बाइस़ नहीं बनता, इसलिये इससे रोकना मक़सूद नहीं है, मसाइल में इख़्तिलाफ़ तो ख़ैरुल क़ुरून में भी मौजूद रहा है और इस इख़्तिलाफ़ ने उनमें गिरोहबन्दी या फ़िर्क़ाबन्दी पैदा नहीं की थी।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو قُدَامَةَ الْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ، عَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَجَلِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اقْرَءُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمْ فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ فَقُومُوا " .

(6777) हज़रत जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरआन पढ़ो, जब तक तुम्हारे दिल इस पर जुड़े रहें और जब तुममें इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाये तो उठ जाओ।'

(सहीह बुख़ारी : 5060, 5061, 7364)

फ़ायदा : अगर इस हदीस़ का मुख़ातब हर इंसान इन्फ़िरादी और शख़्सी तौर पर है तो मानी होगा, जब तक हमारे दिल और ज़बान में मुवाफ़िक़त, यकसानियत हो और तुम्हें जमइय्यत ख़ातिर और इत्मीनान हासिल हो, क़ुरआन मजीद की तिलावत करते रहो और जब दिल और ज़बान का साथ न रहे, दिल पढ़ना न चाहे, ज़बान से ग़लत लफ़्ज़ अदा होने लगें और तबीअ़त उकता जाये तो तिलावत बंद कर दो और अगर मुख़ातब अलग-अलग लोग हों, जो आपस में मुज़ाकरा कर रहे हों तो फिर मानी होगा, जब

क़ुरआन मजीद के मानी और मतालिब में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाये, शुकूक व शुब्हात बढ़ने लगें और आपस में दंगा और फ़साद का अन्देशा पैदा हो जाये और गिरोहबन्दी या धड़ेबन्दी पैदा होने लगे तो फिर मुज़ाकरा ख़त्म कर दो या क़िरअत के बारे में तनाज़अ शुरू हो जाये तो फिर उससे बाज़ आ जाओ और बिखर जाओ।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ، الْجَوْنِيُّ عَنْ جُنْدَبٍ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ اللَّهِ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " اقْرَءُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمْ فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا " .

(6778) हज़रत जुन्दब (रज़ि.) (यानी अब्दुल्लाह के बेटे) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरआन पढ़ो, जब तक तुम्हारे दिल ज़बान से मुवाफ़िक़त करें और जब तुम्हारे दिल और ज़बान में मुवाफ़िक़त न रहे (इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाये) तो उठ खड़े हो।'

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ صَخْرٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ قَالَ قَالَ لَنَا جُنْدَبٌ وَنَحْنُ غِلْمَانٌ بِالْكُوفَةِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اقْرَءُوا الْقُرْآنَ". بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا .

(6779) अबू इमरान (रह.) बयान करते हैं, जुन्दब (रज़ि.) ने हमें बताया, जबकि हम कूफ़ा में बच्चे थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ुरआन पढ़ो' आगे ऊपर वाली रिवायत है।

باب فِي الأَلَدِّ الْخَصِمِ

बाब 2 : इन्तिहाई सख़्त झगड़ालू के बारे में

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم" إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللَّهِ الأَلَدُّ الْخَصِمُ " .

(6780) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह के नज़दीक सब मर्दों से बुरा और मब्ग़ूज़ (ग़ुस्से के लायक़) वो शख़्स है जो इन्तिहाई सख़्त झगड़ालू है।'

(सहीह बुख़ारी : 2457, 4523, 7188, तिर्मिज़ी : 2976, नसाई : 8/248)

फ़ायदा : अलद्दु : बहुत झगड़ालू, क्योंकि लदद झगड़े को कहते हैं और ख़सिमुन भी सख़्त और झगड़े की महारत को कहते हैं, मक़सद ये है उसका काम सिर्फ़ झगड़ना और बहस करना है, जाइज़ या

नाजाइज़ और हक़ व बातिल से ग़र्ज़ नहीं है, हक़ के इब्ताल और बातिल के इस्बात के लिये झगड़ना भी इसमें दाख़िल है।

बाब 3 : यहूद और नसारा के तरीक़े या डगर की पैरवी करना

باب اتِّبَاعِ سُنَنِ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ، بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَتَتَّبِعُنَّ سَنَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ حَتَّى لَوْ دَخَلُوا فِي جُحْرِ ضَبٍّ لاَتَّبَعْتُمُوهُمْ " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ آلْيَهُودَ وَالنَّصَارَى قَالَ " فَمَنْ " .

(6781) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम पहली उम्मतों की डगर पर चलोगे, बराबर-बराबर, जिस तरह एक बालिश्त दूसरी बालिश्त के बराबर है और एक हाथ दूसरे हाथ के बराबर है, यहाँ तक कि अगर वो गोह के सूराख़ में दाख़िल हुए थे तो तुम उसमें भी उनकी पैरवी करोगे।' हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या यहूदो-नसारा मुराद हैं? आपने फ़रमाया, 'और कौन?'

(सहीह बुख़ारी : 3456)

मुफ़रदातुल हदीस : सनन : डगर, रवय्या, तर्ज़े अमल, जो लोग इसको सुनन पढ़ते हैं, उनके नज़दीक सुन्नह (तरीक़ा, रास्ता) की जमा है कि उनके रास्तों पर चलोगे।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि यहूदो-नसारा ने अपने दीन और शरीअत के साथ जो वतीरा और तरीक़ा इख़ितयार किया था, हू-बहू ये उम्मत भी वो तरीक़ा इख़ितयार करेगी। उन्हीं की तरह बद अमली और बद अख़लाक़ी का मुज़ाहिरा करेगी, दीन के अंदर नई-नई बिदआत को रिवाज देगी, अपने नबी के बारे में ग़ुलू करेगी और अपनी किताब को अपनी तावीलों का निशाना बनायेगी, उन उम्मतों ने अपनी किताबों में तहरीफ़े लफ़्ज़ी और तहरीफ़े मअन्वी की और इस उम्मत ने भी क़ुरआनो-हदीस में तहरीफ़े मअन्वी की, यहाँ तक कि अहादीस में तहरीफ़े लफ़्ज़ी भी की, क़ुरआन मजीद में ये कोशिश कामयाब नहीं हो सकी, क्योंकि ये आख़िरी किताब है, लेकिन तहरीफ़े लफ़्ज़ी की कोशिश की गई, अपनी किताबों में आयात से इस्तिदलाल करते वक़्त शऊरी और ग़ैर शऊरी तौर पर आयत में कमी व बेशी की और ख़्वाहिशात व अह्वा की पैरवी में उनको भी पीछे छोड़ गये माँ, बेटी तक से बदकारी का काम किया।

(6782) इमाम साहब अपने चंद रुफ़क़ा से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا عِدَّةٌ، مِنْ أَصْحَابِنَا عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو غَسَّانَ، - وَهُوَ مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ - عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ

नोट : रुफ़क़ा मज्हूल हैं, इसलिये इस रिवायत को मक़्तूअ या मुन्क़तअ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यहाँ कोई रावी साक़ित नहीं है, कुछ नुस्ख़ों में इमाम मुस्लिम के शागिर्द अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन सुफ़ियान ने अपनी सनद से इसको मुत्तसिलन बयान किया है, जैसाकि अगली हदीस़ है।

(6783) इमाम मुस्लिम के शागिर्द अपनी सनद से ऊपर वाली हदीस़ को मुत्तसिल बयान करते हैं।

قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، . وَذَكَرَ الْحَدِيثَ نَحْوَهُ .

बाब 4 : क़ौल व फ़ैअल (अमल) में गुलू और इन्तिहा पसन्दी इख़्तियार करने वाले तबाह हुए

باب هَلَكَ الْمُتَنَطِّعُونَ

(6784) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाल की खाल उतारने वाले तबाह हुए।' आपने ये बात तीन बार फ़रमाई।

(अबू दाऊद : 4608)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ، جُرَيْجٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَتِيقٍ، عَنْ طَلْقِ بْنِ حَبِيبٍ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " هَلَكَ الْمُتَنَطِّعُونَ " . قَالَهَا ثَلاَثًا .

मुफ़रदातुल हदीस़ : अल्मुतनत्तिऊन : गुलू और इन्तिहा पसन्दी इख़्तियार करने वाले, बाल की खाल उतारने वाले, क्योंकि तनत्तुअ का मानी गुलू और तअम्मुक़ है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, बेमक़सद और बेफ़ायदा मूशगाफ़ियाँ करना और हद से बढ़ना पसन्दीदा तरीक़ा नहीं है। क्योंकि ये बद अमली और राहे फ़रार इख़्तियार करने या बहानासाज़ी का

बाइस बनता है, जिस तरह बनी इस्राईल को गाय ज़िब्ह करने का हुक्म दिया गया तो उन्होंने पूछा, उसकी उम्र कितनी हो? जब ये बता दिया गया तो कहा, उसका रंग कैसा हो? ये बता दिया गया तो कहने लगे, और वज़ाहत करो, क्योंकि ऐसी गायों में शक व इल्तिबास मौजूद है। लेकिन वरअ और परहेज़गारी इख़्तियार करना और मुश्तबह चीज़ों से बचने की कोशिश करना मतलूब है, जैसे एक कपड़ा साफ़-सुथरा है और अभी अभी तह कर के रखा गया है और दूसरे कपड़े के बारे में शुब्हा है, उस पर किसी बच्चे के बोल (पेशाब) के छींटे पड़ गये हैं लेकिन उसको धो दिया गया है तो दूसरे कपड़े की बजाए पहला कपड़ा लेना ये गुलू और इन्तिहा पसन्दी है। लेकिन अगर कपड़ा पाक-साफ़ है और दूसरे कपड़े को गारा लगा है तो पहले कपड़े को लेना वरअ और परहेज़गारी है।

बाब 5 : आख़िरी ज़माने में इल्म का उठ जाना, क़ब्ज़ हो जाना और जहालत व फ़ित्नों का ग़ल्बा हो जाना

باب رَفْعِ الْعِلْمِ وَقَبْضِهِ وَظُهُورِ الْجَهْلِ وَالْفِتَنِ فِي آخِرِ الزَّمَانِ

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ، مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ وَيَثْبُتَ الْجَهْلُ وَيُشْرَبَ الْخَمْرُ وَيَظْهَرَ الزِّنَا " .

(6785) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़यामत की निशानियों में से है, इल्म उठा लिया जायेगा, जहालत फैल जायेगी, शराब पी जायेगी और ज़िना आम होगा।'

(सहीह बुख़ारी, बाब : 80)

फ़ायदा : इल्म उठने और जहालत के जमने या फैलने से मुराद ये है कि इल्मे दीन में रुसूख़ ख़त्म हो जायेगा, आहिस्ता-आहिस्ता पुख़्ताकार और बाअमल उलमा उठ जायेंगे और उनकी जगह कम इल्म, बद अमल अफ़राद आ जायेंगे, जिन्हें दीनी मसाइल की वाक़िफ़ियत कम होगी, बद अमली ज़्यादा होगी और उन्ही को लोगों में इ़ज़्ज़त व शर्फ़ हासिल होगा और इसका आग़ाज़ लम्बे अरसे से शुरू हो चुका है। क़ाज़ी अयाज़ वफ़ात 544 हिजरी ने अपने दौर के उलमा के बारे में यही लिखा है कि हमारे दौर में इसका मिस्दाक़ ज़ाहिर हो गया है, क्योंकि अब लोगों ने जाहिलों को अमीर बना लिया है और वो अल्लाह के दीन में अपनी राय से फ़तवा दे रहे हैं और अपनी राय से हुक्म लगा रहे हैं, आज काग़ज़ी इल्म आम हो गया है, किताबें दिन-ब-दिन नई-नई आ रही हैं, लेकिन उनको पढ़ने वाले और समझने वाले दिन-ब-दिन कम हो रहे हैं, दुनियवी उलूम के मुक़ाबले में दीनी उलूम की कोई अहमियत नहीं रही, स्कूलों और कॉलेजों में तादाद दिन-ब-दिन बढ़ रही है और दीनी तलबा की कमी हो रही है,

शराब, ज़िना आम है और फ़ह्हाशी और उ़रयानी (नंगापन) का सैलाब आया हुआ है, ऐलानिया फ़िस्क़ व फ़िजूर का इर्तिकाब हो रहा है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاَ يُحَدِّثُكُمْ أَحَدٌ بَعْدِي سَمِعَهُ مِنْهُ " إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ وَيَظْهَرَ الْجَهْلُ وَيَفْشُوَ الزِّنَا وَيُشْرَبَ الْخَمْرُ وَيَذْهَبَ الرِّجَالُ وَتَبْقَى النِّسَاءُ حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ امْرَأَةً قَيِّمٌ وَاحِدٌ " .

(6786) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने अपने शागिर्द से कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसी हदीस़ न सुनाऊँ, जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है, मेरे बाद आपसे सुनने वाला कोई तुम्हें ये हदीस़ नहीं सुनायेगा, 'क़यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जहालत फैल जायेगी या उसका ग़ल्बा होगा, ज़िना आ़म होगा, शराब आ़म पी जायेगी, मर्द ख़त्म हो जायेंगे (कम हो जायेंगे) और औ़रतें रह जायेंगी (ज़्यादा हो जायेगी), यहाँ तक कि पचास औ़रतों का निगरान व निगेहबान एक होगा।'

(सहीह बुख़ारी, बाब 81, तिर्मिज़ी : 2205, इब्ने माजह : 4045)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अश्रात : शर्त की जमा है, अ़लामत, निशानी। **यज़्हबुर्रिजालु :** जंगो-जिदाल और क़त्लो-ग़ारत की बिना पर, मर्द रोज़-बरोज़ कम होते जायेंगे, औ़रतों की तादाद बढ़ती जायेगी, जिसकी शुरूआ़त हो चुकी है।

फ़ायदा : पचास औ़रतों का एक क़य्यिम, निगरान व निगेहबान होगा, का ये मतलब नहीं है कि वो उन सबसे शादी कर लेगा, वो मर्दों की क़िल्लत की बिना पर अपने ख़ानदान की तमाम औ़रतों का मुहाफ़िज़ (रक्षक) होगा, क्योंकि बाक़ी सब क़त्ल हो चुके होंगे और हज़रत अनस (रज़ि.) ने ये बात उस वक़्त फ़रमाई, जबकि बसरह में उनके सिवा कोई और सहाबी मौजूद नहीं था और वो उन कुछ सहाबा में से हैं, जो सबसे आख़िर में फ़ौत हुए हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، وَأَبُو أُسَامَةَ كُلُّهُمْ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ

(6787) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं, इब्ने बिश्र और अ़ब्दह की हदीस़ में है, मेरे बाद तुम्हें कोई ये हदीस़ नहीं सुनायेगा, मैंने

قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ بِشْرٍ وَعَبْدَةَ لاَ يُحَدِّثُكُمُوهُ أَحَدٌ بَعْدِي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبِي، قَالاَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ عَبْدِ اللَّهِ وَأَبِي مُوسَى فَقَالاَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنَّ بَيْنَ يَدَىِ السَّاعَةِ أَيَّامًا يُرْفَعُ فِيهَا الْعِلْمُ وَيَنْزِلُ فِيهَا الْجَهْلُ وَيَكْثُرُ فِيهَا الْهَرْجُ وَالْهَرْجُ الْقَتْلُ " .

(6788) अबू वाइल बयान करते हैं, मैं हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) के साथ बैठा हुआ था तो दोनों ने बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़यामत से पहले कुछ ऐसे दिन हैं, जिनमें इल्म उठा लिया जायेगा और उनमें जहालत उतर आयेगी और उनमें क़त्ल बकसरत (बहुत ज़्यादा) होंगे।' हर्ज क़त्ल को कहते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 7063, 7064, 7065, तिर्मिज़ी : 2200, इब्ने माजह : 4050)

फ़ायदा : दिन-ब-दिन क़त्लो-ग़ारत और दहशतगर्दी में इज़ाफ़ा हो रहा है और क़यामत के क़रीब मर्द बहुत ही कम रह जायेंगे, इसलिये इल्म कम होते हुए तक़रीबन ख़त्म हो जायेगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ بْنِ أَبِي النَّضْرِ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، وَأَبِي، مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالاَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ح وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ شَقِيقٍ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ عَبْدِ اللَّهِ وَأَبِي

(6789) इमाम साहब ने ऊपर वाली रिवायत अपने दो उस्तादों की अलग-अलग सनदों से अबू वाइल के वास्ते ही से बयान की है।

مُوسَى وَهُمَا يَتَحَدَّثَانِ فَقَالاَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ وَكِيعٍ وَابْنِ نُمَيْرٍ .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ وَإِسْحَاقُ الْحَنْظَلِيُّ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(6790) इमाम साहब अपने चार उस्तादों की एक ही सनद से शक़ीक़ के वास्ते से हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ إِنِّي لَجَالِسٌ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ وَأَبِي مُوسَى وَهُمَا يَتَحَدَّثَانِ فَقَالَ أَبُو مُوسَى قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(6791) इमाम साहब एक और उस्ताद से अबू वाइल ही के वास्ते से हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, जबकि मज्लिस में अब्दुल्लाह और अबू मूसा दोनों आपस में बातचीत कर रहे थे।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيُقْبَضُ الْعِلْمُ وَتَظْهَرُ الْفِتَنُ وَيُلْقَى الشُّحُّ وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ " . قَالُوا وَمَا الْهَرْجُ قَالَ " الْقَتْلُ " .

(6792) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़माना क़रीब हो जायेगा, इल्म क़ब्ज़ कर लिया जायेगा, फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे, दिलों में हिर्स व लालच डाल दी जायेगी और हर्ज बकस़रत होंगे।' सहाबा किराम ने पूछा, हर्ज किसे कहते हैं? फ़रमाया, 'क़त्ल को।'

(सहीह बुख़ारी : 6037, 7061, अबू दाऊद : 4255)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अश्शुह्हु : हिर्स, लालच। **हर्ज :** अरबी ज़बान में इख़्तिलात, दंगा-फ़साद को कहते हैं, जिसका नतीजा कश्तो-ख़ून निकलता है और हब्शी ज़बान में क़त्ल व ख़ून को कहते हैं। **यतक़ारबुज़्ज़मान :** इसके अलग-अलग मानी और मतलब बयान किये गये।

(1) हदीस़ में बयान किये गये कामों का ज़ुहूर और कस़रत, क़यामत के क़रीब होगी, क्योंकि ये अलामाते क़यामत में से हैं।

(2) लोगों के अहवाल व अख़्लाक़ और आदात व किरदार मिलते-जुलते होंगे, दीन से दूर हो चुके होंगे।

(3) जहालत और ला इल्मी में मिलते-जुलते होंगे, इल्म में तो मरातिब अलग-अलग होते हैं, इसलिये अम्र बिल्मअ़रूफ़ और नह्य अ़निल मुन्कर (भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) का फ़रीज़ा अदा करने वाले नहीं रहेंगे और फ़िस्क़ व फ़िजूर का ग़ल्बा होगा।

(4) ज़माना यानी वक़्त में से बरकत उठ जायेगी, इसलिये वो बड़ी तेज़ी और बर्क़ रफ़्तारी से गुज़रेगा, जैसाकि हज़रत अनस (रज़ि.) की जामेअ़ तिर्मिज़ी में रिवायत है, साल, महीने के बराबर होगा और माह, हफ़्ते के बराबर होगा, हफ़्ता एक दिन के बराबर होगा, दिन एक घड़ी की तरह होगा और एक घड़ी, लकड़ी जलने के बक़द्र। क़ाज़ी अयाज़ (रह.) के नज़दीक ये बेबरकती की वजह से है और इमाम ख़त्ताबी के नज़दीक ऐशो-इशरत की फ़रावानी की बिना पर।

(5) इमाम बैज़ावी के नज़दीक हुकूमतें जल्द, जल्द गिरने लगेंगी और लोगों की उ़म्रें कम होंगी।

(6) और बक़ौल इमाम इब्ने अबी जम्रह, कुव्वते कारकर्दगी कम हो जायेगी, लोग पहलों की तरह ज़्यादा से ज़्यादा काम नहीं कर सकेंगे, लेकिन इल्लत और सबब का पता नहीं चल सकेगा। मुम्किन है ये ज़ईफ़ ईमान और शरीअ़त की मुख़ालिफ़त का नतीजा हो।

तज़्हरुल फ़ितन : क़िल्लते इल्म (कम इल्मी) और फ़िस्क़ व फ़िजूर की कस़रत की बिना पर दंगा और फ़साद आ़म होगा और फ़ित्ने बढ़ जायेंगे और युल्क़श्शुह्हु हुक़ूक़ अदा करने के लिये कोई तैयार नहीं होगा और क़ब्ज़ा ग्रुप आ़म होंगे, जो दूसरों के माल व दौलत और चीज़ों पर क़ब्ज़ा करना चाहेंगे।

(6793) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़माना क़रीब होगा और इल्म क़ब्ज़ कर लिया जायेगा...' आगे ऊपर वाली रिवायत बयान की।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الزُّهْرِيُّ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيُقْبَضُ الْعِلْمُ " . ثُمَّ ذَكَرَ مِثْلَهُ .

(6794) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'ज़माना क़रीब होगा और इल्म कम होगा...' आगे ऊपर वाली हदीस़ है।

(इब्ने माजह : 4052)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيَنْقُصُ الْعِلْمُ " . ثُمَّ ذَكَرَ مِثْلَ حَدِيثِهِمَا

फ़ायदा : इल्म कम होते-होते उठ जायेगा या अल्क़लील कल्मअ़दूम, कम न होने के बराबर है, इसलिये इसको रफ़अ़ या क़ब्ज़ से ताबीर कर दिया गया।

(6795) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की अलग-अलग सनदों से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, लेकिन इसमें 'हिर्स डाल दी जायेगी' का ज़िक्र नहीं है।

(सहीह बुख़ारी, बाब 85)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ حَنْظَلَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، كُلُّهُمْ قَالَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ غَيْرَ أَنَّهُمْ لَمْ يَذْكُرُوا " وَيُلْقَى الشُّحُّ " .

(6796) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'अल्लाह तआ़ला इल्म को इस तरह क़ब्ज़ नहीं करेगा कि लोगों के दिलों से छीन ले, लेकिन वो उ़लमा को क़ब्ज़ (फ़ौत) करके इल्म क़ब्ज़ फ़रमायेगा, यहाँ तक कि जब वो किसी आ़लिम को नहीं छोड़ेगा, लोग जाहिलों को

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ اللَّهَ لاَ يَقْبِضُ الْعِلْمَ انْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ النَّاسِ وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ حَتَّى إِذَا لَمْ يَتْرُكْ

عَالِمًا اتَّخَذَ النَّاسُ رُءُوسًا جُهَّالاً فَسُئِلُوا فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا " .

रईस (अमीर) बना लेंगे, उनसे पूछा जायेगा, चुनाँचे वो इल्म के बग़ैर फ़तवा (जवाब) देंगे, ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।'

(सहीहबुख़ारी:7307, तिर्मिज़ी:2652, इब्नेमाजह:52)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला दिलों से इल्म को छीन सकता है कि वो उसको मिटा दे या दिलों से मह्व कर दे, लेकिन वो ऐसा नहीं करेगा, पुख़्ता कार और सिक़ह आ़लिम फ़ौत हो जायेंगे, जिसकी बिना पर इल्म दिन-ब-दिन कम होता जायेगा और आख़िरकार कल्अ़दम (न के बराबर) हो जायेगा और जाहिलों का दौर-दौरा होगा, जिसकी शुरूआत काफ़ी अ़रसे से हो चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، وَأَبُو أُسَامَةَ وَابْنُ نُمَيْرٍ وَعَبْدَةُ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْحَجَّاجِ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ وَزَادَ فِي حَدِيثِ عُمَرَ بْنِ عَلِيٍّ ثُمَّ لَقِيتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو عَلَى رَأْسِ

(6797) इमाम साहब अपने बहुत से उस्तादों की अलग-अलग सनदों से हिशाम बिन उ़रवा की ऊपर वाली सनद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, उ़मर बिन अ़ली की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है कि फिर मैं साल के इख़्तिताम पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) को मिला और उनसे सवाल किया तो उन्होंने पहले की तरह हदीस़ दोहरा दी और कहा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना।

الْحَوْلِ فَسَأَلْتُهُ فَرَدَّ عَلَيْنَا الْحَدِيثَ كَمَا حَدَّثَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حُمْرَانَ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي جَعْفَرٌ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ .

(6798) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي أَبُو شُرَيْحٍ، أَنَّ أَبَا الأَسْوَدِ، حَدَّثَهُ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ قَالَتْ لِي عَائِشَةُ يَا ابْنَ أُخْتِي بَلَغَنِي أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو مَارٌّ بِنَا إِلَى الْحَجِّ فَالْقَهُ فَسَائِلْهُ فَإِنَّهُ قَدْ حَمَلَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عِلْمًا كَثِيرًا - قَالَ - فَلَقِيتُهُ فَسَاءَلْتُهُ عَنْ أَشْيَاءَ يَذْكُرُهَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ عُرْوَةُ فَكَانَ فِيمَا ذَكَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ لاَ يَنْتَزِعُ الْعِلْمَ مِنَ النَّاسِ انْتِزَاعًا وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعُلَمَاءَ فَيَرْفَعُ الْعِلْمَ مَعَهُمْ وَيُبْقِي فِي النَّاسِ رُءُوسًا جُهَّالاً يُفْتُونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَيَضِلُّونَ وَيُضِلُّونَ " . قَالَ عُرْوَةُ فَلَمَّا حَدَّثْتُ عَائِشَةَ بِذَلِكَ أَعْظَمَتْ ذَلِكَ وَأَنْكَرَتْهُ قَالَتْ أَحَدَّثَكَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى

(6799) हज़रत उ़रवा (रह.) बिन ज़ुबैर (रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'ऐ मेरे भान्जे! मुझे मालूम हुआ कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) हज के लिये हमारे यहाँ से गुज़रने वाले हैं तो उनसे मिलकर उनसे पूछो, क्योंकि उन्होंने नबी (ﷺ) से बहुत सा इल्म हासिल किया है। चुनाँचे मैं उन्हें मिला और उनसे उन कुछ बातों के बारे में पूछा, जो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते थे, जो बातें उन्होंने बयान कीं, उनमें ये भी था कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बेशक अल्लाह लोगों के दिलों से इल्म नहीं निकालेगा, लेकिन उ़लमा को क़ब्ज़ करेगा, सो इल्म भी उनके साथ उठ जायेगा और लोगों में जाहिलों को सरदार बना छोड़ेगा, जो उन्हें इल्म के बग़ैर जवाबात देंगे, ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।' उ़रवा (रह.) बयान करते हैं, तो जब मैंने ये रिवायत हज़रत आ़इशा (रज़ि.) को सुनाई, उन्होंने

الله عليه وسلم يقولُ هَذَا قَالَ عُرْوَةُ حَتَّى إِذَا كَانَ قَابِلٌ قَالَتْ لَهُ إِنَّ ابْنَ عَمْرٍو قَدْ قَدِمَ فَالْقَهُ ثُمَّ فَاتِحْهُ حَتَّى تَسْأَلَهُ عَنِ الْحَدِيثِ الَّذِي ذَكَرَهُ لَكَ فِي الْعِلْمِ - قَالَ - فَلَقِيتُهُ فَسَاءَلْتُهُ فَذَكَرَهُ لِي نَحْوَ مَا حَدَّثَنِي بِهِ فِي مَرَّتِهِ الأُولَى . قَالَ عُرْوَةُ فَلَمَّا أَخْبَرْتُهَا بِذَلِكَ قَالَتْ مَا أَحْسِبُهُ إِلاَّ قَدْ صَدَقَ أَرَاهُ لَمْ يَزِدْ فِيهِ شَيْئًا وَلَمْ يَنْقُصْ .

इसको बड़ा समझा और इसका इंकार किया और पूछा, क्या तुझे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बताया था कि उन्होंने नबी (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना है? उ़रवा कहते हैं, जब अगला साल आया तो उन्होंने (आइशा रज़ि. ने) मुझे फ़रमाया, हज़रत इब्ने अ़म्र (रज़ि.) आये हुए हैं, उन्हें मिलो, फिर बातचीत की शुरूआत करो, यहाँ तक कि तुम उनसे उस हदीस़ के बारे में सवाल करना, जो उन्होंने तुम्हें इल्म के बारे में सुनाई थी। चुनाँचे मैं उन्हें मिला और उनसे पूछा, तो उन्होंने मुझे पहली बार की तरह हदीस़ सुना दी। तो जब मैंने इसकी ख़बर आ़इशा (रज़ि.) को दी, उन्होंने कहा, मेरे ख़्याल में उन्होंने सहीह कहा है, मैं जान रही हूँ, उन्होंने इसमें कोई कमी व बेशी नहीं की।

फ़वाइद : **(1)** इस हदीस़ से स़ाबित होता है, अगर किसी एक फ़ाज़िल और फ़क़ीह और मिज़ाजे रसूल की शनासाई रखने वाले को किसी हदीस़ का इल्म नहीं है तो उसको इस बात की दलील नहीं बनाया जा सकता कि ये हदीस़ ही नहीं है, नीज़ किसी बड़ी से बड़ी शख़्सियत की दरायत व अ़क़्ल पर भी किसी हदीस़ को नहीं परखा जा सकता कि उसकी अ़क़्ल व दरायत में ये हदीस़ न आती हो तो उसका इंकार कर दिया जाये। जैसाकि आज-कल ये फ़ित्ना फैल रहा है। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) कुछ वजहों की बिना पर इस हदीस़ को बड़ा ख़्याल करते हुए इंकार करती हैं और पूछती हैं, क्या वाक़ेई उन्होंने इसकी निस्बत रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ की थी, कहीं उन्होंने अहले किताब की किताबों से तो नक़ल नहीं किया या तुमने निस्बत करने में ग़लती नहीं की, हालांकि ये रिवायत सहीह है। **(2)** अगले साल जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) मिस्र से हज के लिये मक्का मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ लाये और हज़रत आ़इशा (रज़ि.) और उ़रवा बिन ज़ुबैर भी वहाँ मौजूद थे तो हज़रत आ़इशा (रज़ि.) के कहने के मुताबिक़ उरवा (रह.) ने फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से ये हदीस़ पूछी और उन्होंने बिला कमो-कास्त बयान कर दी। जो इस बात की दलील है, सहाबा किराम हदीस़ों के बयान करने में इन्तिहाई हज़्म व एहतियात से काम लेते थे और उन्हें याद रखते थे और इस बिना पर हज़रत आ़इशा (रज़ि.) को यक़ीन हो गया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) को आपकी तरफ़ निस्बत करने में वहम लाहिक़ नहीं हुआ।

बाब 6 : जिसने अच्छा तरीक़ा जारी किया या बुरा तरीक़ा निकाला और जिसने हिदायत या ज़लालत (गुमराही) की तरफ़ बुलाया (उसका हुक्म)

باب مَنْ سَنَّ سُنَّةً حَسَنَةً أَوْ سَيِّئَةً وَمَنْ دَعَا إِلَى هُدًى أَوْ ضَلاَلَةٍ

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُوسَى، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ وَأَبِي الضُّحَى عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِلاَلٍ الْعَبْسِيِّ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ، اللَّهِ قَالَ جَاءَ نَاسٌ مِنَ الأَعْرَابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَيْهِمُ الصُّوفُ فَرَأَى سُوءَ حَالِهِمْ قَدْ أَصَابَتْهُمْ حَاجَةٌ فَحَثَّ النَّاسَ عَلَى الصَّدَقَةِ فَأَبْطَئُوا عَنْهُ حَتَّى رُئِيَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ - قَالَ - ثُمَّ إِنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ جَاءَ بِصُرَّةٍ مِنْ وَرِقٍ ثُمَّ جَاءَ آخَرُ ثُمَّ تَتَابَعُوا حَتَّى عُرِفَ السُّرُورُ فِي وَجْهِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ سَنَّ فِي الإِسْلاَمِ سُنَّةً حَسَنَةً فَعُمِلَ بِهَا بَعْدَهُ كُتِبَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ مَنْ عَمِلَ بِهَا وَلاَ يَنْقُصُ مِنْ أُجُورِهِمْ شَىْءٌ وَمَنْ سَنَّ فِي الإِسْلاَمِ سُنَّةً سَيِّئَةً فَعُمِلَ بِهَا بَعْدَهُ كُتِبَ عَلَيْهِ مِثْلُ وِزْرِ مَنْ عَمِلَ بِهَا وَلاَ يَنْقُصُ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَىْءٌ " .

(6800) हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कुछ जंगली लोग आये, जो ऊनी कपड़े पहने हुए थे। चुनाँचे आपने उनकी बद हाली और ज़रूरत को महसूस फ़रमा लिया तो आपने लोगों को सदक़े पर उभारा, सो लोगों ने सदक़ा देने में ताख़ीर की, यहाँ तक कि आपके चेहरे पर कबीदगी (नाराज़गी) के आसार नुमायाँ हो गये। फिर एक अन्सारी आदमी, दिरहमों की एक थैली लाया, फिर दूसरा आदमी सदक़ा लाया, फिर लोग मुसलसल आने लगे, यहाँ तक कि आपके चेहरे पर मसर्रत पैदा हो गई। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने इस्लाम के अंदर अच्छा तरीक़ा जारी किया और उसके बाद उस पर अमल किया गया, उसके लिये उस पर अमल करने वालों के बराबर सवाब लिखा जायेगा और दूसरों के अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं होगी और जिसने इस्लाम में ग़लत तरीक़ा जारी किया और उसके बाद उस पर अमल किया गया तो उस पर, उस अमल करने वालों के बराबर गुनाह रखा जायेगा और उन दूसरों के बोझ (गुनाहों) में कोई कमी नहीं होगी।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित हुआ एक नेक अ़मल और अच्छे काम पर जो सबसे पहले अ़मल करता है और दूसरों के लिये उस पर अ़मल करने का नमूना पेश करता है या उनके लिये तहरीक का बाइस़ बनता है तो उसके बाद उसकी देखा-देखी अ़मल करने वालों की तरह उसको भी स़वाब मिलेगा। लेकिन उसका ख़ैर और सालेह अ़मल होना, क़ुरआन व सुन्नत से स़ाबित होना ज़रूरी है, जैसाकि यहाँ सदक़ा एक अच्छा और नेक अ़मल था, लोगों ने उस पर अ़मल करने में ताख़ीर कर दी। जब एक सहाबी ने इसकी शुरूआ़त कर दी तो दूसरों में भी इसका दाइया (जज़्बा) पैदा हो गया और सदक़ा लाने वालों का तांता बंध गया, इस पर आपने ये बात फ़रमाई। इसलिये इस हदीस़ को बुनियाद बनाकर अपनी तरफ़ से कोई अ़मल ईजाद कर लेना, जबकि क़ुरआनो-सुन्नत में उसका वुजूद नहीं है, वो इस हदीस़ का मिस्दाक़ नहीं है, बल्कि दूसरी हदीस़ का मिस्दाक़ है जिसमें आपने फ़रमाया, 'जिसने ऐसा काम किया, जो हमने नहीं किया, वो मर्दूद है।' इसलिये इस हदीस़ की आड़ में मीलाद, उ़र्स, सोयम और चहलुम वग़ैरह को सनदे जवाज़ देना, हदीस़ के मफ़्हूम से बेख़बरी की दलील है। इस हदीस़ की मज़ीद वज़ाहत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की आगे आने वाली हदीस़ कर रही है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَحَثَّ عَلَى الصَّدَقَةِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ جَرِيرٍ .

(6801) हज़रत जरीर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़िताब फ़रमाया और लोगों को सदक़े की तरग़ीब दी, जैसाकि ऊपर वाली हदीस़ है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي، إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ هِلاَلٍ الْعَبْسِيُّ، قَالَ قَالَ جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَسُنُّ عَبْدٌ سُنَّةً صَالِحَةً يُعْمَلُ بِهَا بَعْدَهُ " . ثُمَّ ذَكَرَ تَمَامَ الْحَدِيثِ .

(6802) हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो बन्दा अच्छे तरीक़े को रिवाज देता है, जिस पर उसके बाद अ़मल होता है...' आगे ऊपर वाली हदीस़ है।

(6803) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ الأُمَوِيُّ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ الْمُنْذِرِ بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالُوا، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَوْنِ، بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنِ الْمُنْذِرِ بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا الْحَدِيثِ .

(6804) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो हिदायत की तरफ़ बुलाता है, उसके लिये उसकी पैरवी करने वालों के बराबर अज्र होगा, ये चीज़ उनके अज्र में कुछ कमी नहीं करेगा और जो ज़लालत व गुमराही की तरफ़ बुलाता है, उस पर उतना गुनाह होगा, जिस क़द्र गुनाह उसकी पैरवी करने वालों पर होगा और उससे उनके गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।'

(अबू दाऊद : 4609, तिर्मिज़ी : 2674)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، -يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الأَجْرِ مِثْلُ أُجُورِ مَنْ تَبِعَهُ لاَ يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلاَلَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ لاَ يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا " .

इस किताब के कुल बाब 16 और 69 हदीसें हैं।

كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار

किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआइ वत्तौबति वल्इस्तिग़फ़ारि

ज़िक्र, दुआ, तौबा और इस्तिग़फ़ार का बयान

हदीस़ नम्बर 6805 से 6873 तक

अज़्कार, दुआयें और उनके फ़ज़ाइल व आदाब

ये इंसान के लिये बहुत बड़ी ख़ुश क़िस्मती की बात है कि वो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान रखता हो, उसकी सिफ़ाते हसना को पहचानता हो, उसकी नेमतों और मेहरबानियों और उसके बेपायाँ फ़ज़्ल व करम का एहसास रखता हो और पूरे इजज़ (बेबसी) व मुहब्बत से उसको याद करता हो। अल्लाह ने इंसान को इस तरह बनाया है कि वो हर लम्हे अल्लाह की मेहरबानियों का मोहताज होता है। अगर उसका दिल मुर्दा नहीं हुआ तो वो बेइख़्तियार उसको याद करता है। ये याद उसे दिल का मुकम्मल इत्मीनान, एहसासे तहफ़्फ़ुज़, सच्ची ख़ुशी और बेहिसाब लज़्ज़त व हलावत अता करती है। अल्लाह का बन्दा उसे याद करे, तो वो बढ़कर उससे ख़ुश होता है। बन्दा उसकी याद के ज़रिये से उसके क़रीब आये तो वो बन्दे से बढ़कर उसके क़रीब आता है।

अल्लाह के निन्यान्वे (99) ख़ूबसूरत नाम हैं। बन्दा जिस नाम से चाहे अल्लाह को याद कर सकता है, पुकार सकता है, दुआ कर सकता है, बन्दे की ज़िन्दगी का कोई पहलू और उसकी कोई ज़रूरत ऐसी नहीं जिसके लिये वो अल्लाह को पुकारना चाहे और उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ उसे मुनासिब तरीन काम न मिले। बीमारियों के लिये वो शाफ़ी है, भूखो-नंगों के लिये वो रज़्ज़ाक़ है, गुनाहगारों के लिये वो ग़फ़्फ़ार व ग़फ़ूर है, मुज्रिमों के लिये वो मुन्तक़िम है, कमज़ोरों के लिये वो क़वी है, धुत्कारे हुओं के लिये वो वदूद है, रहीम है व अला हाज़ल क़ियास। उसे पसंद है कि उसका बन्दा इसरार करे, उससे माँगे, पूरे यक़ीन के साथ कि उसे मिलकर रहेगा। उसे सख़्त नापसंद है कि कोई उससे मायूस हो। जिसके लिये ज़िन्दगी नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाये और वो मौत माँगने लगे तो इस बात को अल्लाह की रहमत से वाबस्ता करे। जो मौत के वक़्त अल्लाह से मुलाक़ात की तमन्ना रखता हो अल्लाह भी उससे मुलाक़ात को पसंद करता है, वो बन्दे के अच्छे गुमान को भी रद्द नहीं करना चाहता। गुनाहों पर पशेमानी हो तो भी दुनिया में सज़ा पाने के बजाए दुनिया और आख़िरत दोनों में उससे अच्छाई और उसकी रहमत माँगने का हुक्म दिया गया है।

अल्लाह को तन्हाई में भी याद करना चाहिये और दूसरे मोमिनों के साथ मिलकर भी। तन्हाई में ज़्यादा याद करने वाले बाज़ी ले जाते हैं। सुबह व शाम, सोते-जागते, दिन की मसरूफ़ियतों और रात की तन्हाइयों में उसे याद करने वाला अज़ीम तरीन इनाम का हक़दार है, जो क़ुर्बे इलाही है, लेकिन हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि जब क़ुरआन पढ़ना-पढ़ाना हो, अल्लाह के एहसान याद करने, सुनने और बयान करने हों और मज़ीद माँगने हों तो उसकी याद की मज्लिसें मुनासिब हैं। अल्लाह उन मज्लिसों पर सकीनत नाज़िल फ़रमाता है, शरीक होने वालों को अपनी रहमत से ढांप देता है, फ़रिश्ते उनके आस-पास घेरा बांध लेते हैं। (सहीह मुस्लिम : 6853) अल्लाह उन याद करने वालों को उनकी

मज्लिस से बहुत ऊँची मज्लिस में याद करता है। (सहीह मुस्लिम : 6839,6855) जो तन्हाई में बैठकर उसकी याद में डूब जाता है, अल्लाह उसे अपने दिल में याद करता है। (सहीह मुस्लिम : 6805) याद रहे कि ज़िक्र के हवाले से ऊपर बयान की जाने वाली सारी रिवायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रिवायत की हैं। उनमें तन्हा और मिलकर दोनों तरह से अल्लाह की याद की तफ़्सीलात मौजूद हैं। उनमें कहीं भी कोई ऐसा तरीक़ा मज़्कूर नहीं जो आज-कल के अस्हाबे तरीक़त ने ईजाद कर रखे हैं। ये तरीक़ा अपने-अपने ईजाद करने वालों ही के नाम से मौसूम हैं। तरीक़-ए-शाज़लिया, तरीक़-ए-नक़्शबन्दिया, तरीक़-ए-क़ादरिया वग़ैरह, ये तरीक़े अच्छी निय्यत से तर्बियत के हवाले से अपने-अपने तजुर्बों की रोशनी में शुरू किये गये होंगे, लेकिन ये सब तरीक़े आपस में एक-दूसरे से भी अलग हैं और तरीक़-ए-नबविया (ﷺ) से भी अलग हैं।

तरीक़-ए-नबविया के मुताबिक़ अव्वलीन और नागुज़ीर तरीक़-ए-ज़िक्र नमाज़ है। अल्लाह तआला ने वाज़ेह फ़रमाया है, 'मेरे ज़िक्र के लिये नमाज़ क़ायम करो।' (सूरह ताहा 20 : 14) अल्लाह ने ख़ुद रिसालत मआब (ﷺ) को मुख़ातब करके फ़रमाया, 'नमाज़ क़ायम कर सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक और फ़ज्र का क़ुरआन (पढ़) बिला शुब्हा फ़ज्र का क़ुरआन हमेशा से हाज़िर होने का वक़्त रहा है और रात के कुछ हिस्से में, फिर उसके साथ बेदार रह, इस हाल में कि तेरे लिये इज़ाफ़ी है, क़रीब है कि तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ करेगा।' (बनी इस्राईल 17 : 78-79) शुरूआती दौर में रात की नमाज़ का ख़ुसूसी एहतिमाम था। आप (ﷺ) को हुक्म था, 'ऐ कपड़े में लिपटने वाले! रात को क़ियाम कर मगर थोड़ा, आधी रात (क़ियाम कर) या उससे थोड़ा सा कम कर ले या उससे ज़्यादा कर ले और क़ुरआन को ख़ूब ठहर-ठहर कर पढ़।' (सूरह मुज़्ज़म्मिल 73 : 1-4) गोया आपको आधी रात या उससे कम या ज़्यादा क़ियाम का हुक्म था, जिसमें आपको तर्तील से क़ुरआन पढ़ना था। क़ुरआन, ख़ुसूसन जब नमाज़ में तवज्जह से पढ़ा जाये तो सबसे आला और सबसे मुकम्मल ज़िक्र है, अल्लाह तआला ने इसी को 'अज़्ज़िक्र' कहा है। 'बेशक हम ही ने ये ज़िक्र नाज़िल किया है और बिला शुब्हा हम ज़रूर इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।' (सूरह हिज्र 15 : 9) इससे अल्लाह की याद, उसकी इबादत और इंसान की तर्बियत के तमाम तक़ाज़ों की तक्मील होती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह की तरफ़ से जो मिशन अता हुआ, रात के क़ियाम को उसकी तक्मील की पूरी तैयारी और अल्लाह के पैग़ाम को इंसानी क़ुलूब व अज़्हान तक पहुँचाने का कामयाब ज़रिया क़रार दिया गया, 'बिला शुब्हा रात को उठना (नफ़्स को) कुचलने में ज़्यादा सख़्त और बात करने में ज़्यादा दुरूस्ती वाला है।' (सूरह मुज़्ज़म्मिल 73 : 6)

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ के बाद के अज़्कार, सुबह व शाम के अज़्कार, सोने-जागने के अज़्कार, खाने-पीने के अज़्कार, ग़र्ज़ हर मरहले और हर काम के वक़्त के अज़्कार सिखाये और मुसलमान की पूरी ज़िन्दगी को ज़िक्रे इलाही से वाबस्ता कर दिया। ये तरीक़-ए-नबविया है जो पूरी

इंसानी ज़िन्दगी को मुनव्वर कर देता है। आप (ﷺ) के बताये हुए अज़्कार और दुआयें ऐसी हैं कि उनसे बेहतर दुआओं का तसव्वुर तक नहीं किया जा सकता। आज-कल के अस्हाबे तरीक़त में इन चीज़ों का कोई ख़ास एहतिमाम नज़र नहीं आता। क़ुरआन मजीद का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा याद करने, उसको अच्छी तरह समझने और रात का क़ियाम करके इसमें तवज्जह और तर्तील के साथ पढ़ने की तल्क़ीन तरीक़त का हिस्सा नज़र नहीं आता। रसूलुल्लाह (ﷺ) के अज़्कार और आपकी तल्क़ीन की हुई दुआयें याद करने और उनके मफ़्हूम को ज़हन नशीन कराने का भी कोई एहतिमाम नहीं। मुरशिदीने तरीक़त ख़ुद भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के मामूलात के इत्तिबाअ यहाँ तक कि आपके सिखाये हुए अज़्कार व दुआओं से बेबहरा नज़र आते है। तज़्किय-ए-क़ल्ब के लिये क़ुरआन ने जो तरीक़ा बताया है वो फ़र्ज़ ज़कात और कसरत से सदक़ात के ज़रिये से माल ख़र्च करना है ताकि दिल से माल की मुहब्बत ख़त्म हो जाये। अल्लाह का फ़रमान है, 'उनके मालों से सदक़ा लें, उसके साथ आप उन्हें पाक करेंगे और उन्हें साफ़ करेंगे।' (सूरह तौबा 9 : 103) और एक मिसाली मोमिन का तआरुफ़ करवाते हुए कहा गया, 'वो जो अपना माल (इसलिये) देता है कि पाक हो जाये।' (सूरह लैल 92 : 18) लेकिन आज-कल के ज़्यादातर अस्हाबे तरीक़त तज़्किया हासिल करने के बजाए उल्टा फ़ुतूहात की सूरत में लोगों के माल का मैल-कुचेल इकट्ठा करने में लगे हुए नज़र आते हैं।

इमाम मुस्लिम (रह.) ने अपनी सहीह के इस हिस्से में सहीह हदीसों के ज़रिये से तरीक़-ए-नबविया के ख़द्दो-ख़ाल वाज़ेह किये हैं। इसमें अज़्कार हैं, उनके फ़ज़ाइल हैं, दुआयें हैं और उनके आदाब हैं।

كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار

50. ज़िक्र, दुआ, तौबा और इस्तिग़फ़ार का बयान

باب الْحَثِّ عَلَى ذِكْرِ اللَّهِ تَعَالَى

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ حِينَ يَذْكُرُنِي إِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلإٍ هُمْ خَيْرٌ مِنْهُمْ وَإِنْ تَقَرَّبَ مِنِّي شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَىَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً " .

बाब 1 : ज़िक्रे इलाही की तरग़ीब

(6805) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह बरतर और बुज़ुर्ग बरतर फ़रमाता है, मैं अपने बन्दे के साथ मेरे बारे में उसके गुमान के मुताबिक़ सुलूक करता हूँ और जब वो मुझे याद करता है, मैं उसके साथ होता हूँ, अगर वो मुझे अपने दिल में याद करता है, मैं उसे अपने जी मैं याद करता हूँ और अगर वो मुझे मज्लिस में याद करता है तो मैं उसे उनसे बेहतर मज्लिस में याद करता हूँ और अगर वो मुझसे एक बालिश्त क़रीब आता है तो मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ और अगर वो मेरे एक हाथ क़रीब होता है तो मैं चार हाथ उसके क़रीब होता हूँ और अगर वो मेरे पास चल कर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आता हूँ।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : अना इन्द ज़न्नि अब्दी बी : मैं अपने बन्दे के साथ मेरे बारे में उसका जो ज़न्न (गुमान/सोच)है उसके मुताबिक़ सुलूक करता हूँ। अगर वो दुआ करते वक़्त क़ुबूलियत का गुमान रखता है, तौबा के वक़्त उसकी क़ुबूलियत का गुमान रखता है और इस्तिग़फ़ार के वक़्त बख़्शिश की उम्मीद रखता है, इबादत पर अज्र व स़वाब की उम्मीद रखता है तो मैं उसके इन गुमानों के मुताबिक़ उसके साथ सुलूक करता हूँ और ज़ाहिर है हुस्ने ज़न्न हुस्ने अ़मल के नतीजे में सादिक़ और दुरुस्त होता है। बद अ़मली से सहीह हुस्ने ज़न्न पैदा नहीं हो सकता, काश्त कार मेहनत व मशक़्क़त बर्दाश्त करके अच्छी फ़सल की उम्मीद रख सकता है, घर बैठकर फ़सल काश्तकरने की उम्मीद नहीं रख सकता। एक तालिबे इल्म, मेहनत व कोशिश करके अच्छे नम्बरों के हुसूल की उम्मीद कर सकता है, बद मेहनत और काम चोर होकर अच्छे नम्बरों की उम्मीद नहीं रख सकता।

व अना मअ़हू ही-न यज़्कुरुनी : जब वो मुझे ज़बान से, दिल से, अ़मल से किसी भी तरह याद करता है तो मेरी रहमत व तौफ़ीक़ और राहनुमाई और निगेहदाश्त व निगेहबानी उसे हासिल होती है और जिस मक़सद के लिये मुझे याद करता है, मैं उसे पूरा करता हूँ और मैं उसकी पुश्त पर होता हूँ, क्योंकि उसके इल्म व अहाते में तो हर इंसान, हर वक़्त है, वो काफ़िर हो या मुस्लिम, उसको याद करे या भुलाये, याद करने पर रहमत, तौफ़ीक़, रहनुमाई और निगेहदाश्त हासिल होती है।

इन ज़करनी फ़ी नफ़्सी, ज़कर्तुहू फ़ी नफ़्सी : अगर वो मुझे अपने जी में याद करता है, यानी अलग-थलग याद करता है, तो मैं भी उसको अपने तौर पर अलग-थलग याद रखता हूँ, उसकी हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त करता हूँ, उसको अज्र व स़वाब देता हूँ। अल्लाह का नफ़्स, उस ख़ालिक़ की शान के मुताबिक़ है और इंसान का नफ़्स उसके मख़्लूक़ होने के मुताबिक़ है। लेकिन उसकी कैफ़ियत व माहियत को जानना हमारे लिये मुम्किन नहीं है, न उसकी तावील की ज़रूरत है।

इन ज़करनी फ़ी मलइन : अगर वो मेरा ज़िक्र दूसरों की मौजूदगी में करता है, दूसरों में बैठ कर मुझे भूल नहीं जाता या अपने कारोबार और मामलात में याद रखता है तो मैं फ़रिश्तों में उसका ज़िक्रे ख़ैर और तारीफ़ करता हूँ।

इन तक़र्र-ब मिन्नी शिबरन : अगर वो मेरी इताअ़त व फ़रमांबरदारी करके मेरा तक़र्रुब चाहता है तो मैं उसके अ़मल से बढ़कर उसके क़रीब होता हूँ और ज़्यादा से ज़्यादा अपनी रहमत, तौफ़ीक़ और इआनत व हिफ़ाज़त का हक़दार क़रार देता हूँ और उसे मज़ीद नेकियों और इताअ़त की तौफ़ीक़ बख़्शता हूँ। शिबरन बालिश्त ज़िराअ़, हाथ, बाअ़, दो ज़िराअ़ यानी दोनों हाथ के फैलाव के बराबर, उसके लिये शिब्र, ज़िराअ़, बाअ़, मशी (चलना) हरवलह (दौड़ना) के अल्फ़ाज़ इंसानी मुहावरे के मुताबिक़ इस्तेमाल हुए हैं, इंसान वाली कैफ़ियत व सूरत मक़सूद नहीं है, उसकी रहमत की वुस्अ़त का इज़हार मक़सूद है।

(6806) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से यही हदीस़ बयान करते हैं, इसमें ये जुम्ला नहीं है, 'अगर वो एक ज़िराअ़ (हाथ) क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ।'
(तिर्मिज़ी : 3603, इब्ने माजह : 3822)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ " وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَىَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا " .

(6807) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने हम्माम बिन मुनब्बिह (रह.) को बहुत सी हदीसें सुनाईं, उनमें से एक ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, जब मेरा बन्दा मेरी तरफ़ एक बालिश्त बढ़ता है तो मैं उसकी तरफ़ दो बालिश्त (एक हाथ) बढ़ता हूँ और जब वो मेरी तरफ़ एक हाथ बढ़ता है तो मैं उसकी तरफ़ चार हाथ बढ़ता हूँ और जब वो मेरी तरफ़ दो हाथ बढ़ता है, तो मैं उसकी तरफ़ उससे ज़्यादा तेज़ी से बढ़कर आता हूँ।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ قَالَ إِذَا تَلَقَّانِي عَبْدِي بِشِبْرٍ تَلَقَّيْتُهُ بِذِرَاعٍ وَإِذَا تَلَقَّانِي بِذِرَاعٍ تَلَقَّيْتُهُ بِبَاعٍ وَإِذَا تَلَقَّانِي بِبَاعٍ أَتَيْتُهُ بِأَسْرَعَ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ जिअ्तुहू अतैतुहू बिअस्र-अ में उससे ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से बढ़कर उसके पास आता हूँ, से ऊपर वाली हदीस़ की वज़ाहत हो जाती है कि असल मक़सूद, उसके अ़मल की क़ुबूलियत और उसका अपना क़ुर्ब बख़्शना है कि मैं उसकी नेकी व इबादत से बढ़कर उस पर अपनी रहमत की बारिश करता हूँ और अपनी तौफ़ीक़ व इआनत से सरफ़राज़ करता हूँ, क्योंकि उसकी उ़मूमी मइयत (साथ) तो हर इंसान को हर वक़्त हासिल है और इस हदीस़ में तो ख़ुसूसी मइयत मुराद है, जिसका मदार इंसान की नेक किरदारी, इताअ़त व फ़रमांबरदारी पर है।

(6808) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का के रास्ते पर चले जा रहे थे कि आपका जुम्दान नामी पहाड़ पर गुज़र हुआ तो आपने फ़रमाया, 'चलते रहो, ये जुम्दान है, अलग-थलग रह

حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ الْعَيْشِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا رَوْحٌ، بْنُ الْقَاسِمِ عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَسِيرُ

فِي طَرِيقِ مَكَّةَ فَمَرَّ عَلَى جَبَلٍ يُقَالُ لَهُ جُمْدَانُ فَقَالَ " سِيرُوا هَذَا جُمْدَانُ سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ " . قَالُوا وَمَا الْمُفَرِّدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الذَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتُ " .

जाने वाले (मुफ़र्रिदून) सबक़त ले गये।' साथियों ने पूछा, मुफ़र्रिदून से क्या मुराद है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और बहुत याद करने वाली औरतें।'

फ़ायदा : मुफ़र्रिदुन या मुफ़रिदुन से वो इंसान मुराद है, जिसके साथी और हम जोली मर गये हैं और वो अकेला अलग-थलग रह गया है और अफ़्रदर्रजुलु उस वक़्त कहते हैं जब वो सूझ-बूझ के बाद अलग-थलग होकर अवामिर व नवाही के इम्तिसाल व पाबंदी के लिये यकसू हो जाये तो मानी हुआ जो लोग ख़ल्वत नशीनी (तन्हाई) इख़्तियार करते हुए लोगों की मज्लिसों से बचकर ज़िक्रे इलाही में वक़्त सर्फ़ करते हैं, वो मर्द हों या औरत, वो अज्र व सवाब की बाज़ी जीत गये और अल्लाह की क़ुबूलियत व रज़ा के लिये बड़े मर्तबे व दरजात हासिल कर गये और बहुत आगे बढ़ गये।

باب فِي أَسْمَاءِ اللَّهِ تَعَالَى وَفَضْلِ مَنْ أَحْصَاهَا

बाब 2 : अल्लाह तआला के अस्मा (नाम) और उनको याद रखने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لِلَّهِ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ اسْمًا مَنْ حَفِظَهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ وَإِنَّ اللَّهَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ أَبِي عُمَرَ " مَنْ أَحْصَاهَا " .

(6809) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला के निन्यान्वे (99) नाम हैं, जिसने इनको याद किया, जन्नत में दाख़िल होगा और अल्लाह यकता है (ताक़ और फ़र्द है) और ताक़ को पसंद करता है।' इब्ने अबी उमर की रिवायत में हफ़िज़हा की जगह अह्साहा है।

(सहीह बुख़ारी : 6410, तिर्मिज़ी : 3508)

फ़ायदा : इस हदीस में हफ़िज़हा और अह्साहा दो लफ़्ज़ आये हैं और एक हदीस से दूसरी हदीस की तफ़्सीर होती है कि उसूल के मुताबिक़, अह्साहा का मानी भी याद करना है, अगरचे कुछ ने इसका

मानी ईमान रखना किया है। कुछ ने इनके मुताबिक़ अमल करना मुराद लिया है और कुछ ने इनकी मअरिफ़त (पहचान) मुराद ली है।

किसी सहीह हदीस़ में इन निन्यान्वे नामों की तअयीन नहीं आई है। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इस हदीस़ के तहत तिर्मिज़ी शरीफ़ और आयाते क़ुरआनिया की रोशनी में निन्यान्वे नाम लिखे हैं। अगरचे जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक कुछ अहादीस़ की बिना पर अल्लाह के अस्मा सिर्फ़ यही नहीं हैं और भी बहुत से नाम हैं जिनका इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है लेकिन ये फ़ज़ीलत इन्ही नामों को हासिल है और अल्लाह तआला चूंकि यगाना और यकता है, इसलिये वो उस इंसान को पसंद करता है, जो दूसरों से अलग-थलग और यकसू होकर या सबसे कटकर उसको याद करता है, किसी और को अपने दिल में उतनी जगह नहीं देता कि वो उसे उससे ग़ाफ़िल कर सके। इसलिये अल्लाह तआला ने आ़म तौर पर इबादात में भी ताक़ को मल्हूज़ रखा है। तीन बार इस्तिन्जा लाज़िम है या कम से कम मसनून है, तीन बार आज़ाए वुज़ू (वुज़ू के अंग) धोना अफ़ज़ल है, पाँच नमाज़ें हैं, तवाफ़, सई सात बार है। तीन जम्रात हैं, सात बार उनको मारना है, सात दिन हैं, सात आसमान हैं, सात ज़मीनें हैं, सात समुन्द्र हैं वग़ैरह।

उन निन्यान्वे नामों की फ़ज़ीलत बयान करना इस बात का तक़ाज़ा करता है कि वो मुअय्यन हैं अगर वो मुब्हम हैं, उनका पता नहीं है तो वो उनको याद करना कैसे मुम्किन है इसलिये हाफ़िज़ इब्ने हजर ने जामेअ़ तिर्मिज़ी और क़ुरआनी आयात की रोशनी में जो निन्यान्वे नाम लिखे हैं उन पर ऐतमाद करना चाहिये जो ये है।

हुवल्लाहु अल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हू, अर्रहमानु, अर्रहीमु, अल्मलिकु, अल्क़ुद्दूसु, अस्सलामु, अल्मुअ्मिनु, अल्मुहैमिनु, अल्अज़ीज़ु, अल्जब्बारु, अल्मुतकब्बिरु, अल्ख़ालिक़ु, अल्बारी, अल्मुसव्विरु, अल्ग़फ़्फ़ारु, अल्क़ह्हारु, अल्वह्हाबु, अर्रज़्ज़ाक़ु, अल्फ़त्ताहु, अल्अलीमु, अल्क़ाबिज़ु, अल्बासितु, अल्ख़ाफ़िज़ु, अर्राफ़िउ, अल्मुइज़्ज़ु, अल्मुज़िल्लु, अस्समीउ़, अल्बसीरु, अल्हकमु, अल्अद्लु, अल्लतीफ़ु, अल्ख़बीरु, अल्हलीमु, अल्अ़ज़ीमु, अल्ग़फ़ूरु, अश्शकूरु, अल्अ़ली, अल्कबीरु, अल्हफ़ीज़ु, अल्मुक़ीतु, अल्हसीबु, अल्जलीलु, अल्करीमु, अर्रक़ीबु, अल्मुजीबु, अल्वासिउ़, अल्हकीमु, अल्वदूदु, अल्मजीदु, अल्बाइसु, अश्शहीदु, अल्हक़्क़ु, अल्वकीलु, अल्क़विय्यु, अल्मतीनु, अल्वलिय्यु, अल्हमीदु, अल्मुह्सिउ, अल्मुब्दिउ, अल्मुईदु, अल्मुह्यि, अल्मुमीतु, अल्हय्यु, अल्क़य्यूमु, अल्वाजिदु, अल्माजिदु, अल्वाहिदु, अल्अहदु, अस्समदु, अल्क़ादिरु, अल्मुक़्तदिरु, अल्मुक़द्दमु, अल्मुअख़्ख़िरु, अल्अव्वलु, अल्आख़िरु, अज़्ज़ाहिरु, अल्बातिनु, अल्वाली, अल्मुतआल, अल्बर्रु, अत्तव्वाबु, अल्मुन्तक़िमु, अल्अफ़ुव्वु, अर्रऊफ़ु, मालिकुल मुल्कि, ज़ुल्जलालि वल्इकरामु, अल्मुक़्सितु, अल्जामिउ़, अल्ग़नी, अल्मुग़नी, अल्मानिउ़, अज़्ज़ारु, अन्नाफ़िउ, अन्नूर, अल्हादी, अल्बदीउ़, अल्बाक़ी, अल्वारिसु, अर्रशीदु, अस्सबूर।

अल्लाह तआला के इन नामों में कुछ इख़्तिलाफ़ है तफ़्सील के लिये देखिये क़ाज़ी सुलैमान मन्सूरपूरी (रह.) की शरह अस्माउल्लाहिल हुस्ना (उर्दू) फ़िक़्हुल अस्माइल हुस्ना (अरबी) दुक्तूर अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन अब्दुल मुहसिन अल्बदर।

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह.) के नज़दीक अह्सा के तीन मर्तबे हैं। (1) अस्मा को याद करना और शुमार करना (2) इनके मानी व मतलब को जानना (3) और इनके वास्ते से दुआ करना।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَعَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " إِنَّ لِلَّهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا مِائَةً إِلاَّ وَاحِدًا مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ " . وَزَادَ هَمَّامٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ " إِنَّهُ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ " .

(6810) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला के निन्यान्वे नाम हैं एक कम सौ, जो उनको याद रखेगा जन्नत में दाख़िल होगा।' हम्माम की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, 'वो ताक़ है और ताक़ को पसंद फ़रमाता है।'

باب الْعَزْمِ بِالدُّعَاءِ وَلاَ يَقُلْ إِنْ شِئْتَ

बाब 3 : दुआ अज़्म और क़त्इयत के साथ करना चाहिये, यूँ न कहे, अगर तू चाहे

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلْيَعْزِمْ فِي الدُّعَاءِ وَلاَ يَقُلِ اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ فَأَعْطِنِي فَإِنَّ اللَّهَ لاَ مُسْتَكْرِهَ لَهُ " .

(6811) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई एक दुआ करे तो अज़्म व यक़ीन के साथ दुआ करे और यूँ न कहे, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे इनायत फ़रमा दे, क्योंकि अल्लाह को कोई मजबूर नहीं कर सकता।'

(सहीह बुख़ारी : 6338)

फ़ायदा : आजिज़ी व मोहताजी और फ़क़ीरी व गदाई का तक़ाज़ा यही है कि बन्दा अपने करीम रब से बग़ैर किसी शक और तज़ब्जुब के अपनी हाजत माँगे, इस तरह न कहे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो ऐसा कर दे। क्योंकि इसमें इस्तिग़ना और बेनियाज़ी का इज़हार होता है और ये मक़ामे अब्दियत और आदाबे दुआ के मुनाफ़ी (खिलाफ़) है। इसलिये बन्दे को चाहिये कि वो इस तरह अर्ज़ करे कि मेरे आक़ा, मेरे मौला, मेरी ये हाजत तू पूरी कर ही दे, तेरे सिवा मेरी मुश्किल कौन हल करेगा? मेरी हाजत रवाई कौन करेगा? मैं किसके पास जाऊँ? क्योंकि अल्लाह तआला जो कुछ करेगा, अपने इरादे और मशिय्यत ही से करेगा, कोई ऐसा नहीं है जो ज़ोर डाल कर या धौंस जमाकर उसकी मशिय्यत के ख़िलाफ़ उससे कुछ करवा सके या उससे कुछ ले ले।

(6812) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई दुआ करे तो यूँ न कहे, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ कर दे, बल्कि दरख़्वास्त पूरे अ़ज़्म व यक़ीन के साथ करे और बहुत रग़बत व इश्तियाक़ का इज़हार करे, क्योंकि अल्लाह के लिये उसको कुछ भी देना मुश्किल नहीं है।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلاَ يَقُلِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ وَلَكِنْ لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ وَلْيُعَظِّمِ الرَّغْبَةَ فَإِنَّ اللَّهَ لاَ يَتَعَاظَمُهُ شَىْءٌ أَعْطَاهُ " .

(6813) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई हर्गिज़ यूँ न कहे, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ फ़रमा दे, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझ पर रहमत फ़रमा दे। दुआ अ़ज़्म व यक़ीन से करे, क्योंकि अल्लाह जो चाहेगा वही करेगा, उस पर कोई जबर नहीं कर सकता।'

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنَا الْحَارِثُ، -وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي ذُبَابٍ - عَنْ عَطَاءِ بْنِ مِينَاءَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ . لِيَعْزِمْ فِي الدُّعَاءِ فَإِنَّ اللَّهَ صَانِعٌ مَا شَاءَ لاَ مُكْرِهَ لَهُ".

बाब 4 : किसी तकलीफ़ व मुसीबत के आ जाने पर मौत की तमन्ना करना नापसन्दीदा है

باب كَرَاهَةِ تَمَنِّي الْمَوْتِ لِضُرٍّ نَزَلَ بِهِ

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ - عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ لِضُرٍّ نَزَلَ بِهِ فَإِنْ كَانَ لاَ بُدَّ مُتَمَنِّيًا فَلْيَقُلِ اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي " .

(6814) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई पेश आई हुई तकलीफ़ की बिना पर मौत की तमन्ना हर्गिज़ न करे, सो अगर वो कोई ऐसी दुआ के लिये मुज़्तर हो, उसके बग़ैर चारा न पाये तो यूँ कहे, ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है, मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो तो दुनिया से मुझे उठा ले।'

(सहीह बुख़ारी:6351, तिर्मिज़ी:971, नसाई:1820)

फ़ायदा : इस क़िस्म की हदीसों में दर हक़ीक़त उस मौत की तमन्ना और आरज़ू से मुमानिअत (मना) फ़रमाई गई है जो किसी दुनियवी तकलीफ़ और परेशानी से तंग आकर की जाती है। क्योंकि ये सब्र व शकीब की सिफ़त के ख़िलाफ़ है। नीज़ जब तक आदमी ज़िन्दा है, उसके लिये तौबा व इस्तिग़फ़ार करके अपने दामन को साफ़ करने का और हसनात व ताआत के ज़रिये अपने ज़ख़ीर-ए-आख़िरत में इज़ाफ़ा और अल्लाह तआला का मज़ीद तक़र्रुब हासिल करने का मौक़ा मौजूद है और दुनियवी मुसीबतें और मुश्किलें उसके लिये कफ़्फ़ार-ए-सय्यिआत (गुनाहों का कफ़्फ़ारा) बनती हैं और मौत की दुआ करके इस मौक़े को गंवाना है, जो बन्दे के लिये घाटा ही घाटा है। हाँ अगर दीनी तौर पर फ़ित्ना व फ़साद का अन्देशा है और दीनी ख़सारे का डर है तो फिर मौत की दुआ करना जाइज़ है।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ - كِلاَهُمَا عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " مِنْ ضُرٍّ أَصَابَهُ " .

(6815) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से ये रिवायत बयान करते हैं, इसमें ये है, उस तकलीफ़ के सबब जो उसे पहुँचती है।

(सहीह बुख़ारी : 5671)

حَدَّثَنِي حَامِدُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ، وَأَنَسٌ، يَوْمَئِذٍ حَيٌّ قَالَ أَنَسٌ لَوْلاَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ " . لَتَمَنَّيْتُهُ .

(6816) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये फ़रमान न होता, 'तुममें से कोई मौत की आरज़ू हर्गिज़ न करे।' तो मैं मौत की तमन्ना कर लेता।

(सहीह बुख़ारी : 7233)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي، خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَى خَبَّابٍ وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعَ كَيَّاتٍ فِي بَطْنِهِ فَقَالَ لَوْمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ .

(6817) क़ैस बिन अबी हाज़िम (रह.) बयान करते हैं, हम हज़रत ख़ब्बाब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वो पेट पर सात दाग़ लगवा चुके थे तो उन्होंने कहा, अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें मौत की दुआ करने से न रोका होता, तो मैं उसकी दुआ करता।

(सहीह बुख़ारी : 5672, 6349, 6350, 6430, 6431, 7234, नसाई : 1822)

फ़ायदा : बज़ाहिर ये महसूस होता है कि वो अपनी बीमारी और तकलीफ़ की शिद्दत की बिना पर दुआ करना चाहते थे, लेकिन बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत से मालूम होता है, ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में अल्लाह तआ़ला ने उन्हें माल व दौलत की फ़रावानी अ़ता फ़रमाई थी और वो समझते थे कि शायद ये दुनियवी मुसीबतें व शिद्दतें झेलने का बदला मिल रहा है, इस तरह आख़िरत के सवाब में कमी वाक़ेअ़ हो जायेगी और वो सारा सवाब आख़िरत में समेटना चाहते थे।

حَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، وَجَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ، وَوَكِيعٌ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، وَيَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6818) यही रिवायत इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ يَتَمَنَّى أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ وَلاَ يَدْعُ بِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُ إِنَّهُ إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمُ انْقَطَعَ عَمَلُهُ وَإِنَّهُ لاَ يَزِيدُ الْمُؤْمِنَ عُمْرُهُ إِلاَّ خَيْرًا " .

(6819) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जो बहुत सी हदीसें हम्माम बिन मुनब्बिह (रह.) को सुनाई थीं, उनमें से एक ये है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई अपनी मौत की तमन्ना न करे और न उसके आने से पहले उसके लिये दुआ करे, क्योंकि जब तुममें से कोई मर जायेगा तो उसके अमल का सिलसिला मुन्क़तअ हो जायेगा (कट जायेगा) और बन्द-ए-मोमिन की उम्र तो उसके लिये ख़ैर ही में इज़ाफ़े का वसीला है।'

फ़ायदा : इस्लाम मोमिन के सामने उसकी ज़िन्दगी का रोशन पहलू ही रखता है, तारीक पहलू से बचाता है, इसलिये उम्र के इज़ाफ़े से हसनात व ताआत के इज़ाफ़े की उम्मीद दिलाई, गुनाहों में गिरफ़्तार होने का तज़्किरा नहीं किया, क्योंकि एक मोमिन से नेकियों की ही उम्मीद करनी चाहिये और गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार की उम्मीद करना चाहिये।

بَاب مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ

बाब 5 : जो अल्लाह से मुलाक़ात पसंद करता है, अल्लाह भी उससे मिलना महबूब रखता है और जो अल्लाह से मिलना नापसंद करता है, अल्लाह भी उससे मिलना नापसंद करता है

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عُبَادَةَ، بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " .

(6820) हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स अल्लाह से मिलना पसंद करता है, अल्लाह भी उससे मिलने को महबूब रखता है और जो शख़्स अल्लाह से मिलना नापसंद करता है, अल्लाह भी उससे मिलना नापसंद करता है।' (सहीह बुख़ारी:6507, तिर्मिज़ी : 1066, 2309, नसाई : 1835)

फ़ायदा : इस बाब में आने वाले हदीसों के मज्मूए से ये साबित होता है कि अल्लाह तआला से मुलाक़ात की पसन्दीदगी या नापसन्दीदगी का मौक़ा और महल वो वक़्त है जब इंसान नज़अ (जाँ कनी) की हालत में होता है और उसको आख़िरत में अपने अन्जाम की ख़बर दे दी जाती है और आख़िरत में उसके लिये जो जज़ा या सज़ा होती है, वो उस पर मुन्कशिफ़ कर दी जाती है, जिसकी पूरी वज़ाहत हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीस में आ रही है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يُحَدِّثُ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ

(6821) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही हदीस बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ الْهُجَيْمِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " . فَقُلْتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَكَرَاهِيَةُ الْمَوْتِ فَكُلُّنَا نَكْرَهُ الْمَوْتَ فَقَالَ " لَيْسَ كَذَلِكِ وَلَكِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا بُشِّرَ بِرَحْمَةِ اللَّهِ وَرِضْوَانِهِ وَجَنَّتِهِ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ فَأَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا بُشِّرَ بِعَذَابِ اللَّهِ وَسَخَطِهِ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ وَكَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " .

(6822) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स अल्लाह से मिलना महबूब रखता है, अल्लाह भी उससे मिलना पसंद फ़रमाता है और जो शख़्स अल्लाह से मिलना पसंद नहीं करता, अल्लाह भी उससे मिलना पसंद नहीं करता।' तो मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! क्या इससे मुराद मौत की नापसन्दीदगी है? तो हम सब ही मौत को नापसंद करते हैं। सो आपने फ़रमाया, 'बात इस तरह नहीं है, बल्कि जब मोमिन को अल्लाह की रहमत, उसकी रज़ामन्दी और उसकी जन्नत की बशारत दी जाती है, वो अल्लाह से मिलना पसंद करता है और अल्लाह भी उससे मिलना पसंद करता है और काफ़िर को जब अल्लाह के अज़ाब और उसकी नाराज़गी की इत्तिलाअ दी जाती है तो वो अल्लाह को मिलना नापसंद करता है और अल्लाह भी उससे मिलना नापसंद करता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6507, तिर्मिज़ी : 1067, नसाई : 1837, इब्ने माजह : 4264)

(6823) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ

(6824) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान अल्लाह को मिलना पसंद करता है, अल्लाह उसको मिलना पसंद करता है और जो अल्लाह को मिलना नापसंद करता है, अल्लाह उसको मिलना नापसंद करता है और मौत अल्लाह की मुलाक़ात से पहले है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَالْمَوْتُ قَبْلَ لِقَاءِ اللَّهِ " .

फ़ायदा : मौत अल्लाह की मुलाक़ात का पेश ख़ेमा और दरवाज़ा है और मुलाक़ात की शुरूआत इसके बाद होती है, इसलिये मौत की पसन्दीदगी या नापसन्दीदगी अलग चीज़ है, इसलिये मौत को नापसंद करना, अल्लाह की मुलाक़ात को नापसंद करना नहीं है, क्योंकि कई बार मोमिन इंसान, दीनी फ़ित्ने व फ़साद में मुब्तला होने के ख़तरे से मौत से तबई तौर पर नापसंद होने के बावजूद, आख़िरत की नेमतों के हुसूल और दीनी फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहने की ख़ातिर मौत को पसंद करता है और कई बार आमाले सालेहा में इज़ाफ़े की उम्मीद और गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार के सबब मौत को नापसंद करता है।

(6825) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، عَنْ عَامِرٍ، حَدَّثَنِي شُرَيْحُ بْنُ هَانِئٍ، أَنَّ عَائِشَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ بِمِثْلِهِ .

(6826) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स अल्लाह से मिलना पसंद करता है, अल्लाह भी उससे मिलना पसंद फ़रमाता है और जो अल्लाह की मुलाक़ात को नापसंद करता है, अल्लाह उससे मिलना नापसंद करता

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْثَرٌ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ شُرَيْحِ، بْنِ هَانِئٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ

اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " . قَالَ فَأَتَيْتُ عَائِشَةَ فَقُلْتُ يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَذْكُرُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدِيثًا إِنْ كَانَ كَذَلِكَ فَقَدْ هَلَكْنَا . فَقَالَتْ إِنَّ الْهَالِكَ مَنْ هَلَكَ بِقَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَا ذَاكَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " . وَلَيْسَ مِنَّا أَحَدٌ إِلاَّ وَهُوَ يَكْرَهُ الْمَوْتَ . فَقَالَتْ قَدْ قَالَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَلَيْسَ بِالَّذِي تَذْهَبُ إِلَيْهِ وَلَكِنْ إِذَا شَخَصَ الْبَصَرُ وَحَشْرَجَ الصَّدْرُ وَاقْشَعَرَّ الْجِلْدُ وَتَشَنَّجَتِ الأَصَابِعُ فَعِنْدَ ذَلِكَ مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ .

है।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्द शुरेह बिन हानी (रह.) कहते हैं, चुनाँचे मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ उम्मुल मोमिनीन! मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक हदीस़ सुनी है, अगर सूरते हाल यही है तो हम तबाह हो गये तो उन्होंने फ़रमाया, असली तबाह होने वाला वो है जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) तबाह क़रार दें और वो हदीस़ क्या है? उसने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो अल्लाह की मुलाक़ात को पसंद करता है, अल्लाह उसकी मुलाक़ात को पसंद करता है और जो अल्लाह से मिलना नापसंद करता है, अल्लाह उससे मिलना नापसंद करता है।' और हममें से हर एक (तबई तौर पर) मौत को नापसंद करता है तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, वाक़ेई रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये बात फ़रमाई है, लेकिन इसका मफ़्हूम वो नहीं है, जो तुम समझ रहे हो, लेकिन जब आँखें ऊपर उठ जायें और सीने में साँस घुटने लगे और जिस्म के रोंगटे खड़े हो जायें और उंगलियाँ सिकुड़ जायें (यानी नज़अ की हालत तारी हो जाये) उस वक़्त जो इंसान अल्लाह की मुलाक़ात को पसंद करता है, अल्लाह उसे मिलना पसंद करता है और जो अल्लाह से मिलना पसंद नहीं करता, अल्लाह उससे मिलना पसंद नहीं करता।

(नसाई : 1833)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, कई बार इंसान एक हदीस़ का सहीह मफ़्हूम न समझने की वजह से ग़लत फ़हमी में मुब्तला हो जाता है या उसको हदीस़ के बारे में तअ़ज्जुब लाहिक़ हो जाता है तो अपने नाक़िस इल्म की बुनियाद पर किसी हदीस़ का इंकार कर देना, एक मुसलमान का शेवा नहीं है, उसको दूसरे अहले इल्म से राब्ता क़ायम करके, उसका सहीह मानी व मफ़्हूम समझना चाहिये। अपने आपको अक़्ले कुल का मालिक (बहुत बड़ा होशियार) नहीं समझना चाहिये।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنِي جَرِيرٌ، عَنْ مُطَرِّفٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ عَبْثَرٍ .

(6827) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ " .

(6828) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'जो शख़्स अल्लाह की मुलाक़ात को पसंद करता है, अल्लाह उससे मिलना पसंद करता है और जो अल्लाह से मिलना नापसंद करता है, अल्लाह उससे मिलना नापसंद करता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6508)

باب فَضْلِ الذِّكْرِ وَالدُّعَاءِ وَالتَّقَرُّبِ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى

बाब 6 : ज़िक्र और दुआ की फ़ज़ीलत और अल्लाह तआ़ला का तक़र्रुब (करीब होना)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، عَنْ يَزِيدَ، بْنِ الأَصَمِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِي " .

(6829) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला का इरशाद है, मेरा मामला मेरे बन्दे के साथ उसके मेरे बारे में यक़ीन के मुताबिक़ है और जब वो मुझे पुकारता है तो मैं उसके साथ होता हूँ।'

(तिर्मिज़ी : 2388)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارِ بْنِ عُثْمَانَ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - وَابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ سُلَيْمَانَ، - وَهُوَ التَّيْمِيُّ - عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِذَا تَقَرَّبَ عَبْدِي مِنِّي شِبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا وَإِذَا تَقَرَّبَ مِنِّي ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا - أَوْ بُوعًا - وَإِذَا أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً " .

(6830) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है, जब मेरा बन्दा मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ और जब वो एक हाथ क़रीब होता है, मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ और जब वो मेरी तरफ़ चलते हुए आता है, मैं उसके पास दौड़कर आता हूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 7537)

मुफ़रदातुल हदीस़ : बाउन : और बूअन का मानी अपने दोनों हाथों के फैलाव के बराबर है, जिसको चार हाथ के बराबर क़रार दिया जाता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الْقَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، عَنْ أَبِيهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ " إِذَا أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً " .

(6831) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से करते हैं, इसमें 'जब वो मेरे पास चलकर आता है, मैं उसके पास दौड़कर आता हूँ' का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي وَأَنَا مَعَهُ حِينَ يَذْكُرُنِي فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلإٍ خَيْرٍ مِنْهُ وَإِنِ

(6832) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है, मेरा मामला मेरे बन्दे के साथ उसके यक़ीन के मुताबिक़ है और जब वो मुझे याद करता है, मैं उसके साथ होता हूँ, सो अगर वो मुझे अपने जी में याद करता है, मैं उसको अपने जी में याद करता हूँ और अगर वो मुझे दूसरे लोगों के सामने मज्लिस में याद करता है (दावत व इरशाद और वअ़ज़ व नसीहत का फ़रीज़ा सर अन्जाम देता है) तो मैं उसे उनसे बेहतर

اقْتَرَبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا وَإِنِ اقْتَرَبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا اقْتَرَبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً " .

मज्लिस में याद करता हूँ और अगर वो मेरे एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उसके एक हाथ क़रीब होता हूँ और अगर वो मेरे एक हाथ क़रीब होता है, मैं उसके चार हाथ क़रीब होता हूँ और अगर वो मेरे पास चलकर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنِ الْمَعْرُورِ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَأَزِيدُ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَجَزَاؤُهُ سَيِّئَةٌ مِثْلُهَا أَوْ أَغْفِرُ وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّي شِبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّي ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا وَمَنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً وَمَنْ لَقِيَنِي بِقُرَابِ الأَرْضِ خَطِيئَةً لاَ يُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَقِيتُهُ بِمِثْلِهَا مَغْفِرَةً " . قَالَ إِبْرَاهِيمُ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بِشْرٍ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ بِهَذَا الْحَدِيثِ

(6833) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाते हैं, जो शख़्स एक नेकी लेकर आता है तो उसके लिये उसके दस गुना बराबर सवाब है और मैं इज़ाफ़ा करता हूँ और जो एक बदी लेकर आता है, सो उसके लिये उसके बराबर बुराई है या मैं बख़्श देता हूँ और जो मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उसके एक हाथ क़रीब होता हूँ और जो मेरे एक हाथ क़रीब होता है, मैं उसके चार हाथ क़रीब होता हूँ और जो मेरे पास चलकर आता है, मैं उसके पास दौड़कर आता हूँ और जो मुझे ज़मीन की पूराई (भरने) के बराबर ग़लतियों के साथ मिलता है, बशर्तेकि मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, मैं उसे उतनी ही मग़्फ़िरत के साथ मिलता हूँ।'

(इब्ने माजह बाब : 321)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا أَوْ أَزِيدُ " .

(6834) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं और इसमें ये है, 'उसके लिये उसके दस गुना है या मैं इज़ाफ़ा करता हूँ।'

फ़ायदा : हर मुख़्लिस मोमिन के लिये हर नेकी का अज्र व सवाब कम से कम दस गुना है, उससे कम नहीं होता, लेकिन निय्यत में सिद्क़ व इख़्लास, मौक़ा और महल, हालात व ज़ुरूफ़, दिली निशात के ऐतबार से उसमें सात सौ गुना इज़ाफ़ा हो सकता है, बल्कि सब्र व सवाब की फ़रावानी की सूरत में बग़ैर हिसाब व शुमार के मिलता है और बदी करने की सूरत में मोमिन के लिये एक ही गुनाह है, लेकिन उसकी दूसरी नेकियों और दिल में कराहत व नापसन्दीदगी की सूरत में वो गुनाह माफ़ भी हो सकता है। क्योंकि इन्नल् हसनाति युज़्हिब्नस्सय्यिआत नेकियाँ बदियों को ख़त्म कर देती हैं और अगर मुसलमान शिर्क न करे तो उसके ज़मीन को भरने की पूराई के बराबर ग़लतियाँ भी माफ़ हो सकती हैं, तौबा व इस्तिग़फ़ार से या दूसरी नेकियों के सबब या रहम व करम से।

बाब 7 : दुनिया ही में फ़ौरी सज़ा मिलने की दुआ करना मक्रूह है

باب كَرَاهَةِ الدُّعَاءِ بِتَعْجِيلِ الْعُقُوبَةِ فِي الدُّنْيَا

(6835) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मुसलमान आदमी की इयादत फ़रमाई, जो लाग़र, कमज़ोर होकर चूज़े की तरह हो गया था। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उससे पूछा, 'क्या तू कोई दुआ करता था या अल्लाह से कुछ माँगता था?' उसने कहा, जी हाँ! मैं दुआ करता हूँ, ऐ अल्लाह! तू जो सज़ा मुझे आख़िरत में देनी है तू उसके ऐवज़ मुझे जल्द दुनिया में ही वो सज़ा दे दे। सो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुब्हानअल्लाह! तू इसकी ताक़त नहीं रखता या ये तेरे बस में नहीं है तूने ये दुआ क्यों न की, ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में भी भलाई से नवाज़ और आख़िरत में भी भलाई से नवाज़ना और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाना।' और आपने उसके लिये अल्लाह से दुआ फ़रमाई, उसने उसे शिफ़ा बख़्श दी।
(तिर्मिज़ी : 3487)

حَدَّثَنَا أَبُو الْخَطَّابِ، زِيَادُ بْنُ يَحْيَى الْحَسَّانِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَادَ رَجُلاً مِنَ الْمُسْلِمِينَ قَدْ خَفَتَ فَصَارَ مِثْلَ الْفَرْخِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هَلْ كُنْتَ تَدْعُو بِشَىْءٍ أَوْ تَسْأَلُهُ إِيَّاهُ " . قَالَ نَعَمْ كُنْتُ أَقُولُ اللَّهُمَّ مَا كُنْتَ مُعَاقِبِي بِهِ فِي الآخِرَةِ فَعَجِّلْهُ لِي فِي الدُّنْيَا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سُبْحَانَ اللَّهِ لاَ تُطِيقُهُ - أَوْ لاَ تَسْتَطِيعُهُ - أَفَلاَ قُلْتَ اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ " . قَالَ فَدَعَا اللَّهَ لَهُ فَشَفَاهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : क़द ख़फ़त : वो बिल्कुल दुबला-पतला और कमज़ोर व नातवाँ होकर मिस़्लल फ़र्ख़ मुर्गी के चूज़े की तरह हो गया।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, इंसान की ताक़त और बस में नहीं है कि वो अल्लाह के अ़ज़ाब को झेल सके, इसलिये इंसान को मुसीबत और आज़माइश में उसके उठने की दुआ़ करना चाहिये और ये दुआ़ नहीं करना चाहिये कि या अल्लाह गुनाहों की जो सज़ा आख़िरत में देनी है वो दुनिया ही में दे दे, बल्कि दुनिया व आख़िरत दोनों की फ़लाह व बहबूद और बेहतरी की दुआ़ माँगना चाहिये और हसनह में हर क़िस्म की ख़ैर व ख़ूबी और सलाह व फ़लाह दाख़िल है और ये इन्तिहाई जामेअ़ दुआ़ है।

(6836) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, इसमें सेहतयाबी की दुआ़ का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنَاهُ عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ " وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ " . وَلَمْ يَذْكُرِ الزِّيَادَةَ

(6837) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने साथियों में से एक आदमी की बीमार पुर्सी के लिये तशरीफ़ ले गये और वो चूज़े की तरह (कमज़ोर व नातवाँ) हो चुका था, आगे ऊपर वाली हदीस़ है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि आपने फ़रमाया, 'तेरे अंदर अल्लाह का अ़ज़ाब झेलने की ताक़त नहीं है।' और उसकी सेहतयाबी की दुआ़ का ज़िक्र नहीं है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النبي صلى الله عليه وسلم دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِهِ يَعُودُهُ وَقَدْ صَارَ كَالْفَرْخِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ حُمَيْدٍ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " لاَ طَاقَةَ لَكَ بِعَذَابِ اللَّهِ " . وَلَمْ يَذْكُرْ فَدَعَا اللَّهَ لَهُ فَشَفَاهُ .

(6838) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ الْعَطَّارُ، عَنْ سَعِيدِ، بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ .

बाब 8 : ज़िक्र की मज्लिसों की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ مَجَالِسِ الذِّكْرِ

(6839) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं आपने फ़रमाया, 'बेशक अल्लाह के गश्त करने वाले फ़रिश्ते हैं, जो और काम नहीं करते, वो ज़िक्र की मज्लिसों को तलाश करते हैं और जब उन्हें ज़िक्र की मज्लिस मिल जाती है, जिसमें ज़िक्रे इलाही होता है तो वो अहले मज्लिस के साथ बैठ जाते हैं और अपने परों से एक दूसरे को ढांप लेते हैं, यहाँ तक कि ज़मीन की मज्लिस से लेकर आसमाने दुनिया तक जगह भर जाती है और जब अहले मज्लिस बिखर जाते हैं तो वो ऊपर चढ़ जाते हैं और आसमान की तरफ़ चढ़ जाते हैं। चुनाँचे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रिश्तों से पूछता है, हालांकि वो अहले मज्लिस के बारे में उनसे ज़्यादा जानता है, तुम कहाँ से आये हो? तो वो जवाब देते हैं, हम ज़मीन में तेरे बन्दों के पास से आये हैं, वो तेरी तस्बीह बयान कर रहे थे, तेरी अज़्मत व किब्रियाई बयान कर रहे थे, तेरी उलूहियत बयान कर रहे थे, तेरी हम्द कर रहे थे और तुझसे दरख़्वास्त कर रहे थे। अल्लाह पूछता, वो मुझसे क्या माँग रहे थे? वो अर्ज़ करते हैं, वो तुझसे तेरी जन्नत का सवाल कर रहे थे। वो फ़रमाता है, क्या उन्होंने मेरी जन्नत को देखा है? वो अर्ज़ करते हैं, नहीं ऐ हमारे रब! अल्लाह फ़रमाता है, अगर वो मेरी जन्नत देख लेते तो फिर उनकी क्या हालत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ لِلَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى مَلاَئِكَةً سَيَّارَةً فُضْلاً يَتَتَبَّعُونَ مَجَالِسَ الذِّكْرِ فَإِذَا وَجَدُوا مَجْلِسًا فِيهِ ذِكْرٌ قَعَدُوا مَعَهُمْ وَحَفَّ بَعْضُهُمْ بَعْضًا بِأَجْنِحَتِهِمْ حَتَّى يَمْلَئُوا مَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَإِذَا تَفَرَّقُوا عَرَجُوا وَصَعِدُوا إِلَى السَّمَاءِ - قَالَ - فَيَسْأَلُهُمُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ مِنْ أَيْنَ جِئْتُمْ فَيَقُولُونَ جِئْنَا مِنْ عِنْدِ عِبَادٍ لَكَ فِي الأَرْضِ يُسَبِّحُونَكَ وَيُكَبِّرُونَكَ وَيُهَلِّلُونَكَ وَيَحْمَدُونَكَ وَيَسْأَلُونَكَ . قَالَ وَمَاذَا يَسْأَلُونِي قَالُوا يَسْأَلُونَكَ جَنَّتَكَ . قَالَ وَهَلْ رَأَوْا جَنَّتِي قَالُوا لاَ أَىْ رَبِّ . قَالَ فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْا جَنَّتِي قَالُوا وَيَسْتَجِيرُونَكَ . قَالَ وَمِمَّ يَسْتَجِيرُونَنِي قَالُوا مِنْ نَارِكَ يَا رَبِّ . قَالَ وَهَلْ رَأَوْا نَارِي قَالُوا لاَ . قَالَ فَكَيْفَ لَوْ

رَأَوْا نَارِي قَالُوا وَيَسْتَغْفِرُونَكَ - قَالَ - فَيَقُولُ قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ فَأَعْطَيْتُهُمْ مَا سَأَلُوا وَأَجَرْتُهُمْ مِمَّا اسْتَجَارُوا - قَالَ - فَيَقُولُونَ رَبِّ فِيهِمْ فُلاَنٌ عَبْدٌ خَطَّاءٌ إِنَّمَا مَرَّ فَجَلَسَ مَعَهُمْ قَالَ فَيَقُولُ وَلَهُ غَفَرْتُ هُمُ الْقَوْمُ لاَ يَشْقَى بِهِمْ جَلِيسُهُمْ " .

होती? वो अ़र्ज़ करते हैं और वो तुझसे पनाह तलब कर रहे थे। अल्लाह फ़रमाता है, वो मुझसे किस चीज़ से पनाह तलब कर रहे थे? वो अ़र्ज़ करते हैं, तेरी आग से ऐ रब! वो फ़रमाता है, क्या उन्होंने मेरी आग का मुशाहिदा किया है? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, नहीं! अल्लाह फ़रमाता है, अगर वो मेरी आग देख लेते तो उनकी क्या हालत होती? वो अ़र्ज़ करते हैं और वो तुझसे बख़्शिश तलब कर रहे थे। अल्लाह फ़रमाता है, मैंने उन्हें बख़्श दिया और जो उन्होंने माँगा, मैंने उन्हें दे दिया और जिस चीज़ से उन्होंने पनाह तलब की उससे पनाह दे दी। फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ऐ रब! उनमें फ़लाँ बहुत ख़ताकार बन्दा है, वो तो बस गुज़रते हुए उनके साथ बैठ गया। अल्लाह फ़रमाता है, मैंने उसको भी बख़्श दिया। क्योंकि ये ऐसे लोग हैं, जिनका हम नशीं नाकाम व महरूम नहीं रहता।'

(सहीह बुख़ारी : 6408)

मुफ़रदातुल हदीस़ : सय्यारतन : गर्दिश करने वाले, बहुत घूमने वाले। **फ़ुज़ुलन :** उ़लमा ने इसको पाँच तरह पढ़ा है : (1) फ़ा और ज़ॉद दोनों पर पेश है, बक़ौल इमाम नववी यही राजेह है। (1) फ़ा पर पेश है और ज़ॉद साकिन है और बक़ौल कुछ यही दुरुस्त तर है। (3) फ़ा पर ज़बर है और ज़ॉद साकिन है और बक़ौल क़ाज़ी अयाज़ जुम्हूर उस्ताद बुख़ारी व मुस्लिम में इस तरह पढ़ते हैं। (4) फ़ुज़ुलन : फ़ा और ज़ॉद पर पेश है और लाम मरफ़ूअ है यानी मुब्तदाए महज़ूफ़ की ख़बर है। (5) फ़ुज़ुलाउ : है यानी फ़ाज़िल की जमा है, पहली चार सूरतों में मानी होगा वो अफ़राद व अश्ख़ास के साथ मुअय्यन फ़रिश्तों से जुदा सिर्फ़ इसी काम पर मुक़र्रर हैं कि मज्लिसे ज़िक्र को तलाश करें। यत्तबिऊन : जुस्तजू और तलाश करते हैं। हफ़्-फ़ बअ़्ज़ुहुम बअ़्ज़न : अल्लाह के ज़िक्र का नूर ऊपर को चढ़ता जाता है, इस तरह फ़रिश्ते ऊपर तक एक दूसरे को घेर लेते हैं। यस्तजीरून : वो अमान और पनाह तलब करते हैं। ख़त्ताउन : बहुत ख़ताकार।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, एक जगह बैठकर तस्बीह, तक्बीर, तहमीद और तहलील में मशग़ूल होना और अल्लाह तआ़ला से जन्नत की दरख़्वास्त करना और दोज़ख़ से पनाह तलब करना, अपनी हाजत के हुसूल का तीर बहदफ़ (बेहतरीन) नुस्ख़ा है। यहाँ तक कि अगर कोई इंसान गुज़रते-गुज़रते भी उन लोगों के साथ शरीक हो जाता है तो वो भी महरूम नहीं रहता और ऐसी मज्लिस को फ़रिश्ते आसमाने दुनिया तक ढांप लेते हैं, लेकिन शर्त ये है ये मज्लिस मुब्तदिआना तौर व अतवार, रिया व सुमअ़ (दिखावा) और ख़िलाफ़े शरीअ़त उमूर से पाक हो और मसनून औराद (विर्द), मसनून अन्दाज़ में पढ़े जायें, अपने ख़ुद साख़्ता अल्फ़ाज़ या अपने वज़अ़ करदा तरीक़े न हों, जैसे सुबह व शाम की नमाज़ों के बाद सबका बैठकर अपने-अपने तौर पर ज़िक्र व फ़िक्र में डूबे रहना, जुम्आ के दिन इमाम के आने से पहले या अ़सर की नमाज़ के बाद ज़िक्र व अज़कार का पढ़ना, दुआ और तिलावत वग़ैरह में मशग़ूल रहना और उसके हुज़ूर दरख़्वास्त करना।

बाब 9 : अल्लाहुम्-म ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में कामयाबी इनायत फ़रमा और आख़िरत में भी और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा' ये दुआ करने की फ़ज़ीलत

بَاب فَضْلِ الدُّعَاءِ بِاللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(6840) क़तादा (रह.) ने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा, कौनसी दुआ है जो नबी (ﷺ) ज़्यादा करते थे? उन्होंने जवाब दिया, आपकी अक्सर दुआ जो आप करते थे ये है, 'ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में भी ख़ैर (भलाई) अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी ख़ैर अ़ता फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा।' और हज़रत अनस (रज़ि.) जब कोई दुआ करना चाहते तो यही दुआ करते और जब कोई और दुआ करना चाहते उसमें ये दुआ भी करते।

(अबू दाऊद : 1519)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ - عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، -وَهُوَ ابْنُ صُهَيْبٍ - قَالَ سَأَلَ قَتَادَةُ أَنَسًا أَىُّ دَعْوَةٍ كَانَ يَدْعُو بِهَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَكْثَرَ قَالَ كَانَ أَكْثَرُ دَعْوَةٍ يَدْعُو بِهَا يَقُولُ " اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ " . قَالَ وَكَانَ أَنَسٌ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَدْعُوَ بِدَعْوَةٍ دَعَا بِهَا فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَدْعُوَ بِدُعَاءٍ دَعَا بِهَا فِيهِ .

(6841) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ये दुआ फ़रमाया करते थे, 'ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में ख़ैर से नवाज़ और आख़िरत में भी ख़ैर अता फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ " .

फ़ायदा : आपके इस मामूल से ये मालूम हुआ और क़ुरआन मजीद का उस्लूबे बयान भी इसकी ताईद करता है कि बन्दे को अपने रब से दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई तलब करना चाहिये और उस भलाई का फ़ैसला और इन्तिख़ाब अपने रब पर छोड़ देना चाहिये। क्योंकि वही बेहतर जानता है कि हमारे लिये हक़ीक़ी ख़ैर किस चीज़ में है। ख़ास तौर पर दुनिया की चीज़ों का ख़ैर होना इस पर मौक़ूफ़ है कि वो हमारे लिये आख़िरत की कामयाबी का ज़रिया और वसीला बनें और किसी चीज़ के उस पहलू का जानना सिर्फ़ अल्लाह तआला का काम है, अल्बत्ता दोज़ख़ के अज़ाब से पनाह माँगना उसका इल्तिज़ाम करना चाहिये, क्योंकि ये बड़ी सख़्त चीज़ है। बन्दे की सबसे बड़ी कामयाबी यही है कि वो दोज़ख़ के अज़ाब से बच जाये और जन्नत में चला जाये, इस ऐतबार से ये इन्तिहाई मुख़्तसर और जामेअ दुआ है, जिसमें बन्दे ने दुनिया और आख़िरत की हर मत्लूबा चीज़ को माँग लिया है।

बाब 10 : तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) तस्बीह (सुब्हानअल्लाह) और दुआ करने की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ التَّهْلِيلِ وَالتَّسْبِيحِ وَالدُّعَاءِ

(6842) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान दिन में सौ मर्तबा ये कलिमात कहता है, तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वो यकता है, उसका कोई शरीक नहीं है, वही हुकूमत व सल्तनत का मालिक है, वही तारीफ़ का हक़दार है और वो हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। उसको दस गर्दन आज़ाद करने का

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سُمَىٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ . فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ . كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ أَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ أَحَدٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ . وَمَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ حُطَّتْ خَطَايَاهُ وَلَوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ " .

सवाब मिलेगा, उसके लिये सौ नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उसकी सौ बुराइयाँ मिटा दी जायेंगी और ये दिन भर शाम तक उसके लिये शैतान से महफ़ूज़ रहने का बाइस बनेंगे और कोई शख़्स उससे बेहतर काम नहीं करता, मगर वो जिसने इन कलिमात को सौ से ज़्यादा मर्तबा पढ़ा और जिसने दिन में सौ मर्तबा सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही कहा, उसकी ग़ल्तियाँ माफ़ कर दी जाती हैं, अगरचे वो समुन्द्र के झाग के बराबर हों।'

(सहीह बुख़ारी : 3293, 6403, तिर्मिज़ी : 3468, इब्ने माजह : 3798)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ الأُمَوِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُخْتَارِ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ سُمَىٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ وَحِينَ يُمْسِي سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ . لَمْ يَأْتِ أَحَدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ أَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ أَوْ زَادَ عَلَيْهِ " .

(6843) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स सुबह और शाम के वक़्त सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही सौ बार कहता है, क़यामत के दिन कोई उसके अमल से बेहतर अमल लेकर हाज़िर नहीं होगा, मगर वो इंसान जिसने उसके बराबर या उससे ज़्यादा बार यही कलिमात कहे।'

(अबू दाऊद : 5091, तिर्मिज़ी : 3469)

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की इन अहादीस़ से मालूम हुआ इन कलिमात में इज़ाफ़ा मत्लूब है और वो अज्र व सवाब में इज़ाफ़े का बाइस हैं, ये उन चीज़ों की तरह नहीं है, जिनमें कमी व बेशी मुम्किन नहीं है।

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ أَبُو أَيُّوبَ الْغَيْلاَنِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، - يَعْنِي الْعَقَدِيَّ - حَدَّثَنَا عُمَرُ، - وَهُوَ ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ - عَنْ أَبِي

(6844) हज़रत अम्र बिन मैमून (रह.) बयान करते हैं, जो इंसान ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि

إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، قَالَ " مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ عَشْرَ مِرَارٍ كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ أَرْبَعَةَ أَنْفُسٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ " .

शैइन क़दीर, दस बार कहता है, वो उस शख़्स की तरह है जो हज़रत इस्माईल की औलाद से चार ग़ुलाम आज़ाद करता है।'

(सहीह बुख़ारी : 6404, तिर्मिज़ी : 3553)

फ़ायदा : ये हदीस बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी से मरफ़ूअन मन्कूल है, लेकिन उसमें एक गर्दन का ज़िक्र है, मुस्नद अहमद में चार का ज़िक्र है और इमाम मुस्लिम ने भी आगे वज़ाहत कर दी है कि अ़म्र बिन मैमून ने ये हदीस इब्ने अबी लैला से सुनी है और इब्ने अबी लैला ने हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी से और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से।

وَقَالَ سُلَيْمَانُ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا عُمَرُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ رَبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ . بِمِثْلِ ذَلِكَ قَالَ فَقُلْتُ لِلرَّبِيعِ مِمَّنْ سَمِعْتَهُ قَالَ مِنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ - قَالَ - فَأَتَيْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ فَقُلْتُ مِمَّنْ سَمِعْتَهُ قَالَ مِنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى - قَالَ - فَأَتَيْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى فَقُلْتُ مِمَّنْ سَمِعْتَهُ قَالَ مِنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ يُحَدِّثُهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(6845) इमाम मुस्लिम ने इस सनद के ज़रिये वज़ाहत कर दी है कि रबीअ़ बिन ख़ुसैम ने ये रिवायत अ़म्र बिन मैमून से और अ़म्र बिन मैमून ने इब्ने अबी लैला से और इब्ने अबी लैला ने हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) से और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ طَرِيفٍ الْبَجَلِيُّ قَالُوا حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "

(6846) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दो बोल हैं ज़बान पर हल्के होंगे, मीज़ाने आमाल में बड़े भारी और रहमान को बहुत प्यारे, सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ उसकी हम्दो-सताइश के साथ, मैं अल्लाह

كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ " .

की पाकी बयान करता हूँ, जो बड़ी अ़ज़्मत वाला है।'

(सहीह बुख़ारी : 6406, 7563, 6682, तिर्मिज़ी : 3497, इब्ने माजह : 3806)

फ़ायदा : सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही का मानी है कि वो हर ऐब व नुक़्स से मुनज़्ज़ा और पाक है और हर ख़ूबी व कमाल से मुत्तसिफ़ है, वो हर ऐब से पाक और हर कमाल से मुत्तसिफ़ होने की बिना पर, मुहब्बत का हक़दार है। लेकिन उसके साथ-साथ सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम है। अ़ज़्मत व जलालत से मुत्तसिफ़ है, इसलिये उसकी नाफ़रमानी और इ़स्यान से बचना चाहिये, इस जामेइय्यत की बिना पर ज़बान से आसानी और सहूलत के साथ अदा होने के बावजूद ये अल्लाह को महबूब हैं। इस बिना पर ये मीज़ाने आ़माल में भारी हैं और इस हदीस़ से स़ाबित होता है, आ़माल का वज़न होगा और जिस तरह माद्दी चीज़ें हल्की और भारी होती हैं और उनका वज़न मालूम करने के लिये आलात होते हैं, उस तरह बहुत सी ग़ैर माद्दी चीज़ें भी हल्की और भारी होती हैं। जैसे हराहत व बर्बदत, यानी गर्मी और ठण्डक। इस तरह क़यामत के दिन आ़माल का वज़न होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لأَنْ أَقُولَ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ أَحَبُّ إِلَىَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ " .

(6847) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस दुनिया की वो तमाम चीज़ें जिन पर सूरज तुलूअ़ होता है, उन सब चीज़ों के मुक़ाबले में मुझे ये ज़्यादा महबूब है कि मैं एक बार सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि वला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहूँ।'

(तिर्मिज़ी : 3597)

फ़ायदा : ये चार कलिमात इस क़द्र जामेअ़ हैं कि अल्लाह तआ़ला की तमाम मुस़्बत व मन्फ़ी सिफ़ात पर हावी हैं, अल्लाह के वो तमाम अस्मा (नाम) जो अल्लाह की ज़ात पाक से हर ऐब व नुक़्स की नफ़ी करते हैं। सुब्हानअल्लाह का मफ़्हूम उन सब पर हावी है और वो तमाम अस्माए हुस्ना जो अल्लाह तआ़ला की ईजाबी सिफ़ाते कमाल पर दलालत करते हैं वो सब अल्हम्दुलिल्लाह के अहाते में आ जाते हैं। इस तरह जो अस्माए हुस्ना उसकी वहदानियत व यकताई और उसकी शाने बेमिस़ाल पर दलालत करते हैं, उनकी पूरी तर्जुमानी कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाह करता है और वो अस्माए हुस्ना जिनका मफ़्हूम व मुद्दआ ये है कि अल्लाह तआ़ला हर वहम व ख़याल और गुमान व क़यास से बुलंद व बाला है, उनकी ताबीर व बयान, अल्लाहु अकबर का कलिमा कर रहा है। इसलिये जिसने

दिल के शऊर और यक़ीन के साथ ये कलिमात कहे, उसने अल्लाह की सारी सना और सिफ़ात बयान कर दीं। इसलिये ये चार कलिमात, अपनी क़द्रो-क़ीमत और अ़ज़्मत व बरकत के लिहाज़ से बिला शुब्हा उस सारी कायनात से फ़ाइक़ (ऊपर) व बरतर हैं जिस पर सूरज की रोशनी पड़ती है, लेकिन ये ख़्याल रहे, इन कलिमात के फ़ज़ाइल, उन्हीं लोगों को हासिल होंगे जो अल्लाह के अहकाम के पाबंद हैं और उसके मना किये हुए कामों से बचते हैं। लेकिन जो लोग अल्लाह के अहकाम व तालीमात को नज़र अन्दाज़ करते हैं और मुहर्रमात का इर्तिकाब करते हैं और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, वो सिर्फ़ उन कलिमात को ज़बान से कहकर, उस अज्र व सवाब के मुस्तहिक़ नहीं हो सकते, जो इन अहादीस में बयान किया गया है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ عَنْ مُوسَى الْجُهَنِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مُوسَى الْجُهَنِيُّ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ عَلِّمْنِي كَلاَمًا أَقُولُهُ قَالَ " قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ " . قَالَ فَهَؤُلاَءِ لِرَبِّي فَمَا لِي قَالَ " قُلِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي " . قَالَ مُوسَى أَمَّا عَافِنِي فَأَنَا أَتَوَهَّمُ وَمَا أَدْرِي . وَلَمْ يَذْكُرِ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ فِي حَدِيثِهِ قَوْلَ مُوسَى .

(6848) हज़रत मुस्अब (रह.) बिन सअ़द (रज़ि.) अपने बाप से बयान करते हैं कि एक आराबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, मुझे कुछ बोल सिखाइये, जिनका मैं विर्द करूँ। आपने फ़रमाया, 'यूँ कहो, अल्लाह के सिवा कोई लायक़े बन्दगी नहीं है, उसका कोई शरीक नहीं है, मैं अल्लाह बहुत बड़े की किब्रियाई बयान करता हूँ और उसकी बहुत ज़्यादा हम्दो-सना बयान करता हूँ, कायनात का रब अल्लाह, हर ऐब व नुक़्स से पाक है, न हरकत और न हरकत की क़ुव्वत है, मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है।' आराबी ने कहा, ये कलिमात तो मेरे रब के लिये हुए तो मेरे लिये क्या है? आपने फ़रमाया, 'यूँ कहो! ऐ अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमा दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे हिदायत बख़्श और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा।' रावी मूसा कहते हैं, मुझे आफ़ियत बख़्शिश का मुझे ख़्याल गुज़रता है और मुझे याद नहीं है, इब्ने अबी शैबा ने अपनी रिवायत में मूसा (रह.) का ये क़ौल बयान नहीं किया।

(6849) अबू मालिक अश्जई (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं, जब कोई शख़्स मुसलमान होता तो आप उसे ये दुआ सिखाते, 'ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे हिदायत बख़्श और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा।' (इब्ने माजह : 3845)

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ - حَدَّثَنَا أَبُو مَالِكٍ الأَشْجَعِيُّ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُعَلِّمُ مَنْ أَسْلَمَ يَقُولُ "اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي".

(6850) अबू मालिक अश्जई (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं, जब कोई शख़्स मुसलमान होता, नबी (ﷺ) उसे नमाज़ सिखाते, फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने की तल्क़ीन फ़रमाते, 'अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी वह्दिनी व आफ़िनी वरज़ुक़्नी मानी ऊपर वाली हदीस़ में गुज़र चुका है।

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَزْهَرَ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مَالِكٍ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ الرَّجُلُ إِذَا أَسْلَمَ عَلَّمَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم الصَّلاَةَ ثُمَّ أَمَرَهُ أَنْ يَدْعُوَ بِهَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي".

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है, ईमान लाने के बाद सबसे अहम और बुनियादी अ़मल नमाज़ है, जो ईमान के बीज से सबसे पहले नमूदार होता है और उसके मुसलमान होने का अ़मली सुबूत फ़राहम करता है।

(6851) अबू मालिक (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि उसने नबी (ﷺ) से सुना, जबकि आपकी ख़िदमत में एक आदमी ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! जब मैं अपने रब से माँगू तो क्या कहूँ? आपने फ़रमाया, 'यूँ कहो! अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी व आफ़िनी वरज़ुक़्नी' और आपने अंगूठे के सिवा (एक-एक करके) सब उंगलियाँ बंद कर लीं (और फ़रमाया) 'चुनाँचे ये कलिमात तुम्हारे लिये दुनिया व आख़िरत दोनों को जमा कर देंगे।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا أَبُو مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أَقُولُ حِينَ أَسْأَلُ رَبِّي قَالَ " قُلِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي " . وَيَجْمَعُ أَصَابِعَهُ إِلاَّ الإِبْهَامَ " فَإِنَّ هَؤُلاَءِ تَجْمَعُ لَكَ دُنْيَاكَ وَآخِرَتَكَ " .

(6852) मुस्अब (रह.) बिन सअद अपने बाप से बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे तो आपने फ़रमाया, 'क्या तुममें से कोई शख़्स हर रोज़ हज़ार नेकियाँ कमाने से आजिज़ है?' चुनाँचे आपके हमनशीनों में से एक ने सवाल किया, हममें से कोई एक हज़ार नेकियाँ कैसे कमा सकता है? आपने फ़रमाया, 'सौ बार सुब्हानअल्लाह कहे तो उसके लिये हज़ार नेकियाँ लिख दी जायेंगी और एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जायेंगे।'

(तिर्मिज़ी : 3463)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، وَعَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ مُوسَى الْجُهَنِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مُوسَى الْجُهَنِيُّ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ، كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْمٍ أَلْفَ حَسَنَةٍ " . فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ كَيْفَ يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ قَالَ " يُسَبِّحُ مِائَةَ تَسْبِيحَةٍ فَيُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ أَوْ يُحَطُّ عَنْهُ أَلْفُ خَطِيئَةٍ " .

नोट : यहाँ 'औ' 'व' के मानी में है, इसलिये कुछ नुस्ख़ों में व औ है, यानी हज़ार नेकियों के साथ हज़ार गुनाह भी माफ़ होंगे।

बाब 11 : तिलावते क़ुरआन और ज़िक्र के लिये जमा होने की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ الاِجْتِمَاعِ عَلَى تِلاَوَةِ الْقُرْآنِ وَعَلَى الذِّكْرِ

(6853) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस शख़्स ने किसी मोमिन की दुनियावी मुश्किलात में से कोई मुश्किल दूर की, अल्लाह उसकी क़यामत के दिन की मुश्किलात (सख़्तियों) में से कोई सख़्ती दूर फ़रमायेगा और जिसने किसी तंगदस्त के लिये आसानी पैदा की, अल्लाह उसके लिये

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ

نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَاللَّهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلاَّ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلاَئِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ وَمَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ " .

दुनिया और आख़िरत में आसानी पैदा करेगा और जिसने किसी मुसलमान की पर्दापोशी की, अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उसकी पर्दापोशी फ़रमायेगा और अल्लाह अपने बन्दे की मदद फ़रमाता है, जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है और जो किसी ऐसे रास्ते पर चलता है, जिससे वो इल्म हासिल कर सके, अल्लाह उसके लिये उसके सबब जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और जो लोग भी अल्लाह के घरों (मस्जिदों) में से किसी घर में जमा होकर तिलावते किताबुल्लाह करते हैं और आपस में पढ़ते-पढ़ाते हैं तो उन पर सकीनत (सुकून) उतर आती है और उन्हें रहमत ढांप लेती है और उन्हें फ़रिश्ते घेर लेते हैं और अल्लाह अपने मलाइका मुक़र्रबीन (क़रीबतर फ़रिश्तों) में उनका ज़िक्र फ़रमाता है और जिस शख़्स के अमल उसको पीछे रखते हैं, उसका नसब व ख़ानदान, उसको तेज़ नहीं करेगा, यानी आगे नहीं बढ़ायेगा।'

(अबू दाऊद : 4946, इब्ने माजह, बाब : 225)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है, ज़िक्र के लिये जमा होने से असल मक़सूद किसी दीनी जगह, मदरसे, मस्जिद वग़ैरह में क़ुरआन की तालीम व तअ़ल्लुम, पढ़ने-पढ़ाने के लिये जमा होना है, इसलिये तिलावत के बाद तदारीस का इज़ाफ़ा किया गया है, सिर्फ़ ख़ाली-ख़ोली तिलावत के लिये जमा होना मुराद नहीं है, इस तालीम व तअ़ल्लुम के नतीजे में चार बरकतें मयस्सर आती हैं।

(1) सकीनत यानी क़ल्बी इत्मीनान (दिली इत्मीनान) और रूहानी सुकून हासिल होता है, यानी इत्मीनान ख़ातिर और जमइय्यते क़ल्बी नसीब होता है।

(2) रहमते इलाही अपने आग़ोश और साये में ले लेती है।

(3) उन्हें हर तरफ़ से अल्लाह के फ़रिश्ते घेर लेते हैं।

(4) अल्लाह तआला अपने मलाइक-ए-मुक़र्रबीन (क़रीबतर फ़रिश्ते) में उनका ज़िक्रे ख़ैर करते हैं।

मम्बत्तअ बिही अ़मलुहू : जिसके अ़मल अच्छे बेहतर नहीं है, उनमें कमी व कोताही है, इसलिये वो अच्छे और बुलंद दरजात हासिल करने से पीछे रह गया है तो उसके इज़ाले के लिये उसका ख़ानदानी शर्फ़ काम नहीं आ सकेगा, इसलिये इंसान को ख़ानदानी शर्फ़ व मन्ज़िलत के ग़र्रे (ख़ुशफ़हमी) में मुब्तला होकर नेक अ़मल में पीछे नहीं रहना चाहिये, आख़िरत में तो आमाले हसना को ही काम आना है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَاهُ نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالاَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، وَفِي حَدِيثِ أَبِي أُسَامَةَ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ غَيْرَ أَنَّ حَدِيثَ أَبِي أُسَامَةَ لَيْسَ فِيهِ ذِكْرُ التَّيْسِيرِ عَلَى الْمُعْسِرِ

(6854) इमाम साहब अपने दो उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, मगर अबू उसामा की रिवायत में तंगदस्त के लिये आसानी और सहूलत फ़राहम का ज़िक्र नहीं है।

(तिर्मिज़ी : 2646, 2945)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، يُحَدِّثُ عَنِ الأَغَرِّ أَبِي مُسْلِمٍ، أَنَّهُ قَالَ أَشْهَدُ عَلَى أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لاَ يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُونَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِلاَّ حَفَّتْهُمُ الْمَلاَئِكَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَنَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ " .

(6855) हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में शहादत देते हुए बयान किया कि आपने फ़रमाया, 'जब भी कुछ लोग बैठकर कहीं अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का ज़िक्र करते हैं तो लाज़िमी तौर पर फ़रिश्ते हर तरफ़ से उनके गिर्द जमा हो जाते हैं और उन्हें घेर लेते हैं और रहमते इलाही उन पर छा जाती है (और उन्हें अपने साये में ले लेती है और उन पर सकीनत व इत्मीनान व सुकून की कैफ़ियत) नाज़िल होती है और अल्लाह उनका अपने यहाँ के लोगों (मुक़र्रर फ़रिश्तों) में ज़िक्र करता है।'

(तिर्मिज़ी : 3378, इब्ने माजह : 3791)

(6856) यही हदीस इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6857) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत मुआविया (रज़ि.) मस्जिद में क़ायम एक हल्क़े में पहुँचे और पूछा, तुम यहाँ क्यों या किस लिये बैठे हो? उन्होंने कहा, हम बैठकर अल्लाह को याद कर रहे हैं। उन्होंने कहा, क्या अल्लाह की क़सम! तुम सिर्फ़ ज़िक्रे इलाही ही के लिये बैठे हो? उन्होंने जवाब दिया, अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ़ इसकी ख़ातिर बैठे हैं। हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने कहा, हाँ! मैंने किसी बदगुमानी की बिना पर आप लोगों से क़सम नहीं ली, असल बात ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से जिस दर्जे का ताल्लुक़ व क़ुर्ब मुझे हासिल था, उस दर्जे के ताल्लुक़ वाला कोई आदमी, आपसे मुझसे कम हदीसें बयान करने वाला नहीं है। सूरते हाल ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन अपने साथियों के हल्क़े पर पहुँचे तो फ़रमाया, 'तुम यहाँ किस मक़सद के लिये बैठे हो?' उन्होंने कहा, हम बैठकर अल्लाह को याद कर रहे हैं और उसने हमें जो इस्लाम की हिदायत से नवाज़ा है और इस्लाम की तौफ़ीक़ देकर हम पर एहसान फ़रमाया है, उस पर उसकी तारीफ़ कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, 'अल्लाह की क़सम! तुम्हें सिर्फ़ इस चीज़ ने बिठाया है?' उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ़ इसीलिये बैठे हैं। आपने फ़रमाया, 'जान लो!

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مَرْحُومُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِي نَعَامَةَ السَّعْدِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ خَرَجَ مُعَاوِيَةُ عَلَى حَلْقَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ مَا أَجْلَسَكُمْ قَالُوا جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ . قَالَ آللَّهِ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلاَّ ذَاكَ قَالُوا وَاللَّهِ مَا أَجْلَسَنَا إِلاَّ ذَاكَ . قَالَ أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ وَمَا كَانَ أَحَدٌ بِمَنْزِلَتِي مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَقَلَّ عَنْهُ حَدِيثًا مِنِّي وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ عَلَى حَلْقَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ " مَا أَجْلَسَكُمْ " . قَالُوا جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ وَنَحْمَدُهُ عَلَى مَا هَدَانَا لِلإِسْلاَمِ وَمَنَّ بِهِ عَلَيْنَا . قَالَ " آللَّهِ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلاَّ ذَاكَ " . قَالُوا وَاللَّهِ مَا أَجْلَسَنَا إِلاَّ ذَاكَ . قَالَ " أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ وَلَكِنَّهُ أَتَانِي جِبْرِيلُ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِي بِكُمُ الْمَلاَئِكَةَ " .

मैंने तुम्हारे साथ किसी बदगुमानी की बिना पर क़सम नहीं ली, बल्कि वाक़िया ये है कि जिब्राईल मेरे पास आये हैं और उन्होंने बताया है कि अल्लाह तआला तुम पर फ़रिश्तों के सामने फ़ख़्र व मुबाहात का इज़हार फ़रमा रहा है।'

(तिर्मिज़ी : 3379, नसाई : 5441)

मुफ़रदातुल हदीस़ : युबाही लकुम : तुम्हारी तारीफ़ व तौसीफ़ कर रहा है, तुम्हारे आमाले हसना फ़रिश्तों को बताकर फ़ख़्र व मुबाहात का इज़हार फ़रमा रहा है।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ, किसी को इस्लाम व हिदायत का नसीब हो जाना, अल्लाह की तौफ़ीक़ व इनायत पर मौक़ूफ़ है और ये उसका एहसान व इनाम है और उसके इस इनाम को याद करके अल्लाह की हम्द व सना बयान करना, ये भी अल्लाह के ज़िक्र में दाख़िल है और अल्लाह के कुछ बन्दों का कहीं इकट्ठे बैठकर इख़्लास के साथ उसको याद करना, उसकी बातें करना, उसकी हम्दो-सना करना, अल्लाह तआला को बेहद पसंद है और अल्लाह तआला ऐसे लोगों की अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों के सामने तारीफ़ व तौसीफ़ बयान करता है और अपनी रज़ामन्दी का इज़हार फ़रमाता है, अल्लाह तआला अपनी तौफ़ीक़ व इनायत से हमें भी अपने उन मुख़्लिस बन्दों में दाख़िल फ़रमाये और अपनी मग़फ़िरत, रहमत, सकीनत और रज़ामन्दी से नवाज़े, आमीन!

बाब 12 : बख़्शिश तलब करने का पसन्दीदा होना और ये अमल बकस़रत (बहुत ज़्यादा) करना

باب اسْتِحْبَابِ الاِسْتِغْفَارِ وَالاِسْتِكْثَارِ مِنْهُ

(6858) हज़रत अग़रिल मुज़नी (रज़ि.) जिन्हें शर्फ़े सोहबत हासिल है, बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वाक़िया ये है मेरे दिल पर कभी अब्र (पर्दा) छा जाता है, चुनाँचे मैं दिन भर में अल्लाह से सौ मर्तबा मग़फ़िरत माँगता हूँ।'

(अबू दाऊद : 1515)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، جَمِيعًا عَنْ حَمَّادٍ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنِ الأَغَرِّ الْمُزَنِيِّ، - وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّهُ لَيُغَانُ عَلَى قَلْبِي وَإِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ فِي الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ "

मुफ़रदातुल हदीस़: लयुग़ानु: ये ग़ैन से माख़ूज़ है, जिसका मानी ग़ैम (बादल) है, यानी पर्दा छा जाना

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) पर हर वक़्त अल्लाह तआला के अन्वार व तजल्लियात (रोशनियों) का ज़ुहूर होता रहता था, इसलिये आप हर वक़्त अल्लाह की याद में मसरूफ़ रहते थे, लेकिन आप इंसान और बशर थे और हवाइजे बशरिया (इंसानी ज़रूरतों) में भी मशग़ूल होते थे, कभी उम्मत के उमूर व मामलात के हल करने में मसरूफ़ हो जाते और उनके तनाज़ात और झगड़ों को निपटाते, कभी दुश्मन के मुक़ाबले के लिये और उनसे मामलात तय करने के लिये साथियों के साथ मुशावरत फ़रमाते, उन औक़ात (वक़्तों) में ज़िक्रे इलाही की पहली कैफ़ियत में फ़र्क़ आ जाता था, आपने उसको अपने मक़ामे रफ़ीअ की बिना पर, ग़ैन से ताबीर किया है। इसको कुछ ने हसनातिल अबरार, सय्यिआतिल मुक़र्रबीन का नाम दिया है और दूसरी वजह ये है कि अल्लाह तआला की अ़ज़्मत व किब्रियाई और उसके जलाल व जबरूत का, जिस दर्जे का इंसान को शऊर व एहसान होगा, वो उस दर्जे के मुताबिक़ अपने आपको हुक़ूक़े उ़बूदियत की अदायगी में क़सूरवार समझेगा और हर वक़्त उसे ये एहसास रहेगा, हक़ तो ये है कि हक़ अदा न हुआ और रसूलुल्लाह (ﷺ) को चूंकि अल्लाह की मअ़रिफ़त बदर्जे-ए-कमाल हासिल थी, इसलिये आप पर ये एहसास ग़ालिब रहता था कि उ़बूदियत का हक़ अदा न हो सका, उसको आपने ग़ैन से ताबीर फ़रमाया और इस वास्ते आप बार-बार, मुख़्तलिफ़ मज्लिसों और मौक़ों पर तौबा व इस्तिग़फ़ार फ़रमाते रहते और उसका इज़्हार फ़रमा कर दूसरों को भी इसकी तल्क़ीन फ़रमाते और उनके लिये अ़मली तौर पर अपना उस्वा भी पेश फ़रमाते।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي، بُرْدَةَ قَالَ سَمِعْتُ الأَغَرَّ، وَكَانَ، مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يُحَدِّثُ ابْنَ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " يَا أَيُّهَا النَّاسُ تُوبُوا إِلَى اللَّهِ فَإِنِّي أَتُوبُ فِي الْيَوْمِ إِلَيْهِ مِائَةَ مَرَّةٍ " .

(6859) हज़रत अग़र (रज़ि.) जो नबी (ﷺ) के साथियों में से हैं, ने हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) को हदीस़ सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! अल्लाह की तरफ़ लौटो, उसके हुज़ूर में तौबा करो, क्योंकि मैं भी दिन में सौ-सौ मर्तबा उसकी तरफ़ रुजूअ करता हूँ।'

फ़ायदा : इस्तिग़फ़ार का मानी है माफ़ी माँगना और बख़्शिश तलब करना और तौबा का मानी है, अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करना, उसकी तरफ़ लौट आना और उस सहीह राह को इख़्तियार कर लेना, जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला ने राहनुमाई फ़रमाई है, अगर आदमी जुर्म व गुनाह से बाज़ न आये और सहीह रविश इख़्तियार न करे तो ज़बान से लाख बार तौबा, मेरी तौबा कहे, ये तौबा नहीं मज़ाक़ होगा। इसलिये इस्तिग़फ़ार और तौबा आपस में लाज़िम व मल्ज़ूम हैं और तौबा की शरई हक़ीक़त ये है कि जो गुनाह और नाफ़रमानी या नापसन्दीदा अ़मल, इंसान से सरज़द हुआ है, उससे

फ़ोरन बाज़ आ जाये, उसके बुरे अन्जाम के ख़ौफ़ के साथ उस पर अपने दिली रंज और नदामत व पशेमानी का इज़हार करे और आइन्दा के लिये उससे बचे रहने और दूर रहने का और अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी और उसकी रज़ाजोई का अज़्म पैदा करे और जो गुनाह हो गया है, उसका तदारुक और तलाफ़ी करे और अगर उसका ताल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद से है तो वो अगर माल से ताल्लुक़ रखता है तो उसको वापस करे या उससे माफ़ करवाये। लेकिन ये ख़्याल रहे कि तौबा व इस्तिग़फ़ार सिर्फ़ आसियों और गुनाहगारों ही का काम नहीं है, बल्कि ये इबूदियत और बन्दगी का सबसे आला मज़हर है और इस एहसास व शऊर का मज़हर है कि अल्लाह की बन्दगी का हक़ अदा नहीं हो सका, इसलिये तौबा व इस्तिग़फ़ार अगर आसियों और गुनाहगारों के लिये मग़्फ़िरत और रहमत का ज़रिया है तो मुक़र्रब अम्बिया के लिये दरजाते क़ुर्ब व महबूबियत में तरक़्क़ी का वसीला है। इसलिये नबी (ﷺ) नमाज़ से सलाम फेरने के बाद तीन बार अस्तग़्फ़िरुल्लाह कहते थे, हालांकि नमाज़ एक बुलंद तरीन इबादत है। इसलिये अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'ऐ ईमानदार लोगो! अल्लाह की तरफ़ मुख़्लिसाना रुजूअ करो, दिल के पूरे इन्क़ियाद और सच्चे अज़्म के साथ लौटो, जिसके बाद गुनाह की तरफ़ लौटने की ख़्वाहिश बाक़ी न रहे।' (सूरह तहरीम : 8)

حَدَّثَنَاهُ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ .

(6860) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ يَعْنِي سُلَيْمَانَ بْنَ حَيَّانَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ - كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو خَيْثَمَةَ، زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ".

(6861) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने सूरज के मग़्रिब से तुलूअ से पहले-पहले तौबा कर ली, अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेगा।'

फ़ायदा : तौबा उस वक़्त तक मोतबर और क़ुबूल है, जब तक ज़िन्दगी की आस और उम्मीद हो और मौत आँखों के सामने न आ गई हो। जब सूरज मग़रिब से तुलूअ हो जायेगा तो ये इस बात की अलामत है, दुनिया ख़त्म हो गई। इस तरह जब इंसान पर ग़रग़रह की कैफ़ियत शुरू हो जाती है, उसके बाद ज़िन्दगी की कोई आस और उम्मीद बाक़ी नहीं रहती, ये मौत की क़तई और आख़िरी अलामत है तो ऐसे वक़्त में तौबा क़ुबूल नहीं होती। इसलिये बन्दे को टाल-मटोल से काम नहीं लेना चाहिये, तौबा व इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ना चाहिये, मालूम नहीं किस वक़्त मौत की घड़ी आ जायेगी।

बाब 13 : जहाँ शरीअत ने जहरी (बुलंद आवाज़ से) ज़िक्र की इजाज़त दी है उसके सिवा आहिस्ता आवाज़ से ज़िक्र करना पसन्दीदा है

باب اسْتِحْبَابِ خَفْضِ الصَّوْتِ بِالذِّكْرِ

(6862) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं, हम नबी (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे। चुनाँचे लोग बुलंद आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहने लगे, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! अपने साथ नर्मी करो (आवाज़ पस्त करो), तुम किसी बहरे को नहीं पुकार रहे और न ही ग़ायब को, तुम सुनने वाले, क़रीबी को, जो तुम्हारे साथ है, पुकार रहे हो।' हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) कहते हैं और मैं आपके पीछे था और मैं ये कलिमात कह रहा था, ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह तो आपने फ़रमाया, 'ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने की तरफ़ राहनुमाई न करूँ?' मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! ज़रूर बताइये ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'कहो, 'ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।'

(सहीह बुख़ारी:4205, 6384, 6409, 6610, 7386, अबूदाऊद:1528, तिर्मिज़ी:3461, इब्ने माजह: 3824)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي سَفَرٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَجْهَرُونَ بِالتَّكْبِيرِ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " أَيُّهَا النَّاسُ ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِنَّكُمْ لَيْسَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا وَهُوَ مَعَكُمْ " . قَالَ وَأَنَا خَلْفَهُ وَأَنَا أَقُولُ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ فَقَالَ " يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ قَيْسٍ أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ " . فَقُلْتُ بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " قُلْ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ " .

फ़ायदा : चूंकि अल्लाह तआला सुनने वाला और क़रीब है, अपने इल्म और अहाते से हर एक के साथ है, वो हर एक के ज़िक्र व दुआ को सुनता और जानता है। यअ्लमुस्सिर्र व अख़्फ़ा वो पोशीदा और पोशीदा तर को जानता है, इसलिये दुआ और ज़िक्र के लिये आवाज़ बुलंद करने की ज़रूरत नहीं है, इसलिये फ़रमाया, 'अपने रब को गिड़गिड़ा कर चुपके-चुपके पुकारो।'

इसलिये उन मक़ामात के सिवा, जहाँ बुलंद आवाज़ करने की इजाज़त है, आवाज़ बुलंद करना दुरुस्त नहीं है। और ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह का मतलब ये है कि किसी काम के लिये सई (कोशिश) व हरकत और उसके करने की कुव्वत व ताक़त बस अल्लाह ही से मिल सकती है, कोई बन्दा ख़ुद कुछ भी नहीं कर सकता, चूंकि इस कलिमे के ज़रिये इंसान अपनी अनानियत से दस्तबरदार होकर तफ़्वीज़ और तस्लीम का इज़हार करता है और इस बात का ऐतराफ़ करता है, मेरे बस में कुछ भी नहीं है, न मैं जल्द नफ़ा पहुँचा सकता हूँ और न नुक़सान को दूर कर सकता हूँ। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के बक़ौल न मैं अल्लाह की तौफ़ीक़ व मदद के बग़ैर गुनाह से बच सकता हूँ और न उसकी तौफ़ीक़े इआनत के बग़ैर इताअत की सकत व कुव्वत रखता हूँ, इस ऐतराफ़े हक़ीक़त की बिना पर, आपने इस कलिमे को जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना क़रार दिया है, गोया ये कलिमा इख़्लास के साथ पढ़ने की सूरत में इंसान के लिये अज्र व सवाब का ख़ज़ाना जन्नत में महफ़ूज़ हो जायेगा।

(6863) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की एक ही सनद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ جَمِيعًا عَنْ حَفْصِ بْنِ، غِيَاثٍ عَنْ عَاصِمٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6864) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक घाटी पर चढ़ रहे थे तो एक आदमी जब भी घाटी पर बुलंद होता, बुलंद आवाज़ से कहता, ला इला-ह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर चुनाँचे नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम बहरे को नहीं पुकार रहे हो और न ही ग़ायब को।' और आपने फ़रमाया, 'ऐ अबू मूसा! या ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस! क्या मैं तुम्हें वो कलिमा न बताऊँ, जो जन्नत के ख़ज़ानों में से

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُمْ يَصْعَدُونَ فِي ثَنِيَّةٍ - قَالَ - فَجَعَلَ رَجُلٌ كُلَّمَا عَلاَ ثَنِيَّةً نَادَى لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ - قَالَ - فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ " إِنَّكُمْ لاَ تُنَادُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا " . قَالَ فَقَالَ " يَا أَبَا مُوسَى - أَوْ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ قَيْسٍ - أَلاَ أَدُلُّكَ

है?' मैंने अ़र्ज़ किया, वो कौनसा कलिमा है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।'

عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كَنْزِ الْجَنَّةِ " . قُلْتُ مَا هِيَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ " .

(6865) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَذَكَرَ نَحْوَهُ

(6866) इमाम साहब दो और उस्तादों से बयान करते हैं, हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बताया, हम एक सफ़र में नबी (ﷺ) के साथ थे, आगे सबसे पहली रिवायत के हम मानी रिवायत है।

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي، عُثْمَانَ عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ عَاصِمٍ .

(6867) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम एक जंग में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे, आगे ऊपर वाली हदीस़ है और इसमें ये भी है, आपने फ़रमाया, 'जिस ज़ात को तुम पुकार रहे हो, वो तुम्हारी ऊँटनी की गर्दन से भी ज़्यादा क़रीब है।' और इस हदीस़ में ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह का ज़िक्र नहीं है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزَاةٍ . فَذَكَرَ الْحَدِيثَ وَقَالَ فِيهِ " وَالَّذِي تَدْعُونَهُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ عُنُقِ رَاحِلَةِ أَحَدِكُمْ " . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِ ذِكْرُ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ

(6868) हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मैं तुम्हें वो कलिमा बताऊँ, जो जन्नत के ख़ज़ानों में से है? या जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना बताऊँ?' तो मैंने अ़र्ज़ किया, ज़रूरत बताइये। चुनाँचे आपने फ़रमाया, 'ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।'

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ غِيَاثٍ - حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ - أَوْ قَالَ - عَلَى كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ " . فَقُلْتُ بَلَى . فَقَالَ " لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ

बाब 14 : दुआयें और पनाह तलब करना

باب: الدَّعَوَاتِ وَالتَّعَوُّذِ

(6869) हज़रत अबू बकर (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से गुज़ारिश की, आप मुझे कोई ऐसी दुआ सिखायें जो मैं अपनी नमाज़ में माँगू। आपने फ़रमाया, 'कहो, ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत बड़ा ज़ुल्म किया है' क़ुतैबा की रिवायत में है, 'बहुत ज़ुल्म किये हैं और गुनाह को तेरे सिवा कोई नहीं बख़्श सकता, इसलिये तू अपने पास से मुझे मग़्फ़िरत इनायत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा, क्योंकि तू ही बख़्शने वाला हमेशा रहम करने वाला है।'

(सहीह बुख़ारी:6326, तिर्मिज़ी:3531, नसाई: 1301)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي بَكْرٍ، أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي قَالَ " قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَبِيرًا - وَقَالَ قُتَيْبَةُ كَثِيرًا - وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ".

फ़ायदा : इस हदीस से साबित हुआ, हर इंसान को ख़्वाह वो कितना ही बुलंद मर्तबा हो, यहाँ तक कि दर्ज-ए-सिद्दीक़ियत ही पर फ़ाइज़ क्यों न हो, अपने आपको क़सूरवार और ख़ताकार समझना चाहिये और हर वक़्त अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करना चाहिये और ये भी तसव्वुर करना चाहिये कि ऐ अल्लाह! अगरचे मैं तो नाकारा हूँ, बख़्शिश के क़ाबिल नहीं हूँ तू ही अपनी तरफ़ से मुझे मग़्फ़िरत से सरफ़राज़ फ़रमा और अपनी निस्बत और अपनी शान के मुताबिक़ मग़्फ़िरत अता कर, जितना तू अज़ीम है, मेरी मग़्फ़िरत भी अज़ीम हो, जो हर कोताही को शामिल हो।

(6870) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसी दुआ सिखायें, जो मैं अपनी नमाज़ में और अपने घर में माँगू, आगे ऊपर वाली रिवायत

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي رَجُلٌ، سَمَّاهُ وَعَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ عَنْ يَزِيدَ بْنَ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ

الْعَاصِ، يَقُولُ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلِّمْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي وَفِي بَيْتِي . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ اللَّيْثِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ "ظُلْمًا كَثِيرًا" .

है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि इसमें है, आपने फ़रमाया, 'ज़ुल्मन कसीरन बहुत ज़ुल्म किये हैं।'

باب التَّعَوُّذِ مِنْ شَرِّ الْفِتَنِ وَغَيْرِهَا

बाब 15 : फ़ित्नों वग़ैरह के शर से पनाह माँगना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَدْعُو بِهَؤُلاَءِ الدَّعَوَاتِ " اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَاىَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ " .

(6871) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह इन कलिमात के ज़रिये दुआ माँगा करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे आग के फ़ित्ने और आग के अज़ाब से, क़ब्र के फ़ित्ने और क़ब्र के अज़ाब से और तवंगरी के फ़ित्ने के शर से और फ़क्रो-तंगदस्ती के फ़ित्ने के शर से तेरी पनाह माँगता हूँ और मैं मसीह दज्जाल के फ़ित्ने के शर से तेरी पनाह माँगता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बर्फ के पानी और बरवदत (ओलों) से धो डाल और मेरे दिल को गुनाहों से इस तरह पाक साफ़ कर दे, जिस तरह तूने सफ़ेद कपड़े को मैल-कुचैल से पाक व साफ़ किया है और मेरे गुनाहों के दरम्यान उतनी दूरी पैदा कर दे, जितनी दूरी तूने मश्रिक़ (पश्चिम) व मग़्रिब (पूरब) के दरम्यान कर दी है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ सुस्ती, काहिली और इन्तिहाई बुढ़ापे से और गुनाह से और क़र्ज़े से।'

(इब्ने माजह : 3838)

(6872) यही ह[illegible] इमाम साहब एक और उस्ताद से बया[illegible]ते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(सहीह बुख़ारी : 6377, 6275, इब्ने माजह : 3838)

मुफ़रदातुल हदीस़ : फ़ित्नतिन्नार : आग की मुसीबत और उसकी आज़माइश। **फ़ित्नतिल क़ब्र :** से मुराद भी क़ब्र की तकलीफ़ें हैं, जो कम दर्जे के मुज्रिमों के लिये हैं और अज़ाबे क़ब्र और अज़ाबे नार (जहन्नम) से मुराद वो अज़ाब और दुख-दर्द है जो अव्वल दर्जे के मुज्रिमों यानी काफ़िरों और मुश्रिकों को होगा, जिस की तरफ़ सूरह मुल्क में इशारा किया गया है, कुल्लमा उल्क़ि-य फ़ीहा फ़ौजुन सअ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम नज़ीर मक़सद ये है कि अल्लाह तआला से हर क़िस्म के दुख, दर्द और तकलीफ़ से पनाह माँगनी चाहिये कि वो हर क़िस्म के गुनाहों, शिर्क व कुफ़्र और छोटे-बड़े गुनाहों से महफ़ूज़ रखे, अगर सरज़द हो जायें तो तौबा व इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ बख़्शे, फ़ित्नतिल ग़िना और फ़ित्नतिल फ़क़्र दौलतमन्दी और फ़क़्रो-मोहताजी के फ़ित्ने से पनाह माँगने का मतलब ये है कि दौलतमन्दी और ख़ुशहाली इनायत फ़रमाये तो उसके सबब फ़ख़्र व गुरूर और तकब्बुर व घमण्ड पैदा न हो और माल व दौलत के सहीह इस्तेमाल की तौफ़ीक़ मिले, जैसाकि मालदार सहाबा हज़रत उ़समान और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ वग़ैरह को मिली और इसके सबब उन्होंने बुलंद दरजात हासिल किये और अगर फ़क़्रो-फ़ाक़ा में मुब्तला करे तो सब्र व क़नाअ़त इनायत फ़रमाये, सब्र व क़नाअ़त से महरूम न रखे, ग़िना और फ़क़्र के यही शर हैं, जिससे पनाह मतलूब है। ग़िना (मालदारी) की सूरत में इसराफ़ व तब्ज़ीर (फ़िज़ूलख़र्ची) का भी ख़तरा है और माल व दौलत के हुक़ूक़ की अदायगी से बुख़्ल व कन्जूसी का भी, नीज़ हलाल व हराम के इम्तियाज़ (फ़र्क) के नज़र अन्दाज़ कर देने का भी और फ़क़्र की सूरत में बेसब्री के साथ, जज़अ-फ़ज़अ और नाजाइज़ ज़राए से माल कमाने का ख़तरा है और मसीह दज्जाल का फ़ित्ना और आज़माइश भी बहुत बड़ी है। जिससे क़यामत के क़रीब के लोगों को गुज़रना होगा, इस तरह आपने गुनाहों के अस़रात धोने और दिल के पाक-साफ़ करने और गुनाहों से बहुत दूर रखे जाने की दुआ की तल्क़ीन की है। क्योंकि अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ व इनायत के बग़ैर गुनाहों से बचना मुम्किन नहीं है और न उसके बग़ैर कोई और उनके अस़रात को दूर कर सकता है, गुनाहों की सोज़िश व हरारत की बिना पर ठण्डा पानी इस्तेमाल करने की दुआ माँगी है। कसल व सुस्ती की बिना पर इंसान अपने दुनियावी और दीनी फ़राइज़ के सर अन्जाम देही में कोताही का मुर्तकिब होता है। मआश (दुनिया) और मआद (आख़िरत) दोनों ही मुतास्स़िर (प्रभावित) होते हैं, मग़रम क़र्ज़ा भी हस्सास और साहिबे शऊर इंसान के लिये ज़िन्दगी के लुत्फ़ से महरूमी और ज़हनी अज़ियत का बाइस़ बनता है, जिससे उसकी कुव्वते कार मुतास्स़िर होती

है और वो दुनिया की सआदतों और आख़िरत की बहुत सी कामरानियों से महरूम हो जाता है। मअ्सम गुनाह की सूरत में भी साहिबे ज़मीर इंसान बेक़रारी और इज़्तिराब में मुब्तला हो जाता है और हरम यानी इन्तिहाई बुढ़ापा भी इंसान को बिल्कुल ही अज़्कार रफ़्ता करता है और दूसरों का दस्त नगर (मोहताज) बन जाता है, होश व हवास में भी कमज़ोर और ज़ोफ़ पैदा हो जाता है, जिससे दीन व दुनिया दोनों मुतास्सिर होते हैं।

बाब 16 : इजज़ (बेबसी) व कसल (सुस्ती) वग़ैरह से पनाह माँगना

باب التَّعَوُّذِ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَغَيْرِهِ

(6873) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ये दुआ फ़रमाया करते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे आजिज़ी व बेबसी, सुस्ती व काहिली, बुज़दिली और इन्तिहाई बुढ़ापे और बुख़्ल (कन्जूसी) से पनाह माँगता हूँ और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, क़ब्र के अज़ाब से और मौत व हयात के फ़ित्ने से।'

(सहीह बुख़ारी : 2823, 6367, अबू दाऊद : 1540, नसाई : 5467)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، قَالَ وَأَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ، بْنُ مَالِكٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَالْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ " .

फ़ायदा : कम हिम्मती, बेबसी, काहिली, सुस्ती, बुज़दिली और कन्जूसी ऐसी कमज़ोरियाँ हैं जिनकी वजह से आदमी वो जुरअतमन्दाना और हिम्मत व हौसले वाले इक़्दामात (स्टेप्स) और मेहनत व क़ुर्बानी वाले काम नहीं कर सकता, जिनके बग़ैर न दुनिया में कामयाबी मयस्सर आ सकती है और न आख़िरत में फ़ौज़ो-फ़लाह से हमकिनार होकर अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल की जा सकती है और न ही उनकी मौजूदगी में दीनी व दुनियवी फ़राइज़ और हुक़ूक़ की पासदारी हो सकती है, ज़िन्दगी के फ़ित्ने से मुराद अपने दौरे हयात में दुनिया पर रीझ कर व ख़्वाहिशाते नफ़्स का असीर (क़ैदी) बन जाना है और मौत के फ़ित्ने से मुराद, मौत के वक़्त ग़लत इक़्दाम कर बैठना या फ़ित्न-ए-क़ब्र से दोचार होना है।